

भगवत्-पुष्पदन्त-भूतबलि-प्रणीत

षट्खंडागमः

श्रीवीरसेनाचार्य विरचित-धबला-टीका-समन्वित ।

तस्य

चतुर्थखण्डे वेदनानामधेये

हिन्दीभाषानुवाद-मुळनात्मकटिप्पण प्रस्तावना-कपरिशिष्टे सम्पादितानि

वेदानुयोगद्वारगर्भितानि

वेदनाक्षेत्रविधान वेदनाकालविधानानुयोगद्वाराणि

सम्पादक

नागपुर विश्वविद्यालय-संस्कृत-पाली प्राकृतविभागाध्यक्ष

एम् ए, एल्एल् बी, डी लिट् इत्युपाधिधारी

हीरालालो जैनः

सहसम्पादक

प बालचन्द्रः सिद्धान्तशास्त्री

सशोधने सहायक

डा नेमिनाथ ननय भादिनाथ उपाध्याय एम् ए, डी लिट्

प्रकाशक

श्रीमन्त शेठ शिताभराय लक्ष्मीचन्द्र

जैन-साहित्योद्धारक-फुड-कार्यालय

अमरावती (बरार)

वि सं २०११]

वीर-निर्वाण संवत् २४८१

[ई सं १९९९

मूल्य रूप्यक द्वादशकम्

प्रकाशने—

श्रीमन्त शेठ शिताबराय लक्ष्मीचन्द्र
जैन-साहित्योद्धारक फंड कार्यालय
अमरावती (बरार)



मुद्रक—

१-१९ फार्म-सरस्वती मुद्रणालय,
अमरावती, म प्र
शेठ-रघुनाथ दिपाजी देसाई
न्यू भारत प्रिंटिंग प्रेस,
६ केलैयाड़ी, गिरगॉन, बम्बई ४

THE
ṢAṬKHAṆḌĀGAMA
OF
PUSPADANTA AND BHŪTABALI
WITH
THE COMMENTARY DHAVALĀ OF VĪRASENA

VOL. XI

Vedanaksetravīdhāna-Vedanākālavīdhāna Anuyogadwāras

Edited

with translation notes and indexes

BY

Dr HIRALAL JAIN, M A, LL, B, D LITT

ASSISTED BY

Pandit Balchandra

Siddhānta Shāstri

with the cooperation of

Dr A N UPADHYE, M A, D LITT

Published by

Shrimant Seth Shitabrai Laxmichandra,

Jaina Sāhitya Uddhāraka Fund Kāryālaya

AMRAVATI (Berar)

1955

Price Rupees Twelve Only

Published by—

Shrimant Seth Shitabrai Laxmichandra,
Jaina Sahitya Uddharaka Fund Karyalaya,
AMRAVATI (Berar)



Printer—

Forms 1-19 Saraswati Printing Press,
Amraoti, M. P

Rest—R D Desai
New Bharat P Press,
6, Kelewadi, Girgaon, Bombay 4

विषय-सूची



	पृष्ठ
१ प्राक्-कथन	६
१	
प्रस्तावना	
१ विषय-परिचय	७
२ विषयसूची	१४
३ शुद्धिपत्र	१९
२	
मूल, अनुवाद और टिप्पण	
१ वेदनाक्षेत्रविधान	१—७२
२ वेदनाकालविधान	७५—३६८
३	
परिशिष्ट	
१ सूत्रपाठ	
वेदनाक्षेत्रविधानका सूत्रपाठ	१
वेदनाकालविधानका सूत्रपाठ	४
२ अवतरण-नामासूची	१५
३ ग्रन्थोल्लेख	१५
४ पारिभाषिक शब्द-सूची	१५



प्राक्-कथन

पद्लङ्गागम भाग १० के प्रकाशनके पश्चात् इतने शीघ्र प्रस्तुत भाग ११ को पाकर पाठक प्रसन्न होंगे, और प्रकाशनसम्बन्धी पून त्रिलम्बके लिये हमें क्षमा करेंगे, ऐसी आशा है।

इस भागके प्रथम १९ फार्म अर्थात् पृष्ठ १ से १५२ तक पूर्वानुसार सरस्वती प्रेस, अमरावतीमें छपे हैं, और शेष समस्त भाग न्यूभारत प्रेस, मम्बई, में छपा है। इस कारण यदि पाठकोंको टाइप, कामज व मुद्रण आदिमें कुछ द्विगुण्यता व दोष दिखाई दे तो क्षमा करेंगे। यदि मम्बईमें मुद्रणकी व्यवस्था न की गई होती तो अभी और न जाने कितने काल तक इस भागके पूरे होनेकी प्रतीक्षा करनी पड़ती।

मम्बईमें इसके मुद्रणकी व्यवस्था करा देनेका श्रेय श्रद्धेय प० नाथूरामजी प्रेमीको है। इस कार्यमें हमें उनका औपचारिक रूपमात्रसे नहीं, किन्तु यथार्थतः तन, मन और धनसे सहयोग मिला है जिसके लिये हम उनके अत्यन्त कृतज्ञ हैं। उनकी बड़ी तीव्र अभिलाषा और प्रेरणा है कि घरलशास्त्रज्ञ सम्पादन प्रकाशन-कार्य जितना शीघ्र हो सके पूरा कर देना चाहिये, और इसके लिये वे अपना सन प्रसार सहयोग देनेके लिये तैयार हो गये हैं।

इस कार्यकी शेष सत्र व्यवस्था पूर्ववत् स्थिर रही है जिसके लिये हम घरलाकी हस्तलिखित प्रतियोंके स्वामियोंके तथा सेठ लक्ष्मीचन्द्रजी व व्यवस्थापक समितिके अन्य सदस्योंके उपकृत हैं।

सहारनपुरनिवासी श्री गतनचन्द्रजी गुप्ता और उनके भ्राता श्री नेमिचन्द्रजी बनील इन सिद्धान्त ग्रंथोंके स्वाध्यायमें असाधारण रुचि रखते हैं, यह हम पूरमें भी प्रकट कर चुके हैं। यही नहीं, वे सान्जानीपूरके समस्त मुद्रित पाठपर ध्यान देकर उचित सशोधनोंकी सूचना भी भेजनेकी कृपा करते हैं जिसका उपयोग शुद्धिपत्रमें किया जाता है। इस भागके लिये भी उन्होंने अपने सशोधन भेजनेकी कृपा की। इस निस्पृह और शुद्ध धार्मिक सहयोगके लिये हम उनका बहुत उपकार मानते हैं।

पाठक दर्शेंगे कि भाग १२ वॉ भी प्रायः इसके साथ ही साथ प्रकाशित हो रहा है, जिससे पूर्वत्रिलम्बका हमारा समस्त अपराध क्षम्य सिद्ध होगा।

विषय-परिचय

वेदना महाधिनारके अन्तर्गत जो वेदनानिक्षेपादि १६ अनुयोगद्वार हैं उनमेंसे आदिके ४ अनुयोगद्वार पुस्तक १० में प्रकाशित हो चुके हैं। प्रस्तुत पुस्तकमें उनसे आगेके वेदनाक्षेत्रविधान और वेदनाकालविधान ये ० अनुयोगद्वार प्रकाशित किये जा रहे हैं।

५ वेदनाक्षेत्रविधान

द्रव्यविधानके समान इस अनुयोगद्वारमें भी पदमीमासा, स्वामित्व और अल्पगुत्व, ये तीन अनुयोगद्वार हैं। यहाँ प्रारम्भमें श्री वीरसेन स्वामीने क्षेत्रविधानकी माधकता प्रगट करते हुए प्रथमतः नाम, स्थापना, द्रव्य व भावके भेदसे क्षेत्रके ४ भेद बतला कर उनमेंसे नोआगमद्रव्यक्षेत्र (आकाश) को अधिनारप्राप्त बतलाया है। ज्ञानावरणादि आठ कर्म रूप पुद्गल द्रव्यका नाम वेदना है। समुद्घातादि रूप विविध अवस्थाओंमें सकोच व विस्तारको प्राप्त होनेवाले जीवप्रदेश उक्त वेदनाका क्षेत्र है। प्रकृत अनुयोगद्वारमें चूँकि इसी क्षेत्रकी प्ररूपणा की गई है, अतएव 'वेदनाक्षेत्रविधान' यह उसका सार्थक नाम है।

(१) पदमीमासा—जिस प्रकार द्रव्यविधान (पु १०) के अन्तर्गत पदमीमासा अनुयोगद्वारमें द्रव्यकी अपेक्षा ज्ञानावरणादि कर्मोंकी वेदनाके उत्कृष्ट, अनुकृष्ट, जघन्य व अजघन्य तथा देशामर्शकभावमें सूचित सादिअनादि पदानी प्ररूपणा की गई है, ठीक उसी प्रकारसे यहाँ इस अनुयोगद्वारमें भी उन्हीं १३ पदोंकी क्षेत्रकी अपेक्षा प्ररूपणा की गई है। उससे यहाँ कोई उल्लेखनीय विशेषता नहीं है (देखिए द्रव्यविधानका विषयपरिचय प्रस्तावना पृ २-४)।

(२) स्वामित्व अनुयोगद्वारमें उत्कृष्ट पद विषयक स्वामित्व और जघन्य पद विषयक स्वामित्व, इस प्रकार स्वामित्वके २ भेद बतलाकर प्ररूपण वशा यहाँ जघन्य व उत्कृष्टके विषयमें निश्चित पद्धतिके अनुसार नामादि रूप निक्षेत्रविधानी योजना की गई है। इसमें नोआगमद्रव्य जघन्यके ओष और आदेशकी अपेक्षा मुख्यतया २ भेद बतलाकर फिर उनमेंसे भी प्रत्येकके द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा ४-४ भेद बतलाये हैं। उनमें ओषकी अपेक्षा एक परमाणुको द्रव्य-जघन्य कहा गया है। कर्मक्षेत्रजघन्य और नोऋक्षेत्रजघन्यके भेदसे क्षेत्रजघन्य दो प्रकारका है। इनमें सूक्ष्म निगोद जीवकी जघन्य अग्नाहनाका नाम कर्मक्षेत्रजघन्य और एक आकाशप्रदेशका नाम नोऋक्षेत्रजघन्य बतलाया है। एक समयको कालजघन्य और परमाणुमें रहनेवाले एक स्तिगत्व आदि गुणको भावजघन्य कहा गया है। आदेशान तीन प्रदेशवाले स्वन्धकी अपेक्षा दो प्रदेशवाले स्वल्प द्रव्यजघन्य, तीन आकाशप्रदेशाम अधिष्ठित द्रव्यकी अपेक्षा दो आकाशप्रदेशोंमें अधिष्ठित द्रव्य क्षेत्रजघन्य, तीन समय परिणत द्रव्यकी अपेक्षा दो

समय परिणत द्रव्य कालजघन्य, तथा तीन गुण-परिणत द्रव्यकी अपेक्षा दो गुण-परिणत द्रव्य भावजघन्य है। इसी प्रकारसे आदेशकी अपेक्षा इन द्रव्यजघन्यादिके मेदोंकी आगे भी कल्पना करना चाहिये। जैसे—चार प्रदेशवाले स्कन्धकी अपेक्षा तीन प्रदेशवाला तथा पाँच प्रदेशवाले स्कन्धकी अपेक्षा चार प्रदेशवाला स्कन्ध आदेशकी अपेक्षा द्रव्यजघन्य है, इत्यादि। यही प्रक्रिया उत्कृष्टके सम्बन्धमें भी निर्दिष्ट की गयी है। विशेष इतना है कि यहाँ ओषधी अपेक्षा महास्कन्धको द्रव्य-उत्कृष्ट, रोमाकाशको कर्मक्षेत्र उत्कृष्ट, आकाशद्रव्यको नोनर्मक्षेत्र-उत्कृष्ट, अनन्त लोकोंको काल-उत्कृष्ट, और सर्वोत्कृष्ट वर्णोंदिको मान-उत्कृष्ट कहा गया है।

आगे इस अनुयोगद्वारमें ज्ञानानरणादि आठ कर्मोंकी क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट, अनुकृष्ट, जघन्य और अजघन्य वेदनायें भिन्न भिन्न जीवोंके कौन कौनसी अरुपाओंमें होती हैं, इस प्रकार इन वेदनाओंके स्वामियोंकी विस्तारसे प्ररूपणा की गयी है। उदाहरणस्वरूप क्षेत्रकी अपेक्षा ज्ञानानरणकी उत्कृष्ट वेदनाके स्वामीकी प्ररूपणा करते हुए बतलाया गया है कि एक हजार योजन प्रमाण आयत जो महामत्स्य स्वयम्भूरमण समुद्रके बाह्य तटपर स्थित है, यहाँ वेदना समुद्रातको प्राप्त होकर जो तनुगततलसे सतप्र है तथा जो मारणातिमत्समुद्रातको करते हुए तीन विप्रहृक्वाण्डकोनोंके करके अनन्तर समयमें नीचे सातवीं पृथिवीके नारनियोंमें उत्पन्न होनेवाला है उसके ज्ञानानरण कर्मका क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट वेदना होती है। इस उत्कृष्ट वेदनासे भिन्न ज्ञानानरणकी क्षेत्रकी अपेक्षा अनुकृष्ट वेदना है। इसी प्रकारसे दर्शनावरण आदि शेष कर्मोंकी उत्कृष्ट-अनुकृष्ट वेदनाओंकी प्ररूपणा की गयी है। वेदनाय कर्मकी क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट वेदना क्षेत्रगुण केवलिसमुद्रातको प्राप्त हुए केवलीके कही गयी है।

ज्ञानानरणकी क्षेत्र जघन्य वेदना ऐसे सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवके बतलायी है जो ऋतुगतिसे उत्पन्न होकर तद्गत होनेके तृतीय समयमें वर्तमान व तृतीय समयवर्ती आहारक है, जघन्य योगवाला है, तथा सर्वजघन्य अग्गाहनासे युक्त है। इस जघन्य क्षेत्रवेदनासे भिन्न अजघन्य क्षेत्रवेदना कही गयी है। इसी प्रकारसे शेष कर्मोंकी भी क्षेत्रकी अपेक्षा जघन्य व अजघन्य वेदनाकी यहाँ प्ररूपणा की गयी है।

(३) अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारमें आठों कर्मोंकी उक्त वेदनाओंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा जघन्यपदनिषयक, उत्कृष्टपदनिषयक व जघन्य-उत्कृष्टपदनिषयक, इन ३ अनुयोगद्वारोंके द्वारा की गयी है। प्रसंग पाकर यहाँ (सूत्र ३०-२९में) मूलप्रयत्नानि सप्त जीवोंमें अग्गाहनादण्डकली भी प्ररूपणा कर दी है।

६ वेदनाकालविधान

इस अनुयोगद्वारमें पहिले नामकाल, स्थापनाकाल, द्रव्यकाल, समाचारकाल, अस्मानकाल, प्रमाणकाल और भावकाल, इस प्रकार कालके ७ मेदोंका निर्देश कर इनके और भी उत्तरमेदोंको बतलाते हुए तद्पतिरिक्त नोआगमद्रव्यकालके प्रधान और अप्रधान रूपसे २ मेद बतलाये हैं। इनमें जो काल शेष पाच द्रव्योंके परिणमनमें हेतुभूत है वह प्रधानकाल कहा गया है। यह

प्रधानकाल कालाण स्वरूप होकर सरयामें लोकाकाशप्रदेशोंके बराबर, रत्नराशिके समान प्रदेश प्रचयसे रहित, अमूर्त एव अनादि-निधन है। अप्रधानकाल सचित्त, अचित्त और मिश्रके मेदसे तीन प्रकारका बतलाया है। इनमें दशकाल (दसोंका समय) व मशककाल (मच्छरोंका समय) आदिको सचित्तकाल, धूलिकाल, कर्दमकाल, वर्षाकाल, शीतकाल व उष्णकाल आदिको अचित्त काल, तथा सदश शीतकाल आदिको मिश्रकालसे नामाङ्कित किया गया है।

समाचारकाल लौकिक और लोकोत्तरके मेदसे दो प्रकार है। वन्दनाकाल, नियमकाल, स्वाध्यायकाल, व ध्यानकाल आदिरूप लोकोत्तर समाचारकाल तथा कर्मणकाल (खेत जोतनेका समय) लुननकाल व वपनकाल (बोनेका समय) आदि रूप लौकिक समाचारकाल कहा जाता है। वर्तमान, अतीत व अनागत रूप काल अद्वाकाल तथा पत्योपम व सागरोपम आदि रूप काल प्रमाणकाल नामसे प्रसिद्ध हैं।

वेदनाद्रव्यविधान और क्षेत्रविधानके समान इस अनुयोगद्वारमें भी पदमीमासा, स्वामिन्व और अल्पबहुत्व ये ही तीन अनुयोगद्वार हैं।

(१) पदमीमासा अनुयोगद्वारमें ज्ञानारणादि कर्मोंकी वेदनाओंके उत्कृष्ट अनुकृष्ट आदि उन्हीं १३ पदोंकी प्रकृपणा कालकी अपेक्षा ठीक उसी प्रकारसे की गयी है जैसे कि द्रव्य विधानमें द्रव्यकी अपेक्षासे और क्षेत्रविधानमें क्षेत्रकी अपेक्षासे यह की गयी है। यहाँ उससे कोई उल्लेखनीय विशेषता नहीं है।

(२) स्वामिन्व—पिछले उन दोनों अनुयोगद्वारोंके समान यहाँ भी इस अनुयोगद्वारको उत्कृष्ट पदत्रियक और अनुकृष्ट पदत्रियक इन्हीं दो मेदोंमें विभक्त किया गया है। प्रकरणरश यहाँ भी प्रारम्भमें क्षेत्रके विधानके समान जघन्य और उत्कृष्टके विषयमें नामादि रूप निक्षेपविधिनी योजना की गयी है। तत्पश्चात् ज्ञानारणादि कर्मों सम्बन्धी कालकी अपेक्षा होनेवाली उत्कृष्ट-अनुकृष्ट एव जघन्य-अजघन्य वेदनाओंके स्वामियोंकी प्रकृपणा की गयी है। उदाहरणार्थ, ज्ञानारणकी उत्कृष्ट वेदनाके स्वामीना कथन करते हुए यह बतलाया है कि जो संज्ञी पचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीव सत्र पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हो चुका है, सामान उपयोगसे युक्त होकर श्रुतोपयोगसे सहित है, जागृत है, तथा उत्कृष्ट स्थितिवधके योग्य सक्लेश स्थानोंसे अपना कुट मध्यम जातिके सक्लेश परिणामोंसे सहित है, उसके ज्ञानारण कर्मकी कालकी उत्कृष्ट वेदना होती है। उपर्युक्त विशेषताओंसे संयुक्त यह जीव कर्मभूमिज (१५ कर्म भूमियोंमें उत्पन्न) ही होना चाहिये, भोगभूमिज नहीं, कारण कि भोगभूमियोंमें उत्पन्न जीवोंके उत्कृष्ट स्थितिना बध सम्भव नहीं है। इसके अतिरिक्त वह चाहे अकर्मभूमिज (देव-नारकी) हो, चाहे कर्मभूमिप्रतिभागज (स्वयम्भ्र पन्नके बाह्य भागमें उत्पन्न) हो, इसकी कोई विशेषता यहाँ अभीष्ट नहीं है। इसी प्रकार वह सग्यातर्ग्यायुष्क (अर्द्धाई द्वीप-स्सुदों तथा कर्मभूमि प्रतिभागमें उत्पन्न) और अमद्यातर्ग्यायुष्क (देव-नारकी) इनमेंसे कोई भी हो सकता है। वह देव होना

चाहिये, मनुष्य होना चाहिये, तिर्यच होना चाहिये अथवा नारकी होना चाहिये, इस प्रकारकी गतिजय विशेषताके साथ ही यहाँ वेदजनित विशेषताकी भी कोई अपेक्षा नहीं की गयी है। वह जलचर भी हो सकता है, ग्लचर भी हो सकता है, और नभचर भी हो सकता है इसकी भी विशेषता यहाँ नवा ग्रहण की गयी।

इस उल्टे वेदनासे भिन्न वेदना अनुल्टे वतलायी गई है। इसी प्रकारसे यथासम्भन शेष कर्मोंकी कभी कालकी अपेक्षा उल्टे-अनुल्टे वेदनाओंकी विशदतासे प्ररूपणा की गयी है। आयु कर्मकी कालत उल्टे वेदनाका निरूपण करते हुए यह स्पष्ट किया है कि उल्टे देवायुके बधरु मनुष्य सम्यग्दृष्टि ही होते हैं, किन्तु उल्टे नारकायुके बधरु मनुष्य पर्याप्त भिष्यादृष्टिके माप सही पचेन्द्रिय पर्याप्त तिर्यच भिष्यादृष्टि भी होते हैं। देवोंकी उल्टे आयुका बध १५ कर्मभूमियाँ ही होता है, कर्मभूमिप्रतिभाग और भोगभूमियोंमें उत्पन्न जीवोंके उमरका बध सम्पन्न नहीं है। उल्टे नारकायुका बध १५ कर्मभूमियोंके साथ कर्मभूमिप्रतिभागमें भी उत्पन्न जीवोंके होता है, भोगभूमियाँ उसका बध नहीं होता। इस उल्टे देवायु और नारकायुके बधरु सरयात बर्षकी आयुगले मनुष्य व तिर्यच उसके बधरु नहीं होते। तीनों वेदोंसे त्रिमी भी वेदके साथ उल्टे आयुका बध हो सकता है, उसका त्रिमी वेदविशेषके साथ त्रिव सम्भन नहीं है, यह जो मूल प्रथकारद्वारा सामान्य कथन किया गया है उसका स्पष्टीकरण करते हुए श्री वीरसेन स्वामिने कहा है कि वेदसे अभिप्राय यहाँ भागवेदका रहा है। कारण कि अथवा द्रव्यक्षेत्रसे भी उल्टे नारकायुका बध हो सकता है, किन्तु वह "आ पचमी त्ति सिंहा इथीओ जति दृठिपुत्रि ति" इम मूत्र (मूलाचार १२-११२) के विरुद्ध होनेस सम्भन नहीं है। इसके अतिरिक्त द्रव्यक्षेत्रवेदके साथ उल्टे देवायुका भी बध सम्भन नहीं है, क्योंकि, उसका बध निर्भय डिगने, माप ही होता है, परन्तु द्रव्यक्षेत्रके वखादि त्यागरूप मात्रनिर्भयता सम्भन नहीं है।

कालकी अपेक्षा सब कर्मोंकी जघन्य वेदनाकी प्ररूपणा करते हुए ज्ञानारण, दर्शनारण और अन्तराय कर्मकी यह वेदना छद्मस्य अस्थानके अन्तिम समयको प्राप्त जीवके (शीणरुपायके अन्तिम समयमें) वतलायी गयी है। वेदना, आयु, नाम व गोत्रकी कालत जघना वेदना अयोग केरुकीके अन्तिम समयमें होती है। मोहनीय कर्मकी उक्त वेदना मूर्खमाम्भरात्रके अन्तिम समयमें होती है। अपना अपना जघन्य वेदनासे भिन्न मन कर्मोंकी कालत अत्रय वेदना कही गयी है।

(३) अन्पचदृत्व—अनुयोगद्वारम त्रमश जघन्य पद, उल्टे पद और जघन्य उल्टे पदकी अपेक्षा आगे कर्मोंकी कालवेदनाका अन्पचदृत्वकी प्ररूपणा की गयी है। इस प्रकार इन ३ अनुयोगद्वारोंसे समाप्त हो जानेपर प्रस्तुत वेदनामात्रिमान अनुयोगद्वारा समाप्त हो जाता है। आगे चलकर उमरकी प्रथम चूलिना प्रारम्भ होती है।

चूलिका १

इस चूलिकामें निम्न ५ अनुयोगद्वारा ई—स्थितिप्रधम्यानप्ररूपणा, निषेकप्ररूपणा, आनाथा काण्टकप्ररूपणा और अल्पबहुत्व । (१) स्थितिबन्धस्थानप्ररूपणामें चौदह जीवममा मोंके आश्रयसे स्थितिप्रधम्यानोंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गयी है । अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थितिमेंसे जन्म स्थितिको कम करके एक अरुने मिला देनेपर जो प्राप्त हो उतने स्थितिस्थान होते हैं । इस अल्पबहुत्वकी देशामर्गाक मूचिन पर श्री वीरसेन स्वामीने यहाँ अल्पबहुत्वके अब्बोगादअल्पबहुत्व और मूलप्रवृत्तिअल्पबहुत्व ये दो भेद प्रतया पर स्वस्थान-परम्यानके भेदसे विस्तारपूर्वक प्ररूपणा की है । अब्बोगादअल्पबहुत्वमें कर्मविशेषकी अपेक्षा न पर सामान्यतया जीवममासोंके आधारसे जन्म व उत्कृष्ट स्थितिप्रध, स्थितिबन्धस्थान और स्थितिप्रस्थानविशेषका अल्पबहुत्व बनलाया गया है । परन्तु मूलप्रवृत्तिअल्पबहुत्वमें उन्हीं जीवममासोंके आधारसे ज्ञाना वरणादि धर्मोंकी अपेक्षा पर उपर्युक्त जन्म व उत्कृष्ट स्थितिप्रधदिके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गयी है ।

' जागे जानर " वयते इति प्रध, स्थितिधामी बन्ध स्थितिप्रध, तस्य स्थान विशेष स्थितिप्रधस्थानम्, अथा बन्ध बन्ध, स्थितेर्प्रध स्थितिप्रध, मोऽस्मिन् तिष्ठतीति स्थिति बन्धस्थानम् " इन दो निरुक्तियोंके अनुसार स्थितिप्रधस्थानप्रध अर्थ आवाधाम्यान वरके पूर्वोक्त पद्धतिके ही अनुसार अब्बोगादअल्पबहुत्वमें स्वस्थान-परम्यान स्वर्गसे जन्म व उत्कृष्ट आनाथा, आनाथास्थान और आनाधाम्यानविशेषके अल्पबहुत्वकी सामान्यतया तथा मूलप्रवृत्तिअल्पबहुत्वमें इहलोकके अल्पबहुत्वकी कर्मविशेषके आधारसे प्ररूपणा की गयी है । तत्पश्चात् जन्म व उत्कृष्ट आनाथा, आवाधाम्यान और आनाधाम्यान, इन सबके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा पूर्वोक्त पद्धतिके ही अनुसार सम्मिश्रित रूपमें एक माप भी की गयी है ।

तत्पश्चात् " स्थितयो बन्ध ते एभिरिति स्थितिप्रध, तेना स्थानानि अस्त्याविशेषा स्थितिप्रध स्थानानि " इस निरुक्तिके अनुसार स्थितिप्रधस्थानपदसे स्थितिप्रधके कारणभूत संकल्पेण व विशुद्धि रूप परिणामोंकी व्याख्या प्ररूपणा, प्रमाण व अल्पबहुत्व इन ३ अनुयोगद्वारोंसे की गयी है । संकल्पेण विशुद्धिस्थानोंका अल्पबहुत्व स्वयं मूलप्रधमर्ता भट्टारक भूतबलिके द्वारा चौदह जीवममासोंके आधारसे किया गया है । तत्पश्चात् स्थितिप्रधकी जन्म व उत्कृष्ट आदि अस्त्याविशेषोंके अल्पबहुत्वका भी वर्णन मूलप्रधमरने स्वयं ही किया है ।

(२) निषेकप्ररूपणा—सज्ञी पचेन्द्रिय मिष्यादृष्टि पर्याप्त आदि विविध जीव ज्ञानावरणादि धर्मोंके आनाथानालको छोड़कर उत्कृष्ट स्थितिके अन्तिम समय पर्यन्त प्रथमादिक समयोंमें किन् प्रमाणसे द्रव्य देकर निषेकचिन्ना करते हैं, इसकी प्ररूपणा इस अधिसारमें प्ररूपणा, प्रमाण, श्रेणि, अन्वहार, भागाभाग और अल्पबहुत्व, इन ६ अनुयोगद्वारोंके द्वारा विस्तारसे की गई है ।

१ यह अल्पबहुत्व देताम्बर कर्मप्रवृत्ति प्रधकी आचार्य मलयगिरि विरचित संस्कृत टीकामें भी यत् किञ्चित् भेदके साथ प्राय उद्योता त्यों पाया जाता है (देखिये कर्मप्रवृत्ति माथा १ c -c१ की टीका) । इसके अनिश्चित यहाँ अन्य भी कुछ प्रकरण अनूदित जैसे उपलब्ध होत हैं ।

(३) आवाधाकाण्डकप्ररूपणमें यह बतलाया गया है कि पचेन्द्रिय सज्ञा आदि जीव आयुर्कर्मको छोड़कर शेष ७ कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थितिसे आवाधाके एक एक समयमें पत्योपमके अस्वायातवें भाग मात्र नीचे आकर एक आत्राधानाण्डकको करते हैं । उदाहरणार्थ त्रिभक्षित जीव आवाधाके अन्तिम समयमें ज्ञानान्तरणादिकी उत्कृष्ट स्थितिको भी ग्रथता है, उससे एक समय कम स्थितिको ग्रथता है, दो समय कम स्थितिको भी ग्रथता है, तीन समय कम स्थितिको भी ग्रथता है, इस क्रमसे जानकर उक्त समयमें ही पत्योपमके अस्वायातवें भाग मात्रसे हीन तक उत्कृष्ट स्थितिको ग्रथता है । इस प्रकार आत्राधाके अन्तिम समयमें त्रितनी मी स्थितियाँ बंधने योग्य हैं उन सबकी एक आत्राधाकाण्डक सज्ञा निर्दिष्ट की गयी है । इसी क्रमसे आत्राधाके द्विचरमादि समयोंके त्रिभक्षित द्वितीयादिक आत्राधाकाण्डकोंको भी समझना चाहिये । यह क्रम जघन्य स्थिति प्राप्त होने तक चारू रहता है । यहाँ श्री वीरसेन स्वामीने चौदह जीवसमासोंमें आत्राधास्थानों और आत्राधाकाण्डकदाल्नाओंके प्रमाणकी भी प्ररूपणा की है ।

यहाँ आयु कर्मके आत्राधानाण्डकोंकी प्ररूपणा न करनेका कारण यह है कि अमुरु आवाधामें आयुकी अमुरु स्थिति बँधती है, ऐसा कोई नियम अन्य कर्मोंके समान आयुर्कर्मके विषयमें सम्भव नहीं है । कारण कि पूरकोटिके त्रिभागको आवाधा करके उसमें तेतीस सागरोपम प्रमाण [उत्कृष्ट] आयु बँधती है, उससे एक समय कम भी बँधती है, दो समय कम भी बँधती है, तीन समय कम भी बँधती है, यहाँ तक कि इसी आत्राधामें क्षुद्रभयग्रहण मात्र तक आयुस्थिति बँधनी है । यही कारण है कि यहाँ आयुके आत्राधाकाण्डकोंकी प्ररूपणा नहीं की गयी ।

(४) अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारम मूलमूरकार द्वारा चौदह जीवसमासोंमें ज्ञानान्तरणादि ७ कर्मों तथा आयु कर्मकी जघन्य व उत्कृष्ट आवाधा, आवाधास्थान, आत्राधाकाण्डक, नाना प्रदेशगुणहानिस्थानान्तर, एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर, एक आत्राधानाण्डक, जघन्य व उत्कृष्ट स्थितिबंध तथा स्थितिबंधस्थान, इन सबके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा विशद रूपसे की गयी है^१ । आगे चलकर यहाँ श्री वीरसेन स्वामीने इस अल्पबहुत्वके द्वारा मूचित स्वस्थान व परस्थान अल्पबहुत्वोंकी भी प्ररूपणा बहत विस्तारसे की है ।

चूलिका २

इस चूलिकाके अतर्गत स्थितिबंधाध्यनसायस्थानोंकी प्ररूपणामें जीवसमुदाहार, प्रवृत्ति समुदाहार और स्थितिसमुदाहार ये ३ अनुयोगद्वार निर्दिष्ट किये गये हैं ।

(१) जीवसमुदाहारमें यह बतलाया है कि जो जीव ज्ञानान्तरणादि रूप धुत्रप्रवृत्तियोंके बंधक हैं वे दो प्रकार होते हैं—सातबंधक, और असातबंधक । इसका कारण यह है कि

^१ दुल्नाके लिख देखिये कर्मप्रवृत्ति १-८६ गाथाकी आचार्य मलयगिरिविरचित संस्कृत टीका ।

साता व असाता वेदनीयके बंधके त्रिना उक्त ज्ञानानरणादि प्रकृतियोंका ग्रन्थ सम्भव नहीं है। इनमें जो सातबन्धक हैं वे तीन प्रकार हैं—चतुस्थानबन्धक, त्रिस्थानबन्धक और द्विस्थानबन्धक। असातबन्धक भी तीन प्रकार ही हैं—द्विस्थानबन्धक, त्रिस्थानबन्धक और चतुस्थानबन्धक। इनमें साताके चतुस्थानबन्धक सर्वत्रिशुद्ध (अतिशय मदकपायी), उनसे उर्मीके त्रिस्थानबन्धक सक्लिष्टतर होते हैं। असाताके द्विस्थानबन्धक सर्वत्रिशुद्ध, इनसे त्रिस्थानबन्धक सक्लिष्टतर, और इनसे भी उसके चतुस्थानबन्धक सक्लिष्टतर, होते हैं। साताके चतुस्थानबन्धक जीव उक्त ज्ञानानरणादि प्रकृतियोंकी जघन्य स्थितिको, त्रिस्थानबन्धक अजघन्य अनुकृष्ट स्थितिको, तथा द्विस्थानबन्धक उत्कृष्ट स्थितिको बंधते हैं। असाताके द्विस्थानबन्धक उपर्युक्त प्रकृतियोंकी जघन्य स्थितिको, त्रिस्थानबन्धक अजघन्य-अनुकृष्ट स्थितिको, तथा चतुस्थानबन्धक उक्त प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थितिके साथ ही असाताकी भी उत्कृष्ट स्थितिको बंधते हैं। तत्पश्चात् साता व असाताके चतुस्थानबन्धक व द्विस्थानबन्धक आदि जीवोंमें ज्ञानानरणादि जघन्य आदि स्थितियोंको बंधनेवाले जीव कितने हैं, तथा ज्ञानोपयोग व दर्शनोपयोगसे बंधनेवाली स्थितियाँ कौन कौनसी हैं, इत्यादि बतलाकर छह योंके अधस्तन व उपरिम भागोंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गयी है।

(२) प्रकृतिसमुदाहारमें प्रमाणानुगम और अल्पबहुत्व ये दो अनुयोगद्वारा हैं इनमें प्रमाणानुगमके द्वारा ज्ञानानरणादि कर्मोंकी स्थितिके बंधके कारणभूत स्थितिबन्धायस्थानोंके प्रमाणकी प्ररूपणा तथा अल्पबहुत्वके द्वारा उक्त आठों कर्मोंके स्थितिबन्धायस्थानोंके अल्प बहुत्वकी प्ररूपणा की गयी है।

(३) स्थितिसमुदाहारमें प्रगणना, अनुकृष्टि और तीव्र-मदता ये तीन अनुयोगद्वारा हैं। इनमें प्रगणनाके द्वारा ज्ञानानरणादि आठ कर्मोंकी जघन्य स्थितिसे लेकर उत्कृष्ट स्थिति पर्यन्त पाये जानेवाले स्थितिबन्धायस्थानोंकी संख्या और उनके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गयी है। अनुकृष्टिमें उपर्युक्त जघन्य आदि स्थितियोंमें इन्हीं स्थितिबन्धायस्थानोंकी समानता व असमानताका विचार किया गया है। तीव्र-मदता अनुयोगद्वारमें जघन्य स्थिति आदिके आधारसे स्थितिबन्धायस्थानोंके अनुभागकी तीव्रता व मदताका विवेचन किया गया है। इस प्रकार द्वितीय चूलिकाके समाप्त हो जानेपर प्रस्तुत वेदनाकालविधान अनुयोगद्वारा समाप्त होता है।

विषय-सूची

क्रम	विषय	पृष्ठ
	५ वेदनाक्षेत्रविधान	
१	वेदनाक्षेत्रविधानम ज्ञान-य पदमीमासा आदि ३ अनुयोगद्वारोंका उल्लेख	१
२	क्षेत्रके सम्बन्धमें नामादि निक्षेपोंकी योजना (पदमीमासा)	२
३	पदमीमासामें क्षेत्रकी अपेक्षा ज्ञानावस्थाकी बदला सम्बन्धी उत्कृष्ट-अनुकृष्ट आदि १३ पदोंका विचार	३
४	क्षेप कर्मोंके उक्त पदोंका विचार (सामित्य)	११
५	स्वामित्वके जघन्य व उत्कृष्ट पदविषयका २ भेदाका निर्देश	"
६	जघन्यके विषयमें नामादि निक्षेपोंकी योजना	"
७	उत्कृष्टके विषयमें नामादि निक्षेपोंकी योजना	१३
८	क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट ज्ञानावस्थाके स्वामीकी प्ररूपणा	१४
९	क्षेत्रका अनुकृष्ट ज्ञानावस्थाके स्वामीकी अनेक विकल्पोंमें प्ररूपणा	१३
१०	अनुकृष्ट क्षेत्रविरुद्धोंके स्वामियोंका प्ररूपणा आदि ६ अनुयोगद्वारोंके द्वारा निरूपण।	१७
११	दर्शनावस्था, मोहनीय और अन्तरायकी उत्कृष्ट व अनुकृष्ट क्षेत्रवेदनाकी प्ररूपणा ज्ञानावस्थाके समान बतलाकर वेदनीय कर्मकी उत्कृष्ट वेदनाके स्वामीका निरूपण।	१९
१२	वेदनीय कर्मकी अनुकृष्ट क्षेत्रवेदनाके स्वामीकी प्ररूपणा करते हुए प्ररूपणा आदि ६ अनुयोगद्वारोंके द्वारा अनुकृष्ट क्षेत्रवेदनोंके स्वामियोंका निरूपण	३०
१३	वेदनीय कर्मके ही समान आयु, नाम और गौत्रकी उत्कृष्ट क्षेत्रवेदना बतला कर क्षेत्र ज्ञानावस्थाकी जघन्य वेदनाके स्वामीका निरूपण	२३
१४	वेदनीय सम्बन्धी अनुकृष्ट क्षेत्रवेदनाके स्वामियोंकी अनेक भेदोंमें प्ररूपणा करते हुए चौदह जीवसमाप्तोंमें प्रथम वृद्धिको प्राप्त होनेवाले अग्नाहनाभेदोंकी प्ररूपणा (अल्पबहुत्व)	३६
१५	अल्पबहुत्व प्ररूपणामें जघन्य, उत्कृष्ट और जघन्य-उत्कृष्ट पदविषयका २ अनुयोग द्वारोंका उल्लेख।	५३
१६	जघन्य पदकी अपेक्षा आठों कर्मोत्पत्तियोंकी जघन्य क्षेत्रवेदनाकी परस्पर समानताका उल्लेख।	"
१७	उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा ज्ञानावस्थादि कर्मोंकी क्षेत्रवेदनाका अल्पबहुत्व।	५४
१८	जघन्य-उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा उक्त वेदनाका अल्पबहुत्व।	५५
१९	मृत सूत्रोंका सत्र जीवोंमें अग्नाहनाभेदोंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा।	५६

- २० एक सूक्ष्म जीवनी अपेक्षा दूसरे सूक्ष्म जीवनी, सूक्ष्म जीवनी अपेक्षा वादर जीवनी तथा वादर जीवनी अपेक्षा सूक्ष्म जीवनी अग्रगाहना सम्बन्धी गुणाकारनिर्देशोंका उल्लेख । ६९
- २१ मद्यष्टिद्वारा अग्रगाहनाभेदोंके स्वामियोंका निर्देश । ७१
- ६ वेदनाकालविधान**
- १ वेदनाकालविधानमें ज्ञातव्य ३ अनुयोगद्वारोंका उल्लेख करते हुए कालके ७ मूल-भेदोंका उल्लेख करते हुए कालके ७ मूलभेदों एव उत्तर भेदोंका स्वरूप । ७१
- २ पदमीमासा आदि उक्त ३ अनुयोगद्वारोंका नामोल्लेख
(पदमीमासा) ७७
- ३ पदमीमामांसे कालकी अपेक्षा ज्ञानारणीयवेदना सम्बन्धी उत्कृष्ट-अनुकृष्ट आदि १३ पदोंकी प्ररूपणा ७८
- ४ शेष ७ कर्मोंकी कालवेदनाके उक्त १३ पदोंका विचार
(स्वामित्व) ८५
- ५ स्वामित्वके जघन्य व उत्कृष्ट पदविषयक २ भेदोंका निर्देश ”
- ६ जघन्यके विषयमें नामादि निक्षेपोंकी योजना ”
- ७ उत्कृष्टके विषयमें नामादि निक्षेपोंकी योजना ८६
- ८ कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट ज्ञानारणीयवेदनाके स्वामीकी प्ररूपणा ८८
- ९ कालकी अपेक्षा अनैक भेदोंमें विभक्त अनुकृष्ट ज्ञानारणीयवेदनाके स्वामियोंकी प्ररूपणा ९१
- १० प्ररूपणा आदि ६ अनुयोगद्वारोंके द्वारा उक्त अनुकृष्ट स्थानविरूपोंके स्वामियोंकी प्ररूपणा । १०८
- ११ ज्ञानारणीयके ही समान शेष ६ कर्मोंकी भी उत्कृष्ट अनुकृष्ट वेदना प्रतलानर आयु कर्मकी उत्कृष्ट कालवेदनाके स्वामीका निरूपण । ११२
- १२ कालकी अपेक्षा आयु कर्म सम्बन्धी अनुकृष्ट वेदनाकी प्ररूपणा । ११६
- १३ कालकी अपेक्षा जघन्य ज्ञानारणीयवेदनाके स्वामीका विवेचन । ११८
- १४ कालकी अपेक्षा अजघन्य ज्ञानारणीयवेदनाके स्वामिभेदोंकी प्ररूपणा । १२०
- १५ दर्शनारणीय और अतराय सम्बन्धी जघन्य व अजघन्य वेदनाओंकी ज्ञानारणसे समानताका उल्लेख । १२२
- १६ कालकी अपेक्षा जघन्य वेदनीयवेदनाके स्वामीका निर्देश । ”
- १७ वेदनीयकी अजघन्य वेदनाके स्वामीकी प्ररूपणा । १२३
- १८ आयु, नाम और गोत्र सम्बन्धी जघन्य अजघन्य कालवेदनाओंकी वेदनीयवेदनासे समानताका उल्लेख । १२४
- १९ वादरकी अपेक्षा जघन्य व अजघन्य मोहनायवेदनाओंके स्वामियोंका उल्लेख
(अत्यरहस्य) १२५

- २० अल्पबहुत्व प्ररूपणामें जन्य, उत्कृष्ट और जन्य-उत्कृष्ट पदनिर्णयक ३ अनुयोग द्वारोंका निर्देश । १३६
- २१ जन्य पदकी अपेक्षा आठों कमोंकी जन्य वेदना सम्प्रधी परस्पर समानताना उल्लेख । १३७
- २२ उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा आठों कमोंकी वेदनाका अल्पबहुत्व । ”
- २३ जन्य-उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा उक्त कर्मवेदनाका अल्पबहुत्व । १३८

प्रथम चूलिका

- २४ मूलप्रवृत्ति स्थितिवधकी प्ररूपणामें स्थितिप्रधस्थानप्ररूपणा, निषेधप्ररूपणा, आवाधाभाषणप्ररूपणा और अल्पबहुत्व, इन ४ अनुयोगद्वारोंका निर्देश करने उनकी आस्थानताका दिग्दर्शन । १४०
- (स्थितिवधस्थानप्ररूपणा)
- २५ चौदह जीवसमासोंमें स्थितिवधस्थानोंका अल्पबहुत्व । १४२
- २६ इस अल्पबहुत्वद्वारा सूचित चार प्रकारके अल्पबहुत्वमेंसे स्वस्थान अत्र्योगाह अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा । १४७
- २७ परस्थान अत्र्योगाह अल्पबहुत्व । १४८
- २८ स्वस्थान मूलप्रवृत्तिअल्पबहुत्व । १५०
- २९ चौदह जीवसमासोंमें आठों कमोंका परस्थान अल्पबहुत्व । १५४
- ३० व्युत्पत्तिशेषसे स्थितिवधस्थानका अर्थ आवाधास्थान धरके उनकी प्ररूपणा, प्रमाण और अपनबहुत्वके द्वारा व्याख्या । १६२
- ३१ प्रस्तुत अल्पबहुत्व प्ररूपणामें स्वस्थान अत्र्योगाहअल्पबहुत्व । १६३
- ३२ परस्थान अत्र्योगाहअल्पबहुत्व । १६४
- ३३ स्वस्थान मूलप्रवृत्तिअल्पबहुत्व । १६६
- ३४ परस्थान मूलप्रवृत्तिअल्पबहुत्व । १६९
- ३५ उपर्युक्त दोनों अल्पबहुत्वदण्डकोंकी सम्मिलित प्ररूपणामें स्वस्थान अत्र्योगाह अल्पबहुत्व । १७७
- ३६ परस्थान अत्र्योगाहअल्पबहुत्व । १७९
- ३७ स्वस्थान मूलप्रवृत्तिअल्पबहुत्व । १८२
- ३८ परस्थान मूलप्रवृत्तिअल्पबहुत्व । १९०
- ३९ चौदह जीवसमासोंमें मन्त्रेश विशुद्धिस्थानोंका अल्पबहुत्व । २०५
- ४० जन्य व उत्कृष्ट स्थितिप्रधका अल्पबहुत्व । २२५

(निषेधप्ररूपणा)

- ४१ अनन्तरोपनिषद् द्वारा पंचैन्द्रिय सङ्गी मिथ्यादृष्टि पर्याप्त जीवोंमें ज्ञानानरण, दर्शना वाण, वेदनीय और अन्तराय कमोंकी निषेधरचनाका क्रम । २२८

४२	उपर्युक्त जीवोंमें मोहनीय कर्मकी निपेकरचनाका क्रम ।	२४२
४३	पंचेन्द्रिय सङ्गी सम्यग्दृष्टि अथवा मिथ्यादृष्टि पर्याप्त जीवोंमें आयु कर्मकी निपेक रचनाका क्रम	२४५
४४	पंचेन्द्रिय सङ्गी मिथ्यादृष्टि पर्याप्तोंमें नाम व गोत्रकी निपेकरचनाका क्रम	२४६
४५	पंचेन्द्रिय सङ्गी मिथ्यादृष्टि अपर्याप्तोंमें सात कर्मोंकी निपेकरचनाका क्रम	२४७
४६	पंचेन्द्रियादिक अपर्याप्तों तथा सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त-अपर्याप्तोंमें आयुकी निपेक रचनाका क्रम ।	२४८
४७	पंचेन्द्रिय असङ्गी, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तोंमें आयुको छोड़कर शेष सात कर्मोंकी निपेकरचनाका क्रम ।	२४९
४८	उपर्युक्त जीवोंमें आयु कर्मकी निपेकरचनाका क्रम ।	२५१
४९	उपर्युक्त अपर्याप्तोंमें तथा सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्तोंमें सात कर्मोंकी निपेक रचनाका क्रम	२५२
५०	परम्परोपनिषादोंके द्वारा विभिन्न जीवोंमें निपेकरचनाक्रमकी प्ररूपणा	२५३
५१	श्रेणिरूपणासे सूचित अन्तार, भागाभाग और अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा ।	२५८

(आत्राधाकाण्डकप्ररूपणा)

५२	पंचेन्द्रिय सङ्गी व अमङ्गी आदि जीवोंमें आयुको छोड़कर शेष सात कर्मोंके आत्राधा काण्डक करनेका नियम ।	२६७
५३	आयुर्कर्मसम्बन्धी आत्राधाकाण्डकप्ररूपणा न करनेका कारण ।	२६९

(अल्पबहुत्व)

५४	पंचेन्द्रिय सङ्गी मिथ्यादृष्टि पर्याप्त-अपर्याप्त जीवोंमें सात कर्मोंकी जघन्य-उत्कृष्ट आत्राधा आदिका अल्पबहुत्व ।	२७०
५५	पंचेन्द्रिय सङ्गी व असङ्गी पर्याप्त जीवोंमें जघन्य व उत्कृष्ट आत्राधा आदिका अल्पबहुत्व ।	२७३
५६	पंचेन्द्रिय सङ्गी व असङ्गी अपर्याप्तों तथा शेष चतुरिन्द्रियादि पर्याप्त पर्याप्त जीवोंमें आयुसम्बन्धी जघन्य आत्राधा आदिका अल्पबहुत्व ।	२७५
५७	पंचेन्द्रिय अमङ्गी आदि पर्याप्त-अपर्याप्तोंमें सात कर्मोंकी आत्राधा आदिका अल्पबहुत्व ।	२७६
५८	एकेन्द्रिय बादर व सूक्ष्म पर्याप्त-अपर्याप्तोंमें सात कर्मोंकी आत्राधा आदिका अल्पबहुत्व ।	२७८
५९	श्री वीरसेन स्वामीके द्वारा प्रवृत्त अल्पबहुत्व सूचित स्वस्थान-परस्थान अल्पबहुत्वोंमें स्वस्थान अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा ।	२७९
६०	परस्थान अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा ।	२८०
६१	प्रवृत्त अल्पबहुत्व सम्बन्धी विषय पदोंकी पत्तिका ।	२८३

द्वितीय चूल्हिका

- ६२ इस चूल्हिकाके अन्तर्गत स्थितित्रिधाध्ययसायप्रकरणमें जीवममुदाहार, प्रवृत्ति समुदाहार और स्थितिसमुदाहार, इन तान अनुयोगद्वारोंका निर्देश। ३०८
- ६३ प्रवृत्त चूल्हिकाकी अन्तर्गतस्थितियुक्त शक्त और उसका परिहार। ॥
- (जीवममुदाहार)
- ६४ ज्ञानावस्थादि ध्रुवप्रवृत्तियोंके बधक जीवोंके सातानधरु व असातानधरु इन दो भेदोंका निर्देश। ३११
- ६५ सातानधरुके ३ भेद। ३१२
- ६६ असातानधरुके ३ भेद। ३१३
- ६७ उक्त भेदोंमें सर्वविशुद्ध व सन्निहिततर अवस्थाओंका निर्देश। ३१४
- ६८ सातके चतुःस्थानप्रकारादिकोंमें तथा असातके द्विस्थानप्रकारादिकोंमें जघन्य स्थिति आदिके बधनेका नियम। ३१६
- ६९ ज्ञानावस्थादि ध्रुवप्रवृत्तियोंके स्थितिविशेषोंको आधार बन्के उनमें स्थित जीवोंकी प्ररूपणा, प्रमाण, श्रेणि, अग्रहार, भागाभाग और अल्पबहुत्व इन ६ अनुयोगद्वारोंके द्वारा प्ररूपणा। ३२०
- ७० ज्ञानोपयोग और दर्शनोपयोगके द्वारा बधने योग्य स्थितियोंका उल्लेख। ३२२
- ७१ छट् योंके अभस्तन व उपरिम भागाके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा। ३२४
- ७२ सातके व असातके चतुःस्थानादिवधनोंका अल्पबहुत्व। ३४१
- (प्रवृत्तिसमुदाहार)
- ७३ प्रवृत्तिसमुदाहारमें प्रमाणानुगम और अल्पबहुत्व इन दो अनुयोगद्वारोंका निर्देश बन्के प्रमाणानुगमके द्वारा ज्ञानावस्थादिके स्थितित्रिधाध्ययसायस्थानोंकी प्रमाण प्ररूपणा। ३४६
- ७४ उक्त स्थितित्रिधाध्ययसायस्थानोंका अल्पबहुत्व। ३४७
- (स्थितिसमुदाहार)
- ७५ स्थितिसमुदाहारमें प्रमाणना, अनुवृष्टि और तीव्र-मन्दता इन ३ अनुयोगद्वारोंका निर्देश। ३४९
- ७६ प्रमाणना द्वारा ज्ञानावस्थादि कर्मोंकी जघन्य स्थिति आदि सम्बन्धी स्थितित्रिधाध्यय सायस्थानोंकी गणना। ३५०
- ७७ अनन्तरोपनिधा और परम्परोपनिधाके द्वारा उक्त स्थितित्रिधाध्ययसायस्थानोंकी प्ररूपणा। ३५२
- ७८ श्रेणिप्ररूपणासे सूचित अग्रहार, भागाभाग और अल्पबहुत्वके द्वारा उपर्युक्त स्थानोंकी प्ररूपणा। ३५८
- ७९ अनुवृष्टि द्वारा उक्त स्थितित्रिधाध्ययसायस्थानोंकी समानता-असमानताका विचार। ३६२
- ८० तीव्र-मन्दता द्वारा उपर्युक्त स्थितित्रिधाध्ययसायस्थानोंके अनुभाग सम्बन्धी तीव्रता व मन्दताका विचार। ३६६

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१२	वेदनानिक्षेपविधान	वेदनाक्षत्रविधान
२	२२	वह आकारा है	वह क्षत्र है
३	३०	पदनाशायामारादो	पदणोनायाभाजादो
७	६	विसेसाभादो	विसेसाभाषादो
७	१२	उफफस्ता	उफफस्ता
१०	११ १४	सुत्तथा	सुत्तयो
१४	११	मो ण	मोत्तण
२५	१	परमगेगास	परमेगेगास
२६	७	”	”
२७	१	घणा	परूचना
३०	९	पुविल्ल	पुविल्ल
४८	१	घट्टावेदवा	घट्टावेदवा
९३	६	द्विदिवघट्टाणाणि लभति	द्विदिवघट्टाणाणि ण लभति
९३	२४	पचेन्द्रियोंमें पाये	पचेन्द्रियोंमें नहीं पाये
९६	१४	तदियसमओ	त्रिदियसमओ
९६	३१	तृतीय समय	द्वितीय समय
९७	१७	स्थितिसत्कर्म	स्थितिसत्कर्म
९७	२१	”	”
१००	१३	णापुणरुत्तट्टाण	ण पुणरुत्तट्टाण
१००	२६	समय देखा	समय कम देखा
१००	३१	अपुनरुत्त	पुनरुत्त
१००	३२	ताप्रतौ 'सेसफालीहिंतो ण पुणरुत्तट्टाण'	× × ×
१०४	१३	दुसमयूण	समयूण- ^२
१०४	३२	दो समय	एक समय
१०४	३३	× × ×	२ अ आ-काप्रतिषु 'दुसमयूण' इति पाठ ।
१०९	२३	शतपृथक्त्व तक	शतपृथक्त्व स्थिति तक
१२७	४	छेदभागद्वारो ।	छेदभागद्वारो होदि ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१२७	१९	अथ इत्स छेदभागहारको कहते हैं ।	इत्सका छेदभागहार होता है ।
१३१	५	पुत्र्यत्तस	पुत्र्यत्तस
१३९	५	असखेज्जगुणाओ	सखेज्जगुणाओ'
१३०	१२	योगहार' सगतो	योगहार' सगतो
१३०	१७	असख्यातगुणी	सख्यातगुणी
१३९	२६	१ अ आ काप्रतिपु	१ प्रतिपु 'असखेज्जगुणाओ' इति पाठ २ अ आ का प्रतिपु
१४०	७	समत्ते	समत्त
१४७	११	सखेज्जगुणो	असखेज्जगुणो
१५७	२६	सख्यातगुणो	असख्यातगुणो
१४७	३१	२ ताप्रतिपाठोऽयम् । प्रतिपु 'असखेज्जगुणो'	२ ताप्रतौ 'सखेज्जगुणो'
१५०	१९	उसीसे उसीके अधिक है ।	x x x
१५२	१०	स्थितिव धस्थान	स्थितिव धस्थानविशेष
१६२	७	तस्स	तस्य
१५४	१	[एव सण्णिपरिवदिय]	[सण्णिपरिवदिय]
१५८	६	एव	उक्तस्तिथा आवाहा विसेसाहिया । एव
१६८	२१	हैं । इमी	हैं । उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । इसी
१७७	३२	है स्व—स्थान	है—स्वस्थान
१९०	२७	चतुरिन्द्रिय	धादर परेन्द्रिय
१९१	११	तेइदियपज्जत्तयस्स	तेइदिय अपज्जत्तयस्स'
१९१	५७	त्रीन्द्रिय पयात्तक	त्रीन्द्रिय अपर्यात्तक
१९१	३३	x x x	प्रतिपु 'तेइदियपज्ज०' इति पाठ ।
१९२	२७	पयात्तक	अपर्यात्तक
१९२	२८	आवाधास्थान	आवाधास्त्रानविशेष
१९७	६	धादरेइदिय	वेइदिय
१९७	२१	धादर परेन्द्रिय	त्रीन्द्रिय
२०७	२३	सकलेशस्थानोंकी	विशुद्धि परिणामोंकी
२१०	४	अपज्जयस्स	अपज्जत्तयस्स
२३०	२५	५३	५३
२२२	१५	कथ असखेज्जगुणत	कथ असखेज्जगुणत्त
२२२	३०	असख्यातगुणे	सख्यातगुणे

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२०२	३१	१ अ-आ-काप्रतिपु 'सखेज्जागुणत्त,	१ ताप्रती
२२७	२४	२५	२५
२२८	३१	आबाहा	अबाहा
२२९	६	असखेज्जगुणो	असखेज्जगुणो'
२२९	१३	अपञ्जयस्स	अपज्जयस्स
२३३	१७	एकेन्द्रिये	धीन्द्रिये
२३६	१८	असखथात	असयत
२३६	२५	सखी पचेन्द्रिय	सखी मिथ्यादृष्टि पचेन्द्रिय
२४१	१५	क्षपित-गुणित घोळमान	क्षपितघोळमान थ गुणितघोळमान
२४५	२२	तीस	तेतीस
२५२	८	मुहुत्तयाबाध	मुहुत्तमा राध
२६२	२४	हे ।	हे { (१६×१२×४) × १ - (१६×१२) = ४ }
२८०	६	कम्माणमाबाहाट्टाणा	कम्माणमाबाहाट्टाणाणि
२८०	८	असखेज्जगुणाणि	सखेज्जगुणाणि
२८०	२४	असख्यातगुणे	सख्यातगुणे
२८०	३२	१ मप्रतिपाटोऽप्यम् । इति पाठ ।	१ मप्रती 'असखेज्जगुणाणि' इति पाठ ।
२८१	१	असखेज्जगुणो	सखेज्जगुणो'
२८१	१७	असख्यातगुणा	सख्यातगुणा
२८१	३३		१ प्रतिपु 'असखेज्जगुणो' इति पाठ ।
२८६	९	असखेज्जगुणो	सखेज्जगुणो'
२८६	२४	असख्यातगुणा	सख्यातगुणा
२८९	३३	× × ×	१ अ आ काप्रतिपु 'असखेज्जगुणो' इति पाठ ।
३०२	१०	विसेसाद्दिओ । मोहणीयस्स	विसेसाद्दिओ । [चटुप्पण कम्माण जइप्पणओ ट्टिदिबधो विसेसाद्दिओ ।] मोहणीयस्स
३०२	२७	हे । मोहनीयका	हे । [चार कम्मोका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक हे ।] मोहनीयका
३०३	२६	समय तक	समय कम्
३०५	१५	उत्पत्तिका	अनुत्पत्तिका
३०६	१९	घन्य	जघय
३०८	९	अणिआग-	अणिलोग-
टि० ३१३ ३३		कर्त्तृ त्रिस्थानगत.	कप स त्रिस्थानगत

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
टि० ३१४	२१	सयथिगुद्धा रस	सर्षथिगुद्धा जन्तवस्ते परावर्तमानशुभ प्रवृत्तीना चतुःस्थानगत रस
टि० ३१५	२८	ते तास-	त तासां
३१५	३०	१, ८१	१, ९१
३२५	३६	कुङ्कु-द	कुङ्कु-ध
३३२	८	पदमासु	अपदमासु*
३३२	२४	अप्रथम	अप्रथम
३३२	३१	२ अणगारप्पाउग्गा	२ प्रतिपु 'पदमासु' इति पाठ । ३ अणगारप्पाउग्गा
३३५	१३	असंख्यातगुणे	सख्यातगुणे
३३५	३०	तेभ्योऽपि ३।	यह टिप्पण न १ का अर्थ है जो टिप्पण २ के अन्तर्गत छप गया है ।
३३६	२१	देख	देय
३३६	२५	होना है ।	अशुभ होना है ।
३३८	११	अतोकोडाकोडिआवाधूणा	अतोकोडाकोडी आवाधूणा
टि० ३३९	३०	स्थितिगदायस्थिति	स्थितिदायस्थिति
३४८	३	द्विदि अथताप	द्विदियधट्टाणाण
३४८	१७	शशा-भाम	शित्तु नाम
३५९	१८	सख्यातगुणे	असख्यातगुणे
३५२	८	करो	कुत्रो
३५९	१५	रिज्जति त	रिज्जति । त
३५९	१७	रूपेषु	रूपेषु
३६२	२१	अजघन्य	जघन्य
३६३	३	निष्यगणरुद्ध*	निष्यगणरुद्ध
३६३	६	तदियच्छ	तदियच्छ
३६७	३१	समुदादारे	समुदादारे

वेयणखेत्तविहाणणिओगद्दरं
वेयणकालविहाणणिओगद्दरं

पृष्ठ	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
टि० ३१४	२२	सर्वविशुद्धा रस	सर्वविशुद्धा जन्तवस्ते परायतमानशुभ प्रकृतीनां चतुःस्थानगत रस
टि० ३१५	२८	ते तास-	त तासा
३१५	३०	१, ८१	१, ९१
३२९	२६	कुङ्कु-४	कुङ्कु*४
३३२	८	पदमासु	अपदमासु*
३३२	२४	प्रथम	अप्रथम
३३२	३१	२ अणगारप्याउग्मा	२ प्रतिपु 'पदमासु' इति पाठः । ३ अणगारप्याउग्मा
३३५	१३	असंख्यातगुणे	सख्यातगुणे
३३५	२५	तेभ्योऽपि ३।	यह टिप्पण न १ का अन्ता ही जो टिप्पण २ के अन्तर्गत छप गया है ।
३३६	२१	देष	देष
३३६	२५	होना है ।	अशुभ होना है ।
३३८	११	अतोकोडाकोडिभावाधूणा	अतोकोडाकोडी भावाधूणा
टि० ३३९	३०	स्थितिर्द्धायस्थिति	स्थितिर्द्धायस्थिति
३४८	३	द्विदि घघताण	द्विदिघघट्टाणाण
३४८	१७	शका-नाम	किंतु नाम
३४९	१८	सख्यातगुणे	असख्यातगुणे
३५२	८	कदो	कुदो
३५९	१५	रिज्जति त	रिज्जति । त
३५९	१७	रूपणु	रूपपु
३६२	२१	अजघन्य	जघन्य
३६३	३	णिव्यग्गणकदय'	णिव्यग्गणकदय
३६३	६	षदियखड	तदियखड
३६७	३१	समुदाहारे	समुदाहारे

वेयणखेत्तविहाणणिओगद्वारं
वेयणकालविहाणणिओगद्वारं



मिरि भगवत पुष्पदत्त भूदत्तलि पणीदो

छकखंडागसो

मिरि वीरसेणाहरिय विरइय धचला टीका समण्णिदो

तस्स चउरथे खडे घेयणाए

वेदणाखेत्तविहाणाणिओगद्वारं

वेयणसेत्तविहाणे त्ति तत्थ इमाणि तिण्णि अणिओगद्वाराणि
णादब्बाणि भवन्ति ॥ १ ॥

वेदणाणिनिखत्तल्लियासेत्त निनिखपिदव्व । किमइ सेत्तणिभियेनो कीरदे ?
अवगदसेत्तद्वाणपट्टिमेह काट्ठण पयदसेत्तद्वपरूवणइ । उक्त च—

अवगयणिगारणइ पयदस्स पस्सणागिमिच्च च ।

ससयणिणासणइ तच्चत्थगहारणइ च ॥ १ ॥

वेदनानिक्षेपविधान यह जो अनुयोगद्वार है उसमें ये तीन अनुयोगद्वार
ज्ञातन्य है ॥ १ ॥

वेदनामें निक्षिप्त क्षेत्रका यहा निक्षेप करना चाहिये ।

शुद्धा — क्षेत्रना निक्षेप किसलिये करते हैं ?

समाधान— अप्रवृत्त क्षेत्रस्थानना प्रतिषेध परके प्रवृत्त क्षेत्रकी अवप्ररूपणा
करके लिये क्षेत्रका निक्षेप करते हैं । कहा भी है—

अप्रवृत्तका निवारण करनेके लिये, प्रवृत्तकी प्ररूपणा करनेके लिये, सशयको
नष्ट करनेके लिये, और तत्त्वाधका निश्चय करनेके लिये निक्षेप किया जाता है ॥ १ ॥

तस्य खेत्त चउध्विह णामखेत्त दृवणखेत्त दव्वखेत्त भाउखेत्त चेदि । तस्य णाम-
दृवणखेत्ताणि सुगमाणि । दव्वखेत्त दुविहभागम णोआगमदव्वखेत्तभेएण । तस्य आगम-
दव्वखेत्त णाम खेत्तपाहुडजाणगो अणुउत्तो । णोआगमदव्वखेत्त तिउिह जाणुगसरीर भनिय-
तव्वदिरित्तभेदेण । तस्य जाणुगसरीर भनियणोआगमदव्वखेत्ताणि सुगमाणि । तव्वदिरित्त-
णोआगमखेत्तमागास । त दुविह लोगागसमनेगागाममिदि । तस्य—लोक्यन्ते उपलभ्यन्ते यस्मिन्
जीवादय* पदार्था स लोकस्तद्विपरीतस्सलोक । कउभागासस्स खेत्तउवएसो ? क्षीयन्ति
निवसन्त्यास्मिन् जीवादय इति आकाशस्य क्षेत्रउपोपत्तेः । भाउखेत्त दुविह आगम णोआगम-
भावखेत्तभेएण । त थ खेत्तपाहुडजाणगो उवउत्तो आगमभावखेत्त । सव्वदव्व्याणमपपणो
भावो णोआगमभाउखेत्त । कउ भावस्स खेत्तउवएसो ? तस्य सव्वदव्व्यावड्डाणादो ।

एत्थ णोआगमदव्वखेत्तेण अहियारो । अद्वविहकम्मदव्वस्स वेयणै ति सण्णा । वेयणाए
खेत्त वेयणाव्वेत, वेयणाखेत्तस्स विहाण वेयणारेत्तविहाणमिदि पचमस्स अणिओगद्वारास्य
गुणणाम । इदिसदो ववच्छेदकत्ते । तस्य वेयणखेत्तविहाणे इमाणि तिणिण अणिओगद्वाराणि

क्षेत्र चार प्रकार है— नामक्षेत्र, स्थापनाक्षेत्र, द्रव्यक्षेत्र और भावक्षेत्र ।
उनमें नामक्षेत्र और स्थापनाक्षेत्र सुगम हैं । द्रव्यक्षेत्र आगम और नोआगम द्रव्य
क्षेत्रके भेदसे दो प्रकार है । उनमें क्षेत्रप्राभृतका जानकार उपयोग रदित जीउ आगम
द्रव्यक्षेत्र कहलाता है । तेगागमद्रव्यक्षेत्र क्षायउशरार, भाउी और तदव्यतिरिक्तके
भेदसे तीन प्रकार है । उनमें क्षायकशरीर और भाउी नोआगमद्रव्यक्षेत्र सुगम हैं । तद्
व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यक्षेत्र आकाश है । वह दो प्रकार है— लोकाकाश और अलोका
काश । इनमें जहां जीवादिष पदार्थ वेग्ये जाते हैं या जाने जाते हैं वहा लोक है ।
उससे विपरीत अलोक है ।

शका— आकाशकी क्षेत्र सदा कैसे है ?

समाधान— 'क्षोपति अस्मिन् अथात् जिसमें जीवादिष रहते हैं वहा आकाश
है, इस निरुक्तिके अनुसार आकाशका क्षेत्र कहना उचित ही है ।

भावक्षेत्र आगम और नोआगम भावक्षेत्रके भेदसे दो प्रकार है । उनमें क्षेत्र
प्राभृतका जानकार उपयोग सुत्त जीव आगमभावक्षेत्र है । सब द्रव्योंका अपना अपना
भाव नोआगमभाउक्षेत्र कहलाता है ।

शका— भाउकी क्षेत्र सदा कैसे हो सकती है ?

समाधान— उसमें सब द्रव्योंका अवस्थान होनेसे भाउकी क्षेत्र संज्ञा बन
जाती है ।

यदा नोआगमद्रव्यक्षेत्रका अधिकार है । आठ प्रकारके कमद्रव्यकी वेदना
संज्ञा है । वेदनाका क्षेत्र वेदनाक्षेत्र, वेदनाक्षेत्रका विधान वेदनाक्षेत्रविधान । यह पांचवें
अनुयोगद्वाराका गुणनाम है । सूत्रमें स्थित 'इति' शब्द व्यवच्छेद करनेवाला है ।
उस वेदनाक्षेत्रविधानमें ये तीन अनुयोगद्वार हैं ।

१ प्रतिशु 'सव्वदिरित्त ति' तावतो सव्वदिरित्त [म] ति इति पाठ । २ प्रतिशु दव्वस्स वग्गवेयणा ति इति पाठ ।

हन्ति । एत्थ अहियारा तिण्णि चेव किमट्ट परूणिवज्जति ? ण, अण्णेसिमैत्थ सभवाभावादो । कुदो ? [ण] सखा-ट्ठाण-जीवसमुदाहाराणेत्य सभवो, उक्कस्साणुक्कस्स जहण्णाजहण्णभेद-भिण्णमामित्ताणिओगदारे एदेसिमत्तमात्तादो । ण ओज जुग्माणिओगदारस्स वि सभवो, तस्स पदमीमासाए पपेसादो । ण गुणगाराणिओगदारस्स वि सभवो, तस्स अप्पावहुए पपेसादो । तम्हा तिण्णि चेव अणिओगदाराणि होति ति सिद्ध ।

पदमीमासा सामित्त अप्पावहुए त्ति ॥ २ ॥

पदम चेव पदमीमासा किमट्टमुच्चदे ? ण, पदेसु अणवगएसु सामित्तप्पानहुआण परूणणोयायाम्हादो । तदणतर सामित्ताणिओगदारेमेव किमट्ट वुच्चदे ? ण, अणवगए पदप्पमाणे तदप्पानहुगाणुववत्तीदो । तम्हा एमेव अहियारिण्णासक्कमो इच्छियव्वो, गिरवज्जत्तादो ।

**पदमीमासाए णाणावरणीयवेपणा सेत्तदो किं उक्कस्सा कि-
मणुक्कस्सा किं जहण्णा किमजहण्णा ? ॥ ३ ॥**

शंका— यहाँ केवल तीन ही अधिकारोंकी प्ररूपणा किसलिये की जाती है ।

समाधान— तहाँ, क्योंकि, और दूसरे अधिकार यहा सम्भव नहीं हैं । कारण कि सत्त्या, स्थान और जीवसमुदाहार तो यहाँ सम्भव नहीं हैं, क्योंकि, इनका अठमोय उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य य अजघन्य भेदसे भिन्न स्वामित्तअनुयोगद्वारमें होता है । ओज जुग्मानुयोगद्वार भी सम्भव नहीं है, क्योंकि, उसका प्रवेश पदमीमासामें है । गुणवार अनुयोगद्वार भी सम्भव नहीं है, क्योंकि, उसका प्रवेश अल्पबहुत्वमें है । इस कारण तीन ही अनुयोगद्वार हैं, यह सिद्ध है ।

पदमीमासा, स्वामित्त और अल्पबहुत्व, ये तीन अनुयोगद्वार यहा ज्ञातय्य हैं ॥ २ ॥

शंका— पदमीमासाके पहिले ही किसलिये कहा जाता है ?

समाधान— चूकि पदोंका ज्ञान न होनेपर स्वामित्त और अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की नहीं जा सकती, अत एव पहिले पदमीमासाकी प्ररूपणा की जा रही है ।

शंका— उसके पश्चात् स्वामित्त अनुयोगद्वारको ही किसलिये कहते हैं ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, पदप्रमाणका ज्ञान न होनेपर उनका अल्पबहुत्व धन नहीं सकता । इस कारण निर्दोष होनेसे उक्त अधिकारोंके इसी विन्यासक्रमको स्वीकार करना चाहिये ।

पदमीमासामें— ज्ञानावरणीयकी वेदना क्षेत्रकी अपेक्षा क्या उत्कृष्ट है, क्या अनुत्कृष्ट है, क्या जघन्य है, और क्या अजघन्य है ? ॥ ३ ॥

एतद्य पापावरणगहणेण सेसकम्माण पट्टिसेहो कदो । दान काल भावादिपट्टिमदद
 वेत्तणिहेसो कदो । एद पुच्छासुत्त देसामामिय, तण अण्णाओ वा पुच्छाओ एदण
 सुचिदाओ । तम्हा पापावरणीययेयणा त्रिमुक्कस्सा, त्रिमणुक्कस्सा, किं जहणा, किमजहणा,
 किं सादिया, किमणादिया, किं पुत्ता, त्रिमणुत्ता, किमोत्ता, किं पुत्ता, त्रिमणा, किं त्रिमिद्धा,
 किं णोम णोविमिद्धा ति वत्तव । एत पापावरणीययेयणाण त्रिसेसामाणेण सामण्णसण सामण्ण
 त्रिसेसाविणाभानि ति कट्टे तेरस पुच्छाओ परुविदाओ । एदेषेण सुत्तेण सुचिदा ओ अण्णाओ
 तेरसपद्विसयपुच्छाओ वत्तव्वाओ । त त्हा — उदरस्सा पापावरणीयययणा त्रिमणुक्कस्सा, किं
 जहणा, त्रिमजहणा, किं सादिया, त्रिमणादिया, किं पुत्ता, किमणुत्ता, त्रिमोत्ता, किं पुत्ता,
 त्रिमोत्ता, किं त्रिमिद्धा, किं णोम णोविमिद्धा ति साम पुच्छाओ उदरस्सपदस्स दस्सति । एत
 सेसपदान पि वारस पुच्छाओ वादेरक गयत्ताओ । एत स उपुच्छाणामो णूत्ता-
 सनरिसदमेतो । १६९ । तम्हा एदग्घि देसामामियसुत्ते णाणाणि तम सुत्ताणि दद्वन्नाणि ति ।

उक्कस्सा वा अणुक्कस्सा वा जहणा वा अजहणा वा ॥४॥

एद पि देसामामियसुत्त । तेणेत्य सेमणपदाणि तत्तन्नाणि । तेसामात्रियत्तादेो चेर
 मेसतेरससुत्ताणमेत्थ अत्तन्नाओ वत्तवो । तत्थ ताण पदपुत्तवत्तणा कीरदे । त जहा —

सूत्रमें ज्ञानावरण पदका ग्रहण करके दोष कमादा प्रतिषेध किया गया है ।
 अथ, काल और भाव आदिका प्रतिषेध करके त्रिय शेषका निदर्श दिया है । यह
 पृच्छासूत्र देशामशक है, इसलिये इससे द्वारा अन्य ना पृच्छाए सूचित की गई हैं ।
 इस कारण ज्ञानावरणकी घेदना क्या उत्कृष्ट है, क्या अनुत्कृष्ट है, क्या अजघय है, क्या
 अजघय है, क्या सादिक है, क्या अनादिक है, क्या ध्रुव है, क्या अध्रुव है, क्या भोज
 है, क्या युग्म है, क्या श्लोम है, क्या त्रिशिष्ट है, और क्या नाम-त्रिशिष्ट है, ये सब कहा
 चाहिये । इस प्रकार सामान्य सूक्ति विशेषका अधिाभाषी है अत विशेषका अभाव
 होनेसे सामान्य स्वरूप ज्ञानावरणीयवेदनासे त्रिययम इत तेरह पृच्छाओंकी प्ररूपणा
 की गई है । इसी सूत्रसे सूचित अथ तरह पद विषयक पृच्छाओंका पदना चाहिये ।
 यथा — उत्कृष्ट ज्ञानावरणवेदना क्या अनुत्कृष्ट है, क्या अजघय है, क्या अजघय है,
 क्या सादिक है, क्या अनादिक है, क्या ध्रुव है, क्या अध्रुव है, क्या भोज है, क्या युग्म
 है, क्या श्लोम है, क्या त्रिशिष्ट है और क्या नाम त्रिशिष्ट है, ये सब पृच्छाए
 उत्कृष्ट पदके विषयमें होती हैं । इसी प्रकार शेष पदोंमेंसे भी प्रत्येक पदक विषयमें
 वारह पृच्छाए करना चाहिये । यहा सब पृच्छाआदा जोड़ एक सा उत्तर (१६९)
 मात्र होता है । इसी कारण इस देशामशक सूत्रमें अथ तरह सूत्रोंको देवना चाहिये ।

उत्त वेदना उत्कृष्ट भी है, अनुत्कृष्ट भा है जघय भी है, और अजघय भी है ॥४॥

यह भी देशामशक सूत्र है । इसलिये यहा शेष ना पदोंको कहना चाहिये ।
 देशामशक होनेसे ही इस सूत्रमें दोष तेरह सूत्रोंका अतभाव कहना चाहिये । उनमें
 पहिले प्रथम सूत्रकी प्ररूपणा करते हैं । यह इस प्रकार है—ज्ञानावरणीयका घेदना

१ त्रियु ' सामण ' इति पाठ । २ त्रियु ' एद हि ' इति पाठ ।

णाणावरणीयत्रेयणा खेत्तशे सिया उक्कमा, अट्टरन्नुम सुक्कमारणतियमहामच्छमि उक्कस्स-
खेत्तुलमादो । सिया अणुक्कम्मा, अणुक्कव अणुक्कस्सपेत्तदसणादो । सिया जहण्णा,
तिसमयआहारय तिसमयत्तभन्त्थसुहुमणिगोदग्धि जहण्णखेत्तुलमादो । सिया आहण्णा,
अणुत्थ अहण्णखेत्तदसणादो । मिया सादिया, पञ्जनाडियणण अलविज्जमाणे सव्वखेत्ताण
सादित्तुवलमादो । सिया अणादियाँ, दव्वण्डियणण अलविज्जमाणे अणादित्तदसणादो ।
मिया पुना, दव्वण्डियणण पणुच्च णाणावरणीयत्तेत्तस्स सव्वलोगम्म धुत्तुवलमादो । सिया
अट्टुना, पञ्जवडिय पणुच्च अट्टुत्तदसणादो । सिया ओत्ता, कथ वि खेत्तविसेसे कलि
तेत्तोज्जसाविसेसाणमुवलमादो । मिया लुम्मा, कथ वि खेत्तविसेसे कद-आदरजुम्माणे
ससाविसेसाणमुवलमादो । सिया थामा, कथ वि रोत्तविसेसे परिहाणिदमणादो । मिया
विमिद्धा, कथ वि वड्ढिदसणादो । मिया णोम णोत्रिसिद्धा, कथ वि वड्ढि हाणीहि त्रिणा
खेत्तस्स अनट्टाणदसणादो । १३] ।

सपहि विरियसुत्तथो उक्कदे । त जहा— उक्कस्सणाणावरणीयत्रेयणा जहण्णा
अणुक्कस्सा च ण हादि, पडिक्कत्तादो । मिया अजहण्णा, जहण्णादो उपरिमा-
मेसखेत्तियण्णावड्ढिदे अजहण्णे उक्कस्सस्म वि सभादो । मिया सादिया,

क्षेत्रकी अपेक्षा कथंचित् उत्तरे है, क्योंकि, आठ राजुओंमें मारणातिक समुद्रघातको
करनेवाले महामत्स्यके उत्तरे क्षेत्र पाया जाता है । कथंचित् यह अनुत्तरे है,
क्योंकि, महामत्स्यको छोड़कर अन्यत्र अनुत्तरे क्षेत्र देखा जाता है । कथंचित् यह
जघन्य है, क्योंकि, तिसमयवर्ती आहारक य तिसमयवर्ती तद्भवत्थ सुद्धम गिगोद
जीवक जघन्य क्षेत्र पाया जाता है । कथंचित् यह वजघन्य है, क्योंकि, उक्त
सुद्धम गिगोद जीवको छोड़कर अन्यत्र वजघन्य क्षेत्र देखा जाता है । कथंचित् यह
सादिक है, क्योंकि, पयायार्थिक नयका आश्रय करेपर सब क्षेत्रोंके सादिता पायी
जाती है । कथंचित् यह अनादिक है, क्योंकि, द्रयार्थिक नयका आश्रय करेपर
अनादिपना देखा जाता है । कथंचित् यह धुत्त है, क्योंकि, प्रव्यार्थिक तयकी अपेक्षा
ज्ञाणावरणीय कमका क्षेत्र जो सब लोक है वह धुत्त देखा जाता है । कथंचित् यह
अधुत्त है, क्योंकि पयायार्थिक तयकी अपेक्षा उक्त क्षेत्रके अधुत्तपा भी देखा जाता
है । कथंचित् यह भोज है, क्योंकि, किसी क्षेत्रविशेषमें कलिभोज और तेजोत्त सरया
विशेष पायी जाती है । कथंचित् यह युग्म है, क्योंकि, किसी क्षेत्रविशेषमें वृत्तयुग्म
और वादरयुग्मके विशेष सरयाये पाया जाती है । कथंचित् यह ओम है, क्योंकि,
किसी क्षेत्रविशेषमें हानि देखी जाती है । कथंचित् यह विशिष्ट है, क्योंकि, वहाँपर
वृद्धि देखी जाती है । कथंचित् यह नोम-नोत्रिसिष्ट है, क्योंकि, वहाँपर वृद्धि और
हानिके बिना क्षेत्रका अवस्थान देखा जाता है (१३) ।

अत्र द्वितीय सूत्रका अर्थ कहते हैं । यह हम प्रकार है—उत्तरे ज्ञाणावरणीय
वेदना जघन्य और अनुत्तरे नहीं है, क्योंकि, ये उसके प्रतिपक्षभूत हैं । कथंचित् यह
अजघन्य भी है, क्योंकि, जघन्यसे उपरके समस्त विकल्पोंमें रहनेवाले अजघन्य
पदमें उत्तरे पद भी सम्भव है । कथंचित् यह सादिक भी है, क्योंकि, अनुत्तरे

१ त्रियु 'अद्' इति पाठ । २ तावती 'अणादि' इति पाठ ।

३ अत्रावली 'जहण्णा अहण्णा', तावती 'जहण्णाजहण्णा' इति पाठ ।

अणुक्कस्सादो उक्कस्सखेतुप्पतीए । मिया अहुवा, उक्कस्सपद्म सन्नालमवद्वाणा-
मावादो । सिया कदलुम्मा, उक्कस्सखेतम्मि घादरजुम्म कलित्तेजोअमसाविसेसाणमणु
बलमादो । सिया गोम गोपिसिद्धा, वड्ढिदे हाद्रे च उक्कस्सत्तिरोहादो । एव उक्कस्स-
णाणावरणीयवेयणा पचपदप्पिया' । ५ ।।

अणुक्कस्सणाणावरणीयवेयणा मिया जहण्णा, उक्कस्स मोत्तूण सेमहेट्टिमा-
सेसवियप्पे अणुक्कस्से जहण्णस्स [वि] मभवादो । सिया अजहण्णा, अणुक्कस्सस्स अजहण्णा
विणामावित्तादो । सिया सादिया, उक्कस्सादो अणुक्कस्सुप्पतीदो अणुक्कस्सादो वि
अणुक्कस्सविसेसुप्पत्तिदसणादो च । अणादिया ण होदि, अणुक्कस्सपदविसेसम विअकिय-
त्तादो । अणुक्कस्ससामण्णम्मि अप्पिदे वि अणादिया ण होदि, उक्कस्सादो अणुक्कस्स-
पदपदिद पडि सादित्तदसणादो । ण च णिच्चणिगोदेसु अणादित्त ट्ठमदि, तत्थ अणुक्कस्स-
पदाण पल्लट्टणेण सादित्तुत्तलमादो । मिया अहुवा, अणुक्कस्सपदविसेसस्स सन्वदा
अवद्वाणामावादो । सामण्णे अस्सिदे वि धुत्त णत्थि, अणुक्कस्सादो उक्कस्सपद पडिवज्ज-
माणजाउदसणादो । सिया ओजा, कत्थ वि परविसेसे अवट्टिदहुविह्विममसुत्तलमादो ।
सिया लुम्मा, कत्थ वि अणुक्कस्सपदविसेसे दुविह्वसमसुत्तलमादो । सिया ओमा, कत्थ
क्षेत्रस उत्तए क्षेत्रकी उत्पत्ति है । कथंचित् यह अद्युत्त भी है, क्योंकि, उत्तए पद सर्परा
नहीं रहता । कथंचित् यह वृत्तयुग्म भी है क्योंकि, उत्तए क्षेत्रमें घादरयुग्म, कलिभोज
और तेजोज रूप विशेष सरयायें नहीं पायी जातीं । कथंचित् यह मोम-नाविशिष्ट भी है
क्योंकि, यद्धि और हानिवे होनेपर उत्तएपनेका विरोध है । इस प्रकार उत्तए
शानावरणीयवेदना पाँच (५) पद स्वरूप है ।

अनुरत्तए शानावरणीयवेदना कथंचित् जघय है, क्योंकि, उत्तएको टोहकर
शेप सब नीचेके विकल्प रूप अनुरत्तए पदमें जघय पद भा सम्मय है । कथंचित्
यह अजघय भी है, क्योंकि, अनुरत्तए अजघयका अधिनाभावी है । कथंचित् यह
सादिक भी है, क्योंकि, उत्तए पदसे अनुरत्तए पदकी उत्पत्ति है, तथा अनुरत्तएसे भी
अनुरत्तएविशेषकी उत्पत्ति देखी जाती है । यह अनादिक नहीं है, क्योंकि, यहाँ
अनुरत्तए पदविशेषकी विज्ञा है । अनुरत्तए सामा पकी विज्ञा करोपर भी यह अनादि
नहीं हो सकता, क्योंकि, उत्तएसे अनुरत्तए पदमें गिरनेकी विज्ञा सादिपना देरा जाता
है । यदि कहा जाय कि नित्य निगोत् जीरोंमें उसका अनादिपना पाया जाता है, सो भी ठीक
नहीं है, क्योंकि, उनमें भी अनुरत्तए पदोंके पलटनेसे सादिपना पाया जाता है । कथंचित्
यह अद्युत्त भी है, क्योंकि, सबदा एक अनुरत्तए पदविशेष रह नहीं सकता । सामायका
माध्य करनेपर भी धुवपना सम्मत् नहीं है, क्योंकि, अनुरत्तएसे उत्तए पदको प्राप्त होने
वाले जीव देखे जाते हैं । कथंचित् यह भोज भी है, क्योंकि किसी पदविशेषमें अवस्थित
दोनों प्रकारकी विषम सख्या पायी जाती है । कथंचित् यह युग्म भी है, क्योंकि,
किसी अनुरत्तए पदविशेषमें दोनों प्रकारकी सम सख्या देखी जाती है । कथंचित् यह

वि हाणीदो' समुष्पणअणुक्कस्सपदुवलभादो । सिया विसिद्धा, कत्थ वि वट्ठीदो अणुक्कस्स-
पदुवलभादो । सिया गोम गोत्रिसिद्धा, अणुक्कस्स-जहणम्मि अणुक्कस्सपदविसेसे वा आधिदे
वट्ठी हाणीणमभावादो । एव णाणावरणाणुक्कस्सवेयणा णवपदप्पिया | ९ | एव तदियसुत्त
परूणा कदा ।

सपहि चउत्त्यसुत्तपरूणा कीरेदे । त जहा— जहणा णाणावरणीयेणा सिया
अणुक्कस्सा, अणुक्कस्सजहणस्म ओधजहण्णेण त्रिसेसाभादो । सिया सादिया, अजहणादो
जहणपदुप्पीए । सिया अट्टुना, सासदमारिणं अट्टाणाभावादो । अणादिय धुवपदाणि णत्थि,
जहणक्खेत्तत्रिसेसग्गि अणादिय धुत्ताणुत्तलभादो । सिया जुम्मा, चट्टुहि अवहिरिज्जमाणे
गिरग्गतदसणादो । सिया गोम गोत्रिसिद्धा, तत्थ वट्ठी-हाणीणमभावादो । एव जहणक्खेत्त
वेयणा पचपयारा सरूवेण रूप्पयारा वा | ५ | एव चउत्त्यसुत्तपरूणा कदा ।

सपहि पचमसुत्तपरूणा कीरेदे । त जहा— अजहणा णाणावरणीयेयणा सिया
उक्कसा, अजहणुक्कस्सस्स ओधुक्कसादो पुधत्ताणुत्तलभादो । सिया अणुक्कस्सा,
तदविणामावादो । सिया सादिया, पल्लट्टणेण विणा अजहणपदत्रिसेमाणमवट्टाणाभावादो ।
सिया अट्टुना । कारण सुग्गम । सिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया ओमा, सिया त्रिसिद्धा ।

ओम भी है, क्योंकि, कहाँपर हाँसे भी उत्पन्न अनुत्कृष्ट पद पाया जाता है । कथंचित्
वह विशिष्ट भी है, क्योंकि, कहाँपर वृद्धिसे अनुत्कृष्ट पद पाया जाता है । कथंचित् वह
नोम-नोविशिष्ट भी है, क्योंकि, अनुत्कृष्ट जघयमें अथवा अनुत्कृष्ट पदविशेषकी
विशेषता करनेपर वृद्धि और हानि नहीं पायी जाती है । इस प्रकार ज्ञानावरणकी अनुत्कृष्ट
वेदना नो (९) परात्मक है । इस प्रकार तीसरे सूत्रकी अर्थप्ररूपणा की गई है ।

अथ चतुर्थ सूत्रकी अर्थप्ररूपणा करते हैं । यह इस प्रकार है—जघय ज्ञानावरणीय
वेदना कथंचित् अनुत्कृष्ट है, क्योंकि, अनुत्कृष्ट जघय ओधजघयसे भिन्न नहीं है ।
कथंचित् वह सादिक भी है, क्योंकि, अजघयसे जघय पद उत्पन्न होता है ।
कथंचित् वह अधय भी है, क्योंकि, उसका सर्वदा अवस्थान नहीं रहता । अनादि
और ध्रुव पद उसके नहीं है, क्योंकि, जघय क्षेत्रविशेषमें अनादि एवं ध्रुवपना नहीं
पाया जाता । कथंचित् वह सुग्गम है, क्योंकि, उसे चारसे अपहृत करनेपर शेष कुछ
नहीं रहता । कथंचित् वह नोम-नोविशिष्ट है, क्योंकि, उसमें वृद्धि और हानिका
अभाव है । इस प्रकार जघय क्षेत्रवेदना पांच (५) प्रकार अथवा अपने रूपके साथ
छह प्रकार है । इस प्रकार चतुर्थ सूत्रकी प्ररूपणा की है ।

अथ पांचवें सूत्रकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है—अजघय ज्ञाना
वरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट है, क्योंकि, अजघन्य उत्कृष्ट ओधउत्कृष्टसे पृथक् नहीं
पाया जाता । कथंचित् वह अनुत्कृष्ट भी है, क्योंकि, वह उसका अधिनाभावी है ।
कथंचित् वह सादिक भी है, क्योंकि, पलटनेके बिना अजघय पदविशेषोंका अवस्थान
नहीं है । कथंचित् वह अलुप भी है । इसका कारण सुग्गम है । कथंचित्
वह ओजा भी है, सुग्गम भी है, ओम भी है, और विशिष्ट भी है । इसका कारण सुग्गम

विवक्खामावादो । सामण्णविक्खत्ताए पुण सतीए तत्थ वि ण्दे दो भगा वत्तच्चा । सिया
ओमा, सिया विसिद्धा, सिया गोम-गोविसिद्धा । एवमोजस्स णव भगा दस भगा वा । ९ ।
एसो दसमसुत्तत्थो ।

जुम्मणाणावरणीयवेयणा मिया उक्कस्सा, मिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा,
सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अणादिया, मिया धुवा, सिया अद्दुवा, सिया
ओमा, सिया विसिद्धा, सिया गोम गोविसिद्धा । एव जुम्मस्स एक्कारस चारस भगा वा,
। ११ । एसो एक्कारसमसुत्तत्थो ।

ओमणाणारणीयवेयणा मिया अणुक्कस्सा, मिया अजहण्णा, सिया सादिया ।
सिया अणादिया, ओमत्तसामण्णविक्खत्ताए । मिया धुवा तेणेन कारणेण । सिया अद्दुवा ।
सामण्णविक्खत्ताए अभावेण दत्तविहाणे ओमस्स अणादिय धुवत्त ण परूहिद । सिया ओजा,
सिया जुम्मा । एवमोमवदस्स अट्ठ णव भगा वा । ८ । एमो चारममसुत्तत्था ।

विसिद्धणाणावरणीयवेयणा मिया अणुक्कस्सा, मिया अजहण्णा, सिया सादिया,
सिया अणादिया, सिया धुवा, मिया अद्दुवा, सिया ओजा, सिया जुम्मा । एव विसिद्ध-
पदस्स अट्ठ भगा णव भगा वा । ८ । एसो तेरसमसुत्तत्था ।

समाधान — नहीं, क्योंकि, यहा सामान्यकी विवक्षाका अभाव है। यदि सामान्यकी
विवक्षा अभीष्ट हो तो यहा भा इत दो पदोंको कहना चाहिये।

यह कथञ्चित् ओम, कथञ्चित् विशिष्ट और कथञ्चित् नोम-नोविशिष्ट भी है।
इस प्रकार तीन पदके नौ (९) भग अथवा दस भग होते हैं। यह दसवें सूत्रका अर्थ है।

युग्मज्ञानारणीयवेदना कथञ्चित् उत्तट्ट, कथञ्चित् अनुत्तट्ट, कथञ्चित् अजघय,
कथञ्चित् अजघय, कथञ्चित् सादि, कथञ्चित् अनादि, कथञ्चित् ध्रुव, कथञ्चित् अध्रुव,
कथञ्चित् ओम, कथञ्चित् विशिष्ट और कथञ्चित् नोम नोविशिष्ट भी है। इस प्रकार युग्म
पदके ग्यारह (११) अथवा बारह भग होते हैं। यह ग्यारहवें सूत्रका अर्थ है।

ओमज्ञानारणीयवेदना कथञ्चित् अनुत्तट्ट, कथञ्चित् अजघय य कथञ्चित्
सादि भी है। यह कथञ्चित् अनादि भी है, क्योंकि, ओमत्व सामान्यकी विवक्षा है।
इसी कारणसे यह कथञ्चित् ध्रुव भा है। कथञ्चित् यह अध्रुव भी है। सामान्यकी
विवक्षा न होनेसे द्वायविधानमें ओमके अनादि और ध्रुव पद नहीं कहे गये हैं।
यह कथञ्चित् ओज और कथञ्चित् युग्म भी है। इस प्रकार ओम पदके आठ (८) अथवा
नौ भग होते हैं। यह बारहवें सूत्रका अर्थ है।

विशिष्टज्ञानारणीयवेदना कथञ्चित् अनुत्तट्ट, कथञ्चित् अजघन्य, कथञ्चित्
सादि, कथञ्चित् अनादि, कथञ्चित् ध्रुव, कथञ्चित् अध्रुव, कथञ्चित् ओज और कथञ्चित्
युग्म भी है। इस प्रकार विशिष्टपदके आठ (८) अथवा नौ भग होते हैं। यह
बारहवें सूत्रका अर्थ है।

गोम गोविसिद्धा णाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, मिया सादिया । सिया अणादिया । कुदो ? गोम गोविसिद्धत्तं-
निवस्साए । सिया धुवा तेणेव कारणेण । सिया अद्धा, मिया ओजा, सिया लुम्मा । एवं
दस भगा एक्कारस भगा वा [१०] । एसी चोदसमसुत्तथो ।

एदेसिं भगणमक्कविण्णासो — | १३ | ५ | ९ | ५ | ९ | १० | १२ | १२ |
१० | ९ | ११ | ८ | ८ | १० | ।

एव सत्तण कम्माण ॥ ५ ॥

जहा णाणावरणीयस्स पदमीमासा कदा तहा सेससत्तण कम्माण पदमीमासा
कायव्वा । पंचमतोसित्तोजाणियोगहारपदमीमासा समत्ता ।

सामित्तं दुविह जहण्णपदे उक्कस्सपदे ॥ ६ ॥

तत्थ जहण्ण चउत्तिह णाम द्ववणा दव्व मावजहण्णमिदि । णामजहण्ण द्ववणा-
जहण्ण च मुगम । दव्वजहण्ण दुविह आगमदव्वजहण्ण णोआगमदव्वजहण्ण चेदि । तत्थ
जहण्णपाहुडजाणओ अणुजुत्तो आगमदव्वजहण्ण । णोआगमदव्वजहण्ण तिविह, जाणुग-

गोम-नोविशिष्टज्ञानावरणीयवेयना कथंचित् उत्कृष्ट, कथंचित् अनुकृष्ट,
कथंचित् अधन्य, कथंचित् अजघय य कथंचित् सादि मी है । कथंचित् यह अनादि मी है,
क्योंकि, गोम गोविशिष्टत्व सामान्यकी विवक्षा है । इसी कारणसे यह कथंचित् ध्रुव
मी है । यह कथंचित् अध्व, कथंचित् ओज और कथंचित् युग्म मी है । इस प्रकार
गोम गोविशिष्ट पदके दस (१०) भग अथवा ग्यारह भग होते हैं । यह चौदहवें
सूत्रका अर्थ है ।

इन भगोंका अकथिन्यास इस प्रकार है— १३ + ५ + ९ + ५ + ९ + १० +
१२ + १२ + १० + ९ + ११ + ८ + ८ + १० = १३२ ।

इसी प्रकार सात कर्मोंकी पदमीमासा सम्बन्धी प्ररूपणा करना चाहिये ॥ ५ ॥

जिस प्रकार ज्ञानावरणीयकी पदमीमासा की है उसी प्रकार शेष सात कर्मोंकी
पदमीमासा करना चाहिये । इस प्रकार ओजाणुयोगेद्वारगमित पदमीमासा
समाप्त हुई ।

स्वामित्व दो प्रकार है— जघन्य पदरूप और उत्कृष्ट पदरूप ॥ ६ ॥

उनमें जघय पद चार प्रकार है— नामजघय, स्थापनाजघय, द्रव्यजघय
और भावजघय । इनमें नामजघय और स्थापनाजघय सुगम है । द्रव्यजघय दो
प्रकार है— भागमद्रव्यजघय और नोभागमद्रव्यजघय । इनमें जघय प्राभुतका
आनकार उपयोग रहित जीव भागमद्रव्यजघय कहा जाता है । नोभागमद्रव्यजघय

सरीर भविय-तन्त्रदिरित्तणोभागमदव्यजहण्णभेदेण । जाणुगसरीर भविय गद । तन्त्रदिरित्त
णोभागमदव्यजहण्ण दुविह-ओघनहण्णमादेसेण जहण्ण चेदि । तत्थ ओघजहण्ण
चउव्विह — दव्वदो खेत्तदो कालदो भावदो चेदि । तत्थ दव्वजहण्णमेगो
परमाणू । खेत्तनहण्ण दुविह कम्म-णोकम्मखेत्तजहण्णभेदेण । तथ सुहुमणिगोदस्स
जहण्णिया ओगाहणा कम्मखेत्तनहण्ण । णोऋम्मखेत्तजहण्णमेगो आगासपदेसो । कालजहण्ण
मेगो समओ । माननहण्ण परमाणुमिद्द णिद्धत्तादिगुणो' । आदेसजहण्ण पि दव्व-खेत्त-काल
भावभेदेहि चउव्विह । तथ दव्वदो आदेसजहण्ण उच्चदे । त जहा — तिपदेसिय खध
ददूण दुपदेसियपयो आदेसदो दव्वजहण्ण । एव सेसेसु त्रि णेदव्व । तिपदेसोगाददव्व ददूण
दुपदेसोगाददव्व खेत्तदो आदेसजहण्ण । एव सेसेसु त्रि णेदव्व । तिसमयपरिणद ददूण
दुसमयपरिणद दव्वमादेसदो कालनहण्ण । एव सेसेसु त्रि णेदव्व । तिगुणपरिणद दव्व
ददूण दुगुणपरिणद दव्व भावदो आदेसजहण्ण ।

भावनहण्ण दुविह आगम णोआगममाननहण्णभेदेण । तत्थ जहण्णपाहुडजाणओ
उव्वजुत्तो आगममाननहण्ण । सुहुमणिगोदजीवलद्धिअपज्जत्तयस्स ज सन्त्रजहण्ण णाण त

तीन प्रकार है—शायकशरीर, भावी और तद् यतिरिक्त । इनमें शायकशरीर और
भावी अचगत हैं । तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यजघय दो प्रकार हैं—ओघजघय और
आदेशजघय । इनमें ओघजघय द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा चार प्रकार
है । उनमें द्रव्यजघय एक परमाणु है । क्षेत्रजघय कमक्षेत्रजघय और नोकर्मक्षेत्रजघयके
भेदसे दो प्रकार है । उनमें सूक्ष्म तिगोद जीवकी जघय अवगाहना कमक्षेत्रजघय
है । नोकर्मक्षेत्रजघय एक आकाशप्रदेश है । एक समय कालजघय है । परमाणुमें
रहनेवाला क्षिप्रत्व आदि गुण भावजघय है ।

आदेशजघय भी द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावके भेदसे चार प्रकार है । उनमें
द्रव्यसे आदेशजघयको घतलाते हैं । यह इस प्रकार है—तीन प्रदेशवाले स्कन्धको
देखकर दो प्रदेशवाला स्कन्ध आदेशसे द्रव्यजघय है । इसी प्रकार शेष स्कन्धोंमें
(चार प्रदेशवालेकी अपेक्षा तीन प्रदेशवाला, पांच प्रदेशवालेकी अपेक्षा चार
प्रदेशवाला स्कन्ध इत्यादि) भी ले जाना चाहिये । तीन प्रदेशोंको अवगाहनकरनेवाले
द्रव्यकी अपेक्षा दो प्रदेशोंको अवगाहन करनेवाला द्रव्य क्षेत्रकी अपेक्षा आदेशजघय
है । इसी प्रकार शेष प्रदेशोंमें भी ले जाना चाहिये । तीन समय परिणत द्रव्यको
देखकर दो समय परिणत द्रव्य आदेशसे कालजघय है । इसी प्रकार शेष समयोंमें
भी ले जाना चाहिये । तीन गुण परिणत द्रव्यको देखकर दो गुण परिणत द्रव्य
भावसे आदेशजघय है ।

भावजघय आगमभावजघय और नोआगमभावजघयके भेदसे दो प्रकार
है । उनमें जघय प्राभूतका जानकार उपयोग युक्त जीव आगमभावजघय है । सूक्ष्म
तिगोद जीव लक्ष्यपयात्कका जो सबसे जघय जान है वह नोआगमभावजघय है ।

णोभागमभावग्रहण । एत्थ ओघग्रहणखेत्तेण पयद, णाणावरणीयखेत्तेसु सध्वजग्रहणखेत्त
ग्रहणदो । सध्वजग्रहणखेत्तमेगो आगासपदेसो ति एत्थ ण धेत्तन्न, णाणावरणीयखेत्तेसु
तदभावादो ।

उक्कस्स चउविह णाम द्वण्णा दव्व मावुक्कस्सभएण । तत्थ णाम द्वण्णुक्कस्समाणि
सुगमाणि । दव्वुक्कस्स दुविह आगम णोआगमदव्वुक्कस्सभएण । तत्थ उक्कस्सपाहुद्व-
जाणगो अणुवज्जुतो आगमदव्वुक्कस्स । णोआगमदव्वुक्कस्स तिविह जाणुगमरीर भविय
तद्वदिरित्तोआगमदव्वुक्कस्सभेदेण । जाणुगमरीर भवियणोआगमदव्वुक्कस्समाणि सुगमाणि ।
तद्वदिरित्तोआगमदव्वुक्कस्स दुविह— ओघुक्कस्समादेसुक्कस्स चेदि । तत्थ ओघुक्कस्स
चउविह— दव्वदो गेत्तदो कालदो भावदो चेदि । तत्थ दव्वदो उक्कस्स महाखधो ।
खेत्तुक्कस्स दुविह— कम्मस्सत्तेण णोक्कस्सखेत्तमिदि । कम्मखेत्तुक्कस्स लोगागास । णोक्कस्स-
क्खेत्तुक्कस्स आगासदव्व । कालदो उक्कस्समणता लोगा । भावदो उक्कस्स सव्वुक्कस्स
वण्ण गध-रम पामा । आदेसुक्कस्स पि चउविह— दव्वदो गेत्तदो कालदो भावदो चेदि ।
तत्थ दव्वदो एगपरमाणु दद्वृण्ण दुपदेसियक्खधो आदेसुक्कस्स । दुपदेमियत्तन्न दद्वृण्ण
तिपदेमियत्तन्नवो नि आदेसुक्कस्स । एव संभेसु नि णेदन्न । रोत्तदो एयक्खेत्त दद्वृण्ण

यहा ओघग्रहण क्षेत्र प्रकृत है, क्योंकि, क्षान्तावरणीयके क्षेत्रोंमें सर्वज्ञग्रहण
क्षेत्रका ग्रहण है। यहा सर्वज्ञग्रहण क्षेत्ररूप एक आकाशप्रदेशको नहीं लेना चाहिये,
क्योंकि, क्षान्तावरणीयके क्षेत्रोंमें उत्पत्ति (सर्वज्ञग्रहण क्षेत्रका) अभाव है। -

उत्तृष्ट नामउत्तृष्ट, स्थापनाउत्तृष्ट, द्रव्यउत्तृष्ट और भावउत्तृष्टके भेदसे चार
प्रकार हैं। उनमें नामउत्तृष्ट और स्थापनाउत्तृष्ट सुगम हैं। द्रव्यउत्तृष्ट आगमद्रव्यउत्तृष्ट
और नोआगमद्रव्यउत्तृष्टके भेदसे दो प्रकार हैं। उनमें उत्तृष्ट प्राभतका जानकार
उपयोग रहित जीव आगमद्रव्यउत्तृष्ट है। नोआगमद्रव्यउत्तृष्ट क्षायकशरीर, भावी
और तद्दयतिरिक्त नोआगमद्रव्यउत्तृष्टके भेदसे तीन प्रकार हैं। इनमें
क्षायकशरीर और भावी नोआगमद्रव्यउत्तृष्ट सुगम हैं। तद्दयतिरिक्त नोआगम-
द्रव्यउत्तृष्ट दो प्रकार है— ओघउत्तृष्ट और आवेशउत्तृष्ट। इनमें ओघउत्तृष्ट द्रव्य, क्षेत्र,
काल और भावकी अपेक्षा चार प्रकार है। उनमें द्रव्यसे उत्तृष्ट महास्वयं है। क्षेत्रकी
अपेक्षा उत्तृष्ट दो प्रकार है— फलक्षेत्र और नोकमक्षेत्र। लोकाकाश फलक्षेत्रउत्तृष्ट
है। आकाश द्रव्य नोकमक्षेत्रउत्तृष्ट है। अनन्त लोक कालसे उत्तृष्ट है। भावसे
उत्तृष्ट सर्वोत्तृष्ट वर्ण, गंध, रस और स्पर्श है।

आवेशउत्तृष्ट भी द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा चार प्रकार है। इनमें
एक परमाणुको देकर दो प्रदेशवाला स्वयं द्रव्यसे आवेशउत्तृष्ट है। दो परमाणुको
देकर तीन प्रदेशवाला स्वयं भी आवेश उत्तृष्ट है। इनमें प्रत्येक प्रकार के
स्वयं भी ले जाता है। क्षेत्रकी अपेक्षा एक क्षेत्रप्रदेशके देकर दो प्रदेश

वेदखेतपदेसा आदेसदो उक्कस्म येत् । एन सेसेसु त्रि जेदध्व । कातदो एगममय ददूण
 दोसमया आदेसुक्कस्म । एव सेसेसु त्रि जेदध्व । भावदो एगगुणसुत ददूण दुगुणसुत
 दध्वमादेसुक्कस्म । एव सेसेसु त्रि जेदध्व । भावुक्कस्स दुविह— आगम पोआगमभावुक्कस्स-
 भेदण । तथ उक्कस्मपाहुडणणो उवजुत्तो आगमभावुक्कस्स । पोआगमभावुक्कस्स
 केवलणण । एत्थ ओघखेतुक्कस्मेण अधियागे, अग्निदकम्मवेत्तेसु उक्कस्मसेत्तग्गहणादो ।
 ओयुक्कस्समागामदध्व, तस्म गहण किण्ण कद ? ण, कम्मकवेत्तेसु तदभावादो । एग
 सामित्त जहणपदे, अण्णेगमुक्कस्सपदे, एव दुविह चेत्त सामित्त होदि, अण्णस्मासमवादो ।

सामित्तेण उक्कस्सपदे णाणावरणीयवेयणा सेत्तदो उक्कस्सिया
 कस्स ? ॥ ७ ॥

जहणपदपडिमेहद्व उक्कस्सपदणिदेसो कदो । णाणावरणगहण मेसकम्मपडिसेहफल ।
 सेत्तग्गहण दध्वादिपडिमेहफल । पुव्वाणुपुन्नि मो ण पच्छाणुपुणीए उक्कस्सखेतस्स
 परूणणा किमद्व कीरेदे ? ण, महल्लरिवाडीए परूवणद्व कीरेदे ।

आदेशकी अपेक्षा उत्कृष्ट क्षेत्र है । इसी प्रकार शेष प्रदेशोंमें भी ले जाना चाहिये ।
 कालकी अपेक्षा एक समयको देखकर दो समय आदेशाउत्कृष्ट है । इसी प्रकार शेष
 समयोंमें भी ले जाना चाहिये । भावकी अपेक्षा एक गुण युक्त द्रव्यको देखकर दो गुण
 युक्त द्रव्य आदेशाउत्कृष्ट है । इसी प्रकार शेष गुणोंमें भी ले जाना चाहिये ।

भावउत्कृष्ट आगमभावउत्कृष्ट आर नोआगमभावउत्कृष्टके भेदसे दो प्रकार है ।
 उनमें उत्कृष्ट प्राभूतका जानकार उपयोग युक्त जीव आगमभावउत्कृष्ट है । नोआगमभाव
 उत्कृष्ट केवलमान है । यहा ओघक्षेत्रउत्कृष्टका अधिकार है, क्योंकि, निरक्षित कर्मक्षेत्रोंमें
 उत्कृष्ट क्षेत्रका ग्रहण किया गया है ।

शका—ओघउत्कृष्ट आकाश द्रव्य है, उसका ग्रहण क्यों नहीं किया ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, कर्मक्षेत्रोंमें आकाशद्रव्यका अभाव है ।

एक स्वामित्वं जघ य पदमें और दूसरा एक उत्कृष्ट पदमें, इस प्रकारसे दो
 प्रकारका ही स्वामित्व है, क्योंकि इनके अतिरिक्त अन्य स्वामित्वकी सम्भावना नहीं है ।

स्वामित्वसे उत्कृष्ट पदमें ज्ञानावरणीयवेदना क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट किसके
 होती है ? ॥ ७ ॥

जघय पदके प्रतिषेधके लिये सूत्रमें उत्कृष्ट पदका निर्देश किया है । ज्ञानावरणका
 ग्रहण शेष कर्मोंका प्रतिषेध करता है । क्षेत्र पदक ग्रहणका फल द्रव्य आदिका प्रतिषेध
 करना है ।

शका—पूर्वानुपूर्वाको छोड़कर पश्चादानुपूर्वासे उत्कृष्ट क्षेत्रकी प्ररूपणा किसालिये
 की जाती है ?

जो मच्छो जोयणसहस्सिओ सयंभुरमणसमुद्दस्स वाहिरिल्लए
तडे अच्छिदो ॥ ८ ॥

जो मच्छो जोयणसहस्सिओ ति एदेण सुत्तयणेणगुलस्स असयेज्जदिभागमार्दि
कादूण जा उक्कस्सेण पदेसूणजोयणसहस्स ति आयामिण जे द्विदा मच्छा तेसि पडिसेहो
करो । उस्सेह विक्खमहेहि महामच्छासरिसलद्धमच्छेसु गहिदेसु वि ण कोच्छि दोसो अत्थि,
तदो तेसि गहण किण्ण कीरदे ? ण एस दोसो, महामच्छायाम विक्खमुस्सेहेसु अणवगएसु
लद्धमच्छायामविक्खमुस्सेहाण अवगमोनायाभावादो । ण महामच्छायामो अण्णदो अरगम्मदे,
सुत्तमूदस्म एदम्हादो जेड्डस्स अण्णस्सासभवादो । महामच्छस्स आयामो जोयणसहस्स
१००० । एदस्स विक्खमुस्सेहा केत्तिया होति ति उत्ते, उच्चदे — एमो महामच्छो
पचजोयणसद्विक्खमो ५०० पचासुत्तरवीसदुस्सेहो २५० । सुत्तेण त्रिणा कधमेद णव्वदे ?

समाधान— नहीं, महान् परिपाटीसे प्ररूपणा करनेके लिये पश्चादानुपूर्वीसे
प्ररूपणा की जा रही है । (अर्थात् उद्देश्यके अनुसार यद्यपि पहिले जघन्य पदकी प्ररूपणा
करना चाहिये थी, तथापि चिन्तित होनेसे पहिले उत्कृष्ट पदकी प्ररूपणा की जा रही है ।)

जो मत्स्य एक हजार योजनकी अवगाहनावाला स्वयम्भूरमण समुद्रके बाह्य
तटपर स्थित है ॥ ८ ॥

‘जो मत्स्य एक हजार योजनकी अवगाहनावाला है’ इस सूत्राशसे, जो मत्स्य
अगुलके अक्षय्यातर्धे भागको बादि लेकर उत्कृष्टसे एक प्रदेश कम हजार योजन प्रमाण
तक आयामसे स्थित है, उनका प्रतिषेध किया गया है ।

शुका— उत्सेध और विष्कम्भकी अपेक्षा महामत्स्यके सदृश पाये जानेवाले
मत्स्योंका ग्रहण करनेपर भी कोई दोष नहीं है, अतः उनका ग्रहण क्यों नहीं करते ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि जब तक महामत्स्यके आयाम,
विष्कम्भ और उत्सेधका परिज्ञान न हो जाये तब तक प्राण मत्स्योंके आयाम, विष्कम्भ
और उत्सेधका परिज्ञान होना किसी प्रकारसे सम्भव नहीं है । महामत्स्यका आयाम
किसी अन्य सूत्रसे नहीं जाना जाता है, क्योंकि, इस सूत्रसे ज्येष्ठ प्राचीन सूत्रभूत
कोई अन्य वाक्य सम्भव नहीं है ।

महामत्स्यका आयाम एक हजार (१०००) योजन प्रमाण है । इसके विष्कम्भ
और उत्सेधका प्रमाण कितना है, ऐसा पृष्ठनेपर उत्तर दत्त है कि उस महामत्स्यका
विष्कम्भ पाँच सौ (५००) योजन और उत्सेध दो सौ द्वात्रिंशत् (२३०) योजन मात्र है ।

शुका— यह सूत्रके पिना कैसे जाना जाता है ?

सत्तमभागामि पचसुण्णाणुवलमादो । ण च एदमहादो रज्जुविकखमो जणो होदि, रज्जुअम्म तरभूदस्स चउच्चिसजोयणमेत्तवाद्रुद्धवसेत्तस्स षज्जमुवलमादो । ण च तेत्तियमेत्त पत्तिउत्ते पचसुण्णओ फिट्ठति, तहाणुवलमादो । तहा सयलदीप सायरविकखमादो षाहिं केत्तिपण नि कसेत्तेण होदव्व । सयभुरमणसमुदमतरे द्विदमहामच्छे जलचरो कथ तस्स षाहिरित्त तह गदो ? ण एम दोसो, पुच्चवइरियदेवपओणेण तस्स तत्थ गमणसमपादो ।

वेयणसमुग्घादेण समुहदो ॥ ९ ॥

वेयणावसेण जीवपत्साण विकखभुस्सेहोदि तिगुणविपुजण वेयणासमुग्घादो णाम । ण च एस नियमो सत्थेमि जीवपदेसा वेयणाए तिगुण चेत्त विपुजति ति, किंतु सगविकखमादो तरत्तमसरूवेण द्विदवेयणावसेण एम दोपदेसादीहि नि वड्ढी होदि । ते वेयणसमुग्घादा एरथ ण गहिदा, उक्कसेण खेत्तेण अहियारादो । महामच्छे चेत्त किमिदि वेयणसमुग्घाद पीदो ? महल्लोगाहणत्तादो, जलयरस्म थले कियत्तस्स उण्हेण दज्जमाणणस्स सचिय-पहुपावक्कमस्स महावेयणुत्पत्तिदसणादो च ।

तिपग्ढोक्का विस्तार इतने मात्र ही हो, सो भी नहीं है क्योंकि, जगधेणिके सातवें भागमें पाच शूय नहीं पाये जाते । और इससे राजुविक्रम हीन भी नहीं है, क्योंकि, राजुके अतगत चौबीस योजन प्रमाण वायुरुद्ध क्षेत्र षाष्टामें पाया जाता है । दूसरे, उतने मात्र क्षेत्रको मिलानेपर पाच शूय नष्ट भी नहीं होते, क्योंकि, वैसा पाया नहीं जाता । इसी कारण समस्त दीप समुद्र सम्बंधी विस्तारके वाहिर भी कुछ क्षेत्र होना चाहिये ।

शुक्रा—स्वयम्भूरमण समुद्रके भीतर स्थित महामत्स्य जलचर जीव उसके षाष्ट ठटको कैसे प्राप्त होता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, पूर्वके वैरी किसी देवके प्रयोगसे उसका वहा गमन सम्भव है ।

वेदनासमुद्घातमे समुद्घातको प्राप्त हुआ ॥ ९ ॥

वेदनाके घशसे जीवप्रदेशोंके विक्रम और उत्प्रेषकी अपेक्षा तिगुणे प्रमाणमें फैलनेका नाम वेदनासमुद्घात है । परन्तु सयके जीवप्रदेश वेदनाके घशसे तिगुणे ही फैलते हैं, ऐसा नियम नहीं है । किन्तु तरत्तम रूपसे स्थित वेदनाके घशसे अपने विक्रमकी अपेक्षा एक द्वा प्रदेशादिकोंसे भी वृद्धि होती है । परन्तु उन वेदनासमुद्घातोंका वहां ग्रहण नहीं किया गया है, क्योंकि, वहां उत्पट्ट क्षेत्रका अधिकार है ।

शुक्रा—महामत्स्यको ही वेदनासमुद्घातको क्यों प्राप्त कराया है ?

समाधान—क्योंकि, एक ता उसकी अवगाहना बहुत अधिक है, दूसरे जलचर जीवको स्थलमें रखनेपर उष्णताके कारण धर्मोंके सतन्त होनेसे बहुत पापकर्मोंके सचपको प्राप्त हुए उसके महा वेदनाकी उत्पत्ति देखी जाती है ।

कायलेस्सियाए लंगो ॥ १० ॥

कायलेस्सिया णाम तदियो वादवलओ । कथ तरसं एसा सण्णा ? कागवण्णत्तादो सो कायलेस्सिओ णाय । एत्थ अधकायलेस्सा ण घेतत्त्वा, तत्थ अधत्तवैण्णाणुवलभादे । लोगवह्विसेण लोगनाडीदे परदे सखेज्जोयणाणि ओसरिय द्विदतदियवादे ओगणालीए अन्तरेद्विदमहामच्छे कथ लग्गेदे ? सच्चभेद महामच्छस्सं तदियवादिण सपासो णत्थि ति । किंतु एसा सत्तमी सामीप्ये वृद्धि । न च सप्तमी सामीप्ये असिद्धा, गगाया घोषः प्रतिवसतीत्यत्र सामीप्ये सप्तम्युपलभात् । तेण काउलेस्सियाए ह्युत्तदमो काउलेस्सिया ति गहिदो । तीए काउलेस्सियाए जेव लग्गादि ताव वेयणासमुग्घादेण समुहदो ति उक्त होदि । भावस्थो—पुव्वेरियदेवेण महामच्छे सयमुग्गमणनाहिरवेइयाए वाहिरे भागे लोगणालीए समीपे पादिदो । तत्थ तिच्चवेयणावमेण वेयणसमुग्घादेण समुहदो जाव लोगणालीए वाहिरपेतो लग्गो ति उक्त होदि ।

जो तनुवांतलयेस रंष्ट्र है ॥ १० ॥

काकलेइयाका अर्थ तीसरा घातवलय है ।

शुक्रा—उसकी यह सज्ञा कैमे है ?

• समाधान—तनुवातवलयका काकके समान वर्ण होनेसे उसकी काकलेइया सज्ञा है ।

यहा अधकाकलेइया (काला स्याह काकर्ण) का ग्रहण नहीं करना चाहिये, क्योंकि, उसमें अधर अर्थात् काला स्याह घण नहीं पाया जाता ।

शुक्रा—लोकनालीके भीतर स्थित महामत्स्य लोकविस्तारानुसार लोकनालीके भागे सप्यात योजन जाकर स्थित तृतीय घातवलयसे कैसे ससक्त होता है ?

समाधान—यह सत्य है कि महामत्स्यका तृतीय घातवलयसे स्पर्श नहीं होता, किन्तु यह सप्तमी विभक्ति सामीप्य अर्थमें है । यदि कहा जाय कि सामीप्य अर्थमें सप्तमी विभक्ति असिद्ध है, सो भी ठीक नहीं है; क्योंकि 'गगामे घोष (ग्यालवसति) वसता है' यहा सामीप्य अर्थमें सप्तमी विभक्ति पायी जाती है । इसलिये कापोतदेश्यासे रंष्ट्र प्रदेश भी कापोतलेइया रूपसे ग्रहण किया गया है । उस कापोतलेइयासे जहा तक ससर्ग है यहा तक वेदनासमुद्घातसे समुद्घातको प्राप्त हुआ, यह उसकी अभिप्राय है ।

भावार्थ—पूर्वके वैरी किंसा देवके द्वारा महामत्स्ये सयमुग्गमणं समुत्तरे वत्त वेदिकाके वाहिर भागमें लोकनालीके समीप पेटका गया । यहा तीसरे घातवलयसे वेदनासमुद्घातसे समुद्घातको प्राप्त होकर लोकनालीके बाह्य भाग में पेटका होता है, यह अभिप्राय है ।

१ तापती 'अधकायलेइया', इति पाठ । २ तापती 'अवत्' इति पाठ ।

३ तापती 'समीपे' इति पाठ । ४ तापती 'न च सप्तमी सप्तमे' इति पाठ ।

५ तापती 'सप्तम्युपलभादे' इति पाठ । ६ प्रतिपु 'पुराणे' इति पाठ ।

७ प्रतिपु 'समुग्घादे' इति पाठ ।

पुनरवि मारणंतियसमुग्घादेण समुहदो तिण्णि विग्गहकद-
याणि कादूण ॥ ११ ॥

महामच्छे लोणालीए वायव्वदिसाए पुव्वेवरियदेवसनणेण दक्खिणुत्तरायामेण
पदिणे । तत्थ मारणतियसमुग्घादेण समुहदो । तेण महामच्छेण वेयणममुग्घादेण
मारणतियसमुग्घाद करतेण तिण्णि विग्गहकदयाणि कदाणि । विग्गहो णाम
वक्कत्त, तेण तिण्णि कदयाणि कदाणि । त जहा— लोणालीवायव्वदिसादो कड्डुज्जुवाए
गईए सादिरेयअद्धरज्जुमेत्तमागदो दक्खिणदिमाए । तमेग कदय । पुणो ततो वल्लिदूण
कड्डुज्जुवाए गईए एगरज्जुमेत्त पुव्वदिसमाग्घो । त विदिय कदय । पुणो ततो वल्लिदूण
अधो छरज्जुमेत्तद्धानमुज्जुगदीए गदो । त तदिय कदय । एउ तिण्णि कदयाणि कादूण मारणतिय-
समुग्घाद गदो । चत्तारि कदए णिण कदाविदो ? ण, तमेसु दो विग्गहे मोचूण तिण्णि-
विग्गहाणमभावादे । त कथ णव्वदे ? एदग्घादो चेउ सुत्तादो ।

से काले अधो सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु उप्पज्जिहिदि ति
तस्स णाणावरणीयवेयणा सेत्तदो उक्कस्सा ॥ १२ ॥

फिर भी जो तीन विग्रह करके मारणान्तिकममुद्घातसे समुद्घातको प्राप्त
हुआ है ॥ ११ ॥

महामत्स्य लोणालीकी वायव्य दिशामें पूरके घेरी देरके सम्बन्धसे दक्षिण उत्तर
भायाम स्वरूपसे गिरा । वहा यह मारणांतिकममुद्घातसे नमुद्घातको प्राप्त
हुआ । वेदनासमुद्घातके साथ मारणांतिकममुद्घातका बरनेवाले उक्त महामत्स्यने
तीन विग्रहकाण्डक किये । विग्रहका अर्थ चक्रता है उससे तीन काण्डक किये । ये इस
प्रकारसे— लोणालीकी वायव्य दिशासे घाणक समान ऋजुगतिसे साधिक अर्ध राजु
मात्र दक्षिण दिशामें आया । यह एउ काण्डक हुआ । फिर वहासे मुद्धकर घाण जैसी
सीधी गतिसे एक राजु मात्र पूर दिशामें आया । यह द्वितीय काण्डक हुआ । फिर
वहासे मुद्धकर नीचे छह राजु मात्र मार्गमें ऋजुगतिसे गया । यह तृतीय काण्डक हुआ ।
इस प्रकार तीन काण्डकोंको बरके मारणान्तिकसमुद्घातको प्राप्त हुआ ।

शका—चार काण्डकोंको क्यों नहीं बराया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, प्रसोंमें दो विग्रहोंको छोड़कर तीन विग्रह नहीं होते ।

शका—यह कैसे श्रात होता है ?

समाधान—यह इसी रूपसे श्रात होता है ।

अनन्तर समयमें वह सातवीं, पृथिवीके नारकियोंमें उत्पन्न होगा, अब उसके
ज्ञानावरणीयवेदना क्षेपकी अपेक्षा उरुगृह होती है ॥ १२ ॥

१ मरुतिपटोऽप्यम् । अ-भाययो पुत्रदिशायमागधो' तावता 'पु-वदिमाव (ए) समागदो इति पाठ ।
२ मरुतिपटोऽप्यम् । अ-अनन्तोः 'त तदियक्याणि, तावती त तदियक' [च] । या (ता) नि'
इति पाठ ।

सत्तमपुढर्वि मोत्तूण हेद्दा णिगोदेसु सत्तरञ्जुमेत्तद्दाण गतूण किण्ण उप्पाइदो ? णिगोदेसुप्यञ्जमाणस्स अइति वेयणाभावेण सरीरतिगुणवेयणसमुग्घादस्म अभावादो । जदि एव तो पुन्निव्विक्खभुरसेहेहितो वेयणाण जहा विक्खभुरसेहा दुगुणा होंति तहा कादूण णिगोदेसु किण्ण उप्पाइदो ? ण, वट्ठिदक्खेत्तादो परिहीणयेत्तस्स सादिरेयअट्ठगुणत्तुवलभादो । जदि वि वारुणदिमादो एगरञ्जुमेत्त पुव्वदिसाए गतूण पुणो हेद्दा सत्तरञ्जुअद्दाण गतूण पुणो दक्खिणेण आट्ठरञ्जुओ गतूण सुहुमणिगोदेसु उपपजदि तो वि पुव्विक्खेत्तादो एदस्स खेत्त विसेसहीण चेत्त, विक्खभुरसेहाण तिगुणत्ताभावादो । सुहुमणिगोदेसु उप्यञ्ज माणस्स महामच्छस्म विक्खभुरसेहा तिगुणा ण होंति, दुगुणा विसेसाहिया वा होंति त्ति कष णव्वेद ? अब्बो सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु से काले उपपज्जिहिदि त्ति सुत्तादो णव्वेद । सत्तकम्मपाहुडे पुण णिगोदेसु उप्पाइदो, णेरइएसु उप्यञ्जमाणमहामच्छो व्व सुहुमणिगोदेसु

शका—सातवीं पृथिवीके छोटकर नीचे सात राजु मात्र अध्यान जाकर निगोद जीवोंमें क्यों नहीं उत्पन्न कराया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, निगोद जीवोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवके अतिशय तीव्र वेदनाका अभाव होनेसे विवक्षित शरीरसे तिगुणा वेदनासमुद्घात सम्भव नहीं है।

शका—यदि ऐसा है तो वेदनासमुद्घातमें पूर्वोक्त विष्कम्भ और उत्सेधसे जिस प्रकार दुगुणा विष्कम्भ व उत्सेध होता है वैसा करके निगोद जीवोंमें क्यों नहीं उत्पन्न कराया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, उसके वृद्धिगत क्षेत्रकी अपेक्षा हानिको मान्य क्षेत्र साधिक आठगुणा पाया जाता है।

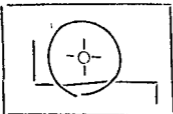
यद्यपि पश्चिम दिशासे एक राजु मात्र पूर्व दिशामें जाकर, फिर नीचे सात राजु अध्यान जाकर, फिर दक्षिणसे साढ़ तीन राजु जाकर सूक्ष्म निगोद जीवोंमें उत्पन्न होता है, तो भी पूर्वके क्षेत्रसे इसका क्षेत्र विशेष हीन ही है, क्योंकि, इसमें विष्कम्भ और उत्सेध तिगुणे नहीं हैं।

शका—सूक्ष्म निगोद जीवोंमें उत्पन्न होनेवाले महामत्स्यका विष्कम्भ और उत्सेध तिगुणा नहीं होता, किन्तु दुगुणा अथवा विशेष अधिक होता है; यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—“नीचे सातवीं पृथिवीके नारकियोंमें वह अन्तर कालमें उत्पन्न होगा” इस सूत्रसे जाना जाता है।

सत्कर्मप्राप्तमें उसे निगोद जीवोंमें उत्पन्न कराया है, क्योंकि, नारकियोंमें उत्पन्न होनेवाले महामत्स्यके समान सूक्ष्म निगोद जीवोंमें उत्पन्न होनेवाला महामत्स्य

उपपन्नमाणमहामच्छो नि निगुणसरिवाहत्लेण मारणतियममुग्घाद गच्छदि ति । ण च एद जुज्जेदे, सत्तमपुढवीणेरइएसु असादचहुलेसु उपपन्नमाणमहामच्छवेयणा कसाएहिती सुहुमणिगोदेसु उपपन्नमाणमहामच्छवेयण रुमायाण सरिसत्ताणुवत्तीदो । तदे एमो चैय अत्थो पहाणो ति धेत्तव्वो । 'लोकनालीए अते सत्तमपुढवीए सेडिनद्धो अत्थि ति' एदेण सुत्तेण णत्तदे, अण्णहा तिण्णि विग्गहप्पसगादो । से काले उपपज्जिहिदि' ति किमट्ट उच्चदे ? ण, णेरइएसुप्पण्णरदममए उवसहरिदपदमदडस्म य उक्कस्सत्तेत्ताणुवत्तीदो । एत्थ सदिही-



सादिरियमद्धट्टरज्जुपमाण के नि आइरिया

एव होदि' ति भणति । त जहा—जरदिमादो मारणतियसमुग्घाद कादूण पुच्चदिस-माणदो जान लोकनालीए अत पत्तो ति । पुणो विग्गह करिय हेट्टा छरज्जुपमाण गतूण पुणरनि विग्गह करिय वासुणदिसाए अद्धरज्जुपमाण गतूण अनिहिट्टाणम्मि उपपण्णस्स खेत होदि ति । एद ण घडदे, उवादाट्टाण वेलेदूण गमण णत्थि ति पनाइज्जतउवदेसेण सिद्धत्तादो ।

भी विवक्षित शरीरकी अपेक्षा तिगुणे यादव्यसे मारणातिकसमुद्घातको प्राप्त होता है । पर तु यह योग्य नहीं है, क्योंकि, अत्यधिक असाताका अनुभव करनेवाले सातवीं पृथिवीके नारकियोंमें उत्पन्न होनेवाले महामत्स्यकी घेदना और क्वायकी अपेक्षा सूक्ष्म निगोद जीवोंमें उत्पन्न होनेवाले महामत्स्यकी घेदना और क्वाय सह्य नहीं हो सकती । इस कारण यही अर्थ प्रधान है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये । "लोकनालीके अन्तमें सातवीं पृथिवीका धेणिरत्त है" इस सूत्रसे जाना जाता है, क्योंकि, इसके धिना तीन त्रिग्रहोंका प्रसंग आता है ।

शुक्रा—अनन्तर कालमें उत्पन्न होगा, यह किसलिये कहते हैं ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, नारकियोंमें उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें प्रथम दण्डका उपसहार हो जानेसे उसका उत्पन्न क्षेत्र नहीं बन सकता ।

यहा सहस्रि—(मूर्त्तमें देखिये) ।

साधक साठे सात राजुका प्रमाण इस (निम्न) प्रकार होता है, ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं । यथा—“पश्चिम दिशासे मारणातिकसमुद्घातको करके लोकनालीका अन्त प्राप्त होने तक पूर्वदिशामें आया । फिर विग्रह करके नीचे छह राजु मात्र जाकर पुन विग्रह करके पश्चिम दिशामें आध राजु प्रमाण जाकर अवधिस्थान नरकमें उत्पन्न होनेपर उसका उत्पन्न क्षेत्र होता है ।” किन्तु यह घटित नहीं होता, क्योंकि यह 'उपपादस्थानका अतिक्रमण करके गमन नहीं होता' इस परम्परागत उपदेशसे सिद्ध है ।

१ अथवा 'उपपन्नदि', तावतो 'अप्यन्नदि' इति पाठ । २ तावती 'सादिरियमद्धट्टरज्जुपमाण' इति पाठ । ३ अत्रिपु 'होति' इति पाठ ।

एतय उवसहरो उच्चदे । त जहा— एगरज्जु ठनिय साद्विरेयअद्धहमरूवेदि गुणेदण पुणो
तिगुणिदविक्खमणेण । १५०० । तिगुणिदउम्मेहगुणिदेण । ७५० । गुणिदे णाणावरणीयस्स
उपकस्सखेत्त होदि ।

तच्चदिरित्ता अणुवकस्सा ॥ १३ ॥

उपकस्समहामच्छपरेत्तादो वदिरित्त येत्त तच्चदिरित्त णाम । सा अणुवकस्सा
खेतयेयणा । सा च असयेत्तविषया । तिस्से सामी त्रिण्ण परुविदो ? ण, उरुक्कस्सामी
चेव अणुवकरस्सरस नि सामी होदि त्ति पुषसामित्तपरुत्तणाकरणादो, सेसत्रियप्पाण पि
एदमहादो चेव सिट्ठीणे च । त जहा—मुहम्मि णगागामपदेसेणुत्तकरमोगाहणमहामच्छेण
पुव्ववेरियदेवसवधेण लोमणात्तीण वायव्वदिमाण निन्दिय वेद्यणसमुग्घादेण पुत्तत्रियव्व-
मुत्सेहहिंतेो तिगुणविक्खमुग्घेहे आवण्णेण मारणतियसमुग्घादेण तिण्णि कदाणि कादूण
सत्तमपुर्दादि पत्तेण अणुवक्कस्सुक्कस्सयेत्त कद । तण एदस्म अणुक्कस्सुक्कस्सयेत्तस्स
महामच्छो चेव सामी । पुणो मुहपदेसे दोहि आगासपदेसेहि ऊणओ महामच्छो वेद्यण-
समुग्घादेण समुहदो होदूण तिण्णि विग्गाहत्तयाणि कादूण मारणतियसमुग्घादेण सत्तम-
पुर्दादि गदो विदियअणुक्कस्सयेत्तस्म सामी होदि । पुणो तीहि आगासपदेसेहि परिहीणमुहो

यहा उपसहार कहते हैं । यह इस प्रकार है—एक चतुको स्थापित करके
साधक साढ़े सात रूपोंसे गुणित करके पश्चात् तिगुणे उत्सेध ($250 \times 3 = 750$) से
गुणित तिगुणे विष्कम्भ ($400 \times 3 = 1200$) के द्वारा गुणित करनेपर आनावरणीयका
उत्पद्य क्षेत्र होता है ।

महामत्स्यके उपर्युक्त उत्कृष्ट क्षेत्रसे त्रिं अतुकृष्ट वेदता है ॥ १३ ॥

उत्पद्य महामत्स्यक्षेत्रसे त्रिं क्षेत्र तद्व्यतिरिक्त है । यह अनुत्पद्य क्षेत्रवेदना
है । यह असख्यात विक्ल्प रूप है ।

शंका—उसके स्वामीकी प्ररूपणा क्यों नहीं की गई है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, उत्पद्यका स्वामी ही चूँकि अनुत्पद्यका भी स्वामी
होना है, अतः उसके स्वामित्वकी पृथक् प्ररूपणा नहीं की गई है, तथा क्षेत्र विक्ल्प भी
इसीसे सिद्ध होते हैं । यथा—सुत्रमें एक प्रदेशसे दान उत्पद्य अथवागानासे समुत्त,
पूज्यैरी देवके सम्यग्भसे लोकनाथकी वायव्य दिशामें गिरकर वेदनासमुद्घातने पूर्व
विष्कम्भ य उत्सेधकी अपेक्षा तिगुणे विष्कम्भ य उत्सेधको प्राप्त, तथा मारणान्तिक
समुद्घातने तीन क्षणशकोंको करके सातवीं पृथिवीको प्राप्त हुआ महामत्स्य
अनुत्पद्य उत्पद्य क्षेत्रको करता है । इस कारण इस अनुत्पद्य उत्पद्य क्षेत्रको महामत्स्य
ही स्वामी है ।

पुन सुत्रप्रदेशमें दो आकाशप्रदेशोंसे हीन महामत्स्य वेदनासमुद्घातसे
समुद्घातको प्राप्त होकर तीन विग्रहक्षणशकोंको करके मारणांतिकसमुद्घातसे सातवीं
पृथिवीको प्राप्त होता हुआ द्वितीय अनुत्पद्य क्षेत्रका स्वामी होता है । फिर तीन

महामन्त्रो पुत्रविहिता चैव मारणतियसमुग्धादेण सत्तमपुर्वादि मदी तदिययेत्तस्म सामी ।
मुद्गमि चत्तारिआगासपदेसूणमहामन्त्रो मारणतियसमुग्धादेण सादिरियअद्धमरज्जुआर्यदा
चउत्त्ययेत्तस्स सामी । एवमेदेण कमेण महामन्त्रमुहपदेसे ऊणे करिय सत्तेज्जपदरगुडमेत्ता
अणुनकस्ससखेत्तवियप्पा उप्पाददव्वा ।

एत्यतणमन्त्रपच्छिमखेत्त केण सरिसो होदि ति बुत्ते उच्चदे — ओधुनकस्सोगाहण-
महामन्त्रस्य वेद्यसमुग्धादेण तिगुणविष्णुभस्मेहे गतूण पदेसूणद्धमरज्जुण मुक्कमारणतियस्म
खेत्तेण सरिसो होदि । पुणो वि महामन्त्रमुहवियप्ये अस्मिदूण पदेसूणद्धमरज्जुण मारणतिय
मेल्लाविय मखेज्जपदरगुलमेत्तखेत्ताण सामित्तरूपणा कायन्वा । एत्थ अतिमकंठत्तवियप्पो
केण सरिसो होदि ति उत्ते, उच्चदे — ओधुनकस्सोगाहणमहामन्त्रस्य पुत्रविहाणेण दुपदे-
सूणद्धमरज्जुण मुक्कमारणतियस्म खेत्तेण सरिसो । पुणो एद मारणतिययेत्तायाम धुवे
कादूण महामन्त्रमुहवियप्ये अस्मिदूण सत्तेज्जपदरगुलमेत्तखेत्ताण सामित्तरूपणा कायन्व ।
पुणो एत्थ सन्नपच्छिमवियप्पा तिपदेसूणद्धमरज्जुण मुक्कमारणतिययेत्तेण सरिसो ।

आकाशप्रदेशोंसे हान सुप्तवाला महामन्त्रस्य पूज विधिसे ही मारणातिकसमुद्घातसे
सातवीं पृथिवीको प्राप्त होकर तृतीय अनुष्टुप् क्षेत्रका स्वामी होता है । मुझमें चार
आकाशप्रदेशोंसे हान महामन्त्रस्य मारणातिकसमुद्घातसे साधिव सत्ते सात राजु
मात्र आयामसे युक्त होता हुआ चतुर्थ अनुष्टुप् क्षेत्रका स्वामी होता है । इस प्रकार
इस क्रमसे महामन्त्रस्यके सुप्तप्रदेशोंको हीन करके सख्यात प्रतरागुल प्रमाण अनुष्टुप्
क्षेत्रके विकल्पोंको उत्पन्न कराना चाहिये ।

शका—यहाका सयसे अतिम क्षेत्र किसके सदृश होता है ?

समाधान—इस शकाके उत्तरमें कहते हैं कि यह क्षेत्र सामान्योक्त उरुष्टु
अवगाहनवाले और वेदनासमुद्घातसे तिगुणे विष्कम्भ व उल्लेखको प्राप्त होकर
एक प्रदेश कम गान्धे सात राजु तक मारणातिकसमुद्घातको करनेवाले महामन्त्रस्यके
क्षेत्रके सदृश होता है ।

फिरसे भी महामन्त्रस्यके मुख्य सम्बन्धी विकल्पाका आश्रय करके प्रदेश कम
साढ़े सात राजु तक मारणातिकसमुद्घातको छुड़ाकर सख्यात प्रतरागुल प्रमाण क्षेत्रोंके
स्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिये ।

शका—यहा अतिम विकल्प किमके सदृश होता है ?

समाधान—इस प्रकार पूछनेपर उत्तर देते हैं कि यह क्षेत्र ओघोक्त उरुष्टु
अवगाहनासे सयुक्त और पृथ्वीक्षेत्रके अनुसार दो प्रदेशोंसे हीन साढ़े सात राजु तक
मारणातिकसमुद्घातको छोड़नेवाले महामन्त्रस्यके क्षेत्रके सदृश होता है ।

फिर इस मारणान्तिकक्षेत्रके आयामको अवस्थित करके महामन्त्रस्यके मुख्य
विकल्पोंका आश्रय कर सख्यात प्रतरागुल मात्र क्षेत्रोंके स्वामित्वकी प्ररूपणा करना
चाहिये । यहा सयसे अतिम विकल्प तीन प्रदेश कम साढ़े सात राजु तक मारणातिक

एवमेवेगासपदेसूणाओ क्रमेण मारणतिय मेलाविय अणुक्कस्सखेत्ताण सामित्तरूपण कायव्व । सत्तमपुढविं मारणतिय मेल्लमाणजीवाण मारणतियखेत्तायामो सव्वेसिं किण्ण सरिसो ? ण, मारणतिय मेल्लदूणं पुणो मूलसरीर पविमिय काल करेताण मारणतियखेत्ता- यामाणमणेगप्रियप्पत्त पडि विरोहाभावादे । समुप्पत्तिकखेत्तमपाविय कयमारणतियसमुग्घाद- जीवा पल्लट्टिय मूलसरीर पविमत्ति ति कध ण-वदे ? पनाइज्जतउवदेसादे । सुहुमणिगो- देसु उप्पज्जमाणमहामच्छे अरिसदूण किण्ण सामित्त उच्चदे ? ण, तेसु तिच्चवेयणा- कमायविवड्जिएसु एककसराहेण महामच्छुक्कस्समारणतियखेत्तादे । अणेगरज्जुमेत्तखेत्तपदे- सूणेसु महामच्छुक्कस्सम्वेत्तादे पदेसूणादिरेतवियप्पाणुवलभादे । सुहुमणिगोदेसुप्पज्जमाण- महामच्छस्स उक्कस्समारणतियखेत्तसमाण सत्तमपुढविंहि समुप्पज्जमाणमहामच्छमारणतिय- खेत्तप्पहुडि हेट्ठिमखेत्तप्रियप्पा सुहुमणिगोदेसु सत्तमपुढवीए च उप्पज्जमाणमहामच्छे अरिसदूण उप्पादेदव्वा । अहवा, महामच्छे च व, एगादिएगुत्तरागासपदेसकमेण पुरोदा समुद्घातको छोड्ढनेवाले महामत्स्यके क्षेत्रके सदृश होता है । इस प्रकार एक एक आकाशप्रदेशकी हीनताके क्रमसे मारणातिकसमुद्घातको चुदाकर अनुत्पष्ट क्षेत्रोंके स्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिये ।

शुका—सातर्था पृथिवीमें मारणान्तिकसमुद्घातको करनेवाले सब जीवोंके मारणातिकक्षेत्रोंका आयाम समान क्यों नहीं होता ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, मारणातिकसमुद्घातको करके फिर मूल शरीरमें प्रवेश कर मृत्युको प्राप्त होनेवाले जीवों सम्यग्धी मारणान्तिकक्षेत्रोंके आयामोंके अनेक विक्ल्प रूप होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

शुका—उत्पत्तिकक्षेत्रको न पाकर मारणातिकसमुद्घातको करनेवाले जीव पलटकर मूल शरीरमें प्रविष्ट होते हैं, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—यह परंपरागत उपदेशसे जाना जाता है ।

शुका—सूक्ष्म निगोद जीवोंमें उत्पन्न होनेवाले महामत्स्योंका आश्रय करके स्वामित्वकी प्ररूपणा क्यों नहीं की जाती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, तीव्र वेदना व कषायसे रहित होनेके कारण एक साथ पूर्वोक्त महामत्स्यके उत्पष्ट मारणातिकक्षेत्रकी अपेक्षा अनेक राज्ञ प्रमाण-क्षेत्र प्रदेशोंसे होन उक्त निगोद जीवोंमें उत्पन्न होनेवाले महामत्स्योंमें, सातर्था पृथिवीमें उत्पन्न होनेवाले महामत्स्यके उत्पष्ट क्षेत्रसे एक प्रदेश-कम दो प्रदेश कम इत्यादि क्षेत्रविक्ल्प नहीं पाये जाते ।

सूक्ष्म निगोद जीवोंमें उत्पन्न होनेवाले महामत्स्यके उत्पष्ट मारणान्तिकक्षेत्रके समाप्त सातर्था पृथिवीमें उत्पन्न होनेवाले महामत्स्यके मारणातिकक्षेत्रको धादि लेकर अधस्तन क्षेत्रके विक्ल्पोंको सूक्ष्म निगोद जीवोंमें और सातर्था पृथिवीमें भी उत्पन्न होनेवाले महामत्स्योंका आश्रय करके उत्पन्न करना चाहिये । अधवा,

१ अक्षयलो । मड्डिवीण, ताप्रती 'मोड्ढो ण' इति पाठ ।

‘औसारिय अपुनकस्सरेत्ताण परूवणा कायव्वा । एव णेदव्य जाव वेयणसमुग्घादेण समुद्द-
महामच्छेत्त ति ।

पुणो एदेण गेत्तेण कम्हि महामच्छे मारणतियखेत्त सरिसमिदि उत्ते उच्चदे, त
जहा— जो महामच्छो वेयणसमुग्घादेण विणा मूलायामेण सह णवजोयणसहस्साणि
मारणतिय मेल्लिदि, तस्म ऐत्त सरिस होदि । पुणो पुविस्स मोत्तूण इम घेत्तूण खेत्तस्म
सामित्तरूवण कायव्व । त जहा— मुहम्मि एगागामपदेसेण ऊणमहामच्छेण णवजोयण-
सहस्साणि मुनकमारणतिए मेत्ताविय अणतरेहेट्ठिमअणुक्कस्ममारणतियखेत्त होदि । एवमेगे-
गासपदेस^१ मुहम्मि ऊण करिय णवजोयणसहस्साणि मारणतिय मेल्लविद्य सखेज्जपदर-
गुल्लमेत्तखेत्ताण सामित्तरूवण कायव्व । एव पग्गिहाइदूण ट्ठिदपच्छिमखेत्तेण ओधुक्कस्मो-
गाहणाए पदेस्सणणवजोयणसहस्साणि मुनकमारणनियमहामच्छेत्त^२ सरिस होदि ? एव
जाणिदूण पदेस्सणादिकमेण सेसखेत्ताण पि सामित्तरूवण कायव्व जाव महामच्छेत्तसुग्घाणु-
क्कस्मोगाहणे ति । पुणो पदेस्सणुक्कस्मोगाहणमहामच्छे तदणतरेहेट्ठिमअणुक्कस्सवेत्त
सामी । एवमेगे खेत्तपदेस गिरतर ऊण करिय णेयव्व जाव चादरजणप्फदिकाइयपेत्तय-

महामत्स्यको ही एकको आदि लेकर एक अधिक आकाशप्रदेशके क्रमसे भागे बढाकर
अनुत्कृष्ट क्षेत्रोंकी प्ररूपणा करना चाहिये । इस प्रकार वेदनासमुद्घातसे समुद्घातको
प्राप्त महामत्स्यके क्षेत्र तक ले जाना चाहिये ।

शका— इस क्षेत्रसे कौनसे महामत्स्यका क्षेत्र सदृश है ?

समाधान - इस शकाका उत्तर कहते हैं । यह इस प्रकार है—जो महामत्स्य
वेदनासमुद्घातके विना मूल आयामके साथ नौ हजार योजन मारणात्तिकसमुद्घातको
करता है उसका क्षेत्र इस क्षेत्रके सदृश होता है ।

अब पूर्वके क्षेत्रको छोड़कर अब इस ग्रहण कर स्वामित्वकी प्ररूपणा करना
चाहिये । यह इस प्रकार है—मुखमें एक आकाशप्रदेशसे हीन होकर नौ हजार योजन
मारणात्तिकसमुद्घातको करनेवाले महामत्स्यका अनन्तर अघस्तन अनुत्कृष्ट मारणा
त्तिकक्षेत्र होता है । इस प्रकार एक एक आकाशप्रदेशको मुखमें कम करके नौ हजार
योजन मारणात्तिकसमुद्घातको कराकर सद्यथा प्रतरागुल मात्र क्षेत्रोंके स्वामित्वकी
प्ररूपणा करना चाहिये । इस प्रकार हीन होकर स्थित अन्तिम क्षेत्रसे ओघोक्त उत्कृष्ट
अवगाहनामें एक प्रदेश कम नौ हजार योजन मारणात्तिकसमुद्घातका करनेवाले
महामत्स्यका क्षेत्र सदृश होता है । इस प्रकार एक प्रदेश कम, दो प्रदेश कम इत्यादि
क्रमसे महामत्स्यके अप्यानमें उत्कृष्ट अवगाहना तक शेष क्षेत्रोंके भी स्वामित्वकी प्ररूपणा
जानकर करना चाहिये । पुन एक प्रदेश कम उत्कृष्ट अवगाहनावाला महामत्स्य उससे
अनन्तर अघस्तन अनुत्कृष्ट क्षेत्रका स्वामा होता है । इस प्रकार एक एक क्षेत्रप्रदेशको
गिरतर कम करके यादर वनस्पतिव्यापिक प्रत्येकशरीरकी उत्कृष्ट अवगाहना प्राप्त

१ अत्रौ ‘-मेगगाणपपदत्त तापती -मेगगाणपपद- इति पाठ । २ प्रतियु खेतस्म’
इति पाठ ।

सरीरउक्कस्सोगाहण पत्तमिदि । पुणो ततो एगेगपदेसुण करिय णेद्व्व जाव वेइदिय-
णिव्वत्तिपज्जत्तउक्कस्सोगाहण पत्तमिदि । पुणो ततो णिरत्त पदेसुणादिकमेण णेद्व्व जाव
चउरिदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहण पत्तमिदि । पुणो ततो पदेसुणादिकमेण णेद्व्व
जाव तेइदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहण पत्तमिदि । पुणो एगेगपदेसुणादिकमेण
णेद्व्व जाव तेइदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स अन्नहणमणुक्कस्समेगधणगुलोगाहण पत्तमिदि ।
एव णिरत्तकमेण एगेगपदेसुण करिय णेद्व्व जाव सुट्टमणिगोदलद्धिअपज्जत्तजहण्णोगाहण
पत्तमिदि । एवममणेज्जसेड्ढिमेत्ताणमणुक्कस्समेत्तत्रियप्पाण सामित्तरूवणा कदा ।

सपहि एदेमि खेत्तत्रियप्पाण जे सामिणो जीवा तेमि परूवणाए कीरमाणाए, तत्थ
छअणियोगहाराणि णादवाणि मत्तति । तत्थ परूवणा उच्चदे । त जहा — उक्कस्सए ठाणे
अत्थि जीवा । एव णेद्व्व जाव जहण्णहाणे ति । परूवणा गदा ।

उक्कस्सए ट्टाणे जीवा केत्तिया ? असखेज्जा । एव तसकाइयपाओगखेत्त-
वियप्पेसु असखेज्जतीरा ति वत्तव्व । थात्तकाइयपाओगेषु वि असखेज्जलीगा । णवरी
वणप्फइकाइयपाओगेषु अणता । एव पमाणपरूवणा गदा ।

सेही अवहारो च ण सनकदे णेदुसुवदेसाभावादो । णवरी एइदिएसु जहण्णहाण-

होने तक ले जाना चाहिये । फिर उसमेंसे एक एक प्रदेश कम करके द्वीन्द्रिय
निर्वृत्तिपर्याप्तकषी उत्तृष्ट अथगाहना प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये । फिर उसमेंसे
निरन्तर एक प्रदेश कम, दो प्रदेश कम इत्यादि क्रमसे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकषी
उत्तृष्ट अथगाहना प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये । फिर उसमेंसे प्रदेश हीनादिके
क्रमसे त्रीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकषी उत्तृष्ट अथगाहना प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये ।
फिर उसमेंसे एक एक प्रदेश हीनादिके क्रमसे त्रीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकषी अजघन्य
अनुत्तृष्ट एक घनागुल मात्र अथगाहनाके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये । इस
प्रकार निरन्तर क्रमसे एक एक प्रदेश हीन परके सूक्ष्म निगोद लक्ष्यपर्याप्तकषी
जघन्य अथगाहना प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये । इस प्रकार असख्यात धेणि
मात्र अनुत्तृष्ट क्षेत्र सम्बन्धी विक्षल्पोंके समाप्तिवर्षी प्ररूपणा की गई है ।

अथ इन क्षेत्रविक्षल्पोंके जो जाय स्यामी हैं उनकी प्ररूपणा करते समय यहाँ
छह अनुयोगद्वारक ध्यातय हैं—[प्ररूपणा, प्रमाण, धेणि, अवहार, भागाभाग और
अल्पबहुत्व] । उनमें प्ररूपणा अनुयोगद्वारको कहते हैं । यह इस प्रकार है—उत्तृष्ट
स्थानमें जीव हैं । इस प्रकार जघन्य स्थान तक ले जाना चाहिये । प्ररूपणा समाप्त हुई ।

उत्तृष्ट स्थानमें जीव कितने हैं ? ये यहाँ अलक्षयात हैं । इस प्रकार असकायिकों
के योग्य क्षेत्रविक्षल्पोंमें अमक्षयात जीव हैं, ऐसा कहना चाहिये । स्थावरकायिकोंके
योग्य क्षेत्रविक्षल्पोंमें भी अलक्षयात लोक प्रमाण जीव है । विशेष इतना है कि घनस्वपति
कायिक योग्य क्षेत्रविक्षल्पोंमें अनन्त जीव है । इस प्रकार प्रमाणप्ररूपणा समाप्त हुई ।

धेणि और अवहारकी प्ररूपणा नहीं की जा सकती, क्योंकि, उनका उपदेश
प्राप्त नहीं है । विशेष इतना है कि एकेन्द्रिय जीवोंमें अक्षय्य स्थान सम्बन्धी जीवोंकी

जीवैर्दितो विदियद्वाणजीना विसेसाहिया विसेसहीणा वा अतोमुहुत्तपडिभागेण ।

उक्कस्सद्वाणजीवा सच्चद्वाणजीवाण केवडिओ भागो ? अणतिमभागो । जहण्णए
द्वाणे जीवा सच्चद्वाणजीवाण केवडिओ भागो ? असखेज्जदिभागो । अजहण्णअणुक्कस्सएसु
द्वाणेषु जीवा सच्चजीवाण केवडिओ भागो ? असखेज्जा भागा । एव भागाभागपरूवणा गदा ।

सच्चरथोवा उक्कस्मए द्वाणे जीवा । जहण्णए द्वाणे अणतगुणा । अजहण्णअणु
क्कस्सएसु द्वाणेषु जीवा असखेज्जगुणा । को गुणगारो ? अणुरस्स असखेज्जदिभागो ।
अजहण्णए द्वाणे जीवा विसेसाहिया । अणुक्कस्सए द्वाणे जीवा विसेसाहिया । सव्वेसु
द्वाणेषु जीवा विसेसाहिया ।

अधमा अप्पावहुग तिविह— जहण्णयमुक्कस्सयमजहण्णमणुक्कस्मय चेदि ।
तत्थ जहण्णए यद— सच्चरथोवा जहण्णए द्वाणे । अजहण्णए द्वाणे जीवा असखेज्जगुणा ।
उक्कस्सए पयद— सच्चरथोवा उक्कस्सए द्वाणे जीवा । अणुक्कस्मए द्वाणे जीवा
अणतगुणा । अजहण्णअणुक्कस्मए पयद— सच्चरथोवा उक्कस्सए द्वाणे जीवा । जहण्णए
द्वाणे जीवा अणतगुणा । अजहण्णअणुक्कस्सएसु द्वाणेषु जीवा असखेज्जगुणा । अजहण्णए

अवेक्षा द्वितीय स्थान सन्धी जीव अ तमुहुत्त प्रतिभागसे विदोय अधिक अथवा
विदोय हीन हैं ।

उत्कृष्ट स्थानके जीव सन्धी स्थान सम्बन्धी जीवाके त्रितनेवें भाग प्रमाण हैं ?
वे उनके अन तनेवें भाग प्रमाण हैं । जघन्य स्थानमें जीव सब स्थानों सम्बन्धी जीवोंके
त्रितनेवें भाग प्रमाण हैं । वे उनके असख्यातनेवें भाग प्रमाण हैं । अजघन्य अनुत्कृष्ट
स्थानोंमें जाय सब जीवोंके त्रितनेवें भाग प्रमाण हैं ? वे उनके असख्यात बहुभाग प्रमाण
हैं । इस प्रकार भागभागप्ररूपणा समाप्त हुई ।

उत्कृष्ट स्थानमें जीव सन्धी थोड़े हैं । उनसे जघन्य स्थानमें वे अन तगुणे हैं ।
उनसे अजघन्य अनुत्कृष्ट स्थानोंमें जीव असख्यातगुणे हैं ।

शुक्रा— गुणकार क्या है ?

समाधान— गुणकार अणुलक्ष्य असख्यातवा भाग है ।

उनसे अजघन्य स्थानमें जीव विदोय अधिक हैं । अनुत्कृष्ट स्थानमें जीव उनसे
विदोय अधिक हैं । उनसे सब स्थानोंमें जीव विदोय अधिक हैं ।

अथवा, अल्पबहुत्व तीन प्रकार है— जघन्य, उत्कृष्ट और अजघन्य अनुत्कृष्ट ।
उनमें जघन्य अल्पबहुत्व प्रकृत है— जघन्य स्थानमें जीव सबसे स्तोके हैं । उनसे
अजघन्य स्थानमें जीव असख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट अल्पबहुत्व प्रकृत है— उत्कृष्ट
स्थानमें जीव सबसे थोड़े हैं । अनुत्कृष्ट स्थानमें जीव उनसे अन तगुणे हैं । अजघन्य
अनुत्कृष्ट अल्पबहुत्व प्रकृत है— उत्कृष्ट स्थानमें जीव सबसे स्तोके हैं । जघन्य स्थानमें
जीव उनसे अन तगुणे हैं । अजघन्य अनुत्कृष्ट स्थानोंमें जीव उनसे असख्यातगुणे हैं ।

दृष्टे जीवा विसेसाहिया । अणुकस्मण दृष्टे जीवा विसेसाहिया । सञ्चेषु दृष्टेषु जीवा विसेसाहिया ।

एवं दंसणावरणीय-मोहणीय-अतराइयाण ॥ १४ ॥

एदेसि निण्ह पादिकस्माण जहा णाणावरणीयउक्कस्माणुक्कस्मणेतवरूपणा कदा तदा नादब्ब, विसेसाभावादे ।

सामित्तेण उक्कस्सपदे वेदणीयवेदणा खेततो उक्कस्सिया कस्स' ? ॥ १५ ॥

उक्कस्मपदे ति निहेसेण जहणपदपडिमेहो कदो । वेदणीयवेदणा ति निहेसेण समस्मण्येयणाण पडिमेहो कदो । खेतनिहेसेण दत्तादियेयणाण पडिमेहो कदो । कस्से ति किं देवस्स, किं णेरइयस्स, किं निरिअयस्स, किं मनुस्मस्स होदि ति पुञ्जा कदा ।

अण्णदरस्म केवलस्म केवलिसमुग्घोदेण समुहदस्स सब्वलोग गदस्स तस्म वेदणीयवेदणा खेततो उक्कस्सा ॥ १६ ॥

अण्णदरस्मे ति निहेसेण भोगाहणाविसेमाण भरहादिकेयत्तविसेमाण च पडिसेहा-

उत्तमे अज्जण्य स्थानमें जीव विशेष अधिक है । उत्तमे अनुत्कृष्ट स्थानमें जीव विशेष अधिक है । उत्तमे तथ स्थानोंमें जीव विशेष अधिक है ।

इसी प्रकार दर्शनारणीय, मोहणीय और अन्तराय कर्मके भी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट वेदनाक्षेत्रोंकी प्ररूपणा करना चाहिये ॥ १४ ॥

अस्ये ज्ञातावरणीयके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट क्षेत्रोंकी प्ररूपणा की गई है ऐसे ही इन तीन घाति कर्मोंके उक्त क्षेत्रोंकी प्ररूपणा करना चाहिये, क्योंकि, उनमें कोई विशेषता नहीं है ।

स्वामित्वमे उत्कृष्ट पदमें वेदनीय कर्मकी वेदना क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट तिसके होती है ? ॥ १५ ॥

'उत्कृष्ट पदमें' इस निर्देशसे अत्रय पदका प्रतिषेध किया गया है । 'वेदनीय कर्मकी वेदना' इस निर्देशसे अत्रय कर्मोंकी वेदनाका प्रतिषेध किया है । क्षेत्रका निर्देश करनेसे द्रव्यादि वेदनामोहा प्रतिषेध किया गया है । 'किसके होती है ?' इससे उक्त वेदना क्या क्षेत्रके, क्या तारकीक, क्या तियेचके और क्या मनुष्यके होती है, यह पूछा की गइ है ।

अन्तर केवलीके, जो केवलिसमुग्घातमे समुद्घातको व उसमें भी सर्वलोक अर्थात् लोकपूर्ण अवस्थानो प्राप्त हैं, उनके वेदनीयत्री वेदनाक्षेत्रकी अपे ता उत्कृष्ट होती है ॥१५॥

'अन्तर' पदके निर्देशसे अयोगाहनाविधायोके और भरतादिक क्षेत्रविशेषोंके

भावो परुविदो । केवलस्मे ति निहेसेण छट्टुमत्थाण पडिमेहो कदो । केवलिसमुग्घादेण समुहदस्से ति^१ निहेसेण सत्थाणकेवलपडिमेहो कदो । सन्वलो गदस्मे ति निहेसेण दह-
कवाड पदरगदाण पडिसेहा कदो । सन्वलो गपूणे वट्टमाणस्म उक्कस्सिया वेयणीयवेयणा
होदि ति उच्च होदि । एत्थ उच्चहारो सुगमो ।

तज्जदिरित्ता अणुक्कस्सा ॥ १७ ॥

एदम्हादो उक्कस्मखेत्तयेयणादो वदिरित्ता खेत्तयेयणा अणुक्कस्सा होदि । तत्थ
तणउक्कस्सियाए खेत्तयेयणाए पदरगदो केवली सामी, एदम्हादो अणुक्कस्मखेत्तयेयणा महल्ल-
खेत्ताभायादो । एद च उक्कस्मखेत्तादो त्रिसेसहीण, वादवल्लयम्भतरे जीवपदेसाणमभायादो ।
सन्वमहल्लोगाहणाए क्वाड गदो केवली तदणत्तरअणुक्कस्मखेत्तयाणसामी । णवरि पुविल्ल
अणुक्कस्मखेत्तादो निदियमणुक्कस्मखेत्तमग्गज्जगुणहीण, सखेत्तसूचीअणुल्लवाहल्लज्ज-
पदरपमाणक्वाडखेत्त पेक्खिदूण मधक्खेत्तस्म अमखेत्तगुणत्तुत्तभादो । पदेसणुक्कस्म
विक्खमोगाहणाए क्वाड गदो केवली तदियमखेत्तासामी । णवरि विदियमणुक्कस्मखेत्त
पेक्खिदूण तदियमणुक्कस्मखेत्त त्रिसेसहीण होदि, पुत्तिल्लखेत्तादो जगपदमेत्तत्त-
परिहाणिदसणादो । दुपदेसणुक्कस्सविक्रमणेण क्वाड गदो चउत्थखेत्तसामी । एद वि

प्रतिषेधका अभाव यत्प्रत्या गया है । 'वेयली' पदका निर्देश करके छद्मस्थोका
प्रतिषेध किया गया है । 'केवलिसमुद्घातसे समुद्घातको प्राप्त' इस निर्देशसे
स्वस्थानकेवलीका प्रतिषेध किया है । 'सत्र गदको प्राप्त' इस निर्देशसे दण्ड, क्वाड
और प्रतर समुद्घातको प्राप्त हुए केषणियोंका प्रतिषेध किया है । सन्वलोक्कपूरण
समुद्घातमें रहनेवाले केवलीके उत्कृष्ट घेदनीयवेदना होती है, यह उसका अभिभाव
है । यहा उपसहार सुगम है ।

उत्कृष्ट क्षेत्रवेदनामे भिन्न क्षेत्रवेदना अनुत्कृष्ट है ॥ १७ ॥

इस उत्कृष्ट क्षेत्रवेदनासे भिन्न क्षेत्रवेदना अनुत्कृष्ट होती है । अनुत्कृष्ट क्षेत्र
वेदनाविकल्पोंमें उत्कृष्ट क्षेत्रवेदनाके स्वामी प्रतरसमुद्घातका प्राप्त कर्षणी हैं, क्योंकि,
अनुत्कृष्ट क्षेत्रोंमें इससे और कोर यद्वा क्षेत्र नहीं है । यह क्षेत्र उत्कृष्ट क्षेत्रकी अपेक्षा
विशेष हीन है, क्योंकि, इस क्षेत्रमें जीवके प्रदेश यातवलयोंके भीतर नहीं रहते ।
सबसे बड़ी अग्गाहना द्वारा क्वाडसमुद्घातको प्राप्त केवली तदनन्तर अनुत्कृष्ट
क्षेत्रस्थानके स्वामी हैं । विशेष इतना है कि पूरके अनुत्कृष्ट क्षेत्रसे द्वितीय अनुत्कृष्ट
क्षेत्र असख्यातगुणा हीन है, क्योंकि, सख्यात सूच्यगुण बाह्यरूप जगप्रतर प्रमाण
क्वाडक्षेत्रकी अपेक्षा मध्यक्षेत्र असख्यातगुणा पाया जाता है । एक प्रदेश कम उत्कृष्ट
विष्कम्भ गुण अग्गाहनासे क्वाडसमुद्घातको प्राप्त केवली तृतीय क्षेत्रके स्वामी हैं ।
विशेष इतना है कि द्वितीय अनुत्कृष्ट क्षेत्रकी अपेक्षा तृतीय अनुत्कृष्ट क्षेत्र विशेष हीन
है, क्योंकि, इसमें पूरके क्षेत्रकी अपेक्षा एक जगप्रतर मात्र क्षेत्रकी हानि देखी जाती है ।
दो प्रदेश कम उत्कृष्ट विष्कम्भसे क्वाडको प्राप्त केवली चतुर्थ अनुत्कृष्ट क्षेत्रके स्वामी

अणतरपुच्छिल्लखेत्त पेक्खिद्वृण विसेसहीण दोजगपदरमेत्तेण । एव सातरकमेण खेत्तसामित्त
 परूवेदच्च जाय आहुद्वरयणिउरसेहओगाहणाए विवखमेण्णपचधनुसद पणुवीमुत्तरस्सेह-
 ओगाहणविवखममेत्तकवाडखेत्तवियप्पा ति । पुणो एदेण सच्चजहण्णपच्छिमवखेत्तेण सरिस-
 मुत्तरादिमुहकवाडवत्तेत्त घेत्तूण पुणो ततो एगेगपेदेस विवखमम्मि ऊण करिय कत्राड णेदूण
 खेत्तवियप्पाण सामित्त परूवेदच्च जाय उत्तगभिमुहकेनलजहण्णकत्राडवखेत्त पतो ति । पुणो
 तदणतरहेट्टिमअणुक्करसखेत्तमाभी महामच्छो तिण्णिभिग्गहकूदएहि सत्तमपुढविमारण-
 तियसमुग्घादेण समुहदो सामी, अण्णरस कवाडजहण्णत्तेत्तादो ऊणरम अणुक्करसखेत्तस्म
 अणुवलमादो । णवरि कवाडजहण्णग्गत्तादो महामच्छरस उक्करस्समसत्तेज्जगुणहीण ।

एतो प्पहुडि उर्वारिमन्खेत्तत्रियप्पाण घादिवग्गमाण भणिदनिहाणेण सामित्तपरूवण
 कापच्च । दडगयकेवल्लिखेत्तहाणाणि सखेज्जपदरगुल्मेत्ताणि महामच्छन्खेत्ततो णियदति ति
 पुं ण परूविदाणि । केवली दड करेमाणो स्सो, सरीरतिगुणवाहत्तेण [ण] कुणदि,
 वेयणाभावादो । को पुण सरीरतिगुणध हत्तेण दट कुणइ ? पत्तियकेण णिसुणकेवली ।

हैं। यह भी ध्व्ययहित पृथक क्षेत्रकी अपेक्षा दो जगप्रतर मात्रसे विशेष हीन है। इस प्रकार सातरप्रमसे साडे तीन रति उरसेध युक्त अधगाहनाके त्रिष्वग्गसे हीन पाच सौ पच्चीस धनुष उरसेध युक्त अधगाहनाके विष्वग्ग प्रमाण कपाटक्षेत्रके विष्वग्गों तक क्षेत्रस्यामित्यकी प्ररूपणा करना चाहिये। फिर इस सचजघय अन्तिम क्षेत्रके सदृश उत्तरामिमुल कपाटक्षेत्रको ग्रहण करके पश्चात् उससे त्रिष्वग्गमें एक एक प्रदेश कम करके कपाटसमुद्घातको लेकर उत्तरामिसुर केवलीक जघय कपाटक्षेत्रको प्राप्त होने तक क्षेत्रविष्वग्गोंके स्यामित्यकी प्ररूपणा करना चाहिये। पुन तीन विग्रहकाण्डको द्वारा सातवीं पृथिवीमें मारणा तत्रसमुद्घातमे समुद्घातको प्राप्त महामत्स्य तदनंतर अधरतन अनुत्कृष्ट क्षेत्रका स्वाभी है, क्योंकि, उक्त जघय कपाटक्षेत्रसे हीन और दूसरा अनुत्कृष्ट क्षेत्र पाया नहीं जाता। विशेष इतना है कि जघय कपाटक्षेत्रसे महामत्स्यका उत्कृष्ट क्षेत्र असत्यातगुणा हीन है।

अथ यहासे आगे पूर्वोक्त घातिकर्मके विधानसे उपरिम क्षेत्रदिवस्वोंकी प्ररूपणा करन। चाहिये। दण्डगत केवलीके सरयात प्रतरागुल मात्र क्षेत्रस्यान चूकि महामत्स्यक्षेत्रके भीतर आजाते हैं, अतः उनकी पृथक् प्ररूपणा नहीं की गई है। दण्डसमुद्घातको करनेवाले सभी केवला शरीरसे तिगुणे बाह्यसे उक्त समुद्घातको नहीं करते, क्योंकि, उनके घेदनाका अभाव है।

शङ्का - तो फिर कौनमे केवली शरीरसे तिगुणे बाह्यसे दण्डसमुद्घातको करते हैं ?

समाधान - पत्यक् आसनसे स्थित केवली उक्त प्रकारसे दण्डसमुद्घातको करते हैं।

एदेमि खेत्ताण सामिजीवाण परूणणे कीरमाणे छअणिओगदाराणि हवति । तत्थ परूवणाए वेयणीयसत्त्वस्वत्तत्रियण्णेषु अरिथ जीवा । परूवणा गदा ।

उत्तरकस्मए द्वाणे जीवा केत्तिया ? सखेज्जा । एव णेयव्व जाय कणाडगदकेवल्लि-जहण्णस्सत्तत्रियण्णे त्ति । उत्तरि महामच्छउक्कस्सत्तत्तप्पहुडि तमपाओग्गस्सत्तत्तसु असग्गेज्जा । वणप्फादिकाइयपाओग्गसु अणता । एव पमाणपरूवणा गदा । सेडिपरूवणा ण सक्कदे णेदु, पवाइज्जत्तुपदेसाभाणादा ।

अजहागे उच्चदे— उक्कस्सद्वाणजीवपमाणेण सव्वद्वाणजीवा केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जति ? अणतेण कालेण । एव णदव्व जाय तसकाइय पुढविकाइय आउकाइय तेउकाइय-वाउकाइयपाओग्गद्वाणे त्ति । सुहुम वादरवणप्फादिकाइयपाओग्गद्वाणनीपमाणेण सव्वजीवा वेवचिरेण कालेण अवहिरिज्जति ? असग्गेज्जण ।

भागामागो उच्चदे— उक्कस्सए द्वाणे जीवा सव्वद्वाणजीवाण केवडिओ भागो ? अणतिमभागो । जहण्णए द्वाणे मव्वद्वाणजीवाण केवडिओ भागो ? असग्गेज्जदिभागो । अजहण्णुक्कस्सए द्वाणे जीवा सव्वद्वाणजीवाण केवडिओ भागो ? असग्गेज्जा भागा । भागामागपरूवणा गदा ।

इन क्षेत्रोंके स्वामी जायोंकी प्ररूपणा करनेमें छह अनुयोगद्वार हैं । उनमें प्ररूपणा अनुयोगद्वारकी अपेक्षा वेदनीय कमके सथ क्षेत्रत्रिकल्पोंमें जीय हैं । प्ररूपणा समाप्त हुइ ।

उत्कृष्ट स्थानमें जाय कितने ह ? असख्यात हैं । इस प्रकार कपाटसमुदघातगत कचलीके जघय क्षेत्रत्रिकल्प तक ले जाना चाहिये । आगे महामत्स्यके उत्कृष्ट क्षेत्रसे लेकर प्रस योग्य क्षेत्रोंमें असख्यात जीय हैं । घनस्पतिक्रायिक योग्य क्षेत्रोंमें अनन्त जाय हैं । इस प्रकार प्रमाणप्ररूपणा समाप्त हुइ ।

श्रेणिप्ररूपणा वतगता शक्य नहीं है, क्योंकि, उसके नियममें प्रवाह स्वरूपसे प्राप्त हुए परम्परागत उपदेशका अभाव है ।

अवहारकी प्ररूपणा करते ह— उत्कृष्ट स्थानमें रहनेवाले जीयोंके प्रमाणसे सथ जीय कितने कालसे अपहृत होते हैं ? वे उक्त प्रमाणसे अनन्त कालमें अपहृत होते हैं । इस प्रकार प्रसक्रायिक, पृथिवीक्रायिक, जलक्रायिक, तेजक्रायिक और वायुक्रायिक योग्य स्थानों तक ले जाना चाहिये । सूक्ष्म व वादर घनस्पतिक्रायिक योग्य स्थानों सवधी जीयोंके प्रमाणसे सथ जीय कितने कालसे अपहृत होते हैं ? उक्त प्रमाणसे वे असख्यात कालमें अपहृत होते हैं ।

भागामागकी प्ररूपणा करते हैं— उत्कृष्ट स्थानमें रहनेवाले जीय सथ स्थानों सवधी जीयोंके कितनेवें भाग प्रमाण ह ? वे उनके अनन्त तबें भाग प्रमाण हैं । जघय स्थानमें रहनेवाले जीय सथ स्थानों सवधी जायोंके कितनेवें भाग प्रमाण ह ? वे उनके असख्यातवें भाग प्रमाण हैं । अजघयोत्कृष्ट स्थानमें रहनेवाले जीय सथ स्थानों सवधी जीयोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं ? वे उनके असख्यात बहुभाग प्रमाण ह । भागामागप्ररूपणा समाप्त हुइ ।

अप्यायहुग वत्तइस्सामो— सञ्चत्थोया उक्कस्सए द्वाणे जीवा । जहण्णए द्वाणे जीवा अणत्तगुणा । अजहण्णअणुक्कस्सए द्वाणे जीवा असखेज्जगुणा । अजहण्णए द्वाणे जीवा विसेसाहिया । अणुक्कस्सए द्वाणे जीवा त्रिसेसाहिया । सव्वेसु द्वाणेषु जीवो त्रिसेसाहिया ।

एवमाउव-णामा-गोदाण ॥ १८ ॥

जहा वेदणीयस्स उक्कस्साणुक्कस्सखेत्तपरूवणा कदा तहा आउव णामा गोदाण पि खेत्तपरूवण कायञ्च, विसेमाभानादे । एवमुक्कस्साणुक्कस्सखेत्तपरूवणा समत्ता ।

सामित्तेण जहण्णपदे णाणावरणीयवेयणा खेत्तदो जहण्णिया कस्स ? ॥ १९ ॥

जहण्णपदणिदेसो सेसपदपडिसेहफलो । णाणावरणीयणिदेसो सेसकम्मपडिसेहफलो । खेत्तणिदेसो दव्वादिपडिसेहफलो । कस्से चि देव णेरइयादिविसयपुच्छा ।

अण्णदरस्स सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तयस्स तिसमयआहारयस्स तिसमयतभवत्थस्स जहण्णजोगिस्स सव्वजहण्णियाए शरीरोगाहणाए वट्टमाणस्स तस्स णाणावरणीयवेयणा खेत्तदो जहण्णा ॥ २० ॥

अप्ययहुत्वको कहते ह—उत्कृष्ट स्थानमें जीव सयसे स्तोत्र हैं । उनसे अघाय स्थानमें जीव अणत्तगुणे हैं । उनसे अजघाय अनुत्कृष्ट स्थानमें जीव असख्यातगुणे हैं । उनसे अजघाय स्थानमें जीव विशेष अधिक हैं । उनसे अनुत्कृष्ट स्थानमें जीव विशेष अधिक हैं । उनसे सब स्थानोंमें जीव विशेष अधिक हैं ।

इसी प्रकार आयु, नाम व गोत्र कर्मके उत्कृष्ट एव अनुत्कृष्ट वेदनाक्षेत्रोंकी प्ररूपणा करनी चाहिये ॥ १८ ॥

जिम प्रकार वेदनीय कर्मके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट क्षेत्रकी प्ररूपणा की गई है, उसी प्रकार आयु, नाम व गोत्र कर्मके भी उक्त क्षेत्रोंकी प्ररूपणा करनी चाहिये, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं है । इस प्रकार उत्कृष्ट अनुत्कृष्टक्षेत्रप्ररूपणा समाप्त हुई ।

स्थामित्वसे जघन्य पदमें ज्ञानावरणीयकी वेदना क्षेत्रकी अपेक्षा जघन्य किसके होती है ? ॥ १९ ॥

जघन्य पदका निर्देश शेष पदोंके प्रतिषेधक लिये किया है । ज्ञानावरणीयका निर्देश शेष कर्मोंका प्रतिषेध करनेवाला है । क्षेत्रकी निर्देश द्रव्यादिकका प्रतिषेध करता है । 'किसके होती है' इस निर्देशसे दूध व नारकी आदि विषयक पृच्छा प्रगट की गई है ।

अन्तर सूक्ष्म निगोद जीव लब्धपर्याप्तक, जो कि त्रिसमयवर्ती आहारक है, तद्भवस्थ होनेके तृतीय समयमें वर्तमान है, जघन्य योगवाला है, और शरीरकी सर्वजघन्य अणुगणनामें वर्तमान है, उसके ज्ञानावरणीयकी वेदना क्षेत्रकी अपेक्षा जघन्य होती है ॥ २० ॥

* अनाश्रया जीवा इत्यनू पद नोपलभ्यत ।

२ सुहुमणिगोदअपज्जत्तयस्स जादम्हा तद्विसमयणिह । - गुल्भर्गल्लोणं जहण्णवक्कस्सय मग्गे ॥ गो जी १४

सुदुमणिगोदा अणता अत्थि, तत्थ एककस्स गदण्डमण्णदरस्स सुदुमणिगोद-
जीवस्से ति उच्च । तथ पज्जत्तणिराकरणदृमपज्जत्तस्से ति उच्च । पज्जत्तणिराकरण किमद्व
कीरुदे ? अपज्जत्तज्जदण्णोमाहणादो पज्जत्तज्जदण्णोमाहणाए बहुत्तुत्तलमादो । विग्गहग्गदीए
ज्जदण्णोमाहणा पि पुत्तिल्लोमाहणाए सरिसा ति तप्पत्तिसेहद्व तिसमयआहारयस्से ति भणिद ।
उत्तुग्गदीए उप्पण्णो ति जाणात्तणद्व तिसमयतभवत्थस्से ति भणिद । एग्ग दो तिण्णि वि
विग्गहे कादण उप्पाइय छसमयतभवत्थस्स ज्जदण्णसामित्त किण्ण दिज्जदे ? ण, पच्चसु
समण्सु अमत्थेज्जगुणाए सेटीए वड्ढिदेण एगताणुवड्ढिजेगेण वड्ढमाणस्स बहुओगाहणप्प-
सगादो । पढमसमयआहारयस्स पढमसमयतभवत्थस्स ज्जदण्णत्तत्तमाभिण किण्ण दिज्जदे ?
ण, तत्थ आयदच्चउरम्मन्नेत्तागारेणो द्विद्विम्मि ओगाहणाए र्योत्तणुववत्तीदो । उत्तुग्गदीए
उप्पण्णपढममयम्मि आयदच्चउरससखेण जीवपदेमा चिट्ठति ति कथ णध्वदे ? पत्ताइ-

सूक्ष्म निगोदिया जीव अनंत हैं, उनमेंसे एकका ग्रहण करनेके लिये 'अन्यतर
सूक्ष्म निगोद जीवके' ऐसा कहा है। उनमें पर्याप्तका निराकरण करनेके लिये
'अपयाप्तके' ऐसा निर्देश किया है।

शुक्रा— पर्याप्तका निराकरण किसलिये किया जा रहा है ?

समाधान— अपयाप्तकी जघन्य अवगाहनासे चूकि पर्याप्तकी जघन्य अवगाहना
बहुत पायी जाती है, अत उसका निषेध किया गया है।

विग्रहगतिमें चूकि जघन्य अवगाहना भी पूर्व अवगाहनाके सदृश है, अत
उसका निषेध करनेके लिये 'तिसमयवर्ती आहारक' ऐसा कहा है। ऋजुगतिसे उत्पन्न
दुग्धा, इस यातके ज्ञापनाय मृतीय समयवर्ती तद्भवस्थ' ऐसा कहा है।

शुक्रा— एक, दो अथवा तीन भी विग्रह करके उत्पन्न कराकर पशुसमयवर्ती
तद्भवस्थ निगाद जीवके जघन्य स्वामीपना क्यों नहीं देते ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, पात्र समयमें असख्यातगुणित श्रेणिसे वृद्धिको प्राप्त
हुए एक तानुवृद्धियोगसे बढ़नेवाले उक्त जीवके बहुत अवगाहनाका प्रसंग आता है।

शुक्रा— प्रथम समयवर्ती आहारक और प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ हुए
निगोद जीवके जघन्य श्रेयका स्वामीपना क्यों नहीं देते ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, उक्त समय आयतचतुरस्र क्षेत्रके आकारसे स्थित
उक्त जीवमें अवगाहनाका स्तोत्रपना बन नहीं सकता।

शुक्रा— ऋजुगतिसे उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें आयतचतुरस्र स्वरूपसे
जीवप्रदेश स्थित रहते हैं, यह कैसे जाना जाता है ?

१ तर्हि ऋजुत्वात्पर्यवश्यं कथमुत्तमम् ? विग्रहगती योगवृद्धियुक्तत्वन तदवगाहद्विद्विगमकार् । गो जी (जी प्र) १५
२ श्रित्ति पत्रस्थ खलागारे' इति पाठ ।

जतुवदेसादो । विदियममयआहारय विदियसमयतम्भवत्थरस जहण्णसामित्त किण्ण दिज्जेदे ।
ण, तत्थ समचउरसमरूत्वेण जीवपदेसाणमवट्टाणादो । विदियसमए विक्खमसमो आयामो
जीवपदेसाण होदि त्ति कुदो णव्वदे ? परमगुरूवदेसादो । तदियसमयआहारयस्स तदिय-
समयतम्भवत्थरस चैव जहण्णम्खेत्तसामित्त किमट्ट दिज्जेदे ? ण एस दोसो, चउरस-
खेत्तरस चत्तारि वि कोणे सकोडिय वट्टुलागारेण जीवपदेसाण तत्थावट्टाणदसणादो । तत्थ
वट्टुलागारेण जीवावट्टाण कथ णव्वदे ? एदम्हादो चैव सुत्तादो । उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि
जहण्णउववादजोग जहण्णएगताणुवट्टिजोगेहि चैव तिसु वि समएसु पयट्टो त्ति जाणावणट्ट
जहण्णनेगिस्से त्ति मणिद । तदियसमए अजहण्णाओ वि ओगाहणाओ अत्थि त्ति तप्पडि-
सेहट्ट सव्वजहण्णियाए सरीरोगाहणाए वट्टमाणस्से त्ति मणिद । एवविह्विसेसणेहि विसेसि-

समाधान— यह आचार्यपरम्परागत उपदेशसे जाना जाता है ।

शुका— द्वितीय समयवर्ती आहारक और तद्भवस्थ होनेके द्वितीय समयमें
यर्तमान जीवके जघन्य स्वामीपना क्यों नहीं देते ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, उस समयमें भी जीवप्रदेश समचतुरस्र स्वरूपसे
अवस्थित रहते हैं ।

शुका— द्वितीय समयमें जीवप्रदेशोंका दिक्कम्भके समान आयाम होता है,
यह कहासे जाना जाता है ?

समाधान— यह परम शुकके उपदेशसे जाना जाता है ।

शुका— तृतीय समयवर्ती आहारक और तृतीय समयवर्ती तद्भवस्थ निर्गोद
जीवके ही जघन्य क्षेत्रका स्वामीपना किसलिये देते हैं ?

समाधान— यह कोई टोप नहीं है, क्योंकि, उस समयमें चतुरस्र क्षेत्रके
चारों ही कोनोंके सकुचित करके जीवप्रदेशोंका वर्तुल अर्थात् गोल आकारसे अवस्थान
देखा जाता है ।

शुका— उस समय जीवप्रदेश वर्तुल आकारसे अवस्थित होते हैं, यह कैसे
जाना जाता है ।

समाधान— यह इसी सूत्रसे जाना जाता है ।

उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे उत्पन्न जघन्य उपपादयोग और जघन्य
एकान्तानुवृत्तियोगसे ही तीनों समयोंमें प्रवृत्त होता है, इस बातको जतलानेके लिये
'जघन्य योगघोलेके' ऐसा सूत्रमें निर्देश दिया है । तृतीय समयमें अजघन्य भी
अवगाहनार्थ होता है, अतः उनका प्रतिषेध करनेके लिये 'शरीरकी सर्वजघन्य
अवगाहनमें यतमान' यह कहा है । इन विशेषणोंसे विशेषताको प्राप्त हुए सूत्रम
निर्गोद

१ ननु-पञ्चतृतीयसमये एव सर्वत्र-पावगाहनं कथं सम्भवेत् इति चेत्- प्रथमसमये निर्गोदजीवशरीरस्यापत्-
पुत्रासक्तान् द्वितीयसमये समचतुरस्रान् तृतीयसमये कोणानपनेन वृत्तान् तदेव [तदेव] तदवगाहनस्यापत्-
सम्भवात् । गो जी (जी प्र) १५ ।

यस्म सुहृमणिगोदजीवस्स णाणावरणीयवेयणा खेत्तदो जहण्णा । एत्थ उप्सहारो उच्चदे—
एगउस्सेदघणगुल उविय तापाओग्गेण पलिदोउमस्स अमरेउज्जदिभागेण भागे हिंदे णाणा-
वरणीयस्स जहण्णकखेत्त होदि ?

तत्त्वदिरित्तमजहण्णा ॥ २१ ॥

तत्तो जहण्णकखेत्तादो वदिरित्ता खेत्तयेयणा अजहण्णा । सा च बहुपयारा । तासिं
सामित्तरूण कस्सामो । त जहा— पलिदोउमस्स अमरेउज्जदिभाग विरलेदूण घणगुल
समखड करिय दिण्णे एक्केक्कस्स रूपस्स सुहृमणिगोदअपञ्चत्तयस्स जहण्णोगाहण पावदि ।
पुणो एदिस्से उवरि पदेसुत्तरोगाहणाए तत्थेन द्विदो अजहण्ण जहण्णकखेत्तस्स साभी । एत्थ
काए वड्डीए वड्ढिदो विदियक्खेत्तत्रियणो ? असखेज्जभागउट्ठाए । त जहा— जहण्णोगाहण-
हेट्ठा विरलेदूण उवरिमएगरूपधरिद ममखट कादूण दिण्णे एगागासपदेसो पावदि । पुणो
एत्तियमेत्तेण अहियमुवरिमएगरूपधरिदमिअमो त्ति रूराहियेहेट्ठिमविरलणाए जदि एगरूप-
परिहाणी लम्भदि तो उवरिमविरलणाए किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदमिच्छमोवट्ठिय
लद्धे उवरिमविरलणाए सरिसच्छेद कादूण सोहिंदे अनहण्ण जहण्णोगाहणाए भागहारो होदि ।

जीवके ज्ञानावरणायका वेदना क्षेत्रसे जघ य होती ह । यहा उपसहार कहते ह—
एक उत्सेघघनागुलको स्थापित करके तःप्रायोग्य पक्षोपमक असख्यातवै भागका भाग
देनेपर ज्ञानावरणायका जघ य क्षेत्र होता है ।

उत्से भिअ जघन्य वेदना होती है ॥ २१ ॥

उत्से अथात् जघन्य क्षेत्रसे भिअ क्षेत्रवेदना अजघ य है । यह अनेक प्रकार
है । उन बहुविध क्षेत्रवेदनाओंके स्वामित्वकी प्ररूपणा करते हैं । यह इस प्रकार है—
पक्षोपमके असख्यातवै भागका विरलन करके घनागुलको समखण्ड करके देनेपर
एक एक रूपके प्रति मूद्धम निगोद अपर्याप्तक जीवकी जघ य अद्यगाहना प्राप्त होती
है । पश्चात् इसके आगे एक प्रदेश अधिक अद्यगाहनासे चहा (निगोदःपर्यायमे) ही
स्थित जीव अजघ य क्षेत्रवेदनाके जघ य स्थानका स्वामी होता है ।

शुका— यहा द्वितीय क्षेत्रविरल्य कौनसी वृद्धिके द्वारा वृद्धिगत हुआ है ?

समाधान— यह असख्यातभागवृद्धिके द्वारा वृद्धिगत हुआ है । यह इस
प्रकारसे— जघ य अद्यगाहनाका नीचे विरलन करके उपरिम एक अक्षके प्रति प्राप्त
राशिको समखण्ड करके देनेपर एक आकाशप्रदेश प्राप्त होता है । अब इतने मात्रसे
अधिक उपरिम एक रूपधरित राशिकी वृद्धि इच्छा है, धत एक रूपसे अधिक अधस्तन
विरलनमें यदि एक रूपकी हनि पायी जाती है तो उपरिम विरलन राशिमें यह कितनी
पायी जायेगी, इस प्रकार प्रमाणसे कठगुणित इच्छाकी अपघर्तित करके लघको समच्छेद
करके उपरिम विरलनमेंसे धटा देनेपर अजघ य जघ य अद्यगाहनाका भागहार होता है ।

१ अस्वरी शिपिदसे रुदे अक्षेज्जमागवड्ढाए । आधी निरुत्तमवे एगेणपदेतापीवड्ढी ॥ गो जी २२.

जहण्णखेत्तस्सुवरे दोआगासपदेसे' वड्डियं' द्विदो विदियअजहण्णखेत्तस्सामी' । एत्थ नि अससेज्जमागवड्डी चेत्त । त जहा— हेट्ठिमविरलणाए दुभागेण रूवाहिएण उवरिम-विरलण रडिय तत्थे एगखडेण उवरिमविरलणाए अवणित्ते विदियखेत्तभागहारो होदि । तिपदेसुत्तरजहण्णोगाहणाए वट्टमाणो जीणे तदियखेत्तमामी । एत्थ नि भागहारपरिहाणी पुव्व व कायन्ना । णरेरि हेट्ठिमविरलणाए तिभागो रूवाहियो उवरिमविरलणाए भागहारो होदि । एवमेगेगागासपदेस वट्टानिय णेदस्स जात्त जहण्णपरित्तासखेज्जेत्तागासपदेसा वड्डिदात्ति । एत्थ भागहाराणयण उच्चदे— जहण्णपरित्तासखेज्जेणो वट्टिदेहेट्ठिमविरलणाए रूवाहियाए उवरिमविरलणमोवड्डिय तत्थुवलडे तत्थेअ वणित्ते 'तदियखेत्तभागहारो होदि । एत्त पदसेसु एगादिएसुत्तरकमेण वट्टमाणेसु केत्तिए अट्टाणे गदे उवरिमविरलणाए एगरूव-परिहाणी' लभेदे ? रूवणुवरिमविरलणाए जहण्णोगाहणाए मड्डिदाए तत्थे एगखडेमेत्तसु अजहण्णखेत्तत्रियप्पेसु अदिक्कत्तसु एगरूवपरिहाणी लभदि । त जहा— रूवणुवरिमविरलण हेट्टा निरलिय जहण्णखेत्त समखड करिय दिण्णे निरलणत्त्व पडि वड्डिरूवाणि पावेत्ति । पुणो एदाणि उवरि दाट्ठण समकरणे कीरमाणे परिहीणरूवाण पमाण उच्चदे— रूवाहिय

जघन्य क्षेत्रके ऊपर दे आकाशप्रदेशोंको षड्भस्म स्थित जाय द्वितीय अजघन्य क्षेत्रका स्वामी होता है । यहा भी असख्यातभागवृद्धि हा है । यथा— अघस्तन विरलनक रूपाधिक द्वितीय भागसे उपरिम विरलन राशिको खण्डित कर उसमेंसे एक खण्डको उपरिम विरलनमसे कम कर देनेपर द्वितीय क्षेत्रका भागहार होता है ।

तीन प्रदश अधिन जघन्य अघगाहनामें रहनेवाला जीव तृतीय क्षेत्रका स्वामी है । यहापर भी भागहारकी हानिको पहिलेके समान ही करना चाहिये । विशेष इतना है कि अघस्तन विरलनका रूपाधिक तृतीय भाग उपरिम विरलनका भागहार होता है । इस प्रकार एक एक आकाश प्रदेशको षड्भस्म जघन्य परीतामख्यात प्रमाण आकाशप्रदेशों की वृद्धि होने तक ले जाना चाहिये । यहा भागहार एतकी विधि कहते हैं— जघन्य परीतामख्यातसे अपरित्त रूपाधिक अघस्तन विरलन द्वारा उपरिम विरलनको अपघतित करके जो वहा उपलब्ध हो उसे उसीमेंसे घटा देनेपर वहाके क्षेत्रका भागहार होता है ।

शुद्धा— इस प्रकार एकको आदि लेकर एक अधिक क्रमसे प्रदेशोंके षड्भस्मपर कितना अघान जानेपर उपरिम विरलनमें एक रूपकी हान पायी जाती है ?

समाधान— रूप कम उपरिम विरलनसे जघन्य अघगाहनाको खण्डित करने पर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण अजघन्य क्षेत्रके विकल्पाके घीत जानेपर एक रूपकी हानि पायी जाती है । यह इस प्रकारमे— रूप कम उपरिम विरलनको नीचे विरलित कर जघन्य क्षेत्रको समखण्ड करके देनेपर विरलन रूपके प्रति वृद्धिरूप प्राप्त हाते हैं । अब इनको ऊपर देकर समकरण करते समय हीन रूपोंके प्रमाणको

१ अक्षय्यो '—पदेसा' इति पाठ । २ अक्षय्यो '—अजहण्णखेत्तस्सुवरे सामी' इति पाठ ।

३ अक्षय्यो 'एगखडेपरिहाणी', तापनी 'एग [स] रूवपरिहाणी' इति पाठ ।

विरलमेतद्वाण गन्धुं यदि एगस्यापरिहायी तन्मदि तो उपरिमिरात्त्वाए किं तमानो वि
 पमाणेण कन्तुगिदिस्वाण भोवद्विदाण एवस्यामागन्दि । मग्नि उधिमिरात्त्वाए भवन्दि
 तदित्थवेत्तवियणमागदारी होदि । एष गन्धुं जहन्तोमाह्वणं जहन्तोपरिहायमेव्येण गडे-
 दूण तस्य एगमडे वद्विदे वि असवेत्तमागवर्द्धी चेर । एग्य मन्करं करिमाणे परिहाय
 रूवाणयण उच्येदे— रूवाणियजहन्तोपरिहायमेव्येणमागमि जदि एगस्यापरिहायी
 तन्मदि तो उपरिमिरात्त्वाए किं तमानो वि पमाणेण कन्तुगिदिस्वाए भोवद्विदाए इदिद्वि
 रूवाणि भागच्छति । पुणे ताणि उपरिमिरात्त्वाए भवन्दि नदिग्ममजहन्तोपेष्टाणमागदारी
 होदि । पुणे एदिमे आवाहनाए उपरि पन्तुनर वद्विप द्विद्विदा तद्गन्तउधिमिरात्त्वा-
 सामी होदि । एष वि असवेत्तमागवर्द्धी चेर, उक्त्वग्ममग्ममेव जहन्तोमाह्वणं गद्विप
 तय एगमडेमेतदेमा गवर्द्धीए अभासदा । एव गन्धुं उक्त्वग्ममग्ममेव जहन्तोमाह्वणं
 राद्विप तदेगमडे जहन्तोमाह्वणाए उपरि वद्विदे एगोत्तमागवर्द्धीए भादी असवेत्तमाग
 वर्द्धीए परिमती च जादा ।

एतथ मागदारी उच्येदे । त जहा— उक्त्वग्ममग्ममेव निरिद्विप उक्त्वग्ममग्ममेव

कहत है— इपाधिक विरलन राशि प्रमाण भवता जाकर यदि एक रूपकी दानि पायी
 जाती है तो उपरिम विरलनमें वह कितनी पायी जायेगी, इस प्रकार प्रमाणसे एक
 गुणित इच्छाका अर्थानित करनेपर एक रूप जाता है । उनका उपरिम विरलनमें
 कम करनेपर यहाके क्षेत्रविच्छन्तका भागहार होता है । इस प्रकार जाकर तस्य
 अथगाहनाके जघन्य परीतासक्यातले स्खिद्ध करके उसमेंसे एक रूप मात्र वृद्धि
 हो जायेपर भी असक्यातभागवृद्धि ही रहती है ।

यहां समकरण करते समय हीन रूपोंके लाके पिपनको कहते हैं— इपा
 धिक जघन्य परीतासक्यात मात्र अध्यान जाकर यदि एक रूपकी दानि पायी जाती है
 तो उपरिम विरलनमें वह कितनी पायी जायेगी, इस प्रकार प्रमाणसे एकगुणित
 इच्छाको अर्थानित करनेपर हीन रूपोंका प्रमाण जाता है । उनको उपरिम विरलनमें
 कम करनेपर यहाके अजघन्य क्षेत्रस्थानका भागहार होता है । पुन इस अथगाहनाके
 ऊपर एक प्रदेश अधिकक्रमसे बढ़कर स्थित जीव तदनन्तर उपरिम क्षेत्रका स्थामी
 होता है । यहा भी असक्यातभागवृद्धि ही रहती है, क्योंकि, उरट्ट सक्यातमे जघन्य
 अथगाहनाको स्खिद्ध कर उसमें एक रूप मात्र प्रदेशोंकी वृद्धिका अभाव है । इस
 प्रकार जाकर जघन्य अथगाहनाके उरट्ट सक्यातले स्खिद्ध करके उसमेंसे एक
 रूप मात्र जघन्य अथगाहनाके ऊपर वृद्धि हो चुकोपर संक्यातभागवृद्धकी भादि
 और असक्यातभागवृद्धिकी समाप्ति हो जाती है ।

यहां भागहार कहते हैं । यह इस प्रकार है— उरट्ट सक्यातका विरलन

१ अथगाहने ' जहन्तोमाह्वण ' तापत्री जहन्तोमाह्वण (भ) इति पाठ । २ अग्नि उधिम ' इति पाठ ।
 ३ भापत्री जहन्तोमाह्वण ' इति पाठ । ४ अग्नि ' बही-अगाधये ' तापत्री ' बहि-अगाधये ' इति पाठ ।
 ५ अथगाहनाके जहन्तोपरिहायमेव्येणमागमिदि । अथगाहणी उक्त्वग्ममग्ममेव्येणमागमिदि ॥ वे श्री १०३.

घरिद समखड करिय दिण्णे विरलणरूण पडि वडिपदेमपमाण पावदि । पुणो एद उवरिम-
रूवघरिदेसु दाटूण समकरणे कीरमाणे णट्टरूवाण पमाण उच्चदे— रूवाहियेहेडिमविरलण-
मेत्तद्वाण गतूण जदि एगरूवपरिहाणी लम्बदि तो उवरिमविरलणाए किं लमामो ति
पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए परिहीणरूवोवलद्धी होदि । पुणो लद्धरूवेमु उवरिम-
विरलणाए अवणिदेसु तदित्थमागहारो होदि । एतो प्पहुडि उवरे समेज्जमागवट्टी चैव
होदूण गच्छदि जाव उवरिमविरलणाए अद्ध चेद्वेदे ति । तत्थ सखेज्जगुणवट्टीए आदी
सखेज्जमागवट्टीए परिसमत्ती च जादो ।

सपधि पुणरवि तदो प्पहुडि पदेसुत्तर दुपदेसुत्तरकमेण खेत्तवियप्पेसु वट्टमाणेसु जहण-
त्तेत्तमेत्तपदेमेसु वाट्टेदेसु तिगुणवट्टी होदि । तिरमे ओगाहणाए भागहारो जहणोमाहण-
भागहारस्म तिभागे होदि । ततो एग दोपदेसुत्तादिकमेण जहणोमाहणमेत्तपदेमेसु वट्टिदेसु
चट्टगुणवट्टी होदि । तत्थ मागहारो जहणोमाहणाए भागहारस्म चट्टमागो होदि । एव पेदव्व
जाव उवकरससखेज्जमेत्तो जहणोमाहणाए गुणगारो जादो ति । तिस्से ओगाहणाए पुण
भागहारो जहणोमाहणाभागहार उवकरससखेज्जेण खडिदे तत्थ एगखडमेत्तो होदि । पुणो

करके उपरिम एक रूपधरित राशिको समखण्ड करके देनेपर विरलनरूपके प्रति वृद्धिगत
प्रदेशोंका प्रमाण प्राप्त होता है । फिर इसको उपरिम रूपधरित राशियोंपर देकर
समकरण करते समय नष्ट रूपोंका प्रमाण कहा जाता है—रूपाधिक अधस्तन विर-
लन मात्र अध्वान जाकर यदि एक रूपकी हानि पायी जाती है, तो उपरिम विरलनमें
यह कितनी पायी जायेगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करने
पर परिहीन रूप प्राप्त होते हैं । पश्चात् प्राप्त रूपोंको उपरिम विरलनमेंसे घटा देने
पर यहाका भागहार होता है । यहासे लेकर ऊपर सख्यातभागवृद्धि ही होकर जाती
है जब तक उपरिम विरलनका अर्थ भाग स्थित रहता है । वहा सख्यातगुणवृद्धिकी आदि
श्रौर सख्यातभागवृद्धिकी समाप्ति हो जाती है ।

अथ यहासे लेकर फिर भी एक प्रदेश अधिक ही प्रदेश अधिक कमसे
क्षेत्रविकल्पोंकी वृद्धि होकर जघन्य क्षेत्र प्रमाण प्रदेशोंके षट् जानेपर तिगुणी
वृद्धि होती है । उस अवगाहनाका भागहार जघन्य अवगाहना सम्बन्धी
भागहारके तृतीय भाग प्रमाण होता है । पश्चात् एक प्रदेश अधिक द्वा प्रदेश अधिक
इत्यादि क्रमसे जघन्य अवगाहना मात्र प्रदेशोंकी वृद्धि होनेपर चतुगुणी वृद्धि होती है ।
यहां भागहार जघन्य अवगाहना सम्बन्धी भागहारके चतुर्थ भाग प्रमाण होता है ।
इस प्रकार जघन्य अवगाहना सम्बन्धी गुणकारके उत्पष्ट सख्यात मात्र हो जाते तब
से जाना चाहिये । उस अवगाहनाका भागहार, जघन्य अवगाहना सम्बन्धी भागहारको
उत्कृष्ट सख्यातसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्डके बराबर होता है । पश्चात्

तिस्मे उवरी पदेसुत्तर दुपदेसुत्तरादिकमेण एगजहण्णे।गाहणेमत्तं देसमु त्रिष्टुदेसु अमरोज्जगुण
 वट्ठीए आदी समेज्जगुणवट्ठीए परिसमती च द्वेदि' । तिस्मे भोगाहणाए जहण्णेगाहण-
 भागहारो' जहण्णपरिताम्येज्जेण खडिदे तत्थ एगखडमेतो गागहारो द्वेदि । पुणेो पत्तो-
 प्पहुडि उवरी पदेसुत्तर दुपदेसुत्तरादिकमेण अमरोज्जगुणवट्ठीए गच्छमाणाए सुहुमणिगोद
 जहण्णेगाहणाए सुत्तभणित्ताअत्रलियाए अमन्वज्जदिभागमेत्तगुणगारं पविट्ठे सुहुमआउकाइय
 लद्धिअपज्जत्तयस्म जहण्णेगाहणाए सरिसी सुहुमणिगादलद्धिअपज्जत्तयस्म अजहण्ण अणु
 करुस्सओगाहणा द्वेदि ।

सपदि सुहुमणिगोदोगाहण मोत्तूण वाउफाइयलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णेगाहण घेत्तूण
 पदेसुत्तरादिकमेण चटुहि वट्ठीहि वट्ठीवेदव्या जाव सुहुमतेउफाइयलद्धिअपज्जत्तयस्स
 जहण्णेगाहणाए सरिसी सुहुमआउकाइयलद्धिअपज्जत्तयस्स अजहण्ण अणुकरुस्सओगाहणा
 जादां ति । पुणेो त मात्तण इम घेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण चटुहि वट्ठीहि वट्ठीवेदव्या
 जाव सुहुमआउकाइयलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णेगाहणाए सरिसी जादां ति । पुणेो
 त मात्तूण सुहुमआउकाइयलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णेगाहण घेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण चटुहि
 वट्ठीहि वट्ठीवेदव्या जाव सुहुमपुढविकाइयलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णेगाहणाए सरिसी

उसक ऊपर पर प्रदेश अधिक दो प्रदेश अधिक इत्यादि प्रथम एक जघय अथ
 गाहना मात्र प्रदशाके यह तानेपर असत्त्यातगुणवृद्धिना प्रारम्भ और सख्यातगुणवृद्धिका
 अन्त होता है । उस अत्रगाहनाका भागहार, जघय अत्रगाहना सम्बन्धी भागहारको
 जघय परीतासत्त्यातस खण्डित करकेपर उसमेंसे एक खण्डके परापर होता है । -

पथान् यद्वासे लेकए जागे एक प्रदेश अधिक दो प्रदेश अधिक इत्यादि प्रथमे
 असत्त्यातगुणवृद्धिने चात् रहनेपर सूक्ष्म निगोद जीवकी जघय अथगाहनाम सूत्रो
 आवलीके असत्त्यातके भाग मात्र गुणकारक प्रविष्ट हो जाकेपर सूक्ष्म वायुकायिक लक्ष्य
 पर्याप्तका जघय अत्रगाहनाके सदश सूक्ष्म निगोद जीव लक्ष्यपर्याप्तकी अनघय
 अनुत्पद्य अथगाहना होनी है ।

अथ सूक्ष्म निगोद जीवकी अत्रगाहनाको छोडकर और सूक्ष्म वायुकायिक
 लक्ष्यपर्याप्तकी जघय अथगाहनाको प्रदण करके एक प्रदेश अधिक इत्यादि प्रथमे
 चार वृद्धियों द्वारा सूक्ष्म वायुकायिक लक्ष्यपर्याप्तकी अनघय अनुत्पद्य अथगाहनाके
 सूक्ष्म त्रिकयायिक लक्ष्यपर्याप्तकी जघय अथगाहनाके समाप्त हो जाने तक यद्दाना
 चाहिये । तत्पश्चात् उसका छोडकर और इम प्रदण करके प्रदेश अधिक प्रथमे चार
 वृद्धियों द्वारा सूक्ष्म त्रिकयायिक लक्ष्यपर्याप्तका जघय अथगाहनाके सदश हो जाने
 तक यद्दाना चाहिये । फिर उसको छोडकर और सूक्ष्म त्रिकयायिक लक्ष्यपर्याप्तकी
 जघय अथगाहनाको प्रदण करके एक प्रदेश अधिक इत्यादि प्रथमे चार वृद्धियों
 द्वारा सूक्ष्म पृथिवीकायिक लक्ष्यपर्याप्तकी जघय अथगाहनाके सदश हो जाने तक

जादा ति । पुणो त मोत्तूण सुहुमपुढविमाइयलद्धिअपज्जत्तजहण्णोगाहण घेत्तूण पदेसुत्तरादि-
 कमेण चहुहि वड्डीहि वड्ढावेदव्वा जाव वादरवाउवकाइयलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णोगाह-
 णाए सरिसी जादा ति । णरीर एत्थ गुणगारो पलिदोवमस्स असरेज्जदिभागो । कुदो ?
 परत्थाणगुणगारादो । पुणो त मोत्तूण वादरवाउवकाइयलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहण
 घेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण चहुहि वड्डीहि वड्ढावेदव्वा जाव वादरतेउवकाइयलद्धिअपज्जत्तयस्स
 जहण्णोगाहणाए सरिसी जादा ति । एत्थ वि गुणगारो पलिदोवमस्स असरेज्जदिभागो । कुदो ?
 वादरादो वादरस्स ओगाहणागुणगारो पलिदोवमस्स अमखेज्जिदिभागो ति सुत्तवयणादो । इम
 मोत्तूण वादरतेउवकाइयलद्धिअपज्जत्तजहण्णोगाहण घेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण चहुहि वड्डीहि
 वड्ढावेदव्वा जाव वादरवाउवकाइयलद्धिअपज्जत्तजहण्णोगाहणाए सरिसी जादा ति । एत्थ
 वि गुणगारो पलिदोवमस्स असरेज्जदिभागो । कारण पुव्व व वत्तव्व । पुणो इम 'मोत्तूण'
 वादरवाउवकाइयलद्धिअपज्जत्तजहण्णोगाहण घेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण चहुहि वड्डीहि वड्ढावे-
 दव्व जाव वादरपुढविकाइयलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणाए सरिसी जादा ति । पुणो

बढ़ाना चाहिये । फिर उसको छोड़ करके और सूक्ष्म पृथिवीकायिक लक्ष्यपर्याप्तककी
 जघन्य अवगाहनाको ग्रहण करके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों
 द्वारा वादर वायुकायिक लक्ष्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक
 बढ़ाना चाहिये । विशेष इतना है कि यहा गुणकार पर्योपमका असरयातवा भाग
 है, क्योंकि, वह परस्थानगुणकार है । फिर उसको छोड़कर और वायुकायिक लक्ष्य
 पर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाको ग्रहण करके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार
 वृद्धियों द्वारा वादर तेजकायिक लक्ष्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने
 तक बढ़ाना चाहिये । यहा भी गुणकार पर्योपमके असरयातवें भाग प्रमाण है, क्योंकि,
 वादरसे वादर जीवकी अवगाहनाका गुणकार पर्योपमके असरयातवें भाग प्रमाण है,
 ऐसा सूत्रबचन है । अथ इसको छोड़कर और वादर तेजकायिक लक्ष्यपर्याप्तककी
 जघन्य अवगाहनाको ग्रहण करके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों
 द्वारा वादर जलकायिक लक्ष्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने
 तक बढ़ाना चाहिये । यहा भी गुणकार पर्योपमका असरयातवा भाग है । इसका
 कारण पहिलेके ही समान कहना चाहिये । पश्चात् इसको छोड़कर और वादर
 जलकायिक लक्ष्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाको ग्रहण करके एक प्रदेश अधिक
 इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा वादर पृथिवीकायिक लक्ष्यपर्याप्तककी जघन्य
 अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये । फिर उसको छोड़कर और

१ तापती 'वादरस गुण गणे' इति पाठ । २ क्षेत्रविधा १८ इत्यमङ्गलणामो आकलि-पला असवमामो
 दु । सङ्घाण मेणिया अहिवा तयेणपडमामो मी गो नी १०१ ३ अ-काप्रया 'वाउवकाइय', तापती 'वा (आ)
 उ०' इति पाठ । ४ अ काप्रयो घणूण, तापती 'वे (वा) घूण' इति पाठ ।

त मोत्तूण इम घेत्तूण पदेसुत्तरादिऋमेण चदुहि वड्डीहि वड्डीवेदव्व जाव वादरणिगोदलद्धि-
 अपज्जत्तवहण्णोगाहणाए सरिसी जादा ति । पुणो त मोत्तूण इम घेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण
 चदुहि वड्डीहि वड्डीवेदव्व जाव णिगोदपदिट्ठिदलद्धिअपज्जत्तजहण्णोगाहणाए सरिसी जादा ति ।
 त मोत्तूण इम घेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण चदुहि वड्डीहि वड्डीवेदव्व जाव वादरवणफदिकाइय
 पत्तेयसरोरलद्धिअपज्जत्तजहण्णोगाहणाए सरिसी जादा ति । एत्थ वि गुणगारो, पल्लिदोवमस्स
 थसखेज्जदिभागो । कारण पुत्र व वत्तव्व । त मोत्तूण इम घेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण चदुहि
 वड्डीहि वड्डीवेदव्व जाव वेइदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणाए सरिसी जादा ति । एत्थ
 वि गुणगारो पल्लि दोवमरस असखेज्जदिभागो । कारण पुच्च व वत्तव्व । त मोत्तूण इम घेत्तूण
 पदेसुत्तरादिकमेण चदुहि वड्डीहि वड्डीवेदव्व जाव तेइदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणाए
 सरिसी जादा ति । एत्थ वि गुणगारो पल्लिदोवमरस असखेज्जदिभागो । कारण पुच्च व
 वत्तव्व । त मोत्तूण इम घेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण चदुहि वड्डीहि वड्डीवेदव्व जाव चउ-
 रिदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणाए सरिसी जादा ति । एत्थ वि गुणगारो पल्लिदोवमस्स
 अमखेज्जदिभागो । कारण पुच्च व वत्तव्व । त मोत्तूण इम घेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण चदुहि

इसे ग्रहण करके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा वादर
 निगोद लक्ष्यपर्याप्तकी जघय अघगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना
 चाहिये । पश्चात् उसे छोड़कर और इसको ग्रहण करके प्रदेशाधिकक्रमसे चार
 वृद्धियोंके द्वारा निगोदप्रतिष्ठित लक्ष्यपर्याप्तकी जघय अघगाहनाके सदृश
 हो जाने तक बढ़ाना चाहिये । अथ उसको छोड़कर और इसको ग्रहण करके
 एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा वादर घनस्पातिकाधिक
 प्रत्येकशरीर लक्ष्यपर्याप्तकी जघय अघगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना
 चाहिये । यहापर भी गुणकार पर्योपमका असख्यातया भाग है । कारणका कथन
 पहिलेके ही समान करना चाहिये । अथ उसको छोड़कर और इसको ग्रहण
 करके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा द्विन्द्रिय लक्ष्य
 पर्याप्तकी जघय अघगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये । यहापर
 भी गुणकार पर्योपमका असख्यातया भाग है । इसका कारण पहिलेके ही समान
 करना चाहिये । अथ उसको छोड़कर और इसको ग्रहण करके चार वृद्धियों
 द्वारा त्रिन्द्रिय लक्ष्यपर्याप्तकी जघय अघगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना
 चाहिये । यहापर भी गुणकार पर्योपमका असख्यातया भाग है । कारण पहिलेके
 समान करना चाहिये । अथ उसको छोड़कर और इसे ग्रहण करके एक प्रदेश
 अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा चतुन्द्रिय लक्ष्यपर्याप्तकी जघय
 अघगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये । यहापर भी गुणकार पर्योपमका
 असख्यातया भाग है । कारण इसका पहिलेके ही समान करना चाहिये । पश्चात्

१ इन्द्रियलक्ष्यपर्याप्तक्रमकी प्रथमोपमा तामनी [] एतन्ने अथन्तगतो दर्शित । २ चतुन्द्रियलक्ष्यपर्याप्त
 क्रमकी प्रथमोपमा तामनी नापठयन्ते ।

वह्नीहि वहुवेदव् जाव पचिदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणाए सरिसी जादा ति^१ ।
एत्थ वि गुणगारो पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागो । कारण पुव व वत्तव्व ।

पुणो पचिदियलद्धिअपज्जत्तजहण्णोगाहण वेत्तूण^२ पदेसुत्तरादिकमेण चहुहि वह्नीहि
वहुवेदव् जाव सुहुमणिगोदणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणाए सरिसी जादा ति । एत्थ
गुणगारो आवलियाए असखेज्जदिभागो । कुदो ? वादरादो सुहुमस्म ओगाहणागुणगारो
आवन्थियाए असखेज्जदिभागो ति सुत्तणिदेसा^३ । पुणो सुहुमणिगोदणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स
जहण्णोगाहण वेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण आवलियाए असखेज्जदिभागेण खड्डिदे तत्थ एगखड-
मेत्त वह्नीवेदव् । एव वह्नीदूण द्विदओगाहणाए सुहुमणिगोदणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स
उक्कस्सोगाहणा सरिसा होदि । पुणो पुव्विल्ल मोत्तूण इम वेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण एद
चेव ओगाहणमावलियाए असखेज्जदिभागेण खड्डिदेगखडमेत्त जाव वह्नी होदि तान वह्नीवे-
दव् । एव वह्नीदूण द्विदओगाहणा सुहुमणिगोदणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणाए
सरिसा होदि । पुणो एदमोगाहण^४ पदेसुत्तरादिकमेण चहुहि वह्नीहि वह्नीवेदव् जाव सुहुम-
वाउक्काइयणि वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहण पत्त ति । पुणो एत्थ गुणगारो आवलियाए

उसको छोड़कर और इसको ग्रहण करके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे
चार वृद्धियों द्वारा पचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सहदा हो
जाने तक बढ़ाना चाहिये । यहापर भी गुणकार पद्योपमका असख्यातया भाग
है । कारण इसका पहिलेके ही समान बढ़ना चाहिये ।

तत्पश्चात् पचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाको ग्रहण करके
एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा सूक्ष्म निगोद जीव
निवृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सहदा हो जाने तक बढ़ाना चाहिये ।
यहां गुणकार आचलीका असख्यातया भाग है, क्योंकि, वादरसे सूक्ष्मकी
अवगाहनाभुणकार आचलीका असख्यातया भाग है, ऐसा सूत्रमें निदिष्ट है ।
अथ सूक्ष्म निगोद जीव निवृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाको ग्रहण करके
एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे आचलीके असख्यातये भागसे खण्डित करनेपर
उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण बढ़ाना चाहिये । इस प्रकार बढ़कर स्थित अवगाहना
सूक्ष्म निगोद निवृत्तिपर्याप्तककी उत्पृष्ट अवगाहनाके सहदा होती है । पश्चात्
पूर्व अवगाहनाको छोड़कर और इसको ग्रहण करके एक प्रदेश अधिक इत्यादि
क्रमसे इसी अवगाहनाको आचलीके असख्यातये भागसे खण्डित कर उसमेंसे
एक खण्ड प्रमाण जय तक यह अधिक न हो जाये तब तक बढ़ाना चाहिये ।
इस प्रकार बढ़कर स्थित अवगाहना सूक्ष्म निगोद निवृत्तिपर्याप्तक जीवकी उत्पृष्ट
अवगाहनाके समान होती है । फिर इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि
क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा सूक्ष्म धातुकायिक निवृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके
प्राप्त होने तक बढ़ाना चाहिये । परंतु यहा गुणकार आचलीका असख्यातया भाग

१ पचेन्द्रियलब्ध्यपर्याप्तकका प्रथमोऽयं तावती पुनर्लिखित । २ 'पुणो पचिदियलद्धिअपज्जत्तजहण्णो
गाहण वेत्तूण इत्येतस्स रथाने तावती त मोत्तूण इम वेत्तूण' इति पाठ । ३ क्षेत्रविधान ९७ ४ प्रतिपु 'एवमेवोपाह्वं'
इति पाठ ।

असंखेज्जदिभागो । कुदो ? सुहुमादो सुहुमस्म ओगाहणगुणगारो आवलियाए अमखेज्जदि-
 भागो ति सुत्तवयणादो । एमो गुणगारो सुहुमेसु मन्वत्थ पत्तन्वो । पुणो इम धेचूण
 पदेसुत्तरादिकमेण इमिस्से ओगाहणाए उपरि एद चेव ओगाहणमात्रलियाए असखेज्जमागेण
 खड्दिदेगखटमेत्त वट्ठोवेदन्व । एन वट्ठोविदे सुहुमनाउत्तकाइयणिच्चत्तिअपज्जत्तयस्म उत्तक
 सिस्सा ओगाहणा होदि । पुणो पदेसुत्तरादिकमेण त चेव ओगाहणमात्रलियाए अमखेज्जदि
 भागेण खड्दिदेगखटमेत्ते वट्ठिदे सुहुमवाउत्तकाइयणिच्चत्तिपज्जत्तयस्म उत्तकम्मोगाहण
 पावदि । पुणो तत्थ पदेसुत्तरादिकमेण चट्ठुहि वट्ठुहि वट्ठोवेदन्व जाव सुहुमोउत्तकाइय
 णिच्चत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहण पत्त नि । पुणो एदमोगाहण पदेसुत्तरादिकमेण असखेज्ज
 भागनट्ठोए आवलियाए असखेज्जदिभागेण खड्दिदेगखटमेत्त वट्ठोवेदन्व जाव सुहुमनेउ-
 त्तकाइयणिच्चत्तिअपज्जत्तयस्म उत्तकम्मोगाहण पत्त ति । पुणो एद पदेसुत्तरादिकमेण अमखेज्ज-
 भागनट्ठोए आवलियाए असखेज्जदिभागेण खड्दिदेगखटमेत्त वट्ठोवेदन्व जाव सुहुमनेउ-
 त्तकाइयणिच्चत्तिपज्जत्तयस्स उत्तकम्मोगाहणाए सरिसो जादा ति । पुणो पदेसुत्तरादिकमेण
 चट्ठुहि वट्ठुहि इमा ओगाहणा वट्ठोवेदन्व जाव अउत्तकाइयणिच्चत्तिअपज्जत्तयस्से जहण्णो-

है, पर्योधि, सूक्ष्मसे सूक्ष्मका अथवाहतागुणकार आवलीका असख्यातया भाग है,
 ऐसा सूत्रमें निर्देश किया गया है । यह गुणकार सूक्ष्म जीवोंमें सत्रप्र कहना
 चाहिये । पश्चात् इसको ग्रहण करने एक प्रदेश अधिक इत्यादि प्रमसे इस
 अथवाहनाके उपर इसी अथवाहनाको आवलीके असख्यातयै भागसे स्पष्टित
 करनेपर उसमेंसे एक स्पष्ट प्रमाण बढ़ाता चाहिये । इस प्रकार बढ़ानेपर सूक्ष्म
 प्रायुकाधिक नियुत्तपयाप्तकफी उत्कृष्ट अथवाहना होती है । पश्चात् एक प्रदेश
 अधिक इत्यादि प्रमसे उक्त अथवाहनाको ही आवलीके असख्यातयै भागसे
 स्पष्टित करनेपर उसमेंसे एक स्पष्ट प्रमाण वृद्धि हो जानेपर सूक्ष्म प्रायुकाधिक
 नियुत्तपयाप्तकफी उत्कृष्ट अथवाहना प्राप्त होता है । पश्चात् उसको एक प्रदेश
 अधिक इत्यादि प्रमसे चार वृद्धियों द्वारा सूक्ष्म तेजकाधिक नियुत्तपयाप्तकफी
 जघय अथवाहनाके प्राप्त होने तक बढ़ाना चाहिये । पश्चात् इस अथवाहनाको
 एक प्रदेश अधिक इत्यादि प्रमसे असख्यातभागवृद्धि द्वारा आवलीके असख्यातयै
 भागसे स्पष्टित कर उसमेंसे एक स्पष्ट प्रमाण बढ़ाना चाहिये जब तक कि
 'सूक्ष्म तेजकाधिक नियुत्तपयाप्तकफी उत्कृष्ट अथवाहना न प्राप्त हो जाये । पश्चात्
 इसको एक प्रदेश अधिक इत्यादि प्रमसे असख्यातभागवृद्धि द्वारा आवलीके
 असख्यातयै भागसे स्पष्टित करनेपर उसमेंसे एक स्पष्ट मात्र बढ़ाना चाहिये
 जब तक कि यह सूक्ष्म तेजकाधिक नियुत्तपयाप्तकफी उत्कृष्ट अथवाहनाके
 समान नहीं हो जाती । फिर इस अथवाहनाको एक प्रदेश आविष्ट इत्यादि प्रमसे
 चार वृद्धियों द्वारा सूक्ष्म जलकाधिक नियुत्तपयाप्तकफी जघय अथवाहनाके

गाहणाए सरिसी जादा ति । तदो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण अमखेज्जमागवट्ठीए आपलियाए अमखेज्जदिमागेण खडिदेगखडमेत्ता वट्ठीवेदवा जाव सुहुमआउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्म उक्कस्सोगाहणाए सरिसी जादा ति । तदो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण अमखेज्जमागवट्ठीए इममोगाहणमानलियाए असखेज्जदिमागेण खडिदेगखडमेत्त वट्ठीवेदवा जाव सुहुमआउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्म उक्कस्सोगाहणाए सरिसी जादा ति । तदो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण चट्ठी वट्ठीवेदवा जाव सुहुमपुट्टविकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्म जहण्णोगाहणाए सरिसी जादा ति । तदो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण असखेज्जमागवट्ठीए अप्पिदोगाहणमानलियाए असखेज्जदिमागेण खडिदेगखडमेत्त वट्ठीवेदवा जाव सुहुमपुट्टविकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणाए सरिसी जादा ति । तदो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण अमखेज्जमागवट्ठीए अप्पिदोगाहणमानलियाए असखेज्जदिमागेण खडिदेगखडमेत्ता वट्ठीवेदवा जाव सुहुमपुट्टविकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्म उक्कस्सोगाहणाए सरिसी जादा ति । तदो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण चट्ठी वट्ठीवेदवा जाव सादरआउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णियाए ओगाहसदश हो जने तक वढाना चाहिये । पश्चात् इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे असख्यानभागवृद्धि द्वारा आयलीके असख्यातवै भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण वढाना चाहिये जब तक कि यह सूक्ष्म जलवायिक निवृत्तपर्याप्तकक्षी उत्पद्य अवगाहनाके सदश नहीं हो जाती है । फिर इस अवगाहनाके ऊपर एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे असख्यानभागवृद्धि द्वारा इसी अवगाहनाके आयलीके असख्यातवै भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण वढाना चाहिये जब तक कि यह सूक्ष्म जलवायिक निवृत्ति पर्याप्तकक्षी उत्पद्य अवगाहनाके सदश नहीं हो जाती । तत्पश्चात् इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे असख्यातभागवृद्धि द्वारा विघडित अवगाहनाको आयलीके असख्यातवै भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड मात्र वढाना चाहिये जब तक कि यह सूक्ष्म पृथिवीकायिक निवृत्तिपर्याप्तकक्षी उत्पद्य अवगाहनाके सदश नहीं हो जाती । पश्चात् इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे असख्यातभागवृद्धि द्वारा विघडित अवगाहनाको आयलीके असख्यातवै भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण वढाना चाहिये जब तक कि यह सूक्ष्म पृथिवीकायिक निवृत्तिपर्याप्तकक्षी उत्पद्य अवगाहनाके सदश नहीं हो जाती है । तत्पश्चात् इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा सादर वायुकायिक निवृत्ति जघय अवगाहनाके सदश हो जाने तक

रुद्धिदेगरुद्धमेत्तमिमा ओगाहणा वद्वावेदव्या जाव यादरपुढिनिवकाइयणिव्वत्तिअपज्ज
 त्तयस्स उक्कस्सियाए ओगाहणाए सरिसी जादा ति । पुणा पदेसुत्तरादिकमेण इमा
 ओगाहणा आवलियाए असखेज्जदिभागेण रुद्धिदेगरुद्धमेत्त वद्वावेदव्या जाव यादर-
 पुढिनिवकाइयणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सियाए ओगाहणाए सरिसी जादा ति । पुणो
 इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण चदुहि वद्वाहि वद्वावेदव्या जाव यादरणिगोद-
 णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहणियाए ओगाहणाए सरिसी जादा ति । एत्थ गुणगारो पलिदो-
 वमस्स असखेज्जदिभागो । पुणो पदेसुत्तरादिकमेण असखेज्जभागवद्वाए आवलियाए
 असखेज्जदिभागेण रुद्धिदेगरुद्धमेत्त वद्वावेदव्या जाव यादरणिगोदणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स
 उक्कस्सियाए ओगाहणाए सरिसी जादा ति । तदो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण
 आवलियाए असखेज्जदिभागेण रुद्धिदेगरुद्धमेत्त वद्वावेदव्या जाव यादरणिगोद
 णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सियाए ओगाहणाए सरिसी जादा ति । तदो पदेसुत्तरादि-
 कमेण चदुहि वद्वाहि वद्वावेदव्या जाव णिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तयस्स जहणियाए
 ओगाहणाए सरिसी जादा ति । एत्थ ओगाहणागुणगारो पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागो ।
 पुणो पदेसुत्तरादिकमेण असखेज्जभागवद्वाए आवलियाए असखेज्जदिभागेण

वद्दाना चाहिये जब तक कि यह यादर पृथिवीकाधिक नियत्यपयाप्तककी उत्कृष्ट
 अवगाहनाके सदृश नहीं हो जाती है । फिर इस अवगाहनाके एक प्रदेश
 अधिक इत्यादि क्रमसे अस्वत्यातयें भागसे स्रणित करनेपर उसमेंसे
 एक खण्ड मात्रसे वद्दाना चाहिये जब तक कि यह यादर पृथिवीकाधिक
 निवृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदृश नहीं हो जाती है ।
 तत्पश्चात् इस अवगाहनाके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार
 वृद्धियों द्वारा यादर निगोद निवृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो
 जाने तक वद्दाना चाहिये । यहा गुणवार पर्योपमका असख्यातवा भाग है ।
 फिर एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे अस्वत्यातभागवृद्धि द्वारा आवलीके
 असख्यातयें भागसे स्रणित करनेपर उसमें एक खण्ड मात्रसे वद्दाना चाहिये
 जब तक कि यह यादर निगोद निवृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदृश
 नहीं हो जाती है । फिर इस अवगाहनाके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे
 आवलीके असख्यातयें भागसे स्रणित करनेपर उसमें एक खण्ड मात्रसे वद्दाना
 चाहिये जब तक कि यह यादर निगोद निवृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके
 सदृश नहीं हो जाती है । तत्पश्चात् एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों
 द्वारा उसके निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने
 तक वद्दाना चाहिये । यहा अवगाहनागुणवार पर्योपमका असख्यातवा भाग है ।
 फिर एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे अस्वत्यातभागवृद्धि द्वारा आवलीके
 असख्यातयें भागसे स्रणित करनेपर उसमें एक खण्ड मात्रसे वद्दाना चाहिये

खडिदेगखडमेत वड्डवेदव्वा जाव णिगोदपदिद्विदणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सियाए ओगाहणाए सरिसी जादा त्ति । तदो पदेसुत्तरादिकमेण आवलियाए अस्सखेज्जदि-
भंगेण खडिदेगखडमेत वड्डवेदव्वा जाव णिगोदपदिद्विदपज्जत्तयस्स उक्कस्सियाए
ओगाहणाए सरिसी जादा त्ति । तदो पदेसुत्तरादिकमेण चट्ठहि वड्डिहि वड्डवेदव्व
जाव । चादरवणफ्फादिकादयपत्तेयसरिरपज्जत्तयस्स जहणियाए ओगाहणाए सरिसी
जादा त्ति । एत्थ गुणगारो पलिदोवमस्स अस्सखेज्जदिभागो । पुणो इमा ओगाहणा
पदेसुत्तरादिकमेण चट्ठहि वड्डिहि वड्डवेदव्व जाव पीइदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स
जहणियाए ओगाहणाए सरिसी जादा त्ति । एत्थ गुणगारो पलिदोवमस्स अस्सखेज्जदिभागो ।

सपहि उस्सेहघणगुलम्म भागहारो सखेज्जरूपमेत्तो जादो । उवरि एसा ओगाहणा
पदेसुत्तरादिकमेण तीहि वड्डिहि वड्डवेदव्वा जाव तेइदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणो-
गाहणाए सरिसी जादा त्ति । एत्थ गुणगारो सखेज्जा समया । कुदो ? चादरादो चादरस्स
ओगाहणगुणगारो सखेज्जा समया त्ति सुत्तयणादो । पुणो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादि-
कमेण तीहि वड्डिहि वड्डवेदव्वा जाव चउरिदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणियाए ओगाह-
णाए सरिसी जादा त्ति । पुणो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण तीहि वड्डिहि वड्डवेदव्वा
जाव परिदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणियाए ओगाहणाए सरिसी जादा त्ति । पुणो इमा

जब तक कि यह निगोदप्रतिष्ठित निवृत्त्यपर्याप्तकी उत्पन्न अवगाहनाके सदृश नहीं हो जाती है। फिर एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे आवलीके अस्ख्यातवै भागसे खण्डित करनेपर उसमें एक खण्ड मात्रसे बढ़ाना चाहिये जब तक कि यह निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तकी उत्पन्न अवगाहनाके सदृश नहीं हो जाती है। तत्पश्चात् एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा उसके बाद यन्त्रप्रतिकाधिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तकी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने-तक बढ़ाना चाहिये। यहा गुणकार पल्योपमका अस्ख्यातवा भाग है। फिर इस अवगाहनाके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा द्वित्रय निवृत्ति पर्याप्तकी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये। यहाँ गुणकार पल्योपमका अस्ख्यातवा भाग है।

अब उत्सेधघनागुलका भागहार सख्यात रूपों प्रमाण हो जाता है। इसके आगे-इस अवगाहनाके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे तीन वृद्धियों द्वारा त्रित्रय निवृत्तिपर्याप्तकी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये। यहा गुणकार सख्यात समय है, क्योंकि, बादरसे बादरका अवगाहना गुणकार सख्यात समय है, ऐसा सूत्रमें निर्देश है। फिर इस अवगाहनाके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे तीन वृद्धियों द्वारा चतुर्त्रिय निवृत्तिपर्याप्तकी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये। फिर इस अवगाहनाके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे तान वृद्धियों द्वारा पचेत्रिय निवृत्तिपर्याप्तकी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये। फिर इस अवगाहनाके

सुत्तरादिकमेण तीहि वट्टीहि वट्टुवेद्व्या जाव चादरवणप्फदिकांइयंपत्तयसरीरणिव्वत्ति-
पञ्जत्तयस्स उक्कस्सियाए ओगाहणाए सरिसी जादा त्ति । तदो पदेसुत्तरादिकमेण
तीहि वट्टीहि इमा ओगाहणा चडावेद्व्या जाव पचिंदियणिव्वत्तिपञ्जत्तयस्स उक्कस्सो-
गाहणाए सरिसी जादा त्ति ।

पुणो अण्णेगेण विक्खमुस्सेहेहि महामच्छसमाणेण महामच्छायामादो सखेज्जगुण-
हीणायामेण मुहप्पदेसे वट्टिदेगागासपदेसेण लद्धमच्छेण पुव्विल्लायामेण सह जोयणसहस्सस्स
वैयणाए विणा मारणतियसमुग्घादे कदे महामच्छोगाहणादो एसा ओगाहणा पदेसुत्तरा
होदि, मुहम्मि वट्टिदेगागासपदेमेण अहियत्तुवलमादो । पुणो एदेणेव लद्धमच्छेण मुहम्मि
वट्टिददोआगासपदेसेण जोयणसहस्समारणतियसमुग्घादे कदे पुव्विल्लवखेत्तादो [दो-]
पदेसुत्तरवियप्पो होदि । एवमेदेण कमेण सखेज्जपदरगुलेत्ता आगासपदेसा वट्टुवेद्व्या ।
एव वट्टिदण द्विदखेत्तेण पदेसुत्तरजोयणसहस्मस्स मारणतियसमुग्घादे कदे लद्धमच्छेत्त
सरिस होदि । पुणो पदेसुत्तरादिकमेण मुहम्मि सखेज्जपदरगुलाणि पुव्व व वट्टिय
द्विदखेत्तेण दुपदेसुत्तरजोयणसहस्सस्स कदमारणतियसमुग्घादवखेत्त सरिस होदि । एवं
एदेण कमेण पेद्व्य जाव आयामो सादरेयअद्धमरज्जुमेत्तो जादो त्ति । एदेण खेत्तेण

द्वारा बाँधर घनस्पातिकामिक प्रत्येकशरीर निर्बुत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके
सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये । तत्पश्चात् एक प्रदेश अधिक इत्यादि
क्रमसे तीन वृद्धियों द्वारा इस अवगाहनाको पंचेन्द्रिय निर्बुत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट-
अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये ।

फिर विष्कम्भ व उत्सेधकी अपेक्षा महामत्स्यके सदृश व महामत्स्यके
आयामसे सख्यातगुणे हीन आयामवाले तथा मुखप्रदेशमें एक आकाशप्रदेशकी
वृद्धिको प्राप्त हुए अन्य एक प्राप्त मत्स्यके द्वारा पूव आयामके साथ घेदनाके
बिना एक हजार योजन मारणातिकसमुद्घात किये जानेपर महामत्स्यकी अवगाहनासे,
यह अवगाहना एक प्रदेश अधिक होती है, क्योंकि, यह मुखमें वृद्धिको प्राप्त
हुए एक आकाशप्रदेशसे अधिक पायी जाती है । पश्चात् इसी प्राप्त मत्स्यके
द्वारा मुखमें दो आकाश प्रदेशोंसे वृद्धिगत होकर एक हजार योजन मारणान्तिक
समुद्घात किये जानेपर पूवके क्षेत्रकी अपेक्षा [दो] प्रदेशोंसे अधिक विकल्प होता है ।
इस प्रकार इस क्रमसे सख्यात प्रतरांगुल प्रमाण आकाशप्रदेशोंको बढ़ाना चाहिये ।
इस प्रकार बढ़कर स्थित क्षेत्रसे एक प्रदेश अधिक एक हजार योजन मारणा-
न्तिकसमुद्घात करनेपर प्राप्त मत्स्यका क्षेत्र समान होना है । पश्चात् एक प्रदेश
अधिक इत्यादि क्रमसे मुखमें पूर्वके समान सख्यात प्रतरांगुल बढ़कर स्थित क्षेत्रसे
दो प्रदेश अधिक एक हजार योजन मारणातिकसमुद्घात करनेवालेका क्षेत्र समान
होता है । इस प्रकार इस क्रमसे आयामके साधिक साडे सात राजु प्रमाण हो

१ अन्धप्रयो इमाओ वट्टुआ ' इति पाठ । २ अक्षप्रयो ' अण्णेण ' इति पाठ ।

३ प्रवियु ' -समुग्घाद कद- ' इति पाठ ।

लोगणालीए वायव्यदिमादो तिण्णि विग्गहकदयाणि काट्ठण मारणतियममुग्घादेण सत्तम-
 पुट्ठीणीरइएसु सेकाले उप्पज्जहिदि ति द्विदस्स खेत्त सरिस होदि । एव वद्धिदूण द्विदो,
 च अण्णेणो वेयणममुग्घादेण तिगुणनिम्भसमुस्सेहे काऊण मारणतियममुग्घादेण अद्धद्वम
 रज्जुण णवममाग गत्तूण द्विदो च ओगाहणाए सरिसा । पुणो वि पुत्तिन्ल मोत्तूण इम
 पेत्तूण गिरतर-सातरकमेण पुच्च व वट्ठापेदच्च जात्र आयामो अद्धद्वमरज्जुमेत्त पत्तो ति ।
 एव वट्ठापिदे णाणावरणीयस्स अनद्वणसत्तयेत्तनियत्तण सामित्तपरत्तणा कदा होदि ।

अथवा मित्यमच्छे चैव मारणतिप्रममुग्घादेण तिण्णि विग्गहकदयाणि काट्ठण
 सादिरेयअद्धद्वमरज्जुआयामस्स णेदच्चो । पाययेत्त वट्ठापिज्जमाणे एत्तसरहेण पासमि
 वद्धिदअद्धद्वमरज्जुओ पदरगुत्तस्स सत्तेज्जदिमाणे गट्ठिय तथ एगग्गउत्तमायाममि
 अवणिय सरिस काट्ठण पुणो सातर गिरतरकमेण ऊणवत्तेत्त वट्ठापेदच्च । एव पुणो पुणो
 पासमेत्त^३ वट्ठाविय पुत्तिन्लत्तेण सरिस करिय पुणो ऊणवत्तेत्त वट्ठापिय णेदच्च जात्र
 महामच्छुक्कस्ससमुग्घादखेत्तण सरिस जाद ति । एव णाणावरणीयस्स अनद्वणसामित्त
 परूत्तणा कदा होदि ।

जाने तक ले जाना चाहिये । इस क्षेत्रसे, जो त्रैकनालीनी वायव्य दिशासे
 तीन विग्रहकाण्डक करके मारणातिप्रममुद्घातसे सातवीं पृथियाव नारकियोंमें
 अनंतर समयमें उत्पन्न होनेके समुच्च स्थित है उसका, क्षेत्र समान है । इस
 प्रकार यद्दकर स्थित तथा दूसरा एक घेदनाममुद्घातसे तिगुणे विष्कम्भ य
 उत्सेधको करके मारणातिप्रममुद्घातसे साढ़े सात्र राजुओंके नाँवें भागको प्राप्त
 होकर स्थित हुआ, ये दोनों जीव अत्रगाहनाकी अपेक्षा समान हैं । फिरसे भी
 पहिलेको छोड़कर और इसे ग्रहणकर निरंतर सातर प्रमसे आयामके साढ़े सात्र
 रात्रु प्रमाणको प्राप्त होने तक पहिलेके ही समान यद्दाना चाहिये । इस प्रकार
 यद्दानेपर शानावरणीयके सय अत्रघय क्षेत्रविशेषोंके स्वामित्वकी प्ररूपणा समाप्त
 हो जाती है ।

अथवा सिक्थ मत्स्यको ही मारणातिप्रममुद्घातसे तीन विग्रहकाण्डकोंको
 कराकर साधिक साढ़े सात्र रात्रु आयामको प्राप्त कराना चाहिये । पार्श्वक्षेत्रके
 बढ़ाते समय एव साथ पा वैक्षेत्रमें वृत्तिको प्राप्त साढ़े सात्र रात्रुओंको प्रतरा
 गुल्के सख्यातर्धे भागसे राण्डित करके उसमेंसे एक राण्डप्रमाणको आयाममेंसे
 कम करके सहदा कर फिर सातर निरंतर प्रमसे कम किये गये क्षेत्रको यद्दाना
 चाहिये । इस प्रकार धार धार पार्श्वक्षेत्रको बढ़ाकर पूर्व क्षेत्रके समान करके पश्चात्
 कम किये गये क्षेत्रका यद्दाने महामत्स्यके उत्तर समुद्घातक्षेत्रके सहदा हो
 जाने तक ले जाना चाहिये । इस प्रकार शानावरणीयके अत्रघय क्षेत्र सम्बन्धी
 स्वामित्वकी प्ररूपणा समाप्त होती है ।

१ प्रतिपु निद' इति पाठ । २ तदन्ती 'साक्षात् अद्धद्वमरज्जु आणमस्स' इति पाठ । ३ प्रतिपु
 'पावपत्त' इति पाठः ।

एत्थ खेतट्टाणसामिनीउपव्वणाए परूवणा पमाणं सेडी अनहारो भागाभाग अप्पावहुणमिदि छ अणिओगद्वाराणि । एदेमिं छण्णमणिओगद्वाराणमुक्कस्साणुक्कस्सट्टाणेसु जहा परूवणा कदा तहा कायन्वा ।

एव सत्तण्ण कम्माण ॥ २२ ॥

जहा णाणावरणीयस्स जहण्णाजहण्णखेतपरूवणा कदा तहा सत्तण्ण कम्माण कायन्व, विमसाभावादे । एव सामितपरूवणा सगतोत्तमत्तमव्वट्टाणञ्जीउसमुदाहारां सपत्ता ।

अप्पावहुए त्ति । तत्थ इमाणि तिण्णिण अणिओगद्वाराणि—
जहण्णपदे उक्कस्सपदे जहण्णुक्कस्सपदे ॥ २३ ॥

एत्थ, तिण्णिण चेव अणिओगद्वाराणि त्ति सत्ताणियमो किमिदं कीत्ते ? ण एमं दोसो, अण्णसिमेत्थ अणिओगद्वाराण सभवाभावादे ।

जहण्णपदे अट्टण्ण पि कम्माणं त्रेयणाओ तुल्लाओ ॥ २४ ॥

यहा क्षेत्रस्थानोंके स्वामिभूत जीवोंकी प्ररूपणाम प्ररूपणा, प्रमाण, धेनि, अयहार, भागाभाग और अल्पप्रकृत्य, ये छह-अनुयोगद्वार हैं। इन छह अनुयोग द्वारोंकी प्ररूपणा जैसे उत्कृष्ट अनुकृष्ट क्षेत्रोंमें की गयी है-वैसे ही यहा भी करना चाहिये।

इसी प्रकार शेष सात कर्मोंके जघन्य न अनजय क्षेत्रोंकी प्ररूपणा करना चाहिये ॥ २२ ॥

निस प्रकार ज्ञानावरणीय कर्मके जघन्य न अनजय क्षेत्रोंकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार शेष सात कर्मोंके उन क्षेत्रोंकी प्ररूपणा करना चाहिये, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं है। इस प्रकार अपने भीतर सख्या, स्थान और जीवसमुदाहारके रखनेवाली स्वामित्वप्ररूपणा समाप्त हुई।

अल्पप्रकृत्य अविकृत है। उमकी प्ररूपणामे ये तीन अनुयोगद्वार हैं— जघन्य पदमें, उत्कृष्ट पदमें और जघयोत्कृष्ट पदमें ॥ २३ ॥

शक्त— यहा तीन ही अनुयोगद्वार हैं, वेसा सत्याका-नियम किसलिये किया जाता है ?

यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, और दूसरे अनुयोगद्वारोंकी यहा-सम्भावना नहीं है।

जघन्य पदमें आठों ही कर्मोंकी वेदनायें समान हैं ॥ २४ ॥

एत्थ वि गुणगारो पलिदोवमस्म असखेज्जदिमागो ।

वादरणिगोदजीवअपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा अस-
खेज्जगुणा ॥ ४० ॥

गुणगारो पलिदोवमस्स असखेज्जदिमागो ।

णिगोदपदिट्ठिदअपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा असखेज्ज-
गुणा ॥ ४१ ॥

गुणगारो पलिदोवमस्स असखेज्जदिमागो ।

वादरवणप्फदिकाह्यपत्तयमरीरअपज्जत्तयस्स जहणिया ओ
गाहणा असखेज्जगुणा ॥ ४२ ॥

गुणगारो पलिदोवमस्स असखेज्जदिमागो ।

वीडदियअपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा अमखेज्जगुणा
॥ ४३ ॥

गुणगारो पलिदोवमस्स असखेज्जदिमागो ।

तीडदियअपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा अमखेज्ज-
गुणा ॥ ४४ ॥

गुणगारो पलिदोवमस्स असखेज्जदिमागो ।

यहा भी गुणकार पल्योपमका असख्यातया भाग है ।

उससे वादर निगोद जीव अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असख्यातगुणी है ॥४०॥

गुणकार पल्योपमका असख्यातया भाग है ।

उससे निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना अमख्यातगुणी है ॥४१॥

गुणकार पल्योपमका असख्यातया भाग है ।

उससे वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना
असख्यातगुणी है ॥ ४२ ॥

गुणकार पल्योपमका असख्यातया भाग है ।

उससे द्वीन्द्रिय अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असख्यातगुणी है ॥४३॥

गुणकार पल्योपमका असख्यातया भाग है ।

श्रीन्द्रिय अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना उससे असख्यातगुणी है ॥ ४४ ॥

गुणकार पल्योपमका असख्यातया भाग है ।

चत्वरिन्दियअपज्जत्तयस्म जहणिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा
॥ ४५ ॥

गुणगारो पल्लिदोवमस्म अमखेज्जदिभागो ।

पचिन्दियअपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा
॥ ४६ ॥

गुणगारो पल्लिदोवमस्म अमखेज्जदिभागो । एदाओ पुव परूविदसव्वजहण्णो-
गाहणाओ लद्धिअपज्जत्ताण ति घेत्तन्नाओ । सपहि उवरि भण्णमाणाओ णिव्वत्तिपज्जत्ताण
णिव्वत्तिअपज्जत्ताण [च] वेत्तन्नाओ ।

सुहुमणिगोदजीवणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा
असंखेज्जगुणा ॥ ४७ ॥

एत्थ गुणगारो आवलियाए अमखेज्जदिभागो ।

तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥
तस्सेवे त्ति उत्ते णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स गहण, अण्णेण सह पच्चामत्तीए अभाजादो ।
केत्तियमेतो विमेसो ? अगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो । तस्स को पडिभागो ? आवलियाए
अमखेज्जदिभागो । केसिचि आइरियाणमहिप्पाएण पल्लिदोवमस्म असंखेज्जदिभागो ।

चत्वरिन्दिय अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना उससे असख्यातगुणी है ॥ ४५ ॥

गुणकार पर्योपमका असख्यातवा भाग है ।

पचिन्दिय अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना उससे असख्यातगुणी है ॥ ४६ ॥

गुणकार पर्योपमका असख्यातवा भाग है । ये पूर्व प्ररूपित सब जघन्य
अवगाहनायें लक्ष्यपर्याप्तकोंकी ग्रहण करना चाहिये । अथ आगे कही जानेवाली
निर्वृत्तिपर्याप्तकोंकी और निर्वृत्यपर्याप्तकोंकी समझना चाहिये ।

उसमे सूक्ष्म निगोद जीव निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असख्यातगुणी है ॥ ४७ ॥

यहा गुणकार भावलीका असख्यातवा भाग है ।

उसके ही अपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ४८ ॥

'उसके ही' यैसा कहनेपर निर्वृत्यपर्याप्तकका ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि,
और किसी दूसरेके साथ प्रत्यामत्ति नहीं है । विशेषका प्रमाण कितना है ? यह अगुलके
असख्यातवै भाग प्रमाण है । उसका प्रतिभाग क्या है ? भावलीका असख्यातवै भाग
उसका प्रतिभाग है । किन्हीं भाचार्योंके अभिप्रायसे यह पर्योपमके असख्यातवै भाग
प्रमाण है ।

तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया
॥ ४९ ॥

एत्थ वि तस्सेवे त्ति वयणेण णिच्चत्तीए गहण । केत्तियमेत्तो विसेमो ? अगुलस्स
असखेज्जदिभागमेत्तो ।

सुहुमवाउक्काइयपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा असं
खेज्जगुणा ॥ ५० ॥

एत्थ गुणगारो आवलियाए अमखेज्जदिभागो । एत्थ पज्जत्ते त्ति उत्ते णिच्चत्ति
पज्जत्तयस्स गहणमण्णस्तासमवादो ।

तस्सेव अपजत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥
केत्तियमेत्तो विसेमो ? अगुलस्स असखेज्जदिभागमेत्तो ।

तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥
केत्तियमेत्तो विसेमो ? अगुलस्स असखेज्जदिभागमेत्तो ।

सुहुमतेउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा
असखेज्जगुणा ॥ ५३ ॥

उसके ही पर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ४९ ॥

यहापर भी 'उसके ही' इस निर्दशसे निवृत्तिका ग्रहण किया गया है । विशेषका
प्रमाण किन्ना है ? यह अगुलके असख्यातयें भाग मात्र है ।

उससे सूक्ष्म वायुनायिक पर्याप्तकी जघन्य अवगाहना असख्यातगुणी है ॥ ५० ॥

यहां गुणकार आनलीका असख्यातया भाग है । यहा 'पर्याप्तक' ऐसा
कहनेपर निवृत्तिपर्याप्तका ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, दूसरेकी सम्भावना नहीं है ।

उसीके अपर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ५१ ॥

विशेष किन्ना है ? यह अगुलके असख्यातयें भाग प्रमाण है ।

उसीके पर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ५२ ॥

विशेष किन्ना है ? यह अगुलके असख्यातयें भाग प्रमाण है ।

उससे सूक्ष्म तैनायिक निवृत्तिपर्याप्तकी जघन्य अवगाहना असख्यातगुणी
है ॥ ५३ ॥

गुणगारो आवलियाए असखेज्जदिमागो ।

तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अगुलस्म असखेज्जदिमागमेत्तो ।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसा-

हिया ॥ ५५ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? आवलियाए असखेज्जदिमागमेत्तो ।

सुहुमआउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा

असखेज्जगुणा ॥ ५६ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असखेज्जदिमागो ।

तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसे-

साहिया ॥ ५७ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अगुलस्स असखेज्जदिमागमेत्तो ।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसे-

साहिया ॥ ५८ ॥

गुणकार ज्ञानलीला असख्यातवा भाग है ।

उसके ही अपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ५४ ॥

विशेष कितना है ? यह अगुलके असख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ५५ ॥

विशेष कितना है ? यह आधलीके असख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उससे सूक्ष्म जलकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असख्यातगुणी

है ॥ ५६ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार आवलीला असख्यातवा भाग है ।

उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ५७ ॥

विशेष कितना है ? यह अगुलके असख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ५८ ॥

केत्तियमेतो विससो ? अगुलस्म असखेज्जदिमागमेतो ।

सुद्धमपुढविकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा
असखेज्जगुणा ॥ ५९ ॥

को गुणगारो ? आभिल्याणं असखेज्जदिमागो ।

तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्म उक्कस्सिया ओगाहणा विसे-
साहिया ॥ ६० ॥

केत्तियमेतो विससो ? अगुलस्म असखेज्जदिमागमेतो ।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसे
साहिया ॥ ६१ ॥

केत्तियमेतो विससो ? अगुलस्म असखेज्जदिमागमेतो ।

वादरवाउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्म जहणिया ओगाहणा
असखेज्जगुणा ॥ ६२ ॥

को गुणगारो ? पट्टिदोवमस्स असखेज्जदिमागो ।

तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसे-
साहिया ॥ ६३ ॥

विशेष कितना है ? यह अगुलके असख्यातय भाग प्रमाण है ।

उमसे सद्धम पृथिवीभायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असख्यातगुणी
है ॥ ५९ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार जावलीका असख्यातया भाग है ।

उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ६० ॥

विशेष कितना है ? यह अगुलके असख्यातयें भाग प्रमाण है ।

उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ६१ ॥

विशेष कितना है ? यह अगुलके असख्यातयें भाग प्रमाण है ।

उमसे वादर वायुकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असख्यात-
गुणी है ॥ ६२ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पर्योपमका असख्यातया भाग है ।

उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ६३ ॥

१ प्रतिशु ' पट्टिदोवमस्स ' इति वाच. ।

केत्तियमेत्तो विसैसो ? अगुलस्स असखेज्जदिभागमेत्तो ।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसै-
साहिया ॥ ६४ ॥

केत्तियमेत्तो विसैसो ? अगुलस्स असखेज्जदिभागमेत्तो ।

वादरत्तेउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा
असंखेज्जगुणा ॥ ६५ ॥

को गुणगारो ? पल्लिदोवमस्स असखेज्जदिभागो ।

तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसै-
साहिया ॥ ६६ ॥

केनियमेत्तो विसैसो ? अगुलस्स असखेज्जदिभागमेत्तो ।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसै-
साहिया ॥ ६७ ॥

केत्तियमेत्तो विसैसो ? अगुलस्स अमत्तेज्जदिभागमेत्तो ।

वादरआउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा
असंखेज्जगुणा ॥ ६८ ॥

विशेष कितना है ? वह अगुलके असख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ६४ ॥

विशेष कितना है ? वह अगुलके असख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उससे वादर तेजकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असख्यात-
गुणी है ॥ ६५ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पर्योपमथा असख्यातवा भाग है ।

उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ६६ ॥

विशेष कितना है ? वह अगुलके असख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ६७ ॥

विशेष कितना है ? वह अगुलके असख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उससे वादर जलकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना अमख्यात
गुणी है ॥ ६८ ॥

केनियमेतो विसेसो ? अगुलस्स असखेज्जदिभागमेतो ।

सुहुमपुटविकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा
असखेज्जगुणा ॥ ५९ ॥

को गुणगारो ? आवलियाणं असयेज्जदिभागो ।

तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसे-
साहिया ॥ ६० ॥

केनियमेतो विसेसो ? अगुलस्स असखेज्जदिभागमेतो ।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसे
साहिया ॥ ६१ ॥

केनियमेतो विसेसो ? अगुलस्स असखेज्जदिभागमेतो ।

वादरवाउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा
असखेज्जगुणा ॥ ६२ ॥

को गुणगारो ? पट्टिदेवमस्स असखेज्जदिभागो ।

तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसे-
साहिया ॥ ६३ ॥

विशेष कितना है ? यह अगुलके असख्यातय भाग प्रमाण है ।

उससे सुहुम पृथिवीकायिक निर्घृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असख्यातगुणी
है ॥ ५९ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार आवलीया असख्यातया भाग है ।

उसके ही निर्घृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ६० ॥

विशेष कितना है ? यह अगुलके असख्यातयें भाग प्रमाण है ।

उसके ही निवृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ६१ ॥

विशेष कितना है ? यह अगुलके असख्यातयें भाग प्रमाण है ।

उसमें वादर वायुकायिक निर्घृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असख्यात-
गुणी है ॥ ६२ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पट्टोपमका असख्यातया भाग है ।

उसके ही निर्घृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ६३ ॥

केतियमेतो विसेसो ? अगुलस्स असखेज्जदिभागमेतो ।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसे-
साहिया ॥ ६४ ॥

केतियमेतो विसेसो ? अगुलस्स असखेज्जदिभागमेतो ।

वादरत्तेउक्काहयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा
असंखेज्जगुणा ॥ ६५ ॥

को गुणमारो ? पलिदोमस्स असखेज्जदिभागो ।

तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसे-
साहिया ॥ ६६ ॥

केतियमेतो विसेसो ? अगुलस्स असखेज्जदिभागमेतो ।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसे-
साहिया ॥ ६७ ॥

केतियमेतो विसेसो ? अगुलस्स असखेज्जदिभागमेतो ।

वादरआउक्काहयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा
असखेज्जगुणा ॥ ६८ ॥

विशेष कितना है ? यह अगुलके असख्यातय भाग प्रमाण है ।

उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ६४ ॥

विशेष कितना है ? यह अगुलके असख्यातयें भाग प्रमाण है ।

उससे वादर तेनकाधिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असख्यात-
गुणी है ॥ ६५ ॥

गुणकार क्या है ? गुणवार पहयोपमका अमख्यातया भाग है ।

उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ६६ ॥

विशेष कितना है ? यह अगुलके असख्यातयें भाग प्रमाण है ।

उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ६७ ॥

विशेष कितना है ? यह अगुलके असख्यातयें भाग प्रमाण है ।

उससे वादर जलकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना
गुणी है ॥ ६८ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागमेत्तो ।

तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसे
साहिया ॥ ६९ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अगुलस्स असखेज्जदिभागमेत्तो ।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसे-
साहिया ॥ ७० ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अगुलस्स असखेज्जदिभागमेत्तो ।

वादरपुढविकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स' जहणिया ओगाहणा
असखेज्जगुणा ॥ ७१ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागो ।

तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसे
साहिया ॥ ७२ ॥

केत्तियमेत्तेण ? अगुलस्स असखेज्जदिभागमेत्तेण ।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसे
साहिया ॥ ७३ ॥

गुणकार कितना है ? वह पल्योपमके असख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उसके ही निवृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ६९ ॥

विशेष कितना है ? वह अगुलके असख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उसके ही निवृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ७० ॥

विशेष कितना है ? वह अगुलके असख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उससे वादर पृथिवीकायिक निवृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असख्यात
गुणी है ॥ ७१ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असख्यातवा भाग है ।

उसके ही निवृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ७२ ॥

कितने मात्रसे वह अधिक है ? वह अगुलके असख्यातवें भाग मात्रसे अधिक है ।

उसके ही निवृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ७३ ॥

१ प्रसिद्ध ' णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स ' इति पाठ ।

केत्तियमेतेण ? अगुलम्म जमयेज्जदिभागमेतेण ।

वादरणिगोदणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा असं-
सेज्जगुणा ॥ ७४ ॥

को गुणमारो ? पल्लिदोमस्स असंसेज्जदिभागो ।

तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसे-
साहिया ॥ ७५ ॥

केत्तियमेतो विमेसो ? अगुलम्म असंसेज्जदिभागमेतो ।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसे-
साहिया ॥ ७६ ॥

केत्तियमेतो विमेसो ? अगुलम्म अमयेज्जदिभागमेतो ।

णिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा असंसेज्ज-
गुणा ॥ ७७ ॥

को गुणमारो ? पल्लिदोमस्स अमयेज्जदिभागो ।

तस्सेव णिव्वत्तिअपजत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसे-
साहिया ॥ ७८ ॥

केत्तियमेतो विमेसो ? अगुलम्म जमयेज्जदिभागमेतो ।

चित्तने माप्रसे घट्ठ अधिज्ज हे ? घट्ठ अगुल्ले अल्लयानये भाग माप्रसे अधिक हे ।

उसमे घादर निगोद निवृत्तिपर्याप्तकरी जघन्य अणगाहना असंख्यातगुणी हे ॥ ७४ ॥

गुणकार पर्या हे ? गुणकार पर्योपमथा असंख्यातया भाग हे ।

उमसे उमके ही निवृत्त्यपर्याप्तकरी उत्कृष्ट अणगाहना विशेष अधिक हे ॥ ७५ ॥

विशेष कितना हे ? घट्ठ अगुल्ले अल्लयानये भाग प्रमाण हे ।

उमम ही निवृत्त्यपर्याप्तकरी उत्कृष्ट अणगाहना विशेष अधिक हे ॥ ७६ ॥

विशेष कितना हे ? घट्ठ अगुल्ले अल्लयानये भाग प्रमाण हे ।

उसमे निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तकरी जघन्य अणगाहना असंख्यातगुणी हे ॥ ७७ ॥

गुणकार पर्या हे ? गुणकार पर्योपमथा अल्लयानये भाग हे ।

उसमे उमके ही निवृत्त्यपर्याप्तकरी उत्कृष्ट अणगाहना विशेष अधिक हे ॥ ७८ ॥

विशेष कितना हे ? घट्ठ अगुल्ले अल्लयानये भाग प्रमाण हे ।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसे
साहिया ॥ ७९ ॥

केचित्तयमेत्तो विसेसो ? अगुलस्स असखेज्जदिभागमेत्तो ।

वादरवणप्फदिकाह्यपत्तेयसरीरणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणिया
ओगाहणा असखेज्जगुणा ॥ ८० ॥

को गुणगारो ? पल्लिदोवमस्स असखेज्जदिभागो ।

वेहदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा असखे
ज्जगुणा ॥ ८१ ॥

को गुणगारो ? पल्लिदोवमस्स असखेज्जदिभागो ।

तेहदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा संखेज्ज-
गुणा ॥ ८२ ॥

को गुणगारो ? सखेज्जा समयो ।

चउरिदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा सखेज्ज-
गुणा ॥ ८३ ॥

को गुणगारो ? सखेज्जा समयो ।

उसमे उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है ॥ ७९ ॥

विशेष कितना है ? यह अगुलके असख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उससे बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना
असख्यातगुणी है ॥ ८० ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पश्योपमका असख्यातवा भाग है ।

उससे द्वीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असख्यातगुणी है ॥ ८१ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पश्योपमका असख्यातवां भाग है ।

उससे श्रीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना सरयातगुणी है ॥ ८२ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार सख्यात समय है ।

उससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना सख्यातगुणी है ॥ ८३ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार सख्यात समय है ।

पचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा संखे-
ज्जगुणा ॥ ८४ ॥

को गुणगारो ? सखेज्जा समय ।

तेहंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखे-
ज्जगुणा ॥ ८५ ॥

को गुणगारो ? सखेज्जा समय ।

चउरिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखे-
ज्जगुणा ॥ ८६ ॥

[को गुणगारो ? सखेज्जा समय ।]

वेहंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखे-
ज्जगुणा ॥ ८७ ॥

को गुणगारो ? सखेज्जा समय ।

बादरवणप्फादिकाइयपत्तेयसरीरणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्क-
स्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ॥ ८८ ॥

को गुणगारो ? सखेज्जा समय ।

उससे पचेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना सख्यातगुणी है ॥ ८४ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार सख्यात समय है ।

उससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना सख्यातगुणी है ॥ ८५ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार सख्यात समय है ।

उससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना सख्यातगुणी है ॥ ८६ ॥

[गुणकार क्या है ? गुणकार सख्यात समय है ।]

उससे द्वीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना सख्यातगुणी है ॥ ८७ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार सख्यात समय है ।

उससे बादर वनरपत्तिकायिरु प्रत्येकशरीर निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना
सख्यातगुणी है ॥ ८८ ॥

गुणकार क्या है ?

समय है ।

पंचिन्द्रियव्यतिपञ्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा सखे

ज्जगुणा ॥ ८९ ॥

को गुणगारो ? सखेज्जा समयो ।

तेहंदिन्द्रियव्यतिपञ्जत्तयस्म उक्कस्सिया ओगाहणा सखे

ज्जगुणा ॥ ९० ॥

को गुणगारो ? सखेज्जा समयो ।

चउरिन्द्रियव्यतिपञ्जत्तयस्म उक्कस्सिया ओगाहणा सखे

ज्जगुणा ॥ ९१ ॥

को गुणगारो ? सखेज्जा समयो ।

वेइन्द्रियव्यतिपञ्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा सखेज्ज-

गुणा ॥ ९२ ॥

को गुणगारो ? सखेज्जा समयो ।

वादरवणप्फदिकाइयपत्तेयमरीरणिव्यतिपञ्जत्तयस्स उक्क-

स्सिया ओगाहणा सखेज्जगुणा ॥ ९३ ॥

को गुणगारो ? सखेज्जा समयो ।

उससे पचेन्द्रिय निवृत्तिपर्याप्तकरी उत्कृष्ट अवगाहना सख्यातगुणी हे ॥ ८९ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार सख्यात समय है ।

उससे त्रीन्द्रिय निवृत्तिपर्याप्तकरी उत्कृष्ट अवगाहना सख्यातगुणी है ॥ ९० ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार सख्यात समय है ।

उससे चतुर्दिन्द्रिय निवृत्तिपर्याप्तकरी उत्कृष्ट अवगाहना सख्यातगुणी है ॥ ९१ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार सख्यात समय है ।

उससे द्वात्रिंशत्तिन्द्रिय निवृत्तिपर्याप्तकरी उत्कृष्ट अवगाहना सख्यातगुणी है ॥ ९२ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार सख्यात समय है ।

उससे वादर वनस्पतिकायिक प्रत्यक्षशरीर निवृत्तिपर्याप्तकरी उत्कृष्ट अवगाहना सख्यातगुणी है ॥ ९३ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार सख्यात समय है ।

पविदियणिव्यत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा सखे-
ज्जगुणा ॥ ९४ ॥

ॐ गुणगारो ? सखेज्जा समयो ।

सपधि पुच्चपरुविदअण्वावहुगम्मि गुणगारपमाणपरुवणद्ध उवरिमसुत्ताणि मणदि-

सुहुमादो सुहुमस्स ओगाहणगुणगारो आवलियाए असखे-
ज्जदिभागो ॥ ९५ ॥ -

सुहुमादो अण्णस्स सुहुमस्स ओगाहणा असखेज्जगुणा ति जत्थ जत्थ मणिद
तत्थ तत्थ आवलियाण अमन्वेज्जदिभागो गुणगारो ति घेत्तवो ।

सुहुमादो वादरस्स ओगाहणगुणगारो पलिदोवमस्स असखे-
ज्जदिभागो ॥ ९६ ॥

सुहुमइदियओगाहणादो जत्थ वादरोगाहणमसखेज्जगुणमिदि मणिद तत्थ पलिदो-
वमस्स असखेज्जदिभागो गुणगारो होदि ति घेत्तवो ।

वादरादो सुहुमस्स ओगाहणगुणगारो आवलियाए असखे-
ज्जदिभागो ॥ ९७ ॥

वादरोगाहणादो जत्थ सुहुमइदियओगाहणा असखेज्जगुणा ति मणिद तत्थ
आवलियाण अमन्वेज्जदिभागो गुणगारो ति घेत्तवो ।

उसमे पचेन्द्रिय निवृत्तिपर्याप्तकरी उत्कृष्ट अवगाहना सख्यातगुणी है ॥ ९४ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार सख्यात समय है ।

अथ पहिले कहे गये अल्पवहुत्वमें गुणकारोंके प्रमाणको धतलानेके लिये आगेके
सूत्र कहते हैं—

एक सूक्ष्म जीवसे दूसरे सूक्ष्म जीवकी अवगाहनाका गुणकार आवलीका असख्या-
तवा भाग है ॥ ९५ ॥

एक सूक्ष्म जीवसे दूसरे सूक्ष्म जीवकी अवगाहना असख्यातगुणी है, ऐसा
जहा जहां पहा गया है वहा वहा आवलीका असख्यातवा भाग गुणकार ग्रहण
करना चाहिये ।

सूक्ष्मसे वादर जीवकी अवगाहनाका गुणकार पच्योपमका असख्यातवा भाग है ॥ ९६ ॥

सूक्ष्म एकेन्द्रियकी अवगाहनासे जहा वादर जीवकी अवगाहना असख्यातगुणी
कही है, वहा पच्योपमका असख्यातवा भाग गुणकार होता है, ऐसा ग्रहण करना
चाहिये ।

वादरसे सूक्ष्मका अवगाहनागुणकार आवलीका असख्यातवा भाग है ॥ ९७ ॥

वादरकी सूक्ष्म एकेन्द्रियकी अवगाहना असख्यातगुणी कही
है वहां आवलीका गुणकार होता है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

वादरादो वादरस्स ओगाहणगुणगारो पलिदोवमस्स अससे-
ज्जदिभागो ॥ ९८ ॥

एत्थ वादरा ति उत्ते जेण वादरणामकम्मोदइत्तण जीवाण गहण तेण धीइदिया
दीण पि गहण हीदि । वादरओगाहणादो अण्णा वादरओगाहणा जत्थ अमखेज्जगुणा
त्ति भणिद तत्थ पलिदोवमस्स अमखेज्जदिभागो गुणगारो ति पेतत्तो ।

वादरादो वादरस्स ओगाहणगुणगारो संसेज्जा समया ॥ ९९ ॥
धीइदियादिणिच्चत्तिअपज्जत्तएसु तेमि पज्जत्तएसु च ओगाहणगुणगारो सखेज्जा
समया ति घेतत्तो । पुत्तिसुत्तेण पलिदोवमस्स अमखेज्जदिभागो गुणगारो पत्ते तत्तडिसेहद
मिद सुत्तमारद्ध, तेण ण दोण्ण पि सुत्तान निरोहो । एदे एत्थ गुणगारा ह्येति ति कथ
ण वदे ? एदग्हादो चैव सुत्तादो ण उदे । ण च पमाण पमाणतरमेवएत्ते, अणवत्था-
पसगादो । णाणावरणादीणमदुष्ण पि कम्माणमोगाहणपरूवणह्ण सेत्तानियोगहारो परूविज्ज
माणे जीउसमासाणमोगाहणपरूवणा किमदुमत्थ परूविदा ? एत्थ परिहारो उच्चदे । एसो

वादरसे वादरकी अगगाहनागुणकार पर्योपमका असख्यातवा भाग है ॥ ९८ ॥

यहा सूत्रमें 'वादरसे' ऐसा कहनेपर चूकि वादर नामकर्मके उदय युक्त जीवोंका
ग्रहण है, अत उलसे द्वीन्द्रियादिक जीवोंका भी ग्रहण होता है । वादरकी अवगाहनासे
जहा दूसरे वादर जीवकी अवगाहना असख्यातगुणी कही है वहाँ पर्योपमका अस
ख्यातवा भाग गुणकार ग्रहण करना चाहिये,

वादरसे दूसरे वादर जीवकी अवगाहनाका गुणकार सख्यात समय है ॥ ९९ ॥

द्वीन्द्रिय आदिक निवृत्त्यपर्याप्तकों और उनके पर्याप्तकोंमें अवगाहनाका गुण
कार सख्यात समय है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये । पूर्व सूत्रसे पर्योपमके असख्यातव्य
भाग मात्र गुणकारके भाग होनेपर उसका प्रतिषेध करनेके लिये यह सूत्र रचा गया
है । इसीलिये उपर्युक्त दोनों सूत्रोंमें कोई विरोध नहीं है ।

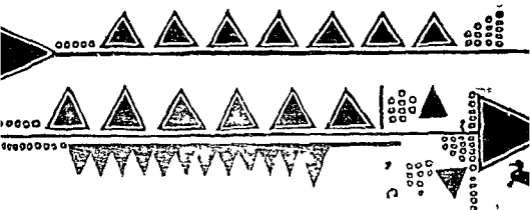
शका— य यहा गुणकार होते हैं, ऐसा कैसे जाना जाता है ?

समाधान— यह इसी सूत्रसे जाना जाता है । कारण कि एक प्रमाण दूसरे
प्रमाणकी अपेक्षा नहीं करता है, क्योंकि, ऐसा होनेपर अन्वयस्याका प्रसन्न भावता है ।

शका— ज्ञानावरणादिक भाओं कर्मोंकी अवगाहनाके प्ररूपणार्थ शेषानुयोग
द्वारकी प्ररूपणा करते समय जीवसमासोंकी अवगाहनाकी प्ररूपणा वहाँ किस
लिये की गइ है ?

समाधान— यहा इस शकाका उत्तर कहते हैं— यह अवगाहना सम्बन्धी

भोगाहणप्पावहुअदडओ जीवसमासाण ण परूविदो, अप्पावहुअस्स असचद्धप्पसगादो । किंतु अट्टण्ण पि कम्माण जीवसमासेहिंतेो अभेदेण लद्धजीवसमासवजएमाणभोगाहणप्पावहुअदडओ एसो परूविदो नि । किमट्टमेसा अप्पावहुगपरूवणा कदा ? समुग्घादेण विणा णाणावरणादीणमट्टण्ण पि कम्माण सत्थाणेगाहणाण जीवसमासभेदेण गिण्णाण माहप्पपरूवणद्ध कदा, णाणावरणादीणमजहण्ण अणुत्तस्ससत्थाणखेत्तट्टाणपरूवणद्ध वा । एवमप्पावहुग सगतो विखत्तगुणमारहियार समत्त । एव वेयणखेत्तविहाणे ति समत्तगणियोगहार ।



एदाओ सोत्तम उवरिमाओ भोगाहणाओ तिसमयआहारय तिसमयत्तम्मवत्थलद्धि-
अपज्जत्तयाण जहण्णाओ घेत्तव्वाओ' । आदिप्पहुडि सत्तारस भोगाहणाओ पदेसुत्तरकमेण

अल्पवहुत्वदण्डक जीवसमासोंका नहीं कहा गया है, क्योंकि, घैसा करनेसे उक्त
अल्पवहुत्वके असगत होनेका प्रसंग आता है । किन्तु यह जीवसमासोंसे अभिन्न होनेके
कारण, जीवसमास भङ्गाको प्राप्त हुए भाओं कर्मोंकी ही अवगाहनाका अल्पवहुत्व
दण्डक कहा गया है ।

शुका— यह अल्पवहुत्वकी प्ररूपणा किसलिये की गई है ?

समाधान— जीवसमासके भेदसे भेदको प्राप्त हुए ज्ञानावरणादिक भाओं कर्मों
की समुद्घात रहित स्वस्थान अवगाहनाओंके माहात्म्यको बतलानेके लिये उक्त प्ररू-
पणा की गई है । अथवा, ज्ञानावरणादिक कर्मोंके अज्ञघय अनुत्पृष्ट स्वस्थान
क्षेत्रस्थानोंकी प्ररूपणा करनेके लिये उपर्युक्त प्ररूपणा की गई है । इस प्रकार अपने भीतर
गुणकार अधिकारको रखनेवाग्य अल्पवहुत्व समाप्त हुआ ।

इस प्रकार घेदनाशेत्रविधान यह अनुयागद्वार समाप्त हुआ ।

ये उपरिम सोलह अवगाहनायें तिसमययतीं भाहारक और तिसमययतीं तद्
भवस्य लब्धयपयाप्तक जीवोंकी जघ य ग्रहण करना चाहिये । आदिसे लेकर सत्तरह

गिरतर बहुवेदञ्चाओ । पुणो जय जिम्मे ओगाहणा समप्पदि तन्नाले ठिदिओगाहण-
सलागासु रूपमवणद्व, हट्टिलोगाहणाहि सह हेट्टा गिरतरमागतूण उपरि गमणाभावादे ।
पुणो जय जत्य जहणोगाहणाओ पदति तत्थ तत्थ पुत्रट्टिदिसलागासु रूप पत्तिगिद्व,
हेट्टिलोगाहणविषयसलागासु एदिस्स पत्ति ति । सेस जाणिय वत्तव ।

एदाओ एककारस उक्कस्सोगाहणाओ उपरिमाओ गिच्चित्तिअपञ्जत्ताणमुक्कस्साओ ।
एदाओ कस्स हवति ? से काले पञ्जतो होहिदि ति ह्दिदस्स हेति । एद्धिअपञ्जत्तयस्स
उक्कस्सोगाहणा क्किण महिदा ? ण, एद्धिअपञ्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणाओ गिच्चित्ति-
अपञ्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणाए विमेषाहियमाणेण विणा अमखेज्जगुणत्तुलमादे ।
हेट्टिमाओ सुहुमणिगोदाओ गिच्चित्तिपरपञ्जत्तीण पञ्जत्तदाण धेत्तमाओ । ताओ कत्थ
हेति ति उते पञ्जत्तयदपढममए वट्टमाणस्स जहणउपपाद एयताणुत्तुत्तिओगेहि जागतूण
जहणपरिणामओगे जहणोगाहणाए च वट्टमाणस्स एककारस ति हेति । पुणो गिच्चित्ति

अवगाहनाओंके प्रदेश अधिक प्रमत्ते निरंतर चलाना चाहिये । फिर जहां जिसकी
अवगाहना समाप्त होती है उस कालमें स्थापित अवगाहनाशलाकाओंमेंसे एक रूपकी
कम करना चाहिये, क्योंकि अधस्तन अवगाहनाओंके मात्र नीचे निरंतर याकर
ऊपर गमनका अभाव है । फिर जहां जहां अचय अवगाहनायें पड़ती हैं वहां वहां
पूर्व स्थापित शलाकाओंमें एक रूपका मिलाना चाहिये क्योंकि, अधस्तन अवगाहनाओंके
धिकसम्भूत शलाकाओंमें इसका शलाका नहीं है । शय जानकर उदना चाहिये ।

ये उपरम ग्यारह उत्पृष्ट अवगाहनायें निरृत्यपर्याप्तकोंकी उत्पृष्ट हैं ।

शुका—ये किम्बे होता है ?

समाधान—जो अथ अनंतर कालमें पर्याप्त होनेवाला है उसके ये अवगाहनायें
होती हैं ।

शुका—लघ्यपयाप्तकोंकी उत्पृष्ट अवगाहनाओंके क्यों तहीं ग्रहण किया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, लघ्यपयाप्तकोंकी उत्पृष्ट अवगाहनासे निरृत्य-
पयाप्तकोंकी उत्पृष्ट अवगाहना विशेषाधिकताके बिना गत्यव्यतिगुणी पायी जाती है ।

सुद्धम निगोदसे लेकर अधस्तन [ग्यारह अचय अवगाहनायें] निरृत्ति
परंपरा पर्याप्तसे पयाप्त हुए जायेंगी ग्रहण करना चाहिये ।

शुका—ये अवगाहनायें कहापर होती हैं ?

समाधान—इस शलाकाके उत्तरमें कहते हैं कि जो पर्याप्त होनेके प्रथम समयमें
पदमान है तथा अचय उपपादयोग अथ अचय एकान्तानुद्धियोगसे आकर अचय
परिणामयोग व अचय अवगाहनामें रहनेवाला है उसके ये ग्यारह ही अवगाहनायें
होती हैं ।

१ तावता 'हट्टिलोगाहणा' द-सह इति पाठ । २ प्रतिपु 'गदिरम पात्ति' तावता 'एदिस्स ति इति पाठ ।
३ अथ एपाठे 'पम्' प्रतिपु 'इवदि तपत्ता इवदि (हेति) इते पाठ । ४ तावता 'उदिदा' इति
पाठ । ५ तावता 'गिणोदाओ (ण) इति पाठ । ६ तावता 'वत्तामणस' इति पाठ ।

पञ्जत्ताण हेदिमाओ एक्कारस उक्कस्सओगाहणाओ उक्कस्सजोगिरस उक्कस्सओगाह-
णाए' वट्टमाणस्स परपरपञ्जत्तीए पञ्जत्तयदस्स हेति । एदाओ ओगाहणाओ अप्पणो
जहण्णादो उक्कस्साओ विससाहियाओ हेति । सुहुमणिगोदद्धिअपञ्जत्तजहण्णोगाहण-
प्पहुडि सव्वजहण्णुक्कस्सोगाहणाओ जाव धादरवण्णफदिक्काइयपत्तेयसरिपरपञ्जत्तजहण्णो-
गाहण पावेति ताव अगुलस्स असरोज्जदिभागमेत्तीयो । धीइदियादिपञ्जत्ताण जहण्णो-
गाहणाओ अगुलस्स सरोज्जदिभागमेत्तीयो' । धीइदियपञ्जत्तयस्स जहण्णोगाहणा
अणुधरिग्धि हेदि । तीइदियपञ्जत्तयस्स जहण्णोगाहणा कुयुग्धि हेदि । चट्टुरिदियपञ्जत्त-
यस्स जहण्णोगाहणा काणमच्छियाए । पच्चिदियपञ्जत्तयस्स जहण्णोगाहणा सित्थमच्छम्मि
हेदि' । तीइदियपञ्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणा तिण्णिगाउअप्पमाणा । सा कम्हि हेदि ?
गोग्धिग्धि । चट्टुरिदियपञ्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणा चत्तारिगाउअप्पमाणा । सा कत्थ ?
भमरग्धि । धीइदियस्स पञ्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणा धारस जौयणाणि । सा कत्थ ?
सस्सग्धि । एइदियउक्कस्सोगाहणा सखेज्जाणि जौयणाणि । सा कत्थ ? जौयणसहस्सायाम-

विद्युत्तपर्याप्तकर्षी अक्षस्तन ग्यारह उत्तृष्ट अवगाहनायें उत्तृष्ट अवगाहनायें
घतमान घ परम्परा पयाप्तिसे पर्याप्त एए उत्तृष्ट योगवाले जीवके होती हैं । ये अवगाह
नायें अपने अपने जघ यसे उत्तृष्ट विशेष अधिक होती हैं ।

सूदम निगोद लक्ष्यपर्याप्तकर्षी जघय अवगाहनासे लेकर सब जघन्य घ
उत्तृष्ट अवगाहनायें जघ तक यादर घनस्पतिकार्षिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवकी
जघन्य अवगाहनाको प्राप्त होती है तब तक अगुलके असत्यातयें भाग मात्र
रहती हैं । द्वीन्द्रियादिक पर्याप्त जीवकी जघन्य अवगाहनायें अगुलके सत्यातयें
भाग प्रमाण हैं । द्वीन्द्रिय पर्याप्तकी जघ य अवगाहना अनुन्धराके होती है ।
त्रीन्द्रिय पर्याप्तकर्षी जघन्य अवगाहना युयुके होती है । चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकर्षी
जघ य अवगाहना फानमक्षिकाके होती है । पंचेन्द्रिय पर्याप्तकर्षी जघन्य अवगाहना
सिक्थ मत्स्यके होती है ।

त्रीन्द्रिय पर्याप्तकर्षी उत्तृष्ट अवगाहना तीन गव्यूति प्रमाण है । यह
किसके होती है ? यह गोगर्हाके होती है । चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकर्षी उत्तृष्ट अवगाहना
चार गव्यूति प्रमाण है । यह क्हापर होती है ? यह भ्रमरके होती है । द्वीन्द्रिय
पर्याप्तकर्षी उत्तृष्ट अवगाहना गारह योजन प्रमाण है । यह क्हापर होती है ?
यह शखके होती है । पंचेन्द्रियकी उत्तृष्ट अवगाहना सत्यात योजन प्रमाण है ।
यह क्हा होती है ? यह एक हजार योजन आयाम और एक योजन विस्तार

१ शयनो ' अण्वाहणाओ ' इति पाठ । २ अग्रतो अमहज्जदिभागमेत्तीया ' इति पाठ । ३ वि-ति-व-
पुण्णजहण्ण अणुधरी कुयु काणम धीसु । सिक्कयमच्छ निदगुलस्स सखेज्जिवक्का ॥ गो जी ९९

जोयणविधरामपउमग्मि । पचेदियउक्कस्सोगाहणा सखेज्जाणि जोयणसहरसाणि । सा कत्थे ?
पचजोयणसदुस्सेह तदद्धनिक्खभ जोयणसहरसायाममच्छग्मि' । एदेमिमपज्जत्ताण तप्पडि-
भागो हेदि ।

घाले पद्मके होती है । पचेन्द्रियकी उत्कृष्ट अथगाहना सख्यात हजार योजन है । यह कहा होती है ? यह पांच सौ योजन प्रमाण उत्सेध, इससे आधे विस्तार और एक हजार योजन आयामसे युक्त मत्स्यके होती है । इनके अपर्याप्तोंकी अथगाह नार्ये उक्त प्रमाणके प्रतिभाग मात्र होती हैं ।

१ साहियमहरसमक वार वापुणमरुमेवर्क च । जोयणसहरसदीहं पग्मे वियले महामग्गे ॥ गो जी ९५.



वेयणकालविहाणे त्ति । तत्थ इमाणि तिण्णि अणियोग-
हाराणि णादव्वाणि भवति ॥ १ ॥

एतय काले सत्तविहो— णामकाले ठवणकाले दव्वकाले सामाचारकाले अद्धा-
काले पमाणकाले भायकाले चेदि । तत्थ णामकाले णाम कालसदो । ठवणकाले सो
एसो त्ति युद्धीए एगत्त काऊण ठविददव्व । दव्वकाले दुविहो— आगमदव्वकाले णोआगम-
दव्वकाले चेदि । काटपाहुडजाणओ अणुवज्जुत्तो आगमदव्वकाले । तत्थ णोआगमदव्व-
काले त्तिविहो— जाणुगसरीरणोआगमदव्वकाले भवियणोआगमदव्वकाले जाणुगसरीर-
भवियतव्वदिरित्तणोआगमदव्वकाले चेदि । जाणुगसरीर भवियणोआगमदव्वकाला सुगमा ।
तवदिरित्तणोआगमदव्वकाले दुविहो— पहाणो अप्पहाणो चेदि । तत्थ पहाणदव्वकाले
णाम लोगागासपदेसपमाणो सेमपचदव्वपरिणमणहेदुभूदो रयणंरासि व्व पदेसपचयविराहयो
अमुत्तो अणाडिण्हणो । उत्त च—

काले परिणामभवे परिणामो दव्वमालसभूदो ।

दोण्ण एस सहाओ काले खणभगुगे णियदो ॥ १ ॥

वेदनकालविधान अनुयोगद्वार प्रारम्भ होता है । उममें ये तीन अनुयोगद्वार
जानने योग्य हैं ॥ १ ॥

यहा काल सात प्रकार है— नामकाल, स्थापनाकाल, द्रव्यकाल, सामा
चारकाल, अद्धाकाल, प्रमाणकाल और भायकाल । उममें 'काल' शब्द नामकाल
कहा जाता है । 'पह यह है' इस प्रकार बुद्धिसे अमेद करके स्थापित द्रव्य
स्थापनाकाल है । द्रव्यकाल दो प्रकार है— आगमद्रव्यकाल और नोआगमद्रव्यकाल ।
फालप्राभृतका जानकार उपयोग रहित जीव आगमद्रव्यकाल है । नोआगमद्रव्य
काल तीन प्रकार है— क्षायकशरीर नोआगमद्रव्यकाल, भावी नोआगमद्रव्यकाल
और क्षायकशरीर भावि-यतिरित्त नोआगमद्रव्यकाल । इनमें क्षायकशरीर
और भावी नोआगमद्रव्यकाल ये दोनों सुगम है । तद्रव्यतिरित्त नोआगम-
द्रव्यकाल दो प्रकार है— प्रधान और अप्रधान । उनमें जो प्रवेशोकी अपेक्षा लोकके
बराबर है, शेष पाच द्रव्योंके परियतनमें कारण है रत्नराशिके समान प्रवेशप्रचयसे
रहित है, अमूर्त व अनादिनिघन है; वह प्रधान द्रव्यकाल है । कहा भी है—

समयाधि रूप व्यवहारकाल चूकि जीव व पुद्गलके परिणमनसे जाना जाता
है, अत यह उससे उत्पन्न कहा जाता है; और जीव व पुद्गलका परिणाम चूकि
द्रव्यकालके होनेपर होता है, अत यह द्रव्यकालसे उत्पन्न कहा जाता है । यह
उन दोनों अर्थात् व्यवहार और निश्चय कालका स्वभाव है । इनमें व्यवहारकाल
क्षणक्षयी और निश्चयकाल अचिनम्बर है ॥ १ ॥

ण य परिणमद् सय सो ण य परिणामेद् अण्णमण्णसि ।
 त्रिविहपरिणामिवाण हवद् हु हेळ सय काळो ॥ २ ॥
 लोगागासपदेसे एकवेक्रे जे द्विवा हु एकवेकत्रा ।
 रयणाण रासी इव ते कालाण् मुणेय वा ॥ ३ ॥
 कात्रे त्ति य वण्णमो सम्माशरण्णओ हवद् णिच्चा ।
 उण्णण्णदसी अवरो दीहतरट्ठारि ॥ ४ ॥ ति ।

अप्यह्वापद्वकाले त्रिविहो— सच्चित्तो अच्चित्तो मिरसओ चेदि । तस्य सच्चित्तो— जहा दसकालो मसयकालो इच्चेवमादि, दस मसयाण चैव उत्रयारेण कालत्त विहाणादो । अचित्तकालो— जहा धूलिकालो चिक्खल्लकालो उण्हकालो परिसाकाले सीदकालो इच्चेवमादि । मिरसकालो— जहा सदस सीत्कालो इच्चेवमादि । सामाचारकालो द्विविहो— लोइओ लोउत्तरीयो चदि । तस्य लोउत्तरीओ सामाचारकालो— जहा वदणकालो णियमकालो सव्वयकालो ज्ञाणकालो इच्चेवमादि । लोणियसामाचारकालो— जहा कमणकालो लुणणकालो ववणकालो इच्चेवमादि । आदानकालो रुत्तमूलकालो धादिसयणकालो इच्चादीण कालाण लोमुत्तरीयसामाचारकाले अतम्भाओ कायओ, किरिया

यह काल न स्वय परिणमता इ और न अन्य पदार्थको अन्य स्वरूपसे परिणमता है । कि तु स्वय अनेक पर्यायोंमें परिणत होनेवाले पदार्थोंके परिणमनमें यह उदासीन निमित्त मात्र होता है ॥ २ ॥

लोकाकाशके एक एक प्रदेशपर जो रत्नराशिसे समान एक एक स्थित हैं उन्हें कालाणु जानना चाहिये ॥ ३ ॥

'काल' यह नाम निश्चयकालके अस्तित्वको प्रगट करता है, जो द्रव्य स्वरूपसे निश्च है । दूसरा ध्यवहार काल यद्यपि उत्पन्न होकर गट होनेवाला है, तथापि वह [समयसंतानकी अपेक्षा ध्यवहार नयसे आवटी य पस्य आदि स्वरूपसे] दीर्घ काल तक स्थित रहनेवाला है ॥ ४ ॥

अप्रधान द्रव्यकाल तीन प्रकार हैं—सच्चित्त, अचित्त और मिश्र । उनमें दशकाल, मशककाल इत्यादि सच्चित्त काल हैं, क्योंकि, इनमें दश य मशकके हैं । उपचारसे कालका विधान किया गया है । घुलिकाल, कर्दमकाल, उण्णकाल, वयाकाल एव शीतकाल इत्यादि सब अचित्तकाल हैं । सद्दश शीतकाल इत्यादि मिश्रकाल हैं ।

सामाचारकाल दो प्रकार है—लौकिक और लोकौत्तरीय । उनमें यन्दनाकाल, नियमकाल, स्वाध्यायकाल य ध्यानकाल इत्यादि लोकौत्तरीय सामाचारकाल हैं । वयणकाल, लुननकाल य यपनकाल इत्यादि लौकिक सामाचारकाल हैं । आतापन काल, वृक्षमूलकाल य धातशयनकाल, इत्यादिक कालोंका लोकौत्तरीय सामाचारकालमें अन्तभाव करना चाहिये, क्योंकि, त्रियाकालके प्रति कोइ भेद नहीं है अर्थात्

कालत्त पडि विसेसामात्रादो ।

अद्धाकालो तिविहो— अदीदो अणागत्रो वट्टमाणो चेदि । पमाणकालो पल्लोवम-
सागरोवम उरसपिणी ओसपिणी कप्पादिभेदेण बहुप्पयारो । भावकालो दुविहो— आगमदो
णोआगमदो चेदि । तस्य कालपाहुडजाणओ उवज्जुतो आगमभावकालो । णोआगमभावकालो
ओदइयादिपचण्ण भावाण सगरूव । एदेसु कालेसु पमाणकालेण पयद । कालरस विहाण
कालविहाण, वेयणाए कालविहाण वेयणाकालविहाण । तत्थ इमाणि तिग्णि अणियोग-
द्वाराणि भवति । कुदो ? सखा गुणयार द्वाण जीवसमुदाहार ओ न जुम्माणियोगद्वाराणमेत्थेव
अत भावदसणादो । ताणि काणि ति उते उत्तरसुत्तमागय —

पदमीमांसा सामित्तमप्पावहुए ति ॥ २ ॥

तिसु अणियोगद्वारेसु पदमीमांसा चेव पढम किमट्ट उच्चदे ? ण, पदेसु अणवगएसु
पदसामित्त पदप्पावहुवाण परूवणोवायामात्रादो । तदणतर सामित्तपरूवण किमट्ट कीरदे ?
ण, पमाणे अणवगण पदप्पावहुमाणुववतीदो । तम्हा एसो चेव अणियोगद्वारकमो होदि,
गिरवज्जतादा ।

त्रियाकालर्था अपेक्षार इतमें कोई विशेषता नहीं है ।

यद्धाकाल तीन प्रकार है—अतीत, अनागत और वर्तमान । प्रमाणकाल
पल्लोवम, सागरोवम, उत्सपिणी, अघसपिणी और कल्पादिके भेदसे बहुत प्रकार है ।
भावकाल दो प्रकार है— आगमभावकाल और नोआगमभावकाल । उनमें कालप्राप्तका
जानकार उपयोग युक्त जीव आगमभावकाल है । नोआगमभावकाल औदयिक भादि
पाच भावों स्वरूप है ।

इन कालोंमें प्रमाणकाल प्रकृत है । कालका जो विधान है वह कालविधान है,
वेदनाका कालविधान वेदनाकालविधान कहा जाता है । उसमें ये तीन अनुयोगद्वार
हैं, क्योंकि सरया, गुणकार, स्थान, जीवसमुदाहार, ओज और युग्म, इन अनुयोग-
द्वारोंका उक्त तीनों अनुयोगद्वारोंमें अ तर्भाव देखा जाता है । ये तीन अनुयोगद्वार
कौनसे हैं, ऐसा पूछनेपर उत्तर सूत्र प्राप्त होता है—

पदमीमांसा, स्वामित्व और अल्पबहुत्व, ये वे तीन अनुयोगद्वार हैं ॥ २ ॥

शंका—इन तीन अनुयोगद्वारोंमें पहिले पदमीमांसाका ही निर्देश किसलिये
किया है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, पदोंके अक्षत होनेपर पदस्वामित्व और पद-
अल्पबहुत्वकी प्ररूपणाका कोई उपाय नहीं है ।

शंका—पदमीमांसाके पश्चात् स्वामित्वप्ररूपणा किसलिये की जाती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, प्रमाणका ज्ञान न होनेपर पदोंका अल्पबहुत्व
यन नहीं सकता । इस कारण यही अनुयोगद्वारकम ठीक है, क्योंकि, उसमें कोई
दोष नहीं है ।

पदमीमांसाए णाणावरणीयवेयणा कालदो किमुक्कस्सा किम-
णुक्कस्सा किं जहण्णा किमजहण्णा ? ॥ ३ ॥

एत्थ णाणावरणग्गहणं समक्कमपडिसेहफलं । कालणिदेसो दच्च सेत्त भावपडिसेह
पल्लो । एदं पुच्छासुत्त जेण देसामासिय तेण अण्णाओ णव पुच्छाओ सूचेदि । णाणावरणीय
वेयणा किमुक्कस्सा किमणुक्कस्सा किं जहण्णा किमजहण्णा किं सादिया किमणादिया किं
धुवा णिगद्धुवा णिमोजा किं जुग्गा णिमोमा किं विसिद्धा किं णोम णोविसिद्धा ति । पुणो
एदेणव सुत्तेण अण्णाओ तेम पदविसयपुच्छाओ सूचिदाओ । काओ ति पुच्छिदे उच्चदे—
उक्कस्सणाणावरणीयवेयणा किमणुक्कस्सा किं जहण्णा किमजहण्णा किं सादिया किमणा-
दिया किं धुवा किमद्धुवा किमोजा किं जुग्गा किमोमा किं विसिद्धा किं णोम णोविसिद्धा ति
उक्कस्सपदमि धारम पुच्छाओ । एव सेसपदाणं पि पादेवकं धारस पुच्छाओ वत्तव्वाओ ।
एत्थ सच्चपुच्छासमासो एग्गणसत्तरिमदमेत्तो । १९० । तग्गहा एदं देसामासियसुत्तं तेरस
सुत्तप्यय । एदेसिं सुत्ताणं परूवणा उत्तरदेसामासियसुत्तेण कीरदे—

उक्कस्सा वा अणुक्कस्सा वा जहण्णा वा अजहण्णा वा ॥ ४ ॥

पदमीमांसा अधिकारमें ज्ञानावरणीय कर्मकी वेदना कालकी अपेक्षा क्या उत्कृष्ट
है, क्या अनुकृष्ट है, क्या जघन्य है और क्या अजघन्य है ? ॥ ३ ॥

सूत्रमें ज्ञानावरण पदका ग्रहण शेष कर्मोंका प्रतिषेध करनेके लिये किया है ।
कालका निर्देश द्रव्य, क्षेत्र व भावका प्रतिषेध करनेवाला है । यह पृच्छासूत्र चूक देना
मशक है, अतः यह सूत्रके चार पृच्छाओंके अतिरिक्त नौ दूसरी पृच्छाओंको भी सूचित
करता है । ज्ञानावरणीयवेदना क्या उत्कृष्ट है, क्या अनुकृष्ट है, क्या जघन्य है, क्या
अजघन्य है, क्या सादि है, क्या असादि है, क्या ध्रुव है, क्या अध्रुव है, क्या भोज
है, क्या युग्म है, क्या भोग है, क्या विनिष्ट है, और क्या नोम नोविशिष्ट है ?
इसके अतिरिक्त इस सूत्रके द्वारा दूसरा तरह पदविषयक पृच्छाएँ सूचित की गई हैं । ये
कौनसी हैं, ऐसा पृच्छनेपर उत्तर देते हैं—उत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदना क्या अनुकृष्ट है,
क्या जघन्य है, क्या अजघन्य है, क्या सादि है, क्या असादि है, क्या ध्रुव है, क्या अध्रुव
है, क्या भोज है, क्या युग्म है, क्या भोग है, क्या विनिष्ट है, और क्या नोम-
नोविशिष्ट है, ये चारह पृच्छाएँ उत्कृष्ट पदके विषयमें हैं । इसी प्रकार शेष पदोंमेंसे
भी प्रत्येक पदके विषयमें चारह पृच्छाओंको कहना चाहिये । यहा सब पृच्छाओंका
योग एक सौ उनत्तर (१६९) मात्र है । इस कारण यह देशामशक सूत्र तरह सूत्रों
स्वरूप है । इन सूत्रोंकी प्ररूपणा अगले वेदामशक सूत्रके द्वारा की जाती है ।

१. उक्त ज्ञानावरणीयवेदना कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट भी है, अनुकृष्ट भी है, जघन्य
भी है और अजघन्य भी है ॥ ४ ॥

एद पि देसामासियसुत्त । तेणेत्य सैसणवपदाणि वत्तत्वाणि । देसामासियत्तादो चैव सैसतेरससुत्तणमेत्थ अतन्मावो वत्तत्त्वे । एत्थ ताव पढमसुत्तपरूवणा कीरदे । त जहा—
णाणावरणीयवेयणा कालदो सिया उवकरसा सिया अणुक्करसा सिया जहण्णा सिया अज-
हण्णा । मिया सादिया, पच्चवट्ठियणए अवलविज्जमाणे णाणावरणीयसत्त्वट्ठिदीण सादि-
त्तुवलभादो । सिया अणादिया, दव्वट्ठियणए अणुत्तियणमाणे अणादित्तदसणादो । सिया
धुवा, दव्वट्ठियणए अवलविज्जमाणे णाणावरणीयकालवेयणाए विणासाणुवत्तभादो । सिया
अद्दुवा, पच्चवट्ठियणयप्पणाए अद्दुवत्तदसणादो । सिया ओजा, कत्थ वि कालविसेसे
कलि तेजोसखाविसेसाणमुवलभादो । मिया जुम्मा, कत्थ वि कालविसेसे कद-वादर-
जुम्माण सरयाविसेसाणमुवलभादो । मिया ओमा, कत्थ वि कालविसेसे परिहाणिदसणादो ।
सिया विसिद्धा, कत्थ वि वट्ठिदसणादो । सिया णोम णोविसिद्धा, कत्थ वि वधवसेण
कालरस अवट्ठणदसणादो । १३ ।

सपहि विदियसुत्तस्सत्थो वुच्चदे । त जहा— उक्कस्मणाणावरणीयवेयणा जहण्णा
अणुक्करसा च ण होदि, पडिक्कत्तादो । सिया अजहण्णा, जहण्णादो उअरिमासेस-

यह भी देशामशोक सूत्र है । इसलिये यहा शय नौ पदोंको और कहना चाहिये ।
देशामशोक होनेसे ही शेष तेरह सूत्रोंका इसमें अतन्माव पतलाना चाहिये । उनमें यहा
पहिले प्रथम सूत्रकी प्ररूपणा करते हैं । यह इस प्रकार है— ज्ञानावरणीयवेदना कालकी
अपेक्षा कथंचित् उत्पद्य, कथंचित् अनुत्पद्य, कथंचित् जघय और कथंचित् अजघय
है । यह कथंचित् सादि भी है, क्योंकि, पयायाधिक नयका अवलम्बन करनेपर
ज्ञानावरणीयकी सभी स्थितिया सादि पायी जाती हैं । कथंचित् यह अनादि भी
है, क्योंकि द्रव्याधिक नयका अवलम्बन करनेपर ज्ञानावरणीयकी वेदनामें
अनादिता देखी जाती है । कथंचित् यह धुव है, क्योंकि, द्रव्याधिक
नयका अवलम्बन करनेपर ज्ञानावरणीयकी कालवेदनाका विनाश नहीं पाया जाता
है । कथंचित् यह अधुव है, क्योंकि, पयायाधिक नयका अवलम्बन करनेपर उसकी
अस्थिरता देखी जाती है । कथंचित् यह ओज है, क्योंकि, किसी कालविशेषमें
कलिओज और तेजोस सरयाविशेष पाये जाते हैं । कथंचित् यह युग्म है,
क्योंकि, किसी कालविशेषमें घृतयुग्म और वादरयुग्म सरयाविशेष पाये जाते
हैं । कथंचित् यह ओम है, क्योंकि, किसी कालविशेषमें हानि देसी जाती है ।
कथंचित् यह विदिष्ट है, क्योंकि, किसी कालविशेषमें बुद्धि देखी जाती है । कथंचित्
यह नोम नोविशिष्ट है, क्योंकि, कहींपर व धके वशसे कालका अवस्थान देखा जाता
है । [इस प्रकार ज्ञानावरणीयकालवेदना तेरह (१३) पद स्वरूप है] ।

अथ द्वितीय सूत्रका अर्थ कहते हैं । यह इस प्रकार है—उत्पद्य ज्ञानावरणीय-
वेदना जघ य और अनुत्पद्य नहीं होती, क्योंकि, ये उससे विरुद्ध हैं । कथंचित् यह
अजघय है, क्योंकि, जघयसे ऊपरके समस्त कालविकल्पोंमें अवस्थित अजघय

कालत्रियणावद्धिदे अजहण्णे उक्कस्सस्म वि समरादो । मिया सादिया, अणुक्कस्म कालादो उक्कस्मकालुणत्तीए । धुवपद णत्थि, उक्कस्सोद्धीए मत्तकालमपट्ठणामावादो । दच्चद्वियणए अवलविदे' वि ण धुवपदमत्थि, चटुसु वि गदीसु कयाइ उक्कस्मपदस्म समरादो । मिया अट्ठुवा, उक्कस्मपदस्स सच्चकालमपट्ठणामावादो । मिया कदलुग्गना, उक्कस्मकालम्मि वादरलुग्ग कलि-तेपोजसत्ताविसेमाणममावादो । मिया णोम णोमिभिमिद्दा, वद्धिदे हाइदे च उक्कस्मचत्तिरोहादो । एवमुक्कस्सणाणावरणीयवेयणा पचपदत्थिया [५] ।

अणुक्कस्सणाणावरणीयवेयणा मिया जहण्णा, उक्कस्म गोत्तूण हेडिमसेमदियप्ये अणुक्कस्से जहण्णम्म वि समरादो । मिया अजहण्णा, अणुक्कस्सस्म अजहण्णापिणाभात्ति-त्तादो । सिया सादिया, उक्कस्मादो अणुक्कस्सुप्पीए अणुक्कस्सादो वि अणुक्कस्म-विसेसुप्पत्तिदमणादो च । सिया अणादिया, दच्चद्वियणए अवलविदे अणुक्कस्सपदस्म पधामावादो । सिया धुवा, दच्चद्वियणए अवलविदे अणुक्कस्सपदस्स विणासाभावादो । सिया अट्ठुवा, पच्चद्वियणए अवलविदे अणुक्कस्सपदस्स धुवत्तामावादो । सिया ओजा, कत्थ वि अणुक्कस्सपदविमिस द्विविह्विसमसग्गुत्तमादो । मिया लुग्गा, अणुक्कस्स-

पदमें उत्कृष्ट पद भी सम्मय है । कथंचित् यह नादि है क्योंकि, अनुकृष्ट कागमे उत्कृष्ट काल उत्पन्न होता है । ध्रुव पद नहीं है, क्योंकि, उत्कृष्ट स्थितिका सप कालमें अवस्थान नहीं रहता । द्रव्यार्थिकनयका अवलम्बन करनेपर भी ध्रुव पद सम्मय नहीं है, क्योंकि, वारों ही गतियोंमें उत्कृष्ट पद कदाचित् ही सम्मय होता है । कथंचित् यह अधुव है, क्योंकि, उत्कृष्ट पदका सय कालमें अवस्थान नहीं रहता । कथंचित् यह वृत्तयुग्म है, क्योंकि, उत्कृष्ट कालमें वादरयुग्म कलिओत्त और तेषोत्त मत्त्या-विशेषोंका अभाव है । कथंचित् यह नोम-नोविशिए है, क्योंकि, वृद्धि च हानिके होनेपर उत्कृष्टपनेका विरोध है । इस प्रकार उत्कृष्ट क्षानापरणीयवेदना पांच (५) पद रूप है ।

अनुकृष्ट क्षानापरणीयवेदना कथंचित् सघय है, क्योंकि, उत्कृष्टको छाक्कर अघस्तन समस्त विकल्पों रूप अनुकृष्ट पदमें जघय पद भी सम्मय है । कथंचित् यह अजघय है, क्योंकि अनुकृष्ट पद अजघय पदका अविनाभावी है । कथंचित् यह नादि है, क्योंकि, उत्कृष्ट पदसे अनुकृष्ट पद उत्पन्न होता है, तथा अनुकृष्टसे भी अनुकृष्टविशेषकी उत्पत्ति देखी जाती है । कथंचित् यह अनादि है, क्योंकि, द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर अनुकृष्ट पदका घघ नहीं होता । कथंचित् यह ध्रुव है, क्योंकि द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर अनुकृष्ट पदका विनाश नहीं होता । कथंचित् यह अधुव है, क्योंकि, पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर अनुकृष्ट पद ध्रुव नहीं है । कथंचित् यह ओज है, क्योंकि, किसी अनुकृष्ट पदविशेषमें दोनों प्रकारका विपय सम्पाद्ये देखी जाती है । कथंचित् यह युग्म है, क्योंकि, किसी अनुकृष्ट पदविशेषमें दोनों प्रकारकी

पदविसेसे दुविहसमसखदसणादो । सिया ओमा, कथ नि हाणीदो समुप्पणअणुक्कस्सपदु-
वर्लमादो । सिया विसिद्धा, कथ नि वट्टीदो अणुक्कस्सपदुप्पत्तीए । सिया गोम-गोविसिद्धा,
अणुक्कस्सजहणम्मि अणुक्कस्सपदनिसे वा अप्पिदे वट्टि हाणीणमभागादो । एव णाणावर-
णाणुक्कस्सवेयणा एस्कारसपदप्पिया [११] । एव तदियसुत्तपरूवणा कदा ।

सपहि चउत्थसुत्तपरूवणा कीरेदे । त जहा— जहणणाणावरणीयवेयणा सिया
अणुक्कस्सा, अणुक्कस्सजहण्णस्म ओघनहण्णेण एगत्तदसणादो । सिया सादिया, अज-
हण्णादो जहण्णपदुप्पत्तीए । सिया अणादिया ति णत्थि, सुहुमसापराइयचरिमसमय-
धधम्मि चरिमसमयवीणरुमायसतम्मि य दव्वट्टियणए अव्वलविज्जमाणे नि अणादिताणुव-
लमादो । सिया अद्धुवा । सिया कलिभोजा, खीणकसायचरिमसमयट्टिदिग्गहणादो । सिया
गोम गोविसिद्धा । एव जहण्णकालवेयणा पचपयारा सरूत्तेण छप्पयारा वा [५] । एव
चउत्थसुत्तपरूवणा कदा ।

सपहि पचमसुत्तपरूवणा कीरेदे । त जहा— अजहण्णा णाणावरणीयवेयणा सिया
उक्कस्सा, अजहण्णुक्कस्सस ओघनक्कस्सादो पुघत्ताणुवळमादो । सिया अणुक्कस्सा, तद-

सम सख्यायें देखी जाती हैं । कथंचित् वह ओम है, क्योंकि, कहींपर हानिसे
उत्पन्न हुआ अनुत्तृष्ट पद पाया जाता है । कथंचित् वह विशिष्ट है, क्योंकि,
कहींपर वृद्धिमे अनुत्तृष्ट पद उत्पन्न होता है । कथंचित् वह नोम-नोविशिष्ट है,
क्योंकि, अनुत्तृष्टमृत जघन्य पदकी अथवा अन्य अनुत्तृष्ट पदविशेषकी विवक्षा करनेपर
वृद्धि और हानिका अभाव रहता है । इस प्रकार ज्ञानावरणकी अनुत्तृष्टवेदना ग्यारह
(११) पद स्वरूप है । इस प्रकार तीसरे सूत्रकी प्ररूपणा की गई है ।

यद्य चतुर्थ सूत्रकी प्ररूपणा करते हैं । यह इस प्रकार है—जघन्य ज्ञानावरणीय-
वेदना कथंचित् अनुत्तृष्ट है, क्योंकि, अनुत्तृष्ट जघन्यकी ओघपचयसे एकता देखी जाती
है । कथंचित् वह सादि है, क्योंकि, अजघन्यसे जघन्य पद उत्पन्न होता है । कथंचित्
अनादि यह पद नहीं है, क्योंकि, सूक्ष्मसागपराधिके अन्तिम समय सम्बन्धी अथ और
क्षीणकपायके अन्तिम समय सम्बन्धी सत्तमे द्रव्याधिकनयका अवलम्बन करनेपर भी
अनादिपना नहीं पाया जाता । कथंचित् वह अधुव है । कथंचित् वह कलिभोज है,
क्योंकि, क्षीणकपायके अन्तिम समय सम्बन्धी स्थितिका प्रहण किया गया है । कथंचित्
वह नोम-नोविशिष्ट है । इस प्रकार जघन्य कालवेदना पाच (५) प्रकार अथवा
अपने साथ छह प्रकार भी है । इस प्रकार चतुर्थ सूत्रकी प्ररूपणा की गई है ।

अथ पाचमै सूत्रकी प्ररूपणा करते हैं । यह इस प्रकार है—अजघन्य
ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्तृष्ट है, क्योंकि, अजघन्य उत्तृष्ट ओघ उत्तृष्टसे
पृथक् नहीं पाया जाता है । कथंचित् वह अनुत्तृष्ट है, क्योंकि, वह उसका

विणामावित्तादो । सिया सादिया, पदतरपल्लट्टेण विणा अजहण्णपदविसिमाणमवट्टाणा-
मावादो । सिया अणादिया, दब्बट्टियणए अणलविदे वधामावादो । सिया धुवा,
दब्बट्टियणए अवलविदे अजहण्णपदरस विणासागावाटो । सिया अद्धुवा, पज्जवट्टियणए
अवलविदे धुवत्तामावादो । मिया ओजा, मिया जुम्मा, सिया आमा, सिया विसिद्धा ।
सुग्गम । सिया गोम गोविसिद्धा, गिरुद्धपदविसेमत्तादो । एउमजहण्णा एक्कारसभगा [५] ।
एसो पचमसुत्तको ।

सादियणाणावरणीयवेयणा सिया उक्करसा, सिया अणुक्करसा, सिया जहण्णा,
सिया अजहण्णा, सिया अद्धुवा । धुवा ण हेदि, सादियरस अणादिय धुवत्तविरोहादो ।
सिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया आमा, सिया विमिद्धा, सिया गोम गोविसिद्धा । एव
सादियवेदणाए दसभगा [१०] । एमो छट्टसुत्त यो ।

अणादियणाणावरणीयवेयणा सिया उक्करसा, सिया अणुक्करसा, सिया जहण्णा,
मिया अजहण्णा, सिया सादिया । वधमणादियवेयणाए सादियत्त ? ण, वेयणासामण्णा-
वेक्खाए अणादियम्मि उक्करसादिपदावेक्खाए सादियत्त पडि विरोहामावादो । सिया धुवा,

अविनामायी है । कथञ्चित् यह सादि है, क्योंकि, दूसरे पदोंके पलटनेके बिना
अजघन्य पदविशेष रहते नहीं है । कथञ्चित् यह अनादि है, क्योंकि, द्रव्यार्थिक
नयका अयलम्बन करनेपर इस पदका बन्ध नहीं होता । कथञ्चित् यह ध्रुव है, क्योंकि,
द्रव्यार्थिक नयका अणुलम्बन करनेपर अजघन्य पदका विनाश नहीं होता । कथञ्चित्
यह अध्रुव है, क्योंकि, पर्यायार्थिक नयका अयलम्बन करनेपर उसके ध्रुवपना
नहीं पाया जाता । कथञ्चित् यह ओज है कथञ्चित् युग्म है, कथञ्चित् ओम है,
और कथञ्चित् यह विशिष्ट है । यह सद्य सुग्गम है । कथञ्चित् यह नोम नोधिशीष्ट
है, क्योंकि, पदविशेषकी विधक्षा है । इस प्रकार अजघन्य वेदनाके त्पारह (११)
भग होते हैं । यह पाचवें सूत्रका अर्थ है ।

सादि ज्ञानावरणीयवेदना कथञ्चित् उत्तए है, कथञ्चित् अनुत्तए है, कथञ्चित्
अजघन्य है, कथञ्चित् अजघन्य है, और कथञ्चित् अध्रुव है । यह ध्रुव नहीं है, क्योंकि,
सादि पदका अनादि और ध्रुव पदके साथ विरोध है । यह कथञ्चित् ओज है,
कथञ्चित् युग्म है, कथञ्चित् ओम है कथञ्चित् विशिष्ट है, और कथञ्चित् नोम-नोधिशीष्ट
है । इस प्रकार सादिवेदनाके दस (१०) भग होते हैं । यह छठे सूत्रका अर्थ है ।

अनादि ज्ञानावरणीयवेदना कथञ्चित् उत्तए, कथञ्चित् अनुत्तए, कथञ्चित्
अजघन्य, कथञ्चित् अजघन्य और कथञ्चित् सादि है ।

शुका—अनादि वेदना सादि कैसे हो सकती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, वेदनासामान्यकी अपेक्षा उसके अनादि होनेपर मी
दृष्टए आदि पदोंकी अपेक्षा उसके सादि होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

वेदनासामण्यस्य विनासामारादो । सिया अद्भुवा, पदविसेसस्य विनासदसणादो । अणा-
दियत्तम्मि सामण्यविवक्त्वाए समुप्यण्यम्मि कथं पदविसेससमवा ? ण, सगतोखित्तअसेस-
विसेसम्मि सामण्यम्मि अप्पिदे तदविरोहादो । सिया ओजा, मिया जुग्मा, सिया ओमा, सिया
विसिद्धा, सिया गोम गोविसिद्धा । एवमणादियपदसस चारस भगा [१२] । एसो सत्तमसुत्तयो ।

धुवणाणावरणीयवेदना मिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया
अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अणादिया, सिया अद्भुवा सिया ओजा, सिया जुग्मा,
सिया ओमा, सिया विसिद्धा, सिया गोम गोविसिद्धा । एव धुवपदसस वारस भगा [१२] ।
एसो अट्टमसुत्तयो ।

अद्भुवणाणावरणीयवेदना मिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा,
सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया ओजा, सिया जुग्मा, सिया ओमा, सिया विसिद्धा,
सिया गोम गोविसिद्धा । एवमद्भुवपदसस दस भगा [१०] । एसो णवमसुत्तयो ।

ओजणाणावरणीयवेदना उक्कस्सा ण होदि, उक्कस्सट्ठिदीए कदलुग्मे अवट्टाणादो ।
सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया । सिया अणादिया,
सामण्यविवक्त्वादो । सिया धुवा, सिया अद्भुवा, विसेसविवक्त्वाए । सिया ओमा, सिया

कथंचित् यह ध्रुव है, क्योंकि, वेदनासामान्यका कभी विमर्श नहीं होता ।
कथंचित् यह अध्रुव है, क्योंकि, पदविशेषका विमर्श देखा जाता है ।

शुक्रा— सामान्य विवेक्षासे अनादितोके रथीकार करनेपर उसमें पदविशेषकी
सम्भावना कैसे हो सकती है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, अपने भीतर समस्त विशेषोंको रखनेवाले सामान्यकी
विवेक्षा करनेपर उसमें कोई विशेष नहीं है ।

यह कथंचित् ओज, कथंचित् युग्म, कथंचित् ओम, कथंचित् विशिष्ट और
कथंचित् ओम-नोविशिष्ट है । इस प्रकार अनादि पदके चारह (१२) भग होते हैं ।
यह सातवें सूत्रका अर्थ है ।

ध्रुव ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट, कथंचित् अनुकृष्ट, कथंचित् जघन्य,
कथंचित् अजघन्य, कथंचित् सादि, कथंचित् अनादि, कथंचित् अध्रुव, कथंचित्
ओज, कथंचित् युग्म, कथंचित् ओम, कथंचित् विशिष्ट और कथंचित् ओम-नोविशिष्ट
है । इस प्रकार ध्रुव पदके चारह भग होते हैं । यह आठवें सूत्रका अर्थ है ।

अध्रुव ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट, कथंचित् अनुकृष्ट, कथंचित्
जघन्य, कथंचित् अजघन्य, कथंचित् सादि, कथंचित् ओज, कथंचित् युग्म, कथंचित्
ओम, कथंचित् विशिष्ट और कथंचित् नाम-नोविशिष्ट है । इस प्रकार अध्रुव पदके
दस (१०) भग होते हैं । यह नौवें सूत्रका अर्थ है ।

ओज ज्ञानावरणीयवेदना उत्कृष्ट नहीं होती है, क्योंकि, उत्कृष्ट स्थितिका
अवस्थान वृत्तयुग्ममें है । यह कथंचित् अनुकृष्ट, कथंचित् जघन्य, कथंचित् अजघन्य,
कथंचित् सादि है । सामान्यकी विवेक्षासे यह कथंचित् अनादि है । यह कथंचित्
ध्रुव है । यह कथंचित् अध्रुव है, क्योंकि, विशेषकी विवेक्षा है । यह कथंचित् ओम,

विसिद्धा, सिया गोम-गोविसिद्धा । एवमोत्पदस्स दस भगा । १० । एतो दसमसुत्तयो ।

जुम्मणाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अणादिया, सिया धुवा, सिया अद्धुवा, सिया ओजा, सिया विसिद्धा, सिया गोम गोविसिद्धा । एव जुम्पदस्स दस भगा । १० । एतो एवकारसमसुत्तयो ।

ओमणाणावरणीयवेयणा सिया अणुक्कस्सा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अणादिया, सिया धुवा, सिया अद्धुवा, सिया ओजा, सिया जुम्मा । एवमोमपदस्स अट्ठ भगा । ८ । एतो मारसमसुत्तयो ।

विसिद्धणाणावरणीयवेयणा सिया अणुक्कस्सा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अणादिया, सिया धुवा, सिया अद्धुवा, सिया ओजा, सिया जुम्मा । एव विसिद्धपदस्स अट्ठभगा । ८ । एतो तेरसमसुत्तयो ।

गोम गोविसिद्धणाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सिया, सिया अणुक्कस्सिया, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अणादिया, सिया धुवा, सिया अद्धुवा, सिया ओजा, सिया जुम्मा । एव दस भगा । १० । एतो चोद्दसमसुत्तयो ।

एदेसिं भगणमकविण्णासो एतो— १३ | ५ | ११ | ५ | ११ | १० | १२ | १२ | १० | १० | १० | ८ | ८ | १० | ।

कथंचित् विशिष्ट और कथंचित् नोम-नोविशिष्ट है । इस प्रकार ओज पदके दस (१०) भग होते हैं । यह दसवें सूत्रका अर्थ है ।

युग्म शानावरणीयवेदना कथंचित् उत्तृष्ट, कथंचित् अनुत्तृष्ट कथंचित् अजघय, कथंचित् सादि, कथंचित् अनादि, कथंचित् ध्रुव, कथंचित् अध्रुव, कथंचित् गोम, कथंचित् विशिष्ट और कथंचित् नोम-नोविशिष्ट है । इस प्रकार युग्म पदके दस (१०) भग होते हैं । यह न्यारहवें सूत्रका अर्थ है ।

ओम शानावरणीयवेदना कथंचित् अनुत्तृष्ट, कथंचित् अजघय, कथंचित् सादि, कथंचित् अनादि, कथंचित् ध्रुव, कथंचित् अध्रुव, कथंचित् ओज और कथंचित् युग्म है । इस प्रकार ओम पदके आठ (८) भग होते हैं । यह बारहवें सूत्रका अर्थ है ।

विशिष्ट शानावरणीयवेदना कथंचित् अनुत्तृष्ट, कथंचित् अजघय, कथंचित् सादि, कथंचित् अनादि, कथंचित् ध्रुव, कथंचित् अध्रुव, कथंचित् ओज और कथंचित् युग्म है । इस प्रकार विशिष्ट पदके आठ (८) भग होते हैं । यह तेरहवें सूत्रका अर्थ है ।

नोम नोविशिष्ट, शानावरणीयवेदना कथंचित् उत्तृष्ट, कथंचित् अनुत्तृष्ट, कथंचित् अजघय, कथंचित् अजघय, कथंचित् सादि, कथंचित् अनादि, कथंचित् ध्रुव, कथंचित् अध्रुव, कथंचित् ओज और कथंचित् युग्म है । इस प्रकार उसके दस (१०) भग होते हैं । यह चौदहवें सूत्रका अर्थ है ।

इन भगोंके अकोंका पियास यह है— १३ + ५ + ११ + ५ + ११ + १० + १२ + १२ + १० + १० + १० + ८ + ८ + १० = १३५ ।

एव सत्तण कम्माण ॥ ५ ॥

जहा पाणानरणीयस्स पदमीमांसा वदा तद्वा सत्तण कम्माण कायच्चा, विसैसा भावादे । एवमतोक्यओत्तणियोगदारा पदमीमांसा ति समत्तगणियोगदर ।

सामित्तं दुविहं जहणपदे उक्कस्सपदे ॥ ६ ॥

तत्थ जहण चउत्विह — णाम द्वयणा दव्य भावजहण चेदि । णामजहण द्वयणा जहण च सुगम । दव्यजहण दुविह — आगमदव्यजहण णोआगमदव्यजहण चेदि । तत्थ जहणपाहटजाणओ अणुपज्जतो आगमदव्यजहण । णोआगमदव्यजहण तिविह जाणुगसरीर भविय तद्वदिरित्तणोआगमदव्यजहणभेण । जाणुगसरीर भविय गद । तवदिरित्तणोआगमदव्यजहण दुविह — ओघजहणमादेसजहण चेदि । तत्थ ओघजहण चउत्विह — द वदो येत्ता कात्तो भावदो चेदि । तत्थ दव्यजहणमेगो परमण् । खेत्त जहणमेगो आगमपदेसो । कात्तजहणमेगो समजो । भावजहण परमाणुम्हि एगो णिद्वत्तगुणो । आदेसजहण पि दव्य खेत्त णाल भावेहि चउत्विह । तत्थ दव्यदो आदेस जहण उच्चदे । त जहा — तिपदेसियक्कपध दट्ठण दुपदेसियक्कपधो आदेसदो दव्य

इसी प्रकार शेष सातों कर्मिके उत्कृष्ट आदि पदोंकी प्ररूपणा करना चाहिये ॥५॥

जिस प्रकार ज्ञानाधारणकी पदमीमांसा की गद ह उन्ही प्रकार शेष सात कर्मोंकी पदमीमांसा करना चाहिये, क्योंकि, उनमें कोई विशेषता नहीं है । इस प्रकार ओजाओयोगदारा गमित पदमीमांसा नामक अनुयोगदारा समाप्त हुआ ।

स्वामित्व दो प्रकार है—जवन्य पदमें वार उक्कप पदमें ॥ ६ ॥

उनमेंसे जव य पद गार प्रकार है—नामजघय, स्थापनाजघय, द्रयजघय और भावजघय । इनमें नामजघय और स्थापनाजघय सुगम हैं । द्रव्यजघय दो प्रकार है—आगमद्रव्यजघय और नोआगमद्रव्यजघय । उनमें जघय प्राभूतवा जानकार उपयोग रहित जीव आगमद्रव्यजघय है । नोआगमद्रव्यजघय तीन प्रकार है—धायकशरीर नोआगमद्रव्यजघय, भावी नोआगमद्रव्यजघय और तदव्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यजघय । इनमें धायकशरीर और भावी नोआगमद्रव्यजघय विदित है । तदव्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यजघय दो प्रकार ह ओघजघय और आदेशजघय । उनमें द्रव्य क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षासे ओघजघय चार प्रकार है । इनमेंसे एक परमाणुको द्रव्यजघय कहा जाता है । एक आकाशप्रदेश क्षेत्रजघय है । कालजघय एक समय है । परमाणुमें रहनेवाला एक स्थिरगन्धत्व गुण भावजघय है ।

आदेशजघन्य भी द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा चार प्रकार है । इनमें द्रव्यसे आदेशजघयकी प्ररूपणा करने हैं । वह इस प्रकार है—तीन प्रदेश

जहण । एव सेसेसु वि नेयञ्च । तिपडेसोगाढदञ्च ददृहण दुपेदेसोगाढदञ्च खेतदेो आदेस-
 जहण । एव सेसेसु वि नेयञ्च । तिसमयपरिणद ददृहण दुममयपरिणद दध्वमादेसदेो
 कालजहण । एव सेसेसु वि नेयञ्च । तिगुणपरिणद दञ्च ददृहण दुगुणपरिणदं दञ्च भावदेो
 आदेसजहण । माजजहण दुविह— आगमभावजहण णोआगमभावजहण चेदि । तत्थ
 जहणपाहुहजाणगेो उवजुतो आगमभाजहण । सुहुमणिगोदलद्धिअपज्जतयस्स ज सञ्च
 जहण णाण त णोआगमभावजहण । एत्थ ओपजजहणकालेण पयद, सञ्चजहणाद्धिदीए
 अहियारादेो ।

उक्कस्स चउव्विह णाम द्ववणा-दञ्च भावउक्कस्समेण । तत्थ णाम द्ववणुक्क
 स्साणि सुगमाणि । दञ्चुक्कस्स दुविहमागमदञ्चुक्कस्स णोआगमदञ्चुक्कस्स चेदि । तत्थ
 उक्कस्सपाहुहजाणगेो अणुवजुतो आगमदञ्चुक्कस्स । णोआगमदञ्चुक्कस्स तिविह जाणुय-
 मरीर भविय तवदिरित्तणोआगमदञ्चुक्कस्समेण । जाणुयमरीर भवियणोआगमदञ्चुक्क-
 स्साणि सुगमाणि । तत्रदिरित्तणोआगमदञ्चुक्कस्स दुविह— ओपुक्कस्समादेसुक्कस्स चेदि ।
 तत्थ ओपुक्कस्स चउव्विह— दञ्चदेो खेतदेो कालदेो भावदेो चेदि । तत्थ दञ्चदेो उक्कस्स
 महाखधेो । खेतदेो उक्कस्समागास । कालदेो उक्कस्स सञ्चणालेो । भावदेो उक्कस्स

वाले स्व-धर्मी अपेक्षा दो प्रदेशवाला स्व-ध आदेशद्रव्यजघ-य है । इसी प्रकार शेष
 प्रदेशोंमें भी ले जाना चाहिये । तीन प्रदेशोंमें अवगाहन करनेवाले द्रव्यकी अपेक्षा
 दो प्रदेशोंमें अवगाहन करनेवाला द्रव्य क्षेत्रसे आदेशजघ-य है । इसी प्रकार शेष
 प्रदेशोंमें भी ले जाना चाहिये । तान समयोंमें परिणत द्रव्यकी अपेक्षा दो समयोंमें
 परिणत द्र-य आदेशसे कालजघ-य है । इसी प्रकार शेष समयोंमें भी ले जाना चाहिये ।
 तीन गुणोंमें परिणत द्र-यकी अपेक्षा दो गुणोंमें परिणत द्रव्य भावसे आदेशजघ-य है ।

भावजघ-य दो प्रकार है— आगमभावजघन्य और नोआगमभावजघन्य ।
 उनमें जघ-य प्राप्तका जानकार उपयोग युक्त जीव आगमभावजघन्य है । सूक्ष्म निर्गोत्र
 एव पश्यन्तकका जो सबसे जघ-य धान है वह नोआगमभावजघ-य है । यहा ओघ-
 जघ-यकाल प्रकृत है क्योंकि, यहा सर्वजघ-य स्थितिका अधिकार है ।

नाम, म्यापना द्र-य और भावके भेदसे उत्पन्न चार प्रकार हैं । उनमें नाम
 उत्पन्न और स्वपनाउत्पन्न सुगम है । द्र-य उत्पन्न दो प्रकार है— आगमद्र-य उत्पन्न
 और नोआगमद्र-य उत्पन्न । उनमें उत्पन्न प्राप्तका जानकार उपयोग रहित जीव
 आगमद्र-यउत्पन्न है । नोआगमद्र-यउत्पन्न तीन प्रकार है— शायकशरीर, भावी
 और तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्र-यउत्पन्न । इनमें शायकशरीर और भावा नोआगमद्र-य
 उत्पन्न सुगम हैं । तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्र-यउत्पन्न दो प्रकार है— ओघउत्पन्न और
 आदेशउत्पन्न । उनमें ओघउत्पन्न द्रव्य, क्षेत्र काल और भावकी अपेक्षा चार प्रकार है ।
 वामें द्र-यकी अपेक्षा उत्पन्न महा स्कन्ध है । क्षेत्रकी अपेक्षा उत्पन्न आकाश है ।
 कालकी अपेक्षा उत्पन्न सध काल है । भावकी अपेक्षा उत्पन्न सर्वोत्पन्न धर्म, गन्ध, रस
 और स्पर्शसे युक्त द्रव्य है ।

सञ्चुक्कस्सवण्ण गय रस फासदध्व । आदेसुक्कस्स चउव्विह— दध्वदो खेत्तदो कालदो भावदो चेदि । तत्थ दध्वदो एगपरमाणु दददूण दुपदेसिओ खधो आदेसुक्कस्स । दुपदेसिय खध दददूण तिपदेसियक्खधो वि आदेसुक्कस्स । एव सेसेसु वि णेयव्व । खेत्तदो एयक्खेत्त दददूण दोखेत्तपदेसा आदेसदो उक्कस्सयेत्त । एव सेसेसु वि णेयव्व । कालदो एगसमय दददूण दोसमइय आदेसुक्कस्स । एव सेसेसु वि णेयव्व । भावदो एगगुणजुत्त दददूण दुगुणजुत्त दध्वमादेसुक्कस्स । एव सेसेसु वि णेयव्व । भावुकस्स दुविह— आगम-
णोआगमभावुकस्सभेएण । तत्थ उक्कस्सपाहुडजाणओ उज्जुत्तो आगमभावुकस्स । णोआगम भावुकस्स केवलणण । तत्थ ओघकालुक्कस्सेण अधियारो । एत्थ कालदो ओघुक्कस्स सच्चकालो नि भणिद, तस्सेत्थ गहण ण कायव्व, कम्मट्टिदीण तदसमवादो । जहण्णपदे एग सामित्त अण्णेममुक्कस्सपदे, एउ मामित्त दुविह नेव होदि, अण्णस्साममवादो ।

सामित्तेण उक्कस्सपदे णाणावरणीयवेयणा कालदो उक्क-
स्सिया कस्स ? ॥ ७ ॥

उक्कस्सपदिहेमो जहण्णपदपडिसेहफलो । णाणावरणदिहेमो सेमकम्मपडिसेहफलो ।

आदेशउत्कृष्ट द्रव्य, क्षेत्र काठ और भायकी अपेक्षा चार प्रकार है । उनमें एक परमाणुकी अपेक्षा दो प्रदेशवाला स्वयं द्रव्यकी अपेक्षा आदेशउत्कृष्ट है । दो प्रदेशवाले स्वयंकी अपेक्षा तीन प्रदेशवाला स्वयं भी द्रव्यमें आदेशउत्कृष्ट है । इसी प्रकार शेष प्रदेशोंक विषयमें ले जाना चाहिये । एक प्रदेश रूप क्षेत्रकी अपेक्षा दो क्षेत्रप्रदेश क्षेत्रसे आदेशउत्कृष्ट है । इसी प्रकार शेष क्षेत्रप्रदेशोंमें भी ले जाना चाहिये । एक समयकी अपेक्षा दो समय परिणत द्रव्य वाक्यसे आदेशउत्कृष्ट है । इसी प्रकार शेष समयोंमें भी ले जाना चाहिये । एक गुण युक्त द्रव्यकी अपेक्षा दो गुण युक्त द्रव्य भावसे आदेशउत्कृष्ट है । इसी प्रकार शेष गुणोंमें भी ले जाना चाहिये ।

भावउत्कृष्ट आगमभावउत्कृष्ट और नोआगमभावउत्कृष्टके भेदमें दो प्रकार है । उनमें उत्कृष्ट प्राभूतका जानकार उपयोग युक्त जीय आगमभावउत्कृष्ट है । नोआगम भावउत्कृष्ट कथलज्ञान है । यहा ओघउत्कृष्ट कालका अधिकार है । यहा कालकी अपेक्षा ओघउत्कृष्ट सब काल कहा गया है, उसका यहाँ प्रदण नहीं करना चाहिये, क्योंकि, कर्मस्थितिमें उसकी सम्भायना नहीं है । एक स्वामित्य अर्थात् पदमें और दूसरा एक उत्कृष्ट पदमें, इस प्रकार स्वामित्य दो प्रकार ही है, क्योंकि, इनके अतिरिक्त और दूसरे स्वामित्यकी सम्भायना नहीं है ।

स्वामित्वसे उत्कृष्ट पदमें ज्ञानावरणीयवेदना कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट किसके होती है ? ॥ ७ ॥

सूत्रमें उत्कृष्ट पदका निर्देश जघन्य पदके प्रतिषेधके लिये किया गया है । ज्ञानावरण पदका निर्देश शेष कर्मोंके प्रतिषेधके लिये है । कालका निर्देश क्षेत्र आदिका

कालिन्दिमो संतादिपडिमेहफत्रे । रुस्मे ति किं देवस्म किं णेरइयस्म किं मणुस्मस्म किं
तिरिक्स्मस्म ति पुच्छा ।

अण्णदरस्स पंचिंदियस्स सण्णिस्स मिच्छाइडिस्स मव्वाहि
पज्जत्तीहि पज्जत्तयदस्म कम्मभूमियस्स अकम्मभूमियस्स वा कम्म-
भूमिपडिभागस्स वा सखेज्जवासाउअस्स वा असखेज्जवासाउ-
अस्स वा देवस्स वा मणुस्सस्स वा तिरिक्स्सस्स वा णेरइयस्स
वा इत्थिपेदस्म वा पुरिमवेदस्स वा णउसयपेदस्म वा जलचरस्स
वा थलचरस्स वा खगचरस्स वा मागार-जागार-सुदोवजोगजुत्तस्स
उक्कस्मियाए ट्टिदीए उक्कस्सट्टिदिसंकिंलेसे उट्टमाणस्स, अधवा ईसि
मज्झिमपंणिणाभस्स तस्स णाणापरणीयवेयणा कालदो उक्कस्स ॥८॥

अण्णदरस्से ति णिदेमो जीवाहणादीण पडिसेहाभापदुत्तायणफत्रे । पंचिंदियस्से
ति णिदेमो विगल्लिंदियपडिसेहफत्रे ? णाणापरणीयस्म उक्कस्मिय ट्टिदि पंचिंदिया चेत्त
ष मत्त, णा विगल्लिंदिया इदि ज उत्त होदि । ते च पंचिंदिया हुनिहा — सण्णणो अस-

प्रतिषेध इत्येवात्ता है । 'विश्वे होता है इससे वह क्या करने होती है, क्या
नारकीक होती है, या मनुष्यके होती है धार क्या निर्वचने होती है, इस
प्रकार पूछा ही गई है ।

अन्यतर पचेन्द्रिय जीवक — जो मज्जी है, मिश्रादृष्टि है, सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त
है, कमभूमि, अकर्मभूमि अथवा कमभूमिप्रतिभाषो पत्र है, सखातवर्षासुक्क अथवा अस
खातवर्षासुक्क है, देव, मनुष्य, तिरिच अथवा नारकी है, खीनेद, पुरयवद अथवा नपुमक-
वेदमेम त्रिषी भी वदमे मयुक्त है, जलचर, थतर अथवा नमर है, माकार उपयोग
वाला है, जायत है, श्रुतेपयोगसे युक्त है, उत्कृष्ट स्थिति के वध योग्य उत्कृष्ट स्थिति
सकलेशम वतमान है, अथवा कुछ मध्यम सकलेज परिणामसे युक्त है, उसके ज्ञानापरणीय
कर्मसे वेदना कालकी अपेक्षा उ कृष्ट होती है ॥ ८ ॥

सुधम अ यतर पदका निराश अयगात्ता आदिवाके प्रतिषेधके अभावका
सूचित करता है । पचेन्द्रिय पदका निर्देश विश्वत्रेन्द्रियका प्रतिषेध करता है । इससे
यह कल्पित होता है कि ज्ञानापरणीयकी उत्कृष्ट स्थितिको पचेन्द्रिय जीव ही याघते
है, विश्वत्रेन्द्रिय नहीं याघते । ये पचेन्द्रिय जीव दो प्रकारके हैं — तल्ली और असल्ली

णिणो चेदि । तत्थ असण्णिणो उक्कस्सिय द्विदिं ण वधति त्ति जाणावणद्ध सण्णिस्से ति णिदिद्ध । ते च सण्णिपचिंदिया गुणट्ठाणेभएण चोदमविहा । तत्थ सासणादओ उक्करिसय द्विदिं ण वधति त्ति जाणवणद्ध मिच्छाइट्टिस्से ति णिदिद्ध । ते च मिच्छाइट्टिणो पज्जत्तयदा अपज्जत्तयदा चेदि दुविहा । तत्थ अपज्जत्तयदा उक्कस्सिय द्विदिं ण वधति त्ति जाणावणद्ध सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदस्से ति भणिद । पचिंदियपज्जत्तमिच्छाइट्टिणो कम्मभूमा अकम्म-भूमा चेदि दुविहा । तत्थ अकम्मभूमा उक्कस्सद्विदिं ण वधति, पणारसकम्मभूमिसु उप्पण्णा धेव उक्कस्सद्विदिं वधति त्ति जाणावणद्ध कम्मभूमियरस वा त्ति भणिद । भोगभूमिसु उप्पण्णाण व देव णेरइयाण सयपहण्णेदपव्वदस्स चाहिरभागप्पहुडि जाव सयभूरमणसमुदो त्ति एत्थ कम्मभूमिपडिभागग्गि उप्पण्णतिरिक्खाण च उक्कस्सद्विदिषपडिसेहे पत्ते तण्णिराकरणद्ध अकम्मभूमिस्स वा कम्मभूमिपडिभागस्स वा त्ति भणिद । अकम्मभूमिस्स वा त्ति उत्ते देव णेरइया धेतव्वा । कम्मभूमिपडिभागस्स वा त्ति उत्ते सयपह-णग्गिदपव्वदस्स चाहिर भागे समुप्पण्णाण गहण । सखेज्जवासाउअस्स वा त्ति उत्ते अट्टाइज्जदीव-मसुद्धुप्पण्णस्स कम्मभूमिपडिभागुप्पण्णस्स च गहण । अस-खेज्जवासाउअस्स वा त्ति उत्ते देव णेरइयाण गहण, ण समयाहियपुव्वकोडिप्पहुडि उवरिमआउअतिरिक्ख मणुस्साण गहण, पुव्वसुत्तेण तेसिं विदिदपडिसेहत्तादे । देव-

उनमें असङ्गी पचेन्द्रिय उत्कृष्ट स्थितिको नहीं बाधते हैं, इस बातके ज्ञापनार्थ सङ्गी पदका निर्देश किया है । ये सङ्गी पचेन्द्रिय गुणस्थानोंके भेदसे चौदह प्रकार है । उनमें सासादनसम्यग्दृष्टि आदिक उत्कृष्ट स्थितिको नहीं बाधते हैं, इस बातके ज्ञापनार्थ मिथ्यादृष्टि पदका निर्देश किया है । ये मिथ्यादृष्टि पर्याप्तक और अपर्याप्तकके भेदसे दो प्रकार हैं । उनमें अपर्याप्तक उत्कृष्ट स्थितिको नहीं बाधते हैं, इस बातके ज्ञापनार्थ 'सय पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ' ऐसा कहा है । पचेन्द्रिय पर्याप्त मिथ्यादृष्टि कर्मभूमिज और अकर्मभूमिज इस तरह दो प्रकारके हैं । उनमें अकर्मभूमिज उत्कृष्ट स्थितिको नहीं बाधते हैं, किंतु पन्द्रह कर्मभूमियोंमें उत्पन्न हुए जीव ही उत्कृष्ट स्थितिको बाधते हैं; इस बातके ज्ञापनार्थ 'कर्मभूमिज' पदका निर्देश किया है । भोगभूमियोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके समान देव नारकियोंके तथा स्वयंप्रभ पर्वतके बाह्य भागसे लेकर स्वयंभूरमण समुद्र तक इस कर्मभूमिप्रतिभागमें उत्पन्न हुए तिर्यंचोंके भी उत्कृष्ट स्थितिके बाधका प्रतिषेध प्राप्त होनेपर उसका निराकरण करनेके लिये 'अकर्म भूमिजके बाधका कर्मभूमिप्रतिभागोत्पन्न जीवके' ऐसा कहा है । अकर्मभूमिज पदसे देव नारकियोंका ग्रहण करना चाहिये । कर्मभूमिप्रतिभाग पदका निर्देश करनेपर स्वयंप्रभ पर्वतके बाह्य भागमें उत्पन्न हुए जीवोंका ग्रहण किया गया है । 'सख्यात पर्याप्त' कहनेपर अद्वैत क्षीप समुद्रोंमें उत्पन्न हुए तथा कर्मभूमिप्रतिभागमें उत्पन्न हुए जीवका ग्रहण करना चाहिये । 'असख्यातपर्याप्त' से देव नारकियोंका ग्रहण किया गया है । इस पदसे एक समय अधिक पूर्वकोटि आदि उपरिम आयुषिकर्षोंसे समुक्त तिर्यंचों व मनुष्योंका ग्रहण नहीं करना चाहिये, क्योंकि, पूर्व स्वसे उनका

णेरइएसु सरोज्जवासाउअत्तमिणि भणिदे सच्च ण ते अमरोज्जवासाउआ, किंतु मखेज्ज-
 वासाउआ चे, समयाहियंपुव्वकोडिप्पहुडिउअरिमआउअणियप्पाण असरोज्जवासाउअत्त
 भुवणमादो । कथ समयाहियंपुव्वकोडीए सखेज्जवासाए असरोज्जवासात्त ? ण, रायत्तसो व
 रुद्धिलेण परिचत्तसगद्धस्स असरोज्जवस्समहस्स^१ आउअविमसग्गि वट्टमाणस्स गहणादो ।

चउग्गइसण्णिपरिचिदियपज्जत्तमिच्छाइट्ठीण उक्कस्सट्ठिदिधपडिमेहो णत्थि ति
 जाणावणट्ट देवस्स वा मणुस्सस्स वा तिरिक्कास्स वा णेरइयस्स वा ति उत्त । तिसु
 वि वेदेषु उक्कस्सट्ठिदिधपडिसेहो णत्थि ति जाणावणट्टमित्थिवेदस्स वा पुरिसवेदस्स वा
 णउसयेवदस्स वा ति मणिद । चरणत्तिसेसाभाउपट्टुप्पायणट्ट जलचरस्स वा थलचरस्स वा खग-
 चरस्स वा ति मणिद । तत्थ मच्छ कच्छवादओ जलचरा, सीहै वय वग्घादओ थलचरा,
 गद्ध डेक्क सेणादओ रगचरा । दसणोवजोगजुत्ता उक्कस्सट्ठिदिं ण वधनि, णाणोवजोगजुत्ता
 चेव वधति ति जाणावणट्ट सागारणिदेसो कदो । मुत्तो उक्कस्सट्ठिदिं ण वधदि, जग्गतो

प्रतिषेध किया जा चुका है ।

शुका—देव व नार्की तो सख्यातवर्णयुक्त ही दाते हैं, फिर यहा उनका
 ग्रहण असख्यातवर्णयुक्त पदसे कैसे सम्भव है ?

समाधान— इस शकाके उत्तरमें कहते हैं कि सचमुचमें वे असख्यातवर्णयुक्त
 नहीं हैं, कि तु सख्यातवर्णयुक्त ही हैं। परंतु यहाँ एक समय अधिक पूवकोटिको धारि
 लेकर आगेके आयुविकल्पोंको असख्यातवर्णयुक्त भीतर स्वीकार किया गया है ।

शुका— एक समय अधिक पूवकोटिके सख्यातवर्णरूपता होते हुए भी
 असख्यातवर्णरूपता कैसे सम्भव है ?

समाधान— नहीं क्योंकि, राजगृक्ष (गृक्ष विशेष) के समान 'असख्यातवर्ण' शब्द
 कृदि घरा अपने अर्थको छोडकर आयुविशेषमें रहनेवाला यहाँ ग्रहण किया गया है ।

चारों गतिषोंके सही पचेन्द्रिय पर्याप्त मिध्याहृष्टियोंके उत्पृष्ट स्थितिके
 पन्धका प्रतिषेध नहीं है, इस बातके ज्ञापनार्थे देवके, मनुष्यके, तिर्यचके अथवा
 नंतरिकके, ऐसा कहा है । तानों ही चेदोंमें उत्पृष्ट स्थितिके अथवा प्रतिषेध नहीं
 है, इस बातके ज्ञापनाय 'अपिरीक, पुरप्रेदीके अथवा नपुसकवेदीके' ऐसा कहा
 है । चरण अथात् गमनविशेषका अभाव पतलानेके लिये 'जलचरके, थलचरके
 अथवा नभचरके' ऐसा कहा है । उनमें मत्स्य और कच्छप आदि जीव जलचर
 सिंह, वृक और घाघ आदि थलचर, तथा गृद्ध, डेक्क और श्येन आदि गभचर जीव हैं
 दर्शनोपयोगसे सहित जीव उत्पृष्ट स्थितिको नहीं धाधते हैं, किंतु ज्ञानोपयोग
 युक्त जीव ही उसे धाधते हैं, इस धानके जतलानेके लिये 'साकार' पदका निर्देश किय
 गया है । सोया हुआ जीव उत्पृष्ट स्थितिको नहीं धाधता है, किंतु जाग्रत जीव है

१ ताप्रतिपाठो-यम् । प्रतिपु समाहिय' इति पाठ । २ प्रतिपु— सद्स्व, ताप्रती सद् (र) स्त इति पाठ
 ३ ताप्रतिपाठो-यम् । अ ताप्रती: 'जलचरा सीह', आपती 'जलचरायामे सीह' इति पाठ ।

चेव यधदि ति जाणावणट्ट जागारगहण कद । सुदेवजोगजुत्तो चेव उक्कस्सट्ठिदि
यधदि, ण मदिरवजोगजुत्तो ति जाणावणट्ट सुदेवजोगजुत्तस्से चि भणिद ।

उक्कस्सियाए ट्ठिदीए यधपाओग्गसकिलेमट्टाणाणि असखेज्जलेगमेत्ताणि अत्थि ।
तत्थ चरिमसकिलेसट्टाणेण उक्कस्सट्ठिदि यधदि ति जाणावणट्ट उक्कस्सट्ठिदीए उक्कस्स-
ट्ठिदिसकिलेसे वट्टमाणस्से ति भणिद । उक्कस्सट्ठिदि यधपाओग्गसेससकिलेसट्टाणेहि
उक्कस्सट्ठिदियधस्स पडिसेहे पत्ते तेहि वि यधदि ति जाणावणट्ट ईसिमज्जिमपरिणामस्से
त्ति उत्त । यधया, उक्कस्सट्ठिदि यधपाओग्गसखेज्जलेगमेत्तमकिलेसट्टाणाणि पलिदोर्वमस्स
असखेज्जदिभागमेत्तरट्टाणि कादूण तत्थ चरिमखडस्स उक्कस्सट्ठिदिसकिलेसो णाम । तत्थ
यट्टमाणस्स उक्कस्सट्ठिदियधो होदि । सेसदुचरिमादिखेडेहि उक्कस्सट्ठिदियधपडिसेहे पत्ते
तेहि वि उक्कस्सट्ठिदियधो होदि ति जाणावणट्टमीसिमज्जिमपरिणामस्से ति उत्त । एव-
विहेण जीवेण णाणावरणीयस्स तीससागरोपमकोडाकोडिट्ठिदियधे पवद्धे तस्म णाणावरणीय-
वेयणा कालदो उक्कस्सा ।

तत्त्वदिरित्तमणुक्कस्सा ॥ ९ ॥

उसे याधता है; इस यातके शापनार्थ 'जागृत' पदका ग्रहण किया है। श्रुतोपयोग
युक्त जीव ही उत्कृष्ट स्थितिको याधता है, न कि मतिउपयोग युक्त जीव; इस
यातके शापनार्थ 'श्रुतोपयोग युक्त जीवके' ऐसा कहा है।

उत्कृष्ट स्थितिके यध योग्य सफलेशस्थान असख्यात लोक प्रमाण हैं।
उनमेंसे अन्तिम सफलेशस्थानके द्वारा उत्कृष्ट स्थितिको याधता है, इस यातके
शापनार्थ 'उत्कृष्ट स्थितिके यध योग्य उत्कृष्ट स्थितिसफलेशमें वर्तमान' ऐसा कहा
है। अब इससे उत्कृष्ट स्थितिके यध योग्य शत्रु सफलेशस्थानोंके द्वारा
उत्कृष्ट स्थितिके यधना निषेध प्राप्त होनेपर उनसे भी उक्त
स्थितिको याधता है, इस यातको जतलानेके लिये 'कुछ मध्यम परिणामोंसे युक्त
जावके' ऐसा कहा गया है। यधया, उत्कृष्ट स्थितिके यध योग्य असख्यात लोक
प्रमाण सफलेशस्थानोंके पर्योपमके असख्यातवें भाग मात्र खण्ड करके उनमें
अन्तिम खण्डका नाम उत्कृष्ट स्थितिसफलेश है। इस अन्तिम खण्डमें
रहनेवाले जीवके उत्कृष्ट स्थितिका यध होता है। अब इससे शेष द्विचरम
आदिक खण्डोंके द्वारा उत्कृष्ट स्थितिके यधका प्रतिषेध प्राप्त होनेपर उनसे भी उत्कृष्ट
स्थितिका यध होता है इस यातके शापनार्थ 'कुछ मध्यम परिणामोंसे युक्त जीवके'
ऐसा कहा है। उपयुक्त विशेषणोंसे विशिष्ट जीवके द्वारा शानावरणीयके तीस कोडा
कोडि सागरोपम प्रमाण स्थितियधके याधनेपर उसके शानावरणीयकी वेदना कालकी
अपेक्षा उत्कृष्ट होती है।

उससे भिन्न अनुत्कृष्ट वेदना होती है ॥ ९ ॥

तदो वदिरिचै तत्रदिरित्त, उक्कस्सट्टिदिषधवदिरित्ता' अणुक्कस्सट्टिदिवेयणा होदि चि उच होदि । सा च अणेषप्पयारा ति निस्से मामिणो वि अणेषपिहा होति । तेसि परूचण कस्सामो । तं जहा— तिण्णिवाससहरसमाघाध ऋदूण तीससागरोनमकोडाकोडि-ट्टिदीए पचद्दाए उक्कस्सट्टिदी होदि । पुणो अण्णेण जीवेण समज्जणतीससागरोवमकोडा कीडीसु बद्दासु पदममणुक्कस्सट्टाण होदि । एत्थ उक्कस्सट्टिदिपमाण सदिट्टीए चत्तालीस रूवाहियदुसदमेत्त [२४०] । अणुक्कस्सुक्कस्सट्टिदीए गुणचालीसरूवाहियदुसदमेत्ता [२३९] । तदो अण्णेण जीवेण दुममज्जणुक्कस्सट्टिदीए पचद्दाए विदियमणुक्कस्सट्टाण होदि । तस्स पमाणमेत्त [२३८] । एदण कमेण जावाधाकदएणणुक्कस्सट्टिदीए पचद्दाए अण्णमणुक्कस्सट्टाण होदि । गय्य जावाधाकदयपमाण तीसरूवाणि [३०] । एदग्गि उक्कस्सट्टिदिग्गि सोहिदे तदित्थट्टिदिषधट्टाणमेत्तिय होदि [२९०] ।

सपदि उक्कस्साधाहा समज्जणा होदि । कुदो ? जावाहाचरिमपमण पदमणिसेय-णिवादादो । सदिट्टीए उक्कस्सानाधापमाणमट्ट [८] । पुणो समयाहियजावाजाकदएणण उक्कस्सट्टिदीए पचद्दाए सो अण्णो अणुक्कस्सट्टाणधियप्यो होदि [२०९] । एदण कमेण दोवाधाधाकदएहि ज्जणुक्कस्सट्टिदीए पचद्दाए सो अण्णो अणुक्कस्सट्टिदिवियप्यो [२८०] ।

उससे व्यतिरिक्त अर्थात् उत्कृष्ट स्थितिपक्षसे मिन अतुल्य स्थितिषेदना होती है, यह सूत्रका नय है । यह चूंकि अनेक प्रकारकी है, अतः उसके स्वामी भी अनेक प्रकारके हैं । उनकी प्ररूपणा करते हैं । यह इस प्रकार है—तीन हजार वष आवाधा करके तीस कोडाकोडि सागरोपम मात्र स्थितिके बाधनेपर उत्कृष्ट स्थिति होती है । फिर अन्य जीवके द्वारा एक समय कम तीस कोडाकोडि सागरोपम प्रमाण स्थितिके बाधनेपर प्रथम अतुल्य स्थान होता है । यहापर उत्कृष्ट स्थितिका प्रमाण सदृष्टिमें दो सौ चालीस (२४०) भक्त है । अतुल्य उत्कृष्ट स्थितिका प्रमाण दो सौ उनतालीस (२२०) भक्त है । उससे गय्य जीवके द्वारा दो समय कम उत्कृष्ट स्थितिके बाधनेपर द्वितीय अतुल्य स्थान होता है । उसका प्रमाण यह है—२३८ । इस क्रमसे आवाधाकाण्डकसे हीन उत्कृष्ट स्थितिके बाधनेपर गय्य अतुल्य स्थान होता है । यहा आवाधाकाण्डकका प्रमाण तीस भक्त (३०) है । इसको उत्कृष्ट स्थितिमेंसे घटा देनेपर यहाका स्थितिषधस्थाप इतना होता है—२४० - ३० = २१० ।

यद्य उत्कृष्ट आवाधा एक समय कम हो जाती है, क्योंकि, आवाधाके अन्तिम समयमें प्रथम नियेक निर्जीण हो चुका है । सदृष्टिमें उत्कृष्ट आवाधाका प्रमाण आठ (८) है । पश्चात् एक समय अधिक आवाधाकाण्डकसे हीन उत्कृष्ट स्थितिके बाधनेपर यह अन्य अतुल्य स्थानविकल्प होता है—२४० - (३० + १) = २०९ । इस क्रमसे दो आवाधाकाण्डकसे हीन उत्कृष्ट स्थितिके बाधनेपर यह गय्य अतुल्य स्थिति-विकल्प होता है—२४० - ६० = १८० । इस प्रकार इसी क्रमसे एक समय कम दो

एवमेव कमेण समञ्जण विसमञ्जणादिकमेण गिरतग्हाणाणि उत्पादेद्व्वाणि जाव सम-
 ऊणावाहकदयम्भहियधुवट्टिदि ति । तिस्रे पमाण सद्धी । ६० । एदमहादो समञ्जण वि-
 समञ्जणादिकमेण वधाविय ओदारद्व्व जाव मवविमुद्धमण्णिपचिदियधुवट्टिदि ति । पुणो
 धुवट्टिदि उधमाणस्म अण्णो अपुणरुत्तट्टिदिवियप्पो होदि । एत्थ धुवट्टिदिपमाण
 मेवकत्तीस । ३१ ।

सपहि एदिस्से हेट्ठा मण्णिपचिदिएसु ट्टिदिधधट्टाणाणि लभन्ति । कुदो ? सव्व
 विसुद्धेण सण्णिपचिदियपञ्चत्तेण उद्धजहण्णट्टिदीण जहण्णट्टिदिसतममाणण धुवट्टिदि ति
 गहणादो । तदो पचिदिएसु ट्टिदिधधट्टाणाणि णत्तियाणि चैव लभन्ति ।

सपहि एदिस्से हेट्ठा उध मोत्तूण ट्टिदिसत घादिय एइदिसु ट्टिदिमनट्टाणपरूवण
 कस्सामो । एत्थ सदिट्ठी—

०१०	०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००
०००	००१०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००
० ०	०१०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००
०००	१०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००
०००	०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००

धुवट्टिदि ति एवकत्तीम । ३१ । एगट्टिदिखडे ति सदिट्ठीण चत्तारि । ४ । उक्कीरणकालो
 चत्तारि । ५ । एव इविय ट्टिदिट्टाणुणत्ति भणिसामो । त जहा—

एगो तसजीयो समञ्जणुक्कीरणहाए अहियधुवट्टिदिमत्तकमेण एइदिएसु पविट्ठो ।

समय कम इत्यादि क्रमसे एव समय कम आयाधावाण्डकसे अधिक धुवस्थिति तक
 निरन्तर स्थानोंको उत्पन्न कराना चाहिये । उसका प्रमाण साट (३०-१=२९, ३ +२९=६०)
 है । इसमेंसे एक समय कम दो समय कम इत्यादि क्रमसे वध कराकर सवविशुद्ध सद्धी
 पचिद्रयको धुवस्थिति तक उतारना चाहिये । पश्चात् धुवस्थितिको पाधनेवाले जीवका
 उभय अपुनरुक्त स्थितिबिचल्य होता है । यहाँ धुवस्थितिका प्रमाण इक्कीस (३१) है ।

अब इसके नीचेके स्थितिबधस्थान सर्वा पचोद्रयोंमें पाये जाते हैं, क्योंकि,
 सवविशुद्ध सद्धी पचोद्रिय पयात्तक जीवके द्वारा बाधी गइ जघ य स्थितिसत्त्व
 समान अघय स्थितिको धुवस्थिति रूपसे ग्रहण किया गया है । इसलिये पचोद्रयोंमें
 स्थितिबधस्थान इतने ही पाये जाते हैं ।

अब इसके नीचेके वधको छोड़कर स्थितिसत्त्वका घात करके एकेद्रियोंमें
 स्थितिसत्त्वस्थानोंकी प्रकृपणा करते हैं । यहा संदष्टि (मू७में दिये) । सदष्टिमें
 धुवस्थितिका प्रमाण ३१, एक स्थितिकाण्डकका प्रमाण ४, और उत्कीरणकालका
 प्रमाण ४ है । इस प्रकार स्थापित करके स्थितिस्थानोंकी उत्पत्तिको कहते हैं । यथा—

एक अरु जीव एक समय कम उत्कीरणकालसे अधिक धुवस्थितिसत्त्वसे

पुणो विदिओ जीवो समऊणुन्कीरणद्वाए अहियसमयाहियधुवड्ढिदीए सह एइदिएसु उववण्णो । तदो अण्णो तदिओ जीवो समऊणुन्कीरणद्वाए अहियदुसमयाहियधुवड्ढिदीए सह एइदिएसु उववण्णो । पुणो चउत्थो जीवो ममऊणुन्कीरणद्वाए अहियतिसमयाहियधुवड्ढिदीए सह एइदिएसु उववण्णो । पुणो अण्णो जीवो समऊणुन्कीरणद्वाए चदुसमयाहियधुवड्ढिदीए च एइदिएसु उववण्णो । एव समऊणुन्कीरणद्वाए एमेगसमयाहियधुवड्ढिदीए च ताव उणादे दव्व जाण ममऊणुन्कीरणद्वाए णगसगलड्ढिदिखड्ढएण च अन्महियउणुड्ढिदीए एइदिएसु पविट्ठो ति । एव पत्तिदोउमस्म असत्तज्जदिभागमेत्तनीया एगममएण एइदिएसु पवेसिदव्वा ।

पुणो एदेसु रूपाहियाड्ढिदिक्कदयमेत्तजीवेषु ड्ढिदिघाद करेमाणेसु धुवड्ढिदीए हेइडा ड्ढिदिसत्तट्ठाणुप्पनीए भण्णमाणए ममऊणुन्कीरणद्वाए अहियउणुड्ढिदीए सह एइदिएसु उप्पण्णेण पढमफालीए पादिदाण उक्कीरणद्वाए पढममओ गलदि । एद ड्ढिदिसत्तट्ठाण पुणरुत्त, धुवड्ढिदीए उनीर समुप्पत्तीदो । पुणो विदियफालिपदिदसमण चेव उक्कीरणद्वाए विदियसमओ गलदि । एद पि पुणरुत्त चेव । एउ' णेद व जाण ड्ढिदिगड्ढयचरिमफालि-मपादिय उक्कीरणद्वाए चरिमसमय धेरदूण ड्ढिदो ति । पुणो एदमेउ' चेव दृविय समऊणु-

एकेन्द्रियोंमें प्रविष्ट हुआ । फिर दूसरा जीव एक समय कम उत्कीरणकालसे अधिक और एक समयसे अधिक ध्रुवस्थितिके साथ एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुआ । उससे अग्य तीसरा जीव एक समय कम उत्कीरणकालसे अधिक और दो समयोंसे अधिक ध्रुवस्थितिके साथ एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुआ । पुन शतुर्थ जीव एक समय कम उत्कीरणकालसे अधिक और तीन समयोंसे अधिक ध्रुवस्थितिके साथ एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुआ । पुन अग्य जीव एक समय कम उत्कीरणकाल और चार समय अधिक ध्रुवस्थितिके साथ एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुआ । इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकाल और एक एक समय अधिक ध्रुवस्थितिके साथ एक समय कम उत्कीरणकाल और एक सम्पूर्ण स्थितिकाण्डकसे अधिक ध्रुवस्थितिके साथ एकेन्द्रियोंमें प्रविष्ट होने तक उत्पन्न कराना चाहिये । इस प्रकार पत्त्योपमके असख्यातवें भाग मात्र जीवोंको एक समयसे एकेन्द्रियोंमें प्रविष्ट कराना चाहिये ।

पुन एक अधिक स्थितिकाण्डक मात्र इन जीवोंके द्वारा स्थितिघात करते रहनेपर ध्रुवस्थितिके नीचे स्थितिसत्त्वस्थानोंकी उत्पत्तिका कथन करते समय एक समय कम उत्कीरणकालसे अधिक ध्रुवस्थितिके साथ एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुए जीवके द्वारा प्रथम फालिके पतित कराये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है । यह स्थितिसत्त्वस्थान पुनरुत्त है, क्योंकि, उसकी ध्रुवस्थितिके ऊपर उत्पत्ति है । पुनः द्वितीय फालिके पतित होनेके समयमें ही उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है । यह भी स्थान पुनरुत्त हा है । इस प्रकार स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिको पतित न कराकर उत्कीरणकालके अन्तिम समयको लेकर स्थित जीव तक ले जाना चाहिये ।

वकीरणद्वाए सगलेगट्टिदिखडएण च अहियधुगट्टिदीए एइदिएसु उप्पणजीवेण पढमफालीए पादिदाए उवकीरणद्वाए पढमसमओ गलदि । एद ट्टिदिसतट्टाण पुणरुत्त होदि, धुवट्टिदीदो अहियत्तादो । विदियफालिपदिदसमए चेव उवकीरणद्वाए विदियसमओ गलदि । एद पि ट्टाण पुणरुत्त चेव । तदियफालिपदिदसमए उवकीरणद्वाए तदियसमओ गलदि । ट्टिदिसतट्टाण पुणरुत्त होदि । एउ णेदव्य जाव अतोमुहुत्तमेत्तट्टिदिउवकीरणसमयाण दुचरिमसमओ ति । पुणो ट्टिदिउवकीरणकालचरिमसमए गलिदे पढमट्टिदिखडयत्स चरिमफाली पददि । एदमपुणरुत्तट्टाण होदि, धुवट्टिदिं पेत्तिरदूण समऊणट्टाणादो ।

पुणो समऊणुवकीरणद्वाए समऊणट्टिदिरुडएण च अहियधुगट्टिदीए सह एइदिएसु उप्पणजीवेण पढमफालीए पादिदाए उवकीरणद्वाए पढमसमओ गलदि । एद ट्टाण पुणरुत्त होदि । विदियफालीए सह उवकीरणद्वाए विदियसमए गलिदे वि पुणरुत्तट्टाण होदि । तदियफालीए सह उवकीरणद्वाए तदियसमए गलिदे वि पुणरुत्तट्टाण होदि । एव णेदव्य जाव समऊणुवकीरणद्वामेत्तफालीओ पदिदाओ ति ।

पुणो ट्टिदिकडयचरिमफालीए पदिदाए उवकीरणद्वाए चरिमसमओ गलदि । एदमपुणरुत्तट्टाण होदि । कुदो ? ट्टिदिकडयचरिमफालीए पदिदाए सेसट्टिदिसत समऊणधुव

फिर इसको इसी प्रकार ही स्थापित करके एक समय कम उत्कीरणकाल और सम्पूर्ण एक स्थितिकाण्डकसे अधिक ध्रुवस्थितिके साथ एकत्रियोंमें उत्पन्न हुए जीवके द्वारा प्रथम फालिके पतित करानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है । यह स्थितिसत्त्वस्थान पुनरुक्त है, क्योंकि, यह ध्रुवस्थितिसे अधिक है । द्वितीय फालिके पतित होनेके समयमें ही उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है । यह भी स्थान पुनरुक्त ही है । तृतीय फालिके पतित होनेके समयमें उत्कीरणकालका तृतीय समय गलता है । इस प्रकार अतमुहृत मात्र स्थितिके उत्कीरणकालके समयोंमें द्विचरम समय तक ले जाना चाहिये । पश्चात् स्थितिउत्कीरणकालके अन्तिम समयके गलनेपर प्रथम स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालि पतित हो चुकती है । यह अपुनरुक्त स्थान है, क्योंकि, ध्रुवस्थितिकी अपेक्षा यह स्थान एक समय कम है ।

पुन एक समय कम उत्कीरणकालसे और एक समय कम स्थितिकाण्डकसे अधिक ध्रुवस्थितिके साथ उत्पन्न हुए जीवके द्वारा प्रथम फालिके पतित करानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है । यह स्थान पुनरुक्त है । द्वितीय फालिके साथ उत्कीरणकालके द्वितीय समयके गलनेपर भी पुनरुक्त स्थान होता है । तृतीय फालिके साथ उत्कीरणकालके तृतीय समयके गलनेपर भी पुनरुक्त स्थान होता है । इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकाल मात्र फालियोंके पतित होने तक ले जाना चाहिये ।

तत्पश्चात् स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके पतित होनेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है । यह अपुनरुक्त स्थान है, क्योंकि, स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके पतित होनेपर शेष स्थितिसत्त्व एक समय कम ध्रुवस्थिति प्रमाण होकर फिर

द्विदिमेन द्वैतुण पुणे उक्तीरणद्वाए चरिमसमए गलिदे उवगयदुममऊणपुत्रिद्विदितादो ।

पुणे तदियर्जावेण समऊणुक्तीरणद्वाए दुरूऊणद्विदिददएण च अन्धीद्वयपुत्रिद्विदि सनक्मिणएण पदमद्विदिददयस्स पदमफालीए अणिदाए उक्तीरणद्वाए पदमसमओ गलिदि । एमो अणुक्कस्मद्विदिदियप्पा पुणरुत्तो होदि । पुणे तेणेव विदियफालीए अणिदाए द्विदिखडयउक्तीरणद्वाए विदियसमओ गलिदि । [एद] द्विदिद्वान पुणरुत्त होदि । तेणेव जीरेण पुणे तम्मेण द्विदिखडयम् तदियफालीण अणिदाए उक्तीरणद्वाए तदियसमओ गलिदि । एवमेदेण कमेण ममऊणुक्तीरणद्वामेत्तसमणसु गलिदेसु त्तितियमेताओ चैव फालीओ पदति पुणरुत्तद्वानाणि ७ उप्पज्जति । पुणे एदेणेण त्रैवेण पदमद्विदिखडयस्स चरिमुक्तीरण-समएण सह चरिमफालीए अणिदाए अपुणरुत्तद्वान हादि । कुदो ? सैसद्विदिमतकम्मस्स ति रूणधुवद्विदिपमाणत्तदमणो ।

* पुणे चउत्थजीवेण समऊणुक्तीरणद्वाए तिरूऊणद्विदिददएण अद्वियधुवद्विदि-सनक्मिणएण पदमद्विदिददयस्स पदमफालीण अणिदाए उक्तीरणद्वाए पदमसमओ गलिदि, पुणरुत्तद्विदिद्वानमुप्पज्जति । पुणे तेणेव तस्स विदियफालीण अणिदाए उक्तीरण-द्वाए तदियसमओ गलिदि । एद पि द्वान पुणरुत्तमेण । एव समऊणुक्तीरणद्वामेत्तपुणरुत्त-

उक्तीरणकालके अंतिम समयके गल जानेपर दो समय कम ध्रुवस्थिति पायी जाती है ।

पुन एक समय कम उक्तीरणकाल और दो रूप कम स्थितिकाण्डकसे अधिक ध्रुवस्थितिमत्त्व संयुक्त तत्ताय जीवके द्वारा प्रथम स्थितिकाण्डक समग्र ही प्रथम फालिके अलग करनेपर उक्तीरणकालका प्रथम समय गन्ता है । यह अनुदृष्ट स्थितिविकल्प पुनरुक्त है । पश्चात् उसी जीवके द्वारा द्वितीय फालिके अलग करनेपर स्थितिकाण्डक उक्तीरणकालका द्वितीय समय गलता है । यह स्थितिस्थान पुनरुक्त है । उक्त जानेने द्वारा फिरसे उसी स्थितिकाण्डककी तासरा फालिके अलग किये जानेपर उक्तीरणकालका तीसरा समय गलता है । इस प्रकार इस क्रमसे एक समय कम उक्तीरणकाल प्रमाण समयके गल जानेपर उतनी ही फालिया पतित होती हैं और पुनरुक्त स्थान उत्पन्न होने हैं । पश्चात् इसी जीवके द्वारा प्रथम स्थितिकाण्डकके अंतिम समयके साथ अंतिम फालिके अलग किये जानेपर अपुनरुक्त स्थान होता है, क्योंकि, शेष स्थितिमत्त्व तीन रूपोंसे हीन ध्रुवस्थिति प्रमाण देखा जाता है ।

पुन अनुध जीवके द्वारा एक समय कम उक्तीरणकालसे और तीन समय कम स्थितिकाण्डकसे अधिक ध्रुवस्थितिसंस्कारमिक होकर प्रथम स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके अलग किये जानेपर उक्तीरणकालका प्रथम समय गलता है और पुनरुक्त स्थितिस्थान उत्पन्न होता है । पश्चात् उसी जीवके द्वारा उक्त स्थितिकाण्डककी द्वितीय फालिके अलग किये जानेपर उक्तीरणकालका सुताय समय गलता है । यह भी स्थान पुनरुक्त हा है । इस प्रकार एक समय कम उक्तीरणकाल प्रमाण पुनरुक्त

द्विपारेसु उपपण्येसु पुणो पढमद्विदिकदयस्स चरिमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए चरिम-
समओ गलदि । ताये अपुणरुत्तद्विपणमुप्पज्जदि । कुदो ? घादिदसेसद्विदिसत्कम्मस्स चदु-
रूणधुवद्विदिपमाणत्तपलमादो । एवमेदेण कमेण द्विदिसदयमेत्तअपुणरुत्तद्विपणाणि उप्पादिय
पुणो उक्कीरणदाए चरिमममएण सह चरिमफालिं धेरदूण द्विदर्यवेण चरिमफालीए अव
णिदाए अणमपुणरुत्तद्विपण होदि । कुदो ? घादिदसेसद्विदिसत्कम्मस्स रूवाहियद्विदिखडएणूण-
धुवद्विदिपमाणत्तदसणादो । एव कदे रूवाहियद्विदिखडयमेत्ताणि चेत्त अपुणरुत्तद्विपणाणि
लद्धाणि हवति । घादिदसेसद्विदिसत्कम्म पेविखदूण पढमद्विदिसदय घादिय
द्विदिसेसुत्तकम्मद्विदिसत्कम्म द्विदिकदयमेत्तेण अहिय होदि । पुणो एव द्विदिसत्कम्म-
द्विपणाणि निदियद्विदिकदयमस्मिदूण अपुणरुत्तद्विपणुर्पत्ति वत्तइस्सामो । त जहा— एगेग-
समउत्तरकमेण द्विदिसत्त धेरदूण द्विदर्यवेण अहियकदयमेत्तजीवेसु सव्वनहण्णाद्विदिसत्कम्म-
एण निदियद्विदिसदयस्स पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए पढमममओ गलदि ।
ताये अपुणरुत्तद्विपण उप्पज्जदि, पुव्विल्लद्विदिसत्कम्मादो एदस्स द्विदिसत्कम्मस्स सम-
ऊणत्तदसणादो । पुणो एदेणेत्त निदियफालीए अण्णिदाए उक्कीरणद्धाए निदियसमओ
गलदि । एदं पि अपुणरुत्तद्विपण होदि । एव समऊणुत्तद्विपणमेत्तफालीओ पादिय सम-

स्थानोंके उत्पन्न होनेपर पुन प्रथम स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है । तब अपुनरुत्त स्थान उत्पन्न होता है, क्योंकि, उस समय घातनेसे शेष रहा स्थितिसत्त्वमें चार रूपोंसे कम ध्रुवस्थिति प्रमाण पाया जाता है । इस प्रकार इस क्रमसे स्थितिकाण्डक प्रमाण अपुनरुत्त स्थानोंको उत्पन्न कराके पश्चात् उत्कीरणकालके अन्तिम समयके साथ अन्तिम फालिको लेकर स्थित जीवके द्वारा अन्तिम फालिके अलग किये जानेपर अब अपुनरुत्त स्थान होता है, क्योंकि, घातनेसे शेष रहा स्थितिसत्त्वमें एक अधिक स्थितिकाण्डकसे हीन ध्रुवस्थिति प्रमाण देखा जाता है । ऐसा करनेपर एक अधिक स्थितिकाण्डक बराबर ही अपुनरुत्त स्थान प्राप्त होते हैं । घातनसे शेष रहे समस्त जघाय स्थितिसत्त्वमेंकी अपेक्षा प्रथम स्थितिकाण्डकका घान करके स्थापित किया हुआ शेष उत्कृष्ट स्थितिसत्त्वमें स्थितिकाण्डक मात्रसे अधिक होता है ।

अब इस प्रकारसे स्थितिसत्त्वमेंस्थानोंके द्वितीय स्थितिकाण्डकका आश्रय करके अपुनरुत्त स्थानोंकी उत्पत्तिको कहते हैं । यथा—एक एक समयकी अधिकताके क्रमसे स्थिति सत्त्वको लेकर स्थित एक अधिक स्थितिकाण्डक मात्र जीवोंमेंसे सवजघायस्थितिसत्त्व मेंके जीवके द्वारा द्वितीय स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है । उस समय अपुनरुत्त स्थान उत्पन्न होता है, क्योंकि, पूर्वके स्थितिसत्त्वमेंकी अपेक्षा यह स्थितिसत्त्वमें एक समय कम देखा जाता है । फिर इसी जीवके द्वारा द्वितीय फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है । यह भी अपुनरुत्त स्थान होता है । इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकाल

ऊष्णकीरणद्वामत्ताणि चैव अपुनरुत्तद्वाणाणि उत्पादेदध्वाणि । पुणो उक्कीरणद्वाए चरिम समएण विदियद्विदिसखडयचरिमफालिं घेरदूण द्विद जीवमेन चैन द्वनिय पुणो एदेसु जीविसु सव्वुक्कस्सद्विदिसतकम्मिण विदियद्विदिसखडयस्स पढमफालीए अवणिदाए पढमसमओ गलदि । एद ठाण पुणरुत्त होदि । विदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए विदिय समओ गलदि । एद पि पुणरुत्तमेव । एव समऊष्णकीरणद्वामेत्तफालीओ जाव पदति ताव पुणरुत्ताणि चैव द्वाणाणि उत्पज्जति । पुणो एदेणेन विदियद्विदिसखडयस्स चरिम फालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए चरिमममओ गलदि । एदमपुणरुत्तद्वाण होदि । कुदो ? पुध्व ठविदणागदद्विदिसतकम्म पेविसदूण एदस्स द्विदिसतम्मस्स समऊणत्त-दसणादे । पुणो एदम्हादे विदियजीवेण विदियद्विदिसखडयस्स पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए पढमसमओ गलदि । एद पुणरुत्तद्वाण होदि । विदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए विदियममओ गलदि । एद पि पुणरुत्तमेव । एव समऊष्णकीरणद्वा-मेत्तफालीसु पदमाणियासु पुणरुत्ताणि चैव द्वाणाणि उत्पज्जति । पुणो एदेणेव विदिय द्विदिसखडयस्स चरिमफालीए पादिदाए उक्कीरणद्वाए चरिमममओ गलदि । एव

प्रमाण फालियोंके अलग करके एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण ही अपुनरुत्त स्थानोंको उत्पन्न कराना चाहिये । पश्चात् उत्कीरणकालके अन्तिम समयमें द्वितीय स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालियोंके लेखर स्थित जीवको इसी प्रकार स्थापित करके फिर इन जीवोंमेंसे सर्वोत्तम स्थितिसत्कमिक जीवके द्वारा द्वितीय स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके अलग किये जानेपर प्रथम समय गलता है । यह स्थान पुनरुत्त है । द्वितीय फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है । यह भी स्थान पुनरुत्त ही है । इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण फालिया जव तक अलग होती हैं तब तक पुनरुत्त ही स्थान उत्पन्न होते हैं । फिर इसी जीवके द्वारा द्वितीय स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है । यह अपुनरुत्त स्थान है, क्योंकि, पहिले स्थापित करके बाये हुए स्थितिसत्कमकी अपेक्षा यह स्थिति सत्कम एक समय कम देखा जाता है ।

तपश्चात् इस जीवकी अपेक्षा द्वितीय जीवके द्वारा द्वितीय स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है । यह पुनरुत्त स्थान होता है । द्वितीय फालिके प्रिघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है । यह भी स्थान पुनरुत्त ही है । इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण फालियोंके अलग होने तक पुनरुत्त ही स्थान उत्पन्न होते हैं । पश्चात् इसी जीवके द्वारा द्वितीय स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है । इस प्रकार अन्तिम समयके

[चरिमममए] गलिदे एदमपुणरुत्तङ्गाण होदि, चरिमफालीए पादिदाए पुञ्चिद्विदिसतेण सेसद्विदिसत समाण' होदूण पुणो उक्कीरणद्वाए चरिमसमए गलिदे ततो समऊण होदि चि। एदमत्थपद उरि सच्चत्थ वत्तव ।

पुणो ततो तदियजीवेण विदियद्विदिसत्तङ्गयस्स पढमफालीए अण्णिदाए उक्कीरणद्वाए पढमममओ गलिदि । गलिदे पुणरुत्तङ्गाण होदि । विदियफालीए अण्णिदाए उक्कीरणद्वाए विदियसमओ गलिदि । एद पि पुणरुत्तङ्गाण होदि । पुणो तदियफालीए अण्णिदाए उक्कीरणद्वाए तदियसमओ गलिदि । एद पि पुणरुत्तङ्गाण होदि । एव समऊणुक्कीरणद्वामेत्तफालीओ जाव पदति ताव पुणरुत्तङ्गाणाणि चेव उप्पज्जन्ति । पुणो एदेणेव चरिमफालीए अण्णिदाए उक्कीरणद्वाए चरिमसमओ गलिदि । एदमपुणरुत्तङ्गाण होदि । कुदो ? चरिमफालीए पादिदाए पुञ्चिद्विदिसतकम्मणेण सरिसत्त पत्तस्म सेसद्विदिसतकम्मस्से उक्कीरणद्वाए चरिमसमयगलणेण समऊणत्तदसणादो ।

पुणो ततो चउत्थजीवेण विदियद्विदिकदयस्स पढमफालीए अण्णिदाए उक्कीरणद्वाए पढमसमओ गलिदि । विदियफालीए अण्णिदाए उक्कीरणद्वाए [विदियसमओ गलिदि । पुणो तदियफालीए अण्णिदाए उक्कीरणद्वाए] तदियसमओ गलिदि । एद पि पुणरुत्तङ्गाण होदि ।

गलनेपर यह अपुनरुत्त स्थान होता है, क्योंकि, अन्तिम फालिके अलग होनेपर पूर्वोक्त जीवके स्थितिसत्त्वसे शेष स्थितिसत्त्व समान हो करके पश्चात् उत्कीरणकालके अन्तिम समयके गलनेपर उससे एक समय कम हो जाता है । यह अथपद आगे सय अगह कहना चाहिये ।

तत्पश्चात् उससे तीसरे जीवके द्वारा द्वितीय स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है । उसके गलनेपर पुनरुत्त स्थान होता है । द्वितीय फालिके नष्ट होनेपर उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है । यह भी पुनरुत्त स्थान है । फिर तृतीय फालिके नष्ट होनेपर उत्कीरणकालका तृतीय समय गलता है । यह भी पुनरुत्त स्थान है । इस प्रकार जब तक एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण फालिया पतित होती हैं तब तक पुनरुत्त स्थान ही उत्पन्न होते हैं । पश्चात् इसी जीवके द्वारा अन्तिम फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है । यह अपुनरुत्त स्थान है, क्योंकि, अन्तिम फालिके पतित होनेपर पहिले जीवके स्थितिसत्त्वसे समानताको प्राप्त हुआ शेष स्थितिसत्त्वके उत्कीरणकालके अन्तिम समयके गलनेसे एक समय कम देखा जाता है ।

पुन उसमे चतुर्थ जीवके द्वारा द्वितीय स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है । द्वितीय फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका [द्वितीय समय गलता है । पश्चात् तृतीय फालिके विघटित

१ प्रतिपु 'सेगीद्विदिसतसमाण' इति पाठ । २ प्रतिपु 'अरिणत्त' वि तस्सेसद्विदिसतकम्मस्स', चापत्ते अरिणत्त पण्णद्विदिसतकम्मस्स' इति पाठ ।

समऊणुक्कीरणद्धामेतफालीओ जाव पदति ताव पुणरुत्ताणि चेव द्वाणाणि उपपज्जति ।
 पुणो चरिमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए चरिमसमओ गलदि । एदमपुणरुत्तद्वाण
 होदि । कुदो ? चरिमफालीए अवणिदाए पुत्रिल्लद्विदिमतक्रमेण सरिसत्तमुणगयस्स
 अट्टिदिस्सत्तक्रमस्स उक्कीरणद्धाचरिमसमयगलणेण समऊणत्तदसणादो । एवमेदेष कमेण
 द्विदिक्कदयमेत्ताणि समऊणुक्कीरणद्धाए अट्टियाणि अपुणरुत्तद्विदिसत्तद्वाणाणि उप्पाइय
 पुणो पच्छा पुत्रिल्लद्विदिजीवादो अपुणरुत्तद्वाणुप्पती वत्तव्या । त जहा — तेण
 पुग्घागिरुद्धजीवेण चरिमफालीए अवणिदाए चरिमसमओ गलदि । एदमपुणरुत्तद्वाण होदि ।
 कुदो ? चरिमफालीए पदिदाए पुत्रिल्लद्विदिमतक्रमेण सरिसत्तमुणगयस्स द्विदिसत्तक्रमस्स
 अट्टिदिगलणेण समऊणत्तदसणादो । एव विदियपरिवाडी गदा ।

सपहि तदियपरिवाडिं वत्तइस्सामो । त जहा — एदेषु रूपाहियद्विदिक्कदयमेत्त
 जीवेषु सव्वनदहणद्विदिसत्तक्रमेण तदियद्विदिक्कदयस्स पदमफालीए अवणिदाए उक्की
 रणद्धाए पदमममओ गलदि । एदमपुणरुत्तद्वाण होदि, अधद्विदिगलणेण पुत्रिल्लद्विदि
 पडुच्च समऊणत्तदसणादो । चरिमफालिं मोत्तूण सेसफालीहिंतो णापुणरुत्तद्वाण' उपपज्जदि,

विद्ये जानेपर उत्कीरणकालका] तृतीय समय गलता है । यह भी पुनरुत्त स्थान होता
 है । इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण फालिया जत्र तक पतित होती
 है तत्र तक पुनरुत्त स्थान ही उत्पन्न होने हैं । पश्चात् अन्तिम फालिके अलग विद्ये
 जानेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है । यह अपुनरुत्त स्थान होता है,
 क्योंकि, अन्तिम फालिके विघटित होनेपर पूज स्थितिसत्कर्मसे समानताको प्राप्त हुआ
 दोष स्थितिसत्कर्म उत्कीरणकाल समग्रही अन्तिम समयके गलनेसे एक समय कम
 देखा जाता है । इस प्रकार इस मामले स्थितिकाण्डक प्रमाण व एक समय कम
 उत्कीरणकालसे अधिक अपुनरुत्त स्थितिसत्कर्मस्वान्तोको उत्पन्न कराकर फिर पश्चात्
 पहिले स्थापित जीवकी अपेक्षा अपुनरुत्त स्थानोकी उत्पत्ति कही जाती है । यथा—
 एक विधक्षित पूर्व जीवके द्वारा अन्तिम फालिके विघटित किये जानेपर अन्तिम समय
 गलता है । यह अपुनरुत्त स्थान है, क्योंकि, अन्तिम फालिके विघटित होनेपर
 पहिलेके स्थितिसत्कर्मसे समानताको प्राप्त हुआ स्थितिसत्कर्म अध स्थितिके गलनेसे
 एक समय देखा जाता है । इस प्रकार द्वितीय परिपाटी समाप्त हुई ।

अथ तृतीय परिपाटीको कहते हैं । यथा— इन एक अधिक स्थितिकाण्डक
 प्रमाण जीवोमेंसे सर्वत्रयस्थितिसत्कर्मिक जीवके द्वारा तृतीय स्थितिकाण्डककी
 प्रथम फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है । यह
 अपुनरुत्त स्थान है, क्योंकि, अध स्थितिके गलनेसे पूर्वोक्त स्थितिकी अपेक्षा यह स्थिति
 एक समय कम देखा जाती है । अन्तिम फालिका छेद दोष फालियोसे अपुनरुत्त

तत्थ द्वितीयमायामसस घादाभावादो । पुणो तेणेव त्रिदियफालीए अवणिदाए उक्कीरण
द्वाए विदियममओ गलदि । एदमपुणरुत्तद्वाण होदि । तदियफालीए अवणिदाए उक्की
रणद्वाए तदियसमओ गलदि । एद अपुणरुत्तद्वाण होदि । एउ समऊणुक्कीरणद्वामेत्ताणि
चेव द्वाणाणि अपुणरुत्ताणि उप्पादेदद्वाणि ।

पुणो उक्कीरणद्वाचरिममएण द्विदिदयचरिमफालिं तथा चेउ दृविव पुणो
एदेसु अप्पिदजीवेसु सञ्चुस्सरमद्विदिमतकम्मियजीवेण तदियोद्विदिदयपढमफालीए अणि
दाए उक्कीरणद्वाए पढमममओ गलदि । एद पुणरुत्तद्वाण होदि । विदियफालीए
अवणिदाए उक्कीरणद्वाए त्रिदियसमओ गलदि । एद पि पुणरुत्तद्वाण । तदियफालीए
अवणिदाए उक्कीरणद्वाए तदियसमओ गलदि । एद पि पुणरुत्तद्वाण होदि । एव
समऊणुक्कीरणद्वामेत्ताणि पुणरुत्तद्वाणाणि गच्छति । पुणो तदियद्विदिदयसस चरिम-
फालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए चरिमममओ गलदि । एदमपुणरुत्तद्वाण होदि । कुदो ?
चरिमफालीए अणिदाए सेसद्विदिमतकम्मस पुच्चिल्लद्विदिमतकम्मेण मरिमत्त पत्तस
अचद्विदिगलणेण समऊणत्तदसणादो ।

पुणो एउम्हादो विदियजीवेण तदियोद्विदिदयसस पढमफालीए अवणिदाए उक्की

स्थान नहीं उत्पन्न होता, क्योंकि, उनमें स्थितियोंके आयामका घात सम्भव नहीं है।
पश्चात् उसी जीवके द्वारा द्वितीय फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका
द्वितीय समय गलता है। यह अपुनरुत्त स्थान है। तृतीय फालिके अलग होनेपर
उत्कीरणकालका तृतीय समय गलता है। यह अपुनरुत्त स्थान है। इस प्रकार
एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण ही अपुनरुत्त स्थानोंको उत्पन्न कराना चाहिये।

अथ उत्कीरणकालके अन्तिम समयमें स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके
उन्नी प्रकार स्थापित करके फिर इन विघटित जीवोंमेंसे सर्वोत्तमस्थितिसत्कर्मिक
जीवके द्वारा तृतीय स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके विघटित किये जानेपर
उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है। यह पुनरुत्त स्थान है। द्वितीय फालिके
विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है। यह भी पुनरुत्त
स्थान है। तृतीय फालिके विघटित होनेपर उत्कीरणकालका तृतीय समय गलता है।
यह भी पुनरुत्त स्थान है। इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकालके बराबर पुनरुत्त
स्थान जाते हैं। पश्चात् तृतीय स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके विघटित होनेपर
उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है। यह अपुनरुत्त स्थान है, क्योंकि,
अन्तिम फालिके विघटित होनेपर दोष स्थितिसत्कर्म पूरके स्थितिसत्कर्मसे समानताको
प्राप्त स्थितिसत्कर्म अथ स्थितिके गलनेसे एक समय कम देखा जाता है।

तत्पश्चात् इसने दूसरे जीवके द्वारा तृतीय स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके

रणद्वाए [पहमसमभो गलदि । एद पुणरुत्तद्वाण होदि । विदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए] विदियसमभो गलदि । एद पि पुणरुत्तद्वाण होदि । तदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए तदियसमभो गलदि । एद पि पुणरुत्तद्वाण होदि । एव समज पुक्कीरणद्वामेत्तेसु पुणरुत्तद्वाणेषु । पुणो एदेणव तदियद्विदिस्वडयस्म चरिमफालीए अणणिदाए उक्कीरणद्वाए चरिमसमभो गलदि । एदमपुणरुत्तद्वाण होदि ।

पुणो तदियनीवेण तदियद्विदिस्वडयस्स पहमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए पहमसमभो गलदि । एद पुणरुत्तद्वाण होदि । पुणो विदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए विदियसमभो गलदि । एद पि पुणरुत्तद्वाण होदि । एदेणव तदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए तदियसमभो गलदि । एद पि पुणरुत्त होदि । एव समजपुक्कीरणद्वा मेत्तेसु पुणरुत्तद्वाणेषु गदेसु तदे तदियकदयचरिमफालीए अणणिदाए उक्कीरणद्वाए चरिमसमभो गलदि । एदमपुणरुत्तद्वाण होदि । कारण सुगम ।

पुणो चउत्थनीवेण तदियद्विदिस्वडयस्स पहमफालीए [अणणिदाए] पहमसमभो गलदि । एद पुणरुत्तद्वाण होदि । विदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए विदियसमभो गलदि । एद पि पुणरुत्तद्वाण होदि । तदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए तदियसमभो गलदि । एद

अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका [प्रथम समय गलता है । यह पुनरुक्त स्थान है । द्वितीय फालिके विघटित होनेपर उत्कीरणकालका] द्वितीय समय गलता है । यह भी पुनरुक्त स्थान है । तृतीय फालिके अलग होनेपर उत्कीरणकालका तृतीय समय गलता है । यह भी पुनरुक्त स्थान है । यहाँ कम एक समय कम उत्कीरण काल प्रमाण पुनरुक्त स्थानोंमें चाट्ट रहता है । पश्चात् इसी जीवके द्वारा तृतीय स्थितिकाण्डककी अंतिम फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका अंतिम समय गलता है । यह अपुनरुक्त स्थान है ।

पुन तृतीय जीवके द्वारा तृतीय स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है । यह पुनरुक्त स्थान है । पश्चात् द्वितीय फालिके विघटित होनेपर उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है । यह भी पुनरुक्त स्थान है । इसी जीवके द्वारा तृतीय फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका तृतीय समय गलता है । यह भी पुनरुक्त स्थान है । इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण पुनरुक्त स्थानोंके धितनेपर फिर तृतीय स्थितिकाण्डककी अंतिम फालिके विघटित होनेपर उत्कीरणकालका अंतिम समय गलता है । यह अपुनरुक्त स्थान है । इसका कारण सुगम है ।

तत्पश्चात् चतुर्थे जीवके द्वारा तृतीय स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है । यह पुनरुक्त स्थान है । द्वितीय फालिके विघटित होनेपर उत्कीरण कालका द्वितीय समय गलता है । यह भी पुनरुक्त स्थान है । तृतीय फालिके

पि' पुणरुत्तद्वाण होदि । एव तात्र पुणरुत्तद्वाणाणि उण्यज्जति जाय समज्जणुक्कीरणद्वा-
मेत्तफालीओ पदिदाओ ति । पुणो चरिमफालीए [अणिदाए] उक्कीरणद्वाए चरिमसमओ
गलदि । एदमपुणरुत्तद्वाण होदि । कारण सुगम । एव जाणिदूण रूवणुक्कीरणद्वाए
अहियइदिदिसडमेत्तद्वाणाणि [णेदव्याणि] । पुणो अतिमजीवेण पुच्च अणिदूणागदचरिम-
फालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए चरिमसमओ गलदि । एदमपुणरुत्तद्वाण होदि । एव
तदियपरिवाही परूविदा । एव धुवडिदीदो समुप्पज्जमाणपलिदोवमस्स असखेज्जदि
भागमेत्तद्दिदिसडयाणि अरिसदूण णिरतरद्वाणपरूणा कादव्या ।

सपदि सपुणुक्कीरणद्वाए एगडिदिसडएण च अहियएइदियडिदिषधमेत्तद्दि-
सतकम्मिण पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए एगो समओ गलदि । एदमपुणरुत्त-
द्वाण होदि । विदियफालीए अणिदाण उक्कीरणद्वाए विदियसमओ गलदि । एद पि
अपुणरुत्तद्वाण होदि । तदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए तदियसमओ गलदि ।
एद पि अपुणरुत्तद्वाण होदि । एव रूवणुक्कीरणद्वामेत्तसु अपुणरुत्तद्वाणेसु समुप्पणेषु ।
एदमेव चेव इविय पुणो एदेसु णिरुद्धजीवेसु सव्वुक्कस्मडिदिसतकम्मिण अपिद
डिदिसडयस्स पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए पढमसमओ गलदि । एद पुणरुत्त-

विघटित होनेपर उत्कीरणकालका तृतीय समय गलता है । यह भी पुनरुक्त स्थान है ।
इस प्रकार तब तक पुनरुक्त स्थान उत्पन्न होते हैं जब तक एक समय कम
उत्कीरणका प्रमाण फालिया विघटित नहीं हो जाती । पश्चात् अन्तिम फालिके
[विघटित होनेपर] उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है । यह अपुनरुक्त
स्थान है । इसका कारण सुगम है । इस प्रकार जानकर एक कम उत्कीरणकालसे
अधिक स्थितिकाण्डक प्रमाण स्थानोंको [ले जाना चाहिये] । तत्पश्चात् अन्तिम जीवके
द्वारा पूर्वमे स्थापित करके आर्यो हुइ अन्तिम फालिके विघटित किये जानेपर
उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है । यह अपुनरुक्त स्थान है । इस प्रकार तृतीय
परिपाटीको प्ररूपणा की है । इस प्रकार ध्रुवस्थितिसे उत्पन्न होनेवाले पत्योपमके
असत्यातये भाग मात्र स्थितिकाण्डका आश्रय करके निरन्तर स्थानोंकी प्ररूपणा
करना चाहिये ।

अथ सम्पूर्ण उत्कीरणकालसे और एक स्थितिकाण्डकसे अधिक एकीद्रय
स्थितियधके बराबर स्थितिसत्कर्म युक्त जीवके द्वारा प्रथम फालिके विघटित किये
जानेपर उत्कीरणकालका एक समय गलता है । यह अपुनरुक्त स्थान है । द्वितीय
फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है । यह भी
अपुनरुक्त स्थान है । तृतीय फालिके विघटित होनेपर उत्कीरणकालका तृतीय समय
गलता है । यह भी अपुनरुक्त स्थान है । यही क्रम एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण
अपुनरुक्त स्थानोंके उत्पन्न होन तक चालू रहता है । अब इसे योंही स्थापित करके
पश्चात् इन विवक्षित जीवोंसे सर्वोत्कृष्टस्थितिसत्कर्मिक जीवके द्वारा विवक्षित
स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय

ज्ञान होदि । एदेण उचिदियफालीण अणिदाए उक्कीरणद्धाए उचिदियसमओ गल्दि । एद पि पुणरुत्तद्वाण होदि । तदियफालीण अणिदाए उक्कीरणद्धाए तदियसमओ गल्दि । एद पि पुणरुत्तद्वाण होदि । एव ममऊणुक्कीरणद्धामत्तेसु पुणरुत्तद्वाणेषु गेदेसु । पुणे अपिदद्विदिग्गडयस्स चरिमफालीण अणिदाए उक्कीरणद्धाए चरिमसमओ गल्दि । एदमपुणरुत्तद्वाण होदि, चरिमफालीण गणाए पुत्रिलअपुणरुत्तद्विदिसतेण समाणत्तमुय-गयस्स द्विदिग्गडयस्स अपिदद्विदिग्गडयस्स ततो समऊणत्तदमणादे ।

पुणे उचिदियचारेण पदमफालीण अणिदाए उक्कीरणद्धाए पदमसमओ गल्दि । उचिदियफालीण अणिदाए तिससे उचिदियसमओ गल्दि । तदियफालीण अणिदाए तदियसमओ गल्दि । एउ ममऊणुक्कीरणद्धामत्तसु पुणरुत्तद्वाणेषु गेदेसु चरिमफालीण अणिदाए उक्कीरणद्धाए चरिमसमओ गल्दि । एदमपुणरुत्तद्वाण होदि । कारण पुत्रव व गत्तव ।

पुणे तदियचारेण पदमफालीण अणिदाए उक्कीरणद्धाए पदमसमओ गल्दि । उचिदियफालीण अणिदाए तिससे उचिदियसमओ गल्दि । तदियफालीण अणिदाए तिससे उचिदियसमओ गल्दि । एउ दुममयूणउक्कीरणद्धामत्तेसु पुणरुत्तद्वाणेषु गेदेसु पुणे एदेण

गल्ता है । यह पुनरुक्त स्थान है । इसा जीवक द्वारा द्वितीय फालिक विघटित किये जानपर उत्कीरणकालका द्वितीय समय गल्ता है । यह भी पुनरुक्त स्थान है । तृतीय फालिक विघटित होनेपर उत्कीरणकालका तृतीय समय गल्ता है । यह भी पुनरुक्त स्थान है । यही क्रम एउ समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण पुनरुक्त स्थानोंके धीतने तक चालू रहता है । फिर विरश्चिन स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके विघटित होनेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गल्ता है । यह अपुनरुक्त स्थान है, क्योंकि, अन्तिम फालिके धीतनेपर पूर्वके अपुनरुक्त स्थितिसमय समानताको प्राप्त हुआ यह स्थितिसमय अथ स्थितिके गल्नेसे उसकी अपेक्षा एक समय कम देमा जाता है ।

तत्पश्चात् द्वितीय जायके द्वारा प्रथम फालिके विघटित किये जानपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गल्ता है । द्वितीय फालिके विघटित होनेपर उसका द्वितीय समय गल्ता है । तृतीय फालिके विघटित होनेपर उसका तृतीय समय गल्ता है । इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण पुनरुक्त स्थानोंके धीतनेपर अथ अन्तिम फालिके विघटित की जाता है तब उत्कीरणकालका अन्तिम समय गल्ता है । यह अपुनरुक्त स्थान है । इसके कारणका कथन पहिलेक हा समान करता चाहिये ।

पुन तृतीय जायके द्वारा प्रथम फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गल्ता है । द्वितीय फालिके विघटित किये जानेपर उसका द्वितीय समय गल्ता है । तृतीय फालिके विघटित किये जानेपर उसका तृतीय समय गल्ता है । इस प्रकार दो समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण पुनरुक्त स्थानोंके धीतनेपर फिर

चरिमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए चरिमममओ गलदि । एदमपुणरुत्तहाण होदि । कारण सुगम ।

पुणो चउत्तयजीवेण पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए पढमसमओ गलदि । एदे पुणरुत्तहाण होदि । विदियाण फालीए अवणिदाए तिससे विदियसमओ गलदि । तदि-याए अवणिदाए तिससे उदियसमओ गलदि । एदेणेन कमेण रूवूणुक्कीरणद्वामेत्तसु पुणरुत्तहाणेसु उप्पण्णेसु पुण पच्छा एदेणेव चरिमफालीए पादिदाए उक्कीरणद्वाए चरिमसमओ गलदि । एदमपुणरुत्तहाण होदि । कारण सुगम ।

एव पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागमेत्तजीवे अस्मिद्दण रूवूणुक्कीरणद्वाए अहिय-कदयमेत्तअपुणरुत्तहाणाणि उप्पाइय पुणो पुव्विल्लतिमद्विदजीवमस्सिदण अपुणरुत्त-हाणुप्पत्तिं यत्तइस्सामो । त जहा— अतिमजीवेण अपिद्विद्विदिराडयस्स चरिमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए चरिमसमओ गलदि ज सेसमेइदियउक्कस्मद्विदिसत्तकम्म होदि । एदमपुणरुत्तहाण, पुव्वमणुप्पणत्तादे । एत्थ एइदियद्विदी णाम सदिद्वीए दो

इसी जीवके द्वारा अतिम फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका अतिम समय गलता है । यह अपुनरुक्त स्थान है । इसका कारण सुगम है ।

पुन चतुथ जीवके द्वारा प्रथम फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है । यह पुनरुक्त स्थान है । द्वितीय फालिके विघटित होनेपर उसका द्वितीय समय गलता है । तृतीय फालिके विघटित होनेपर उसका तृतीय समय गलता है । इसी क्रमसे एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण पुनरुक्त स्थानोंके उत्पन्न हो जानेपर फिर पीछे इसी जीवके द्वारा अतिम फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका अतिम समय गलता है । यह अपुनरुक्त स्थान है । इसका कारण सुगम है ।

इस प्रकार पट्योपमके असख्यातवें भाग प्रमाण जीवोंके आश्रयसे एक कम उत्कीरणकालसे अधिक स्थितिकाण्डक प्रमाण अपुनरुक्त स्थानोंको उत्पन्न कराके फिर पूर्वमें स्थापित अतिम जीवका आश्रय करके अपुनरुक्त स्थानोंकी उत्पत्तिका कथन करते हैं । यथा— अतिम जीवके द्वारा विघटित स्थितिकाण्डककी अतिम फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका अतिम समय गलता है जो कि एके भ्रियकी उत्पत्ति स्थितिमें शेष होता है । यह अपुनरुक्त स्थान है, क्योंकि, उसकी उत्पत्ति पूर्वमें नहीं हुई है । यहा सद्यपिमें (मूलमें देविये) एकेट्रियस्थितिके लिये दो

विद्, अद्रेण पुण सागरोपमम् तिण्णि सत्तमागा । पुणो एदग्हादो द्विदि
 सतादो एइत्थिय वधमम्मिदूण अपुनरुस्सट्ठिदिधियप्पा उप्पादेदव्वा । त
 जहा— वादरे इदियपज्जत्तएण समउणुनकरस्सट्ठिदीए पनद्धाए नग्गम
 पुणरुत्तद्वाण होदि दुसमऊणाए पनद्धाए अण्णमपुणरुत्तद्वाण होदि । निग्ग
 ऊणाए पनद्धाए अण्णमपुणरुत्तद्वाण होदि । एव चदु पचममऊणादिकमेण ओदारोदध्व वा
 वादरेइदियपज्जत्तएण मव्विसुद्रेण वद्धजहण्णमतसमाणाद्विदि ति ।

सपहि एइदिएसु लद्धमच्चद्वाणाणि पल्लिदारमस्स अमखेज्जदिभागमेत्ताणि चेव ।
 कुदो ? तत्थ वीचारद्वाणाणि पल्लिदारमस्स अमखेज्जदिभागमेत्ताणि चेव होति ति सुक्ख
 देसादो । पुणो एदिस्से द्विदीए हेट्ठा खण्णसेट्ठिमस्सिदूण अण्णाणि अतोमुहुत्तद्वाणाणि
 रुम्मति । त जहा— एगो जीवा खण्णमेट्ठि चडिय अणियट्ठिखण्णो जादा ।
 तदो अणियट्ठिअद्धाए सखेज्जेसु भागेसु गदेसु अमण्णिद्विदिधयेण सरिस सतकम्म
 कुणदि । पुणो अतोमुहुत्त गतूण चट्ठुरिदियद्विदिधयेण सरिस सतकम्म कुणदि । पुणो
 अतोमुहुत्त गतूण तेइदियद्विदिधयेण मणिस सतकम्म कुणदि । तदो अतोमुहुत्त
 गतूण वेइदियद्विदिधयेण सणिस द्विदिमतकम्म कुणदि । तदो अतोमुहुत्त गतूण एइदियद्विदि

विद्दु हैं, जो कालकी अपेक्षा सागरोपमके तीन घटे सात भाग (३) के सूक्ष्म
 हैं । इस स्थितिसत्त्वसे एकेन्द्रियके स्थितिपथका आश्रय करके अनुत्पृष्ट स्थिति
 विकल्पोंको उत्पन्न करना चाहिये । यथा— वादर एकेन्द्रिय जीवके द्वारा एक
 समय कम उत्पृष्ट स्थितिके बाधनेपर अन्य अपुनरुत्त स्थान होता है ।
 दो समय कम उत्पृष्ट स्थितिके बाधनेपर अन्य अपुनरुत्त स्थान होता है ।
 तीन समय कम उत्पृष्ट स्थितिके बाधनेपर अन्य अपुनरुत्त स्थान होता है ।
 इस प्रकार चार-पाच आदि समयोंकी हीनताके क्रमसे सबविशुद्ध वादर एकेन्द्रिय
 पयात्तक जीवके द्वारा बाधी यह पचय स्थितिके सत्य समान स्थितिके
 हान तक उतारना चाहिये ।

अथ एकेन्द्रियोंमें प्राप्त सत्य स्थान पल्लोपमक असख्यातवें भाग मात्र ही हैं,
 क्योंकि " उनमें वीचारस्थ ज पल्लोपमके अमख्यानमें भाग मात्र ही होते हैं " ऐसा पुरखा
 उपदेश है । इस स्थितिके नाश प्रपक्खेणिका जात्रय करके अथ अतमुहत्त मात्र
 स्थान प्राप्त होने हैं । यथा— एक जीव प्रपक्खेणिएर आरूढ होकर अनियुत्तिकरण क्षपक
 हुआ । पश्चात् अनियुत्तिकरणका सत्यान यह भ्रमोंके धीतनेपर यह अमही जीवक
 स्थितिवर्धके समान स्थितिसत्त्वको करता है । तत्पश्चात् अतमुहत्त काल विताकर
 चतुरिन्द्रियक स्थितिवर्धके समान स्थितिसत्त्वको करता है । पश्चात् अतमुहत्त काल
 विताकर यह त्रीन्द्रिय जीवके स्थितिवर्धके समान स्थितिसत्त्वको करता है । पश्चात्
 अतमुहत्त का जाकर यह द्वीन्द्रिय जीवके स्थितिवर्धके समान स्थितिसत्त्वको करता
 है । तत्पश्चात् अतमुहत्तक धीतनेपर एकेन्द्रिय जीवके स्थितिवर्धके समान स्थिति

वधेण सरिस द्विदिसतरुम्भ कुणादि । एवमेदाणि स्ववगसेडिम्हि भणिदूणागदस चद्विदिसत-
कम्मद्वानाणि पुणरुताणि चेत् एद्विदियजहण्णवध पेक्खिदूण एदासिं द्विदीण बहुचुवलमादो ।

पुणो णद्विदियद्विदिसतरुम्भमि पलिद्वोवमस्स सखेज्जदिभागमेत्तद्विदियवडय
मागाएदि । त जाण पददि ताण अतोमुहुत्तद्वानाणि अधद्विदिगलणेण ल मति । ताणि पुण-
रुताणि, णद्विसु लद्वद्वानेषु पयोसादो । पुणो आगाइदकदयस्स चरिमफालीए पदिदाए
णद्विदियवीचारद्वानोहितो असमेज्जगुणमासरिदूण अण्णमपुणरुत्तद्वान होदि । पुणो विदिय
ममए अण्ण द्विदियवडयमागाएदि । तस्म द्विदियवडयस्म उक्कीरणकालमि एगसमए
गलिदे अण्णमपुणरुत्तद्वान होदि । त्रिदियममए गलिदे त्रिदियमपुणरुत्तद्वान होदि । तदिय-
समए गलिदे तदियमपुणरुत्तगिरतरद्वान होदि । एव गिरतरद्वानाणि ताव लम्भति जाव
उक्कीरणकालद्वचरिमममओ सि । पुणो चरिमफाली पददि । तीए पदिदाए पलिद्वोवमस्स
सखेज्जदिभागमसरियूण अण्णमपुणरुत्तद्वान होदि । पुणो अण्ण द्विदिकदयमागाएदि । तस्स
द्विदिकदयस्स उक्कीरणकालमि एगममए गलिदे अण्णमपुणरुत्तगिरतरद्वान होदि ।
विदियसमए गलिदे अण्णमपुणरुत्तगिरतरद्वान होदि । एव समज्जुक्कीरणद्वामेत्ताणि
अपुणरुत्तगिरतरद्वानाणि लम्भति । पुणो उक्कीरणकालचरिमममए गलिदे चरिमफालि-

सत्यमे करता है। इस प्रकार क्षयकालमें बहकर आये हुए ये सभी स्थितिसत्त्वस्थान
पुनरुक्त ही हैं, क्योंकि, एकेन्द्रिय जीवके जघन यथाचकी अपेक्षा ये स्थितिया बहुत
पार्थी जाती हैं।

पुनः एकेन्द्रियके स्थितिसत्त्वमेंसे पर्योपमके सख्यातर्षे भाग मात्र
स्थितिकाण्डकको ग्रहण करना है। यह जब तक विघटित होता है
तब तक अत्र स्थितिके गलनेसे अत्रमुहूर्त मात्र स्थान प्राप्त होते हैं।
ये पुनरुक्त हैं, क्योंकि, ये एकेन्द्रियमें प्राप्त स्थानोंके अंतगत हैं। परचात्
ग्रहण किये गये स्थितिकाण्डककी अंतिम फालिके विघटित होनेपर एकेन्द्रिय
सम्बन्धी वीचारस्थानोंकी अपेक्षा असख्यातगुणा दृष्टकर दूसरा अपुनरुक्त स्थान
होता है। तत्पश्चात् द्वितीय समयमें दूसरे स्थितिकाण्डककी ग्रहण करता है।
उस स्थितिकाण्डकके उत्कीरणकालमेंसे एक समयके गलनेपर दूसरा अपुनरुक्त
स्थान होता है। द्वितीय समयके गलनेपर तृतीय अपुनरुक्त स्थान होता है।
तृतीय समयके गलनेपर तृतीय अपुनरुक्त निरन्तर स्थान होता है। इस प्रकार
उत्कीरणकालके द्विचरम समय तक निरन्तर स्थान पाये जाते हैं। फिर अंतिम
फालि विघटित होती है। उसके विघटित हो जानेपर पर्योपमके सख्यातर्षे भाग
मात्र अन्तर करके अत्र अपुनरुक्त स्थान होता है। तत्पश्चात् अत्र स्थितिकाण्डकको
ग्रहण करता है। उस स्थितिकाण्डकके उत्कीरणकालमेंसे एक समयके गलनेपर
अन्य अपुनरुक्त निरन्तर स्थान होता है। द्वितीय समयके गलनेपर अन्य अपुनरुक्त
निरन्तर स्थान होता है। इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण
अपुनरुक्त निरन्तर स्थान पाये जाते हैं। पश्चात् उत्कीरणकालके अंतिम समयके

विदुः अद्वेण पुण ० सागरोपमस्स तिण्णि सत्तमागा । पुणो एदम्हादो विदि
 सतादो एइदिय ०० धम्मस्सिदूण अणुत्तस्सिद्विदिवियप्पा उप्पादेद्व्वा । त
 अहा- पादरे १०० इदियपञ्जत्तण्ण समज्जणुत्तस्सिद्विदीए पन्हाए अण्णम
 पुणरुत्तहाण होदि ०००० टुसमज्जणाए पचद्दाए अण्णमपुणरुत्तहाण होदि । तिम
 ज्जाए पचद्दाए अण्णमपुणरुत्तहाण होदि । एव चट्ठ पचसमज्जणादिकमेण ओदारंद्दं व जाव
 पादरेइदियपञ्जत्तएण मच्चविसुद्वेण वद्धत्तहण्णमतममाणद्विदि ति ।

सपदि एइदिएसु लद्धस वद्धानाणि पल्लिदोपमस्स असत्तेज्जदिभागमेत्ताणि चेव ।
 कुदो ? तत्थ वीरारहाणाणि पल्लिदापमस्स जमत्तेज्जदिभागमेत्ताणि चेव होति ति गुरु
 देसादो । पुणो एदिस्से द्विदीए हेहा म्पगमेदिमस्सिदूण अण्णाणि अतोमुहुत्तहाणाणि
 लम्पति । त जहा— एगो जीवो म्पगसेहिं चडिय अणियद्विस्सवणो जादा ।
 तदो अणियद्विस्सवद्दाए सखेज्जेसु भागेषु गदेसु अमण्णिद्विदिवधेण सरिस सत्तम्म
 कुणदि । पुणो अतोमुहुत्त गतूण चट्ठुरिदियद्विदियेण सरिस सत्तम्मं कुणदि । पुणो
 अतोमुहुत्त गतूण तेइदियद्विदिवधेण सरिस सत्तम्म कुणदि । तदो अतोमुहुत्त
 गतूण वेइदियद्विदिवधेण सरिम द्विदिसत्तम्म कुणदि । तदो अतोमुहुत्त गतूण एइदियद्विदि

विदु हैं, जो कालकी अपेक्षा सागरोपमके तीन षटे सात भाग (३) के सूत्रक
 हैं । इस स्थितिसत्त्वमे एकेन्द्रियके स्थितिवधका आश्रय करके अनुकृत स्थिति
 विकल्पोंको उत्पन्न कराना चाहिये । यथा— वादर एकेन्द्रिय जीवके द्वारा एक
 समय कम उत्कृत स्थितिके बाधनेपर अथ अपुनरुक्त स्थान होता है ।
 दो समय कम उत्कृत स्थितिके बाधनेपर अथ अपुनरुक्त स्थान होता है ।
 तीन समय कम उत्कृत स्थितिके बाधनेपर अथ अपुनरुक्त स्थान होता है ।
 इस प्रकार चार-पाच आदि समयोंकी हीनताके प्रमसे सवप्रिशुद्ध वादर एकेन्द्रिय
 पयाप्तक जीवके द्वारा बाधी गद जय य स्थितिके सत्त्व समान स्थितिके
 होने तक उतारना चाहिये ।

अथ एकेन्द्रियोंमें प्राप्त सव स्थान पल्यापमके असत्त्यातवें भाग मात्र हा हैं,
 क्योंकि "उनमें वीचा स्थान पल्यापमके असत्त्यातवें भाग मात्र ही होते ह" ऐसा गुरुका
 उपदेश है । इस स्थितिके नाच क्षपकश्रेणिका आश्रय करके अथ अतमुहुत्त मात्र
 स्थान प्राप्त होने हैं । यथा— एक जय क्षपकश्रेणिकपर आरूढ होकर अनित्युत्तिकरण क्षपक
 द्वारा । पश्चात् अनित्युत्तिकरणकालके सख्यान वष्टभ गोंके वीतनेपर वह असत्ती जीवके
 स्थितिशब्धके समान स्थितिसत्त्वको करता ह । तत्पश्चात् अतमुहुत्त काल वितारकर
 घटुरिन्द्रियके स्थितिय वके समान स्थितिसत्त्वको करता है । पश्चात् अतमुहुत्त काल
 वितारकर वह त्रीन्द्रिय नाचके स्थितिवधके समान स्थितिसत्त्वको करता है । पश्चात्
 अतमुहुत्त काल जाकर वह द्वीन्द्रिय जीवके स्थितिय वके समान स्थितिसत्त्वको करता
 है । तत्पश्चात् अतमुहुत्तके वातनेपर एकेन्द्रिय जीवके स्थितिसत्त्वको करता

अमवेज्जदिभागमेत्ता । विदियाए वि द्विदीए पदरस्स असखेज्जदिभागमेत्ता । एव णेदध्व जाव उक्कस्मिद्धिदि ति ।

सेडिपरूवणा दुविहा— अणतरोवणिधा परपरोवणिधा चेदि । तत्थ अणतरोवणिधाए सादस्स चउट्टाणवधा तिट्टाणवधा जीवा अमादस्म तिट्टाणवधा तिट्टाणवधा च जीवा णाणावरणीयस्म सग सगजहणियाए द्विदीए थोवा । विदियाए द्विदीए विसेसाहिया । केतियमेत्तेण ? पल्लिदोवमस्स असखेज्जदिभागेण खड्दिदेगखड्मेत्तेण । तदियाए द्विदीए जीवा विसेसाहिया । एव विसेसाहिया विसेसाहिया जाव जवमज्ज । तेण पर विसेसहीणा । एव विसेसहीणा विसेसहीणा जाव सागरोपममदपुधत्त । सादस्स विट्टाणवधा जीवा अमादस्स चउट्टाणवधा जीवा णाणावरणीयस्म जहणियाए द्विदीए थोवा । विदियाए द्विदीए जीवा विसेसाहिया । तदियाए द्विदीए जीवा विसेसाहिया । एव विसेसाहिया विसेसाहिया जाव सागरोपमसदपुधत्त । तण पर विसेसहीणा । एव विसेसहीणा विसेसहीणा जाव सादस्स असादस्स [य] उक्कस्मिया द्विदि ति । एवमणतरोवणिधा समत्ता । परपरोवणिधाए सादस्स चउट्टाणवधा तिट्टाणवधा जीवा असादस्स विट्टाणवधा

द्वितीय स्थितिमें भी ये प्रतरके असख्यातवें भाग प्रमाण है । इस प्रकार उक्त स्थिति तक ले जाना चाहिये ।

श्रेणिप्ररूपणा दो प्रकार है - अणतरोपनिधा और परपरोपनिधा । उनमें अणतरोपनिधाकी अपेक्षा सातावेदनीयके चतु स्थानवधक व त्रिस्थानवधक जीव तथा असातावेदनीयके द्विस्थानवधक व त्रिस्थानवधक जीव ज्ञानावरणीयकी अपनी अपनी जघ-य स्थितिमें स्तोत्र है । द्वितीय स्थितिमें उनसे विशेष अधिक हैं । कितने प्रमाणसे अधिक हैं ? पल्लोपमक असरयानत्रै भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे ये एक खण्डसे अधिक हैं । उनसे तृतीय स्थितिमें जीव विशेष अधिक हैं । इस प्रकार ये यद्यमध्य तक विशेष अधिक विशेष अधिक होते गये हैं । उसके भागे ये विशेष हीन हैं । इस प्रकार सागरोपमशतपृथक्त्व तक ये विशेष हीन विशेष हीन हैं । सातावेदनीयके द्विस्थानवधक और असातावेदनीयके चतु स्थानवधक जीव ज्ञानावरणीयकी जघ-य स्थितिमें स्तोत्र है । द्वितीय स्थितिमें उनसे विशेष अधिक जीव हैं । तृतीय स्थितिमें उनसे विशेष अधिक जीव हैं । इस प्रकार सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण स्थिति तक ये उत्तरोत्तर विशेष अधिक विशेष अधिक हैं । इससे आगेकी स्थितिमें ये उत्तरोत्तर विशेष हीन हैं । इस प्रकार साता व असाता वेदनीयकी उक्त स्थिति तक ये विशेष हीन विशेष हीन हैं । इस प्रकार अणतरोपनिधा समाप्त हुए ।

परपरोपनिधाकी अपेक्षा सातावेदनीयके चतु स्थानवधक व त्रिस्थानवधक तथा असातावेदनीयके द्विस्थानवधक व त्रिस्थानवधक जीव ज्ञानावरणीयकी

मेतद्वाणाणि अतिरिदूण अपुणरुतद्वाण उपपज्जन्ति । एव गिरतर सातरकमेण द्वाणाणि ताव
 लम्भन्ति जाय खीणकमायकालस्स सखेज्जा भागा गदा ति । तद्दे म्नीणरसायचीरम
 द्विदिसइयस्स चरिमफानीण पदिदाए म्नीणकमायकालस्स सखेज्जदिभागमेत्ताणि उदय
 कण्ण गिरतरअपुणरुतद्वाणाणि लम्भन्ति ताव खीणकमायचीरममग्गे ति । एत्थ
 खवगसेडीग्घिह लद्धगिरतरद्वाणाणि अतोमुहुत्तमेत्ताणि, रूपुणरकीरणद्ध सखेज्जसहस्सरुवेदि
 गुणिदे खवगसेडीसमुपपण्णमत्तगिरतरद्वाणुपतीदे । सातरद्वाणाणि पुण म्खेज्जाणि चेव,
 खवगसेडीसु सखेज्जाण चेव द्विदियइयाण पदणोरलभादे । सखेज्जपन्दिशोरममेतद्वाणाणि
 ण लद्धाणि । एदेसु अलद्धाणिमु कम्मद्विदिग्घि सोहिदेसु ज मेम तेत्तियमेत्ता जणु
 कस्मद्वाणरियया ।

एदेसिं द्वाणाण सामिणो जे जीवा तमिं छद्दि अणियोगहारेदि परूवण कस्सामो ।
 त जद्दा — एत्थ ताव तमजीने अस्सिदूग मण्णमाणे उदण्णत्त द्वाणे अत्थि जीवा । एव
 णेयव जावुककस्मद्वाण ति । एव परूवणा गदा ।

ओघजहण्णद्वाणे जहण्णेण ण्णो, उवकस्सेण अट्टुत्तरमदजीवा । एव खवगसेडीए
 लद्धसखेद्वानेषु जीवपमाण वन्त्त । मण्णिणपचिंदियमिच्छाइद्विजहण्णद्विदीए जीवा पदरस्स

गलेपर अतिम फालि प्रमाण स्थानोंका अंतर करके अनुसरण स्थान उत्पन्न
 होता है । इस प्रकार निरंतर और सांतर क्रमसे स्थान तब तक पाये जाते
 हैं जब तक क्षीणकपाय गुणस्थानके कालका सख्यात बहुभाग घीतता है । पश्चात्
 क्षीणकपाय ओपके अतिम स्थितिकाण्डकोका अतिम फालिचे विघटित होनेपर
 क्षीणकपायके अतिम समय तक क्षीणकपायकाण्डके सख्यातवें भाग मात्र उदयक्षयसे
 निरंतर अनुसरण स्थान पाये जाते हैं । यहा क्षपकध्रेणिमें प्राप्त निरंतर स्थान
 अन्तर्मुह्यत प्रमाण होते हैं, क्योंकि, एक कम उत्कर्षणकालको सख्यात हजार रूपोंसे
 गुणित करनेपर क्षपकध्रेणिमें उत्पन्न समस्त निरंतर स्थान प्राप्त होते हैं । परन्तु
 सांतर स्थान सख्यात ही हैं, क्योंकि, क्षपकध्रेणिमें सख्यात ही स्थितिकाण्डकोका
 विघटन पाया जाता है । सख्यात पर्योपम प्रमाण स्थान यहाँ नहीं पाये जाते ।
 यहाँ न प्राप्त होनेवाले इन स्थानोंका क्रमस्थितिमेंसे कम कर देनेपर जो दोष रहता
 है उनका अनुत्पष्ट स्थानके विकल्पोंका प्रमाण होता है ।

जो जीव इन स्थानोंके स्वामी हैं उनकी छद्द अनुयोगद्वारोंके द्वारा प्ररूपणा
 करते हैं । यथा — यहा पहिले प्रत जीवोंका माध्य करके प्ररूपणा
 करीपर जघय स्थानमें जीव है । इस प्रकार उदृष्ट स्थान तब ते जाना चाहिये । इस
 प्रकार प्ररूपणा समाप्त हुए ।

ओघ जघय स्थानमें जघयसे एक और उत्कपसे एक सां आठ जीव पाये जाते
 हैं । इस प्रकार क्षपकध्रेणिमें प्राप्त सभी स्थानोंमें जीवोंका प्रमाण बहना चाहिये । सभी
 पधेन्द्रिय निष्पादितकी जघय स्थितिमें जीव प्रतरके अमख्यातवें भाग प्रमाण हैं ।

असखेज्जदिभागमेता । विदियाए वि द्विदीए पदरस्स असखेज्जदिभागमेता । एव जेदध्व जाव उक्कस्सिद्विदि ति ।

सेडिपरूवणा दुविहा— अणतरोवणिधा परपरोवणिधा चेदि । तत्थ अणतरोवणिधाए सादस्स चउट्टाणवधा तिट्टाणवधा तीया अमादस्म विट्टाणवधा तिट्टाणवधा च जीवा णाणावरणीयस्स सग सगनहणियाण द्विदीए थोवा । विदियाए द्विदीए विसेसाहिया । केतियमेत्तेण ? पत्तिरोमस्म असखेज्जदिभागेण खड्दिगखड्मेत्तेण । तदियाए द्विदीए जीवा विसेसाहिया । एव विसेसाहिया विसेसाहिया जाव जवमज्झ । तेण पर विसेसहीणा । एव विसेसहीणा विसेसहीणा जाव सागरोपममदपुधत । सादस्म विट्टाणवधा जीवा असादस्स चउट्टाणवधा जीवा णाणावरणीयस्स जहणियाए द्विदीए थोवा । विदियाए द्विदीए जीवा विसेसाहिया । तदियाए द्विदीए जीवा विसेसाहिया । एव विसेसाहिया विसेसाहिया जाव सागरोपममदपुधत । तेण पर विसेसहीणा । एव विसेसहीणा विसेस हीणा जाव सादस्स असादस्स [य] उक्कस्मिया द्विदि ति । एवमणतरोवणिधा समत्ता । परपरोवणिधाए सादस्म चउट्टाणवधा तिट्टाणवधा जीवा असादस्स विट्टाणवधा

द्वितीय स्थितिमें भी वे प्रतरके असख्यातयें भाग प्रमाण हैं । इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति तक ले जाना चाहिये ।

धेनिप्ररूपणा दो प्रकार है— अनतरोपनिधा और परंपरोपनिधा । उनमें अनतरोपनिधाकी अपेक्षा सातावेदनीयके चतु स्थानध धक व त्रिस्थानध धक जीव तथा असातावेदनीयके द्विस्थानधधक व त्रिस्थानध धक जीव ज्ञानावरणीयकी अपनी अपनी जघय स्थितिमें स्तोत्र हैं । द्वितीय स्थितिमें उनसे विशेष अधिक है । कितने प्रमाणसे अधिक हैं ? पत्त्योपमके असख्यातयें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे व एक खण्डस अधिक हैं । उनसे तृतीय स्थितिमें जीव विशेष अधिक हैं । इस प्रकार वे यथमध्य तक विशेष अधिक विशेष अधिक होते गये हैं । उसके भाग वे विशेष हीन हैं । इस प्रकार सागरोपमशतपृथक्त्व तक वे विशेष हीन विशेष हीन हैं । सातावेदनीयके द्विस्थानधधक और असातावेदनीयके चतु स्थानधधक जीव ज्ञानावरणीयकी जघ य स्थितिमें स्तोत्र हैं । द्वितीय स्थितिमें उनसे विशेष अधिक जीव हैं । तृतीय स्थितिमें उनसे विशेष अधिक जीव हैं । इस प्रकार सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण स्थिति तक वे उत्तरोत्तर विशेष अधिक विशेष अधिक हैं । इससे भागकी स्थितिमें वे उत्तरोत्तर विशेष हीन हैं । इस प्रकार साता व असाता वेदनीयकी उत्कृष्ट स्थिति तक वे विशेष हीन विशेष हीन हैं । इस प्रकार अनतरोपनिधा समाप्त हुए ।

परंपरोपनिधाकी अपेक्षा सातावेदनीयके चतु स्थानध धक व त्रिस्थानधधक तथा असातावेदनीयके द्विस्थानध धक व त्रिस्थानधधक जीव ज्ञानावरणीयकी

विद्यावधा जीवा पाणापरणीयस्म जहणियाण द्विदीए जीवेहितो तदो पलिदोवमस्म असलेज्जदिभाग गतूण दुगुणवद्विदा जाव जयमञ्ज । नेण पर पलिदोवमस्म असलेज्जदि भाग गतूण दुगुणहीणा । एव दुगुणहीणा दुगुणहीणा जाव मागरोवममदपुवत्त । मादस्म विद्यावधा जीवा जसादस्म चउट्टाणवधा जीवा पाणापरणीयस्म जहणियाण द्विदीए जीवेहितो तदो पलिदोवमस्म असलेज्जदिभाग गतूण दुगुणवद्विदा । एव दुगुणवद्विदा दुगुणवद्विदा जाव मागरोवममदपुवत्त । तण पर पलिदोवमस्म असलेज्जदिभाग गतूण दुगुणहीणा । एव दुगुणहीणा दुगुणहीणा तत्र सादस्म अमादस्म य उन्नकस्मिया द्विदि ति । एयजीवदुगुणवद्विदाणि द्वाणिट्ठाणतरममपेज्जाणि पलिदोवमममूलाणि । पाणाजीवदुगुणवद्विदाणि द्वाणिट्ठाणतराणि पलिदोवमममूलास्म असलेज्जदिभागो । पाणाजीवदुगुणवद्विदाणि द्वाणिट्ठाणतराणि थोराणि । एयजीवदुगुणवद्विदाणि द्वाणिट्ठाणतरममपेज्जगुण । एव परपराणिधा समता ।

जहणियाणपीवपमाणेण सञ्जवीना केवचिरेण कालेण अरीहिरिज्जति ? असलेज्ज गुणद्वानिट्ठाणनेरेण कालेण अरीहिरिज्जति । विदियट्ठाणपीवपमाणेण सुच्चरीना असलेज्ज गुणद्वानिमत्तेण कालेण अरीहिरिज्जति । एव पेदव्य जाव जयमञ्जे ति । जयमञ्जे जीवपमाणेण सञ्जवीना केवचिरेण कालेण अरीहिरिज्जति ? किंचूणतिण्णिगुणद्वानिट्ठाण

जघ-य स्थितिके जीवोंकी अपेक्षा उन्मस पदोपमके असख्यातयें भाग जाकर यथमज्य तक दुगुणी वृद्धिको प्राप्त है । उसके भाग पदोपमके असख्यातयें भाग जाकर ये दुगुणी हानिको प्राप्त हैं । इस प्रकार सागरोपमशतपृथक्त्व तक ये दुगुणे हीन दुगुणे हीन हैं । मानावेदनायके डिस्थानव-घक जीव और असातावेदनीयक चतु स्थान व-घक जाव ज्ञानापरणीयकी जघ-य स्थिति सप्र-धा जीवोंकी अपेक्षा उनमें पदोपमके असख्यातयें भाग जाकर दुगुणी वृद्धिको प्राप्त होते हैं । इस प्रकार सागरोपमशतपृथक्त्व तक ये दुगुणी दुगुणी वृद्धिको प्राप्त होते गये हैं । इससे भागे पदोपमके असख्यातयें भाग जाकर ये दुगुणी हानिको प्राप्त हैं । इस प्रकार साता व असाता वेदनीयकी जट्टए स्थिति तक ये दुगुणे-दुगुणे हीन हैं । एकजीवदुगुणवृद्धि-हानिस्थानानांतर पदोपमके असख्यात घगमूल प्रमाण है । नानाजीवदुगुणवृद्धि-हानिस्थानानांतर पदोपमके धर्ममूलाके असख्यातयें भाग प्रमाण हैं । नानाजीवदुगुणवृद्धि हानिस्थाना तर स्तोत्र है । एकजीवदुगुणवृद्धि हानि स्थानाना तर उनसे असख्यातगुणा है । इस प्रकार परम्परोपनिधा समाप्त हुई ।

जघ-य स्थान सम्बन्धी जीवोंके प्रमाणसे ममस्त जीव कितने कालसे जघ हत होते हैं ? उक्त प्रमाणसे ये असख्यात गुणहानिस्थानानांतरकालसे अपहृत होते हैं । द्वितीय स्थान सम्बन्धी जीवोंके प्रमाणसे ये ममस्त जीव असख्यात गुणहानि मात्र कालसे अपहृत होने हैं । इस प्रकार यजमध्य तक ले जाना चाहिये । यथ मध्यके जीवोंके प्रमाणसे सब जीव कितने काल द्वारा अपहृत होते हैं ? कुछ कम

१ शत्रिपु ' दुगुणवद्विदाए' शति पाठ ।

तरेण कालेण अरुहिरिज्जति । एव जमज्झादो उररिं पि जाणिदूण वत्तव्व । एवमवहार-
परूवणा गदा ।

जहण्णए द्वाणे जीवा सच्चद्वान्णजीवाण केवडिओ भागो ? असखेज्जदिभागो । एव
सच्चद्वान्णजीवाण जाणिदूण भागाभागपरूवणा कायव्वा ।

सच्चत्थेया जवमज्झाण उदकस्सए द्वाणे जीवा । जहण्णए द्वाणे जीवा अस-
खेज्जगुणा । गुणगारो पटिदोवमस्स असखेज्जदिभागो । जवमज्झजीवा असखेज्जगुणा ।
को गुणगारो ? जवमज्झादो हेट्ठिमअण्णेण्णम्मत्थरासी । जमज्झादो हेट्ठिमजहण्णद्वाण-
जीवेहिंती उवरिमसच्चजीवा असखेज्जगुणा । को गुणगारो ? किंचूणदिवड्ड [गुणहाणीओ]
गुणगारो । जमज्झादो हेट्ठिमजीवा विसेसाहिया । जवमज्झादो उवरिमजीवा विसेसाहिया ।
सच्चजीवा विसेसाहिया । जममप्पावहुगपरूवणा गदा ।

एवमेइदिय विगलिंदियाण पि परूवेद्वव पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागमेत्तएइदिय
वीचारद्वाणेषु तस्सेव मखेज्जदिभागमेत्तविगलिंदियवीचारद्वाणेषु च । णवरि सादासादाण
निद्वाणजवमज्झ चेव, तत्थ तिद्वाण चउद्वाणाणुमागाण घधाभावादो । किंतु सण्णिगिं-
दियगुणहाणिसलागाहिंती तत्थतणगुणहाणिमलागाओ असखेज्जगुणहीणाओ सखेज्जगुणहीणाओ

तान गुणहानिस्थानान्तरकालसे वे अवहत होते हैं । इसी प्रकार यद्यमध्येके भागे
भी जानकर कहना चाहिये । इस प्रकार अवहारपरूपणा समाप्त हुई ।

जघय स्थानमें स्थित जीव सब जीवोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं । वे उनके
असत्यातयें भाग प्रमाण हैं । इस प्रकार सब स्थानोंके जीवोंको जानकर भागा
भागकी प्ररूपणा करना चाहिये ।

यद्यमध्येके उत्कृष्ट स्थानमें जीव सबसे स्तोकाह । उनसे जघय स्थानमें
जीव असत्यातगुणे हैं । गुणकार पर्योपमका अवत्यातया भाग है । उनसे यद्यमध्य
के जीव असत्यातगुण हैं । गुणकार क्या है ? यद्यमध्येसे नीचेकी अयोप्याभ्यस्त
राशि गुणकार है । यद्यमध्येसे नीचेके जघय स्थान सम्बन्धी जीवोंकी अपेक्षा
ऊपरके सब जीव असत्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? गुणकार कुछ कम डेढ़
गुणहानिया हैं । यद्यमध्येसे नीचेके जीव उनसे विशेष अधिक हैं । उनसे यद्यमध्य
के उपरिम जीव विशेष अधिक हैं । उनसे सब जीव विशेष अधिक हैं । इस प्रकार
अवहारपरूपणा समाप्त हुई ।

इसी प्रकार पर्योपमके असत्यातयें भाग मात्र एकेन्द्रियके वीचारस्थानोंमें
और उसके ही असत्यातयें भाग प्रमाण त्रिकलेन्द्रियके वीचारस्थानोंमें एकेन्द्रिय
एव त्रिकलेन्द्रिय जीवोंकी भी प्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि
साता च असाता वेदनीयके द्विस्थानसम्बन्धी यद्यमध्य ही है, क्योंकि, घहा
त्रिस्थान और चतु स्थान अनुभागोंका यद्य नहीं होता । किंतु सभी
पंचेन्द्रियकी गुणहानिशलाकाओंसे घहाकी गुणहानिशलाकायें असत्यातगुणी हीन

च । प्रमाण पुण एइदिया अणता । सण्णिपंचिदियधुउडिदीदो हेडिमाण असण्णिपंचिदिय-
उक्कस्सडिदीदो उवरिमाण सतट्ठाणण जीवसमुदाहारो कादु ण सन्निकज्जदे, उपदेसामावाशो ।

एवं छपणं कम्माण ॥ १० ॥

जहा णाणावरणीयस्म उक्कस्साणुक्कस्ससामित्त परूविद तहा समच्छकम्माण
परूवेदव्व । णवरि मोहणीयस्स उक्कस्सडिदी सत्तरिसागरोवमकोडाकोडिमेता । अणुक्कस्स
सामित्ते भण्णमाणे सण्णिपंचिदियमिच्छाडडिप्पहुडि जाय चरिमममयसुहुममापराइयो ताव
सामिणो ति उत्तव्व । णामा गोदाण उक्कस्सडिदी वीसमागरोवमकोडाकोडिमेता । एदमि
मणुक्कस्सडिदिसामित्ते भण्णमाणे मण्णिपंचिदियमिच्छाडडिप्पहुडि जाय चरिमसमयअज्जाणि
ति वत्तव्व । एव वेयणीयस्म नि परूवणा कायव्वा । णवरि उक्कस्सडिदी तीम
सागरोवमकोडाकोडिमेता ।

सामित्तेण उक्कस्सपदे आजअवेयणा कालदो उक्कस्सिया
कस्स ? ॥ ११ ॥

सुगम ।

य सव्वातगुणी हीन हैं । प्रमाण— एके त्रय जीव अन त हैं । सहा पचिद्रयका
धुवस्थितिसे नीचेके और असरी पचेद्रियकी उत्कृष्ट स्थितिसे ऊपरके सत्यस्थानोंका
जीवसमुदाहार करनेके लिये शक्य नहीं है, क्योंकि, उसका उपदेश प्राप्त नहीं है ।

ज्ञानावरणीयके समान ही शेष छह कर्मोंके उत्कृष्ट स्वामित्वकी प्ररूपणा करना
चाहिये ॥ १० ॥

जिस प्रकार ज्ञानावरणाय कर्मके उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट स्वामित्वकी प्ररूपणा
की है उसी प्रकार शर छह कर्मोंका प्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि
मोहनीयकी उत्कृष्ट स्थिति सत्तर कोडाकोडि सागरोवम प्रमाण है । अनुत्कृष्ट स्वामित्व
का कथन करते समय सदा पचे त्रय मिथ्याहासिसे लेकर अन्तिम समयधर्ती सूक्ष्म
साधारणिक तक स्वामी है, ऐसा कहना चाहिये । नाम व गोत्र कर्मकी उत्कृष्ट स्थिति
वीस कोडाकोडि सागरोवम प्रमाण है । इनकी अनुत्कृष्ट स्थितिके स्वामित्वका कथन
करते समय सदा पचे त्रय मिथ्याहासिसे लेकर अन्तिम समयधर्ती भयोगकवली तक
स्वामी है ऐसा कहना चाहिये । इसी प्रकार घेदनीय कर्मकी भी प्ररूपणा कहना चाहिये ।
विशेष इतना है कि उसका उत्कृष्ट स्थिति तीस कोडाकोडि सागरोवम प्रमाण है ।

स्वामित्वकी अपेक्षा उत्कृष्ट पदमे आयुर्कर्मकी वेदना कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट
किसके होनी है ? ॥ ११ ॥

यह सत्य सुगम है ।

अण्णदरस्स मणुस्सस्स वा पंचिदियतिरिक्खजोणियस्स वा सण्णस्स सम्माइट्ठिस्स वा [मिच्छाइट्ठिस्स वा] सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदस्स कम्मभूमियस्स वा कम्मभूमिपडिभागस्स वा संखेज्जवासाउअस्स इत्थिवेदस्स वा पुरिसवेदस्स वा णउंसयवेदस्स वा जलचरस्स वा थलचरस्स वा सागार-जागार-तप्पाओग्गसंकि-लिट्ठस्स वा [तप्पाओग्गविसुद्धस्स वा] उक्कस्सियाए आवाधाए जस्स तं देव णिरयाउअ पढमसमए वधतरस्स आउअवेयणा कालदो उक्कस्सा ॥ १२ ॥

ओगाहण कुल जादि वण्ण विण्णासं सठाणादिभेदेहि विसेसामावपरूवणद्वमण्णदरस्से ति भणिद । देवाणमुक्कस्साउअस्स मणुसा चैव वधया, णेरइयाण उक्कस्साउअस्स मणुसा सण्णपंचिदियतिरिक्खा वा वधया ति जाणावणद्व मणुस्सस्स वा पंचिदिय-तिरिक्खजोणियस्स वा सण्णस्से ति भणिद । देवाण उक्कस्साउअ सम्मादिट्ठिणो चैव वधति, णेरइयाण उक्कस्साउअ मिच्छाइट्ठिणो चैव वधति ति जाणावणद्व सम्मादिट्ठिस्स वा मिच्छाइट्ठिस्स वा ति णिदिद्व । छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदा चैव णेरइयाण उक्कस्साउअ

जो कोई मनुष्य या पचेन्द्रिय तिर्यंच सजी है, सम्यग्दष्टि [अथवा मिथ्यादष्टि] है, सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त है, कर्मभूमि या कर्मभूमिप्रतिभागमे उत्पन्न हुआ है, सख्यात वपकी आयुवाला है, स्त्रीवेद, पुरुषवेद या नपुसकवेदसे संयुक्त है, जलचर अथवा थलचर है, साकार उपयोगसे सहित है, जागरूक है, तत्प्रायोग्य सकलेश [अथवा विशुद्धि] से संयुक्त है, तथा जो उत्कृष्ट आनाधाके साथ देव व नारकियोंकी उत्कृष्ट आयुको धाधनेवाला है, उसके धाधनेके प्रथम समयमें आयु कर्मकी वेदना कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है ॥ १२ ॥

अथगाहना, कुल, जाति, वर्ण, वियास और सख्यान आदिके भेदोंसे निर्मित विशेषताका अभाव घतलानेके लिये सूत्रमें 'अण्णदरस्स' यह कहा है । देवोंकी उत्कृष्ट आयुके वधक मनुष्य ही होते हैं तथा नारकियोंकी उत्कृष्ट आयुके बन्धक मनुष्य अथवा सभी पचेन्द्रिय तिर्यंच होते हैं यह जतलानेके लिये "मणुस्सस्स वा पंचिदिय तिरिक्खजोणियस्स वा सण्णस्स" ऐसा कहा है । देवोंकी उत्कृष्ट आयुको सम्यग्दष्टि ही धाधते हैं तथा नारकियोंकी उत्कृष्ट आयुको मिथ्यादष्टि ही धाधते हैं, यह प्रगट करनके लिये "सम्मादिट्ठिस्स वा मिच्छाइट्ठिस्स वा" ऐसा निर्देश किया गया है । जो छह पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हो चुके हैं वे ही नारकियोंकी उत्कृष्ट आयुको धाधते

वधति त्ति जाणारणद्ध सत्तादि पज्जतीदि पज्जत्तयदस्से त्ति भणिदं । देवाण उक्कस्साउअं पण्णारसकम्मभूमिसु चेव वज्झइ, णेरइयाण उक्कस्साउअं पण्णारसकम्म भूमिसु कम्मभूमिपडिभागोसु च वज्झादि त्ति जाणारणद्ध कम्मभूमियस्स वा कम्मभूमि- पडिभागस्स वा त्ति पखुविद । देव णेरइयाण उक्कस्साउअंमसत्तेज्जवासाउअवतिरिक्खं मणुस्सा ण वधति, सखेज्जवासाउअं चेव वधति त्ति जाणारणद्ध सखेज्जवासाउअंस्से त्ति पखुविद । देव णेरइयाण उक्कस्साउअं वधस्स तीदि वेदेदि विरोहो णत्थि त्ति जाणारणद्ध इरियेदस्स वा पुरिसेवेदस्स वा णवुसयवेदस्स वा त्ति भणिद ।

एतय भाववेदस्स गहणमण्णहा दब्बित्थियेदेण वि णेरइयाणमुक्कस्साउअस्स वधप सगादो । ण च तेण सह तस्स वधो, आ पचमी त्ति सीहा इत्थीओ जति' छट्ठिपुढवि त्ति' एदेण सुत्तेण मह विरोहादो । ण च देवाण उक्कस्साउअं दब्बित्थियेदेण सह वज्झइ, णियमा णिग्गयलिंगेणे त्ति सुत्तेण सह विरोहादो । ण च दब्बित्थीण णिग्गयत्तमत्थि, चेत्तादिपरिच्चाण्ण णिणा तासि भावणिग्गयत्तमावादो । ण च दब्बित्थि-

हैं, यह जतलानेके लिये "सध्यादि पज्जतीदि पज्जत्तयदस्स" यह कहा है। देवोंकी उत्कृष्ट आयु पद्म कर्मभूमियों ही वधती है तथा नारकियोंकी उत्कृष्ट आयु पद्म कर्मभूमियों और कर्मभूमिप्रतिभागोंमें भी बाधी जाती है, यह बतलानाके लिये "कम्मभूमियस्स कम्मभूमिपडिभागस्स वा" ऐसा कहा है। देवों व नारकियोंकी उत्कृष्ट आयुको असवपातपर्यायुक्त नियंत्रण या मनुष्य नहीं बांधते हैं, किंतु सवपात पर्यायुक्त ही बांधते हैं, यह जतलानेके लिये 'सखेज्जवासाउअं' ऐसा निर्देश किया है। देवों व नारकियोंकी उत्कृष्ट आयुके बाधका तानों वेदोंके साथ विरोध नहीं है, यह जतलानके लिये "इरियेवेदस्स वा पुरिसेवेदस्स वा णवुसयवेदस्स वा" ऐसा कहा है।

यहां भाववेदका ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, द्रव्यवेदका ग्रहण करनेपर द्रव्य एवेदके साथ भी नारकियोंकी उत्कृष्ट आयुके बाधका प्रसंग आता है। परन्तु इसके साथ नारकियोंकी उत्कृष्ट आयुका बाध होता नहा है, क्योंकि "पाचर्षी पृथिवी त्वं सिंह और छठी पृथिवी त्वं खिया जाती है" इस सूत्रके साथ विरोध आता है। देवोंकी भी उत्कृष्ट आयु द्रव्य एवेदके साथ नहीं बाधती, क्योंकि, अथवा "अच्युत कल्पसे ऊपर" नियमत निर्गम लिंगसे ही उत्पन्न होते हैं" इस सूत्रके साथ विरोध होता है। और द्रव्य स्त्रियोंके निरप्रयत्ता सम्भव नहीं है, क्योंकि, घत्तादिपरित्यागके बिना उनके माघ निर्गम्यताका सम्भव है। द्रव्य स्त्रावेदी व नपुंसकवेदी यस्त्रादिकका त्याग करके निर्गम लिंग धारण

णवुसयवेदाण चलादिचागो अत्थि, छेदसुत्तेण सह विरोहादो । देवाण उक्कस्साउअस्स मणुस्सा सज्जा यलचारिणो वधया, णेरइयाण उक्कस्साउअस्स यलचारिमणुसमिच्छाइट्ठिणो जल-यलचारिसिण्णिणपचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिणो वा वधया त्ति जाणावणट्ठ जलचरस्स वा यलचरस्स वा त्ति भणिद । खगचारिणो देव णेरइयाण उक्कस्साउअ किण्ण वधति ? ण, पक्खीण सत्तमपुढविणेरइणुसु अणुत्तरविमाणवासियदेवेषु वा उप्पज्जण पडि सत्तीए अमावादो । ण विज्जाइराण खगचरत्तमत्थि, विज्जाए विणा सहापदो चैव गगणगमण-समत्थेषु खगचरत्तप्पसिद्धीदो ।

दसणोवजोगे वट्ठताण उक्कस्साउअवधो ण होदि, किंतु णाणोवजोगे वट्ठताण पवे त्ति जाणावणट्ठ सागारणिहेसो कदो । सुत्ताणमाउअस्स उक्कस्सवधो ण होदि त्ति जाणावणट्ठ जागारणिहेसो कदो । जहा सेसरुम्माण उक्कस्सट्ठिदीभो उक्कस्ससकिलेसेण वज्झति, तहा आउअस्स उक्कस्सट्ठिदी उक्कस्समिसोहीए उक्कस्ससकिलेसेण वा ण वज्झदि त्ति जाणावणट्ठ तप्पाओग्गसकिलिट्ठस्स वा तप्पाओग्गविसुद्धस्स वा त्ति भणिद ।

पर सकते हैं, ऐसी आशका करना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, ऐसा स्वीकार करनेपर छेदसूत्रके साथ विरोध होता है ।

देवीकी उत्कृष्ट आयुके बन्धक स्थलचारी सयत मनुष्य, तथा नारकियोंकी उत्कृष्ट आयुके बन्धक स्थलचारी मिथ्यादृष्टि मनुष्य एवं जलचारी व स्थलचारी सञ्जी पचेन्द्रिय तियथ मिथ्यादृष्टि हैं, इसके क्षापनार्थ "जलचरस्स वा यलचरस्स वा" ऐसा कहा है ।

शका— आकाशचारी जीव देव व नारकियोंकी उत्कृष्ट आयुको क्यों नहीं पाधते हैं ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, पक्षियोंके सप्तम पृथिवीके नारकियों अथवा अनुत्तर विमानवासी देवोंमें उत्पन्न होनेकी सामध्य नहीं है । यदि कहा जाय कि विद्याधर भी तो आकाशचारी हैं, ये वहा उत्पन्न हो सकते हैं; तो ऐसा कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, विद्याकी सहायताके बिना जो स्वभावसे ही आकाशगमनमें समर्थ हैं उनमें ही खगचरवर्षी प्रसिद्धि है ।

दशानोपयोगमें यतमान जीवोंके उत्कृष्ट आयुका बन्ध नहीं होता, किन्तु क्षानोपयोगमें यतमान जीवोंके ही उसका बन्ध होता है, यह जतलानेके लिये 'साकार' पदका निर्देश किया है । सोये हुए जीवोंके उत्कृष्ट आयुका बन्ध नहीं होता, यह बतलानेके लिये 'जागर' पदका प्रयोग किया है । जिस प्रकार शेष कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थितिवा उत्कृष्ट सकलशसे बधती हैं वैसे आयु कर्मकी उत्कृष्ट स्थिति उत्कृष्ट विद्युक्ति अथवा उत्कृष्ट सफलशसे नहीं बधती, यह जतलानेके लिये "तप्पाओग्गसकिलिट्ठस्स वा तप्पाओग्गविसुद्धस्स वा" ऐसा कहा है । उत्कृष्ट आशकाके बिना उत्कृष्ट स्थिति

उक्कस्सायाथाए विणा उक्कस्सट्ठिदी ण हेदि ति जाणावणट्ठ उक्कस्सियाए आयाहाए इदि मणिद । विदियादिसमएसु आयाहा उक्कस्सिया ण हेदि ति पुच्चकोडित्तिभाग मायाह काऊण देव णेरइयाण उक्कस्साउअ पधमाणपढमसमण चेउ उक्कस्साउअवेयणा हेदि ति मणिद ।

तव्वदिरित्तमणुक्कस्सा ॥ १३ ॥

तदो उक्कस्सादो वदिरित्त तव्वदिरित्तु सा अणुक्कस्सा । एमा अणुक्कस्सकालयेयणा असखेज्जवियप्पा । तेण तिस्से सामित्ति पि अमखेज्जवियप्प । त जहा — पुच्चकोडित्तिभाग मायाह काऊण तेतीसमागरोवमाउअ जेण पद्ध सो उक्कस्सकालमामी । जेण समऊण पद्ध सो अणुक्कस्सकालमामी । जेण [दुसमऊण पद्ध सो वि अणुक्कस्सकालमामी । जेण] ति समऊण पद्ध सो वि अणुक्कस्सकालमामी । एवमसखेज्जभागहाणी होदूण ताव गच्छदि जाव जहणपरित्तासरोज्जेण उक्कस्साउट्ठिदि खडिदूण तत्थ एगएड परिहीणो चि । पुणो उक्कस्साउअ उक्कस्ससखेज्जेण सट्ठेदूण तत्थ एगएडपरिहीणे असरोज्जमागहाणीए परिसमती सखेज्जभागहाणीए आदी च हेदि । एउ सखेज्जभागहाणी होदूण ताव गच्छदि जाव उक्कस्साउअस्स अद्ध समऊण परिहीण ति ।

नहीं होती है यह ज्ञापन करानेके लिये 'उक्कस्सियाए आयाहाए' ऐसा कहा है । चूँकि द्वितीयादिक समयमें आयाधा उत्पन्न होती नहीं है, अतः पूर्वकोटिके तृतीय भागको आयाधा करके देवों व नारक्षियोंकी उत्पन्न आयुको यांधनेवाले जीवके वधके प्रथम समयमें ही उत्पन्न आयुवेदना होती है, ऐसा कहा है ।

उससे भिन्न अनुत्कृष्ट वेदना होती है ॥ १३ ॥

उससे अघात उत्पन्नसे विपरीत आयु कर्मकी वेदना कालकी अपेक्षा अनुत्कृष्ट वेदना होती है । यह अनुत्कृष्ट कालवेदना असख्यात भेद स्वरूप है । इसीलिये उसके स्वामा भी असख्य प्रकार हैं । यथा— पूर्वकोटिके तृतीय भागको आयाधा करके तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुको जिसने याधा है वह कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट वेदनाका स्वामी है । जिसने एक समय कम उत्कृष्ट आयुको याधा है वह अनुत्कृष्ट कालवेदनाका स्वामी है । जिसने [दो समय कम उत्कृष्ट आयुको याधा है वह भी अनुत्कृष्ट कालवेदनाका स्वामी है । जिसने] तीन समय कम उत्कृष्ट आयुको याधा है वह भी अनुत्कृष्ट कालवेदनाका स्वामी है । इस प्रकार असख्यातभागहानि होकर तब तक जाती है जब तक जघन्य परित्तासख्यातसे उत्कृष्ट आयुस्थितिको खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण हानि नहीं हो जाती । पश्चात् उत्कृष्ट आयुको उत्कृष्ट सख्यातसे खण्डित करके उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण हानिके ही जानेपर असख्यातभागहानिकी समाप्ति और सख्यातभागहानिका प्रारम्भ होता है । इस प्रकार सख्यातभागहानि होकर तब तक जाती है जब तक उत्कृष्ट आयुका समय कम अर्ध भाग हीन नहीं हो जाता ।

पुणो उक्कस्साथाह काऊण उक्कस्साउअस्स अद्धे पवद्धे सखेज्जगुणहाणी होदि । पुणो समऊणे अद्धे पवद्धे वि सखेज्जगुणहाणी चेव । एव सखेज्जगुणहाणी ताव गच्छदि जाव उक्कस्साउअ जहणपरित्तासत्तेज्जेण खडेदूण तत्थ एगखड रूवहिय सेस ति । एत्तो प्पहुडि असखेज्जगुणहाणी चेव होदूण गच्छदि । एव ताव णेदव्व जाव पुव्वकोडि-तिभागमाथाह काऊण देवेसु दसउस्ससहस्साउअ षधिदूण ट्ठिदो ति । पुणो एदेण आउएण समाणमणुस्साउअ धेत्तूण समऊण दुसमऊणादिकमेण अधिट्ठिदिगलणेण णेदव्व जाव भवसिद्धियचरिमसमओ ति । एव कदे पुव्वकोडिसिमागेण भव्हियसमऊणतेतीस सागरोपममेत्तट्ठाणियप्या सामित्तियप्या च लद्धा ह्वेति ।

सपहि एत्थ जीवसमुदाहारो छहि अणियोगहोरेहि उच्चदे । त जहा — उक्कस्सए ट्ठाने जीवा अत्थि । तदणतरहेट्ठिमट्ठाने वि जीवा अत्थि । एव णेदव्व जाव अणुक्कस्स-पहणट्ठाने ति ।

आउअस्म उक्कस्सए ट्ठाने जीवा असखेज्जा, णेरइयउक्कस्साउअ षधमाण जीवाणमसत्तेज्जाणमुत्तलभादो । एव सन्वत्थ णेदव्व । णवरि एइदियपाओगट्ठानेसु एककेक्केसु जीवा अणता । तत्तो हेट्ठिमेसु खउगसेडीए चेव लम्भमाणेसु सखेज्जा ।

पुन उत्कृष्ट आवाधाको करके उत्कृष्ट आयुके अर्ध भागको बांधनेपर सख्यातगुणहानि होती है । पश्चात् एक समय कम अर्ध भागके बांधनेपर भी सख्यातगुणहानि ही होती है । इस प्रकार सख्यातगुणहानि तब तक जाती है जब तक कि उत्कृष्ट आयुको जघन्य परीतासख्यातसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक अधिक एक खण्ड दोष रहता है । अब यहासे असख्यातगुणहानि ही होकर जाती है । इस प्रकार तब तक ले जाना चाहिये जब तक पूर्वकोटिके तृतीय भागको आवाधा करके देयोंमें दस हजार वर्ष पमाण आयुको बाधकर स्थित नहीं होता ।

पश्चात् इस आयुके समान मनुष्यायुको ग्रहणकर एक समय कम दो समय कम इत्यादि क्रमसे अध स्थितिके गलनेसे भयसिद्धिके अन्तिम समय तक ले जाना चाहिये । ऐसा करनेपर पूर्वकोटिके तृतीय भागसे अधिक व एक समय कम तेनीस सागरोपम प्रमाण स्थानविकल्प और स्वामिरवविकल्प प्राप्त होते हैं ।

अब यहा छह अनुयोगद्वारोंके द्वारा जीवसमुदाहारको कहते हैं । यथा— उत्कृष्ट स्थानमें जीव हैं । उससे अनन्तर नीचेके स्थानमें भी जीव हैं । इस प्रकार अनुत्कृष्ट जघन्य स्थान तक ले जाना चाहिये ।

आयुके उत्कृष्ट स्थानमें असख्यात जीव हैं, क्योंकि, नारकियोंकी उत्कृष्ट आयुको बांधनेवाले असख्यात जीव पाये जाते हैं । इसी प्रकार सब स्थानोंमें जानना चाहिये । विशेषता इतनी है कि पक्षेन्द्रियके योग्य स्थानोंमेंसे एक एक स्थानमें अनन्त जीव हैं । उससे नीचेके क्षपकधेणिममें ही पाये जानेवाले स्थानोंमें सख्यात जीव हैं ।

सेडी न सकदे गेडु, त्रिसिटदुरणसाभावादे ।

उक्कस्मद्धान्जीवपमाणेण सच्चद्धान्जीवा केवडिण्ण कालेण अबहिरेज्जति ? अणत्तेण कालेण । एव तमकाइयपाआगमव्वद्धान्जीवाण वत्तच्च । एइदियपाओग्गद्धान्जीवपमाणेण सच्चजीवा केवचिरेण कालेण अबहिरेज्जति ? अतोमुट्टत्तेण । एव सन्वत्थ गेद्व्व ।

उक्कस्सए द्वाणे जीवा मन्वजीवाण केवडिओ मागो ? अणत्तिममागो । एव तसपाओग्गस वट्टाणिसु वत्तव्व । वणप्फदिपाइयपाओग्गेषु द्वाणिसु सच्चद्धान्जीवाणमसखेज्जदिमागो । एव सन्वत्थ वणप्फदिपाओग्गद्वाणेषु यत्तन्न ।

सन्वत्तोया जहण्णए द्वाणे जीवा । उक्कस्सए द्वाणे जीवा असखेज्जगुणा । अजहण्ण अणुक्कस्सए द्वाणेषु जीवा अणत्तगुणा । अणुक्कस्सए द्वाणे जीवा त्रिसेसाहिया । अजहण्णएदु द्वाणेषु जीवा त्रिसेसाहिया । सच्चेषु द्वाणेषु जीवा त्रिसेसाहिया । एवमुक्कस्ससामित्त समत्त ।

सामित्तेण जहण्णपदे णाणावरणीयवेदणा कालदो जहण्णिया कस्स ? ॥ १४ ॥

धेणिसरूपणा करना शक्य नहीं है, क्योंकि, उनके सध्पन्धमें विशिष्ट उपदेशका अभाव है ।

उत्कृष्ट स्थान सम्बन्धी जीवोंके प्रमाणसे सब स्थानोंके जीव कितने कालके द्वारा अपहृत होते हैं ? उक्त प्रमाणसे ये अनन्त कालके द्वारा अपहृत होते हैं । इसी प्रकार प्रसक्त्यायिक प्रायोग्य सब स्थानोंके जीवोंकी प्ररूपणा करना चाहिये । एकैन्द्रिय प्रायोग्य स्थानों सम्बन्धी जीवोंके प्रमाणसे सब जीव कितने काल द्वारा अपहृत होते हैं ? उक्त प्रमाणसे ये अनन्तमुहूर्त कालके द्वारा अपहृत होते हैं । इसी प्रकार सर्वत्र ले जाना चाहिये ।

उत्कृष्ट स्थानमें जीव सब जीवोंके कितनेचें भाग प्रमाण है ? ये उनके अनन्तवें भाग प्रमाण हैं । इसी प्रकार प्रसक्त प्रायोग्य सब स्थानोंमें कहना चाहिये । घनस्पत्तिक्यायिक प्रायोग्य स्थानोंमें सब स्थानोंके जीवोंके मसख्यातवें भाग प्रमाण है । इसी प्रकार सत्र घनस्पत्तिक्यायिक प्रायोग्य स्थानोंमें कहना चाहिये ।

जघय स्थानमें सबसे स्तोक् जीव हैं । उत्कृष्ट स्थानमें उनसे मसख्यात गुणे जीव हैं । अजघय अनुत्कृष्ट स्थानोंमें जीव उनसे अनन्तगुणे हैं । अनुत्कृष्ट स्थानमें जीव उनसे विशेष अधिक हैं । अजघय स्थानोंमें जीव उनसे विशेष अधिक हैं । सब स्थानोंमें जीव उनसे विशेष अधिक हैं । इस प्रकार उत्कृष्ट स्थानित्त समाप्त हुआ ।

स्वामित्वसे जघम्य पदमें ज्ञानावरणीयकी वेदना कालकी अपेक्षा जघम्य किसके होती है ? ॥ १४ ॥

जहण्णपदे इदि पुच्चुत्तअदियारसमालणद्ध णिदिद्ध । सेसकम्मपडिसेहट्ठो णाणावरणीय-
णिदेसो । कालणिदेसो खेत्तादिपडिसेहफलो । पुच्चाणुपुच्चिकमं मोत्तूणं पच्छाणुपुच्चीए
जहण्णसामित्तपरूवण किमद्ध कीरेदं ? ण, तीहि वि आणुपुच्चीहि परूविदे, दोसो णत्थि
त्ति जाणावणद्ध तद्दापरूवणादो । अपवा, जहण्णट्ठाणादो उक्कस्सट्ठाण सगहिदासेसट्ठाण-
वियप्पत्तादो पहाणमिदि जाणावणद्ध पुच्चमुत्तकस्मट्ठाणपरूवणा कदा । सेस सुगमं ? -

अण्णदरस्स चरिमसमयछदुमत्थस्स तस्स णाणावरणीयवेयणा
कालदो जहण्णा ॥ १५ ॥

भोगाहणादिभेदेदि' जहण्णकालविरोहाभावपरूवणद्धमण्णदरस्से त्ति भणिद । छदुम
णाम आवरण, तन्दि चिट्ठदि त्ति छदुमत्थो, तस्स छदुमत्थस्से त्ति णिदेसेण केवलपिडि-
सेहो कदो । चरिमसमयछदुमत्थस्से त्ति णिदेसो दुचरिमादिछदुमत्थपडिसेहफलो । खीण
कसायदुचरिमसमण किण्ण जहण्णसामित्त दिज्जेदं ? ण, तत्थ णाणावरणीयस्स दुसमइयट्ठिदि-

'जघन्य पदमें' यह निर्देश पूर्वोक्त अधिकारका स्मरण करानेके लिये कहा
है । शेष कर्मोंका प्रतिषेध करनेके लिये 'ज्ञानावरणीय' पदका निर्देश किया है । कालके
निर्देशका प्रयोजन श्रेयादिकोंका प्रतिषेध करना है ।

शुका — पूधानुपूर्वाक्रमको छोड़कर पश्चादानुपूर्वसे जघन्य स्थामित्यकी प्ररूपणा
किसलिये की जा रही है ?

समाधान — नहीं, क्योंकि, तीनों ही आनुपूर्वियोंसे प्ररूपणा करनेपर कोई दोष
नहीं होता, यह जतलानेके लिये यहां पश्चादानुपूर्वाक्रमसे प्ररूपणा की गई है । अथवा
जघन्य स्थानकी अपेक्षा समस्त स्थानभेदोंका समग्रवर्ता होनेसे उत्कृष्ट स्थान प्रघान
है, यह ज्ञात करानेके लिये पहिले उत्कृष्ट स्थानकी प्ररूपणा की गई है ।

शेष कथन सुगम है ।

जो कोई भी जीव छद्मस्थ अवस्थाके अन्तिम समयमें वर्तमान है उसके कालकी
अपेक्षा ज्ञानावरणीय कर्मकी जघन्य वेदना होती है ॥ १५ ॥

अधगाहनादिक भेदोंसे जघन्य कालवेदनके होनेमें कोई विरोध नहीं है,
यह शतलानेके लिये सूत्रमें 'अन्यतर' पदका उपादान किया गया है । छद्म
शब्दका अर्थ आवरण है, उसमें जो स्थित है यह छद्मस्थ कहा जाता है ।
उक्त छद्मस्थका निर्देश करनेसे केषलौका प्रतिषेध किया गया है । 'अन्तिम समय
वर्ती छद्मस्थ' इस निर्देशका फल द्विचरम-विचरम आदि समयोंमें वर्तमान
छद्मस्थोंका प्रतिषेध करना है ।

शुका — क्षीणकषाय गुणस्थानके द्विचरम समयमें जघन्य वेदनाका स्थामित्य
क्यों नहीं दिया जाता है ?

दसणादौ । एव तिचरिमादिछद्रुमत्येसु वि जहण्णसामिनाभावो जाणिदूण वत्तव्वो । तम्हा खीणकसायचरिमसमए एगसमइयद्विदिणाणावरणकम्मरत्तवे जहण्णसामित्त होदि ति घेतव ।

तव्वदिरित्तमजहण्णा ॥ १६ ॥

एदम्हादो ज वदिरित्त तमजहण्णा कालवेयणा होदि । त च अणेययियप्प । तेण तम्भेदपरहूणणादुवारेण तेसिं द्वाणाण सामित्तपरहूणण कस्सामो । त जहा— एणो सवगो कम्माणि परिवाडीए खविय चरिमममयखीणकसाई जादो । तस्स खीणकसायस्स चरिमसमए एगा द्विदी एगममयकालपमाणा अच्छिदा । तस्स णाणावरणीयवेयणा कालदो जहण्णा । एसो जहण्णकालसामी । पुणो अणेगो जीवो पुव्वनिधाणेणागतूण दुचरिमसमय खीणकसाई जादो । सो अजहण्णकालसामी । एद' विदियद्वाण । पुणो अणो जीवो तिचरिमसमयखीणकसाई जादो । एसो वि अजहण्णकालसामी । त तदिय द्वाण । एव चउरयादिकमेण ओदारेदव्व जाव खीणकसायद्वाए सखेज्जदिमागो ति । एदे गिरतरद्वाण सामिणो होति ।

समाधान—नहीं, क्योंकि, वहा ज्ञानावरणीयकी दो समय प्रमाण स्थिति देखी जाती है ।

इसी प्रकार त्रिचरम आदि छद्रुमस्थोमें भी जघन्य वेदनाके स्वामित्यकी अभाव जानकर कहना चाहिये । इसीलिये क्षीणकपायके अन्तिम समयमें ज्ञानावरण कम्मरत्तवकी एक समयवाली स्थिति कुछ जीव जघन्य वेदनाका स्वामी होता है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

जघन्य वेदनासे भिन्न अजघन्य वेदना होती है ॥ १६ ॥

इस जघन्य वेदनासे जो भिन्न है यह कालकी अपेक्षा अजघन्य वेदना है । यह अनेक भेद रूप है । इसलिये उसके भेदोंकी प्ररूपणा करते हुए उन स्थानोंके स्वामित्यकी प्ररूपणा करते हैं । यथा— फेद एक क्षणक परिपाटीसे कर्मोंका क्षण करके क्षाण कपायके अन्तिम समयवर्ती हुआ । उक्त जीवके क्षीणकपाय होनेके अन्तिम समयमें एक समय काल प्रमाण एक स्थिति रहती है । उसके ज्ञानावरणीयकी वेदना कालका अपेक्षा जघन्य होती है । यह जघन्य कालवेदनाका स्वामी है । पुन एक दूसरा जीव पूर्व विधिसे आ करके क्षीणकपायक द्विचरम समयवर्ती हुआ । यह अजघन्य कालवेदनाका स्वामी है । यह द्वितीय स्थान है । पुन एक और जीव क्षीणकपायके त्रिचरम समयवर्ती हुआ । यह भी अजघन्य कालवेदनाका स्वामी है । यह तीसरा स्थान है । इसी प्रकार चतुर्थ पंचम आदिके क्रमसे क्षीणकपाय कालके सख्यातरे भाग तक उतारना चाहिये । ये सब निरन्तर स्थानोंके स्वामी होते हैं ।

पुणो अण्णो जीवो पुव्वविहाणेणागतूण पुव्वणिरुद्धद्विदीए तदणतरहेद्विमखीण कसंई जादो । एद सातरमपुणरुत्तहाण, पुव्विल्लहाण पेन्निवदूण अतोमुहुत्तमेत्तद्विदीदि अतीरदूणुप्पणत्तादो । त कथ णव्वदे ? एत्थ चरिमद्विदिरखडयचरिमफालीए उवळमादो, उवीरमद्विदिमिंम तदणुत्तमादो । णत्तो प्पहुडि हेट्ठा समज्जुण्णकीरणद्वोमेत्तीणरतरद्वोणेषु समुप्पण्णेषु सइ सातरहाणमुप्पज्जदि । कुदो ? अण्णिद अण्णिदद्विदिरखडयस्स चरिमफालि-
मेत्तमतरिदूणुप्पत्तीदो । एवमोदोरेदव्व जाव अणियद्विअट्ठाए सखेज्जदिमागो ति । तत्थ-
तणअणियद्विद्विदिसतादो वादरेइदियपज्जत्तयस्स णाणावरणनहण्णाद्विदिसत विसेसाहिय पत्तिदो-
वमस्म असखेज्जदिमागेण ।

पुणो एदमणियद्विद्विदिसत भोत्तूण वादरेइदियपज्जत्तयस्म जहण्णाद्विदिसत घेत्तूण समउत्तर वद्विदूण पनद्धे गिरतरमण्णमपुणरुत्तहाण उत्पज्जदि । पुणो एद काए वद्वीए वद्विदे ति उत्ते अमखेज्जमागवद्वीए । एदस्म वद्विदसमयस्स आगमणद्व को मागहारो । वादरेइदियधुवद्विदी । कुदो ? वादरेइदियधुवद्विदीए वादरेइदियधुवद्विदिमवहारिय लद्धमेग-

पश्चात् दूसरा एक जीव पुव विधिले आकर पूर्वकी विधिक्षित स्थितिले तदान्तर अघस्सन क्षीणकपायी हुआ । यह सातर अपुनरुत्त स्थान है, क्योंकि, पूर्वके स्थानकी अपेक्षा अतमुहूत मात्र स्थितियोंके अन्तरसे यह स्थान उत्पन्न हुआ है ।

शका—यह कैसे जाता जाता है ?

समाधान—क्योंकि, यहा अन्तिम स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालि पायी जाती है, परन्तु उपरकी स्थितिमें यह नहीं पायी जाती ।

यहासे प्रारम्भ होकर नीचे एक समय कम उत्कीरणकालके परापर निरन्तर स्थानोंके उत्पन्न होनेपर एक घार सातर स्थान उत्पन्न होता है, क्योंकि, विधिक्षित विधिक्षित स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालि प्रमाण अन्तर करके यह उत्पन्न हुआ है । इस प्रकार अनिवृत्तिकरणकालके सख्यातयें भाग तक उतारना चाहिये । यहाके अनिवृत्तिकरणके स्थितिसत्त्वसे वादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवके शान्तावरणका जघय स्थितिसत्त्व पल्लोपमके असख्यातयें भागसे विशेष अधिक है ।

पुन इस अनिवृत्तिकरणके स्थितिसत्त्वको छोड़कर और वादर एकेन्द्रिय पर्याप्तके जघय स्थितिसत्त्वकी ग्रहण करके एक एक समय बढ़कर बाधनेपर दूसरा निरन्तर अपुनरुत्त स्थान उत्पन्न होता है ।

शका—यह कौनसी वृद्धि द्वारा वृद्धिगत हुआ है ?

समाधान—यह असख्यातमागवृद्धिके द्वारा वृद्धिगत हुआ है ।

शका—इस बढ़े हुए समयके निकालनेके लिये भागहार क्या है ?

समाधान—इसके लिये भागहार वादर एकेन्द्रियकी ध्रुवस्थिति है, क्योंकि, वादर एकेन्द्रियकी ध्रुवस्थितिका वादर एकेन्द्रियकी ध्रुवस्थितिमें भाग देनेपर जो एक

समय तन्मि चैव ध्रुवद्विदिं पडिरासिय पक्वित्ते वदमाणत्रद्विष्टाणुष्यतीदो' । दुसमउत्तर वद्विदूण वधमाणस्म वि असखेज्जभागवद्विद्विष्टाण चेर । कुदो ? पुव्विल्लभागहारस्स दुमागेण ध्रुवद्विदीए ओत्रद्विदाए दोण्ण समयाणमागमणदसणादो । तिसमयउत्तर वद्विदूण वधमाणस्म वि असखेज्जभागवद्विदी चेर, ध्रुवद्विदीए तिमागेण ध्रुवद्विदिमोवद्विदे तिण्ण वद्विदसमयाणमागमणदसणादो । चदुममयउत्तर वद्विदूण वधमाणस्स असखेज्जदिमाग-वद्विदी चेर, ध्रुवद्विदीए चदुम्भागेण ध्रुवद्विदीए ओत्रद्विदाए वद्विदचदुरूपाणमागमणदसणादो । एव वादोइदियध्रुवद्विदीए उवरि वादरेइदियध्रुवद्विदीए जत्तियाओ पल्लिदोवमसलागाओ अत्थि, तत्तियमेत्तेसु ममएसु वद्विदेसु वि असखेज्जभागवद्विदी चेर होदि, पल्लिदोवमेण ध्रुवद्विदीए ओत्रद्विदाए वद्विदध्रुवद्विदिपल्लिदोवमसलागमेत्तममयाणमागमणदसणादो । पुणो एगसमय वद्विदूण वधमाणस्स वि असखेज्जभागवद्विदी चेर, किंचूणपल्लिदोवमेण ध्रुवद्विदीए भागे दिदाए रूपाद्वियपल्लिदोवमसलागमेत्तममयाणमागमणदसणादो । ध्रुवद्विदिपल्लिदोवमसला-गासु दुगुणमेत्तासु वद्विदासु वि असखेज्जभागवद्विदी चैव होदि, पल्लिदोवमदुमागेण ध्रुव-द्विदीए ओत्रद्विदाए दुगुणध्रुवद्विदिपल्लिदोवमसलागाणमागमणुरलभादो' । एव पल्लिदोवमगुण

समय लम्ब होता है उसे ध्रुवस्थितिकी प्रतिराशि परके मिला देनेपर वर्तमान वृद्धिका स्थान उत्पन्न होता है ।

उत्तरोत्तर दो दो समय बढ़कर बाघनेवाले जीवके भी असख्यातभागवृद्धि स्थान ही होता है, क्योंकि, पूर्व भागहारके द्वितीय भागका ध्रुवस्थितिमें भाग देनेपर दो समय भावे देखे जाते हैं । उत्तरोत्तर तीन तीन समय बढ़कर बाघनेवाले के भी असख्यातभागवृद्धि ही होती है, क्योंकि, ध्रुवस्थितिके तृतीय भागका ध्रुवस्थितिमें भाग देतेपर वृद्धिगत तीन समयोंकी प्राप्ति देखी जाती है । चार-चार समय उत्तरोत्तर बढ़कर बाघनेवालेके असख्यातभागवृद्धि ही होती है, क्योंकि, ध्रुवस्थितिके चतुर्थ भागका ध्रुवस्थितिमें भाग देनेपर वृद्धिप्राप्त चार रूपोंकी उपलब्धि देखी जाती है । इस प्रकार बादर एकेन्द्रियकी ध्रुवस्थितिके ऊपर बादर एकेन्द्रियकी ध्रुवस्थितिमें जितनी पर्योपमशलाकायें हैं उतने मात्र समयोंकी वृद्धि हो चुकनेपर भी असख्यातभागवृद्धि ही होती है, क्योंकि, पर्योपमका ध्रुव स्थितिमें भाग देनेपर ध्रुवस्थितिकी पर्योपमशलाकाओं प्रमाण वृद्धिगत समयोंकी उप-लब्धि देखी जाती है । तत्पश्चात् एक समयकी वृद्धि होकर बाघनेवालेके भी असख्यातभागवृद्धि ही होती है, क्योंकि, कुछ कम पर्योपमका ध्रुवस्थितिमें भाग देनेपर एक अधिक पर्योपमशलाकाओं प्रमाण समयोंकी उपलब्धि देखी जाती है । ध्रुवस्थितिमें जितनी पर्योपमशलाकायें हैं उनसे हूनी वृद्धिके होनेपर भी अस-ख्यातभागवृद्धि ही होती है, क्योंकि, पर्योपमके अर्ध भागका ध्रुवस्थितिमें भाग देनेपर हूनी ध्रुवस्थितिकी पर्योपमशलाकायें प्राप्त होती हैं । इस प्रकार पर्योपमकी

१ तान्त्री वद्विदूणवद्विद्विष्टाणुष्यतीदो इति पाठ । २ अत्रात्रलो ' मागमुपलमाद्य इति पाठ ।

गारमलागमेत्तपदमवगमूलाणि वृद्धिदूण धधमाणस्म वि असखेज्जमागवृद्धिद्वान् चैव होदि । कुदो ? पलिदोवमवगमूलेण धुवद्विदीए ओवद्विदाए धुवद्विदिपलिदोवमसलागमेत्तपलिदोवमपदमवगमूलाणमागमुपलमादो । एव वादरधुवद्विदीए भागहारो पलिदोवमपिदियवगमूल होदूण, पुणो कमेण हाइदूण तदियवगमूल होदूण, पुणो आवलिय होदूण जाव जहणपरित्तामवेज्ज पत्तो ति ताए वद्विदिद्वो । एव वद्विदे वि असखेज्जमागवृद्धी चैव । कुदो ? जहणपरित्तासखेज्जेण वादरेइदियधुवद्विदीए ओवद्विदाए वृद्धिरूवाणमुवलमादो । वादरेइदियवीचारद्वानाणि पेविसदूण एदे वृद्धिदसमया असखेज्जगुणा होति, पलिदोवमस्स सखेज्जदिमागतादो, आवलियाए असखेज्जदिमागेण पलिदोवमे भागे हिदे वादरेइदियवीचारद्वानाण पमाणुप्पत्तीदो, वादरेइदियउक्कस्सद्विदीए उवरि समउत्तरादि-कमेण धधो ण लम्मदि ति ।

मपहि द्विदिघादमस्मिदूण उवरिमद्वानाणमुप्पत्ती परूवेद्व्या । तं जहा— वादरेइदियउक्कस्सद्विदीदो समउत्तर वादिदूण द्विदे असखेज्जमागवृद्धी होदि । उवरिमद्विदि पुणो वादिदूण वादरेइदियउक्कस्सद्विदिघादो इसमउत्तर कादूण द्विदे तमणमपुणरुत्तमपेज्जमागवृद्धिद्वान् होदि । तिसमउत्तर कादूण द्विदे अणमपुणरुत्त-

गुणकारभूत शलाकाओं प्रमाण पर्योपम प्रथमवर्गमूलोंकी वृद्धि होकर बाधनेवालेके भी असख्यातभागवृद्धिका ही स्थान होता है, क्योंकि पर्योपमके धर्ममूलका ध्रुव स्थितिमें माग देनेपर ध्रुवस्थितिकी पर्योपमशलाकाओं प्रमाण पर्योपम प्रथम वर्गमूलोंकी उपलब्धि पायी जाती है । इस प्रकार वादर एकेन्द्रियकी ध्रुवस्थितिका भागहार पर्योपमका द्वितीय वर्गमूल होकर, फिर क्रमसे हीन होकर तृतीय वर्गमूल होकर, फिर आवली होकर, जब तक जघ य परीतासख्यात प्राप्त नहीं होता तब तक बढ़ाना चाहिये । इस प्रकार भागहारके यदोपर भी असख्यातभागवृद्धि ही होती है, क्योंकि, जघय परीतासख्यातका वादर एकेन्द्रियकी ध्रुवस्थितिमें माग देनेपर वृद्धिप्राप्त अब उपर्युक्त होते हैं । ये वृद्धिगत समय वादर एकेन्द्रियके धीचारास्थानोंकी अपेक्षा असख्यातगुणे हैं, क्योंकि, ये पर्योपमके सख्यातवर्ग भाग प्रमाण हैं, भावनीके असख्यातवर्ग भागका पर्योपममें माग देनेपर वादर एकेन्द्रियके धीचारास्थानोंका प्रमाण उत्पन्न होता है तथा वादर एकेन्द्रियकी उत्पत्ति स्थितिके ऊपर एक समयादिककी अधिकताके क्रमसे बन्ध नहीं पाया जाता ।

अथ स्थितिघातका आशय करके उपरिम स्थानोंकी उत्पत्तिकी प्ररूपणा करते हैं । यह इस प्रकार है—वादर एकेन्द्रियकी उत्पत्ति स्थितिमेंसे एक-एक समय घात करके स्थापित करनेपर असख्यातभागवृद्धि होती है । पद्यन् उपरिम स्थितिकी फिरम घातकर वादर एकेन्द्रियके उत्पत्ति स्थितिमेंसे दो-दो समय अधिक करके स्थापित करनेपर यह दूसरा अपुनरुक्त भर्त्सव्यातभागवृद्धिका स्थान होता है । तीन-तीन समय अधिक करके स्थापित अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । इस

द्वान् होदि । एव षोडश्या जाव धादरेइदियधुवद्विदिं जहणपरितासरोज्जेण खड्देण एगसडमेत्तेण वड्ठिदूणच्छिदद्विदिं ति । पुणो एदस्सुविरि द्विदिधादेण समउत्तर वड्ठिदे वि असखज्जभागवड्ठी होदि ।

एदस्स छेदभागहारो । त जहा— जहणपरितासरोज्ज विरलेदूण धादरेइदिय-धुवद्विदिं समसड कादूण दिण्णे विरलणरूण पडि जहणपरितासरोज्जेण खड्ठिदेगखड्ठ भागच्छदि । पुणो एद समयाहियमिच्छामो ति एत्थ एगरूवधरिद हेट्ठा विरलिय त चेव समखड्ठ कादूण दिण्णे एगरूणस्स वड्ठिप्रमाण पावदि । पुणो एद उविरि दादूण समकरण करिय रूवाहियद्वेद्विमनिरलणमेत्तद्वान् गतूण जदि एगरूवपरिहाणी लम्भदि तो उविरिमनिरलणाए किं लभामो ति पमाणेण फलगुणिदमिच्छमोवट्टिय लद्धमेगरूवस्स असखेज्जदिभागमुत्तरिमनिरलणाए

अछेदनस्य राशे रूप छेद वदति गणितज्ञा ।

अशाभाये नाश छेदस्याहुस्तदनेव ॥ ५ ॥

प्रकार धादर एकेन्द्रियकी ध्रुवस्थितिको जघन्य परीतासख्यातसे खण्डित करके एक खण्ड मात्रसे वृद्धिगत होकर स्थितिके स्थित होने तक ले जाना चाहिये । पश्चात् इसके ऊपर स्थितिघातसे उत्तरोत्तर एक एक समय बढ़नेपर भी असख्यातभागवृद्धि होती है ।

इसके छेदभागहारको कहते हैं । यथा— जघन्य परीतासख्यातका विरलन करके ऊपर धादर एकेन्द्रियकी ध्रुवस्थितिको समखण्ड करके देनेपर एक एक विरलन अधिक प्रति जघन्य परीतासख्यातसे खण्डित करनेपर एक खण्ड प्राप्त होता है । फिर चूंकि इसे एक समय अधिक चाहते हैं, अतः एक अधिक प्रति प्राप्त राशिका नीचे विरलन करके ऊपर उसके ही समखण्ड करके देनेपर एक रूपका वृद्धिप्रमाण प्राप्त होता है । फिर इसको ऊपर देकर समकरण करके एक अधिक नीचेके विरलन प्रमाण स्थान जाकर उसको ही समखण्ड करके देने पर एक रूपका वृद्धिप्रमाण प्राप्त होता है । इसको ऊपर देकर समकरण करके एक अधिक नीचेकी विरलन राशिके बराबर स्थान जाकर यदि एक रूपकी हानि प्राप्त होती है तो उपरिम विरलनके बराबर स्थान जाकर कितनी हानि प्राप्त होगी इस प्रकार फल राशिसे गुणित इच्छा राशिमें प्रमाण राशिका भाग देनेपर जो एक रूपका असख्यातवा भाग प्राप्त होता है उसको ऊपरकी विरलन राशिमेंसे—

जय राशिमें कोई छेद नहीं होता तब गणितज्ञ उसका छेद एक मान लेते हैं (जैसे ३ = ३) । और जय अशका अभाव हो जाता है तब छेदोंका भी नाश समझना चाहिये (३ - ३ = ० = ३ - ३ = ०) ॥ ५ ॥

एदेण लक्खणेण सरिसछेद काट्ठण सेहिदे सुद्धसेसमुत्तकस्ससखेज्जमेगरूवस्स अस-
खेज्जा भागा च भागहारो होदि । एदेण यादरधुवट्ठिदीए ओवट्ठिदाए इच्छिदट्ठानस्स
वट्ठिसमया आगच्छति । पुणो ट्ठिदिघादेण दुसमउत्तर ट्ठिदि धरेदूण ट्ठिदस्म वि असखेज्ज-
भागवट्ठीए अण्णमपुणरुत्तट्ठान होदि । एत्थ वि छेदभागहारो चेव । तिसमउत्तर धरेदूण
ट्ठिदस्स असखेज्जभागवट्ठीए अण्णमपुणरुत्तट्ठान होदि । एव ताव छेदभागहारो होदूण
गच्छदि जाव यादरेइदियधुवट्ठिदि जहण्णपरित्तासखेज्जेण खडेदूण तत्थ एगखडस्सुत्तरि त
चेव उक्कम्मसखेज्जेण खडेदूण तत्थ एगखड रूज्जण वट्ठिद ति । पुणो सपुण्ण वट्ठिदे
समभागहारो होदि । कुदो ? उक्कस्ससखेज्जेण रूवाहिण्ण जहण्णपरित्तासखेज्जे मागे
हिदे उवरिमविरलणाए अवणेदुमेगरूवुवलभादे । एत्थ सखेज्जभागवट्ठीए आदी असखेज्ज
भागवट्ठीए परिसमत्ती च जादा ।

पुणो एदस्सुत्तरि अण्णो जीवो ट्ठिदिघाद करेमाणो समउत्तरट्ठिदि धरेदूण ट्ठिदो ।
एत्थ वि सखेज्जभागवट्ठी चेव । एदिस्से वट्ठीए छेदभागहारो होदि । त जहा— उवरि-
मेगरूपधरिद हेट्ठा विरलेदूण त चेव समण्ड काट्ठण दिण्णे एत्तेकस्स रूवस्स एगेगो
समओ पावदि । पुणो एद उवरिमरूवधरिदेसु पक्खिविय समकरणे कीरमाणे परिहीण-

इस नियमके अनुसार समखण्ड धरके घटा देनेपर अवशिष्ट उत्कृष्ट सख्यात व
एक रूपका असख्यात बहुभाग भागहार होता है । इसका यादर पकेन्द्रियकी ध्रुवस्थिति
में भाग देनेपर अभीष्ट स्थानके वृद्धिगत समय प्राप्त होते हैं । फिर स्थितिघातसे
उत्तरोत्तर दो समयोंकी अधिकताको प्राप्त स्थितिको ग्रहणकर स्थित हुए जीवके
भी असख्यातभागवृद्धिका अथ अपुनरुत्त स्थान होता है । यहा भी छेदभागहार ही
होता है । तीन तीन समय अधिक स्थितिको ग्रहणकर स्थित जीवके असख्यात भाग
वृद्धिका अथ अपुनरुत्त स्थान होता है । इस प्रकार तय तक छेदभागहार होकर
जाता है जब तक कि यादर पकेन्द्रियकी ध्रुवस्थितिको जघय परीतासख्यातसे खण्डित
कर उसमेंसे एक खण्डके ऊपर उसको ही उत्कृष्ट सख्यातसे खण्डित करके उस
मेंसे एक एक कम एक खण्डकी वृद्धि नहीं हो जाती । तत्पश्चात् पूरे खण्ड
प्रमाण वृद्धि हो जानेपर समभागहार होता है, क्योंकि, जघय परीतासख्यातमें एक
अधिक उत्कृष्ट सख्यातका भाग देनेपर ऊपरकी विरलन राशिमेंसे कम करनेके
लिये एक रूप उपलब्ध होता है । अब यहा सख्यातभागवृद्धिका प्रारम्भ और
असख्यातभागवृद्धिकी समाप्ति हो जाती है ।

इसके ऊपर अथ जीव स्थितिघातको करता हुवा एक एक समय अधिक
स्थितिको लेकर स्थित हुवा । यहा भी सख्यातभागवृद्धि ही होती है । इस वृद्धिका
छेदभागहार होता है । यथा— ऊपरके एक एक अक्के ऊपर स्थित राशिका
नीचे विरलन करके ऊपर उसको ही समखण्ड करके देनेपर हर एक अक्के प्रति एक
एक समय प्राप्त होता है । फिर इसको ऊपरके अक्षोंपर स्थित राशियोंमें मिलाकर

रूपाण पमाण उच्चदे— रूपाहियहेडिमविरलणमेत्तद्वाण गतूण जदि एगरूपपरिहाणी लभदि तो उपरिमविरलणमि किं लमामो ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए एगरूपस्स असखेज्जदिभागो आगच्छदि । एदमुक्कस्ससखेज्जमि सोहिदे एगरूपस्स असखेज्जा भागा रूवूणुक्कस्ससखेज्ज च भागहारो होदि । पुणो दुसमउत्तर वट्टिदे सखेज्जभागवट्टिद्वाण होदि । एदस्स त्रि छेदभागहारो । तिसमउत्तर वट्टिदे त्रि सखेज्ज-भागवट्टी चैव । एव ताव छेदभागहारो होदूण गच्छदि जाव धादरेइदियधुवट्टिदि उक्कस्ससखेज्जेण खडेदूण पुणो तत्थेगखड रूवूणुक्कस्ससखेज्जेण खडेदूण तत्थेगखड रूवूण वट्टिदि ति । सपुण्ण वट्टिदे समभागहारो होदि । त च कथं ? रूवूणुक्कस्ससखेज्ज विरलेदूण उवरिमेगरूपधरिद समखड कादूण दिण्णे वट्टिपमाण होदि । एदमुवरिमरूप-धरिदेसु दादूण समरूणे कीरमाणे रूपाहियहेडिमविरलणमेत्तद्वाण गतूण एगरूपपरिहाणी होदि ति रूपाहियहेडिमविरलणाए उवरिमविरलणाए ओवट्टिदाए एगरूपमागच्छदि । तमि उवरिमविरलणाए सोहिदे रूवूणुक्कस्ससखेज्ज भागहारो होदि । पुणो एदेण

समकरण करते हुए हीन रूपोंके प्रमाणको कहते हैं— एक अधिक नीचेकी विरलन राशि प्रमाण अध्वान जाकर यदि एक रूपकी हानि पायी जाती है तो ऊपरकी विरलन राशिमें वह कितनी प्राप्त होगी, इस प्रकार फलगुणित इच्छा राशिमें प्रमाण राशिका भाग देनेपर एक रूपका असख्यातवा भाग प्राप्त होता है । इसको उरट्ट सख्यातमेंसे कम करनेपर शेष एक रूपका असख्यात बहुभाग और एक कम उरट्ट सख्यात भागहार होता है । आगे दो दो समय बढ़नेपर सख्यातभाग वृद्धिका स्थान होता है । इसका भी छेदभागहार है । तीन तीन समय बढ़नेपर भी सख्यातभागवृद्धि ही होती है । इस प्रकार तब तक छेदभागहार होकर जाता है जब तक कि धादर एकीद्रवकी ध्रुवस्थितिको उरट्ट सख्यातसे खण्डित करके फिर उसमेंसे एक खण्डको एक कम उरट्ट सख्यातसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक कम एक खण्ड प्रमाण वृद्धि नहीं हो जाती । सम्पूर्ण खण्ड प्रमाण वृद्धि हो चुकनेपर समभागहार होता है ।

शंका— वह कैसे ?

समाधान— एक कम उरट्ट सख्यातका विरलन कर उपरिम विरलनके एक रूपपर रखी हुई राशिको समखण्ड करके देनेपर वृद्धिका प्रमाण होता है । इसको उपरिम रूपोंपर रखी हुई राशियोंके ऊपर देकर समकरण करते हुए एक अधिक नीचेकी विरलनराशि प्रमाण अध्वान जाकर चूँकि एक अकफी हानि होती है, अतः एक अधिक नीचेकी विरलन राशिका ऊपरकी विरलन राशिमें भाग देनेपर एक कम आता है । उसको उपरिम विरलन राशिमेंसे कम करनेपर एक कम उरट्ट सख्यात भागहार होता है ।

बादरधुवद्विदीए ओवट्टिदाए सखेज्जभागवट्टिसमया लम्भति । एव छेदभागहार सममाग-
होरेहि द्विदिघादमस्सिदण्ण पेदव्व जाव धुवद्विदिभागहारो दोरूवपमाणो पत्तो त्ति ।

पुणो अण्णो जीवो द्विदिघाद करेमाणो समउत्तराए द्विदीए आगदो । तमण्ण सखेज्ज-
भागवट्टिद्वान्ण होदि । पुणो एदस्स छेदभागहारो । त जहा— उवरिमएगरूवधरिद
विरलदूण त चेव समखड कादूण दिण्णे एक्केनकरस रूवस्स एगेसमयपमाण पावदि ।
पुणो एत्थ एगरूवधरिद धेत्तूण उवरिमएगरूवधरिदम्मि दादूण समकरणे कीरमाणे रूवा-
हियेहोद्विमविरलणेमेत्तद्वान्ण गतूण एगरूवधरिहाणी होदि त्ति रूवाहियेहोद्विमविरलणाए
उवरिमविरलणाए ओवट्टिदाए एगरूवस्स असखेज्जा भागो आगच्छदि । एद सरिसछेद
कादूण दोरूवेसु सोहिदे एगरूवस्स असखेज्जा भागो सगलमेगळ्ण च भागहारो होदि ।
पुणो एदेण - बादरधुवद्विदिमोवट्टिय लद्धमेत्ते वट्टानिदे अण्णमपुणरुत्त सखेज्ज-
भागवट्टिद्वान्ण होदि । पुणो दुसमउत्तर वट्टिदे वि सखेज्जभागवट्टिद्वान्ण होदि ।
एदस्स वि छेदभागहारो होदि । एदेण कमेण छेदभागहारो ताव गच्छदि नान
बादरधुवद्विदि दोहि रूवेहि खडदूण पुणो तत्थ एगखड रूज्जण दोहि रूवेहि अवहिरिय

फिर इसका बादर एके द्वयकी ध्रुवस्थितिमें भाग देनेपर सख्यातभागवृद्धिके
समय प्राप्त होते हैं । इस प्रकार छेदभागहार और समभागहारके द्वारा स्थिति
घातका आश्रय करके ध्रुवस्थितिभागहारके दो अंक प्रमाण प्राप्त होने तक ले
जाना चाहिये ।

पुन दूसरा जीव स्थितिघातको करता हुआ उत्तरोत्तर एक एक समय अधिक
स्थितिके साथ आया । वह सख्यातभागवृद्धिका अथ स्थान होता है । अथ इसके
छेदभागहारको कहते हैं । यथा— ऊपरके एक अङ्के प्रति प्राप्त राशिका विरलन
करके उसे ही समखण्ड करके देनेपर एक एक अङ्के प्रति एक एक समय
प्रमाण प्राप्त होता है । फिर इसमेंसे एक अङ्के ऊपर रखी हुई राशिको ग्रहण कर
उसे उपरिम एक अङ्के प्रति प्राप्त राशिमें देकर समहरण करने हुए एक अधिक
अधस्तन विरलन प्रमाण स्थान जाकर चूकि एक रूपकी हानि होती है, अत
एक अधिक अधस्तन विरलनका उपरिम विरलनमें भाग देनेपर एक रूपका
असख्यातया भाग प्राप्त होता है । इसको समानखण्ड करके दो रूपोंमेंसे घटा
द देनेपर एक रूपका असख्यात बहुभाग और एक पूण रूप भागहार होता है । फिर
इससे बादर ध्रुवस्थितिको अपवर्तित करनेपर जो लब्ध हो उतना बढ़ानेपर सख्यात
भागवृद्धिका अथ अपुनरुत्त स्थान होता है । पुन दो दो समय अधिक बढ़नेपर भी
सख्यातभागवृद्धिका स्थान होता है । इसका भा छेदभागहार होता है । इस क्रमसे
छेदभागहार तब तक जाता है जब तक बादर एके द्वयकी ध्रुवस्थितिको दो रूपोंसे
खण्डित करके उसमेंसे एक खण्डको एक कम करके पुन दो रूपोंसे खण्डित करनेपर

त्तो तिगुणेदव्यो । १ । ३ । एद गुणगारो होदूण ताव गच्छदि जान पुच्चिल्लसो

रूणधुवट्टिदीए गुणेदूण तिसु रूणेषु पन्निगत्तो ति । पुणो एत्थ वि
पुच्चिल्लस पुण्णधुवट्टिदीए गुणिय तिसु रूणेषु पन्निगत्ते चत्तरिगुणगाररूवाणि
होति । तेहि धुवट्टिदीए गुणिदाए चदुगुणवट्टी होदि । १६ । एव छेद सम
गुणगारकमेण षध सते अस्मिदूण णेदव्य जाव सण्णिपचिंदियधुवट्टिदि ति । तिस्से
पमाण सद्विदीए अट्टावीस । २८ । पुणो एदिस्से उररि समउत्तर पयद्धे अण्णमपुणरुत्तट्टाण
होदि । एदस्म गुणगारपमाणमेद $\left| \begin{array}{c} ७ \\ १ \\ ४ \end{array} \right|$ । एदेण धुवट्टिदीए गुणिदाए सण्णिपचिंदियस्स

समयाहियवुवट्टिदिट्टाण होदि । २९ । एव छेद समगुणगारसरूवेण णेदव्य जाव वादरधुव
ट्टिदीए उक्कस्सगुणगारसत्तागाओ रूणूणाओ पविट्टाओ ति । एदमण्णमपुणरुत्तट्टाण होदि
। २२८ । पुणो एदिस्से उररि समउत्तर वट्टिदूण षद्धे^१ अण्णमपुणरुत्तट्टाण होदि । एदस्स
छेदगुणगारो । त जहा— वादरधुवट्टिदिमेत्तसमएसु वट्टिदेषु जदि एगा गुणगारसत्तागा
लम्भदि तो एगममए वट्टिदे किं लमामो ति पमाणेण फलगुणिदिच्छमेवट्टिय लद्धे

करना चाहिये $\frac{१}{४} \times ३$ । इस प्रकार छेदगुणकार होकर तब तक जाता है जब तक कि भूयका
अंश एक कम भूवस्थितिसे गुणित होकर तीन रूपोंमें प्रक्षिप्त नहीं हो जाता ।
फिर यहा भी पूर्वके अंशको पूण भूयस्थितिसे गुणित कर तीन रूपोंमें मिला देनेपर
गुणकार चार अंक होते हैं । उससे भूयस्थितिको गुणित करनेपर चौगुणी वृद्धि
होती है— $४ \times ४ = १६$ । इस प्रकार छेदगुणकार और समगुणकारके क्रमसे षध
य सरयका आधय करके सहा पचेन्द्रिय जीवकी भूयस्थिति तक ले जाना चाहिये ।
उसका प्रमाण सहस्रिमें अट्टाईस २८ है । फिर इसके ऊपर एक समयकी वृद्धि होनेपर
अन्य अपुनरुत्त स्थान होता है । उसके गुणकारका प्रमाण यह है— $७\frac{१}{४}$ । इससे
भूयस्थितिको गुणित करनेपर सहा पचेन्द्रिय जीवकी एक समयसे अधिक भूय
स्थितिका स्थान होता है— $\frac{१}{४} \times \frac{३}{१} = २९$ । इस प्रकार छेदगुणकार और समगुणकार
स्वरूपसे वादर धुवस्थितिमें एक कम उत्कृष्ट गुणकारशलाकाओंके प्रविष्ट होने तक
ले जाना चाहिये । यह अर्थ अपुनरुत्तस्थान होता है २२८ ।

इसके ऊपर एक समय अधिक बढ़ करके षध होनेपर अन्य अपुनरुत्त स्थान
होता है । इसका छेदगुणकार होता है । यथा— वादर धुवस्थिति प्रमाण समयोंके
बढ़नेपर यदि एक गुणकारशलाका प्राप्त होती है तो एक समयके बढ़नेपर कितनी
गुणकारशलाकाए प्राप्त होगी, इस प्रकार फलगुणित इच्छामें प्रमाण राशिका भाग

पुविल्लरूवेसु पक्खित्तसु गुणगारो होदि त्ति $\left[\begin{array}{c} ५७ \\ १ \\ ४ \end{array} \right]$ । पुणो एदेण वादरधुवट्ठिदीए गुणि-

दाए सपदियट्ठाण होदि [२२९] । दुममउत्तर वट्ठिदूण वट्ठे अण्णमपुणरुत्तट्ठाण होदि । एरय पुव्वुत्तस दुगुणिय सगलरूवेसु पक्खेवो कायव्वो । १ । २ । एदम्मि पुविल्लरूवेसु

पक्खित्त एत्तिय होदि $\left[\begin{array}{c} ५७ \\ १ \\ २ \end{array} \right]$ । एदेण वादरधुवट्ठिदीए गुणिदाए दुसमउत्तरट्ठाण होदि

[२३०] । तिसमउत्तर वधिदूणागदस्स अण्णमपुणरुत्तट्ठाण होदि । पुव्वत्तस तिगुणिय $\left[\begin{array}{c} १ \\ १३ \\ ४ \end{array} \right]$ ।

पुव्वुत्तगुणगाररूवेहि सह मेलानिदे एत्तिय होदि $\left[\begin{array}{c} ५७ \\ ३ \\ ४ \end{array} \right]$ । पुणो एदेण वादरधुवट्ठिदीए

गुणिदाए इच्छिदवट्ठिदूणाण होदि [२३१] । एव छेदगुणगारो होदूण ताव गच्छिदि जाव पुव्वुत्तसस्स रूदूणवादरधुवट्ठिदी गुणगारो जादो त्ति । पुणो समउत्तर वट्ठिदूण पक्खे समगुणगारो होदि । तस्स पमाणमट्ठवचास [५८] । पुणो एदेण वादरधुवट्ठिदीए गुणिदाए चरिमसखेज्जगुणवट्ठिदूणाण होदि । त च एद [२३२] । एव णाणावरणीयस्स तीहि वट्ठिदि अजहण्णपरूपाणा वादरधुवट्ठिदिमस्सिदूण कदा । जहण्णट्ठिदिमस्सिदूण पुण

वनेपर जो लब्ध हो उसे पूर्व रूपोंमें मिलानेपर गुणकार होता है— $५७\frac{३}{४}$ । इससे वादर ध्रुवस्थितिको गुणित करनेपर साम्प्रतिक स्थाय होता है— $\frac{३}{४} \times \frac{३}{४} = २२९$ । पश्चात् दो समय अधिक बढ़कर य घ होनेपर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । यहा पूर्वोक्त अशको दुगुणित करके समस्त रूपोंमें मिलाना चाहिये— $\frac{३}{४} \times २ = \frac{३}{२}$ । इसको पूर्व रूपोंमें मिलानेपर इतना होता है— $५७ + \frac{३}{२} = ५७\frac{३}{२}$ । इससे वादर ध्रुवस्थितिको गुणित करनेपर दो समय अधिक वृद्धिका स्थान होता है— $\frac{३}{२} \times \frac{३}{२} = २३०$ । तीन समय अधिक बढ़कर आये हुए जीवके अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । पूर्वोक्त अशको तिगुणा करके ($\frac{३}{२} \times ३$) पूर्वोक्त गुणकार रूपोंके साथ मिलानेपर इतना होता है— $५७\frac{३}{२}$ । इससे वादर ध्रुवस्थितिको गुणित करनेपर इच्छित वृद्धिस्थान होता है— $\frac{३}{२} \times \frac{३}{२} = २३१$ । इस प्रकार पूर्वोक्त अशका गुणकार एक कम ध्रुवस्थितिके होने तक छेदगुणकार होकर जाता है । पश्चात् एक समय अधिक बढ़कर य घ होनेपर समगुणकार होता है । उसका प्रमाण अट्ठावन ५८ है । इससे वादर ध्रुवस्थितिको गुणित करनेपर सव्यात गुणवृद्धिका अन्तिम स्थान होता है । यह यह है— $५८ \times ४ = २३२$ । इस प्रकार वादर एकेन्द्रिय जीवकी ध्रुवस्थितिका आधय करके तीन वृद्धियोंके द्वारा ज्ञानावरणीयकी अजघन्य स्थितिके रचामित्यकी प्ररूपणा की है ।

सखेज्जगुणवृद्धि असखेज्जगुणवृद्धि त्ति दो चैव वृद्धीओ होंनि, ओपजहण्णट्टिदि पेविस्सदूण ओघुक्कस्सट्टिदीए असखेज्जगुणत्तुवलभादो । एव सखेज्जगुणट्टिदोयेमेहि ऊण तीससागरोपम^१ कोडाकोडिमेत्तअनहण्णट्टाणवियप्पा णाणावरणीयस्स परूविदा । एत्थ जीवममुदाहारपरूपा जहा अणुक्कस्सट्टाणेसु परूविदा तहा परूवेदघ्ना ।

एव दसणावरणीय-अंतराइयाण ॥ १७ ॥

जहा णाणावरणीयस्स जहण्णानहण्णट्टिसामित्तपरूपा कदा तहा दसणा वरणीय अतराइयाण पि कायच्चा, त्रिससामारादो ।

सामित्तेण जहण्णपदे वेयणीयवेयणा कालदो जहण्णिया कस्स ? ॥ १८ ॥

सुगममेद ।

अण्णदरस्स चरिमसमयभवसिद्धियस्स तस्स वेयणीयवेयणा कालदो जहण्णा ॥ १९ ॥

परंतु जघन्य स्थितिका आधय करके सख्यातगुणवृद्धि और असख्यातगुणवृद्धि ये दो ही वृद्धिया होती हैं, क्योंकि, ओघजघम्य स्थितिकी अपेक्षा ओघउत्तृष्ट स्थिति असख्यातगुणी पायी जाती है । इस प्रकार सख्यात पर्योपमोंसे हीन तीस कोडाकोडि सागरोपम मात्र ज्ञानावरणीयके अजघन्य स्थानमेहीकी प्ररूपणा की है । यहा जीवसमुदाहारकी प्ररूपणा जैसे अउत्तृष्ट स्थानोंमें की गई है वैसे ही करनी चाहिये ।

इसी प्रकार दर्शनावरणीय एव अन्तराय कर्मोंकी जघन्य व अजघन्य स्थितिके स्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिये ॥ १७ ॥

जैसे ज्ञानावरणीय कर्मकी जघन्य व अजघन्य स्थितिके स्वामित्वकी प्ररूपणा की है वैसे ही दर्शनावरणीय और अन्तराय की भी करना चाहिये, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहै ।

स्वामित्वसे जघन्य पदमें वेदनीय कर्मकी वेदना कालकी अपेक्षा जघन्य किसके होती है ? ॥ १८ ॥

यह खूब सुगम है ।

जो कोई जीव मन्यसिद्धिकालके अन्तिम समयमें स्थित है उसके वेदनीयकी वेदना कालकी अपेक्षा जघन्य होती है ॥ १९ ॥

भोगाहण सठाणादीहि विसेसो गत्थि ति अण्णदरस्से ति उच्च । भवसिद्धिओ गाम अजोगिमडारओ । तस्स चरिमसमए एगा द्विदी एगसमयकाला होदि चि भवसिद्धिय चरिमसमए जहण्णसामित उच्च । दुचरिमादिसमएसु जहण्णसामित किण्ण मण्णदे ? ण, तत्थ वैयणीयस्स एगसमयद्विदीए अणुवलभादो ।

तच्चदिरित्तमजहण्णा ॥ २० ॥

तदो जहण्णादो वदिरित्त तच्चदिरित्त, सा अजहण्णा द्विदिवेयणा होदि । एत्थ जहा णाणारणीयस्स अजहण्णट्टाणपरूणणा कदा तहा कायच्चा । णवरि अजोगिचरिम समयादो तान गिरतरट्टाणपरूणणा कायच्चा जाव अजोगिपढमसमओ चि । पुणो सजोगि चरिमसमए द्विदस्स सातरमजहण्णट्टाण होदि । कुदो ? तत्थ चरिमफालीए अतोमुहुत्तमेत्तीए दसणादो । पुणो हेट्टा रूचूणकवीरणद्धामेत्तिगिरतरट्टाणेसु उत्पण्णेसु सह सातरट्टाणमुण्ण-ज्जदि, तत्थतोमुहुत्तट्टाणतरदसणादो । एव णेदव्व जाव लोणपूरण करिय द्विदमजोगि-केवलि ति । तदो पदरगदकेवलिहि अण्णमपुणरुत्तसातरट्टाण । कुदो ? लोणपूरणगद-केवलिद्विदिसतादो पदरगदकेवलिद्विदिसतस्स असखेज्जगुणत्तवलभादो । तदो कवाडगद-

अघगाहना घ सस्थान आदिकोंसे कोई विशेषता नहीं होती, यह जतलानेके लिये सूत्रमें 'अ यतर' पदका प्रयोग किया है। भवसिद्धिकसे अयोगकेवली भट्टारक विवक्षित है। उनके अन्तिम समयमें चूकि एक समय फालवाली एक स्थिति होती है, अत भवसिद्धिकके अन्तिम समयमें अघन्य स्वामित्व यतलया गया है।

शुका—अयोगकेवलीके द्विचरमादिक समयोंमें जघन्य स्वामित्व क्यों नहीं यतलया जाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, उक्त समयोंमें वेदनीयकी एक समयवाली स्थिति नहीं पायी जाती।

उमसे भिन्न अजघन्य स्थितिवेदना होती है ॥ २० ॥

उससे अर्थात् जघ य स्थितिवेदनासे जो भिन्न वेदना है वह अजघन्य स्थिति-वेदना है। यहा जैसे ज्ञानारणीयके अजघन्य स्थानोंकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही वेदनीयके भी करना चाहिये। विशेष इतना है कि अयोगकेवलीके अन्तिम समयसे लेकर अयोगकेवलीके प्रथम समय तक निरन्तर स्थानोंकी प्ररूपणा करना चाहिये। फिर सयोगकेवली गुणस्थानके अन्तिम समयमें स्थित जीघके साम्तर अजघन्य स्थान होना है, क्योंकि, वहा अन्तिम फालि अतमुहुत्त प्रमाण देखी जाती है। पुनः नीचे एक क्रम उत्कीरणकाल प्रमाण निरन्तर स्थानोंके उत्पन्न होनेपर एक घार सातर स्थान उत्पन्न होता है, क्योंकि, वहा अतमुहुत्त स्थानांतर देखा जाता है। इस प्रकार लोणपूरण समुद्घातको करके स्थित सयोगकेवली तक ले जाना चाहिये। पश्चात् प्रतरसमुद्घातगत केवलीमें अय अणुनरत्त सा तर स्थान होता है, क्योंकि, लोणपूरण समुद्घातगत केवलीके स्थितिसत्त्वसे प्रतरसमुद्घात गत केवलीका स्थितिसत्त्व असंख्यातगुणा पाया जाता है। पश्चात् कपाटसमुद्घातगत

केवलिम्ह अण्ण सातरमपुणरुत्तहाण, पदरगदकेवलिद्विदिसतादो क्वाडगदकेवलि
द्विदिसतस्स असखेज्जगुणत्तुवलमादो । तदो दडगदकेवलिम्ह सातरमण्णमपुणरुत्तहाण,
क्वाडगदकेवलिद्विदिसतादो दडगदकेवलिद्विदिसतस्स असखेज्जगुणत्तुवलमादो । दडाहि-
मुदकेवलिम्ह अण्ण सातरमपुणरुत्तहाण, दडगदकेवलिद्विदिसतादो एदम्ह असखेज्जगुण
द्विदिसतदसणादो । एतो प्पहुडि हेड्डा गिरतरट्टाणाणि ताव उप्पज्जति जाव खीणकमाय-
परिमसमओ त्ति । कुदो ? एत्थतेरे द्विदिकदयामावादो । एतो हेड्डा गिरतर सातरकमेण
णाणारणीयविहाणेण अजहण्णट्टाणपरूणणा कायत्वा, विमेमाभावादो ।

एवं आउअ-णामागोदानं ॥ २१ ॥

जहा वेयणीयस्स जहण्णाजहण्णसामित्तरूवणा कदा तहा एदेसिं पि जहण्णा
जहण्णमामित्त वत्तव्व, विसेसामावादो । णवरि आउअस्स अजहण्णसामित्तरूवणमि
जो विसेसो त वत्तइम्मामो । त जहा — भवसिद्धियदुचरिमसमए एगमजहण्णट्टाण । पुणो
तिचरिममए विदियमजहण्णट्टाण । पुणो चदुचरिमसमए तदियमजहण्णट्टाण । एत्थ

केवलीमें अय सातर अपुनरुत्त स्थान होता है, क्योंकि, प्रतरगत केवलीके स्थितिसरवसे
क्वाटगत केवलीका स्थितिसरव असख्यातगुणा पाया जाता है । पश्चात् दण्डसमुद्घात
गत केवलीमें अय सातर अपुनरुत्त स्थान होता है, क्योंकि, क्वाट
समुद्घातगत केवलीके स्थितिसरवसे दण्डसमुद्घातगत केवलीका स्थितिसरव
असख्यातगुणा पाया जाता है । दण्डसमुद्घातके अभिमुख हुए केवलीमें अय
सातर अपुनरुत्त स्थान होता है, क्योंकि दण्डसमुद्घातगत केवलीके स्थितिसरवसे
उसके अभिमुख हुए केवलीमें असख्यातगुणा स्थितिसरव देखा जाता है । यहासे
लेकर नीचे शीणकवायके अन्तिम समय तक निरतर स्थान उत्पन्न होते हैं, क्योंकि,
इस बीचमें स्थितिकाण्डकका अभाव है । इसके नीचे निरतर और सातर क्रमसे
ज्ञानावरणीयके विधानके अनुसार अजघय स्थानोंका प्ररूपणा करना चाहिये, क्योंकि,
उनमें कोई विशेषता नहीं है ।

इसी प्रकार आयु, नाम और गोत्र कर्मोंके अजघय एव अजघय स्वामित्वकी
प्ररूपणा है ॥ २१ ॥

जैसे घेदनीय कर्मके अजघय व अजघय स्वामित्वकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही
इन तीनों कर्मोंके अजघय व अजघय स्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिये, क्योंकि, उसमें
कोई विशेषता नहीं है । विशेष इतना है कि आयु कर्मके अजघय स्वामित्वकी प्ररूपणामें
जो कुछ विशेषता है उसे कहते हैं । यथा— भवसिद्धिक रद्देक द्विचरम समयमें
एक अजघय स्थान होता है । पश्चात् त्रिचरम समयमें द्वितीय अजघय स्थान
होता है । चतुश्चरम समयमें तृतीय अजघय स्थान होता है । यहाँ दुगुणी वृत्ति

दुगुणवृद्धी होदि । एत्तो प्पहुडि सखेज्जगुणवृद्धी होदूण ताव गच्छदि जान उक्कस्स-
सरोज्जगुणगारसरूवेण दोण्ण समयाण पविट्ठ ति । पुणो एदस्सुवरि एगसमए वड्ढिदे
सखेज्जगुणवृद्धी चेव, अद्धरूवेणम्महियउपकस्ससरोज्जमेत्तगुणगारुवलमादो । पुणो
तदणतरहेट्ठिमसमयम्मि असरोज्जगुणवृद्धी होदि, तत्थ दोण्ण समयाण जहण्णपरित्तासखेज्ज-
गुणगारुवलमादो । एत्तो प्पहुडि असखेज्जगुणवृद्धीए ताव ओदारेदव्व जाव समयाहिय-
उम्मासो ति । पुणो एदेणाउएण सरिस आउअमधेण विणा द्विदस्सव्वट्ठिसिद्धिदेवाउअ
तेत्तीससागरोवमाणि समयाहियउम्मासूणाणि गालिय द्विद होदि । पुण्विस्स मोत्तूण इम
धेतूण समउत्तरादिकमेण निरतर वट्ठाविय णेयव्व जाव सव्वट्ठिसिद्धिसमुत्पण्णदेवपढमसमभो
ति । पुणो तेत्तीसाउअ षधिय चरिमसमयमणुस्सो होदूण द्विदसजदम्मि अण्णमपुणरुत्तहाण ।
मणुसदुचरिमसमयद्विदसजदम्मि अण्णमपुणरुत्तहाण । एवमसरोज्जगुणवृद्धीए ताव
ओदारेदव्व जाव पुण्णकोडिदिभागपढमसमयद्विदसजदो ति । एत्थ जीयसमुदाहारो
जाणिय वत्तवो ।

सामित्तेण जहण्णपदे मोहणीयवेयणा कालदो जहणिया
कस्स ? ॥ २२ ॥

होती है । यहासे सख्यातगुणवृद्धि प्रारम्भ होकर तब तक जाती है जब तक कि उठए
सख्यात गुणकार स्वरूपसे दो समय प्रविष्ट नहीं हो जाते । पश्चात् इसके ऊपर
एक समयकी वृद्धि होनेपर सख्यातगुणवृद्धि ही रहती है, क्योंकि, यहा वर्ष
रूपसे अधिक उठए सख्यात प्रमाण गुणकार पाया जाता है । तत्पश्चात् उससे
अनन्तर अद्यस्तन समयमें असख्यातगु वृद्धि होती है, क्योंकि, यहा दो समयोंका
जघन्य परीतासख्यात गुणकार पाया जाता है । इसके आगे एक समय अधिक
एह मास स्थिति तक असख्यातगुणवृद्धिके द्वारा उतारना चाहिये । पश्चात् आयु
वर्षसे रहित होकर स्थित सर्वाथसिद्धिस्थ देवकी एक समय अधिक एह
मासोंसे कम तेत्तीस सामरोपम प्रमाण आयुको गलाकर स्थित हुए जीवकी आयु
इस आयुके सदृश होती है । पूर्वोक्त जीवको छोड़कर और इसे ग्रहण करके एक
एक समयकी अधिकताके क्रमसे निरन्तर बढ़ाकर स्याथसिद्धिमें उत्पन्न हुए
देवकी उत्पत्तिसे प्रथम समय तक ले जाना चाहिये । पुनः तेत्तीस सामरोपम प्रमाण
आयुको याचकर मनुष्य भयके अतिम समयमें स्थित सयतके अन्य अपुनरुत्त
स्थान होता है । मनुष्य भयके द्विचरम समयमें स्थित सयतके अन्य अपुनरुत्त
स्थान होता है । इस प्रकार पूर्वोक्तिप्रभागके प्रथम समयमें स्थित सयत तक
असख्यातगुणवृद्धिके द्वारा उतारना चाहिये । यहा जीवसमुदाहारको जानकर
बहना चाहिये ।

स्वामित्वसे जघन्य पदमें मोहनीय कर्मकी वेदा कालकी अपेक्षा जघन्य
किस्के होती है ? ॥ २२ ॥

सुगममेद ।

अण्णदरस्स खवगस्स चरिमसमयसकसाइयस्स मोहणीय-
वेयणा कालदो जहण्णा ॥ २३ ॥

उवसामगण्डिसेइफलो खवगस्से ति निदेमो । ग्णीणरुसायादिपडिसेइफलो सकमाइ
यस्से ति निदेसो । दुचरिमादिसकसाइयर्पडिसेइइ चरिमममण्ण सकमाई तिसेसिदो ।
चरिमसमयसुहुंमसापरायस्स मोहणीयवेयणा कालदो जहण्णिया होदि ति उच होदि ।

तव्वदिरित्तमजहण्णा ॥ २४ ॥

एदस्सत्थो णाणावरणअजहण्णसुत्तस्सेव परूदेव्या । एव सामित्त सगतोत्तित्त-
ट्ठाण सखा जीवसमुदाहारणिओगहार समच ।

अप्पावहुए त्ति । तत्थ इमाणि तिण्णिण अणिओगद्वाराणि—
जहण्णपदे उक्कस्सपदे जहण्णुक्कस्सपदे ॥ २५ ॥

तिण्णिण चेय अणिओगद्वाराणि एत्थ होंति चि कथ णच्चेद ? जहण्णुक्कस्सपदेसु
एग दुमज्जेण तिण्णिण भग्गे मोत्तूण एत्तो अहियमगुप्पत्तीए अनुपलमादो ।

यह सूत्र सुगम है ?

जो कोई क्षपक सरूपाय अवस्थोक्त अन्तिम समयमें स्थित है उसके मोहनीय
कर्मकी वेदना कालकी अपेक्षा जघन्य होती है ॥ २३ ॥

सूत्रमें क्षपक पदके निर्देशका प्रयोजन उपशामकका प्रतिषेध करना है । सक्रयाप
पदके निर्देशका फल क्षीणकयाय आदिकोंका प्रतिषेध करना है । द्विचरम सखपायी
आदिकोंका प्रतिषेध करनेके लिये सखपायीको 'चरम समच' विशिष्टणसे विशेषित
किया गया है । अभिप्राय यह कि सूक्ष्मसाम्प्रदायिक गुणस्थानके अन्तिम समयमें
स्थित जीवके मोहनीयकी वेदना कालकी अपेक्षा जघन्य होती है ।

उससे भिन्न अजघन्य वेदना होती है ॥ २४ ॥

इस सूत्रके अर्थकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके अजघन्य स्त्रामित्तकी प्ररूपणा करनेवाले
सूत्रके समान करना चाहिये । इस प्रकार स्थान, सत्या एव जीवसमुदाहारसे गर्भित
स्थामित्त अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

अथ अन्वपहुत्त्व अनुयोगद्वारका अधिकार है । उसमें ये तीन अनुयोगद्वार हैं—
जघन्य पदमें, उत्कृष्ट पदमें और जघन्य उत्कृष्ट पदमें ॥ २५ ॥

शकां—इस अधिकारमें तीन ही अनुयोगद्वार हैं, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—चूँकि जघन्य व उत्कृष्ट पदमें एक व दोके सयोगसे होनेवाले तीन
भगोंकी छोटकर इनसे अधिक भगोंकी उत्पत्ति नहीं देखी जाता है, अतः इसीसे जाना
जाता है कि उसमें तीन ही अनुयोगद्वार हैं ।

जहणपदेण अट्टण पि कम्मार्ण वेयणाओ कालदो जहणि-
णाओ तुल्लाओ ॥ २६ ॥

कुदो ? एगाए द्विदीए एगसमयकालए अट्टण पि कम्मार्ण जहणकालवेयणाए
जहणादो । परमाणुभेदेण कालभेदो एत्थ विण्ण गहिदो ? ण, काल मोत्तूण एत्थ पदेसाण
वेवक्खाभावादो । समयमावेण एगत्तमावणसमयविसेसग्गि परमाणुपेसादो वा । वेणेदाओ
पट्ट पि कालवेयणाओ तुल्लाओ तेण जहणपदप्पाबहुअ णत्थि ति भावत्थो ।

उक्कस्सपदेण सव्वत्थोवा आउअवेयणा कालदो उक्कस्सिया
॥ २७ ॥

पुव्वकोडिट्ठिम गाहियतेत्तीससागरोपममाणत्तादो ।

णामा गोदेवयणाओ कालदो उक्कस्सियाओ दो वि तुल्लाओ
सखेज्जगुणाओ ॥ २८ ॥

कुदो ? वीससागरोपमकोडाकोडिपमाणत्तादो । गुणगारो सखेज्जा समयो । एग-

जघन्य पदकी अपेक्षा आठों ही कर्मोंकी कालमें जघन्य वेदनायें तुल्य हैं ॥ २६ ॥
कारण यह कि आठों ही कर्मोंकी एक एक समय कालवाली एक स्थितिको
जघन्य कालवेदना ग्रहण किया गया है ।

शरा - परमाणुभेदसे यहा कालके भेदको क्यों नहीं ग्रहण किया गया है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि कालको छोड़कर यहा प्रदेशोंकी विचक्षा नहीं की
गई है । अथवा, समय स्वरूपसे अभेदको प्राप्त हुए समयविशेषमें परमाणुबोका
प्रवेश होनेसे कालभेदको ग्रहण नहीं किया गया ।

चूकि ये आठों ही कालवेदनायें परस्पर समान है, अतः जघन्य अल्पबहुत्वं
नहीं है यह भावार्थ है ।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा कालसे उत्कृष्ट अथु कर्मकी वेदना समय स्तोक है ॥ २७ ॥

कारण यह कि यह पूजकोटिके तृतीय भागसे अधिक तैत्तीस सागरोपम
प्रमाण है ।

उससे नाम व गोत्र कर्मकी कालसे उत्कृष्ट वेदनायें दोनो ही तुल्य व
सख्यातगुणी हैं ॥ २८ ॥

कारण यह कि ये वीस कोडाकोडि सागरोपम प्रमाण है । गुणकार यहा सख्यात

रूवरस असखेज्जदिमागंमद्वियेत्तीससागरोवमपलिदोवमसलागाहि वीससागरोवमकोडाकोडि-
पलिदोवमसलागासु खडिदासु तरय एगमागो गुणगारो होदि चि उच होदि ।

णाणावरणीय - दसणावरणीय--वेयणीय -- अंतराहयवेयणाओ
कालदो उक्कस्सियाओ चत्तारि वि तुल्लाओ विसेसाहियाओ ॥२९॥

कुदो ? वीससागरोवमकोडाकोडीहितो तीससागरोवमकोडाकोडीण दुमागाहियत्त
दसणादो ।

मोहणीयस्स वेयणा कालदो उक्कस्सिया सखेज्जगुणा ॥३०॥

कुदो ? तीससागरोवमकोडाकोडीहितो सत्तिसागरोवमकोडाकोडीण सत्तिमागदोरु-
गुणगारसुवलभादो । एव उक्कस्सवेयणा समत्ता ।

जहण्णुक्कस्सपदे अट्टण्ण^१ पि कम्माणं वेयणाओ कालदो
जहण्णियाओ तुल्लाओ थोवाओ ॥ ३१ ॥

कुदो ? एगसमयत्तादो ।

समय है । अभिप्राय यह कि एक रूपके असख्यातयें भागसे अधिक तेतीस सागरोपमोंकी
पत्योपमशलाकाओंका वीस कोडाकोडि सागरोपमोंकी पत्योपमशलाकाओंमें भाग देनेपर
जो एक भाग लब्ध होता है वह यहा गुणकार है ।

उन्से ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय और अन्तराय कर्मकी कालसे उत्कृष्ट
वेदनायें चारों ही तुल्य व विशेष अधिक हैं ॥ २९ ॥

कारण कि वीस कोडाकोडि सागरोपमोंसे तीस कोडाकोडि सागरोपम द्वितीय
भाग (२) से अधिक देखे जाते हैं ।

उन्से मोहनीय कर्मकी कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट वेदना सख्यातगुणी है ॥ ३० ॥

कारण कि तीस कोडाकोडि सागरोपमोंसे सत्तर कोडाकोडि सागरोपमोंका
एक तृतीय भाग सहित दो अक गुणकार देखा जाता है । इस प्रकार उत्कृष्ट वेदना
समाप्त हुई ।

जघन्य उत्कृष्ट पदमें कालकी अपेक्षा आठों ही कर्मोंकी जघन्य वेदनायें परस्पर
तुल्य व स्तोक हैं ॥ ३१ ॥

कारण कि उनका कालप्रमाण एक समय है ।

आउअवेयणा कालदो उक्कस्सिया असखेज्जगुणा ॥ ३२ ॥

कुदो ? एगसमय पेक्खिदूण पुच्चकोडितिभागाहियेतीससागरोवेमसु असखेज्जगुण-
तुवलमादो ।

णामा गोदवेयणाओ कालदो उक्कस्सियाओ दो वि तुल्लाओ
असखेज्जगुणाओ ॥ ३३ ॥

को गुणगारो ? सखेज्जा समया । कारण पुच्च व वत्तव्व ।

णणावरणीय - दंसणावरणीय - वेयणीय - अंतराइयवेयणाओ
कालदो उक्कस्सियाओ चत्तारि वि तुल्लाओ विसेसाहियाओ ॥ ३४ ॥

कारण पुच्च व वत्तव्व ।

मोहणीयवेयणा कालदो उक्कस्सिया संखेज्जगुणा ॥ ३५ ॥

को गुणगारो ? सखेज्जा समया । कारण पुच्च व वत्तव्व । एवमप्पाग्गुणाणि-
योगहार' सगतोक्खिच्चगुणगाराहियार समत्त ।

उनसे आयु कर्मकी कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट वेदना असख्यातगुणी है ॥ ३२ ॥

कारण कि एक समयकी अपेक्षा पूर्वकोटिके तृतीय भागसे अधिक तैतीस सागरो
पम असख्यातगुणे पाये जाते हैं ।

उसमे कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट नाम व गोत्र कर्मकी वेदनायें दोनों ही तुल्य व
असख्यातगुणी हैं ॥ ३३ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार सख्यात समय है । इसका कारण पहिलेके ही
समान बतलाना चाहिये ।

उनसे ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय और अन्तराय कर्मकी कालकी अपेक्षा
उत्कृष्ट वेदनायें चारों ही तुल्य व विशेष अधिक हैं ३४ ॥

इसका कारण पहिलेके ही समान कहना चाहिये ।

इससे मोहनीय कर्मकी कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट वेदना सख्यातगुणी है ॥ ३५ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार सख्यात समय है । इसका कारण पहिलेके ही
समान बतलाना चाहिये ।

इस प्रकार गुणकाराधिकारगर्भित अक्षय्यदुस्वप्नयोगद्वार समाप्त हुआ ।

(चूलिया)

एतो मूलपयडिड्विधे पुत्र गमणिज्जे तत्य इमाणि
चत्तारि अणियोगद्वाराणि— द्विद्विबंधद्वाराणपरुवणा णिसेयपरुवणा
आनाधाकदयपरुवणा अप्पावहुत्ति ॥ ३६ ॥

पद्मीमासा सामित्पावहृत्ति तीहि अणियोगद्वारोहि कालविधान परुविद । त च
समत्त, निष्णेर अणियोगद्वाराणि कालविधाने सुत्तस्मादीण ह्येति ति परुविदत्तारो । अह
ण समत्ते, कालविधाने तिष्णि चेर अणियोगद्वाराणि ह्येति ति भाणिदसुत्तस्स अणत्थयत्त
पमञ्जेत्त । ण च सुत्तमणत्थय होदि, विगद्वारो । तदो कालविधान समत्त चेर । एत्त समत्ते
उत्तरिमसुत्तारो अणत्थयो चि १ एत्थ परिहाणे उच्चादे— तीहि अणियोगद्वारोहि कालविधान
परुविय समत्त चेर । किंतु तस्स समत्तस्स वेयणाकालविधानस्म उत्तरिगथेण चूलिया उच्चदे ।
चूलिया णाम किं १ कालविधानेण सूचिदत्थाण विवरण चूलिया । जाए अत्थपरुवणाए कदाए
पुत्रपरुविदत्थमि मिस्साण णिच्छओ उणञ्जदि मा चूलिया चि भाणिद ह्येदि । तद्दा
उत्तरिमगथावयारो सवद्धो चि घेतन्वो ।

आगे मूलप्रकृतिस्थितिनाथ पूर्वमे जातय्य है । उभमे ये चार अनुयोगद्वार हैं—
स्थितिबन्धस्थानपरुवणा, निषेकपरुवणा, आनाधानाण्डपरुवणा और अत्थपरुवणा ॥ ३६ ॥

शुका— पद्मीमासा, स्यामित्त और अत्थपरुवणा, इन तीन अनुयोगद्वारोंके द्वारा
कालविधानकी परुवणा की जा चुकी है, यह समाप्त भी हो चुकी, क्योंकि, काल
विधानमें सूत्रके प्रारम्भमें तीन ही अनुयोगद्वार होते हैं 'येसा क्हा गया है । फिर भी
यदि उसके समाप्त न माना जाय तो फिर " कालविधानमें तीन ही अनुयोगद्वार
हैं " इस प्रकार वहाँ कहे गये सूत्रके अनर्थक होनेका प्रसंग आवेगा । किन्तु सूत्र
अनर्थक होता नहीं है, क्योंकि, इसमें विरोध होता है । इस कारण कालविधानको
समाप्त ही मानना चाहिये । इस प्रकार उसके समाप्त हो जानपर भागे सूत्रका
प्रारम्भ करना अनर्थक है ?

समाधान— इस शकाका परिहार करते हैं । तीन अनुयोगद्वारोंके द्वारा उसके
परुवणा हो चुकनेपर यह समाप्त ही हो गया है । किन्तु भागेके प्रथमे समाप्ति
को प्राप्त हुए उस कालविधानकी चूलिका बर्ही जाती है ।

शुका— चूलिका किसे कहते हैं ?

समाधान— कालविधानके द्वारा सूचित अर्थोंका विशेष सर्वजन करना चूलिका
कहलाती है । जिस अर्थपरुवणाके किये जानेपर पूर्वमें वर्णित पदार्थके, विषयमें
शिष्योंको निश्चय उत्पन्न हो उसे चूलिका कहते हैं, यह अभिप्राय है । अत एव अग्रिम
ग्रन्थका अन्वय सम्बद्ध ही है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

मूलपयडिद्विद्विषधे त्ति णिहेमेण उत्तरपयडिद्विद्विषधबुदामो कदो । उत्तरपयडि-
द्विद्विषधबुदामो किमद्व कदो ? ण, मूलपयडिद्विद्विषधधवगमादो तदवगमो होदि त्ति
तव्वुदासकरणादो । पुव्वसहो^१ कारणवाचओ क्रिययाविमेषणभावेण घेतत्वो । ण च पुव्व-
सहो^२ कारणत्यभावेण अप्सिद्धो, मदिपुव्व सुदमिच्चेत्य कारणे वट्टमाणपुव्वमद्वलभादो ।
तीहि अणियोगदोरेहि पुव्व परुदिद्वत्यविसययोहस्स^३ पुव्व कारण होदूण गमणिज्जे मूल
पयडिद्विद्विषधे इमाणि अणियोगदाराणि होंति त्ति मणिद होदि । अथवा, मूलपयडिद्विद्वि-
षधो कालविहाणे पुव्व पढमभव गमणिज्जो^४, द्विदिअद्वाच्छेदादिसु अणवगदेसु सामि
त्तादिअणियोगदाराणमवगमोनायामावासे । तत्थ इमाणि अणियोगदाराणि होंति त्ति
मणिद होदि । -

अणुनकरम अनद्वणद्विद्विहाणाणि पुव्व परुविदाणि । तेसुं ट्टाणेषु कम्हि कम्हि
जीवसमासे तत्थ केत्तियाणि घट्टाणाणि केत्तियाणि वा सतट्टाणाणि^५ कस्स जीवममासस्स
घट्टाणेहितो करस वा घट्टाणाणि समाणि अहियाणि ऊणाणि त्ति पुच्छिदे तरस णिच्छयु-
प्पायणद^६ द्विद्विषधट्टाणरूपणा आगदा । वज्जमाणकम्मपदेसविण्णासो किं पढमसमयप्पट्टुडि

‘मूलप्रकृतिय-घस्थान’ इस निर्देशसे उत्तर प्रकृतियोंके स्थितियन्धका निषेध
किया गया है ।

शंका—उत्तर प्रकृतियोंके स्थितियन्धका प्रतिषेध किसलिये किया जाता है ?

समाधान—नहीं चूँकि मूलप्रकृति स्थितियन्धके ज्ञान हो जानेपर उसका ज्ञान
हो जाता है, अतः उसका प्रतिषेध किया गया है ।

यहाँ पूष शब्दके त्रियाविशेषण स्वरूपसे कारण अथवा घासक प्रकृति करना
चाहिये । पूष शब्द करण अर्थका वाचक अप्रसिद्ध भी नहीं है, क्योंकि, “मतिपूर्वं
द्युतम्” इस सूत्रमें कारण अर्थमें यतमान पूर्व शब्द देखा जाता है । तीन अनुयोग
द्वारोंसे पूर्वमें प्रकृतित अर्थावयवक बोधका पूष अर्थात् कारण होनेसे अवगमनीय
मूलप्रकृति स्थितिय घमें ये अनुयोगद्वार होते हैं, यह उसका अभिप्राय है । अथवा, मूल
प्रकृति स्थितिय-घ कालविधानमें पूर्वमें अर्थात् पहिले ही ज्ञातय है, क्योंकि, स्थितिय-घ
च्छेदादिकोंके ज्ञात होनेपर स्वामित्य आदि अनुयोगद्वारोंके जाननेका कोई उपाय नहीं
रहता । उसमें ये अनुयोगद्वार हैं, यह उक्त कथनका निष्पत्त है ।

अनुकृत-अजघ-यस्थितस्थान पूर्वमें कहे जा चुके हैं । उच स्थानोंमेंसे किस
किस जीवसमासमें कहा कितने य घ स्थान हैं य कितने सखस्थान, किस जीवसमासके
घस्थानोंसे किसके यस्थान समान, अधिक अथवा कम हैं, येसा पूछनेपर
उसका निश्चय उत्पन्न करानेके लिये स्थितियन्धस्थानप्रकृति प्राप्त हुए है ।

१ अ-आ-वाप्रियो ‘पुव्व सहो’ इति पाठः । २ प्रतिपु ‘वितयजादस्स’ इति पाठः । ३ अ-आ-वाप्रियु
‘गमणिज्जा’ ताप्रतः ‘गमभवे’ इति पाठः । ४ प्रतिपु ‘तिव्व’ इति पाठः । ५ अ-आ-वाप्रियु
‘सट्टाणाणि’ इति पाठः । ६ उप्रती ‘णिच्छयुप्पायणद’; आदत्ती ‘णिच्छयुप्पायणद’ इति पाठः ।

आहो अण्णहा होदि त्ति पुच्छिदे एव होदि त्ति आवाधपमाणपरूवणद्ध निमित्तमाणम्म
 पदेसाण निसेगक्कमपरूवणद्ध च निसेयपरूवणा आगदा । एगमावाध काट्टण किमेक्क चेव
 द्विदिवधट्टाण वधदि, आहो अण्णहा वधदि त्ति पुच्छिदे एवकाए आवाधाए एत्थियाणि
 द्विदिवधट्टाणाणि वधत्ति, अवरणि ण वधदि त्ति जाणावणद्धमावाधाकदयपरूवणा आगदा ।
 आवाधाण आवाधकदयाण च योववहुत्तजाणावणद्धमप्पावहुगपरूवणा अगदा । एवमेत्थ
 चत्तरि चेव अणियोगद्वाराणि होति अण्णेभिमेत्थेत्थे अत्तभात्तादो ।

द्विदिवधट्टाणपरूवणदाए सव्वत्थोवा सुहुमेइदियअपज्जत्तयस्म
 द्विदिवधट्टाणाणि ॥ ३७ ॥

एदमप्पावहुअसुत्त देसागासिय, सुद्धद्विदिवधट्टाणपरूवणा पम णाणिओगद्वारात्तादो । ण
 च अत्थिच्च पमाणेहि अणवगयाण द्विदिवधट्टाणाणमप्पावहुग समवदि, त्तिरोहत्तादो । तन्हा
 द्विदिवधट्टाणपरूवणदाए परूवणा पमाणप्पावहुग चेदि तिणिण अणियोगद्वाराणि । तत्थ
 परूवणदाए अत्थि चोदमण्ण जीवममासाण पुष पुष द्विदिवधट्टाणाणि । एत्थ द्विदिवध
 ट्टाणाणि त्ति उत्ते केसि गहण ? वप्यन इति वध । स्थितिवध वध स्थितिवध ।

वर्षमान कर्मप्रदेशोंका विन्यास क्या प्रथम समयसे लेकर होता है, अथवा अन्य
 प्रकारसे होता है, ऐसा पूछनेपर वह इस प्रकारसे होता है, इस प्रकार आवाधा
 प्रमाणकी प्ररूपणाके लिये तथा नितिसंचमान कर्मप्रदेशोंके निषेकप्रमकी प्ररूपणाके
 लिये निषेकप्ररूपणा प्राप्त हुई है । एक आवाधाको करके क्या एक ही स्थितिवधस्थान
 बधता है अथवा अन्य प्रकारसे बधता है, ऐसा पूछनेपर एक आवाधामें इतने
 स्थितिवधस्थानोंको बांधता है, इतर स्थानोंको नहीं बांधता है, यह शात करानेके लिये
 आवाधाकाण्डकप्ररूपणा प्राप्त हुई है । आवाधाओं और आवाधाकाण्डकोंके अल्प
 बहुत्वको बतलानेके लिये अव्ययबहुत्वप्ररूपणा प्राप्त हुई है । इस प्रकार हममें चार ही
 अनुयोगद्वार हैं, क्योंकि अन्य अनुयोगद्वारोंका इहींमें अंतर्भाव हो जाता है ।

स्थितिवधस्थानप्ररूपणाकी अपेक्षा सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिवधस्थान
 सधसे स्तोक हैं ॥ ३७ ॥

यह अल्पबहुत्वसूत्र देशामर्शक है, क्योंकि, यह स्थितिस्थानोंके प्ररूपणानुयोगद्वार
 और प्रमाणानुयोगद्वारका सूत्रक है । इन अनुयोगद्वारोंकी आवश्यकता यहाँ इसलिये
 है कि इनके बिना अस्तित्व और प्रमाणसे अज्ञान स्थितिस्थानोंका अल्पबहुत्व सम्भव
 नहीं है, क्योंकि, ऐसा होनेमें विरोध है । इस कारण स्थितिवधस्थानप्ररूपणामें
 प्ररूपणा प्रमाण और अल्पबहुत्व ये तीन अनुयोगद्वार हैं । उनमेंसे प्ररूपणाकी
 अपेक्षा चौदह जीवसमासोंके पृथक् पृथक् स्थितिवधस्थान हैं ।

शका - यहाँ स्थितिवधस्थान ऐसा कहनेपर किन्का ग्रहण किया गया है ?

स्थितिवधरस स्थानमवस्थाविशेष इति यावत् । एदेसिं द्विदिवधविससाण गहण । जहण्ण द्विदिमुषकरसद्विदीए सोहिय एगरूवे पक्खित्ते द्विदिवधट्टाणाणि होति, तेसिं गहणमिदि उत होदि । परूवणा गदा ।

सव्यएइदियाण द्विदिवधट्टाणाणि पल्लिदोवमरस असखेज्जदिभागो । कुदो ? अप्पण्णो जहण्णावाहाए समऊणाए अप्पण्णो समऊणजहण्णद्विदीए ओवट्टिदाए एगमावाधाकदय-
मागच्छदि । पुणो एदमावलियाए असखेज्जदिभागमेत्तआवाधाट्टाणेहि गुणिय एगरूवे अवणिदे एइदिएसु द्विदिवधट्टाणविससो उप्पज्जदि, तत्थ एगरूवे पक्खित्ते द्विदिवधट्टाणुप्पत्तीदो । विगळिं दिएसु द्विदिवधट्टाणाण पमाण पल्लिदोवमरस सखेज्जदिभागो । कुदो ? सग सगउक्ककस्सा-
वाहाए सग सगउक्ककस्सद्विदीए ओवट्टिदाए एगमावाहकदयमागच्छदि । पुणो एदमावाह-
ट्टाणेहि आवलियाए संखेज्जदिभागमेत्तेहि गुणिदे पल्लिदोवमरस सखेज्जदिभागद्विदिवधट्टाणु-
प्पत्तिदसणादो । सण्णिपरिचियअपज्जत्तयस्स द्विदिवधट्टाणाणि अतोकोडाकोडिसागरोवम-
मेत्ताणि । कुदो ? समुक्ककस्सावाहाए समुक्ककस्सद्विदीए ओवट्टिदाए एगमावाहाकदयमा-

समाधान— जो बाधा जाता है वह य ध कहा जाता है । स्थिति ही यध, स्थितिवध इस प्रकार यहाँ क्रमधारय समास है । स्थितिवधका स्थान अर्थात् अवस्थाविशेष, इस प्रकार यहाँ तत्पुरुष समास है । इन स्थितिवधविशेषोंका ग्रहण किया गया है । अर्थात् जघन्य स्थितिको उत्कृष्ट स्थितिमेंसे घटा देनेपर जो शेष रहे उसमें एक अक्षका प्रक्षेप करनेपर स्थितिवधस्थान होते हैं, उनका यहा ग्रहण किया है, यह उक्त कथनका अभिप्राय है । परूपणा समास एद ।

समस्त पञ्चेन्द्रिय जीवोंके स्थितिवधस्थान परत्योपमके असख्यातयें भाग प्रमाण हैं, क्योंकि, एक समय कम अपनी अपनी आवाधाका अपनी अपनी एक समय कम जघन्य स्थितिमें भाग देनेपर एक आवाधाकाण्डकका प्रमाण आता है । फिर इसको आधलाके असख्यातयें भाग प्रमाण आवाधास्थानोंसे गुणित करके उसमेंसे एक अक्षको घटा देनेपर पञ्चेन्द्रिय जीवोंमें स्थितिवधस्थानविशेष उत्पन्न होता है । उसमें एक एक मिलानेपर स्थितिवधस्थान उत्पन्न होता है ।

विक्लेन्द्रिय जीवोंमें यधस्थानोंका प्रमाण परत्योपमका सख्यातयें भाग है । इसका कारण यह है कि अपनी अपनी उत्कृष्ट आवाधाका अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थितिमें भाग देनेपर एक आवाधाकाण्डक आता है । इसको आधलाके सख्यातयें भाग मात्र आवाधास्थानोंसे गुणित करनेपर परत्योपमके सख्यातयें भाग प्रमाण स्थितिस्थानोंकी उत्पत्ति देखा जाती है ।

सर्वा पञ्चेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिवधस्थान अत कोडाकोडि सागरोपम प्रमाण हैं । इसका कारण यह है उत्कृष्ट आवाधाका अपनी उत्कृष्ट स्थितिमें, भाग देनेपर है । फिर इसको जघन्य

गच्छति । पुणो एदग्निं सखेज्जावष्टियमेत्तथापाघाद्याणेहि जहण्णापाघादो सखेज्जगुणेहि गुणिदे सखेज्जसागरोवममेत्तद्विदिवधद्याणुपत्तीदो । सण्णिपचिदियपज्जत्तयस्स द्विदिवधद्याणाणि पाणावरणादीण सुग सगसमउणधुग्घिदीए परिदीणसग सगुत्तरसण-सगमेत्ताणि । एव पमाणपरूणणा गदा ।

सपहि वधद्याणाण अप्पावहुग उच्चदे । त जहा— सच्चत्थे;रा सुहेमइदिय-अपज्जत्तयस्स द्विदिवधद्याणाणि, पट्टिदोवगस्स असखेज्जदिभागपमाणत्तादो ।

वादेरेइदियअपज्जत्तयस्स द्विदिवंधद्याणाणि संखेज्जगुणाणि

॥ ३८ ॥

कुरो ? सुहुमेइदियअपज्जत्तयस्स द्विदिवधद्याणेहिदो वादेरेइदियअपज्जत्तयस्स सुहुमे इदियअपज्जत्तयस्सचरिमिद्विदिवधद्याणादो हेद्दा उर्वरी च सखेज्जगुणीचारद्याणाणमुवठभादो ।

सुहुमेइदियपज्जत्तयस्स द्विदिवंधद्याणाणि सखेज्जगुणाणि

॥ ३९ ॥

कुरो ? वादेरेइदियअपज्जत्तयस्सद्विद्विदीहिदो हेद्दा उर्वरी च वादेरेइदिय अपज्जत्तद्विदिवधद्याणेहिदो संखेज्जगुणद्विदिवधद्याणाण सुहुमेइदियपज्जत्तयस्स उवलभादो ।

सख्यातगुणे सख्यात आवली मात्र आयाधास्थानोंसे गुणित करनेपर सख्यात सागरोपम प्रमाण स्थिति-धस्थान उत्पन्न होते हैं ।

सहा एकेन्द्रिय अयात्तक जीवके सानावरणादिकोंके स्थिति-धस्थान अपनी अपनी एक समय कम ध्रुवस्थितिसे रहित अपने अपने क्रमसे अपनी अपनी स्थिति प्रमाण होते हैं । इस प्रकार प्रमाणरूपणा समाप्त हुई ।

अथ ध धस्थानोंका अल्पवहुत्व कहा जाता है । यथा—सूक्ष्म एकेन्द्रिय अयात्तक जीवके स्थिति-धस्थान सबसे स्तोत्र है, क्योंकि, वे परवोपमके असख्यातधे मात प्रमाण हैं ।

उनके वादर एकेन्द्रिय अयात्तकके स्थिति-धस्थान न सख्यातगुणे हैं ॥ ३८ ॥

इसका कारण यह है कि सूक्ष्म एकेन्द्रिय अयात्तकके स्थिति-धस्थानोंकी अपेक्षा वादर एकेन्द्रिय अयात्तकोंमें सूक्ष्म एकेन्द्रिय अयात्तकके प्रथम व उत्तम स्थिति-धस्थानमें नाच व ऊपर सख्यातगुणे धाचारस्थान पाये जाते हैं ।

उनमें सूक्ष्म एकेन्द्रिय अयात्तकके स्थिति-धस्थान सख्यातगुण हैं ॥ ३९ ॥

इसका कारण यह कि वादर एकेन्द्रिय अयात्तककी जघन्य व उत्कृष्ट स्थितिसे नीचे व ऊपर वादर एकेन्द्रिय अयात्तकके स्थिति-धस्थानोंसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अयात्तकोंमें सख्यातगुणे स्थिति-धस्थान पाये जाते हैं ।

वादेरइंदियपज्जत्तयस्स द्विदिवधट्टाणाणि सखेज्जगुणाणि ॥४०॥

कारण पुच्च व नत्तच्च ।

वीइंदियअपज्जत्तयट्टिदिवधट्टाणाणि असखेज्जगुणाणि ॥४१॥

को गुणगारो ? आवलियाए असखेज्जदिभागस्स सखेज्जदिभागो । कुदो ? वीइंदिय अपज्जत्तयस्स वीचारट्टाणाणि पलिदेवमस्स सखेज्जदिभागमेत्ताणि । एइदियाण पुण आवलियाए असखेज्जदिभागेण पलिदेवमे सखिदे तत्थ एगएउमेत्ताणि । जेण एत्थ हेट्ठिम-
रासिणा उवरिमरासीए ओवट्टिदाए आवलियाए असखेज्जदिभागस्स सखेज्जदिभागो आगच्छदि तेण सो गुणगारो होदि त्ति अवगममे ।

तस्सेव पज्जत्तयस्स द्विदिवधट्टाणाणि सखेज्जगुणाणि ॥४२॥

कुदो ? विसोदीए सक्खिभेण च देट्ठोअरि मज्जिमद्विदिवधट्टाणेहितो सखेज्जगुण-
द्विदिविसेसेसु वीचारदसणादो ।

तीइंदियअपज्जत्तयस्स द्विदिवधट्टाणाणि सखेज्जगुणाणि ॥४३॥

कारण सुगम । जहा सुहुमेइंदियअपज्जत्त वादेरइंदियअपज्जत्ताण' द्विदिवधट्टाणे-

उनमे वादेर एकेद्विय पर्याप्तकके स्थितिअधस्थान सख्यातगुणे हे ॥ ४० ॥

इसका कारण पहिलेके ही समान कहना चाहिये ।

उनमे द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिअधस्थान असख्यातगुणे हे ॥ ४१ ॥

गुणकार क्या है ? वह आवलीके असख्यातवें भागका सख्यातवा भाग है, पर्याप्तिक, द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकके वीचारस्थान पहलोपमके सख्यातवें भाग प्रमाण है । परंतु एकेद्वियके वीचारस्थान पहलोपममें आवलीके असख्यातवें भागका भाग देनेपर जो लघ हो उतने मात्र है । चूकि यहा नीचेकी राशिना ऊपरकी राशिमें भाग देनेपर आवलीके असख्यातवें भागका सख्यातवा भाग आता है, अत यह गुणकार होता है, ऐसा प्रतीत होता है ।

उनसे उसीके पर्याप्तकके स्थितिअधस्थान सख्यातगुणे हे ॥ ४२ ॥

इसका कारण यह है कि विगुडि और सखेदशसे नीचे, ऊपर और मध्यके स्थितिस्थानोंसे सख्यातगुणे स्थितिअधस्थानोंमें वीचार देखा जाता है ।

उनसे त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिअधस्थान सख्यातगुणे हे ॥ ४३ ॥

इसका कारण सुगम है ।

१ अर्थात् 'सुहुमेइंदियअपज्जत्ताण' इति पाठ ।

गच्छति । पुणो एदग्निह सरेज्जात्रलियमेत्तआघाघाट्टाणेहि जहण्णाघाघादो सखेज्जगुणेहि गुणिदे सरेज्जसागरोत्रमेत्तद्विदिवधट्टाणुपत्तीदो । सण्णिपचिदियपज्जत्तयस्स द्विदिवधट्टाणाणि णाणावरणादीण सग सगसमऊणधुवद्विदीण परिहीणसग सगुत्तरसग-सगमेत्ताणि । एव पमाणपस्वणा गदा ।

सपहि वधट्टाणाण अप्पात्रहुग उच्चदे । त जहा— सव्वत्थेना सुहमेइदिय अपज्जत्तयस्स द्विदिवधट्टाणाणि, पत्तिदोत्रमस्स असखेज्जदिभागपमाणत्तादो ।

वादरेइदियअपज्जत्तयस्स द्विदिवधट्टाणाणि सखेज्जगुणाणि
॥ ३८ ॥

कुदो ? सुहमेइदियअपज्जत्तयस्स द्विदिवधट्टाणेहिंदो वादरेइदियअपज्जत्तयस्स सुहमे इदियअपज्जत्तपढमचरिमद्विदिवधट्टाणादो हेडा उव्वरिं च सखेज्जगुणवीचारट्टाणाणमुवलभादो ।

सुहमेइदियपज्जत्तयस्स द्विदिवधट्टाणाणि सखेज्जगुणाणि
॥ ३९ ॥

कुदो ? वादरेइदियअपज्जत्तजहण्णुककस्सद्विदीहिंदो हेडा उव्वरिं च वादरेइदिय अपज्जत्तद्विदिवधट्टाणेहिंदो सखेज्जगुणद्विदिवधट्टाणाण सुहमेइदियपज्जत्तयस्स उवलभादो ।

सत्यातगुणे सख्यात आवली माथ आघाघास्थानोंसे गुणित करनेपर सख्यात सागरोपम प्रमाण स्थितिबधस्थान उत्पन्न होते हैं ।

सद्या पक्वेन्द्रिय पर्याप्तक जीत्रके क्षानात्ररणादिकोंके स्थितिबन्धस्थान अपनी अपनी एक समय कम ध्रुवस्थितिसे रहित अपने अपने क्रमसे अपनी अपनी स्थिति प्रमाण होने हैं । इस प्रकार प्रमाणप्ररूपणा समाप्त हुई ।

अथ व धस्यानोंका अल्पवहुत्वं कहा जाता है । यथा—सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तक जीत्रके स्थितिबधस्थान समयमे स्तोत्र है, क्योंकि, ये पक्ष्योपमके असख्यातधं भाग प्रमाण हैं ।

उनके वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिबधस्थान सत्यातगुणे हैं ॥ ३८ ॥

इसका कारण यह है कि सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिबधस्थानोंकी अपेक्षा वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंमें सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके प्रथम व चरम स्थितिबधस्थानसे नीचे व ऊपर सत्यातगुणे चान्वारस्थान पाये जाते हैं ।

उनमें सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके स्थितिबधस्थान सत्यातगुण हैं ॥ ३९ ॥

इसका कारण यह कि वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तककी जघ य व उत्कृष्ट स्थितिसे नीचे व ऊपर वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिबधस्थानोंसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें सख्यातगुण स्थितिबधस्थान पाये जाते हैं ।

वादेरेइंदियपज्जत्तयस्स द्विदिवंधट्टाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥४०॥

कारण पुच्च व यत्तच्च ।

वीइंदियअपज्जत्तयद्विदिवधट्टाणाणि असखेज्जगुणाणि ॥४१॥

को गुणगारो ? आवलियाए असखेज्जदिभागस्स सखेज्जदिभागो । कुदो ? वीइंदिय अपज्जत्तयस्स, वीचारट्टाणाणि पलिदोवमस्स सखेज्जदिभागमेत्ताणि । एइंदियाण पुण आवलियाए अमखेज्जदिभागेण पलिदोवमे खड्दि तत्थ एगखड्मेत्ताणि । जेण एत्थ हेट्ठिम- रासिणा उवरिमगसीण ओउट्टिदाए आउलियाए जमखेज्जदिभागस्स सखेज्जदिभागो आगच्छदि तेण सो गुणगारो होदि ति अवगम्मदे ।

तस्सेव पज्जत्तयस्स द्विदिवधट्टाणाणि सखेज्जगुणाणि ॥४२॥

कुदो ? विसोहीए सक्खिलेसेण च हेट्ठोउरि-मज्झिमद्विदिवधट्टाणेहितो सखेज्जगुण- द्विदिविसेसेसु वीचारदसणादो ।

तीइंदियअपज्जत्तयस्स द्विदिवधट्टाणाणि सखेज्जगुणाणि ॥४३॥

कारण सुगम । जहा सुहुमेइंदियअपज्जत्त वादेरेइंदियअपज्जत्ताण' द्विदिवधट्टाणे-

उत्तमे वादेरे एकेन्द्रिय पर्याप्तके स्थितिबन्धस्थान सख्यातगुणे हैं ॥ ४० ॥

इसका कारण पहिलेके ही समान कहना चाहिये ।

उत्तमे द्वीन्द्रिय अपर्याप्तके स्थितिवन्धस्थान असख्यातगुण हैं ॥ ४१ ॥

गुणकार क्या है ? वह आधलीके असख्यातवें भागका सख्यातवा भाग है, क्योंकि, द्वीन्द्रिय अपर्याप्तके वीचारस्थान पल्लोपमके सख्यातवें भाग प्रमाण है । परन्तु एकेन्द्रियके वीचारस्थान पल्लोपममें आउलीके असख्यातवें भागका भाग देनेपर जो लब्ध हो उतने मात्र ह । चूँकि यहा नीचेकी राशिका ऊपरकी राशिमें भाग देनेपर आधलीके असख्यातवें भागका सख्यातवा भाग आता है, अतः वह गुणकार होता है, ऐसा प्रतीत होता है ।

उत्तमे उत्तीके पर्याप्तके स्थितिबन्धस्थान सख्यातगुणे हैं ॥ ४२ ॥

इसका कारण यह है कि विशुद्धि और सक्खिलेसे नीचे, ऊपर और मध्यके स्थितिस्थानोंसे सख्यातगुण स्थितिविशेषोंमें वीचार देखा जाता है ।

उत्तमे त्रीन्द्रिय अपर्याप्तके स्थितिवन्धस्थान सख्यातगुणे हैं ॥ ४३ ॥

इसका कारण सुगम है ।

हितो सुहृमेर्द्दियपञ्जत्ताण द्विदिवधट्टाणाणि सखेज्जगुणाणि, तथा सन्धविगर्द्धिदिय
अपञ्जत्तद्विदिवधट्टाणेहितो धीर्द्दियपञ्जत्तद्विदिवधट्टाणाणि क्रिण्ण सखेज्जगुणाणि । न,
मिण्णत्तादितादो मिण्णद्विदितादो च ।

तस्सेव पञ्जत्तयस्स द्विदिवधट्टाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥४४॥
सुगममेद ।

चउरिर्दियअपञ्जत्तयस्स द्विदिवधट्टाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥४५॥
मत्तिश्रमद्विदिवधेसेहितो हेट्टा उरि च सखेज्जगुणाण धीचारट्टाणाणेत्युत्तरणदो ।
तस्सेव पञ्जत्तयस्स द्विदिवधट्टाणाणि सखेज्जगुणाणि ॥४६॥
एत्थ कारण पुत्र व वत्तत्र ।

असण्णपच्चिदियअपञ्जत्तयस्स द्विदिवधट्टाणाणि संखेज्ज-
गुणाणि ॥ ४७ ॥

को गुणगारो ? सखेज्जा समया ।

तस्सेव पञ्जत्तयस्स द्विदिवधट्टाणाणि सखेज्जगुणाणि ॥४८॥
कारण सुगम ।

शुका— जैसे सूक्ष्म पत्रेर्द्रिय अपर्याप्तकों तथा यादर पत्रेर्द्रिय अपर्याप्तकोंके
स्थितिवधस्थानोंसे सूक्ष्म पत्रेर्द्रिय पर्याप्तकोंके स्थितिवधस्थान सरयातगुणे हैं, वैसे
ही सब विकलेर्द्रिय अपर्याप्तकोंके स्थितिवधस्थानोंसे द्वीर्द्रिय पर्याप्तकोंके स्थिति
वधस्थान सरयातगुणे क्यों नहीं हैं ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, उनकी जाति व स्थिति उनसे भिन्न है ।

उनसे उनके ही पर्याप्तकोंके स्थितिवधस्थान सरयातगुणे हैं ॥ ४४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उनसे चतुर्दि द्रिय अपर्याप्तकोंके स्थितिवधस्थान सरयातगुणे हैं ॥ ४५ ॥

क्योंकि, यहा मध्यम स्थितिवधस्थानोंसे नीचे व ऊपर सरयातगुणे धीचार
स्थान पाये जाते हैं ।

उनसे उसीके पर्याप्तकोंके स्थितिवधस्थान सरयातगुणे हैं ॥ ४६ ॥

यहा कारण पहिलेके ही समान बतलाना चाहिये ।

उनसे असनी पत्रेर्द्रिय अपर्याप्तकोंके स्थितिवधस्थान सरयातगुणे हैं ॥ ४७ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार यहा सरयात समय है ।

उनसे उसीके पर्याप्तकोंके स्थितिवधस्थान सरयातगुणे हैं ॥ ४८ ॥

इसका कारण सुगम है ।

सण्णिपंचिंदियअपज्जत्तयस्स द्विदिवधट्टाणाणि सखेज्जगुणाणि
॥ ४९ ॥

कुटो ? पल्लिवमस्स सखेज्जदिमानमेतअसण्णिपंचिंदियद्विदिवधट्टाणेहि अतो-
कोडाकोडिमेत्तसण्णिपंचिंदियअपज्जत्तयस्स द्विदिवधट्टाणेषु भागे हिंदेसु सखेज्जरूखोवलमादो ।

तस्सेव पज्जत्तयस्स द्विदिवधट्टाणाणि सखेज्जगुणाणि ॥ ५० ॥

कारण सुगम । सपहि जेणेसो अत्रोगाढअप्पाबहुगदडओ देसामासिओ तेणेरथ
अत्तभूद चउत्रियप्पमप्पाबहुग भणिस्सामो । त जहा — एत्थ अप्पाबहुग दुविह मूलपयडि
अप्पाबहुग अत्रोगाढअप्पाबहुग चेदि । तत्थ अत्रोगाढअप्पाबहुग दुविह सत्थाण परत्थाण-
भेदेण । तत्थ सत्थाण वत्तइस्सामो । त जहा — सव्वत्थोत्रो सुहुमेइदियअपज्जत्तयस्स
द्विदिवधट्टाणविसेसो । द्विदिवधट्टाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । जहणओ द्विदिवधो
सखेज्जगुणो । उक्कस्सओ द्विदिवधो विसेसाहियो । एव सुहुमेइदियपज्जत्त वादरेइदिय-
पज्जत्तापज्जत्ताण पि वत्तव्व । वेइदियअपज्जत्तयस्स सव्वत्थोत्रो द्विदिवधट्टाणविसेसो ।
द्विदिवधट्टाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । जहणओ द्विदिवधो सखेज्जगुणो । उक्कस्सओ
द्विदिवधो विसेसाहियो ।

उनमे सज्ञी पचेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितियन्धस्थान सरयात्तगुणे हैं ॥ ४९ ॥

इसका कारण यह है कि पचोपमके सरयात्तवें भाग मात्र असली पचेन्द्रियके
स्थितियन्धस्थानोंका अन्त कोडाकोडि मात्र सज्ञी पचेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितियन्ध
स्थानोंमें भाग देनेपर सरयात्त रूप प्राप्त होते हैं ।

उनसे उसीके पर्याप्तकके स्थितियन्धस्थान सरयात्तगुणे हैं ॥ ५० ॥

इसका कारण सुगम है । अथ चूकि यह अत्रोगाढअल्पबहुत्वदण्डक
देशामर्शक है, अत इसमें अन्तर्भूत चार प्रकारके अल्पबहुत्वको कहते हैं ।
यह इस प्रकार है— यहा अल्पबहुत्व मूत्रप्रवृत्तिअल्पबहुत्व और अत्रोगाढअल्पबहुत्वके
भेदसे दो प्रकार है । इनमें अत्रोगाढअल्पबहुत्व स्थस्थान और परस्थानके भेदसे दो प्रकार
है । उनमें स्थस्थानअल्पबहुत्वको कहते हैं । यथा— सूक्ष्म पचेन्द्रिय अपर्याप्तकका
स्थितियन्धस्थानविशेष सबसे रतोक्त है । उससे स्थितियन्धस्थान एक रूपसे विशेष
बाधक है । उनसे अग्रय स्थितियन्ध सरयात्तगुणा है । उससे उत्पद्य स्थितियन्ध
विशेष बाधक है ।

इसी प्रकार सूक्ष्म पचेन्द्रिय पर्याप्त और यादर पचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
भीयोंके भी कहना चाहिये । द्विन्द्रिय अपर्याप्तकका स्थितियन्धस्थानविशेष सबसे रतोक्त
है । उससे स्थितियन्धस्थान एक रूपसे विशेष बाधक है । उनसे अग्रय स्थितियन्ध
सरयात्तगुणा है । उनसे उत्पद्य स्थितियन्ध विशेष बाधक है ।

एव मेइदियपञ्जत्त तेइदिय चउरिंदिय अमण्णिपचिंदियपञ्जत्तापञ्जत्ताण च वत्तव । सण्णिपचिंदियअपञ्जत्तयस्स सच्चत्थोवो जहण्णओ द्विदियधो । द्विदियधद्वाणविसेमो सखेज्जगुणो । द्विदिनधद्वाणाणि एगरूवेण विसेमाहियाणि । उक्कस्सओ द्विदियधो विसेसाहियो । एव सण्णिपञ्जत्तयस्स वि वत्तव । एव सत्थाणप्पावहुग समत्त ।

परस्थानप्पावहुग वत्तइस्सामो । त जहा— मच्चत्थोवो सुहुमेइदियअपञ्जत्तयस्स द्विदिवधद्वाणविसेसो । द्विदिनधद्वाणाणि एगरूवेण विसेमाहियाणि । चादरेइदियअपञ्जत्त यस्स द्विदिनधद्वाणविसेसो सखेज्जगुणो । द्विदिवधद्वाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । सुहु मेइदियपञ्जत्तयस्स द्विदिवधद्वाणविसेमो सखेज्जगुणो । द्विदिनधद्वाणाणि विसेमाहियाणि एगरूवेण । चादरेइदियपञ्जत्तयस्स द्विदिवधद्वाणविसेमो सखेज्जगुणो । द्विदिवधद्वाणाणि एगरूवेण विसेमाहियाणि । मेइदियअपञ्जत्तयस्स द्विदिनधद्वाणविसेसो असखेज्जगुणो । द्विदिवधद्वाणाणि एगरूवेण विसेमाहियाणि । तस्मेव पञ्जत्तयस्स द्विदिनधद्वाणविसेसो सखेज्जगुणो । द्विदिवधद्वाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । तेइदियअपञ्जत्तयस्स द्विदि धद्वाणविसेसो सखेज्जगुणो । द्विदिनधद्वाणाणि एगरूवेण विसेमाहियाणि । तस्मेव पञ्जत्तयस्स द्विदिनधद्वाणविसेमो सखेज्जगुणो । द्विदिवधद्वाणाणि एगरूवेण विसेमाहियाणि ।

इसी प्रकार ठाी द्वय पर्याप्त तथा प्राी द्वय चतुरिंदिय और असखी पचेी द्वय पर्याप्त च अपर्याप्त जाओंके भा कहना चाहिये । सखी पचेी द्वय अपर्याप्तकका जघध स्थितिबध सबसे स्तोफ है । उससे स्थितिबधस्थानविशेष सरयातगुणा है । उससे स्थितिबधस्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उनसे उत्पद्य स्थितिबध विशेष अधिक है । इसी प्रकार सखी पचेी द्वय पर्याप्तकके भी कहना चाहिये । इस प्रकार स्थस्थान मरूपवहुतय समाप्त हुआ ।

परस्थान अरूपवहुतकका कहते हैं । यथा— सूक्ष्म एकेी द्वय अपर्याप्तकका स्थिति बधस्थानविशेष सबसे स्तोफ है । उससे उसीके स्थितिबधस्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उनसे चादर एकेी द्वय अपर्याप्तकका स्थितिबधस्थानविशेष सरयातगुणा है । उससे उसीके स्थितिबधस्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उनसे सूक्ष्म एकेी द्वय पर्याप्तकका स्थितिबधस्थानविशेष सरयातगुणा है । उससे उसीके स्थितिबधस्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उनसे चादर एकेी द्वय पर्याप्तकका स्थितिबधस्थानविशेष सरयातगुणा है । उससे उसीके स्थितिबधस्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उनसे सखी द्वय अपर्याप्तकका स्थितिबधस्थानविशेष असरयातगुणा है । उससे उसीके स्थितिबधस्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उनसे उसीके पर्याप्तकका स्थितिबधस्थानविशेष सरयातगुणा है । उससे उसीके स्थितिबधस्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उनसे सखी द्वय अपर्याप्तकका स्थितिबधस्थानविशेष सरयातगुणा है । उससे उसीके स्थितिबधस्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उनसे उसीके पर्याप्तकका स्थितिबधस्थानविशेष सरयातगुणा है । उससे उसीके स्थितिबधस्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उनसे उसीके पर्याप्तकका स्थितिबधस्थानविशेष सरयातगुणा है । उससे उसीके स्थितिबधस्थान एक रूपसे विशेष अधिक है ।

चउरिदियअज्जतयस्म द्विदिनपट्टाणविमेषो सपेज्जगुणो । द्विदियपट्टाणाणि एगस्सेण विमे
 माहियाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्म द्विदियपट्टाणविमेषो सखेज्जगुणो । द्विदिनपट्टाणाणि एग
 स्सेण विमेषाहियाणि । अमण्णिपचिंदियअज्जत्तयस्स द्विदिनपट्टाणविससो मसेज्जगुणो ।
 द्विदिनपट्टाणाणि एगस्सेण विमेषाहियाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्म द्विदियपट्टाणविमेषो
 सपेज्जगुणो । द्विदिनपट्टाणाणि एगस्सेण विमेषाहियाणि । वादरेइदियपज्जत्तयस्म जह-
 ण्णओ द्विदियधो मपेज्जगुणो । सुहुमेइदियपज्जत्तयस्म जहण्णओ द्विदियधो विमेषाहियो ।
 वादरेइदियअपज्जत्तयस्म जहण्णओ द्विदिनयो विमेषाहियो । सुहुमेइदियअज्जत्तयस्म
 जहण्णओ द्विदियधो विमेषाहियो । तस्सेव अपज्जत्तयस्म उक्कम्मओ द्विदिनधो विमे
 माहियो । वादरेइदियअपज्जत्तयस्स उक्कम्मद्विदियधो विमेषाहियो । सुहुमेइदियपज्जत्त
 यस्म उक्कम्मद्विदिनयो विमेषाहियो । वादरेइदियअज्जत्तयस्स उक्कम्मद्विदियधो विमे-
 साहियो । वेइदियअज्जत्तयस्म जहण्णद्विदिनयो सपेज्जगुणो । तस्सेव अज्जत्तयस्म
 जहण्णद्विदियधो विमेषाहियो । तस्सेव अपज्जत्तयस्म उक्कम्मद्विदिनधो विमेषाहियो ।
 तस्सेव पज्जत्तयस्म उक्कम्मद्विदिनयो विमेषाहियो । तेइदियपज्जत्तयस्स जहण्णद्विदिनधो
 विमेषाहियो । तस्सेव अपज्जत्तयस्म जहण्णद्विदिनधो विमेषाहियो । तस्सेव अपज्जत्त

विशेष अधिक है । उनसे चतुर्गिद्रय अपयाप्तकका स्थितियधस्थानविशेष सख्यातगुणा
 है । उससे उसाक स्थितियधस्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उनसे उसाके
 पयाप्तका स्थितियधस्थानविशेष सख्यातगुणा है । उसने उसाके स्थितियधस्थान
 एक रूपसे विशेष अधिक है । उसने उसाके पयाप्तका स्थितियधस्थान
 विशेष सख्यातगुणा है । उससे उसाके स्थितियधस्थान एक रूपसे विशेष अधिक
 है । उनने उसाके पर्याप्तका स्थितियधस्थानविशेष सख्यातगुणा है । उसने उसाके
 स्थितियधस्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उनसे वादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकका
 जघय स्थितियध सख्यातगुणा है । उसने सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकका जघय
 स्थितियध विशेष अधिक है । उनसे वादर एकेन्द्रिय अपयाप्तकका जघय स्थितियध
 विशेष अधिक है । उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपयाप्तकका जघय स्थितियध विशेष
 अधिक है । उससे उसाके अपयाप्तका उत्कृष्ट स्थितियध विशेष अधिक है ।
 उससे वादर एकेन्द्रिय अपयाप्तकका उत्कृष्ट स्थितियध विशेष अधिक है । उससे
 सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितियध विशेष अधिक है । उनने वादर
 एकेन्द्रिय पर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितियध विशेष अधिक है । उससे द्वैन्द्रिय
 पर्याप्तकका जघय स्थितियध सख्यातगुणा है । उसने उसाके अपयाप्तकका जघय
 स्थितियध विशेष अधिक है । उससे उसाके अपयाप्तकका उत्कृष्ट स्थितियध विशेष
 अधिक है । उससे उसाके पर्याप्तका उत्कृष्ट स्थितियध विशेष अधिक है । उससे
 त्रैन्द्रिय पर्याप्तकका जघय स्थितियध विशेष अधिक है । उसने उसाके अपयाप्तका
 जघय स्थितियध विशेष अधिक है । उससे उसाके अपयाप्तका उत्कृष्ट स्थितियध

यस्मिन् उक्कस्मद्विदिवधो विसेसाहिओ । तस्मैव पञ्जत्तयस्म उक्कस्मद्विदिवधो विसेसाहिओ । चउरिदियाञ्जत्तयस्म जहण्णद्विदिनधो विसेसाहिओ । तस्मैव अपञ्जत्तयस्म जहण्णद्विदिवधो विसेसाहिओ । तस्मैव अपञ्जत्तयस्म उक्कस्मद्विदिनधो विसेसाहिओ । तस्मैव पञ्जत्तयस्म उक्कस्मद्विदिनधो विसेसाहिओ । अमण्णिपचिदियञ्जत्तयस्म जहण्णओ द्विदिवधो सखेज्जगुणो । तस्मैव अपञ्जत्तयस्म जहण्णद्विदिवधो विसेसाहिओ । तस्मैव अपञ्जत्तयस्म उक्कस्मद्विदिवधो विसेसाहिओ । तस्मैव पञ्जत्तयस्म उक्कस्मद्विदिवधो विसेसाहिओ । सण्णिपचिदियपञ्जत्तयस्म जहण्णद्विदिवधो सखेज्जगुणो । तस्मैव अपञ्जत्तयस्म जहण्णद्विदिवधो सखेज्जगुणो । तस्मैव अपञ्जत्तयस्म द्विदिवधद्वानविसेसो सखेज्जगुणो । द्विदिनद्वानाणि एगस्सेण विसेसाहियाणि । उक्कस्मओ द्विदिवधो विसेसाहिओ । तस्मैव पञ्जत्तयस्म द्विदिवधद्वानविसेसो सखेज्जगुणो । द्विदिवधद्वानाणि एगस्सेण विसेसाहियाणि । उक्कस्मओ द्विदिनधा विसेसाहियो । एवमव्वागाद अप्पावहुम समत्त ।

मूलपद्यद्विदिवधो सत्याग परत्याणभरणेण दुविद्ध । तस्य सत्याणप्पानहुम वत्त इस्सामो । त जहा — सव्वत्थोवो सुहुमेदियअपञ्जत्तयस्म आउअस्म जहण्णओ द्विदिनधो ।

विशेष अधिक है । उससे उसके पर्याप्तका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उससे उसकी अपर्याप्तका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उससे उसकी अपर्याप्तका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उससे उसकी पर्याप्तका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उससे उसकी पर्याप्तका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उससे उसकी अपर्याप्तका जघन्य स्थितिबन्ध सख्यातगुणा है । उससे उसकी अपर्याप्तका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उससे उसकी अपर्याप्तका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उससे उसकी पर्याप्तका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उससे सहा पर्याप्तका जघन्य स्थितिबन्ध सख्यातगुणा है । उससे उसकी अपर्याप्तका जघन्य स्थितिबन्ध सख्यातगुणा है । उससे उसकी अपर्याप्तका स्थितिबन्धस्थानविशेष सख्यातगुणा है । उससे उसकी स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उनसे उसका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उससे उसकी पर्याप्तका स्थितिबन्धस्थानविशेष सख्यातगुणा है । उससे उसकी स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उनसे उसका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । इस प्रकार अव्वागादमन्त्रव्यहृत्त समाप्त हुआ ।

मूलप्रवृत्तिअल्पवहुव्य स्यान्स्थान और परस्थानके भेदसे दो प्रकार है । उनमेंसे स्थस्थानअल्पवहुव्यको कहते हैं । यथा—सहस्र एकेन्द्रिय अपर्याप्तकी आयुका जघन्य स्थितिबन्ध सबसे श्लोक है । उससे स्थितिबन्धस्थानविशेष सख्यातगुणा है ।

द्विदिवधद्वाणविसेसो सखेज्जगुणो । द्विदिवधद्वाणानि एगरूत्वेण विसेसाहियाणि । उक्क-
स्सओ द्विदिवधो विसेसाहिओ । तस्सेव णामा गोदाण द्विदिवधद्वाणविसेसो असत्तेज्जगुणो ।
द्विदिवधद्वाणानि एगरूत्वेण विमेमाहियाणि । चटुण्ण कम्माण द्विदिवधद्वाणविसेसो विसे-
साहिओ । द्विदिवधद्वाणानि एगरूत्वेण विसेसाहियाणि । मोहणीयस्म द्विदिवधद्वाण-
विसेसो सखेज्जगुणो । द्विदिवधद्वाणानि एगरूत्वेण विसेसाहियाणि । णामा गोदाण जहण्णओ
द्विदिवधो असत्तेज्जगुणो । उक्कस्सद्विदिवधो विसेसाहिओ । चटुण्ण कम्माण जहण्ण-
द्विदिवधो विसेसाहिओ । उक्कस्सद्विदिवधो विसेसाहिओ । मोहणीयस्म जहण्णओ द्विदि-
वधो सत्तेज्जगुणो । उक्कस्सओ द्विदिवधो विसेसाहिओ ।

एउ सुहुमेइदियपज्जत्तयस्स यादरेइदियपज्जत्तापज्जत्ताण च पत्तेय पत्तेय सत्थाणप्पा-
पहुग वत्तन्व । धेदियअपज्जत्तयस्म सच्चत्थोवो आउअस्म जहण्णओ द्विदिवधो । द्विदि-
वधद्वाणविसेसो सत्तेज्जगुणो । द्विदिवधद्वाणानि एगरूत्वेण विमेमाहियाणि । उक्कस्सओ
द्विदिवधो विसेसाहिओ । णामा गोदाण द्विदिवधद्वाणविसेसो असत्तेज्जगुणो । द्विदिवध
द्वाणानि एगरूत्वेण विसेसाहियाणि । चटुण्ण कम्माण द्विदिवधद्वाणविसेसो विसेसाहिओ ।

उससे स्थितियधस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उनसे उत्पृष्ट स्थितियध
विशेष अधिक है । उससे उसीके नाम च गोत्र कर्मका स्थितियधस्थानविशेष
असत्त्यातगुणा है । उससे स्थितियधस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उनसे
चार कर्मोंका स्थितियधस्थानविशेष विशेष अधिक है । उससे स्थितियधस्थान एक
रूपसे विशेष अधिक है । उससे मोहनीयका स्थितियधस्थानविशेष सत्त्यातगुणा है ।
उससे स्थितियधस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उनसे नाम च गोत्र कर्मका
जघय स्थितियध असत्त्यातगुणा है । उससे उत्पृष्ट स्थितियध विशेष अधिक है ।
उससे चार कर्मोंका जघय स्थितियध विशेष अधिक है । उससे उत्पृष्ट स्थितियध
विशेष अधिक है । उससे मोहनीयका जघय स्थितियध सत्त्यातगुणा है । उससे
उत्पृष्ट स्थितियध विशेष अधिक है ।

इसा प्रकार सूक्ष्म पक्षेन्द्रिय पयाप्तक और यादर पक्षेन्द्रिय पयाप्तक च
अपयाप्तकमेंसे प्रत्येकके स्थान अव्यवहृत्य कहना चाहिये । द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकके
आयु कर्मका जघय स्थितियध सरसे स्तोक है । उससे स्थितियधस्थानविशेष
सत्त्यातगुणा है । उससे स्थितियधस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उनसे उत्पृष्ट
स्थितियध विशेष अधिक है । नाम च गोत्र कर्मका स्थितियधस्थानविशेष
असत्त्यातगुणा है । उससे स्थितियधस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उनसे चार
कर्मोंका स्थितियधस्थानविशेष विशेष अधिक है । उससे स्थितियधस्थान एक

द्विदिवधद्वाणानि एगरूपेण विसेसादियाणि । मोहणीयस्स द्विदिवधद्वाणविसेसो सवेज्ज-
 गुणो । द्विदेवप्रद्वाणानि एगरूपेण विसेसादियाणि । पामा गोदाण' जहण्णओ द्विदिवधो
 सवेज्जगुणो । उक्कस्मओ द्विदिवधो विसेसादियो । चदुण्ण कम्माण जहण्णओ द्विदि-
 वधो विसेसादियो । उक्कस्मओ द्विदिवधो विसेसादियो । मोहणीयस्स जहण्णओ द्विदि-
 वधो सवेज्जगुणो । उक्कस्मओ द्विदिवधो विसेसादियो ।

एव वेददियपञ्जत्तयस्स तेददिय चउग्गिदियपञ्जात्तापञ्जत्ताण असण्णिपचिदिय
 अपञ्जत्ताथ च सत्याणप्यात्तुग कायत्त । असण्णिपचिदियपञ्जत्तयस्स सत्तयोपे आउअस्स
 जहण्णओ द्विदिवधो । द्विदिवधद्वाणविसेसो अमपञ्जगुणो । कारण उअरि उच्चिद्विदि' । द्विदि-
 वधद्वाणानि एगरूपेण विसेसादियाणि । उक्कस्मओ द्विदिनये, विसेसादियो । पामा गोदाण
 द्विदिवधद्वाणविसेसो अमपञ्जगुणो । द्विदिवधद्वाणानि एगरूपेण विसेसादियाणि । चदुण्ण
 कम्माण द्विदिवधद्वाणविसेसो विसेसादियो । द्विदिवधद्वाणानि एगरूपेण विसेसादियाणि । मोह-
 णीयस्स द्विदिवधद्वाणविसेसो सवेज्जगुणो । द्विदिवधद्वाणानि एगरूपेण विसेसादियाणि । पामा
 गोदाण जहण्णओ द्विदिवधो सवेज्जगुणो । उक्कस्मओ द्विदिवधो विसेसादियो । चदुण्ण कम्माण
 जहण्णओ द्विदिवधो विसेसादियो । उक्कस्मओ द्विदिनये विसेसादियो । मोहणीयस्स जहण्णओ

रूपसे विशेष अधिक है । उससे मोहनीय कर्मका स्थिति वस्थान सत्यातगुणा है ।
 उससे स्थिति वस्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उससे नाम व गोत्र कर्मका
 जघ य स्थिति व सत्यातगुणा है । उससे उअए स्थितिवध विशेष अधिक है ।
 उससे चार कर्मोंका जघ य स्थितिवध विशेष अधिक है । उससे उअए स्थितिवध
 विशेष अधिक है । उससे मोहनीयका जघ य स्थितिवध सत्यातगुणा है । उससे
 उअए स्थिति व विशेष अधिक है ।

इसी प्रकार द्विदिय पयात्तक, त्रिदिय व चतुर्दिय पर्याप्तक अपर्याप्तक
 तथा असत्ता परेदिय अपयात्तकके भावस्थान अत्यद्भुतया कथन करना चाहिये ।
 उससे पंचोदिय पर्याप्तकके गानु कर्मका जघ य स्थितिवध सत्यसे स्तोक है । उससे
 स्थितिव वस्थानविशय असत्यातगुणा है । कारण आगे कहेंगे । उससे स्थितिव-वस्थान
 एक रूपसे विशेष अधिक है । उअए स्थितिवध विद्याय अधिक है । नाम व गोत्र कर्मका
 स्थितिव-वस्थानविशय असत्यातगुणा है । स्थितिव वस्थान एक रूपसे विशेष अधिक है ।
 चार कर्मोंका स्थितिव-वस्थानविशय विशेष अधिक है । स्थितिव-वस्थान एक रूपसे
 विशेष अधिक है । मोहनीय कर्मका स्थितिव वस्थानविशय सत्यातगुणा है ।
 स्थितिव-वस्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । नाम व गोत्र कर्मका जघ य
 स्थितिव व सत्यातगुणा है । उअए स्थितिव व विशेष अधिक है । चार कर्मोंका जघ य
 स्थितिव व विशेष अधिक है । उअए स्थितिव-वध विद्याय अधिक है । मोहनीय कर्मका

१ अ-आयथा उवरेमाचिदि' काश्चो उवरेमाचिदि इति पाठ ।

द्विदिवधो सगेज्जगुणो । उक्कस्मओ द्विदिबंधो विसेसाहियो ।

सण्णिपचिदियपज्जत्तयस्म सञ्चत्वोवो आउअस्स जहण्णओ द्विदिबंधो । द्विदिवध-
द्वानविसेसो अमवेज्जगुणो । द्विदिबध्वाणाणि एगस्सेण विसेमाहियाणि । उक्कस्मओ
द्विदिवधो विसेसाहियो । णामा-गोदाण जहण्णओ द्विदिवधो सखेज्जगुणो । चदुण्ण कम्माण
जहण्णओ द्विदिवधो विसेसाहियो । मोहणीयम्म जहण्णओ द्विदिवधो सखेज्जगुणो ।
णामा-गोदाण द्विदिवध्वाणविसेसो सखेज्जगुणो । द्विदिबध्वाणाणि एगस्सेण विसेसाहियाणि ।
उक्कस्मओ द्विदिवधो विसेसाहियो । चदुण्ण कम्माण द्विदिवध्वाणविसेसो विसेसाहियो ।
द्विदिबध्वाणाणि एगस्सेण विसेसाहियाणि । उक्कस्मओ द्विदिवधो विसेसाहियो ।
मोहणीयम्म द्विदिबध्वाणविसेसो सखेज्जगुणो । द्विदिबध्वाणाणि एगस्सेण विसेसाहियाणि ।
उक्कस्मओ द्विदिबंधो विसेसाहियो ।

एव सण्णिपचिदियअपज्जत्तयम्म वि सत्थाणपानहुग वत्तव । णवरि आउअम्म द्विदिवध-
द्वानविसेसो मखेज्जगुणो । द्विदिबध्वाणाणि एगस्सेण विसेसाहियाणि । उक्कस्मओ द्विदिवधो
विसेसाहियो । णामा-गोदाण जहण्णओ द्विदिवधो अमखेज्जगुणो । उवरि पुव्व व । एव
सत्थाणपानहुग समत्त ।

जघन्य स्थितिवध सख्यातगुणा हे । उत्तृष्ट स्थितिवध विशेष अधिक हे ।

सखी पचेन्द्रिय पर्याप्तके आयु कर्मका जघन्य स्थितिवध सबसे स्तोक हे ।
स्थितिवधस्थानविशेष असख्यातगुणा हे । स्थितिवधस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं ।
उत्तृष्ट स्थितिवध विशेष अधिक हैं । नाम ध गोत्र कर्मका जघन्य स्थितिवध सख्यातगुणा
हे । चार कर्मका जघन्य स्थितिवध विशेष अधिक है । मोहनीयका जघन्य स्थितिवध
सख्यातगुणा हे । नाम ध गोत्र कर्मका स्थितिवधस्थानविशेष सख्यातगुणा हे । स्थिति
वधस्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उत्तृष्ट स्थितिवध विशेष अधिक है । चार
कर्मका स्थितिवधस्थानविशेष विशेष अधिक है । स्थितिवधस्थान एक रूपसे विशेष
अधिक हैं । उत्तृष्ट स्थितिवध विशेष अधिक है । मोहनीयका स्थितिवधस्थानविशेष
सख्यातगुणा है । स्थितिवधस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्तृष्ट स्थितिवध
विशेष अधिक है ।

इसी प्रकार सखी पचेन्द्रिय अपर्याप्तके भी स्वस्थानधरपवहुत्य कहना चाहिये ।
विशेष इतना है कि आयु कर्मका स्थितिवधस्थानविशेष सख्यातगुणा है । स्थितिवध
स्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्तृष्ट स्थितिवध विशेष अधिक है । नाम ध गोत्र
कर्मका जघन्य स्थितिवध असख्यातगुणा है । आगे पूर्वके समान ही कहना चाहिये ।
इस प्रकार स्वस्थान धरपवहुत्य समाप्त हुआ ।

एतो अट्टण कम्माण चोइमजीवममासेसु परत्थाणप्पावहुग वत्तइस्सामो । त जहा—
 सन्वयोत्रो' चोइसण्ण जीवममासाण आउअस्स जहण्णओ ट्टिदिचघो । धारसण्ह जीवममासाण
 आउअस्स ट्टिदिचघट्टाणमिसेमो सखेज्जगुणो । ट्टिदिचघट्टाणाणि एगस्खेण विसेसाहियाणि ।
 उक्खमओ ट्टिदिचघो विमेसाहिओ । अमणिपचिंदियपज्जत्तयस्स आउअस्स ट्टिदिचघट्टाण
 विसेसो अमखेज्जगुणो । कुदो ? असण्णिपचिंदियपज्जत्तएसु गिरय-देवाउआणमुक्खस्सेण पस्सिदो-
 मस्स अमखेज्जदिभागमेत्तट्टिदिचघुवलभादो । ट्टिदिचघट्टाणाणि एगस्खेण विसेसाहियाणि ।
 उक्खमओ ट्टिदिचघो विमेसाहिओ । सुहुमेइदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाण ट्टिदिचघट्टाणविसेमो
 अमखेज्जगुणो । ट्टिदिचघट्टाणाणि एगस्खेण विसेसाहियाणि । तस्सेव चट्टुण्ण कम्माण ट्टिदिच
 घट्टाणविसेसो विसेसाहिओ । ट्टिदिचघट्टाणाणि एगस्खेण विमेसाहियाणि । तस्सेव मोहणीयस्स
 ट्टिदिचघट्टाणविसेमो सखेज्जगुणो । ट्टिदिचघट्टाणाणि एगस्खेण विसेसाहियाणि । चादएइदिय
 अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाण ट्टिदिचघट्टाणमिसेमो सखेज्जगुणो । ट्टिदिचघट्टाणाणि एगस्खेण
 विसेसाहियाणि । तस्सेव चट्टुण्ण कम्माण ट्टिदिचघट्टाणविसेमो विसेसाहिओ । ट्टिदिचघ
 ट्टाणाणि एगस्खेण विमेसाहियाणि । तस्सेव मोहणीयस्य ट्टिदिचघट्टाणविसेसो सखेज्जगुणो ।
 ट्टिदिचघट्टाणाणि एगस्खेण विमेसाहियाणि । सुहुमेइदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाण ट्टिदिच

अथ यद्वासे आगे चौदह जीवसमासोंमें आठ कर्मोंके परस्थान अल्पबहुत्वको कहते
 हैं । यथा—चौदह जीवसमासोंके आयु कर्मका जघन्य स्थितिव-घ सबसे स्तोत्र है । वारह
 जीवसमासोंके आयु कर्मका स्थितिव-घस्थानविशेष सख्यातगुणा है । स्थितिव-घस्थान
 एक रूपसे विनाश अधिक हैं । उत्पन्न स्थितिव-घ विशेष अधिक है । असन्धी पचेन्द्रिय
 पर्याप्तके आयुका स्थितिव-घस्थानविशेष असख्यातगुणा है, क्योंकि, असन्धी पचेन्द्रिय
 पथाप्तकोंमें नारकायु और देवायुका स्थितिव-घ उत्कृष्टसे पत्योपमके असख्यातवें भाग मात्र
 पाया जाता है । उससे स्थितिव-घस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्पन्न स्थिति
 व-घ विशेष अधिक है । सूक्ष्म पचेन्द्रिय अपर्याप्तके नाम घ गोत्र कर्मका स्थितिव-घ
 स्थानविशेष असख्यातगुणा है । स्थितिव-घस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसी
 जीवके चार कर्मोंका स्थितिव-घस्थानविशेष विशेष अधिक है । स्थितिव-घस्थान एक
 रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके मोहनीयका स्थितिव-घस्थानविशेष सख्यातगुणा है ।
 स्थितिव-घस्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । चादर पचेन्द्रिय अपर्याप्तके नाम घ
 गोत्रका स्थितिव-घस्थानविशेष सख्यातगुणा है । स्थितिव-घस्थान एक रूपसे विशेष
 अधिक हैं । उसीके चार कर्मोंका स्थितिव-घस्थानविशेष विशेष अधिक है । स्थितिव-घ
 स्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके मोहनीयका स्थितिव-घस्थानविशेष
 सख्यातगुणा है । स्थितिव-घस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म
 पचेन्द्रिय पर्याप्तके नाम घ गोत्र कर्मका स्थितिव-घस्थानविशेष सख्यातगुणा

द्वानाणि एगस्त्वेण विसेमाद्वियाणि । उन्कमओ द्विदिबधो विसेसाहिओ । तस्मेन पन्नतयस्स मोहणीयस्स द्विदिबधद्वानविसेमो सरोब्रगुणो । द्विन्धिबधद्वानाणि एगस्त्वेण विसेमाद्वियाणि । तस्सेन पन्नतयस्स मोहणीयस्स उन्कमसओ द्विदिबधो विसेसाहिओ । सपदि एदेण सुचेण सुद्धचउव्विहमप्पावहुग पस्सुविद ।

वच्यत इति नथ, स्थितिरवासौ वचधच स्थिति नथ, तस्म स्थान विशेष स्थिति नथ स्थान आनाधस्थानमित्यर्थे । अथवा वचन नथ, स्थितेरन्य स्थिति नथ, सोऽस्मिन् तिष्ठतीति स्थिति नथ स्थानम् । तदो आनाधाद्वानपस्त्वणाए वि द्विदिबधद्वानपस्त्वणसण्णा होदि ति बहु आवाधाद्वानपस्त्वण पस्त्वणा पमाणप्पावहुएहि कस्सामो । त जहा—चौदसण्ह जीवसमासाण मत्थि आवाधाद्वानाणि । आवाधाद्वानाणि नाम किं? जहण्णानाहमुन्कम्यावाहादो सोद्विय सुद्धमेसेमिं एगस्त्वे पस्विनते आनाधाद्वान । एमत्थो सन्वत्य पस्त्वेद्ववो । पस्त्वणा गदा । चदुण्णमेइदियजीवसमासाणमानाधाद्वानपमार्णमावलियाए अससेज्जदिभागो । अट्टण

अधिक है । स्थितिबधस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उदृष्ट स्थितिबध विशेष अधिक है । उसीसे पर्याप्तकृते मोहनीयका स्थितिबधस्थानविशेष सख्यातगुण है । स्थितिबधस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीसे पर्याप्तकृते मोहनीयका उदृष्ट स्थितिबध विशेष अधिक है । इस प्रकार इस सूत्रसे सूचित चार प्रकारके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की है ।

जो वाधा जाता है वह वन्ध कहलाता है । 'स्थितिश्चासौ वचधश्च स्थितिबध' इन क्रमधारेय समासके अनुसार स्थितिको ही यहा वचध कहा गया है । उसके स्थान पर्याप्त विशेषका नाम स्थितिबधस्थान है । अभिप्राय यह कि यहा स्थितिबधस्थानसे आवाधास्थानको लिया गया है । अथवा वचन क्रियाका नाम वचध है, 'स्थितिका वचध स्थितिबध' इस प्रकार यहा तत्पुरुष समास है । वह स्थितिबध जहा रहता है वह स्थितिबधस्थान कहा जाता है । इसीलिये आनाधास्थानप्ररूपणाकी भी स्थितिबधस्थान प्ररूपणा सहा है । अत एव प्ररूपणा, प्रमाण और अल्पबहुत्व इन तीन अनुयोगद्वाराके द्वारा आवाधास्थानप्ररूपणाको करते हैं । यथा—चौदह जीवसमासोंके आवाधास्थान हैं ।

वाचा—आवाधास्थान न्तिसे कहते हैं ?

समाधान—उदृष्ट आनाधामेंसे जघव आनाधाको घटाकर जो शेष रहे उसमें एक अक्षको मिला देनेपर आनाधास्थान होता है ।

इस अर्थकी प्ररूपणा सभी जगह करना चाहिये । प्ररूपणा समास हुई ।

चार एरेन्द्रिय जीवसमासोंके आवाधास्थानोंका प्रमाण आवलीके असख्यात

१ अ-आ काप्रतिपु 'आवाध' इति पाठ । २ प्राप्रती 'पस्त्वणा (पमाण) मप्पावहुए कस्सामो' इति पाठ । ३ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ काप्रतिपु 'सुद्धमेसेमिं', प्राप्रती 'सुद्धमे (सेसेमिं) इति पाठ । ४ प्रतिपु 'वमाण' इति पाठः ।

विगलिंदियाणमाथाधाट्टाणपमाणमावलियाए सखेज्जदिभागो । सण्णिपचिंदियअपज्जत्तयस्स आवाधाट्टाणपमाण सखेज्जावलियाओ । त च अतोमुहुत्त । तस्सेव पज्जत्तयस्स आवाधाट्टाण सखेज्जाणि वाससहस्साणि । एव पमाण गद ।

अप्पावहुग दुविह अन्वोगाढप्पावहुग मूलपयडिअप्पावहुग चेदि । तत्थ अन्वोगाढ-
अप्पावहुअ पि दुविह मत्याणप्पावहुअ परत्याणप्पावहुअ चेदि । तत्थ सत्याणप्पावहुअ
वत्तइस्सामो— सन्वत्योवो सुहुमेइदियअपज्जत्तयस्स आवाधाट्टाणविसेसो । आवाधाट्टाणाणि
एगरूवेण विसेसाहियाणि । जहणिया आवाधा असखेज्जगुणा । उक्कस्मिया आवाधा
विसेसाहिया । एव सुहुमेइदियपज्जत्त घादरेइदियपज्जत्तापज्जत्ताण च घत्तव । सन्वत्योवो
चेइदियअपज्जत्तयस्स आवाधाट्टाणविसेसो । आवाधाट्टाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि ।
जहणिया आवाधा सखेज्जगुणा । उक्कस्मिया आवाधा विसेसाहिया । एव चेइदियपज्जत्त-
तेइदिय-चउरिंदिय-असण्णिपचिंदियपज्जत्तापज्जत्ताण च सत्याणप्पावहुग वत्तव । सण्णि-
पचिंदियअपज्जत्तयस्स सन्वत्योवो जहणिया आवाहा । आवाहाट्टाणविसेसो सखेज्जगुणो ।
आवाहाट्टाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्मिया आवाहा विसेसाहिया । एव

भाग मात्र है । आठ विकले द्वयोके आवाधास्थानोंका प्रमाण आयलीके सख्यातवें भाग है । सधी पचेन्द्रिय अपर्याप्तके आवाधास्थानोंका प्रमाण सख्यात आवलिया है । यह अतर्मुहूर्तके धराधर है । उसीके पर्याप्तके आवाधास्थान सख्यात हजार घप प्रमाण है । इस प्रकार प्रमाणप्ररूपणा समाप्त हुई ।

अल्पबहुत्व दो प्रकार है—अध्वोगाढअल्पबहुत्व और मूलप्रवृत्तिअल्पबहुत्व । इनमें अध्वोगाढअल्पबहुत्व भी दो प्रकार है—स्वस्थान अल्पबहुत्व और परस्थान अल्पबहुत्व । इनमें स्वस्थान अल्पबहुत्वको कहते हैं—सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका आवाधास्थानविशेष सयसे स्तोक हैं । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । जघय आवाधा असख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है ।

इसी प्रकार सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त तथा घादर एकेन्द्रिय पर्याप्तक एवं अपर्याप्तक जीर्णोंके भी कहना चाहिये । द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकका आवाधास्थानविशेष सयसे स्तोक है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । जघय आवाधा स्वस्थानगुणी है । उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है ।

इसी प्रकार द्वीन्द्रिय पर्याप्त तथा त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, एवं अस्तङ्गी पचेन्द्रिय पर्याप्तक व अपर्याप्तकके भी स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये । सधी पचेन्द्रिय अपर्याप्तककी जघय आवाधा सयसे स्तोक है । आवाधास्थानविशेष स्वस्थातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । इसी

१ मप्रतिपाटोऽयम् । अ-आ-का-प्रतिषु 'पचिंदियअपज्जत्तापज्जत्ताण', ताप्रतो 'पचिंदियअपज्जत्त पज्जत्ताण' इति पाठः ।

[एव सण्णिपचिंदिय] पत्रत्तम्म वि वत्तय । सत्याण गत् ।

परत्याणे सत्रथोवो सुहुमेइदियअपत्रत्तयम्म आवा माट्टाणविमेमो । आनाधाट्टाणाणि एगस्वेण विमेमाहियाणि । वादरेइदियअपत्रत्तयम्म आनाधाट्टाणविमेमो सखेअगुणो । आनाधाट्टाणाणि एगस्वेण विसेमाहियाणि । सुहुमेइदियपत्रत्तयम्म आवाधाट्टाणविमेमो सखेअगुणो । आवाधाट्टाणाणि एगस्वेण विसेसाहियाणि । वादरेइदियपत्रत्तयम्म आवाधाट्टाणविमेसो सखेअगुणो । आवाधाट्टाणाणि एगस्वेण विसेमाहियाणि । वेइदियअपत्रत्तयम्म आनाधाट्टाणविमेमो सखेअगुणो । आनाधाट्टाणाणि एगस्वेण विमेमाहियाणि । तस्मेअपत्रत्तयम्म आनाधाट्टाणविसेमो सखेअगुणो । आनाधाट्टाणाणि एगस्वेण विसेमाहियाणि । तेइदियअपत्रत्तयम्म आवाधाट्टाणविसेमो सखेअगुणो । आवाधाट्टाणाणि एगस्वेण विमेमाहियाणि । तस्मेव पत्रत्तयम्म आनाधाट्टाणविसेसो सखेअगुणो । आवाधाट्टाणाणि एगस्वेण विसेमाहियाणि । एव चउरिंदिय-असण्णिपचिंदियपत्रत्तापत्रत्ताण च णेदव्य ।

तदो वादरेइदियपत्रत्तयस्स जहणिया आनाधा सखेअगुणा । सुहुमेइदियपत्रत्तयस्स जहणिया आवाहा विसेसाहिआ । वादरेइदियअपत्रत्तयस्स जहणिया आवाहा विसेसाहिआ । सुहुमेइदियअपत्रत्तयस्स जहणिया आवाधा विसेसाहिआ । तस्मेअपत्रत्तयस्स उक्कस्सिया आवाहा विसेसाहिआ । वादरेइदियअपत्रत्तयस्स उक्कस्सिया आवाधा विसेसाहिआ ।

प्रकार सखी पचेन्द्रिय पर्याप्तकरे भी कहना चाहिये । स्वस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

परस्थानकी अपेक्षा सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकरा आवाधास्थानविशेष सत्रसे स्तोत्र है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकरा आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । वादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकरा आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । वादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकरा आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकरा आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके पर्याप्तकरा आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकरा आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके पर्याप्तकरा आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । इसी प्रकार चतुरिन्द्रिय और अन्तरी पचेन्द्रिय पर्याप्तकरा तथा अपर्याप्तकरे भी ले जाना चाहिये ।

उससे वादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकरा जघय आवाधा सख्यातगुणी है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकरा जघय आवाधा विशेष अधिक है । वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकरा जघय आवाधा विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकरा जघय आवाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकरा उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । वादर एकेन्द्रिय

सुद्धुमेडदियपञ्जत्तयस्म उक्कस्मिया आनाहा विमेमाहिया । वादरण्णदियपञ्जत्तयस्स उक्कस्मिया आनाहा विसेमाहिया । नेडदियपञ्जत्तयस्म जहणिया आनाहा मत्तेज्जगुणा । तस्सेव अपञ्जत्तयस्स जहणिया आनाहा विमेमाहिया । तस्सेव अपञ्जत्तयस्म उक्कसिया आनाहा विसेसाहिया । तस्सेव पञ्जत्तयस्म उक्कस्मिया आनाहा विसेसाहिया । तेडदियपञ्जत्तयस्म जहणिया आनाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपञ्जत्तयस्म जहणिया आनाहा विमेमाहिया । तस्सेव अपञ्जत्तयस्म उक्कस्मिया आनाहा विसेसाहिया । तस्सेव पञ्जत्तयस्म उक्कस्सिया आवाहा विमेसाहिया । एव चउरिंदियपञ्जत्तापञ्जत्ताण पि णेदञ्च । तदो अमण्णिपचिंदियपञ्जत्तयस्स जहणिया आनाहा सत्तेज्जगुणा । तस्सेव अपञ्जत्तयस्स जहणिया आवाहा विसेमाहिया । तस्सेव अपञ्जत्तयस्म उक्कस्सिया आनाहा विमेमाहिया । तस्सेव पञ्जत्तयस्म उक्कसिया आवाहा विसेसाहिया । तदो सण्णिपचिंदियपञ्जत्तयस्म जहणिया आनाहा सत्तेज्जगुणा । तस्सेव अपञ्जत्तयस्स जहणिया आवाहा सत्तेज्जगुणा । तस्सेव अपञ्जत्तयस्म आवाधाट्टाणविसेसो सत्तेज्जगुणो । आनाधाट्टाणाणि एगरूवेण विमेमाहियाणि । उक्कस्सिया आवाहा विसेसाहिया । तस्सेव पञ्जत्तयस्म आवाधाट्टाणविसेसो सत्तेज्जगुणो । आवाहाट्टाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आवाहा विसेसाहिया । एवमज्योगाढमप्पात्तुग समत्त ।

अपर्याप्तक्री उत्तृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । सूक्ष्म पचेन्द्रिय पर्याप्तक्री उत्तृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । धादर पचेन्द्रिय पर्याप्तक्री उत्तृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । डीन्द्रिय पर्याप्तक्री जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । उसीके अपर्याप्तक्री जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तक्री उत्तृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तक्री उत्तृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । त्रीन्द्रिय पर्याप्तक्री जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तक्री जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तक्री उत्तृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तक्री उत्तृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । इसी प्रकार चतुरिन्द्रिय पर्याप्तक व अपर्याप्तकके भी ले जाना चाहिये ।

इससे आगे अन्धशी पचेन्द्रिय पर्याप्तक्री जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । उसीके अपर्याप्तक्री जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तक्री उत्तृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तक्री उत्तृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । उससे सनी पचेन्द्रिय पर्याप्तक्री जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । उसीके अपर्याप्तक्री जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । उसीके अपर्याप्तक्री आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उत्तृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तक्री आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उत्तृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । इस प्रकार अज्योगाढमत्तपुत्तुग समाप्त हुआ ।

मूलपयडिअप्यानहुग दुविह सयाण परत्थाण चेदि । तय सयाणे पयद—सच योवो सुहुमेइदियअपअत्तयम्म णामा-गोदाणमावाधाट्ठाणविसेमो । आवाहाट्ठाणाणि एगम्मेण विसेमाहियाणि । चटुण्ण कम्माणमावाधाट्ठाणविसेसो विसेमाहिओ । आनाधाट्ठाणाणि एगम्मेण विसेमाहियाणि । मोहणीयस्स आनाहाट्ठाणविसेसो सखेअगुणो । आवाधाट्ठाणाणि एगम्मेण विसेसाहियाणि । आउअस्स जहणिया आनाहा अयत्तेअगुणा । आवाहाट्ठाणविसेमो सखेअगुणो । आवाहाट्ठाणाणि एगम्मेण विसेमाहियाणि । उअस्सिया आवाहा विसेमाहिया । णामा गोदाण जहणिया आवाहा सखेअगुणा । उअस्सिया आनाहा विसेमाहिया । चटुण्ण कम्माण जहणिया आवाहा विसेमाहिया । उअस्सिया आनाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स जहणिया आनाहा सखेअगुणा । उअस्सिया आनाहा विसेमाहिया ।

एय सुहुमेइदियअत्त पादरेइदियअपअत्ताण पि यत्तयं । पादरेइदियअत्तएणु सच योवो णामा गोदाणमावाधाट्ठाणविसेमो । आनाधाट्ठाणाणि एगम्मेण विसेसाहियाणि । चटुण्ण कम्माणमावाधाट्ठाणविसेसो विसेमाहिओ । आवाधाट्ठाणाणि एगम्मेण विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आनाधाट्ठाणविसेमो सखेअगुणो । आवाधाट्ठाणाणि एगम्मेण विसेमाहियाणि । आउअस्स जहणिया आवाहा अयत्तेअगुणा । णामा-गोदाण जहणिया आनाहा सखेअगुणा । उअस्सिया आवाहा विसेमाहिया । चटुण्ण कम्माण जहणिया

मूलप्रवृत्ति अल्पदृष्ट्य दो प्रकार है—स्वस्थान अल्पदृष्ट्य और परस्थान अल्पदृष्ट्य । उनमें यदा स्वस्थान अल्पदृष्ट्यका प्रकरण है—सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका आवाधास्थानविशेष सबसे स्तोत्र है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । चार कर्मोंका आवाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । मोहनीयका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । आयु कर्मकी जघन्य आवाधा असख्यातगुणी है । आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष है । उत्पट आवाधा विशेष अधिक है । नाम व गोत्रकी जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । उत्पट आवाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंकी जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । उत्पट आवाधा विशेष अधिक है । मोहनीय कर्मकी जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । उत्पट आवाधा विशेष अधिक है ।

इसी प्रकार सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक और पादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके भी कहना चाहिये । पादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें नाम व गोत्रका आवाधास्थानविशेष सबसे स्तोत्र है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । चार कर्मोंका आवाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । मोहनीयका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । आयुकी जघन्य आवाधा असख्यातगुणी है । नाम व गोत्रकी जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । उत्पट आवाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंकी जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । उनकी उत्पट

आनाहा विसेसाहिया । उन्कस्मिया आवाहा विमेमाहिया । मोहणीयस्स जहण्णिया आवाहा सखेज्जगुणा । उन्कस्मिया आनाहा विसेसाहिया । आउअस्म आवाधाट्टाणविमेसो सखेज्जगुणो । आनाधाट्टाणाणि एगस्व्वेण विमेमाहियाणि । उन्कस्मिया आवाहा विमेमाहिया ।

वेइदिअपज्जत्तयस्स सन्वत्थोणो णामा-गोदाणमानाधाट्टाणविमेसो । आवाधाट्टाणाणि एगस्व्वेण विमेसाहियाणि । चटुण्ण कम्माणमानाधाट्टाणविसेसो विसेमाहियो । आवाहाट्टाणाणि एगस्व्वेण विमेसाहियाणि । मोहणीयस्स आवाधाट्टाणविमेसो सखेज्जगुणो । आवाहाट्टाणाणि एगस्व्वेण विमेसाहियाणि । आउअस्म जहण्णिया आनाहा सखेज्जगुणा । आवाहाट्टाणविसेसो सखेज्जगुणो । आवाहाट्टाणाणि एगस्व्वेण विसेमाहियाणि । उन्कस्मिया आवाहा विसेसाहिया । णामा गोदाण जहण्णिया आनाहा सखेज्जगुणा । उन्कस्मिया आवाहा विसेसाहिया । चटुण्ण कम्माण जहण्णिया आवाहा विमेमाहिया । उन्कस्मिया आवाहा विमेमाहिया । मोहणीयस्य जहण्णिया आवाहा सखेज्जगुणा । उन्कस्मिया आवाहा विसेसाहिया । एव तेइदिय-चउरिदिय अमण्णिपचिदियअपज्जत्तण पि णेद्व ।

सन्वत्थोणो वेइदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाण आवाहाट्टाणविमेसो । आवाधाट्टाणाणि एगस्व्वेण विसेसाहियाणि । चटुण्ण कम्माणमावाधाट्टाणविमेसो विमेसाहियो । आवाधाट्टाणाणि एगस्व्वेण विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आनाधाट्टाणविसेसो सखेज्जगुणो ।

आवाधा विशेष अधिक्क है । मोहनीयकी जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । उत्तृष्ट आवाधा विशेष अधिक्क है । आयुक्क आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधा स्थान एक रूपसे विशेष अधिक्क है । उत्तृष्ट आवाधा विशेष अधिक्क है ।

द्वीन्द्रिय अपर्याप्तके नाम ध गोत्रका आवाधास्थानविशेष सखसे स्तोक है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक्क हैं । चार कम्मोक्क आवाधास्थानविशेष विशेष अधिक्क है । आवाधास्थान एक्क रूपसे विशेष अधिक्क हैं । मोहनीयका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक्क है । आयुकी जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । आवाधास्थान विशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक्क हैं । उत्तृष्ट आवाधा विशेष अधिक्क है । नाम ध गोत्रकी जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । उत्तृष्ट आवाधा विशेष अधिक्क है । चार कम्मोक्की जघन्य आवाधा विशेष अधिक्क है । उत्तृष्ट आवाधा विशेष अधिक्क है । मोहनीयकी जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । उत्तृष्ट आवाधा विशेष अधिक्क है । इमी प्रकार त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और अस्तही पचेन्द्रिय अपर्याप्तके भी ले जाना चाहिये ।

द्वीन्द्रिय पर्याप्तके नाम ध गोत्रका आवाधास्थानविशेष सखसे स्तोक है । आवाधास्थान एक्क रूपसे विशेष अधिक्क हैं । चार कम्मोक्क आवाधास्थानविशेष विशेष अधिक्क है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक्क है । मोहनीयका आवाधास्थान

आनाहाट्टाणाणि एगस्वेण विसेसाहियाणि । चटुण्ण कम्माणमावाहाट्टाणविसेसो विसेसाहियो । आनाहाट्टाणाणि एगस्वेण विसेसाहियाणि । मोहणीयस्म आवाहाट्टाण विसेसो मरेज्जगुणो । आवाहाट्टाणाणि एगस्वेण विसेसाहियाणि । तस्सेव पञ्जत्तयस्म णामा-गोदा गमानाहाट्टाणविसेसो मरेज्जगुणो । आवाहाट्टाणाणि एगस्वेण विसेसाहियाणि । चटुण्ण कम्माणमानाहाट्टाणविसेसो विसेसाहियो । आवाहाट्टाणाणि एगस्वेण विसेसाहियाणि । मोहणीयस्म आवाहाट्टाणविसेसो मरेज्जगुणो । आवाहाट्टाणाणि एगस्वेण विसेसाहियाणि । चोदमग्ग जीवममासाणमाउअस्स जहण्णिया आवाहा मरेज्जगुणा । सत्तण्ण पि अपज्जत्त जीवममासाणमाउअस्म आनाहाट्टाणविसेसो मरेज्जगुणो । आनाहाट्टाणाणि एगस्वेण विसेसाहियाणि । उक्कम्मिया आवाहा विसेसाहिया । सुहुमेइदियपज्जत्तयस्म आउअस्म आवाहाट्टाणविसेसो मरेज्जगुणो । आवाहाट्टाणाणि एगस्वेण विसेसाहियाणि । उक्कस्मिया आवाहा विसेसाहिया । वादरएइदियपज्जत्तयस्म णामा-गोदाण जहण्णिया आनाहा मरेज्जगुणा । सुहुमेइदियपज्जत्तयस्म णामा गोदाण जहण्णिया आवाहा विसेसाहिया । वादरेइदियपज्जत्तयस्म णामा-गोदाण जहण्णिया आनाहा विसेसाहिया । सुहुमेइदिय अपज्जत्तयस्म णामा-गोदाण जहण्णियो आवाहा विसेसाहिया । तस्सेव णामा-गोदाण-

अधिक हैं । चार कर्मोंका आवाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहणीयका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधा स्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके पर्याप्तके नाम घ गोत्रका आवाधास्थान विशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कर्मोंका आवाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहणीयका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चौदह जीवममासोंके आयुको जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । सार्ता ही अपर्याप्तक जीवममासोंके आयुका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उरुए आवाधा विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तके आयुका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उरुए आवाधा विशेष अधिक है । वादर एकेन्द्रिय पर्याप्तके नाम घ गोत्रकी जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तके नाम घ गोत्रकी जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके नाम घ गोत्रकी जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । उसीके नाम घ गोत्रकी उरुए आवाधा विशेष अधिक है ।

१ अत्रमावतोऽग्रे मोहणी आवाहाट्टाणविसेसो मरेज्जगुणो इत्यधिक पाठ्य समुदायते ।

२ अ आनाहाट्टाणविसेसाहिया इति पाठ । ३ मरतिपाठोऽप्यम् । अ-आ नाप्रतिपु 'सुहुमेइदियपज्ज' इति पाठ । ४ काप्रती 'णामा गोदाणजुक्क' इति पाठ । ५ नाप्रती 'सुहुमेइदियपज्ज' णामा गोदाण जहं आवाहा विस । [वादरेइदियपज्ज णामागोदाण जह आनाहा विसेसाहिया । सुहुमेइदिय विसेसो] । तस्सेव इति पाठ ।

अमग्निपचिदियपजनतयस्म चटुण्ण कम्माण जहणिया आनाहा विमेसाहिया । तस्सेअ अपजनतयस्म चटुण्ण कम्माण जहणिया आवाहा विमेसाहिया । तस्सेअ अपजनतयस्म चटुण्ण कम्माणमुद्धस्मिया आनाहा विमेसाहिया । तस्सेअ पजनतयस्म चटुण्ण कम्माण-मुद्धस्सिया आनाहा विमेसाहिया । अमग्निपचिदियपजनतयस्म मोहणीयस्म जहणिया आनाहा सखेज्जगुणा । तस्सेअ अरजनतयस्म मोहणीयस्म जहणिया आनाहा विमेसाहिया । तस्सेअ अरजनतयस्म मोहणीयस्म उद्धस्सिया आवाहा विमेसाहिया । तस्सेअ पजनतयस्म मोहणीयस्म उद्धस्मिया आवाहा विमेसाहिया । अमग्निपचिदियरजनतयस्म णामी-गोदाणं जहणिया आवाहा सखेज्जगुणा । चटुण्ण कम्माण जहणिया आवाहा विमेसाहिया । मोहणीयस्म जहणिया आनाहा सखेज्जगुणा । तस्सेअ अपजनतयस्म णामा-गोदाणं जहणिया आनाहा सखेज्जगुणा । चटुण्ण कम्माण जहणिया आवाहा विमेसाहिया । मोहणीयस्म जहणिया आवाहा सखेज्जगुणा । तस्सेअ अपजनतयस्म णामा-गोदाणमावाहा-द्वानविसेमो सखेज्जगुणो । आनाहाद्वानाणि एगस्सेण विमेसाहियाणि । उद्धस्मिया आनाहा विमेसाहिया । चटुण्ण कम्माणमावाहाद्वानविसेमो विमेसाहियो । आनाहाद्वानाणि एगस्सेण विमेसाहियाणि । उद्धस्मिया आवाहा विमेसाहिया । मोहणीयस्म आवाहाद्वान-विसेमो सखेज्जगुणो । आनाहाद्वानाणि एगस्सेण विसेसाहियाणि । उद्धस्मिया आवाहा विमेसाहिया । तेउदियपजनताणमाउअस्स आनाहाद्वानविसेमो सखेज्जगुणो । आवाहा

पचेन्द्रिय पर्याप्तके चार कर्मोकी जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तके चार कर्मोकी जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तके चार कर्मोकी उत्तर आवाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तके चार कर्मोकी उत्तर आवाधा विशेष अधिक है । अमग्नी पचेन्द्रिय पर्याप्तके मोहनीयकी जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । उसीके अपर्याप्तके मोहनीयकी जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तके मोहनीयकी उत्तर आवाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तके मोहनीयकी उत्तर आवाधा विशेष अधिक है । सभी पचेन्द्रिय पर्याप्तके नाम ध गोत्रकी जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । चार कर्मोकी जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । उसीके अपर्याप्तके नाम ध गोत्रकी जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । चार कर्मोकी जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । उसीके अपर्याप्तके नाम ध गोत्रका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उत्तर आवाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोका आवाधास्थान विशेष विशेष अधिक है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उत्तर आवाधा विशेष अधिक है । मोहनीयका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उत्तर आवाधा विशेष अधिक है । त्रिन्द्रिय पर्याप्तको आवाधा आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक है ।

१ अत्रत्यो 'सण्णपचिदियणामा-', आप्रतो 'सण्णपचि० णामा-', ताप्रतो 'सण्णपचिदिय [७७] णामा' इति पाठ ।

द्व्याणाणि एगस्वेण विमेमाहियाणि । उक्कस्मिया आवाहा विसेसाहिया । चउरिंदिय-
पज्जत्तयस्स आउअस्म आनाहद्व्याणविमेमो सखेज्जगुणो । आनाहद्व्याणाणि एगस्वेण
विमेमाहियाणि । उक्कस्सिया आनाहा विमेमाहिया । वेइदियपज्जत्तयस्स आउअस्स
आनाहद्व्याणविमेमो सखेज्जगुणो । आवाहाद्व्याणाणि एगस्वेण विमेमाहियाणि । उक्कस्सिया
आनाहा विमेमाहिया । मण्णिपचिंदियपज्जत्तयस्स णामा गोदाण आवाहाद्व्याणविमेमो सखेज्ज-
गुणो । आनाहद्व्याणाणि एगस्वेण विमेमाहियाणि । उक्कस्सिया आवाहा विसेसाहिया ।
तस्सेन पज्जत्तयस्स चदुण्ण कम्माणमावाहाद्व्याणविसेसो विमेमाहियो । आवाहाद्व्याणाणि
एगस्वेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आवाहा विसेमाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स
मोहणीयस्स आनाहद्व्याणविमेमो सखेज्जगुणो । आवाहाद्व्याणाणि एगस्वेण विमेमाहियाणि ।
उक्कस्मिया आनाहा विसेसाहिया । वादेइदियपज्जत्तानमाउअस्स आवाहाद्व्याणविमेमो
विमेमाहियो । आवाहाद्व्याणाणि एगस्वेण विसेसाहियाणि । उक्कस्मिया आनाहा विसेसा-
हिया । सण्णिअमण्णिपचत्तानमाउअस्स आनाहद्व्याणविमेमो सखेज्जगुणो । आवाहाद्व्याणाणि
एगस्वेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आवाहा विसेसाहिया ।

सपहि एदेण सुतेण परुविददो वि अप्पावहुअदडयाणि जुगय वत्तइरसामो । त पि
उभयदो अप्पावहुअ दुनिह—अत्रोगाहअप्पानहुअ मूलपयडिअप्पावहुअ चेदि । तत्थ
अत्रोगाहअप्पावहुअ दुविह—मत्थ्याण परत्थ्याण चदि । तत्थ सत्थ्याणे पयद—सच्चत्थोवो

उत्तृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । चतुरिन्द्रिय पर्याप्तके आयुका आवाधास्थानविशेष
सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उत्तृष्ट आवाधा विशेष
अधिक है । द्वीन्द्रिय पर्याप्तके आयुका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधा
स्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उत्तृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । सप्तौ पचेन्द्रिय
पर्याप्तके नाम ष गोत्रका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे
विशेष अधिक है । उत्तृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तके चार कर्मोंका
आवाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक है ।
उत्तृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तके मोहनीयका आवाधास्थानविशेष
सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उत्तृष्ट आवाधा विशेष
अधिक है । वर एकेन्द्रिय पर्याप्तके आयुका आवाधास्थानविशेष विशेष अधिक है ।
आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उत्तृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । सप्तौ ष
असप्तौ पचेन्द्रिय पर्याप्तके आयुका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान
एक रूपसे विशेष अधिक है । उत्तृष्ट आवाधा विशेष अधिक है ।

अथ इमं सूत्रसे प्ररूपित दोनों ही अल्पप्रत्ययदण्डोंको एक साथ कहते हैं । वह दोनों
प्रकारका अल्पप्रत्यय अत्रोगाहअल्पप्रत्यय और मूलप्रत्ययअल्पप्रत्ययके भेदसे दो प्रकार
है । उनमें अत्रोगाहअल्पप्रत्यय दो प्रकार हेम्य—स्थान अल्पप्रत्यय और परम्यान्
अल्पप्रत्यय । उनमें स्थान अल्पप्रत्ययका प्रकरण है—सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके

सुहृद्भेददियपञ्चतयस्म आवाहद्वाणविमेसो । आवाहद्वाणानि एगस्त्वेण विसेसाहियाणि ।
जहणिया आवाहा असखेज्जगुणा । उक्स्सिया आवाहा विमेसाहिया । द्विदिनपद्वाण-
विमेसो असखेज्जगुणो । द्विदिनपद्वाणानि एगस्त्वेण विसेसाहियाणि । जहण्णओ द्विदिनधो
असखेज्जगुणो । उक्स्सओ द्विदिनधो विमेसाहियो । एव सुहृद्भेददियपञ्चत-वादेरेदिय-
पञ्चतापञ्चताण च णेद्व्यो ।

सज्ज्वोसो वेददियपञ्चतयस्म आवाहद्वाणविसेसो । आवाहद्वाणानि एगस्त्वेण
विसेसाहियाणि । जहणिया आवाहा सखेज्जगुणा । उक्स्सिया आवाहा विमेसाहिया ।
द्विदिनपद्वाणविमेसो असखेज्जगुणो । द्विदिनपद्वाणानि एगस्त्वाहियाणि । जहण्णओ
द्विदिनधो सखेज्जगुणो । उक्स्सओ द्विदिनधो विमेसाहियो । एव वेददियपञ्चत-वेददिय-
चउरिदिन-अमणिपचिदिनपञ्चतापञ्चताण च णेद्व्य ।

अज्जयोवा सण्णिपचिदिनपञ्चतयस्म जहणिया आवाहा । आवाहद्वाणविमेसो
सखेज्जगुणो । आवाहद्वाणानि एगस्त्वेण विसेसाहियाणि । उक्स्सिया आवाहा
विमेसाहिया । जहण्णओ द्विदिनधो असखेज्जगुणो । द्विदिनपद्वाणविसेसो सखेज्जगुणो ।
द्विदिनपद्वाणानि एगस्त्वेण विसेसाहियाणि । उक्स्सओ द्विदिनधो विमेसाहियो । एव
सण्णिपञ्चताण च णेद्व्य ।

आवाधास्थानविशेष सरसे स्तोक है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं ।
जघय आवाधा असखयातगुणी है । उत्तए आवाधा विशेष अधिक है । स्थितिष-अस्थान
विशेष असखयातगुणा है । स्थितिष-अस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । जघय
स्थितिष-अस्थानविशेष असखयातगुणा है । उत्तए स्थितिष-अस्थान अधिक है । इमी प्रकार सुहृद्
एकेन्द्रिय पर्याप्तों आर वादर परे द्वय पर्याप्तों च अपर्याप्तोंके भी ले जाना चाहिये ।

द्वीन्द्रिय अपर्याप्तोंके आवाधास्थानविशेष सबसे स्तोक है । आवाधास्थान एक
रूपसे विशेष अधिक हैं । जघय आवाधा सखयातगुणी है । उत्तए आवाधा विशेष
अधिक है । स्थितिष-अस्थानविशेष असखयातगुणा है । स्थितिष-अस्थान एक रूपसे
विशेष अधिक हैं । जघ य स्थितिष-अस्थानविशेष असखयातगुणा है । उत्तए स्थितिष-अस्थान
अधिक है । इमी प्रकार द्वीन्द्रिय पर्याप्तों तथा त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय च असखी पचेन्द्रिय
पर्याप्तों च अपर्याप्तोंके भी ले जाना चाहिये ।

सखी परे द्वय अपर्याप्तोंके जघय आवाधा सरसे स्तोक है । आवाधास्थानविशेष
सखयातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्तए आवाधा विशेष
अधिक है । जघय स्थितिष-अस्थानविशेष असखयातगुणा है । स्थितिष-अस्थानविशेष सखयात
गुणा है । स्थितिष-अस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्तए स्थितिष-अस्थान
अधिक है । इमी प्रकार सखी पचेन्द्रिय पर्याप्तोंके भी जानना चाहिये ।

परत्यागे पयद— सन्वयोनो सुहुमेइदियअपञ्चतयस्म आवाहाद्वानविसेसो ।
 आवाहाद्वानाणि एगम्वेण निसेमाहियाणि । वादरेइदियअपञ्चतयस्स आवाहद्वानविसेसो
 मपेअगुणो । आवाहाद्वानाणि एगम्वेण निसेमाहियाणि । सुहुमेइदियअपञ्चतयस्म आवाहा-
 द्वानविसेसो सरेअगुणो । आवाहाद्वानाणि एगम्वेण विसेमाहियाणि । वादरेइदियअपञ्चतयस्स
 आवाहद्वानविसेसो सखेअगुणो । आवाहद्वानाणि एगम्वेण निसेमाहियाणि । वेइदिय-
 अपञ्चतयस्स आनाहद्वानविसेसो असखेअगुणो । आवाहाद्वानाणि एगम्वेण निसेमाहियाणि ।
 तस्सेव पञ्चतयस्स आवाहद्वानविसेसो मपेअगुणो । आनाहद्वानाणि एगम्वेण विसेसाहियाणि ।
 [तीइदियअपञ्चतयस्स आवाहाद्वानविसेसो मपेअगुणो । आनाहाद्वानाणि एगम्वेण
 विसेसाहियाणि ।] तस्सेव पञ्चतयस्स आनाहद्वानविसेसो सरेअगुणो । आवाहद्वानाणि
 एगम्वेण विसेमाहियाणि । चउरिदियअपञ्चतयस्स आवाहाद्वानविसेसो सरेअगुणो ।
 आवाहद्वानाणि एगम्वेण निसेसाहियाणि । तस्सेव पञ्चतयस्स आवाहद्वानविसेसो
 सरेअगुणो । आवाहाद्वानाणि एगम्वेण निसेमाहियाणि । असण्णिपदिदियअपञ्चतयस्स
 आनाहद्वानविसेसो सरेअगुणो । आवाहाद्वानाणि एगम्वेण विसेमाहियाणि । तस्सेव
 पञ्चतयस्स आवाहाद्वानविसेसो सरेअगुणो । आनाहाद्वानाणि एगम्वेण विसेसाहियाणि ।
 वादरेइदियअपञ्चतयस्स जहणिया आवाहा सरेअगुणा । सुहुमेइदियअपञ्चतयस्स जहणिया

अथ परस्थान अल्परहस्यका प्रकरण है— सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तका आवाधास्थान
 विनोप सयसे स्तोत्रक है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । वादर एकेन्द्रिय
 अपर्याप्तका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष
 अधिक हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधा
 स्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । वादर एकेन्द्रिय पर्याप्तका आवाधास्थानविशेष
 सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । द्वीन्द्रिय अपर्याप्तका
 आवाधास्थानविशेष अस्तव्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं ।
 उमीने पर्याप्तका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे
 विशेष अधिक हैं । द्वीन्द्रिय अपर्याप्तका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है ।
 आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उमीने पर्याप्तका आवाधास्थानविशेष
 सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तका
 आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उमीने
 पर्याप्तका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक
 हैं । अस्तव्यातगुणा आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान
 एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उमीने पर्याप्तका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है ।
 आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । वादर एकेन्द्रिय पर्याप्तका जन्म आवाधा
 सख्यातगुणी है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तका जन्म आवाधा विशेष अधिक हैं । वादर

आनाहा विसेमाहिया । घादरेडदियअपब्रतयस्म जहणिया आवाहा विसेमाहिया । सुहुमेइदियअपब्रतयस्म जहणिया आवाहा विसेमाहिया । तम्मेव अपब्रतयस्म उक्खस्मिया आवाहा विसेमाहिया । घादरेडदियअपब्रतयस्म उक्खस्मिया आवाहा विसेमाहिया । सुहुमेइदियअपब्रतयस्म उक्खस्मिया आनाहा विसेमाहिया । घादरेडदियअपब्रतयस्म उक्खस्मिया आनाहा विसेमाहिया । तम्मेव अपब्रतयस्म जहणिया आवाहा विसेमाहिया । तम्मेव अपब्रतयस्म उक्खस्मिया आवाहा विसेमाहिया । तम्मेव अपब्रतयस्म उक्खस्मिया आनाहा विसेमाहिया । एव तेउदिय-
 चउरिदियाण णेदञ्च । अमणियपिण्डियअपब्रताण जहणिया आवाहा सत्तेवगुणा । सेमतिण्य पदाग वेडदियमतो । मणियअपब्रतयस्म जहणिया आनाहा सत्तेवगुणा । तम्मेव अपब्रतयस्म जहणिया आनाहा सत्तेवगुणा । तम्मेव अपब्रतयस्म आवाहट्टाणविसेमो सत्तेवगु-
 गुणो । आवाहट्टाणाणि एगम्मेण विसेमाहियाणि । उक्खस्मिया आनाहा विसेमाहिया । तम्मेव अपब्रतयस्म आनाहट्टाणविसेमो सत्तेवगुणो । आनाहट्टाणाणि एगम्मेण विसेमाहि-
 याणि । उक्खस्मिया आनाहा विसेमाहिया । सुहुमेइदियअपब्रतयस्म द्विदिबधट्टाणविसेमो धमत्तेवगुणो । द्विदिबधट्टाणाणि एगम्मेण विसेमाहियाणि । घादरेडदियअपब्रतयस्म द्विदिबधट्टाणविसेमो सत्तेवगुणो । द्विदिबधट्टाणाणि एगम्मेण विसेमाहियाणि । सुहुमेइदिय-

परेन्द्रिय अर्थात्तर्फी जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । सूक्ष्म परेन्द्रिय अर्थात्तर्फी जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । उतीने अर्थात्तर्फी उत्तुष्ट आवाधा विशेष अधिक है । वादर परेन्द्रिय अर्थात्तर्फी उत्तुष्ट आवाधा विशेष अधिक है । सूक्ष्म परेन्द्रिय अर्थात्तर्फी उत्तुष्ट आवाधा विशेष अधिक है । वादर परेन्द्रिय अर्थात्तर्फी उत्तुष्ट आवाधा विशेष अधिक है । द्वीन्द्रिय अर्थात्तर्फी जघन्य आवाधा सत्यतगुणी है । उसीके अर्थात्तर्फी जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । उसीके अर्थात्तर्फी उत्तुष्ट आवाधा विशेष अधिक है । उसीके अर्थात्तर्फी उत्तुष्ट आवाधा विशेष अधिक है । इसी प्रकार श्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवाके छे जला चाहिये ।

आगे धसकी परेन्द्रिय अर्थात्तर्फी जघन्य आवाधा सत्यतगुणी है । आगेके शेष तीन पर्यंका अत्युत्तुष्ट द्वीन्द्रिय जीवाके समान है । मन्त्री परेन्द्रिय अर्थात्तर्फी जघन्य आवाधा सत्यतगुणी है । उसीके अर्थात्तर्फी जघन्य आवाधा सत्यतगुणी है । उतीने अर्थात्तर्फी आवाधास्थानविशेष सत्यतगुणी है । आवाधान्ध्यान एक रूपसे विशेष अधिक है । उत्तुष्ट आवाधा विशेष अधिक है । उसीके अर्थात्तर्फी आवाधास्थान विशेष सत्यतगुणी है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उत्तुष्ट आवाधा विशेष अधिक है । सूक्ष्म परेन्द्रिय अर्थात्तर्फी स्थितिधन्यस्थानविशेष सत्यतगुणी है । स्थिति धन्यस्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । वादर परेन्द्रिय अर्थात्तर्फी स्थिति धन्यस्थानविशेष सत्यतगुणी है । स्थिति धन्यस्थान एक रूपसे विशेष अधिक है ।

विसेमाहो । सुहुमेन्द्रियपञ्चतयस्म उक्त्वस्मओ द्विदिनधो विसेसाहो । वादरेन्द्रिय-
पञ्चतयस्म उक्त्वस्मओ द्विदिनधो विसेमाहो । धेडदियपञ्चतयस्म जहणओ द्विदिनधो
सखेज्जगुणो । तस्मेअपञ्चतयस्स जहणओ द्विदिनधो विसेमाहो । तस्मेअ उक्त्वस्मओ
द्विदिनधो विसेमाहो । तस्मेअ पञ्चतयस्म उक्त्वस्मओ द्विदिनधो विसेमाहो ।
तेइदियपञ्चतयस्म जहणओ द्विदिनधो विसेमाहो । तस्मेअ अपञ्चतयस्स जहणओ
द्विदिनधो विसेमाहो । तस्मेअ उक्त्वस्मओ द्विदिनधो विसेसाहो । तस्मेअ पञ्चतयस्म
उक्त्वस्मओ द्विदिनधो विसेमाहो । चउरिन्द्रियपञ्चतयस्म जहणओ द्विदिनधो
विसेमाहो । मेसतिणिग्गपदाण नेइन्द्रियमगो । अमण्णिपचिदियपञ्चतयस्म जहणओ
द्विदिनधो सरेज्जगुणो । मेसतिणिग्गपदाण नेन्द्रियमगो । मण्णिपचिदियपञ्चतयस्म जहणओ
द्विदिनधो सरेज्जगुणो । तस्मेअपञ्चतयस्स जहणओ द्विदिनधो सग्गेज्जगुणो । तस्मेअ
अपञ्चतयस्म द्विदिनधोपदाणविसेमो मग्गेज्जगुणो । द्विदिनधोपदाणाणि एगल्वाहियाणि ।
उक्त्वस्मओ द्विदिनधो विसेसाहो । तस्मेअ पञ्चतयस्स द्विदिनधोपदाणविसेमो सखेज्ज-
गुणो । द्विदिनधोपदाणाणि एगल्वाहियाणि । उक्त्वस्मओ द्विदिनधो विसेसाहो ।
एवमन्वोगाढमप्पानहुअ समत्त ।

मूलमयडिअप्पाचहुअ दुनिह—सत्याण परत्याण चेदि । तय सयाणे पयद—

उत्तरे स्थितिवध विशेष अधिक है । सूक्ष्म पचेन्द्रिय पर्याप्तकका उत्तरे स्थितिवध
विशेष अधिक है । वादर पचेन्द्रिय पर्याप्तकका उत्तरे स्थितिवध विशेष अधिक है ।
द्वीन्द्रिय पर्याप्तकका जघय स्थितिवध सख्यातगुणा है । उसीके अपर्याप्तकका जघय
स्थितिवध विशेष अधिक है । उहीका उत्तरे स्थितिवध विशेष अधिक है । उसीके
पयाप्तकका उत्तरे स्थितिवध विशेष अधिक है । त्रीन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थिति
वध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकका जघय स्थितिवध विशेष अधिक है ।
उसीका उत्तरे स्थितिवध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकका उत्तरे स्थितिवध
विशेष अधिक है । चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकका जघय स्थितिवध विशेष अधिक है । दोष तीन
पदोंकी प्ररूपणा द्वीन्द्रियके समान है । अमती पचेन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थितिवध
सख्यातगुणा है । दोष तीन पदोंकी प्ररूपणा द्वीन्द्रियके समान है । सती पचेन्द्रिय
पर्याप्तकका जघय स्थितिवध सख्यातगुणा है । उसीके अपर्याप्तकका जघय स्थितिवध
सख्यातगुणा है । उसीके अपर्याप्तकका स्थितिवधस्थानविशेष सख्यातगुणा है । स्थिति
वधस्थान एक रूपसे अधिक हैं । उत्तरे स्थितिवध विशेष अधिक है । उसीके
पयाप्तकका स्थितिवधस्थानविशेष सख्यातगुणा है । स्थितिवधस्थान एक रूपसे अधिक
हैं । उत्तरे स्थितिवध विशेष अधिक है । इस प्रकार अयोगाढअल्परुद्र समान हुआ ।
मूलप्रतिअल्परुद्र दो प्रकार हैं—सस्यान अल्परुद्र और परस्यान अल्परुद्र ।

१ प्रतिपु सेषे तिणि ? इति पाठ ।

सत्रत्योपो सुहुमेइदियअपअत्तयस्म णामा-गोदाणमावाहट्टाण्यविमेमो । आनाहाट्टाणाणि एगम्बाहियाणि । चटुण्य कम्माणमावाहट्टाण्यविमेमो विसेमाहियो । आनाहाट्टाणाणि एगम्बाहियाणि । मोहणीयस्म आनाहाट्टाण्यविमेमो सखेज्जगुणो । आवाहट्टाणाणि एगम्बाहियाणि । आउअस्म जहणिया आवाहा अमसेज्जगुणा । जहण्यो द्विदिग्धो सखेज्जगुणो । आवाहाट्टाण्यविमेमो मवेज्जगुणो । आवाहाट्टाणाणि एगम्बाहियाणि । उक्कस्सिया आवाहा-विमेसाहिया । णामा गोदाण्य जहणिया आनाहा सखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आवाहा विमेसाहिया । चटुण्य कम्माण जहणिया आनाहा विसेमाहिया । उक्कस्सिया आवाहा विमेसाहिया । मोहणीयस्स जहणिया आवाहा मवेज्जगुणा । उक्कस्सिया आवाहा विसेमाहिया । आउअस्म द्विदिग्धट्टाण्यविमेमो सखेज्जगुणो । द्विदिग्धट्टाणाणि एगम्बाहियाणि । उक्कम्भओ द्विदिग्धो विसेमाहियो । णामा-गोदाण्य द्विदिग्धट्टाण्यविमेमो असखेज्जगुणो । द्विदिग्धट्टाणाणि एगम्बाहियाणि । चटुण्य कम्माण द्विदिग्धट्टाण्यविमेमो विमेसाहियो । द्विदिग्धट्टाणाणि एगम्बाहियाणि । मोहणीयस्स द्विदिग्धट्टाण्यविमेमो मवेज्जगुणो । द्विदिग्धट्टाणाणि एगम्बाहियाणि । णामा-गोदाण्य जहण्यो द्विदिग्धो असखेज्जगुणो । उक्कस्सओ द्विदिग्धो विसेमाहियो । चटुण्य कम्माण जहण्यो द्विदिग्धो विमेसाहियो । मोहणीयस्म जहण्यो द्विदिग्धो सखेज्जगुणो । उक्कस्सओ द्विदिग्धो विसेमाहियो । एव सुहुमेइदियपज्जत्त

इनमेंसे स्थस्थान अल्पवहुत्वका प्रकरण है— सूक्ष्म एतेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका आवाधास्थानविशेष सत्रसे स्तोत्र है । आवाधास्थान एक रूपसे अधिक है । चार कर्मोंका आवाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आवाधास्थान एक रूपसे अधिक है । मोहनीयका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । आयुकी जत्र व आवाधा असख्यातगुणी है । जघन्य स्थितिय व सख्यातगुणा है । आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । नाम व गोत्रकी जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंकी जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । उनकी उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । आयुका स्थितिव्यवस्थानविशेष सख्यातगुणा है । स्थितिव्यवस्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उत्कृष्ट स्थितिय व विशेष अधिक है । नाम व गोत्रका स्थितिव्यवस्थानविशेष असख्यातगुणा है । स्थितिव्यवस्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । चार कर्मोंका स्थितिव्यवस्थानविशेष विशेष अधिक है । स्थितिव्यवस्थान एक रूपसे अधिक है । मोहनीयका स्थितिव्यवस्थानविशेष सख्यातगुणा है । स्थितिव्यवस्थान एक रूपसे अधिक है । नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिव्यवस्थान असख्यातगुणा है । उत्कृष्ट स्थितिव्यवस्थान विशेष अधिक है । चार कर्मोंका जघन्य स्थितिव्यवस्थान विशेष अधिक है । मोहनीयका जघन्य स्थितिव्यवस्थान सख्यातगुणा है । उत्कृष्ट स्थितिव्यवस्थान विशेष अधिक है । इसी प्रकार

वादरेड्दियअपञ्जताण च णेदव्व ।

मन्व योमो वादरेड्दियपञ्जतयस्म णामा गोदाणमानाहाट्टाणविमेमो । आवाहट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । चटुण्ण कम्माणमानाहाट्टाणविमेमो विमेमाहिओ । आनाहाट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । मोहणीयस्स आवाहाट्टाणविसेमो सपेज्जगुणो । आवाहाट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । आउअस्म जहणिया आनाहा मपेज्जगुणा । जहण्यओ ट्टिदिवमो सपेज्जगुणो । णामा गोदाण जहणिया आवाहा अमखेज्जगुणा । उक्कस्मिया आवाहा विमेमाहिया । चटुण्ण कम्माण जहणिया आनाहा विसेमाहिया । उक्कस्मिया आनाहा विमेमाहिया । मोहणीयस्स जहणिया आनाहा सपेज्जगुणा । उक्कस्सिया आवाहा विमेमाहिया । आउअस्म आनाहाट्टाणविमेमो सपेज्जगुणो । आनाहाट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । उक्कस्मिया आवाहा विमेमाहिया । ट्टिदिअट्टाणविमेमो सपेज्जगुणो । ट्टिदिअट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । उक्कस्मओ ट्टिदिवमो विमेमाहिओ । णामा गोदाण ट्टिदिअट्टाणविसेमो अमपेज्जगुणो । ट्टिदिवअट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । चटुण्ण कम्माण ट्टिदिवअट्टाणविमेमो विमेमाहिओ । ट्टिदिवअट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । मोहणीयस्स ट्टिदिअट्टाणविसेमो संवेज्जगुणो । ट्टिदिअट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । णामा गोदाण जहण्यओ ट्टिदिवमो अमपेज्जगुणो । उक्कस्मओ ट्टिदिअमो विमेमाहिओ । चटुण्ण कम्माण जहण्यओ ट्टिदिअमो विसेमाहिओ ।

सूक्ष्म एतद् द्वय पर्याप्तकौ और वादर एतेन्द्रिय अपर्याप्तकौके भी जानना चाहिये ।

वादर एतेन्द्रिय पर्याप्तकौ नाम ध गोत्रका आवाधास्थानविशेष मन्वसे स्तोक है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कर्मोंका आवाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आवाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं । मोहनीयका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं । आयुक्ती जघ य आवाधा सख्यातगुणी है । जघ य स्थिति य सख्यातगुणा है । नाम ध गोत्रकी जघ य आवाधा असख्यातगुणी है । उत्पृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंकी जघ य आवाधा विशेष अधिक है । उससे उर्हीकी उत्पृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी जघ य आवाधा सख्यातगुणी है । उत्पृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । आयुका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे अधिक ह । उत्पृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । स्थितिवन्धस्थानविशेष सख्यातगुणा है । स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे अधिक ह । उत्पृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । नाम ध गोत्रका स्थितिवन्धस्थानविशेष असख्यातगुणा है । स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे अधिक हैं । चार कर्मोंका स्थितिवन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है । स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे अधिक हैं । मोहनीयका स्थितिवन्धस्थानविशेष सख्यातगुणा है । स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे अधिक है । नाम ध गोत्रका जघ य स्थितिवन्ध असख्यातगुणा है । उत्पृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । चार कर्मोंका जघ य स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । उत्पृष्ट

उक्त्सओ द्विदिवधो विमेसाह्यो । मोहणीयस्स जहण्णओ द्विदिवधो सखेज्जगुणो ।
उक्त्सओ द्विदिनधो त्रिसेमाह्यो ।

सन्वयोरो वेददियअपज्जत्तयम्म णामा-गोदाणमावाहाट्टाणविसेसो । आनाहा-
ट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । चटुण्ण कम्माणमावाहाट्टाणविसेसो विमेसाह्यो । आनाहा-
ट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । मोहणीयस्स आनाहाट्टाणविसेसो सखेज्जगुणो । आवाहाट्टाणाणि
एगम्वाहियाणि । आउअस्स जहण्णिया आवाहा सखेज्जगुणा । तस्सेज्ज जहण्णओ द्विदिनधो
सखेज्जगुणो । आनाहाट्टाणविसेसो सखेज्जगुणो । आवाहाट्टाणाणि एगम्वाहियाणि ।
उक्त्सिया आनाहा त्रिसेमाहिया । णामा गोदाण जहण्णिया आनाहा सखेज्जगुणा ।
उक्त्सिया आनाहा विसेमाहिया । चटुण्ण कम्माण जहण्णिया आनाहा विसेसाहिया ।
उक्त्सिया आनाहा विमेसाहिया । मोहणीयस्स जहण्णिया आनाहा सखेज्जगुणा । उक्त्सिया
आवाहा विसेसाहिया । आउअस्स द्विदिवधट्टाणविसेसो सखेज्जगुणो । द्विदिवधट्टाणाणि
एगम्वाहियाणि । उक्त्सओ द्विदिवधो विमेसाह्यो । णामा-गोदाण द्विदिवधट्टाणविसेसो
सखेज्जगुणो । द्विदिनधट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । चटुण्ण कम्माण द्विदिवधट्टाणविसेसो
विमेसाह्यो । द्विदिवधट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । मोहणीयस्स द्विदिवधट्टाणविसेसो
सखेज्जगुणो । द्विदिवधट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । णामा गोदाण जहण्णओ द्विदिवधो

स्थितिवध विशेष अधिक है । मोहनीयका जघन्य स्थितिवध सख्यातगुणा है । उत्त्प
स्त्रितिवध विशेष अधिक है ।

द्वीट्टय अपर्याप्तने नाम व गोत्रका आवाधास्थानविशेष सबसे स्तोत्र है ।
आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । चार कर्मोंका आवाधास्थानविशेष विशेष
अधिक है । आवाधास्थान एक रूपसे अधिक है । मोहनीयका आवाधास्थानविशेष
सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे अधिक है । आयुकी जघन्य आवाधा
सख्यातगुणी है । उसीका जघन्य स्थितिवध सख्यातगुणा है । आवाधास्थानविशेष
सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे अधिक है । उत्त्प आवाधा विशेष
अधिक है । नाम व गोत्रकी जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । उत्त्प आवाधा विशेष
अधिक है । चार कर्मोंका जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । उत्त्प आवाधा विशेष
अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । उत्त्प आवाधा विशेष अधिक
है । आयुका स्थितिवध स्थानविशेष सख्यातगुणा है । स्थितिवधस्थान एक रूपसे
अधिक है । उत्त्प स्थितिवध विशेष अधिक है । नाम व गोत्रका स्थितिवधस्थानविशेष
सख्यातगुणा है । स्थितिवधस्थान एक रूपसे अधिक है । चार कर्मोंका स्थितिवध
स्थानविशेष विशेष अधिक है । स्थितिवधस्थान एक रूपसे अधिक है । मोहनीयका
स्थितिवधस्थानविशेष सख्यातगुणा है । स्थितिवधस्थान एक रूपसे अधिक है । नाम
व गोत्रका जघन्य स्थितिवध सख्यातगुणा है । उत्त्प स्थितिवध विशेष अधिक है ।

सखेज्जगुणो । उक्कस्मणो द्विदिशो विमेसाहिया । चटुण कम्माण जहण्णआ द्विट्थियो
विसेसाहियो । उक्कस्मणो द्विदिशो विसेसाहियो । मोहणीयस्स जहण्णओ द्विदिशो
सखेज्जगुणो । उक्कस्मणो द्विदिशो विमेसाहियो । एउ तेउत्थिय चउत्थिय-अमण्णिपत्ति-
दियअपत्तण पि णेयव ।

सख्योगो वेददियपत्तयस्स णामा गोदाणमावाहाट्टाणविसेसो । आवाहाट्टाणाणि
एग्व्वाहियाणि । चटुण कम्माणमावाहाट्टाणविसेसो विमेसाहियो । आवाहाट्टाणाणि
एग्व्वाहियाणि । मोहणीयस्स आवाहाट्टाणविसेसो सखेज्जगुणो । आवाहाट्टाणाणि एग्व्वा-
हियाणि । आउस्स जहण्णिया आवाहा सखेज्जगुणा । जहण्णओ द्विदिशो सखेज्जगुणो ।
णामा गोदाण जहण्णिया आवाहा सखेज्जगुणा । उक्कस्मिया आवाहा विसेसाहिया ।
चटुण कम्माण जहण्णिया आवाहा विसेसाहिया । उक्कस्मिया आवाहा विसेसाहिया ।
मोहणीयस्स जहण्णिया आवाहा सखेज्जगुणा । उक्कस्मिया आवाहा विसेसाहिया । आउअस्स
आवाहाट्टाणविसेसो सखेज्जगुणो । आवाहाट्टाणाणि एग्व्वाहियाणि । उक्कस्मिया
आवाहा विसेसाहिया । द्विदिशट्टाणविसेसो सखेज्जगुणो । द्विदिशट्टाणाणि एग्व्वाहि-
याणि । उक्कस्मणो द्विदिशो विसेसाहियो । णामा गोदाण द्विदिशट्टाणविसेसो
सखेज्जगुणो । द्विदिशट्टाणाणि एग्व्वाहियाणि । चटुण कम्माण द्विदिशट्टाणविसेसो
विसेसाहियो । द्विदिशट्टाणाणि एग्व्वाहियाणि । मोहणीयस्स द्विदिशट्टाणविसेसो

चार कर्मोंका जघन्य स्थितिय व विशेष अधिक है । उट्टए स्थितिय व विशेष अधिक है ।
मोहनीयका जघन्य स्थितिय व सख्यातगुणा है । उट्टए स्थितिय व विशेष अधिक है ।
इसी प्रकार त्रीन्द्रिय चतुर्दिश त्रय और अस्तशी पर्वो त्रय अपवातत्रोंके भी जानना चाहिये ।

त्रीन्द्रिय पयासक्य नाम व गोत्रका आवाधास्थानविशेष स्वसे स्तोत्र है । आवाधा
स्थान एक रूपसे अधिक है । चार कर्मोंका आवाधास्थानविशेष विशेष अधिक है ।
आवाधास्थान एक रूपसे अधिक है । मोहनीयका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है ।
आवाधास्थान एक रूपसे अधिक है । आयुकी जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । जघन्य
स्थितिय व सख्यातगुणा है । नाम व गोत्रका जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । उट्टए
आवाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंकी जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । उट्टए
आवाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । उट्टए
आवाधा विशेष अधिक है । आयुका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है ।
आवाधास्थान एक रूपसे अधिक है । उट्टए आवाधा विशेष अधिक है । स्थितिय व
स्थानविशेष सख्यातगुणा है । स्थितिय व स्थान एक रूपसे अधिक है । उट्टए स्थितिय व
विशेष अधिक है । नाम व गोत्रका स्थितिय व स्थानविशेष अस्तख्यातगुणा है । स्थिति
व स्थान एक रूपसे अधिक है । चार कर्मोंका स्थितिय व स्थानविशेष विशेष अधिक
है । स्थितिय व स्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । मोहनीयका स्थितिय व स्थानविशेष

१ अ आ-साप्रतिपु ' तद्दिय अमणि', ताप्रती ' तेउत्थिय [चउत्थिय] अमणि' इति पाठः ।

सखेज्जगुणो । ट्टिदिबधट्टाणाणि एगस्वाहियाणि । णामा-गोदाण जहण्णओ ट्टिदिबधो
सखेज्जगुणो । उक्कम्मओ ट्टिदिनओ विमेसाहियो । चटुण्ण कम्माण जहण्णओ ट्टिदिबधो
विमेसाहियो । उक्कम्मओ ट्टिदिबधो विमेसाहियो । मोहणीयस्स जहण्णओ ट्टिदिबधो
सखेज्जगुणो । उक्कम्मओ ट्टिदिनओ विमेसाहियो । एव तेइदिय चउरिंदियपज्जताण
पि' णेयन्व ।

सख्ययोवो असण्णियचिदियपवत्तयस्स णामा गोदाणमावाहट्टाणविमेसो । आवाहा-
ट्टाणाणि एगस्वाहियाणि । चटुण्ण कम्माणमावाहाट्टाणविमेसो विमेसाहियो । आवाहाट्टा-
णाणि एगस्वाहियाणि । मोहणीयस्स आवाहाट्टाणविमेसो सखेज्जगुणो । आवाहाट्टाणाणि
एगस्वाहियाणि । आउअस्स जहण्णिया आवाहा सखेज्जगुणा । जहण्णओ ट्टिदिबधो
सखेज्जगुणो । णामागोदाण जहण्णिया आवाहा सखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आवाहा
विमेसाहिया । चटुण्ण कम्माण जहण्णिया आवाहा विमेसाहिया । उक्कस्सिया आवाहा
विमेसाहिया । मोहणीयस्स जहण्णिया आवाहा सखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आवाहा
विमेसाहिया । आउअस्स आवाहाट्टाणविमेसो सखेज्जगुणो । आवाहाट्टाणाणि एगस्वाहियाणि ।
उक्कस्सिया आवाहा विमेसाहिया । ट्टिदिबधट्टाणविमेसो असखेज्जगुणो । ट्टिदिबधट्टाणाणि
एगस्वाहियाणि । उक्कस्सओ ट्टिदिबधो विमेसाहियो । णामा-गोदाण ट्टिदिबधट्टाण-
विमेसो असखेज्जगुणो । ट्टिदिबधट्टाणाणि एगस्वाहियाणि । चटुण्ण कम्माण ट्टिदिबध-

सख्यानगुणा है । स्थितिबधस्थान एक रूपसे अधिक है । नाम व गोत्रका जघन्य
स्थितिबध सख्यानगुणा है । उत्तृष्ट स्थितिबध विशेष अधिक है । चार कर्मोंका जघन्य
स्थितिबध विशेष अधिक है । उत्तृष्ट स्थितिबध विशेष अधिक है । मोहनीयका
जघन्य स्थितिबध सख्यानगुणा है । उत्तृष्ट स्थितिबध विशेष अधिक है । इसी प्रकार
भी द्वय और चतुर्द्वय पर्याप्तकोंके भी ले जाना चाहिये ।

असती पचो द्वय पर्याप्तकजे नाम व गोत्रका आवाधारस्थानविशेष सखसे स्तोक है ।
आवाधारस्थान एक रूपसे अधिक है । चार कर्मोंका आवाधारस्थानविशेष विशेष अधिक
है । आवाधारस्थान एक रूपसे अधिक है । मोहनीयका आवाधारस्थानविशेष सख्यानगुणा
है । आवाधारस्थान एक रूपसे अधिक है । आरुकी जघन्य आवाधा सख्यानगुणी है ।
जघन्य स्थितिबध सख्यानगुणा है । नाम व गोत्रकी जघन्य आवाधा सख्यानगुणी है ।
उत्तृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंकी जघन्य आवाधा विशेष अधिक है ।
उत्तृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आवाधा सख्यानगुणी है । उत्तृष्ट
आवाधा विशेष अधिक है । आयुका आवाधारस्थानविशेष सख्यानगुणा है । आवाधारस्थान
एक रूपसे अधिक है । उत्तृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । स्थितिबधस्थान विशेष
असख्यानगुणा है । स्थितिबधस्थान एक रूपसे अधिक है । उत्तृष्ट स्थितिबध विशेष
अधिक है । नाम व गोत्रका स्थितिबधस्थानविशेष असख्यानगुणा है । स्थितिबधस्थान

१ अ-का-ताप्रतिपु 'पि' इत्येवमिदं नोपलभ्यते ।

द्विदिग्धट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । मोहणीयस्म द्विदिग्धट्टाण-
विमेमो सरेत्रगुणो । द्विदिग्धट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । णामा-गोदाण जहण्णओ द्विदिग्धो
सखेत्तगुणो । उक्कस्सओ द्विदिग्धो विमेमाहिओ । चटुण्ण कम्माण जहण्णओ द्विदिग्धो
विमेमाहिओ । [उक्कस्सओ द्विदिग्धो विमेमाहिओ ।] मोहणीयस्म जहण्णओ द्विदिग्धो
सरेत्रगुणो । उक्कस्सओ द्विदिग्धो विमेमाहिओ ।

सत्यथोरा मण्णिपचिदियअपत्तयस्म आउअस्म जहण्णिया आघाहा । जहण्णओ
द्विदिग्धो सरेत्रगुणो । आनाहाट्टाणविसेमो सरेत्रगुणो । आनाहाट्टाणाणि एगम्वाहियाणि ।
उक्कस्सिया आनाहा विमेमाहिया । णामा-गोदाण जहण्णिया आघाहा सरेत्रगुणा । चटुण्ण
कम्माण जहण्णिया आघाहा विमेमाहिया । मोहणीयस्स जहण्णिया आघाहा सरेत्रगुणा ।
णामा गोदाणमावाहट्टाणविसेमो सरेत्रगुणो । आवाहाट्टाणाणि एगम्वाहियाणि ।
उक्कस्सिया आनाहा विमेमाहिया । चटुण्ण कम्माणमावाहट्टाणविसेमो विमेमाहिओ ।
आवाहाट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । उक्कस्सिया आघाहा विमेमाहिया । मोहणीयस्म
आवाहाट्टाणविसेमो सरेत्रगुणो । आवाहाट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । उक्कस्सिया आघाहा
विमेमाहिया । आउअस्म द्विदिग्धट्टाणविसेमो सरेत्रगुणो । द्विदिग्धट्टाणाणि एगम्वाहिया-
याणि । उक्कस्सओ द्विदिग्धो विमेमाहिओ । णामा-गोदाण जहण्णओ द्विदिग्धो

एक रूपसे अधिक है । चार कर्मोंका स्थितिवधस्यानविशेष विशेष अधिक है ।
स्थितिवधस्यान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहनीयका स्थितिवधस्यानविशेष
सख्यातगुणा है । स्थितिवधस्यान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । नाम व गोत्रका जघन्य
स्थितिवध सख्यातगुणा है । उत्पृष्ट स्थितिवध विशेष अधिक है । चार कर्मोंका जघन्य
स्थितिवध विशेष अधिक है । [उत्पृष्ट स्थितिवध विनाप अधिक है ।] मोहनीयका
जघन्य स्थितिवध सख्यातगुणा है । उत्पृष्ट स्थितिवध विशेष अधिक है ।

सखा पचेा द्वय अपर्याप्तके आयुकी जघन्य आघाहा सधसे स्तोक है । जघन्य
स्थितिवध सख्यातगुणा है । आवाधास्यानविशेष सख्यातगुणा है । आघाहास्यान एक
रूपसे विशेष अधिक है । उत्पृष्ट आघाहा विशेष अधिक है । नाम व गोत्रकी जघन्य
आघाहा सख्यातगुणी है । चार कर्मोंकी जघन्य आघाहा विशेष अधिक है । मोहनीयकी
जघन्य आघाहा सख्यातगुणी है । नाम व गोत्रका आघाहास्यानविशेष सख्यातगुणा है ।
आवाधास्यान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्पृष्ट आघाहा विशेष अधिक है । चार
कर्मोंका आवाधास्यानविशेष विशेष अधिक है । आवाधास्यान एक रूपसे विशेष अधिक
हैं । उत्पृष्ट आघाहा विशेष अधिक है । मोहनीयका आवाधास्यानविशेष सख्यातगुणा है ।
आवाधास्यान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्पृष्ट आघाहा विशेष अधिक है । आयुका
स्थितिवधस्यानविशेष सख्यातगुणा है । स्थितिवधस्यान एक रूपसे विशेष अधिक हैं ।
उत्पृष्ट स्थितिवध विशेष अधिक है । नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिवध असख्यातगुणा

असख्जगुणा । चटुण्ण कम्माण जहण्णओ द्विदिनधो विसेसाहियो । मोहणीयस्स जहण्णओ द्विदिबधो सखेज्जगुणो । णामा-गोदाण द्विट्ठिवधट्टाणविसेसो सखेज्जगुणो । द्विदिबधट्टाणाणि एगम्बवाहियाणि । उक्कस्सओ द्विदिबधो विसेसाहियो । चटुण्ण कम्माण द्विदिबधट्टाण-विसेसो विसेसाहियो । द्विदिनधट्टाणाणि एगम्बवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सओ द्विदिबधो विसेसाहियो । मोहणीयस्स द्विदिबधट्टाणविसेसो सखेज्जगुणो । द्विट्ठिवधट्टाणाणि एगम्बवा-हियाणि । उक्कस्सओ द्विदिबधो विसेसाहियो ।

मन्वत्थोवा सण्णिपच्चिदियधज्जतयस्स आउअस्स जहण्णिया आवाहा । तस्सेज्ज जहण्णओ द्विदिबधो सखेज्जगुणो । णामा-गोदाण जहण्णिया आवाहा सखेज्जगुणा । चटुण्ण कम्माण जहण्णिया आवाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स जहण्णिया आवाहा सखेज्जगुणा । णामा-गोदाणामाहाट्टाणविसेसो सखेज्जगुणो । आवाहाट्टाणाणि एगम्बवाहियाणि । उक्कस्सिया आवाहा विसेसाहिया । चटुण्ण कम्माणआवाहाट्टाणविसेसो विसेसाहियो । आवाहाट्टाणाणि एगम्बवाहियाणि । उक्कस्सिया आवाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स आवाहाट्टाणविसेसो सखेज्जगुणो । आवाहाट्टाणाणि एगम्बवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आवाहा विसेसा-हिया । आउअस्स आवाहाट्टाणविसेसो सखेज्जगुणो । आवाहाट्टाणाणि एगम्बवाहियाणि । उक्कस्सिया आवाहा विसेसाहिया । द्विट्ठिवधट्टाणविसेसो जमवेवगुणो । द्विदिबधट्टाणाणि एगम्बवाहियाणि । उक्कस्सओ द्विदिनधो विसेसाहियो । णामा-गोदाण जहण्णओ द्विदिबधो

है । चार फर्मोंका जघय स्थितिव ध विशेष अधिक है । मोहनीयका जघय स्थितिव ध सख्यातगुणा है । नाम व गोत्रका स्थितिव धस्थानविशेष सख्यातगुणा है । स्थितिव ध स्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिव ध विशेष अधिक है । चार फर्मोंका स्थितिव धस्थानविशेष विशेष अधिक है । स्थितिव धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिव ध विशेष अधिक है । मोहनीयका स्थितिव धस्थानविशेष सख्यातगुणा है । स्थितिव धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उत्कृष्ट स्थितिव ध विशेष अधिक है ।

सही पर्वो द्वय पर्याप्तम्ने आयुनी जघय आवाधा सबने स्तोत्र है । उसीका जघय स्थितिव ध सख्यातगुणा है । नाम व गोत्रकी जघय आवाधा सख्यातगुणी है । चार फर्मोंकी जघय आवाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी जघय आवाधा सख्याता गुणी है । नाम व गोत्रका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । चार फर्मोंका आवाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । मोहनीयका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । आयुका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । स्थितिव धस्थानविशेष असख्यातगुणा है । स्थितिव धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिव ध विशेष अधिक है । नाम व गोत्रका जघय स्थितिव ध

मत्सेजगुणो । चटुण्ण कम्माण जहण्णजो द्विट्ठिवधो विसेमाहिओ । मोहणीयस्म जहण्णजो द्विट्ठिनजो मत्सेजगुणो । णामा गोदाण द्विट्ठिवधट्ठाणविसेमो मत्सेजगुणो । द्विट्ठिनधट्ठाणाणि एगम्माहियाणि । उक्कम्मओ द्विट्ठिनधो विसेमाहिओ । चटुण्ण कम्माण द्विट्ठिनधट्ठाणविसेमो विसेमाहिओ । द्विट्ठिनधट्ठाणाणि एगम्माहियाणि । उक्कम्मओ द्विट्ठिवधो विसेसाहिओ । मोहणीयस्म द्विट्ठिनधट्ठाणविसेसो मत्सेजगुणो । द्विट्ठिवधट्ठाणाणि एगम्माहियाणि । उक्कम्मओ द्विट्ठिनधो विसेसाहिओ । एव सत्याणप्पावहुग समत्त ।

पगत्याणे पयद—मत्त्वोओ सुहुमेइदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमानाहट्ठाणविसेमो । आनाहाट्ठाणाणि एगम्माहियाणि । चटुण्ण कम्माणमावाहाट्ठाणविसेमो विसेमाहिओ । आनाहाट्ठाणाणि एगम्माहियाणि । मोहणीयस्म आवाहाट्ठाणविसेमो मत्सेजगुणो । आनाहाट्ठाणाणि एगम्माहियाणि । वादरेइदियअपज्जत्तयस्स णामा गोदाणमानाहट्ठाणविसेमो मत्सेजगुणो । आनाहट्ठाणाणि एगम्माहियाणि । चटुण्ण कम्माणमानाहट्ठाणविसेमो विसेमाहिओ । आनाहट्ठाणाणि एगम्माहियाणि । मोहणीयस्म आवाहाट्ठाणविसेमो मत्सेजगुणो । आनाहट्ठाणाणि एगम्माहियाणि । सुहुमेइदियअपज्जत्तयस्स णामा गोदाणमानाहट्ठाणविसेमो मत्सेजगुणो । आवाहाट्ठाणाणि एगम्माहियाणि । चटुण्ण कम्माणमानाहट्ठाणविसेमो विसेसाहिओ । आवाहाट्ठाणाणि एगम्माहियाणि । मोहणीयस्म

सख्यातगुणा है । चार कर्मोंका जघ य स्थितिवध विशेष अधिक है । मोहनीयका जघ य स्थितिवध सख्यातगुणा है । नाम ज गोत्रका स्थितिवधस्थानविशेष सख्यातगुणा है । स्थितिवधस्थान एक रूपसे अधिक हैं । उट्टए स्थितिवध विशेष अधिक है । चार कर्मोंका स्थितिवधस्थानविशेष विशेष अधिक है । स्थितिवधस्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उट्टए स्थितिवध विशेष अधिक है । मोहनीयका स्थितिवधस्थानविशेष सख्यातगुणा है । स्थितिवधस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उट्टए स्थितिवध विशेष अधिक है । इस प्रकार स्थान अल्पगुण समाप्त हुआ ।

अत्र परस्थान अल्पगुणका प्रकरण है— सूक्ष्म पर्याप्तकत्ते नाम ध गोत्रका आवाधास्थानविशेष सबसे स्तोत्र है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कर्मोंका आवाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहनीयका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तकत्ते नाम ध गोत्रका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । चार कर्मोंका आवाधास्थान विशेष विशेष अधिक है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । मोहनीयका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म पर्याप्तकत्ते नाम ध गोत्रका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कर्मोंका आवाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहनीयका आवाधास्थानविशेष

विमेमाहिओ । आनाहाट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । मोहणीयस्म आनाहाट्टाणनिमेसो सखेज्जगुणो । आनाहाट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । चउरिन्दियअपजत्तयस्म णामा-गोदाणमावाहट्टाणनिमेसो सखेज्जगुणो । जावाहाट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । चटुण्ण कम्माणमानाहाट्टाणनिमेसो विमेमाहिओ । आनाहाट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । मोहणीयस्म आनाहाट्टाणनिमेसो सखेज्जगुणो । आनाहाट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । तस्सेन पजत्तयस्म णामा-गोदाणमानाहाट्टाणनिमेसो सखेज्जगुणो । आनाहाट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । चटुण्ण कम्माणमावाहट्टाणनिमेसो विमेमाहिओ । आनाहाट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । मोहणीयस्म आनाहाट्टाणनिमेसो सखेज्जगुणो । आनाहाट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । अमण्णिपच्चिन्दियअपजत्तयस्म णामा-गोदाणमानाहाट्टाणनिमेसो सखेज्जगुणो । आनाहाट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । चटुण्ण कम्माणमानाहाट्टाणनिमेसो विमेमाहिओ । आनाहाट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । मोहणीयस्म आनाहाट्टाणनिमेसो सखेज्जगुणो । आनाहाट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । तस्सेन पजत्तयस्म णामा गोदाणमानाहाट्टाणनिमेसो सखेज्जगुणो । आवाहाट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । चटुण्ण कम्माणमानाहाट्टाणनिमेसो विमेमाहिओ । आवाहाट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । मोहणीयस्म आनाहाट्टाणनिमेसो सखेज्जगुणो । आनाहाट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । चोइसण्ण जीवसमानाणमाउजस्स जहण्णिया आनाहा सखेज्जगुणा । जहण्णओ द्विदिधो सखेज्जगुणो ।

अधिक है । आवाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं । मोहनीयका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कर्मोंका आवाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहनीयका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके पर्याप्तके नाम व गोत्रका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कर्मोंका आवाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहनीयका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । अस्तीके पर्याप्तके नाम व गोत्रका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कर्मोंका आवाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहनीयका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चोइस जीवसमासोंका आयुकी जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । जघन्य स्थितिवन्ध

अपञ्चतयस्स णामा गोदाणमुक्कस्मिया आवाहा त्रिमेसाहिया । तस्सेन पञ्चतयस्स णामा-
गोटाण उक्कस्मिया आवाहा विसेसाहिया । तस्सेन पञ्चतयस्स चटुण्ण कम्माण जहणिया
आवाहा विसेसाहिया । तस्सेन अपञ्चतयस्स चटुण्ण कम्माण जहणिया आवाहा त्रिमे-
साहिया । तस्सेन अपञ्चतयस्स चटुण्ण कम्माण उक्कस्मिया आवाहा त्रिमेसाहिया ।
तस्सेन पञ्चतयस्स चटुण्ण कम्माणमुक्कस्मिया आवाहा त्रिमेसाहिया । तस्सेन पञ्चतयस्स
मोहणीयस्स जहणिया आवाहा सखेज्जगुणा । तस्सेन अपञ्चतयस्स मोहणीयस्स जहणिया
आवाहा विसेसाहिया । तस्सेन अपञ्चतयस्स मोहणीयस्स उक्कस्मिया आवाहा विसेसाहिया ।
तस्सेन पञ्चतयस्स मोहणीयस्स उक्कस्मिया आवाहा त्रिमेसाहिया । सण्णियचिदियपञ्चतयस्स
णामा-गोटाण जहणिया आवाहा सखेज्जगुणा । तस्सेन पञ्चतयस्स चटुण्ण कम्माण
जहणिया आवाहा त्रिमेसाहिया । तस्सेन पञ्चतयस्स मोहणीयस्स जहणिया आवाहा
सखेज्जगुणा । तस्सेन अपञ्चतयस्स णामा-गोदाण जहणिया आवाहा सखेज्जगुणा । तस्सेन
अपञ्चतयस्स चटुण्ण कम्माण जहणिया आवाहा विसेसाहिया । तस्सेन अपञ्चतयस्स
मोहणीयस्स जहणिया आवाहा सखेज्जगुणा । तस्सेन अपञ्चतयस्स णामा-गोदाणमावाहट्टाण-
त्रिसेमो सखेज्जगुणो । आवाहाट्टाणाणि एग्गहाहियाणि । उक्कस्मिया आवाहा
विसेसाहिया । तस्सेन अपञ्चतयस्स चटुण्ण कम्माणमावाहट्टाणविसेमो विसेसाहियो ।

आवाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तके नाम व गोत्रकी उत्पत्ति आवाधा विशेष
अधिक है । उसीके पर्याप्तके नाम व गोत्रकी उत्पत्ति आवाधा विशेष अधिक है । उसीके
पर्याप्तके चार कर्मोंकी जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तके चार
कर्मोंकी जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तके चार कर्मोंकी उत्पत्ति
आवाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तके चार कर्मोंकी उत्पत्ति आवाधा विशेष अधिक
है । उसीके पर्याप्तके मोहनीयकी जघन्य आवाधा सख्यतगुणी है । उसीके
अपर्याप्तके मोहनीयकी जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तके मोहनीयकी
उत्पत्ति आवाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तके मोहनीयकी उत्पत्ति आवाधा विशेष
अधिक है । उसीके पञ्चैन्द्रिय पर्याप्तके नाम व गोत्रकी जघन्य आवाधा सख्यतगुणी है ।
उसीके पर्याप्तके चार कर्मोंकी जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तके
मोहनीयकी जघन्य आवाधा सख्यतगुणी है । उसीके अपर्याप्तके नाम व गोत्रकी जघन्य
आवाधा सख्यतगुणी है । उसीके अपर्याप्तके चार कर्मोंकी जघन्य आवाधा विशेष
अधिक है । उसीके अपर्याप्तके मोहनीयकी जघन्य आवाधा सख्यतगुणी है । उसीके
अपर्याप्तके नाम व गोत्रकी आवाधास्थानविशेष सख्यतगुणा है । आवाधास्थान एक
रूपसे विशेष अधिक है । उत्पत्ति आवाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तके चार
कर्मोंकी आवाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक

आनाहट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । उअकस्मिया आवाहा निमेसाहिया । तस्मेअ अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स, आनाहाट्टाणविसेमो सखेज्जगुणो । आवाहाट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । उअ-
स्मिया आवाहा विसेसाहिया । तेइदियपज्जत्ताणमाउअस्स आनाहट्टाणविसेमो सखेज्जगुणो ।
आनाहाट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । उअस्मिया आवाहा निमेसाहिया । चउरिंदियपज्जत्ताण-
माउअस्स आवाहाट्टाणविसेमो सखेज्जगुणो । आवाहाट्टाणाणि एगम्वाहियाणि ।
उअस्मिया आवाहा निमेसाहिया । वादरेइदियपज्जत्तयस्स आउअम्म आनाहाट्टाणविसेसो
सखेज्जगुणो । आवाहाट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । उअकस्मिया आनाहा निमेसाहिया ।
सण्णिपचिंदियपज्जत्तयस्स णामा गोदाणमावाहाट्टाणविसेमो सखेज्जगुणो । आनाहाट्टाणाणि
एगम्वाहियाणि । उअकस्मिया आनाहा निमेसाहिया । तस्मेअ पज्जत्तयस्स, चदुण्णु कम्माण-
मानाहट्टाणविसेमो विमेसाहिओ । आनाहाट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । उअकस्मिया
आनाहा निमेसाहिया । तस्मेअ पज्जत्तयस्स मोहणीयस्स आनाहाट्टाणविसेसो सखेज्जगुणो ।
आनाहाट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । उअकस्मिया आनाहा निमेसाहिया । वादरेइदियपज्जत्त-
यस्स आउअस्स आनाहाट्टाणविसेमो विमेसाहिओ । आनाहाट्टाणाणि एगम्वाहियाणि ।
उअकस्मिया आवाहा निमेसाहिया । पचिण्णियमण्णि-अमुण्णिपज्जत्ताणमाउअस्स आनाह-
ट्टाणविसेमो सखेज्जगुणो । आनाहाट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । उअकस्मिया, आवाहा

हैं । उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । उर्मीके अणुवातरुके मोहनीयका आवाधास्थान
विशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उत्कृष्ट आवाधा
विशेष अधिक है । त्रीन्द्रिय पर्याप्तके आयुका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है ।
आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है ।
चतुरिन्द्रिय पर्याप्तके आयुका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक
रूपसे विशेष अधिक है । उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । वादर एकेन्द्रिय पर्याप्तके
आयुका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक
है । उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । सही पचेन्द्रिय पर्याप्तके नाम व गोत्रका
आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक है ।
उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । उर्मीके पर्याप्तके चार कर्मका आवाधास्थानविशेष
विशेष अधिक है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उत्कृष्ट आवाधा विशेष
अधिक है । उर्मीके पर्याप्तके मोहनीयका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है ।
आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । वादर
एकेन्द्रिय पर्याप्तके आयुका आवाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आवाधास्थान एक
रूपसे विशेष अधिक है । उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । पचेन्द्रिय सही व अस्मी
पर्याप्तके आयुका आवाधास्थानविशेष सख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे
विशेष अधिक है । उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । वादर जीवसमासोंके आयुका

विमेसाहिजो । वादरेडदियअपजत्तयस्म णामा गोदाण जहण्णओ द्विदियधो विसेसाहिओ । सुहुमेडदियअपजत्तयस्म णामा-गोदाण जहण्णओ द्विदियधो विमेसाहिओ । तस्मेव अपजत्तयस्म णामा-गोदाण उक्कस्सओ द्विदिनओ विसेसाहिओ । वादरेडदियअपजत्तयस्म णामा-गोदाणमुक्कस्सओ द्विदिनधो विसेसाहिओ । सुहुमेडदियपजत्तयस्स णामा-गोदाण उक्कस्मओ द्विदिनधो विमेसाहिओ । वादरेडदियपजत्तयस्म णामा गोदाण उक्कस्सओ द्विदिवधो विमेसाहिओ । तस्मेव पजत्तयस्स चटुण्ण कम्माण जहण्णओ द्विदिवधो विसेसाहिओ । सुहुमेडदियपजत्तयस्म चटुण्ण कम्माण जहण्णओ द्विदिवधो विसेसाहिओ । वादरेडदियअपजत्तयस्म चटुण्ण कम्माण जहण्णओ द्विदिवधो विमेसाहिओ । सुहुमेडदियअपजत्तयस्स चटुण्ण कम्माण जहण्णओ द्विदिनधो विसेसाहिओ । तस्मेव अपजत्तयस्स चटुण्ण कम्माण-मुक्कस्सओ द्विदिनधो विसेसाहिओ । वादरेडदियअपजत्तयस्म चटुण्ण कम्माण उक्कस्सओ द्विदिनधो विसेसाहिओ । सुहुमेडदियपजत्तयस्स चटुण्ण कम्माण उक्कस्सओ द्विदिवधो विमेसाहिओ । वादरेडदियपजत्तयस्म चटुण्ण कम्माणमुक्कस्सओ द्विदिनधो विसेसाहिओ । तस्मेव पजत्तयस्स मोहणीयस्म जहण्णओ द्विदिवधो सखेज्जगुणो । मेमाणि सत्त पदाणि विमेसाहियाणि णेदव्वाणि । वेडदियपजत्तयस्म णामा-गोदाण जहण्णओ द्विदिवधो

गोत्रका जघय स्थितिवध विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम वा गोत्रका जघय स्थितिवध विशेष अधिक है । उसीने अपर्याप्तकके नाम वा गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिवध विशेष अधिक है । वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम वा गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिवध विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम वा गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिवध विशेष अधिक है । वादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम वा गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिवध विशेष अधिक है । उसीने पर्याप्तकके चार कर्मोंका जघय स्थितिवध विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंका जघय स्थितिवध विशेष अधिक है । उसीने अपर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिवध विशेष अधिक है । वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिवध विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिवध विशेष अधिक है । वादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिवध विशेष अधिक है । उसीने पर्याप्तकके मोहनोयका जघय स्थितिवध सख्यातगुणा है । शेष सात पद विशेष अधिक क्रमसे ले जाना चाहिये । द्वैत्रिय पर्याप्तकके नाम वा गोत्रका जघय स्थितिवध सख्यातगुणा है । उसीने अपर्याप्तकके नाम वा गोत्रका जघय स्थितिवध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके

सखेद्भगुणा । तस्मै अपञ्जत्तयस्म णामा गोदाण जहण्णओ द्विदिशधो विसेमाहिओ । तस्मै अपञ्जत्तयस्म णामा गोदाण उक्कम्मओ द्विदिशधो विसेमाहिओ । तस्मै पञ्जत्तयस्म णामा गोदाणमुक्कम्मओ द्विदिशधो विसेमाहिओ । तस्मै पञ्जत्तयस्म चटुण्ण कम्माण जहण्णओ द्विदिशधो विसेमाहिओ । एय मेमाणि तिण्णि पत्ताणि णेदव्वाणि । तेद्विदियपञ्जत्तयस्म णामा-गोदाण जहण्णओ द्विदिशधो विसेमाहिओ । तस्मै अपञ्जत्तयस्म णामा-गोदाण जहण्णओ द्विदिशधो विसेमाहिओ । एय मेसत्तोपत्ताणि विसेसाहियक्कमेण णेदव्वाणि । तस्मै पञ्जत्तयस्म चटुण्ण कम्माण जहण्णओ द्विदिशधो विसेमाहिओ । तस्मैव अपञ्जत्तयस्स चटुण्ण कम्माण जहण्णओ द्विदिशधो विसेमाहिओ । तस्मैव अपञ्जत्तयस्स चटुण्ण कम्माणमुक्कम्मओ द्विदिशधो विसेमाहिओ । तस्मैव पञ्जत्तयस्म चटुण्ण कम्माणमुक्कम्मओ द्विदिशधो विसेमाहिओ । वेद्विदियपञ्जत्तयस्स मोहणीयस्म जहण्णओ द्विदिशधो विसेमाहिओ । तस्मैव अपञ्जत्तयस्म मोहणीयस्म जहण्णओ द्विदिशधो विसेमाहिओ । तस्मैव अपञ्जत्तयस्म मोहणीयस्स उक्कम्मओ द्विदिशधो विसेमाहिओ । तस्मै पञ्जत्तयस्स मोहणीयस्म उक्कम्मओ द्विदिशधो विसेमाहिओ । चउत्तिदियपञ्जत्तयस्म णामा गोदाण जहण्णओ द्विदिशधो विसेमाहिओ । तस्मै अपञ्जत्तयस्म णामा-गोदाण जहण्णओ द्विदिशधो विसेमाहिओ । तस्मै अपञ्जत्तयस्म णामा-गोदाण उक्कम्मओ द्विदिशधो विसेमाहिओ । तस्मै पञ्जत्तयस्म णामा गोदाण उक्कम्मओ द्विदिशधो विसेमाहिओ ।

नाम व गोत्रका उत्तृष्ट स्थितिवध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रका उत्तृष्ट स्थितिवध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिवध विशेष अधिक है । इसी प्रकार शप तीन पदोंको ले जाना चाहिये ।

आगे श्रीद्विय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिवध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिवध विशेष अधिक है । इसी प्रकार शप दो पदोंको भी विशेषाधिकके भ्रमसे ले जाना चाहिये । उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिवध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिवध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्तृष्ट स्थितिवध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्तृष्ट स्थितिवध विशेष अधिक है । श्रीद्विय पर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिवध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिवध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका उत्तृष्ट स्थितिवध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके मोहनीयका उत्तृष्ट स्थितिवध विशेष अधिक है । अनुद्विय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिवध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिवध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका उत्तृष्ट स्थितिवध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रका उत्तृष्ट स्थितिवध विशेष अधिक है । इसी पचेद्विय पर्याप्तकोंके आयुका स्थितिवध

१ यादयिदि नोपन्थत अ ना-काप्रतिपु । ० ताप्रतो 'चटुण्ण क० उक्क० (जह०)' इति पाठ ।

विसेमाहिओ । तस्मेव अपञ्जत्ताण चटुण्ण कम्माणमुक्कम्मओ द्विदिवधो विसेमाहिओ । तस्सेव पञ्जत्ताण चटुण्ण कम्माणमुक्कम्मओ द्विदिवधो विसेमाहिओ । असण्णिपचिन्धिय पञ्जत्ताण मोहणीयस्स जहण्णओ द्विदिनओ मखेज्जगुणो । तस्मेव अपञ्जत्ताण मोहणीयस्स जहण्णओ द्विदिवधो विसेमाहिओ । तस्सेव अपञ्जत्ताण मोहणीयस्स उक्कम्मओ द्विदिवधो विसेसाहिओ । तस्मेव पञ्जत्ताण मोहणीयस्स उक्कम्मओ द्विदिवधो विसेमाहिओ । सण्णिपचिन्धियपञ्जत्ताण णामा गोदाण जहण्णओ द्विदिनधो सखेज्जगुणो । तस्मेव पञ्जत्ताण चटुण्ण कम्माण जहण्णओ द्विदिवरा विसेमाहिओ । तस्मेव पञ्जत्ताण मोहणीयस्स जहण्णओ द्विदिनधो सखेज्जगुणो । तस्मेव अपञ्जत्ताण णामा-गोदाण जहण्णओ द्विदिवधो विसेमाहिओ । तस्सेव अपञ्जत्ताण चटुण्ण कम्माण जहण्णओ द्विदिनओ विसेमाहिओ । तस्मेव अपञ्जत्ताण मोहणीयस्स जहण्णओ द्विदिवधो मखेज्जगुणो । तस्मेव अपञ्जत्ताण णामा गोदाण द्विदिनधट्टाणविसेमो मखेज्जगुणो । द्विदिवधट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । उक्कम्मओ द्विदिवधो विसेसाहिओ । तस्मेव अपञ्जत्ताण चटुण्ण कम्माण द्विदिवधट्टाणविसेमो विसेमाहिओ । द्विदिनधट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । उक्कम्मओ द्विदिवधो विसेमाहिओ । तस्मेव अपञ्जत्ताण मोहणीयस्स द्विदिवधट्टाणविसेमो सखेज्जगुणो । द्विदिवधट्टाणाणि एगम्वाहियाणि । उक्कम्मओ द्विदिवधो विसेमाहिओ । तस्मेव पञ्जत्ताण णामा गोदाण द्विदिवधट्टाणविसेमो

विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तके चार कर्मोंका उत्पट स्थितिवध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तके चार कर्मोंका उत्पट स्थितिवध विशेष अधिक है । असली पचेन्द्रिय पर्याप्तके मोहनीयका जघन्य स्थितिवध स्वख्यातगुणा है । उसीके अपर्याप्तके मोहनीयका उत्पट स्थितिवध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तके मोहनीयका उत्पट स्थितिवध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिवध स्वख्यात गुणा है । उसीके पर्याप्तके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिवध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिवध स्वख्यातगुणा है । उसीके अपर्याप्तके नाम व पर्याप्तके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिवध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तके मोहनीयका जघन्य स्थितिवध स्वख्यातगुणा है । उसीके अपर्याप्तके नाम व गोत्रका स्थितिवधस्थानविशेष स्वख्यातगुणा है । उसीके अपर्याप्तके चार कर्मोंका स्थितिवधस्थानविशेष विशेष अधिक है । स्थितिवधस्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उत्पट स्थितिवध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तके चार कर्मोंका स्थितिवधस्थानविशेष स्वख्यातगुणा है । स्थितिवधस्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उत्पट स्थितिवध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तके नाम व गोत्रका स्थितिवधस्थानविशेष स्वख्यातगुणा है । स्थितिवधस्थान एक रूपसे विशेष

सखेज्जगुणो । द्विदिषट्पाणाणि एगम्बाहियाणि । उक्कम्मओ द्विदिषट्पो निसेसाहियो । तस्मेन पज्जत्ताण चटुण्ण कम्माण द्विदिषट्पाणविमेसो निसेसाहियो । द्विदिषट्पाणाणि एगम्बाहियाणि । उक्कम्मओ द्विदिषट्पो निसेसाहियो । तस्मेव पज्जत्तयस्म मोहणीयस्म द्विदिषट्पाणविमेसो मखेज्जगुणो । द्विदिषट्पाणाणि एगम्बाहियाणि । उक्कम्मओ द्विदिषट्पो निसेसाहियो ।

सव्वत्थोवा सुहुमेइदियअपज्जत्तयस्सं सकिलेसविसोहिट्ठाणाणि ॥५१॥

स्थितयो वध्यन्ते अभिरिति करणे घजुत्तत्ते कर्मस्थितियधकारणपरिणामानां स्थितियध इति व्यपदेश । तेषा स्थानानि अस्थानविशेषा स्थितियधस्थानानि । सपदि तेमिं द्विदिषट्पाणपरिणामाण पम्बणा कीरत्ते । किमट्टमेदमिं पम्बणा कीरत्ते ? कारणावगमदुवारेण कम्मद्विदिकज्जावगमणट्ट । ण च कारणे अणत्तण कज्जावगमो मम्मत्त पडिउत्तत्ते, अणत्तत्त तहाणुत्तत्तमादो ।

एत्थ पम्बणा पमाणमप्पायत्तमिमिं तिण्णि अणियोगदाराणि भवति । सुत्ते

अधिक हैं । उत्त्थ स्थितियध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तके नाम व गोत्रना स्थितियधस्थानविशेष स्स्थानगुणा है । स्थितियधस्थान एक रूपसे विभेप अधिक हैं । उत्त्थ स्थितियध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तके चार कर्मोंका स्थितियधस्थान विशेष विशेष अधिक हैं । स्थितियधस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्त्थ स्थितियध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तके मोहनोयना स्थितियधस्थानविशेष स्स्थानगुणा है । स्थितियधस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्त्थ स्थितियध विशेष अधिक है ।

गृक्षम एकेन्द्रिय अपयात्तत्ते मनलेत्त विशुद्धिस्थान मनमे स्तोक् ॥ ५१ ॥

'जिनने द्वारा स्थितिया वधनी हैं' इस विग्रहके अनुसार धरण अर्थमें घट्ट प्रत्यय होनेसे स्थितियधके कारणभूत परिणामोंको स्थितियध कहा गया है । उनकी अवस्थाविशेषोंका नाम स्थितियधस्थान हैं । अब स्थितियधके कारणभूत उन परिणामोंकी प्ररूपणा करते हैं ।

शका—इतका प्ररूपणा किसलिये की जाती है ?

समाधान—कारणपरिज्ञानपूर्वक कर्मस्थितिके रूप कार्यका परिज्ञान धरानेके लिये उनकी प्ररूपणा की जा रही है । कारण कि जबतक कार्यात्पादक हेतुका परिज्ञान नहीं हो जाता, तब तक कार्यका परिज्ञान यथार्थताको प्राप्त नहीं होता, क्योंकि, दूसरी जगह बैसा पाया नहीं जाता है ।

यहा प्ररूपणा, प्रमाण और अल्पवृत्त्य ये तीन अनुयोगद्वार हैं ।

अपावहुआणियोगद्वारमेवमेव किमद्द पन्त्रि ? ण एम दोसो, अपावहुअपन्त्रणाए तेमि दोण्ह पि जतभाजानो । कुतो ? अणत्तयमत पमाणसु परिणामेसु अपावहुआणुत्तरीदो । तय तार एगचीवममामस्मिदण सकिलेम विमोहिद्विणाण पन्त्रणा कीग्दे । त जहा-जहणियाण द्विदीए अत्थि सकिलेमद्विणाणि । एव णेत्तव जाव उदस्सद्विन्ति ति । एव विमोहिद्विणाण पि पन्त्रणा कायवा । णवरि उदस्सद्विदिप्पहुदि पन्त्रेद्वय । एव पन्त्रणा गदा ।

जहणियाण द्विदीए सकिलेमद्विणाण पमाणमसेज्जा लोगा । विदियाण द्विदीए पि अमसेज्जा लोगा । एव णेत्तव जाव उदस्सिया द्विन्ति ति । एव विमोहिद्विणाण पि विररीण पमाणपस्वणा कायत्वा । एव पमाणियोगद्वारेण सृचिणाण सेडि-ज्वहार भागा-भागाण पन्त्रण कम्मामो । तय मेडिपन्त्रणा दुविहा-अणत्तरोवणिधा परपरोवणिधा चेदि । तय अणत्तरोवणिधा जहणद्विदीए सकिलेमद्विणाणेहिंतो विन्त्रियाए द्विदीए सकिलेमद्विणाणि विसमाहियाणि । को पडिभागो ? पल्लिदोवमस्स अमसेवदिभागो । विदिय-द्विन्तिसकिलेमद्विणाणेहिंतो तदियद्विन्तिसकिलेमद्विणाणि विमेमाहियाणि । एव पडिभागो

शंका—सूत्रमें एक मात्र अल्पबहुच अनुयोगद्वारकी ही प्ररूपणां किमल्लिये की गई है ।

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, वे दोनों अल्पबहुत्व प्ररूपणाके अन्तर्गत हैं । कारण यह कि मत्व और प्रमाणके अन्तर्गत होनेपर उक्त परिणामोंके विषयमें अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा सम्भव नहीं है ।

उनमें पहिले एक जीवसमामका आशय लेकर सकलेश विगुद्धिस्थानोंकी प्ररूपण की जाती है । यथा—जघय स्थितिमें सकलेशस्थान है । इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति तक ले जाना चाहिये । इसी प्रकार विगुद्धिस्थानोंकी भी प्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि उनकी प्ररूपणा उत्कृष्ट स्थितिसे लेकर करना चाहिये । प्ररूपणा समाप्त हुई ।

जघय स्थितिसे सकलेशस्थानका प्रमाण असख्यात छोट है । द्वितीय स्थितिसे भी सकलेशस्थानका प्रमाण असख्यात लोफ ही है । इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति तक ले जाना चाहिये । इसी प्रकार विगुद्धिस्थानसे भी प्रमाणकी प्ररूपणा निपरीत क्रमसे करना चाहिये ।

यदा प्रमाणानुयोगद्वारसे सूचित श्रेणि, अवहार और भागाभागकी प्ररूपणा करते हैं । उनमें श्रेणिप्ररूपणा दो प्रकार है—अणत्तरोवनिधा और परपरोवनिधा । उनमें अणत्तरोवनिधाकी अपेक्षा—जघय स्थितिसे सकलेशस्थानसे द्वितीय स्थितिसे सकलेशस्थान विशेष अधिक है । प्रतिभाग क्या है ? प्रतिभाग पदोपसर्गा असख्यातवा भाग है । द्वितीय स्थितिसे सकलेशस्थानोंकी अपेक्षा तृतीय स्थितिसे सकलेशस्थान विशेष

पलित्नेवमस्म असरेज्जन्निभागमेतो । एव णेत्तं जाय उक्कम्मट्टिदिमकिलेमट्टाणाणि ति । एवमणत्तरोरणिवा गदा ।

परपरोरणिवा जहण्णट्टिदिमकिलेमट्टाणेहितो पलित्नेवमस्म असरेज्जन्निभाग-
मेत्तद्वाण गत्तण दुग्गुणत्तङ्गी होदि । पुणो वि णत्तियमट्टाणमुत्तरि गत्तण चदुग्गुणत्तङ्गी होदि ।
एव णेयत्तं जाय उक्कम्मट्टिदिम सक्किलेमट्टाणाणि ति । एत्थ णाणागुणहाणिसलामाओ
योराओ । एग्गुणहाणिट्टाणत्तम्मसत्तद्दुग्गुण । एव तिमोहिट्टाणाण पि मेत्तिपम्बण त्रिररीद-
म्मोग कायत्तं, उक्कम्मट्टिदिपरिणामेहितो हेट्टिम हेट्टिमट्टिदिपरिणामाण त्रिमोहायित्तुत्त-
लभादो । एव मंडिपम्बणा गत्ता ।

अत्रहागे उच्यते । त जहा—सत्रमकिलेमट्टाणाणि जहण्णट्टिदिमकिलेमपमाणेण
अवहिरिज्जमाणं केत्तचिरेण कारेण अवहिरिज्जति ? असरेज्जेण कारण अवहिरिज्जति ।
एव णेत्तं जाय उक्कम्मियाण ट्टिदिम सक्किलेमट्टाणाणि ति । एव तिमोहिट्टाणाण पि
त्तत्तं । अत्रहागे गदो ।

जहण्णियाण ट्टिदिम सक्किलेमट्टाणाणि स्वस्वसक्किलेमट्टाणाण केत्तडिओ भागो ?
असरेज्जन्निभागो । एव णेत्तं जाय उक्कस्सियाण ट्टिदिम सक्किलेमट्टाणाणि ति । एव
तिसोहिट्टाणाण' भागाभागपम्बणा कायत्ता । एव भागाभागपम्बणा गदा ।

अधिक है । यद्वा प्रतिभाग पत्योपमका असख्यातवा भाग ह । इस प्रकार उत्पद्य स्थितिके
सफलेशस्थानों तक ले जाना चाहिये । इस प्रकार अनन्तरोपनिधा समाप्त हुई ।

परपरोपनिधासे जघ य न्धित्तके सफलेशस्थानोंकी अपेक्षा पत्योपमके असख्यातवें
भाग मात्र अध्यात जायत्तं दुग्गुणी वृद्धि होती है । फिर भी इतना मात्र अ ध्यात आगे
जायत्तं चतुग्गुणा वृद्धि होती है । इस क्रमसे उत्पद्य स्थितिके सफलेशस्थानों तक ले जाना
चाहिये । यद्वा नाना गुणहानिदालनायें स्तोक हैं । एक गुणहानिस्थानात्तर असख्यातगुणा
ह । इसी प्रकार त्रिगुद्धिसंस्थानोंकी भी श्रेणिप्ररूपणा विपरीत क्रमसे करना चाहिये,
क्योंकि, उत्पद्य स्थितिके सफलेशस्थानोंकी अपेक्षा नीचे नीचेकी स्थितियोंके परिणाम
विनाय अधिक पाये जाते हैं । इस प्रकार श्रेणिप्ररूपणा समाप्त हुई ।

अवहारकी प्ररूपणा करने है । यथा समस्त सफलेशस्थानोंको जघ य स्थितिके
सफलेशस्थानोंके प्रमाणसे अपहृत करनेपर वे कितने कालने द्वारा अपहृत होते हैं ?
उक्त प्रमाणसे वे असख्यात जालन द्वारा अपहृत होते हैं । इस प्रकार उत्पद्य स्थितिके
सफलेशस्थानातक ले जाना चाहिये । इसी प्रकार त्रिगुद्धिसंस्थानोंके भी अवहारका कथन
करना चाहिये । अवहारका कथन समाप्त हुआ ।

जघ य न्धित्तके सफलेशस्थान सब सफलेशस्थानोंके कितनेवें भाग प्रमाण है ? वे
सब सफलेशस्थानोंके असख्यातवें भाग प्रमाण है । इस प्रकार उत्पद्य स्थितिके स्थानों
तक ले जाना चाहिये । इसी प्रकार त्रिगुद्धिसंस्थानोंके भागाभागकी प्ररूपणा करना चाहिये ।
इस प्रकार भागाभागप्ररूपणा समाप्त हुई ।

१ अ-आ काप्रतिपु ' तिसोहिट्टाणाणि ' इति पाठ ।

मपहि अप्पाचहुअपम्बणाए सुतुहिट्टाए विवरण कम्मामो—मयत्थोना सुहुमेइत्थिय-
अपज्जतयस्म मक्खिलेम विमोहिट्टाणाणि । सपहि मक्खिलेमट्टाणाण विमोहिट्टाणाण च को
भेदो ? परियत्तमाणियाण माद थिर सुम सुभग सुम्मर-आनेजादीण सुमवयडीण ऋधकाग्ण-
भृदकमायट्टाणाणि विमोहिट्टाणाणि, अमाद-अथिर अमुह दुमग [दुस्सर-] अणान्नेजादीण
परियत्तमाणियाणममुहवयडीण धधकाग्णरूमाउदयट्टाणाणि मक्खिलेमट्टाणाणि ति
ण्णो तेमिं भेदो । वहुमाणकमाओ मक्खिलेमो, हायमाणो विमोहि ति किण्ण
धेय्णे ? ण, मक्खिलेम विमोहिट्टाणाण सखाए समाणत्तपसगादो । कुदो ?
जहण्णुस्सकस्मपरिणामाण जहाकमेण विसोहि मक्खिलेमणियमदसणादो मज्झिम-
परिणामाण च मक्खिलेम विसोहिपस्सउत्तिदसणादो ण च सक्खिलेम विसोहिट्टाणाण मग्गाए
समाणत्तमत्थि, मक्खिलेमट्टाणेहिंतो विमोहिट्टाणाणि णि छण्ण घोवाणि ति पनाइज्जमाण-
गुम्पण्णेण सह पिरोहादो । उअम्भेट्टिदीण विमोहिट्टाणाणि योराणि जहण्णट्टिदीए

अथ सूत्रोद्दिष्टे अल्पवहुत्वकां प्ररूपणाका विवरण करते हैं—सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्या
सकृते सक्लेश विशुद्धिस्थान सवसे स्तोत्र है ।

शंका—यहां सक्लेशस्थाना और विशुद्धिस्थानोंमें क्या भेद है ?

समाधान—रूता, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्थर आर आदेय आदिक परिवर्तमान शुभ
प्रकृतियोंके बंधके कारणभूत कपावस्थानोंको विशुद्धिस्थान कहते हैं और असाता,
आन्धर अशुभ, दुर्मग [दुस्वर] और अनादेय आदिक परिवर्तमान अशुभ प्रकृतियोंके
बंधके कारणभूत कपायाके उदयस्थानोंको सक्लेशस्थान कहते हैं, यह उन दोनोंमें भेद है ।

शंका—बहुती हुई कपावको सक्लेश और हीन होनी हुई कपावको विशुद्धि क्यों नहीं
स्वीकार करते ?

समाधान—नहीं, क्याकि यक्षा स्वीकार करनेपर सक्लेशस्थानों आर विशुद्धि
स्थानोंकी सख्याके समान होनेका प्रसंग आता है । कारण यह कि जघम्य और
उत्कृष्ट परिणामोंके क्रमशः विशुद्धि और सक्लेशका नियम देखा जाता है, तथा मध्यम
परिणामाका सक्लेश बंधवा विशुद्धिके पक्षमें अस्तित्व देखा जाता है । परन्तु सक्लेश
और विशुद्धि स्थानोंमें स्वभावकी अपेक्षा समानता है नहीं, क्योंकि 'सक्लेशस्थानोंकी
अपेक्षा विशुद्धिस्थान नियमसे स्तोत्र है' इस परम्परासे प्राप्त गुरुके उपदेशसे विरोध
आता है । अथवा, उत्कृष्ट स्थितिमें विशुद्धिस्थान थोड़े और जघम्य स्थितिमें बड़े बहुत

१ अ आ काप्रतिपु 'परियत्तुणियाणि,' ताप्रती 'परियत्तमाणियाणि' इति पाठ । एतत्थिपराह
उ च मुर मणु दो दो पण्हि चउरसे । रिमह पठपविहाथगइ सोल्ल परियत्तुमवग्गो ॥ प स १,८१
२ अ आ-काप्रतिपु 'परियत्तुणियाणि' इति पाठ । अस्साय थावरदस नरयदुग्ग विहगइ प अपसत्था ।
पण्हि रिममचउरखनेयरा अदुमपेण्णिया ॥ प स १,८२ ३ म प्रतिपाठोऽयम् । अ आ का प्रतिपु
एक्कस' ताप्रती 'ए (उ) ककस' इति पाठ ।

घट्टुणाणि ति गुम्बवणसादो वा हायमाणकमाउदयट्टाणाण विसोहिभावो णत्थि ति णन्दे । सम्भत्तुपत्तीए सादट्टाणपम्बवण' कादण पुणो मक्किन्नेम विसोहीण पम्बवण कुणमाणा वस्साणाडरिया ज्ञाणावेति जहा हायमाणकमाउदयट्टाणाणि चेव विमोहिसण्णिदाणि ति भण्णिरे होट्टु णाम तथ तराभावो, दमण-चरित्तमोहस्खवणोत्तसामणासु पुच्चिल्लमण उदयमागद-अणुभागफहएहिंतो अणतगुणहीणफइयाणमुदणण जादकमायउदयट्टाणस्म विमो-हित्तुग्गमात्तो । ण च एम णियमो ससारावत्थाए अत्थि, तथ छव्विहवट्ठि हाणीहि कमाउदयट्टाणाण उत्तत्तिदमणादो । ससारावत्थाए वि अतोमुहुत्तमणतगुणहीणकमेण अणुभाग-फइयाण उदओ अत्थि ति धुते होट्टु, तथ पि तराभाव' पडुच्च विमोहित्तनुवगमादो । ण च एत्थ अणतगुणहीणफइयाणमुदणण उप्पण्णकमाउदयट्टाण विमोहि ति घेप्पदे, एत्थ एवविहविसग्गमाभावो' । किंतु सादवधपाओग्गकमाउदयट्टाणाणि विमोही, असाद-वधपाओग्गकमाउदयट्टाणाणि सक्किन्नेमो ति घेत्तन्वमण्णहा विसोहिट्टाणाणमुक्कस्मट्ठिदीए

होते हैं, इस गुप्ते उपदेशमें जाना जाता है कि हानिको प्राप्त होनेवाली कपायके उदयस्थानोंके विशुद्धता सम्भव नहीं है ।

शंका—सम्यक्त्योत्पत्तिमें सातावेदनीयके अज्ञानकी प्ररूपणा करके पञ्चात् स्वकेश य विशुद्धिनी प्ररूपणा करते हुए व्याख्याताचार्य यह छापित करते हैं कि हानिको प्राप्त होनेवाले कपायके उदयस्थानोंकी ही विशुद्धि सदा है ?

समाधान—ऐसी आशय होनेपर उत्तर देते हैं कि वहाँपर वैसा कहना ठीक है, क्याकि, दशन और चारित्र्य मोहकी क्षयणा य उपशामनामें पूव समयमें उदयको प्राप्त हुए अनुभागस्पर्धकोंकी अपेक्षा अनन्तगुणे हीन अणुभागस्पर्धकोंके उदयसे उत्पन्न हुए कपायो दयस्थानके विशुद्धपता स्वीकार किया गया है । परन्तु यह नियम ससारास्थामें सम्भव नहीं है, क्याकि, वहाँ छह प्रकारकी बुद्धि य हानियोंसे कपायोदयस्थानकी उत्पत्ति देती जाती है ।

शंका—ससारास्थामें भी अनन्तमुहर्त काल तक अनन्तगुणे हीन क्रमसे अनुभाग स्पर्धकोंका उदय है ही ?

समाधान—ससारास्थामें भी उनका उदय बना रहे, वहाँ भी उक्त स्वरूपना आश्रय करके विशुद्धता स्वीकार की गई है । परन्तु यहाँ अनन्तगुणे हीन स्पर्धकोंके उदयसे उत्पन्न कपायोदयस्थानको विशुद्धि नही प्रहण किया जा सकता है, क्योंकि, यहाँ इस प्रकारकी विवक्षा नहीं है । किंतु सातावेदनीयके य-धयोग कपायोदयस्थानोंको विशुद्धि और असातावेदनीयके य-धयोग कपायोदयस्थानोंको स्वकेश प्रहण करना चाहिये, क्योंकि, इसके बिना उत्पृष्ट स्थितिमें विशुद्धिस्थानोंकी स्तोत्रताका विरोध है ।

१ प्रतिपु 'सादट्टाण पम्बवण' इति पाठ । २ प्रतिपु 'बाव' इति पाठः । ३ अ आ का प्रतिपु 'तराभाव' इति पाठ । ४ ताप्रती 'एव विवविकम्मात्रावादा' इति पाठ ।

योऽतविरोहादो ति । तदो सकिलेमट्टाणाणि जहण्णट्टिदिप्पहुडि विमेसाहियरङ्गीए,
उक्कम्मट्टिदिप्पहुडि विमोहिट्टाणाणि निमसाहियरङ्गीए गच्छति [ति] विमोहिट्टाणेहिंतो
सकिलेमट्टाणाणि विमेसाहियाणि ति मिद्ध ।

वादेरेइदियअपज्जयस्स सकिलेस-विसोहिट्टाणाणि असखेज्जगुणाणि ॥ ५२ ॥

सुहुमेइदियअपज्जयस्स ट्टिदिनट्टाणेहिंतो वान्नेरेइदियअपज्जयस्स ट्टिदिनट्टाणाणि
सखेज्जगुणाणि ति सुत्तेहि पन्निदाणि । तदो सुहुमेइदियअपज्जयस्स मकिलेमनिमोहि-
ट्टाणेहिंतो वादेरेइदियअपज्जयस्स मकिलेम विमोहिट्टाणेहि सखेज्जगुणेहि होदव । तेण
असखेज्जगुणाणि ति सुत्तवयण ण घडेदे ? एत्थ परिहारो उच्चदे—जदि सअट्टिदीण
सकिलेम विमोहिट्टाणाणि मरिसाणि चेत्त होंति तो सखेज्जगुणत्त जुअत्ते । ण च मअट्टिदि-
सकिलेम विसोहिट्टाणाण मरिसत्तमत्थि, जहण्णुक्कम्मट्टिदिप्पहुडि मकिलेम विमोहिट्टाणाणम-
सखेज्जगुणाणा गमणुत्तमादो । तेण सुहुमेइदियअपज्जयस्स मकिलेस विमोहिट्टाणेहिंतो
वादेरेइदियअपज्जयस्स सकिलेम विमोहिट्टाणाणममअवेज्जगुणत्त जुअदि ति घेत्तव्ये ।

अतएव सन्देशस्थान जघय स्थितिसे लेकर उत्तरोत्तर विशेष अधिकके प्रमसे
तथा विशुद्धिस्थान उरुष्ट स्थितिसे लेकर विशेष अधिक प्रमसे जाते हैं, इसीलिये
विशुद्धिस्थानोंकी अपेक्षा सफ्लेशस्थान विशेष अधिक हैं, यह सिद्ध होता है ।

सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके सन्देश विशुद्धिस्थानोंसे वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके
सन्देश विशुद्धिस्थान अमत्यातगुण हैं ॥ ५२ ॥

शंका—सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिबन्धस्थानोंकी अपेक्षा वादर एकेन्द्रिय
अपर्याप्तकके स्थितिबन्धस्थान सत्यातगुण हैं, ऐसा सुत्रों (३७ ३८) में कहा जा चुका
है । अतएव सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके सफ्लेश विशुद्धि स्थानोंकी अपेक्षा
वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके सफ्लेश विशुद्धिस्थान सत्यातगुण होना चाहिये । इसीलिये
' असखेज्जगुणाणि ' यह मूलवचन घटित नहीं होता है ?

समाधान—इस शंकाका परिहार कहते हैं—यदि सभी स्थितियोंके सन्देश
विशुद्धिस्थान सदृश ही होते, तो वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके सफ्लेशविशुद्धिस्थानोंको
सत्यातगुणा कहना उचित था । परन्तु मत्र स्थितियोंके सफ्लेशविशुद्धिस्थान सदृश होते
नहीं हैं, क्योंकि, जघय और उरुष्ट स्थितिसे लेकर प्रमश सफ्लेश और विशुद्धि
स्थानोंका गमन असत्यातगुणागच्छिने माध पाया जाता है । अतएव सूक्ष्म एकेन्द्रिय
अपर्याप्तकके सफ्लेश विशुद्धिस्थानोंसे वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके सन्देश विशुद्धिस्थानोंको
असत्यातगुणा कहना उचित है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

१ कथमेव गम्यत सर्वत्रायसंखयगुणानि सफ्लेशस्थानानीति चेदुच्यत इह सूक्ष्मस्यापर्याप्तस्य

मपहि जदि वि अमखेज्जगुणत्त बुद्धिमताण मिम्माण सुगम तो वि मद्दमेहावि-
 सिस्साणमणुग्गहट्टममपेज्जगुणत्तमाहण उतइस्सामो । त जहा—सुहुमेइत्तियअपज्जत्तयस्स ट्टिदि-
 वधट्टाणाण पल्लिदोवमस्स अमग्गेत्तन्निभागमेत्ताण सदिट्ठीण रचना कायया । पुणो एदेसिं
 ट्टिदिवधट्टाणाण दन्निखणदिसाए चादरेइदियअपज्जत्तट्टिदिनधट्टाणाण रचना कायवा ।
 तय चादरेइदियअपज्जत्तट्टिदिवधट्टाणे सुहुमेइदियअपज्जत्तट्टिदिवधट्टाणाणि मोत्तूण सेसहेट्टिम-
 ट्टिदिवधट्टाणाणि सुहुमेइत्तियअपज्जत्तट्टिदिनधट्टाणेहिंतो मखेज्जगुणाणि सुहुमेइदियअपज्जत्त-
 विमोहीदो चादरेइदियअपज्जत्तविमोहीण अणतगुणत्तुलभादो । उवरिमट्टिदिवधट्टाणाणि
 ततो ससेज्जगुणाणि, सुहुमेइदियअपज्जत्तउक्कम्ससकिलेमादो चादरेइत्तियअपज्जत्त-उक्कम्स
 मकिलेमस्स अणतगुणत्तुलभादो । एव च ट्टिदट्टिदिनधट्टाणेसु जहण्णट्टिदिवधट्टाणमादिं
 कादण जावुक्कम्सट्टिदिनधट्टाणे त्ति ताव पादेक्कम्सपेज्जलोग्गमेत्तमकिलेम विमोहिट्टाणाण

अथ यद्यपि बुद्धिमान् शिष्योंके लिये असत्प्रायतगुणत्वका जानना सुगम है, तथापि
 मद्बुद्धि शिष्योंके अनुग्रहार्थ असत्प्रायतगुणत्वका साधन कहा जाता है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय
 अपर्याप्तकके पल्योपमके असत्प्रायतवर्षे भाग मात्र स्थितिवध स्थानोंकी सहाय्यमें रचना करना
 चाहिये। पश्चात् इन स्थितिवधस्थानोंकी दक्षिण दिशामें बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके
 स्थितिवध स्थानोंकी रचना करना चाहिये। उनमें बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिवध
 स्थानोंमेंसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिवधस्थानोंकी छोड़कर अवशिष्ट नीचेके
 स्थितिवधस्थान सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिवधस्थानसे सत्प्रायतगुणे है,
 क्योंकि, सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकी विगुञ्जितसे बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकी विगुञ्जि
 अन तगुणी पायी जाती है। उनसे ऊपरके स्थितिवधस्थान सत्प्रायतगुणे है, क्योंकि,
 सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके उत्कृष्ट सफलेशसे बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका उत्कृष्ट
 सफलेश अनन्तगुणा पाया जाता है। इस प्रकार अस्थित स्थितिवधस्थानोंमें जघन्य
 स्थितिवधस्थानको आदि करके उत्कृष्ट स्थितिवधस्थान तक प्रत्येक स्थितिवधस्थानके

जघन्यस्थितिवधस्थानमें यानि सकलेशस्थानानि तेभ्य समयाधिक्कमवस्थितिवधधारणमें सकलेशस्थानानि
 विशेषाधिकारानि । तेभ्योऽपि द्विसमयाधिकजघन्य स्थितिवधधारणमेंऽपि विशेषाधिकारानि । एवं तावद्वाय
 पावत्तस्यैवेत्कृष्टा स्थिति । तदुत्कृष्टस्थितिवधधारणमें च सकलेशस्थानानि जघन्यस्थितिवधसकलेश
 स्थानापेक्षयाऽसंख्येयगुणानि लभ्यन्ते । यदैतदेव तदा सुतरामपर्याप्तबादरभ्य सकलेशस्थानानि अपर्याप्त
 सूक्ष्मसकलेशस्थानापेक्षयाऽसंख्येयगुणानि भवन्ति । तथाहि अपर्याप्तसूक्ष्मसत्त्वस्थितिवधस्थानापेक्षया
 बादरपर्याप्तस्य स्थितिवधस्थानानि संख्येयगुणानि । स्थितिवधानवृद्धौ च सकलेशस्थानवृद्धि । ततो यदा
 सूक्ष्मपर्याप्तस्यापि स्थितिवधानेष्वतिस्तोकपु जघन्यस्थितिवधानसकलेशस्थानापेक्षया उत्कृष्टे स्थितिवधाने
 सकलेशस्थानभ्यसकलेशस्थानानि भवन्ति, तदा बादरपर्याप्तस्थितिवधानेषु सूक्ष्मपर्याप्तस्थितिवधानापेक्षयाऽ
 संख्येयगुणेषु सुधरा भवन्ति । क प्र (मल्ल) १, ६८ ६९

आदीन्ते पट्टि क्रमेण विमेषाहियाणममरेअणाणागुणभङ्गिमलागमहियाण दुगुणदुगुणपमरे-
 मवेममरेण अवट्टिदगुणहाणिपमाणाण पुथ पुथ णिवग्गणकडयमेत्तग्गभाण गदाण रचना
 कायन्वा । तत्थ गुणहाणिपमाणाण सक्किलेम तिसोहिट्टाणाण चालजणशुद्धिवट्टानग्गट्ट-
 मेमा सदिट्ठी—

३२७६८००

२५६००

एमा सुहेमइणियअपजत्त-

१६३८४००

१२८००

सदिट्ठी

८१९२००

किमट्ट हेट्टिमगुणहाणिपरिणामेहिंतो अणतरउपरिमगुणहा-

४०९६००

णिपरिणामा दुगुणा ? ण एस दोमो, जेण हेट्टिमगुणहाणिनह-

२०४८००

ण्टाणपरिणामेहिंतो उवरिमाणतसगुणहाणिजहणपरिणामा दुगुणा

१०२४००

निदियट्टाणपरिणामेहिंतो उवरिमगुणहाणि निदियट्टाणपरिणामा

५१२००

दुगुणा, तदियट्टाणपरिणामेहिंतो [उपरिमगुणहाणि-] तदिय-

२५६००

ट्टाणपरिणामा दुगुणा, एव णेदव्व जान दोण्ण गुणहाणीण

१२८००

चरिमट्टिदिववट्टाणे त्ति, तेण हेट्टिमगुणहाणिसव्वमक्किलेम-

६४००

विमोहिट्टाणेहिंतो अणतरउपरिमगुणहाणिमक्किलेम विमोहि-

३२००

ट्टाणाण दुगुणत्त ण विरुज्जेदे ।

१६००

पढमगुणहाणिसव्वज्जमसाणपुत्तान्ते तदियगुणहाणिसव्वज्ज-

८००

वमाणपुत्तो चउग्गुणो होदि । एत्थ वि कारण पुत्त व पम्भेदव्व^१ ।

४००

चउत्थगुणहाणिसव्वज्जमसाणपुत्तो अट्टगुणो (८) । एत्थ वि

२००

कारण पुत्थ व वत्तव्व । एव गठण जहणपरिणामरेअण्णयमे

१००

त्तगुणहाणीयो उवरि गट्ठण ट्टिदगुणहाणीए सव्वज्जमसाणपुत्तो

एमा चारेइदियअपजत्तसदिट्ठी

असत्यात लोक प्रमाण जो सकलेशविगुच्छिस्थान आदिसे लेकर ममदा विशेष अधिक है, अमर्यात मानागुणगुच्छिशलाकाओंसे सहित हैं, इन्ने इन्ने प्रश्नपत्रके प्रवेशवश अर्थात् स्थान गुणहानिके बराबर हैं, तथा पृथक् पृथक् निर्वर्णणाकाण्डक प्रमाण खण्ड भागको प्राप्त हैं उनकी रचना करना चाहिये । उनमें गुणहानि प्रमाण मात्र सकलेशविगुच्छिस्थानोंकी, बाल जनकोंकी बुद्धिके बहानेके हेतु यह सहायि है (मूलमें देखिये) ।

शर्ता—अधस्तन गुणहानिके परिणामोंकी अपेक्षा उससे अधिक अथवा अधिक आनेकी गुणहानिके परिणाम इन्ने क्यों हैं ?

१ काप्रती ' सुहेमइदिय ' इति पाठ । २ काप्रती ' चारेइदिय ' इति पाठ । ३ मप्रतिपाठो
 ५५५ । अ-आ-का प्रतिपु पुत्थ वरुवेदव्व^१ ताप्रती ' पुत्थ [व] वरुवेदव्व^१ इति पाठ ।

जहणपरितामसेजगुणो, पदमगुणहाणीण एगेगट्टिदिन-दृष्टाणमक्लिेम विमोहीर्हितो अष्पि-
गुणहाणीण पदमादिद्विदिन-दृष्टाणमक्लिेम त्रिमोहिदृष्टाण जहाक्रमेण जहणपरितासखे-
जगुणमेतगुणगाम्बलादो । एगुपरिं पि जाणिदृण गुणगारो साहेयचो । एग मदिद्वि
ठविय एदिस्मे अजहणलेण सुहुमेणियअपवत्तमक्लिेम-विमोहिदृष्टाणेर्हितो वादग्दिय-
अपवत्तमक्लिेमविमोहिदृष्टाणाणममखेजगुणत्त भण्णदे । त जहा—वादेउदियअपवत्तणाणा-
गुणहाणिमलागाओ जहणपरितामखेज्जउदणणहि ओरद्विय लद्ध विरलेयुण णाणागुण-
हाणिमलागाओ ममएउ करिय दिण्णे एग पडि जहणपरितासखेज्जउदणाओ
पावति । एच चरिमजहणपरितामसेज्जउदणयमेतगुणहाणीण मयमक्लिेम विमो

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, यत अधस्तन गुणहानि सम्यधी जघन्य स्थानके परिणामोंसे आगेकी अव्यवहित गुणहानिके जघन्य परिणाम होने हैं, अधस्तन गुणहानि सम्यधी द्वितीय स्थानके परिणामोंकी अपेक्षा आगेकी गुणहानिके द्वितीय स्थान सम्यधी परिणाम होने हैं, अधस्तन गुणहानि सम्यधी तृतीय स्थानके परिणामोंसे अग्रिम गुणहानि सम्यधी तृतीय स्थानके परिणाम होने हैं, इस प्रकार दो गुणहानियोंके अन्तिम स्थितिव्यवस्थान तक ले जाना चाहिये इसी कारण अधस्तन गुणहानि सम्यधी समस्त संकलेश विगुहस्थानोंकी अपेक्षा उससे अपवहित आगेकी गुणहानि सम्यधी संकलेश विगुहस्थानोंके होनेमें कोई विरोध नहीं है।

प्रथम गुणहानि सम्यधी समस्त अव्यवसानपुजसे तृतीय गुणहानि सम्यधी समस्त अव्यवसानपुज चौगुणा है। यहाँ भी पहिलेके ही समान कारण घतलाना चाहिये। उससे चतुर्थ गुणहानि सम्यधी समस्त अव्यवसानपुज अठगुणा है। यहाँ भी पहिलेके ही समान कारण घतलाना चाहिये। इस प्रकार जाते हुए जघन्य परीतासस्थानके अधच्छेदोंके बराबर गुणहानियाँ आगे जाकर स्थित गुणहानि सम्यधी समस्त अव्यवसान पुज प्रथम गुणहानि सम्यधी समस्त अव्यवसानपुजसे जघन्य परीतासस्थानगुणा है क्योंकि, प्रथम गुणहानि सम्यधी एक एक स्थितिव्यवस्थानके संकलेश विगुहस्थानोंसे विवक्षित गुणहानि सम्यधी प्रथमादिक स्थितिव्यवस्थानके संकलेश विगुहस्थानोंका गुणवार वरुण जघन्य परीतासस्थातगुणा मान पाया जाता है। इसी प्रकार आगे भी जानकर गुणवारका कथन करना चाहिये।

इस प्रकार उपयुक्त सदृष्टिको स्थापितकर उसके आधारसे सूक्ष्म एकत्रिय अपर्वातके संकलेश विगुहस्थानोंकी अपेक्षा वादर एकेन्द्रिय अपर्वातक संकलेश विगुहस्थानोंका अन्वयानगुणत्त घनलाया जाता है। यथा—वादर एकेन्द्रिय अपर्वातकी नानागुणहानि शलाकाओंमें जघन्य परीतासस्थानके अधच्छेदोंका भाग लेकर जो प्राप्त हो उसका विरलन कर नानागुणहानिशलाकाओंको समवण्ड करके देनेपर एक एक अङ्कके प्रति जघन्य परीता सस्थातके अधच्छेद प्राप्त होते हैं। यहाँ जघन्य परीतासस्थातके अन्तिम अधच्छेद प्रमाण गुणहानियाँका समस्त संकलेश विगुहस्थानपुज एक कम विरलन रानिसे गुणित जघन्य

द्विष्टाणपुनो म्वृणपरिलणगुणित्जहणपरितामगेज्ज्रेदणयमेत्तहेट्टिमगुणहाणीण मन्वज्जुप
 साणपुनादो अमगेज्जगुणो, विमेमाहियउपकम्मसंवेज्जगुणगारुमणातो । ऊयमेत्
 णय्वेद ? ज्जुतीदो । त जहा—पढमनहणपरितामगेज्ज्रेदणयमेत्तगुणहाणीण मन्वज्जुप
 साणपुनादो विदियनहणपरितामगेज्ज्रेदणयमेत्तगुणहाणीण सन्वट्टिन्धिधज्जममाणट्टाणाणि
 जहणपरितासखेज्जगुणाणि, हेट्टिमपढमान्निगुणहाणिअञ्जनसाणपुनादो उपरिमपढमान्निगुण-
 हाणिअञ्जममाणपुनम्म पुव पुव जहणपरितामवगुणत्तुत्तमादो । तदियनहणपरिता-
 सखेज्ज्रेदणयमेत्तगुणहाणीण मन्वज्जुपमाणपुनो पढमनहणपरितामगेज्ज्रेदणयमेत्तगुणहाणीण
 सन्वज्जुपमाणपुनातो जहणपरितामखेज्जवग्गुणो होत्ति, जहणपरितामवज्ज्रेदणए
 दुगुणिय निरलिय विग करिय अण्णोण्णम्मये क्खे जहणपरितामगेज्जगुणप्पीदो ।
 विदियनहणपरितासखेज्ज्रेदणयमेत्तगुणहाणीण सन्वज्जुपमाणपुनादो जहणपरितासखेज्ज-
 गुणो होत्ति, हेट्टिमट्टिदिपरिणामेहिंतो उपरिमट्टिदिपरिणामाण पुव पुव जहणपरिता-
 मखेज्जगुणत्तुत्तमादो । पुणो हेट्टिमदोपडगुणहाणीण मन्वज्जुपमाणेहिंतो तदियपडगुण-

परीतासख्यातके अधच्छेदोंके बराबर अधस्तन गुणहानियोंके समस्त अध्यवसानपुजसे
 असख्यातगुणा है, क्योंकि यहाँ गुणकार उत्कृष्ट स्वव्यातसे विशेष अधिक देखा जाता है ।

शका—वह कैसे जाना जाता है ?

ममानान—उह युक्तिसे जाना जाता है । यथा—जघन्य परीतासख्यातके प्रथम
 अर्धच्छेदके बराबर गुणहानियोंके समस्त अध्यवसानपुजकी अपेक्षा जघन्य परीतासख्यातके
 द्वितीय अधच्छेदके बराबर गुणहानियोंके समस्त स्थितिवन्धाध्यवसानस्थान जघन्य
 परीतासख्यातगुणे है, क्योंकि, अधस्तन प्रथमादिव गुणहानियोंके अध्यवसान पुजकी
 अपेक्षा आगेकी प्रथमादिव गुणहानियोंका अध्यवसानपुज पृथक् पृथक् जघन्य परीता
 सख्यातगुणा पाया जाता है । जघन्य परीतासख्यातके तृतीय अधच्छेदके बराबर
 गुणहानियोंका समस्त अध्यवसानपुज जघन्य परीतासख्यातके प्रथम अर्धच्छेदके बराबर
 गुणहानियोंके समस्त अध्यवसानपुजकी अपेक्षा जघन्य परीतासख्यातके षष्ठा जो प्रमाण
 हो उससे गुणित है, क्योंकि, जघन्य परीतासख्यातके अर्धच्छेदोंकी दुगुणित करनेपर जो
 प्राप्त हो उसका घिरान करके दूनाकर परस्पर गुणित करनेपर जघन्य परीतासख्यातका
 षष्ठ उत्पन्न होता है । जघन्य परीतासख्यातके द्वितीय अधच्छेदके बराबर गुणहानियोंके
 समस्त अध्यवसानपुजकी अपेक्षा [जघन्य परीतासख्यातके तृतीय अर्धच्छेद मात्र गुण
 हानियोंका समस्त अध्यवसानपुज] जघन्य परीतासख्यातगुणा है, क्योंकि, अधस्तन
 स्थितियोंके परिणामोंसे उपरिम स्थितियोंके परिणाम पृथक् पृथक् जघन्य परीतासख्यात
 गुणे पाये जाते हैं । पुनः अधस्तन दो खण्ड सम्बन्धी गुणहानियोंके समस्त अध्यवसान

हाणीण मन्वज्ववमाणपुजो असखेज्जगुणो होदि, रुवाहियनहणपरितासखेज्जेण जहणपरितामसेज्जयस्म जग्गे भागे हिदे रुवाहियनहणपरितामसेज्जेण एगन्व सडिय तथ एगखडेणम्भहियउक्कम्मसखेज्जेमेतम्बुलभाणे । पुणो पद्मसडम-वगुण-हाणिमन्वज्ववमाणपुजादो चउत्थसडमन्वज्ववमाणपुजो जहणपरितासखेज्जेणगुणो होदि, तिण्णिनहणपरितामसेज्जेणण निरलिय विग करिय अण्णोणम्भत्ये क्के तिपटुप्पणपरितासखेज्जेणुलभाणे । विदियसडज्जवमाणेहिंतो जहणपरितासखे-ज्जवगुणो होदि, टुगुणिदजहणपरितामखेवछेदणण निरलिय विग करिय अण्णो मथे क्के जहणपरितासखेज्जेवगुणपतीने । तन्वियवडज्जवमाणेहिंतो जहणपरितासखेज्जेणो, एगजहणपरितासखेज्जेदणयमेतगुणहाणीयो उपरि चडिदण अट्टाणादो । हेट्टिमतिण्ण-सडमन्वगुणहाणिमन्वज्ववमाणपुजादो उवरिमचउत्थसडज्जवमाणपुजो अमसेज्जेणो होदि, जहणपरितासखेज्जेणण रुवाहियजहणपरितासखेज्जेणण जहणपरितासखेज्जेण भागे हिदे एदेण भागहारेण एगन्व सडिय तथ एगखडेणम्भहियउक्कम्मसखेज्जेमेतम्बुलभादो ।

स्यान्तोसे तृतीय खण्ड सम्बन्धी गुणदानियोंका समस्त अध्ययसानपुज असख्यातगुणा है, क्योंकि, एक अधिक जघन्य परीतासख्यातका जघन्य परीतासख्यातके वर्गमें भाग देनेपर एक अधिक जघन्य परीतासख्यातसे एक अक्षो खण्डित करनेपर प्राप्त हुए एक भागसे अधिक उत्कृष्ट सख्यात प्रमाण अक्ष पाये जाते हैं । प्रथम खण्ड सम्बन्धी सब गुणदानियोंके समस्त अध्ययसानपुजसे चतुर्थ खण्ड सम्बन्धी समस्त अध्ययसानपुज जघन्य परीतासख्यातका घन करनेपर जो प्राप्त हो उतना गुणा है, क्योंकि, तीन जघन्य परीतासख्यातके अर्धच्छेदोंका विरलन करके दुगुणा कर परस्पर गुणा करनेपर तीन बार उत्पन्न परीतासख्यात अर्थात् उसका घन पाया जाता है । द्वितीय खण्डकी सब गुणदानियोंके परिणामोंकी पक्षा चतुर्थ खण्डका सब परिणामपुज जघन्य परीतासख्यातका वर्ग करनेपर जो प्राप्त हो उससे गुणित है, क्योंकि, दो जघन्य परीतासख्यातके दुगुणे अर्धच्छेदोंका विरलन करके द्विगुणित कर परस्पर गुणा करनेपर जघन्य परीतासख्यातका वर्ग उत्पन्न होता है । तृतीय खण्डके परिणामोंकी अपेक्षा चतुर्थ खण्डका सब परिणामपुज जघन्य परीतासख्यातगुणा है, क्योंकि, एक जघन्य परीतासख्यातके अर्धच्छेदोंके त्रारंभ गुणदानियों ऊपर जाकर उसका व्यवस्थान है । अद्यस्तन तीन खण्ड सम्बन्धी समस्त गुणदानियोंके सब परिणामपुजकी अपेक्षा आगेका चतुर्थ खण्ड सम्बन्धी परिणामपुज असख्यातगुणा है, क्योंकि एक अधिक जघन्य परीतासख्यातसे अधिक जघन्य परीतासख्यातके वगका जघन्य परीतासख्यातके घनमें भाग देनेपर इस भागहारसे एक अक्षो खण्डित करनेपर लघु हुए एक खण्डसे अधिक उत्कृष्ट सख्यात प्रमाण अक्ष पाये जाते हैं ।

एतं पि कथं णन्दे? जहणपरितासखेज्जयस्म वग विरलिय तग्घण समखड करिउणं दिण्णे
 म्व पडि जहणपरितासखेज्ज पावदि, तथ एगेगम्मे गहिं जहणपरितासखेज्जयस्म म्व
 म्वोवलद्वी होति, ताणि म्वाणि पासे विरलिजहणपरितासखेज्जयस्म म्वम्वड कावृण
 दिण्णेषु स्य पडि जहणपरितासखेज्ज पावदि, पुणो तथ स्यमरिदि पडि एगेगम्मे गहिं
 जहणपरितासखेज्ज उप्पज्जति, पुणो तथ एगस्वमवणिय पासे विरलिदएगम्मवस्म दिण्णे
 उक्कस्समग्गन्न पावदि, पुणो अवणिदएगस्व एदीण विरलणाए खड्दवृण तथ एगेगखेडे
 स्य पडि दिण्णे एगम्मवस्म अम्वेज्जदिभागेण भहियउक्कस्ससखेज्जगुणगारो होदि,
 तण णन्दे ।

मपहि पढमग्गड्ज्जवमाणोहिंतो पचमखड्ज्जयमाणा जहणपरितासखेज्जयस्स
 वगवगणेण गुणिदमेत्ता होति, चत्तारिजहणपरितासखेज्जवृदणाओ विरलिय विग करिय
 ज्जणोण्णम्मे ये स्से चदुण्ण जहणपरितासखेज्जाणमणोण्ण म्भत्तरासिंसुप्पतीदो । एव
 सेमग्गडाण पि पुत्र व गुणगारो साहेयनो । मपहि चदुक्कखड्मग्गवसाणेहिंतो

शंका—यह भी कैसे जाना जाता है ?

समाधान—जद्यप्य परीतासख्यातने वर्गका निरल्य कर उसके घनको समखण्ड
 करके देनेपर एक एक अक्षके प्रति जद्यप्य परीतासख्यात पाया जाता है । उन
 निरलित अक्षमेंसे एक एक अक्षके प्रति प्राप्त राशियामेंसे एक एक अक्षको ग्रहण करने
 पर जद्यन्य परीतासख्यातने वग प्रमाण एक पाये जाते हैं । उन अक्षोंको पान्ममें विरलित
 जद्यन्य परीतासख्यातक प्रति समखण्ड करके देनेपर एक एक अक्षके प्रति जद्यन्य
 परीतासख्यात पाया जाता है । फिर उनमेंसे एक एक अक्षके ऊपर रन्वी हूइ प्रत्येक
 राशियामेंसे एक एक रूपके ग्रहण करनेपर जद्यप्य परीतासख्यात उत्पन्न होता है । पुन
 उनमेंसे एक अक्षको कम कर पान्ममें निरलित एक रूपके प्रति देनेपर उत्पन्न सख्यात
 प्राप्त होता है । पश्चात् कम किये गये एक अक्षको इस विरलन राशिसे खण्डित कर
 उनमेंसे एक एक खण्डको प्रत्येक अक्षके प्रति देनेपर एक रूपके असख्यातवर्षे भागसे
 अधिक उत्पन्न सख्यात गुणकार होना है । इसीसे यह जाना जाता है ।

प्रथम खण्डके परिणामोंकी अपेक्षा पचम खण्डके परिणाम जद्यप्य परीतासख्यातने
 वर्गका वर्ग करनेपर जो प्राप्त हो उतने गुणे है, तथाकि, चार जद्यप्य परीतासख्यातोंके
 अर्धच्छेदोंको निरलित कर द्विगुणित करके परस्पर गुणा करनेपर चार जद्यप्य परीता
 सख्यातोंकी अयोयाम्यन्त राशि उत्पन्न होनी है । इसी प्रकार शेष खण्डोंके भी
 गुणकारका कथन पहिलेके ही समाप्त करना चाहिये ।

पचमखडसञ्चञ्जवसाणट्टाणाणि असखेज्जगुणाणि, जहण्णपरितासखेज्जघणेण स्वाहियनहण्ण-परितासखेज्जमहिदजहण्णपरितासखेज्जवग्गम्भहिण्ण जहण्णपरितासखेज्जयस्स वग्गमग्गे भागे हिदे एगस्वस्स असखेज्जदिभागेणन्महियउक्कस्समखेज्जेतम्बुवुलभादो । एत्थ पि कारण पुत्र वत्तञ्च । एत्थुपरिमसत्त्वखडेसु एगस्वस्स असखेज्जदिभागेणन्महियउक्कस्ससखेज्जमेतो गुणगारो वत्तञ्चो । कुट्ठो ? पुच्चिल्लपरुवणाए उवरिमत्थपरुवण पडि धीजीभूदत्तादो । उवरिमगुणगारो अण्णहा किण्ण जायदे ? ण, गुणहाणिअञ्जवसाणट्टाणाण दुगुणत्तण्णहाणु-वत्तीदो । तेण हेट्ठिमसत्त्वएण्डञ्जवमाणेहिंतो वादरेइदियअपज्जत्तयस्स चरिमखडञ्जवमाण-ट्टाणाणि णिञ्जण्ण अमखेज्जगुणाणि हाति ति सद्धेयञ्च । उक्कस्समखेज्जादो सादिरेयस्स जहण्णपरितासखेज्जादो किंत्तण्णस्य एदस्य गुणगारस्स कधममजेज्जत्त जुज्जेदो ? ण, उक्कस्स-सखेज्जमदिवकत्तस्य तदनिरोहादो । दुगुणजहण्णपरितासखेज्जेदणयमेत्तगुणहाणीहि एगेग-खडपमाण कादुण वा अमखेज्जगुणत्त माधेदव्य । वादरेइदियअपज्जत्तयट्ठिदिवधट्टाणाणाम-मखेज्जभागाण सकिलेसु-विमोहिट्टाणेहिंतो जदि उवरिमअसखेज्जदिभागस्स सकिलेस विसोहि

चार खण्डोंके समस्त परिणामोंकी अपेक्षा पाचवें खण्डके सब परिणाम असख्यात गुणे हैं, क्योंकि एक अधिक जघ य परितासख्यातसे सहित जघन्य परितासख्यातका जो वग है उससे अधिक जघय परितासख्यातके घनका जघन्य परितासख्यातके घर्गके घगमें भाग देनेपर एक अक्के असख्यातवें भागके साथ उत्त्ष्ट सख्यात प्रमाण अक् प्राप्त होते हैं । यहाँपर भी पहिलेके ही समान कारण बतलाना चाहिये । इसी प्रकार आगेके सब खण्डोंमें एक अक्के असख्यातवें भागसे अधिक उत्त्ष्ट सख्यात प्रमाण गुणकार जानना चाहिये क्योंकि, आगेकी अध प्ररूपणाके प्रति पहिलेकी प्ररूपणा धीजमूत है ।

शंका—आगेका गुणकार अय प्रकार क्यों नहीं होता है ?

समाधान—नही, क्योंकि इसके बिना गुणहानियोंके अध्यवमानस्थान दुगुणे बन नहीं सकते ।

इसीलिये अधस्तन सब खण्डोंके अध्यवसानस्थानोंकी अपेक्षा वादर एकेन्द्रिय अपर्यातकके अन्तिम खण्ड सम्वधी अध्यवसानस्थान निश्चयसे असख्यातगुणे हैं, ऐसा ध्यान करना चाहिये ।

शंका—उत्त्ष्ट सख्यातसे साधिक और जघय परितासख्यातसे कुछ कम इस गुणकारको ' असख्यात ' कहना कैसे उचित है ?

समाधान—नहीं क्योंकि उत्त्ष्ट सख्यातना अतिक्रमण कर जो कोई भी सख्या हो उसे ' असख्यात ' कहनेमें कोई विरोध नहीं । अथवा, दूने जघन्य परितासख्यातके अर्धच्छेदोंके धराधर गुणहानियोंके द्वारा एक एक खण्ड प्रमाण करके असख्यातगुणत्वको सिद्ध करना चाहिये । वादर एकेन्द्रिय अपवात सम्वधी स्थितिवधस्थानोंके असख्यात

द्रागाणि अमसन्नगुणाणि ह्येति तो सुहृमेइदियअपञ्चतट्टिदिनघट्टाणेषु वादरेइदियअपञ्चत
 ट्टिदिनघट्टाणाण समेत्तदिमागेषु जाणि सक्त्तिन्म निमोहिट्टाणाणि तेह्हितो चान्नेइदिय-
 अपञ्चतयम्म मच्चमक्त्तिन्म निमोहिट्टाणाणि णिच्छण्ण अमगेवगुणाणि ह्येति त्ति साहेद्व्य ।
 अमरा अण्णोर्ण पयारेण गुणसागे उच्यन्ते । न जहा—सुहृमेइदियअपञ्चतनहण्णट्टिदिन
 ट्टाणादो हेट्टिमनादरेइदियअपञ्चतट्टिदिनघट्टाणगमक्त्तिन्म निमोहिट्टाणाण णाणागुणहाणिसु-
 लागाओ निरलिय निग कग्गिय अण्णोण्णभय कदे जो रासी उप्पवदि तेण पढमगुणहाणि
 दव्वे [१००] गुणित्ते सुहृमेइदियअपञ्चतयम्म पढमगुणहाणिदव्व होदि । पुणो एदम्मिं
 सुहृमेइदियअपञ्चतयम्म णाणागुणहाणिसलागाओ [२] निरलिय निग कग्गिय अण्णोण्ण-
 भत्त काट्टण म्ममणिय मेसेण गुणित्ते सुहृमेइदियअपञ्चतयम्म मक्त्तिन्म-निमोहिट्टाणाणि
 ह्येति । पुणो एदम्मि चैव पढमगुणहाणिदव्व [१००] वादरेइदियअपञ्चतयम्म णाणागुण-
 हाणिसलागाओ [१६] निरलिय निग कग्गिय अण्णोण्णभय काट्टण म्ममणिय
 [६५५३५] मेसेण गुणित्ते वादरेइदियअपञ्चतयम्म मक्त्तिन्म निमोहिट्टाणाणि ह्येति ।
 पुणो एदेषु सुहृमेइदियअपञ्चतयम्म सक्त्तिन्म निमोहिट्टाणेहि मागे हिन्नु पत्तिन्ममम्म
 यहभाग मात्र चान्तोके सक्त्तेश विगुद्धिस्थानाकी अपेक्षा यदि ऊपरके अमसत्तातयें भाग
 मात्र स्थानोके सक्त्तेश विगुद्धिस्थान असत्तातगुणे होत हैं, तो वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके
 स्थितिव्यवस्थानोंके अन्वयप्रमाणमात्र सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके स्थितिव्यवस्थानोंमें जो
 सक्त्तेश विगुद्धिस्थान हैं उनकी अपेक्षा वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके समस्त सक्त्तेश
 विगुद्धिस्थान निश्चयसे असत्तातगुणे होते हैं, ऐसा सिद्ध करना चाहिये ।

अथवा जय प्रकारसे गुणकारका कथा करते हैं । वह इस प्रकार है—सूक्ष्म
 एकेन्द्रिय अपर्याप्तके जय व स्थितिव्यवस्थानकी अपेक्षा तीसरेके वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके
 स्थितिव्यवस्थान सम्यग्धी सक्त्तेश विगुद्धिस्थानोंकी नानागुणहाणिसलागाओंका विरलन
 कर द्विगुणित करके परस्पर गुणा करनेपर जो राशि उभय होती है उसमें प्रथम गुण
 हानिने द्रव्य (१००) को गुणित करनेपर सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकी प्रथम गुणहानिक
 द्रव्य होता है । पश्चात् सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकी नानागुणहानिशलागाओं (२) का
 विरलन करके दुनाकर परस्पर गुणा करनेपर जो प्राप्त हो उसमेंसे एक अर कम कर
 अर्थात् राशि (३) से उपयुक्त सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकी प्रथम गुणहानिने
 द्रव्यको गुणित करनेपर सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके सक्त्तेश विगुद्धिस्थान होते हैं
 (१२८००×३=३८४००) । पश्चात् वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकी नानागुणहानिशलागाओं
 (१६) का विरलन कर दुगुणित करके परस्पर गुणा करनेपर जो (६५५३६) प्राप्त हो
 उसमेंसे एक अर कम करके अर्थात् राशि (६५५३६) से श्मी प्रथम गुणहानि सम्यग्धी
 द्रव्यको गुणित करनेपर वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके सक्त्तेश विगुद्धिस्थान होते हैं
 (६५५३६×१००=६५५३६००) । इनमें सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके सक्त्तेश विगुद्धिस्थानाक

१ तामनी ' अणो' इति पाठ । २ अथा का प्रतिपु ' एग्गि' , ताप्रतो ' एग (६) मि
 इति पाठः । ३ प्रतिपु (३) इति पाठः ।

अमयेज्जदिभागो गुणगारो आगच्छदि वादराणमुत्तरिमगुहाणि सलागाण किञ्चण्णोण्णम्य-
 रासिं सुहुमेइणियअपज्जत्तयस्स सक्किंम विमोहिट्टाणेसु गुणिदेसु वादरेइदियअपज्जत्तयस्स
 गुणगारेण सुहुमेइणियअपज्जत्तयस्स सक्किंम विमोहिट्टाणेसु गुणिदेसु वादरेइदियअपज्जत्तयस्स
 सक्किंम विमोहिट्टाणाणि हांति । अत्रा सुहुमेइदियअपज्जत्तयस्स ट्टिदिवधट्टाणपमाणेण
 सुहुमेइदियनहण्णट्टिदिघघट्टाणपमाणनादरेइदियनपवत्तट्टिदिवधट्टाणप्पहुडि उवरिमट्टाणेसु
 कदेसु सपेज्जगुणाणि ह्वति । सपहि तस्य पढमखडस्स सक्किंम विमोहिट्टाणाणि सुहुमे-
 इदियनपज्जत्तयस्स सक्किंम विमोहिट्टाणमेत्ताणि हांति । एतामिमेगा गुणगारमलागा [१] ।
 पुणो सुहुमेइणियअपज्जत्तयस्स अण्णोण्णमत्तरामिणा [४] सुहुमेइदियअपज्जत्तयस्स
 सक्किंम विमोहिट्टाणेसु गुणिदेसु वादरेइणियअपज्जत्तयस्स विणियखडमक्किंम-विमोहि-
 ट्टाणाणि ह्वति । पुणो एत्तस वग्गेण गुणिदेसु तदियखडस्स सक्किंम विमोहिट्टाणाणि
 हांति । पुणो एत्तस घणेण गुणिदेसु चउयखडस्स सक्किंम-विमोहिट्टाणाणि हांति । पुणो
 एत्तस वग्गवग्गेण गुणिदेसु पचमखडस्स सक्किंम विमोहिट्टाणाणि हांति । एव णेदव्य
 जाव चरिमखडे ति । सुहुमेइदियअपज्जत्तजहण्णट्टिदिवधट्टाणादो हेट्टिमाण वादरेइदिय-
 अपज्जत्तयस्स सक्किंम-विमोहिट्टाणाण एण्वस्स अमयेज्जदिभागो गुणगारो होदि, तेसिं
 सुहुमेइदियअपज्जत्तमक्किंमट्टाणाणममयेज्जदिभागत्तादो । एताओ सन्वगुणगारमलागाओ

भाग देनेपर पद्योपमका अस्तव्यातवां भाग गुणकार प्राप्त होता है, क्योंकि उसका प्रमाण
 वादर जीवार्थी उपरिम गुणानिदालाकाओंकी कुछ कम अथोपाग्यस्त राशिको सूक्ष्म
 एकेन्द्रियोंकी अथोपाग्यस्त राशितसे गुणित करके एक अत्रसे कम उसीके द्वारा अपवर्तित
 करनेसे जो प्राप्त हो उतने मात्र है । इस गुणकारसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपवर्तकके सफलेश
 त्रिगुडिस्थानोंको गुणित करनेपर वादर एकेन्द्रिय अपवर्तकके सफलेश त्रिगुडिस्थान होते हैं

अथवा, सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपवर्तक जघन्य स्थितिध-वस्थानोंके धरावर जो वादर
 एकेन्द्रिय अपवर्तक स्थितिध-वस्थान हैं उनको आदि लेकर ऊपरके स्थानोंको सूक्ष्म
 एकेन्द्रिय अपवर्तकके स्थितिध-वस्थानोंके प्रमाणसे करनेपर ये सवस्थानगुणे होते हैं ।
 अथ उनमें जो प्रथम खण्डके सफलेश त्रिगुडिस्थान सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपवर्तकके सफलेश
 त्रिगुडिस्थानोंके धरावर हैं, हाकी एक (१) गुणकारशालाका है । पुन सूक्ष्म एकेन्द्रिय
 अपवर्तककी अथोपाग्यस्त राशि (४) से सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपवर्तकके सफलेश
 त्रिगुडिस्थानोंको गुणित करनेपर वादर एकेन्द्रिय अपवर्तकके द्वितीय खण्ड सम-पी
 सफलेश त्रिगुडिस्थान होते हैं । पश्चात् उनका इसके धरासे गुणित करनेपर तृतीय खण्डके
 सफलेश त्रिगुडिस्थान होते हैं । फिर इनके धरासे उनको गुणित करनेपर चतुर्थ खण्डके
 सफलेश त्रिगुडिस्थान होते हैं । इससे धराके धरासे उनको गुणित करनेपर पाचवें खण्डके
 सफलेश त्रिगुडिस्थान होते हैं । इस प्रकार अन्तिम खण्ड तक ले जाना चाहिये । सूक्ष्म
 एकेन्द्रिय अपवर्तकके जघन्य स्थितिध-वस्थानसे नीचेके वादर एकेन्द्रिय अपवर्तकके
 सफलेश त्रिगुडिस्थानोंका गुणकार एक अथका अस्तव्यातवा भाग होता है, क्योंकि, ये
 सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपवर्तकके सफलेश त्रिगुडिस्थानोंके अस्तव्यातवें भाग प्रमाण हैं । इन
 सब गुणकारशालाकाओंकी मिलाकर उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपवर्तकके सफलेश त्रिगुडि

मैलाविय सुहुमेइदियअपज्जत्तयस्स मक्खिन्नेम विमोहिट्ठाणेसु गुणित्तिसु चादरेइदियअपज्जत्तयस्स सक्खिन्नेस विमोहिट्ठाणाणि होति । पुणो एदेसु सुहुमेइदियअपज्जत्तयस्स मक्खिन्नेम विमोहिट्ठाणेहि ओवट्ठिदेसु गुणगारो पत्तिदोमम्म अमग्गेज्जदिभागो आग उदि ।

एदेमिं गुणगाराण मैलावणविहाण सदिट्ठिमत्तनिय उरदे । त जहा—सुहुमेइदिय अपज्जत्तयस्स णाणागुणहाणिमलागाओ विरलिय विग करिय अण्णोण्णमय कादण रूवे अण्णिदि एत्तिय होदि [३] । पुणो एदेण अण्णोण्णमत्तरासिणा सुहुमउत्तरिमनादरणाणा-गुणहाणिमलागाओ [७] विरलिय विग करिय अण्णोण्णमत्तरामिहिं भागे हिं भागलद्वमे-त्तिय होदि [१२८।३] । पुणो लद्धे एदमिहिं [१२८] सरिमच्छे करिय पत्तिरत्ते एत्तिय होदि [५१२।३] । पुणो एदेण पत्तिदोवमम्म अमग्गेज्जिभागेण सुहुमेइदियसञ्जवमाण-ट्ठाणेसु [३८४००] गुणित्तिसु चादरअपज्जत्तयस्समाणट्ठाणाणि पदमगुणहाणिअज्जवमाण-मेत्तेण अहियाणि होति [६५५३६००] । पुणो एत्तियमेत्तेण [१००] हाइदण इत्थामो ति चादरेइदियअपज्जत्तयस्स सञ्जणाणागुणहाणिमलागाओ विरलिय विग करिय अण्णोण्णमत्तये कदे एत्तिय होदि । त च एद [६५५३६] । पुणो एदेण पदमगुणहाणिद्वये गुणित्ते पदमगुणहाणिअज्जवसाणाहियसञ्जवमाणपमाण होदि । त च एद [६५५३६००] ।

स्थानोंको गुणित करनेपर चादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकथे संकलेश त्रिगुणित्तिस्थान होते हैं । अब इनमें सूक्ष्म एकन्द्रिय अपर्याप्तकथे संकलेश त्रिगुणित्तिस्थानोंका भाग देनेपर पच्योपमका असंख्यातवा भाग गुणकार प्राप्त होता है ।

अब सहायिका आशय करके इन गुणकारोंके मिलानेके विधानको कहते हैं । यह इस प्रकार है—सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकथी नानागुणहानिदशाओंका विरलन करके दुगुणाकर परस्पर गुणा करके जो राशि प्राप्त हो उसमेंसे एक कम करनेपर इतना होता है— $३ \times ३ = ४$ $४ - १ = ३$ । अब सूक्ष्म जीवकी अपेक्षा चादर जीवकी आगेकी नानागुणहानि शालाओं (१० से १६ तक ७) का विरलनकर घृना करके परस्पर गुणा करनेपर जो राशि प्राप्त हो उसमें उक्त अयोयाम्यस्त राशिका भाग देनेपर लब्ध इनना होता है— $५ \times ३ \times ३ \times ५ \times ३ \times ३ \times ३ = १२$ । $१२ - ३ = ९$ । इस लब्ध राशिमें हम (१२८) को समच्छेद करके मिलानेपर इतना होता है— $१२८ = १५$; $१५ + १५ = ३०$ । इस पच्योपमके असंख्यातवै भाग मात्र उस राशिके सूक्ष्म एकन्द्रियके समस्त अध्यवसानोंको गुणित करनेपर चादर अपर्याप्तके अथवा प्रथम गुणहानिके अध्यवसानस्थानोंसे अधिक होते हैं— $३० \times १० = ६५५३६००$ । अब चूकि ये इतने (१००) मात्रसे हीन अभीष्ट हैं, अत एव चादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकथी समस्त (१६) गुणहानिशालाओंका विरलन कर द्विगुणा करके परस्पर गुणा करनेपर इतना होता है । यह यह है— ६५५३६ । इससे प्रथम गुणहानिके द्रव्यको गुणित करनेपर प्रथम गुणहानिके अध्यवसानस्थानोंसे अधिक समस्त अध्यवसानस्थानोंका प्रमाण होता है । यह यह है— $६५५३६ \times १०० = ६५५३६००$ । इस

१ प्रतिपु [५१२] इति पाठ । २ प्रतिपु ' अन्व-अवसाय ' इति पाठः ।

एदस्स रासिस्स जदि एत्तियो [५१२।३] गुणगाररासी लम्भदि, तो एत्तियस्य [१००] किं लभामो ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए णत्तिय होदि [१।३८४] । पुणो एदमि पुविहगुणगाररासीदो [५१२।३] मरिमच्छेद कादृण अणणिदे गुणगाररासी एत्तियो होदि [६५५३५।३८४] । पुणो एदेण पल्लिदोवमस्स अमखेज्जदिमाणेण सुहुमेइ-दियअपजत्तयस्स सन्वज्जवसाणट्टाणेषु भेलाविय [३८४००] गुणिदेसु वादरेइदियअपजत्तयस्स सन्वज्जवसाणट्टाणाणि होति । पमाणमेद [६५५३५००] । एद गुणगारविहाण उवरि सन्वत्त ममविय वत्तव ।

सुहुमेइदियपज्जत्तयस्स सकिलेस विसोहिट्टाणाणि असखेज्जगुणाणि ॥ ५३ ॥

को गुणगारो ? पल्लिदोवमस्स असखेज्जदिमाणो । एत्थ गुणगाराणयणविहाण पुत्र व परुवेदव्व । कुदो ? सुहुमेइदियपज्जत्तो विमुज्जमाणो वादरेइदियअपजत्तयस्स सन्वट्टिदिबधट्टाणोहितो सखेज्जगुणाणि ट्टिदिबधट्टाणाणि हेट्ठा ओसरदि, सकिलेसतो वि तेहितो सखेज्जगुणाणि ट्टिदिबधट्टाणाणि उवरि चड्ढि ति गुरुवेदेसादो ।

(६५५३६००) राशिकी यदि इतनी (३३) मात्र गुणाकार राशि पायी जाती है, तो यह इतने (१००) मात्रकी कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर इतना होता है— $33 \times 100 = 6553600 = 117117 = 328$ इसको समच्छेद करके पूर्वी गुणकार राशि ३३ मँसे घटानेपर इतना होता है— $(117117 - 328 = 116789)$ पक्षोपमके असख्यातयें भाग मात्र उक्त गुणकार राशिसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके समस्त अध्यवसानस्थानोंकी मिलाकर गुणित करनेपर वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके समस्त अध्यवसानस्थान होते हैं । उनका प्रमाण यह है— $(12700 + 4500) \times 116789 = 6553600$ । गुणकारकी इस विधिको आगे सब जगह यथासम्भव कहना चाहिये ।

उन्से सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तके मस्लेश-त्रिगुद्विस्थान अमरयातगुणे हैं ॥ ५३ ॥

यहां गुणकार क्या है ? गुणकार पक्षोपमका असख्यातया भाग है । यहा गुणकार लानेकी विधिकी प्ररूपणा पहिलेके ही समान करना चाहिये, क्योंकि, सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकी जीध विगुद्ध होता हुआ वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके सब स्थितिय घस्थानोंकी अपेक्षा असख्यातगुणे स्थितिबन्धस्थान नीचे दृष्टता है, तथा यहीं संकलेशको प्राप्त होता हुआ उक्त स्थानोंकी अपेक्षा असख्यातगुणे स्थान ऊपर चढ़ता है ऐसा गुरुका उपदेश है ।

१ प्रतिपु करयेय 'लभामो ति' इत्यत पश्चादुपलभ्यते । २ प्रतिपु ६५५३५ एवविपात्र संख्या समुपलभ्यते ।

वादरेइदियपज्जत्तयस्स सकिलेम विसोहिट्टाणाणि
असखेज्जगुणाणि ॥ ५४ ॥

को गुणमारो ? पल्लिदोवमस्स असयेज्जदिमागो । एय गुणमात्माहण पुत्र य यत्तय ।

वीइदियअपज्जत्तयस्स सकिलेस-विसोहिट्टाणाणि
असखेज्जगुणाणि ॥ ५५ ॥

वादरेइदियपज्जत्तयस्स द्विदिनपट्टाणेहिंते तीइदियअपज्जत्तयस्स पल्लिदोवमस्स
असयेज्जदिमागमेतद्विदिवट्टाणाणि जेण असयेज्जगुणाणि तेण सकिलेस विमोहिट्टाणाण
मि अमयेज्जगुणत्त ण निरुज्जदे । एय गुणमारो पल्लिदोवमस्स अमयेज्जदिमागो ।

वीइदियपज्जत्तयस्स सकिलेस विसोहिट्टाणाणि
असखेज्जगुणाणि ॥ ५६ ॥

को गुणमारो ? पल्लिदोवमस्स अमयेज्जदिमागो । रुदो ? विसोहि-मकिलेमाण वसेण
हेट्टा उरिं च अप्पिइदिवट्टाणेहिंते संखेज्जगुणद्विदिनपट्टाणाणमुत्तभादो ।

तीइदियअपज्जत्तयस्स सकिलेम-विसोहिट्टाणाणि
असखेज्जगुणाणि ॥ ५७ ॥

कप पज्जत्तयस्स द्विदिवट्टाणेहिंते अपज्जत्तयस्स द्विदिवट्टाणाण अमवेज्जगुणत्त ?

उन्मे वादर एकेन्द्रिय पर्याप्तके सन्तेश विगुट्टिस्थान अमव्यातगुणे हँ ॥ ५४ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्लोपमका असख्यातवा भाग है । यहाँ गुणकारकी सिद्धिवा कथन पहिलेके ही समान कहना चाहिये ।

उन्मे द्वीन्द्रिय अपर्याप्तके सन्तेश विगुट्टिस्थान अमव्यातगुणे हँ ॥ ५५ ॥

बाहर एकेन्द्रिय पर्याप्तके स्थितिव धर्यानोंकी अपक्षा द्वीन्द्रिय अपर्याप्तके पल्लोपमके असख्यातवा भाग मान स्थितिव धर्यानोंकी अपक्षा असख्यातगुणे है, अतएव सकलेश विगुट्टिस्थानोंके भी असख्यातगुणे होनेमें कोई विरोध नहीं है । यहा गुणकार पल्लोपमका असख्यातवा भाग है ।

द्वीन्द्रिय पर्याप्तके सन्तेश विगुट्टिस्थान अमव्यातगुणे हँ ॥ ५६ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्लोपमका असख्यातवा भाग है, क्याकि, विगुट्टि अथवा सन्तेशके वशसे नीचे व ऊपर विरक्षित स्थितिव धर्यानोंकी अपक्षा सख्यातगुणे स्थितिव धर्यानों पाये जाते हैं ।

तीन्द्रिय अपर्याप्तके सन्तेश विगुट्टिस्थान अमव्यातगुणे हँ ॥ ५७ ॥

संज्ञा—पर्याप्त जीवके स्थितिव धर्यानोंकी अपक्षा अपर्याप्त जीवके स्थिति धर्यानों असख्यातगुणे कैसे हो सकते हैं ?

१ अ आ-कापत्तिपु 'सखेज्जगुणत्त', तावतो ' [अ] सखेज्जगुणत्त ' इति पाठ ।

जादिविमेसत्तादो^१ । तेणेन कारणेण सकिलेस तिसोहिद्विद्याणाण पि मिद्धमसखेज्जगुणत्त । एय त्ति गुणगारो पल्लिदोवमस्स असखेज्जत्तिभागो होदि ।

तीइदियपज्जत्तयस्स सकिलेस तिसोहिद्विद्याणाणि
असखेज्जगुणाणि ॥ ५८ ॥

को गुणगारो ? पल्लिदोवमस्स असखेज्जत्तिभागो । कारण जाणिय वत्तन ।

चउरिदियअपज्जत्तयस्स सकिलेस-तिसोहिद्विद्याणाणि
असखेज्जगुणाणि ॥ ५९ ॥

कुदो ? तीइदियपज्जत्तयस्स द्विदिवधद्विद्याणेहिंतो चउरिदियअपज्जत्तयस्स द्विदिवध-सखेज्जगुणत्तुत्तलभादो । त पि क्क णवदे ? जादिविमेसादो । को गुणगारो ? पल्लिदोवमस्स असखेज्जत्तिभागो । कारण चित्तिव त्तत्तन ।

चउरिदियपज्जत्तयस्स सकिलेस तिसोहिद्विद्याणाणि
असखेज्जगुणाणि ॥ ६० ॥

समाधान—भित्तजातीय होनेसे उनके सख्यातगुणे दोनमें कोई विरोध नहीं है । इसी कारण मज्जेस विगुद्विस्थानोंके भी असख्यातगुणत्व सिद्ध होता है ।

यह भी गुणकार पत्योपमका असख्यातवा भाग है ।

तीन्द्रिय पर्याप्तके मज्जेसविगुद्विस्थान असख्यातगुणे हैं ॥ ५८ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पत्योपमका असख्यातवा भाग है ? इसका कारण जानकर कहना चाहिये ।

चतुर्गिन्द्रिय अपर्याप्तके मज्जेस विगुद्विस्थान असख्यातगुणे हैं ॥ ५९ ॥

शका—वे असख्यातगुणे किस कारणसे हैं ?

समाधान—चूँकि तीन्द्रिय पर्याप्तके स्थितिध धम्यानोंकी अपेक्षा चतुर्गिन्द्रिय अपर्याप्तके स्थितिध स्थान सख्यातगुणे पाये जाते हैं, उन उससे सकलेशविगुद्विस्थानोंके असख्यातगुणे होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

शका—यह भी कैसे जाना जाता है ?

समाधान—भित्तजातीय होनेसे तीन्द्रिय पर्याप्तके स्थितिध धम्यानोंकी अपेक्षा चतुर्गिन्द्रिय अपर्याप्तके स्थितिध स्थान सख्यातगुणे हैं यह जाना जाता है ।

गुणकार क्या है ? गुणकार पत्योपमका असख्यातवा भाग है । कारण विचार कर कहना चाहिये ।

चतुर्गिन्द्रिय पर्याप्तके मज्जेस विगुद्विस्थान असख्यातगुणे हैं ॥ ६० ॥

वादरेइदियपञ्जत्तयस्स सकिलेस विसोहिट्टाणाणि
असखेज्जगुणाणि ॥ ५४ ॥

को गुणगारो ? पल्लिदोवमम्म अमत्तेज्जदिभागो । एत्थ गुणगारमाहण पुवं व वत्तन्व ।

वीइदियअपञ्जत्तयस्स सकिलेस-विसोहिट्टाणाणि
असखेज्जगुणाणि ॥ ५५ ॥

षादरेइदियपञ्जत्तयम्म द्विट्ठिअट्टाणेहिंतो वीइदियअपञ्जत्तयस्स पल्लिदोवमस्स
अमत्तेज्जदिभागमेत्तद्विट्ठिअट्टाणाणि जेण असखेज्जगुणाणि तेण सकिलेस विसोहिट्टाणाण
पि असखेज्जगुणत्त ण निस्सज्जे । एत्थ गुणगारो पल्लिदोवमम्म असखेज्जदिभागो ।

वीइदियपञ्जत्तयस्स सकिलेस विसोहिट्टाणाणि
असखेज्जगुणाणि ॥ ५६ ॥

को गुणगारे ? पल्लिदोवमस्स अमत्तेज्जदिभागो । तुत्तो ? विमोहि सक्किन्नेमाण वसेण
हेट्ठा उररिं च अण्णिअट्टिअट्टाणेहिंतो संखेज्जगुणद्विट्ठिअट्टाणाणमुत्तभादो ।

तीइदियअपञ्जत्तयस्स सकिलेस विसोहिट्टाणाणि
असखेज्जगुणाणि ॥ ५७ ॥

कप पञ्जत्तयस्स द्विट्ठिअट्टाणेहिंतो अपञ्जत्तयम्म द्विट्ठिअट्टाणाण अमत्तेज्जगुणत्त ?

उनमे वादर ण्केन्द्रिय पर्याप्तके सम्लेश विशुद्धिस्थान अमरयातगुणे हैं ॥ ५४ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पत्योपमका असख्यातया भाग है । यहा गुणकारकी सिद्धिवा कवन पहिलेक ही समान कहना चाहिये ।

उनमे द्वीन्द्रिय अपर्याप्तके सम्लेश विशुद्धिस्थान अमरयातगुणे हैं ॥ ५५ ॥

वादर ण्केन्द्रिय पर्याप्तके स्थितिधस्थानोंकी अपक्षा द्वीन्द्रिय अपर्याप्तके पत्योपमके अमरयातया भाग मात्र स्थितिधस्थान हैं, क्योंकि असख्यातगुणे हैं, अतएव सफलेश विशुद्धिस्थानोंके भी असख्यातगुणे होनेमें कोई विरोध नहीं है । यहा गुणकार पत्योपमका असख्यातया भाग है ।

द्वीन्द्रिय पर्याप्तके सम्लेश विशुद्धिस्थान असख्यातगुणे हैं ॥ ५६ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पत्योपमका असख्यातया भाग है, क्योंकि, विशुद्धि अथवा सफलेशके वशसे नीचे ध ऊपर विचक्षित स्थितिधस्थानोंकी अपक्षा सख्यातगुणे स्थितिधस्थान पाये जाते हैं ।

त्रीन्द्रिय अपर्याप्तके सम्लेश विशुद्धिस्थान असख्यातगुणे हैं ॥ ५७ ॥

शका—पर्याप्त जीवके स्थितिधस्थानोंकी अपक्षा अपर्याप्त जीवके स्थिति धस्थान असख्यातगुणे कैसे हो सकते हैं ?

१ ध-आ-काप्रतिपु 'सखेज्जगुणत्त', ताप्रती '[अ] सखेज्जगुणत्त ' इति पाठ ।

जादिविमेमत्तादो^१ । तेण कारणेण सकिलेस विमोहिट्टाणाणं पि मिद्धमसपेज्जगुणत्त । एत्थं पि गुणगारो पल्लोवमस्स अमपेज्जादिभागो होदि ।

- तीइदियपज्जत्तयस्स सकिलेस विसोहिट्टाणाणि
असखेज्जगुणाणि ॥ ५८ ॥

को गुणगारो ? पल्लोवमस्स अमपेज्जादिभागो । कारण जाणिय वत्तय ।

चउरिदियअपज्जत्तयस्स सकिलेस-विसोहिट्टाणाणि
असखेज्जगुणाणि ॥ ५९ ॥

कुदो ? तीइदियपज्जत्तयस्स त्रिदिवधट्टाणोहितो चउरिदियअपज्जत्तयस्स त्रिदिवध-सखेज्जगुणत्तुत्तुलभादो । त पि कय णयदे ? जादिनिसेसादो । को गुणगारो ? पल्लोवमस्स अमखेज्जादिभागो । कारण चित्थिय वत्तय ।

चउरिदियपज्जत्तयस्स सकिलेस विसोहिट्टाणाणि
असखेज्जगुणाणि ॥ ६० ॥

ममाधान—भिन्नजातीय होनेसे उनमें सख्यातगुणे होनेमें कोई विरोध नहीं है । इसी कारण सकलेश निशुद्धिस्थानोंके भी असख्यातगुणत्व सिद्ध होता है ।

यहां भी गुणकार पल्लोपमका असख्यातवा भाग है ।

श्रीन्द्रिय पर्याप्तके सकलेशविशुद्धिस्थान अमरयातगुणे हैं ॥ ५८ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्लोपमका असख्यातवा भाग है ? इसका कारण जानकर कहना चाहिये ।

चतुर्गिन्द्रिय अपर्याप्तके सकलेश विशुद्धिस्थान अमरयातगुणे हैं ॥ ५९ ॥

शका—वे असख्यातगुणे किस कारणसे हैं ?

ममाधान—चूंकि श्रीन्द्रिय पर्याप्तके स्थितिवधस्थानोंकी अपेक्षा चतुर्गिन्द्रिय अपर्याप्तके स्थितिवधस्थान सख्यातगुणे पाये जाते हैं अतः उनमें सकलेशविशुद्धिस्थानोंके असख्यातगुणे होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

शका—यह भी कैसे जाना जाता है ?

ममाधान—भिन्न जातीय होनेसे श्रीन्द्रिय पर्याप्तके स्थितिवधस्थानोंकी अपेक्षा चतुर्गिन्द्रिय अपर्याप्तके स्थितिवधस्थान सख्यातगुणे हैं, यह जाना जाता है ।

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्लोपमका असख्यातवा भाग है । कारण विचार कर कहना चाहिये ।

चतुर्गिन्द्रिय पर्याप्तके सकलेश विशुद्धिस्थान अमरयातगुणे हैं ॥ ६० ॥

कुत्ने ? विसोहि-मकिलेसयमेण अपिद्विदिवपट्टाणेहितो हेट्टा उररिं च सखेज्जगुण
द्विदिवपट्टाणेषु वीचाखलमादो । एत्थ नि गुणगारो पल्लोवमस्स असखेज्जदिभागो ।
सेस सुगम ।

असण्णपचिदियअपज्जत्तयस्स सकिलेस विसोहिट्टाणाणि
असखेज्जगुणाणि ॥ ६१ ॥

को गुणगारो ? पल्लोवमस्स असखेज्जदि भागो । कारण चिंतिय वत्तव्व ।

असण्णपचिदियपज्जत्तयस्स सकिलेस विसोहिट्टाणाणि
असखेज्जगुणाणि ॥ ६२ ॥

को गुणगारो ? पल्लोवमस्स असखेज्जदि भागो । कारण सुगम ।

सण्णपचिदियअपज्जत्तयस्स सकिलेस-विसोहिट्टाणाणि
असखेज्जगुणाणि ॥ ६३ ॥

जादिविसेण सखेज्जगुणद्विदिवपट्टाणेषु मकिलेस विसोहिट्टाणाण पि असखेज्जगुणत्त
पडि विरोहामानादो । सेस सुगम ।

सण्णपचिदियपज्जत्तयस्स सकिलेस-विसोहिट्टाणाणि
असखेज्जगुणाणि ॥ ६४ ॥

इसका कारण यह कि विशुद्धि और सकलेशके वशसे विशिष्ट स्थितिय-धरुधानोंसे
“रिचे घ ऊर सख्यातगुणे स्थितिय-धरुधानोंमें धीचार पावा जाता है । यहा भी गुणकार
पल्लोवमका असखयातवा भाग है । शेष कथन सुगम है ।

असज्जी पचेन्द्रिय अपर्याप्तके सन्लेश विशुद्धिस्थान असख्यातगुणे हैं ॥ ६१ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्लोवमका असख्यातवा भाग है । कारण निचारकर
बहना चाहिये ।

असज्जी पचेन्द्रिय पर्याप्तके सन्लेश विशुद्धिस्थान असख्यातगुणे हैं ॥ ६२ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्लोवमका असखयातवा भाग है । कारण इसका
सुगम है ।

सज्जी पचेन्द्रिय अपर्याप्तके सन्लेश विशुद्धिस्थान असख्यातगुणे हैं ॥ ६३ ॥

क्याकि, जातिभेदसे सख्यातगुणे स्थितिय-धरुधानोंमें सफलेश विशुद्धिस्थानोंके
असखयातगुणे होनेमें कोई विरोध नहीं है । शेष कथन सुगम है ।

सज्जी पचेन्द्रिय पर्याप्तके सन्लेश विशुद्धिस्थान असख्यातगुणे हैं ॥ ६४ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्म असखेज्जदिभागो । सेम सुगम ।

बध्यते इति बन्ध, स्थितिधासौ बध्यश्च स्थितिबन्ध, तस्य स्थानमवस्थाविशेष स्थितिबन्धस्थानम् । एदमत्यपदमस्सिद्धेण परूवणट्टमुवरिमसुत्तकलाओ आगदो

सव्वत्थोवो संजदस्स जहण्णओ द्विदिबधो' ॥ ६५ ॥

जहण्णुकस्सट्टिदिपरूवणा किमट्टमागदा ? द्विदिबधट्टाणाणि एतियाणि होति ति पुव्व परूविदाणि । सपहि तय एगेगट्टिदिबधट्टाणमेत्तिण समए धेतूण होदि ति परूवणट्टमागदा । एत्थ जहण्णुकस्सट्टिदिपरूवणाए सतपमाणाणियोगदारे मोत्तूण अप्पानहुग चेन किमट्ट परूविद ? ण एस दोसो, परूवणा-पमाणाविणाभाविअप्पावहुअ ति कट्टु तदपरूवगादो । तम्हा अप्पानहुअनम्भदपरूवणा-पमाणाणि वत्तइस्सामो । त जहा—चोदसण्ह जीवममासाणमत्थि जहण्णुकस्सट्टिदीयो । परूवणा गदा ।

चदुण्ह पि ण्डीयाण मोहजहण्णट्टिदी मागरोवम पलिदोवमस्म असखेज्जदिभागेण ऊगय । णाणावणीय-दसणावणीय-वेद्यणीय-अतराड्याण जहण्णट्टिदी सागरोवमस्स

गुणकार क्या है ? गुणकार पत्योपमका अस्वभावतया भाग है । दोष कथन सुगम है । जो बाधा जाता है वह बध्य है । स्थितिस्वरूप जो बध्य वह स्थितिबन्ध । [इस प्रकार यहा कर्मधारयसमास है ।] उसके स्थान अर्थात् अवस्थाविशेषना नाम स्थितिबन्धस्थान है । इस अर्थपदका आश्रय करके प्ररूपणा करनेके लिये आगेका सूत्ररूप प्राप्त होता है—सयत जीवका जघन्य स्थितिबन्ध सनसे स्तोक है ॥ ६५ ॥

शंका—जघन्य व उरुट्ट स्थितिकी प्ररूपणाका अवतार किसलिये हुआ है ?

समाधान—स्थितिबन्धस्थान इतने होते हैं, यह पूर्वमें कहा जा चुका है । अत्र उनमेंसे एक एक स्थितिबन्धस्थान इतने समयोंको ग्रहण करके होता है यह धतलानेके लिये इस प्ररूपणाका अवतार हुआ है ।

शंका—इस जघन्य उरुट्टस्थितिप्ररूपणामें सत् (प्ररूपणा) और प्रमाण अनु अनुयोगद्वारोंको छोड़कर एक मात्र अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा किसलिये की गई है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि अल्पबहुत्व प्ररूपणा और प्रमाणका अविनाभावी है, ऐसा जानकर उन दोनों अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा यहा नहीं की गई है ।

इसी कारण अल्पबहुत्वके अतर्गत होनेसे प्ररूपणा और प्रमाण अनुयोगद्वारोंका बधन करते हैं । यथा—चौदह जीवसमासोंके जघन्य व उरुट्ट स्थितिया हैं । प्ररूपणा समाप्त हुई ।

चारों ही एकैद्वारोंके मोहकी जघन्य स्थिति पत्योपमके अस्वभावतया भागसे हीन एक सागरोपम प्रमाण है । ज्ञानावणीय, दर्शनावणीय, वेदनीय और अतरायकी जघन्य

१ तत्र सूक्ष्मतापरायस्य अपन्यस्थितिबन्ध सर्वस्तोक (१) । व प्र (मध्य) १, १० ८१
२ अत्रो ' पमाणविणमभि ' इति पाठ ।

तिणिण-सत्तभागा पलिदोऽमस्स अमवेज्जिभागेण ऊणया । णामा-गोदाण [जहण्णट्टिदी] सागरोऽमस्स वे सत्तभागा पलिदोऽमस्स असखेज्जिभागेण ऊणया । आउअस्म जहण्णट्टिदी खुदाभनग्गहण' ।

एदेसिमुक्कम्मट्टिदिपमाण उच्चदे । त जहाँ—मोहणीयम् ण सागरोवम [१] णाणावरणीय-दसणावरणीय-वेदणीय-अनराइयाण सागरोऽमस्स तिणिण-सत्त भागा पडिउण्णा [३।७] णामा गोदाण वे-सत्त भागा पडिउण्णा [२।७] । णपरि सुहुमेइदियपज्जत्ता-पज्जत्त-वादरेइदियपज्जत्ताणमुक्कम्मट्टिदिबधो वादरेइदियपज्जत्तसुक्कम्मट्टिदिबधादो' पलिदोऽमस्स असखेज्जिभागेण ऊणो । आउअस्म उक्कम्मओ ट्टिदिबधो पुव्वओडी सग सगउक्कस्सा-वाहाए अहिया ।

स्थिति पत्योपमके अस्वपातर्षे भागसे हीन एक सागरोपमके सात भागोंमेंसे तीन भाग ($\frac{3}{7}$) प्रमाण है । नाम और गोत्रकी जघन्य स्थिति पत्योपमके अस्वपातर्षे भागसे हीन एक सागरोपमके सात भागोंमें दो भाग ($\frac{2}{7}$) प्रमाण है । आयुकी जघन्य स्थिति सुद्रभय ग्रहण प्रमाण है ।

अब इन चारों एकेन्द्रियोंके उत्तर स्थितिका प्रमाण कहते हैं । यथा—मोहनीयकी उत्तर स्थिति एक (१) सागरोपम प्रमाण है । क्षानावरणीय, दशनावरणीय, वेदनीय और अनरायकी उत्तर स्थिति एक सागरोपमके सात भागोंमेंसे परिपूर्ण तीन $\frac{3}{7}$ प्रमाण है ।

विशेषार्थ—एकेन्द्रियसे लेकर अस्वकी पर्येन्द्रिय पर्यंत जीवोंके आयुको छोड़कर शेष क्षानावरणादि कर्मोंकी उत्तर स्थिति मोहनीयके आधारसे निम्न प्रकार त्रैराशिकके द्वारा निकाली जाती है—यदि सत्तर कोड़ामोडि सागरोपम प्रमाण उत्तर स्थितिवाले मोहनीय (मिथ्यात्व) कर्मकी उत्तर स्थिति एकेन्द्रियके एक सागर प्रमाण बधती है तो उसके तीस काड़कोडी सागरोपम प्रमाण उत्तर स्थिति वाले क्षानावरणीय कर्मोंकी कितनी उत्तर बधेगी, $\frac{30 \text{ को को सा } \times 1}{70 \text{ को को सा}} = \frac{3}{7}$ सागरोपम । इसी प्रकारसे द्वीन्द्रियादि जीवोंके

भी समझना चाहिये । मोहनीयकी उत्तर स्थितिका द्वीन्द्रियके २५ सागरोपम, त्रीन्द्रियके ५० सा चतुरिन्द्रियके १०० सा और अस्वकी पर्येन्द्रियके १००० सा प्रमाण बध है ।

नाम व गोत्रकी उत्तर स्थिति सागरोपम सात भागोंमेंसे परिपूर्ण दो भाग [$\frac{20 \text{ को सा } \times 1}{70 \text{ को सा}} = \frac{2}{7}$ सा] प्रमाण है । विशेष इतना है कि सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त

अपर्याप्त तथा वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके उत्तर स्थितिबध वादर एकेन्द्रिय पर्याप्तके उत्तर स्थितिबधकी अपेक्षा पत्योपमके अस्वपातर्षे भागसे हीन होता है । आयुका उत्तर स्थितिबध अपनी अपनी उत्तर आधाधासे अधिक एक पूर्वकोटि प्रमाण है ।

१ त्रियगायुषे मनुष्यायुषश्च बधन्या स्थिति सुलक्ष्मण । तस्य किं मानमिति चेदु पते आयुल्लिखानि द्वे शते पञ्चशतविके । क प्र (मूल्य) १, ७८ २ ताप्रती 'एदेसिमुक्कम्मट्टिदिपमाण उच्चदे । त जहाँ' इत्येतावानप पाठस्तुटितौ ज्ञान । ३ आ काप्रत्यो 'पज्जत्तसुक्कम्मट्टिदिबधो', ताप्रती 'पज्जत्तसुक्कम्मट्टिदिबधो' इति पाठ ।

वेद्दियादि जाव अमणिपचिन्वियो ति जहाकमेण मोहणीयस्स जहण्णओ द्विदिवधो पणुनीससागरोवमाणि, पण्णासंसागरोवमाणि, सागरोवममद, सागरोवमसहस्स पलिद्वोवमस्स सखेज्जदिभागेणं उणय । णाणावरणादिचदुण्ह कम्माणमेव चेव उतत्तव । णवरि पणुनीस पण्णासं-सद-सहस्ससागरोवमाण तिण्णिसत्त भागा पलिद्वोवमस्स सखेज्जदिभागेण उणया । एव णामा-नोदाण । णवरि वे-सत्त भागा ति वत्तव । आउअस्स जहण्णद्विदिवधो खुदाभव-गहण जहण्णानाहाए अन्महिय ।

उक्कम्मद्विदिवधो वेद्दिएसु मोहणीयस्स पणुनीस सागरोवमाणि । चदुण्ण कम्माण पणुनीससागरोवमाण तिण्णिसत्त भागा । णामा गोदाण पणुनीससागरोवमाण वे सत्त भागा २५-१०।५।७, ७।१।७ । आउअस्स उक्कस्सद्विदी पुव्वकोडी । तेद्दियस्स जहाकमेण पण्णासंसागरोवमाण सत्त-सत्त भागा तिण्णिसत्त भागा वे-सत्त भागा उक्कस्सद्विदी होदि ५०-२१।३।७, १४।२।७। आउअस्स पुव्वकोडी । चउरिदि-

द्विन्द्रियसे लेकर असही पचेन्द्रिय तक यथाग्रमसे मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध पल्पोपमके सख्यातवें भागसे हीन पच्चीस सागरोपम, पचास सागरोपम, सौ सागरोपम और हजार सागरोपम प्रमाण होता है । घ्राणावरणादि चार कर्मोंकी जघन्य स्थितिबन्धका भी कथन इसी प्रकारसे करना चाहिये । विशेष इतना है कि उनका जघन्य स्थितिबन्ध द्विन्द्रियादिकोंके क्रमशः पल्पोपमके सख्यातवें भागसे हीन पच्चीस, पचास, सौ और हजार सागरोपमोंके तीन सात भाग ($\frac{3}{7}$) प्रमाण होता है [$25 \times \frac{3}{7} = 10\frac{5}{7}$, $50 \times \frac{3}{7} = 21\frac{3}{7}$, $100 \times \frac{3}{7} = 42\frac{6}{7}$ सा] । इसी प्रकार नाम व गोत्र कर्मके भी कहना चाहिये । विशेष इतना है कि यहा दो सात भाग कहना चाहिये [$25 \times \frac{3}{7}$, $50 \times \frac{3}{7}$, $100 \times \frac{3}{7}$, $1000 \times \frac{3}{7}$ सागरोपम (पल्पोपमके सख्यातवें भागसे हीन) । आयुका जघन्य स्थितिबन्ध जघन्य आनाघासे सहित भुद्रभवग्रहण प्रमाण है ।

द्विन्द्रिय जीवोंमें मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध पच्चीस सागरोपम प्रमाण होता है । चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध पच्चीस सागरोपमोंके तीन सात ($\frac{3}{7}$) भाग प्रमाण होता है — [$\frac{30 \text{ को सा } \times 25}{70 \text{ को सा}} = 3 \times \frac{3}{7} = 1\frac{3}{7}$] सागरोपम । नाम गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध पच्चीस सागरोपमोंके दो सात ($\frac{2}{7}$) भाग प्रमाण होता है — $\frac{20 \text{ को सा } \times 25}{70 \text{ को सा}} = 7\frac{1}{7}$ सागरोपम । आयुका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध एक पूर्वकोटि प्रमाण होता है ।

श्रीन्द्रिय जीवके मोहनीय, घ्राणावरणादिक एवं नाम-गोत्र कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति क्रमशः पचास सागरोपमोंके सात सात भाग ($\frac{3}{7}$), तीन सात भाग ($\frac{2}{7}$) और दो सात भाग ($\frac{1}{7}$) प्रमाण है — $50 \times \frac{3}{7} = 21\frac{3}{7}$, $50 \times \frac{2}{7} = 14\frac{2}{7}$, $50 \times \frac{1}{7} = 7\frac{1}{7}$ । आयुकी उत्कृष्ट स्थिति एक पूर्वकोटि प्रमाण होती है ।

१ प्रतिपु 'पण्णास' इति पाठः । २ प्रतिपु 'असखेज्जदिभागेण' इति पाठ । ३ एव पणकदि पण्ण सय सहसस च मिच्छवररवधा । इधिविगलण अवर पलावसूण संसूण ॥ अदि सत्तरिस एत्तियमेत्त किं होदि तीविपादीण । इदि संपाते सेसाण इमि विग्गेषु उभयठिदी ॥ गो क १५५ ४५ स पु ६५ १९५

एसु सागरोवममदस्स सत्त सत्त भागा तिण्णिसत्त भागा वे-सत्त भागा पड्डिवुण्णा १००-
 ४२।६।७, २८।४।७। आउअस्स पुव्वकोडी । असण्णिपच्चिदिएसु सागरोवमसहस्सस्स
 सत्त सत्त भागा तिण्णिसत्त भागा वे-सत्त भागा उक्कस्मट्टिदिणधो १०००-४२८।
 ४।७, २८५।५।७। आउअस्स उक्कस्मओ ट्टिदिणधो पल्लिदोवमस्स असखेअदि-
 भागो । सण्णिपच्चिदियअपज्जत्तयस्म सत्तण्ण कम्माण जहण्णट्टिदिणधो उक्कस्सट्टिदिणधो
 च अतो कोडाकोडीए । सण्णिपच्चिदियपज्जत्तयस्म वेयणीयस्स जहण्णट्टिदिणधो चारस
 मुहुत्ता । णामागोदाणमट्टमुहुत्ता । सेमाण कम्माण भिण्णमुहुत्त । उक्कस्सट्टिदिणधो
 मोहणीयस्स मत्तरि, चटुण्ण कम्माण तीस, णामागोदाण धीस सागरोवमकोडीयो ।
 आउअस्स तेतीस सागरोवमाणि सादियेयाणि । एव पमाणपरुवणा गदा ।

सपहि ण्देमिं ट्टिदिणधट्टाणाणं अप्पानहुग उच्चदे । त जहा—सवत्थोवो सजदस्स
 जहण्णट्टिदिणधो । एत्थ सुहुमसांपराइयसुद्धिमनदस्स चरिमट्टिदिणधो जहण्णो ति घेतवो ।

चतुरिन्द्रिय जीवोंमें मोहनीय, ज्ञानावरणादिक एव नाम गोत्र कर्मोंका उत्कृष्ट स्थिति
 बंध सौ सागरोपमोंके सात सात भाग, तीन सात भाग और दो सात भाग प्रमाण होता
 है—१०० ४२६, २८६ । आयुका उत्कृष्ट स्थितिवन्ध एव पूर्वकोटि प्रमाण होता है ।

असही पचेन्द्रिय जीवोंमें उपप्लुत कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिवन्ध प्रमदा एक हजार
 सागरोपमोंके सात सात भाग, तीन सात भाग और दो सात भाग प्रमाण होता है—
 १०००, ४२८६, २८५६ । आयुका उत्कृष्ट स्थितिवन्ध पर्योपमके असख्यातवें भाग
 प्रमाण होता है ।

सही पचेन्द्रिय अर्थात्तक जीवके आयुके बिना सात कर्मोंका जघन्य स्थितिवन्ध
 और उत्कृष्ट स्थितिवन्ध अत कोडाकोडि सागरोपम प्रमाण होता है । सही पचेन्द्रिय
 पर्याप्तके वेदनीयका जघन्य स्थितिवन्ध चारह मुहुत्त प्रमाण होता है । नाम एव गोत्रका
 जघन्य स्थितिवन्ध उमने आठ अ तमुहुत्त प्रमाण होता है । श्रेय कर्मोंका जघन्य स्थिति
 बंध उसने अतमुहुत्त प्रमाण होता है । उक्त जीवके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिवन्ध सत्तर
 कोडाकोडि सागरोपम ज्ञानावरणादि चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिवन्ध तीस कोडाकोडि
 सागरोपम और नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिवन्ध धीस कोडाकोडि सागरोपम प्रमाण
 होता है । आयुका उत्कृष्ट स्थितिवन्ध साधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण होता है । इस
 प्रकार प्रमाणप्ररूपणा समाप्त हुए ।

अथ इल स्थितिवन्धस्थानोंके अल्पगृहत्वको कहते हैं । यथा—सयतका जघन्य
 स्थितिवन्ध सयसे स्तोके है । यथा सुद्धमसांपरायिक शुद्धिसयतके अन्तिम स्थितिवन्धको
 जघन्य ग्रहण करना चाहिये ।

१ आउअउक्कस्सकोपो पल्लखेअभागमणेषु । सेवाण पुव्वकोडी वाउत्तिमाणो आवाक्षं सिं ॥
 क प्र १, ७४ ३ अ आ का प्रतिपु 'ट्टिदिणधट्टाण' इति पाठ ।

उवरि किष्ण घेपदे ? ण, तद्य कमायाभावेण द्विदिषधाभावादो । रीणकमाण वि
एगसमइया द्विणी अतोमुहुत्तमेत्सुहुममांपराइयचरिमद्विदिषभादो असखेज्जगुणहीणा
लन्मदि । सा किष्ण घेपदे ? ण, विदियादिसमएसु अउट्टाणस्स द्विदि त्ति वउम्मादो ।
ण च उप्पत्तिकाले द्विदी होदि, विरोहादो ।

**वादरेइदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विदिवधो
असखेज्जगुणो ॥ ६६ ॥**

को गुणमारो ? पल्लिदोउमस्स अमणेउदिभागो । कुदो ? अतोमुहुत्तमेत्तमनदजहण्ण-
द्विदिनधेण पल्लिदोवमस्स असखेउदिभागोणुणमागरोवममेत्तनादरेइदियपज्जत्तजहण्णद्विदिवधे
भागे हिदे पल्लिदोउमस्स अमणेउदिभागुवलभादो ।

**सुहुमेइदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विदिवधो
विसेसाहियो ॥ ६७ ॥**

केतियमेतेण ? पल्लिदोवमस्स अमणेउदिभागमेतेण ।

**वादरेइदियअपत्तज्जयस्स जहण्णओ द्विदिवधो
विसेसाहियो ॥ ६८ ॥**

शुका—इससे ऊपरके स्थितिय-धको जघन्य स्वरूपसे क्यों नहीं ग्रहण करते ?
समाधान—नहीं, क्योंकि ऊपर क्यायका अभाव होनेसे स्थितिय-धका अस्तित्व
भी नहीं है ।

शुका—क्षीणकथाय गुणस्थानमें भी एक समवधाली स्थिति सूक्ष्ममापरायिकके
अन्तर्गृहर्त मात्र अतिम स्थितिय-धकी अपेक्षा असख्यातगुणी हीन पायी जाती है । उन्का
ग्रहण क्यों नहीं करते ?

समाधान—नहीं, क्योंकि द्वितीयादि समयमें स्थित रहनेका नाम स्थिति है ।
उत्पत्ति समयमें वही स्थिति नहीं होती क्योंकि, बैसा होनेमें विरोध है ।
उससे वादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थितिय-ध अमर्यातगुणा है ॥ ६६ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्लोपमका असख्यातका भाग है, क्योंकि, सयतके
अन्तर्गृहर्त परिमित स्थितिय-धका वादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके पल्लोपमके असख्यातमें
भागसे हीन सागरोपम प्रमाण जघन्य स्थितिय-धमें भाग देनेपर पल्लोपमका असख्यातका
भाग पाया जाता है ।

उससे मूत्रम एकेन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थितिय-ध विशेष अधिक है ॥ ६७ ॥

यह कितने प्रमाणसे अधिक है ? पल्लोपमके असख्यातमें भाग मात्रसे यह अधिक है

उससे वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका जघन्य स्थितिय-ध विशेष अधिक है ॥ ६८ ॥

१ ततो वादरपरीतकस्य रूपस्य स्थितिय-धोऽप्येतेषुगुणः (२) । क प्र (मध्य), १,८०-८१
(अतो...मे अक्षयमानमिदं सर्वमेवापरहृत्कमत्र यथाकर्म षट्शित्तस्यैवुपलभ्यते)

केतियमेतो विमो ? पलिदोउमस्स असखेअदिभागपमाणनीचारट्टाणमेतो ।

सुहुमेइदियअपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्टिदिवधो

विसेसाहिओ ॥ ६९ ॥

केतियमेतो विसेसो ? वादरेइदियअपज्जत्तयस्स जहण्णट्टिदिवधादो सुहुमेइदिय-
अपज्जत्तयस्स हेट्टिमनीचारट्टाणमेतो ।

तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्टिदिवधो

विसेसाहिओ ॥ ७० ॥

केतियमेतो विमो ? सुहुमेइदियअपज्जत्तयस्स वीचारट्टाणमेतो ।

वादरेइदियअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्टिदिवधो

विसेसाहिओ ॥ ७१ ॥

केतियमेतो विमो ? सुहुमेइदियअपज्जत्तयस्स उक्कम्मट्टिदिवधादो उवरिमवादरे-
इदियअपज्जत्तवीचारट्टाणमेतो ।

सुहुमेइदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्टिदिवधो

विसेसाहिओ ॥ ७२ ॥

केतियमेतेण ? वादरेइदियअपज्जत्त-उक्कस्सट्टिदिनधादो उवरिमेण वादरेइदियअपज्जत्त-

विशेष कितना है ? यह पच्योपमने असख्यातधेँ भाग प्रमाण वीचारस्थानके
धराधर है ।

उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तका जघन्य स्थितिन्ध विशेष अधिक है ॥ ६९ ॥

विशेष कितना है ? यह वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके जघन्य स्थितिध घसे सूक्ष्म
एकेन्द्रिय अपर्याप्त सख्य वी नीचेके वीचारस्थानके धराधर है ।

उमी अपर्याप्तका उत्कृष्ट स्थितिन्ध विशेष अधिक है ॥ ७० ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके वीचारस्थानके धराधर है ।

वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तका उत्कृष्ट स्थितिन्ध विशेष अधिक है ॥ ७१ ॥

विशेष कितना है ? यह सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके उत्कृष्ट स्थितिन्धसे ऊपरके
वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके वीचारस्थानके धराधर है ।

सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तका उत्कृष्ट स्थितिन्ध विशेष अधिक है ॥ ७२ ॥

यह कितने प्रमाणसे अधिक है ? यह वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके उत्कृष्ट स्थिति

वीचारट्टाणेहिंतो सखेजगुणेण सुहुमेइदियपज्जत्तयस्स वीचारट्टाणेण पलिदोमस्स अस-
खेज्जदिभागमेत्तेण ।

वादरेइंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्टिदिवधो
विसेसाहिओ ॥ ७३ ॥

सुहुमेइदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सट्टिदिवधादो उवरिमेहि पलिदोमस्स असखेज्जदिभाग
मेत्तवादरेइंदियपज्जत्तवीचारट्टाणेहि विमेमाहिओ ।

वीइदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्टिदिवधो
सखेज्जगुणो ॥ ७४ ॥

को गुणगारो ? किट्टणपणुनीसस्सणाणि । सेस सुगम ।

तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्टिदिवधो
विसेसाहिओ ॥ ७५ ॥

वीइदियपज्जत्तजहण्णट्टिदिनधादो हेट्टा पलिदोमस्स समज्जदिभागमेत्तवीचार-
ट्टाणाणि ओसरिय वीइदियपज्जत्तयस्स जहण्णट्टिदिवधस्स अनट्टाणादो ।

तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्टिदिवधो
विसेसाहिओ ॥ ७६ ॥

सगजहण्णट्टिदिवधादो पलिदोमस्स सखेज्जदिभागमेत्तवीचारट्टाणाणि उवरि चडिय
सगुक्कस्सट्टिदिवधममुप्पत्तीदो ।

पन्धसे ऊपरके वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके धीचारस्थानसे सख्यातगुणे च पल्योपमके
असख्यातवें भाग प्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तके धीचारस्थानसे अधिक है ।

वादर एकेन्द्रिय पर्याप्तका उत्कृष्ट स्थितिबंध विशेष अधिक है ॥ ७३ ॥

वह सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तके उत्कृष्ट स्थितिबंधसे ऊपर पल्योपमके असख्यातवें
भाग मात्र वादर एकेन्द्रिय पर्याप्तके धीचार स्थानोंसे विशेष अधिक है ।

द्वीन्द्रिय पर्याप्तका जघन्य स्थितिबंध सख्यातगुणा है ॥ ७४ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार कुछ कम पल्योपम रूप हैं । शेष कथन सुगम है ।

उसी अपर्याप्तका जघन्य स्थितिबंध विशेष अधिक है ॥ ७५ ॥

पर्योकि, द्वीन्द्रिय अपर्याप्तके जघन्य स्थितिबंधसे नीचे पल्योपमके सख्यातवें
भाग मात्र धीचारस्थान दृष्टकर द्वीन्द्रिय पर्याप्तका जघन्य स्थितिबंध अवस्थित है ।

उसी अपर्याप्तका उत्कृष्ट स्थितिबंध विशेष अधिक है ॥ ७६ ॥

पर्योकि, अपने जघन्य स्थितिबंधसे पल्योपमके सख्यातवें भाग मात्र धीचारस्थान
ऊपर चढ़कर अपना उत्कृष्ट स्थितिबंध उत्पन्न होता है ।

तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कसओ द्विदिवधो विसेसाहिओ ॥७७॥

तीइदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सट्टिदिनघादो पलिदोवमस्स सखेज्जदिभागमेत्तट्टिदिवध-
ट्टाणाणि उवरि अभुस्सरिदूण वीइदियपज्जत्तयस्स उक्कस्मट्टिदिनघावट्टाणादो ।

तीइदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विदिवधो

विसेसाहिओ^१ ॥ ७८ ॥

कत्तियमेत्तो विमेमो ? पलिदोवमस्स सखेज्जदिभागेण्णपणुवीसमागरोउममेत्तो ।

तीइदियअपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विदिवधो

विसेसाहिओ ॥ ७९ ॥

केत्तियमेत्तेण ? पलिदोवमस्स सखेज्जदिभागमेत्तेण । कुदो ? तीइदियअपज्जत्तजहण्ण-
ट्टिदिनघादो पलिदोवमस्स सखेज्जदिभागमेत्तट्टिदिवधट्टाणाणि हेट्टा ओमरियूण तीइदिय-
पज्जत्तयस्स जहण्णट्टिदिवघावट्टाणादो ।

तस्सेव उक्कस्सट्टिदिवधो विसेसाहिओ ॥ ८० ॥

केत्तियमेत्तेण ? पलिदोवमस्स सखेज्जदिभागपमाणमगीचारट्टाणमेत्तेण ।

तीइदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ द्विदिवधो

विसेसाहिओ ॥ ८१ ॥

उसी पर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिअ विशेष अधिक है ॥ ७७ ॥

पर्योकि, हीन्द्रिय पर्याप्तकके उत्कृष्ट स्थितिअ धसे पल्योपमके सख्यातवें भाग मात्र स्थितिअ धस्थान ऊपर जाकर हीन्द्रिय पर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिअ ध अवस्थित है ।

त्रीन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थितिअ ध विशेष अधिक है ॥ ७८ ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? उसका प्रमाण पल्योपमके सख्यातवें भागसे हीन पच्चीस सागरोपम प्रमाण है ।

त्रीन्द्रिय अपयाप्तकका जघन्य स्थितिअ ध विशेष अधिक है ॥ ७९ ॥

किन्तने मात्रसे यह विशेष अधिक है ? यह पल्योपमके सख्यातवें भाग मात्रसे अधिक है, पर्योकि हीन्द्रिय अपयाप्तकके जघन्य स्थितिअ धसे पल्योपमके सख्यातवें भाग मात्र स्थितिअ धस्थान नीचे जाकर त्रीन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थितिअ ध अवस्थित है ।

उमीका उत्कृष्ट स्थितिअ ध विशेष अधिक है ॥ ८० ॥

यह किन्तने प्रमाणसे अधिक है ? यह पल्योपमके सख्यातवें भाग मात्र अपने धीवारस्थानोंके प्रमाणसे अधिक है ।

त्रीन्द्रिय पर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिअ ध विशेष अधिक है ॥ ८१ ॥

१ ततोऽपि पर्याप्तत्रीन्द्रियस्य अथ य स्थितिअ ध सखेयगुण (१४) । क प्र (मण्य) १, ८०-८१

तीइदियअपज्जत्तयस्स उक्कस्मट्ठिदीदो उवरिमतेइदियपज्जत्तीचारट्टाणेहि पल्लिदोमस्स सखेअदिभागमेत्तेहि विमेमाहिओ ।

चउरिंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिवधो
विसेसाहिओ ॥ ८२ ॥

केतियमेतो विमेसो ? पल्लिदोमस्स सखेअदिभागेषूणपण्णाससागरोवममत्तो ।

तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिवधो
विमेसाहिओ ॥ ८३ ॥

केतियमेतो विसेसो ? पल्लिदोमस्स सखेअदिभागमेतो । कुदो ? चउरिंदियअपज्जत्त-जहण्णट्ठिदिवधादो हेट्ठां पल्लिदोवमस्स सखेअदिभागमेत्तट्ठिदिवधट्टाणाणि चउरिंदियअपज्जत्त-ट्ठिदिनधट्टाणेहिंतो सखेअगुणाणि ओसरिय चउरिंदियपज्जत्तजहण्णट्ठिदिवधावट्टाणादो ।

तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ^१ ट्ठिदिवधो
विसेसाहिओ ॥ ८४ ॥

केतियमेतो विमेसो ? पल्लिदोमस्स सखेअदिभागमेतो ।

तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिवधो
विसेसाहिओ ॥ ८५ ॥

वह त्रीन्द्रिय अपर्याप्तके उत्कृष्ट स्थितिय^२धसे ऊपरके पल्लोपमके सख्यातव भाग मात्र एषेन्द्रियके धीवारस्थानोंसे विशेष अधिक है ।

चतुरिन्द्रिय पर्याप्तका जन्य स्थितिय^२ विशेष अधिक है ॥ ८२ ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? उसका प्रमाण पल्लोपमके सख्यातवें भागसे हीन पचास सागरोपम ह ।

उमी अपर्याप्तका जन्य स्थितिय^२ विशेष अधिक है ॥ ८३ ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? उसका प्रमाण पल्लोपमका सख्यातव भाग है, पर्याप्त चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तके जघन्य स्थितिय^२धसे नीचे पल्लोपमके सख्यातवें भाग मात्र होकर चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तके स्थितिय^२धस्थानोंसे सख्यातगुणे स्थितिय^२धस्थान हटकर चतुरिन्द्रिय पर्याप्तका जघन्य स्थितिय^२ध भवस्वित है ।

उमी अपर्याप्तका उत्कृष्ट स्थितिय^२ विशेष अधिक है ॥ ८४ ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? वह पल्लोपमके सख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उमी पर्याप्तका उत्कृष्ट स्थितिय^२ विशेष अधिक है ॥ ८५ ॥

१ ताप्रती 'इट्ठि' इति पाठ । २ अ आ का प्रतिपु 'तस्सेव उक्कस्सआ' इति पाठ

केतियमेतेण ? चउरिंदियअपज्जत्तट्टिदिधट्टाणेहिंतो सखेअगुणेण चउरिंदियअपज्जत्त-
उक्कस्मट्टिदिधधादो उअरिमेण चउरिंदियपज्जत्तनीचारट्टाणमेतेण विमसाहिओ ।

असण्णिपचिंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्टिदिवधो
सखेज्जगुणो ॥ ८६ ॥

को गुणगारो ? सखेज्जा समया । कारण सुग्ग ।

तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्टिदिवधो
विसेसाहिओ ॥ ८७ ॥

केतियमेतो विमसो ? पल्लिदोअम्म सखेअदिभागमेतो^१ ।

तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्टिदिवधो
विसेसाहिओ ॥ ८८ ॥

केतियमेतो विमसो ? सगवीचारट्टाणमेतो ।

तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्टिदिवधो
विसेसाहिओ ॥ ८९ ॥

केतियमेतो विमसो ? पल्लिदोअम्म सखेअदिभागमेतो ।

सजदस्स उक्कस्सओ ट्टिदिवधो सखेज्जगुणो ॥ ९० ॥

यह कितने प्रमाणसे अधिक है ? यह चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिव्यधस्थानोंसे
सख्यातगुणे ऐसे चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तके उत्कृष्ट स्थितिव्यधसे ऊपरके चतुरिन्द्रिय पचासके
धीचारस्थानप्रमाणसे विशेष अधिक है ।

असज्जी पचेन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थितिव्यध मर्यादागुणा है ॥ ८६ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार सख्यात समय हैं । इसका कारण सुग्ग है ।

उसी अपर्याप्तकका जघन्य स्थितिव्यध विशेष अधिक है ॥ ८७ ॥

विशेष कितना है ? यह पल्लोपमके सख्यातके भाग प्रमाण है ।

उसी अपर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिव्यध विशेष अधिक है ॥ ८८ ॥

विशेष कितना है ? यह अपने धीचारस्थानके बराबर है ।

उसीके पर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिव्यध विशेष अधिक है ॥ ८९ ॥

विशेष कितना है ? यह पल्लोपमके सख्यातके भाग प्रमाण है ।

सयतका उत्कृष्ट स्थितिव्यध मर्यादागुणा है ॥ ९० ॥

१ काप्रती 'सगवी तारट्टाणमेतो' इति पाठ । २ अ आ का प्रतिपु 'पज्जत्तयस्स' इति पाठ ।

को गुणगारो ? सरोज्जा समया । कुदो ? मागरोवममहस्सेण अतोकोडाकोडीए ओवट्टिदाण सरोज्जममओवलमादो ।

सजदासजदस्स जहण्णओ द्विदिवधो सखेज्जगुणो ॥ ९१ ॥

कुदो मिच्छत्ताहिमुहचरिमसमयपमत्तसजदुक्कस्मद्विदिनधादो वि सजदासजदजहण्ण द्विदिवधो सज्जगुणो ति ? ण, देसघाणिसनल्लोदय पेक्खिण सखपादिपच्चक्खाणो-दयस्स अणतगुणत्तादो । ण च कारणे थोपे मते कज्जस्स बहुत समवइ, विरोहादो ।

तस्सेव उक्कस्सओ द्विदिवधो सखेज्जगुणो ॥ ९२ ॥

कुदो ? मिच्छत्ताहिमुहचरिमसमयसजदामजदउक्कस्मद्विदिनधग्गहादो ।

असजदसम्मादिट्टिपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विदिवधो

सखेज्जगुणो ॥ ९३ ॥

कुदो ? उदयगदपच्चम्खाणादो तस्सेव गणअपच्चम्खाणास्स अणतगुणत्तादो ।

तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विदिवधो

सखेज्जगुणो ॥ ९४ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार मर्यादा समय हैं, क्योंकि, हजार सागरोपमोंका अत कोडाकोडिमें भाग देनेपर सख्यात समय प्राप्त होते हैं ।

सयतासयतका जघन्य स्थितिबंध मर्यादागुणा है ॥ ९१ ॥

शका—मिथ्यात्वके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती प्रमत्तसयतके उत्कृष्ट स्थितिवधसे भी सयतासयत जीवका जघन्य स्थितिबंध मर्यादागुणा क्यों है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि देहाघाती सखलन कपायके उदयकी अपेक्षा सघघाती प्रत्याख्यानारण कपायका उदय अनन्तगुणा है । और कारणके स्तोक होनेपर कार्यका आधिक्य सम्भव नहीं है, क्योंकि, वैसा होनेमें विरोध है ।

उक्त जीवका ही उत्कृष्ट स्थितिबंध मर्यादागुणा है ॥ ९२ ॥

कारण कि यहा मिथ्यात्वके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती सयतासयतके उत्कृष्ट स्थितिवधका ग्रहण किया गया है ।

असयत सम्यग्दृष्टि पयाप्तिका जघन्य स्थितिबंध मर्यादागुणा है ॥ ९३ ॥

कारण कि उसके प्रत्याख्यानारणके उदयकी अपेक्षा अप्रत्याख्यानारणका उदय अनन्तगुणा है ।

उसीके अपर्याप्तिका जघन्य स्थितिबंध मर्यादागुणा है ॥ ९४ ॥

कुतो ? अपञ्जतकाले अडनिमोहीर्णं द्विन्निधापमगणणिमित्ताणं अभावात्ते ।

तस्मेव अपञ्जत्तयस्स उक्कस्सओ द्विदिवधो

सखेज्जगुणो ॥ ९५ ॥

अपञ्जतकाले सव्यविसुद्वेण अमजदमम्मादिट्टिणा नञ्जमाणद्विदियधादो अपञ्जतकाले चैव अमजदमम्मादिट्टिणा मन्वुदट्टमकिल्लेमेण वञ्जमाणद्विद्वीए मग्गेवगुणत पडि विरोहाभावादो ।

तस्मेव पञ्जत्तयस्स उक्कस्सओ द्विदिवधो

सखेज्जगुणो ॥ ९६ ॥

कुतो ? अपञ्जतअमजदमम्मादिट्टिसन्वुदट्टमकिल्लेमात्ते पञ्जतअमजदमम्मादिट्टिसन्वुदट्टमकिल्लेमस्स अणतगुणतुत्तमादो ।

सण्णिमिच्छाहट्टिपचिंदियपञ्जत्तयस्स जहण्णओ द्विदिवधो

सखेज्जगुणो ॥ ९७ ॥

कुतो ? अमजदमम्मादिट्टिसन्वुदट्टमकिल्लेमादो सण्णिमिच्छाहट्टिपचिंदियपञ्जत्तयस्स जहण्णमकिल्लेमस्स अणतगुणतुत्तमात्ते, सक्किल्लेमपड्डीए द्विदिवधपड्ढिणिमित्ततात्ते ।

क्योंकि, अपत्यातकालमें स्थितिवधोपसरणमें निमित्तभूत अतिशय विदुद्विषा अभाव है ।

उसीके अपर्याप्तका उत्कृष्ट स्थितिवधो सर्यातगुणा है ॥ ९५ ॥

क्योंकि अपत्यातकालमें सर्वविशुद्ध असत्यत सम्यग्दृष्टि जीवके द्वारा बाधे जानेवाले स्थितिवन्धकी अपक्षा अपर्याप्तकालमें ही सर्वोत्कृष्ट सकलेशसे स्वयुक्त असत्यत सम्यग्दृष्टिके द्वारा बाधे जानेवाले स्थितिवधके सत्यातगुणे होनामें कोई विरोध नहीं है ।

उसीके पर्याप्तका उत्कृष्ट स्थितिवधो सत्यातगुणा है ॥ ९६ ॥

इसका कारण यह है कि अपर्याप्त असत्यत सम्यग्दृष्टिके सर्वोत्कृष्ट सकलेशकी अपक्षा पर्याप्त असत्यत सम्यग्दृष्टिका सर्वोत्कृष्ट सकलेश अनन्तगुणा पाया जाता है ।

भली मिथ्यादृष्टि पचेन्द्रिय पर्याप्तका जन्म स्थितिवधो सत्यातगुणा है ॥ ९७ ॥

कारण कि असत्यत सम्यग्दृष्टिके सर्वोत्कृष्ट सकलेशकी धोषका सत्री पचेन्द्रिय पर्याप्तका सर्वज्ञधन्य सकलेश अतन्तगुणा पाया जाता है, और सकलेशकी धृष्टि ही स्थिति बन्धवृद्धिका निमित्त है । अथवा मिथ्यात्वके उदय वश असत्यत सम्यग्दृष्टिके सर्वोत्कृष्ट

१ प्रतिपु 'अइमुद्विकोडीए' इति पाठ । २ अपर्याप्त 'सन्वुदट्टम' इति पाठ । ३ सत्रीपञ्चित्तियरे अर्धित्तओ य (उ) कोदिकोदीओ । ओपुक्कोसो सत्तिरप होइ पञ्जत्तयग्गेव ॥ ५ प्र १, ८२

मिच्छतोदयणिमित्तेण वा अमजत्सम्माइट्ठिमन्वुस्सट्ठिदिनमादो सजमाहिमुह चरिमममय-
मिच्छाइट्ठिस्स जहण्णट्ठिदिवधो मयेज्जगुणो ।

तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिवधो

सखेज्जगुणो ॥ ९८ ॥

कुदो ? सत्ताहिमुहचरिमममयमिच्छाइट्ठिमकिलेमादो अपजत्तमिच्छाइट्ठिमन्व-
हण्णमकिलेस्स अणत्तगुणत्तुवलभादो ।

तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिवधो

सखेज्जगुणो ॥ ९९ ॥

सुगममेद ।

तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिवधो

सखेज्जगुणो ॥ १०० ॥

अपवत्तकालमकिलेमादो पजत्तद्धाए सवुक्कस्समकिन्हेस्स अणत्तगुणत्तुवलभादो ।

एव ट्ठिदिवधट्ठाणपन्ना ति समत्तमणियोगद्वार ।

गिसेयपरूवणदाए तत्थ इमाणि दुवे अणियोगद्वाराणि

अणत्तरोवणिधा परपरोवणिधा ॥ १०१ ॥

निषेचन निषेक, कर्मपरमाणुस्सणित्तेणो गिसेयो णाम । तस्स पन्वणदाए

स्थितिरधकी अपेक्षा सयमके अभिमुख हूप अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिका जघय
स्थितिवध स्वयातगुणा हे ।

उमीके अपर्याप्तका जघन्य स्थितिरव स्वयातगुणा हे ॥ ९८ ॥

कारण कि सयमके अभिमुख हूप अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके स्वल्पेशकी अपेक्षा
अपर्याप्त मिथ्यादृष्टिका सर्वजघय स्वल्पेश अतगुणा पाया जाता हे ।

उमीके अपर्याप्तका उत्कृष्ट स्थितिरव स्वयातगुणा हे ॥ ९९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उमीके पर्याप्तका उत्कृष्ट स्थितिरव स्वयातगुणा हे ॥ १०० ॥

कारण कि अपर्याप्तकालीन स्वल्पेशकी अपेक्षा पर्याप्तकालीन सर्वोत्कृष्ट स्वल्पेश
अतगुणा पाया जाता हे ।

इम प्रकार स्थितिरवस्थान प्ररूपणानुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

निषेकप्रस्थणामे ये नो अनुयोगद्वार हे—अनन्तरोपनिधा और परम्परोपनिधा ॥१०१॥

‘निषेचन निषेक’ इस निरुक्तिके अनुसार कर्मपरमाणुओंके स्वर्गोंके निक्षेपण
करनेका नाम निषेक है । उसके दो अनुयोगद्वार हे, क्योंकि अनुत्तर प्ररूपणा और

द्वे अणियोगद्वाराणि ह्येति, अणत्त परपरपरवण मोत्तृण तत्रियपरवणा अभावादो ।

अणत्तरोवणिधाए पचिदियाण सण्णीण मिच्छाड्डीण पज्जत्त-
याण णाणावरणीय-दसणावरणीय-चेयणीय-अत्तराड्याण तिण्णिवास
सहस्राणि आवाध मोत्तृण ज पढममए पदेसग्ग णिसित्तं त बहुग,
ज विट्ठियसमए पदेसग्ग णिमित्तं त विसेसहीणं, ज तदियसमए
पदेसग्ग णिसित्तं त विसेसहीणं, एव विसेसहीणं विसेसहीणं जाव
उत्तकस्सेण तीस सागरोवमकोडीयो त्ति ॥ १०२ ॥

त्रिगुणित्तियपडिमेह्ठ पचिदियणिडेमो कदो । त्रिगुणित्तियपडिमेहो किमट्ट कीग्दे ?
तय उक्कस्मट्टिदीए उक्कस्मानाहाए च अभावादो । णिमेयपरवणाए कीरमाणाए
उक्कस्मट्टिदिउक्कस्मानाहाए च परवणाए को गत्थ मवरो ? ण केवलं एसा णिमेयपरवणा
चेत्त, किंतु उक्कस्मट्टिदि उक्कस्मानाहा णिमेयाए च परवणात्तादो । ट्टिदिउक्कस्मानाहाए परवणाए

परवणा प्ररूपणाको छोडकर तीसरी कोई प्ररूपणा नहीं है ।

अतः त्रिगुणित्तियपचिदिय मनी मिथ्यादृष्टि पर्याप्तक जीवोंके ज्ञानावरणीय,
दर्शनावरणीय, वेदनीय और अन्तर्गत कमकी तीन हजार वर्ष प्रमाण आनाधाको छोडकर
जो प्रदेशाय प्रथम समयमे निक्षिप्त हे वह बहुत है, जो प्रदेशाय द्वितीय समयमे निक्षिप्त
है वह उमसे विशेष हीन है, जो प्रदेशाय तृतीय समयमे निक्षिप्त है वह उममे विशेष हीन
है, इस प्रकार वह उत्कृष्टमे तीस कोटाकोडी मागगेपम तक उत्तरोत्तर विशेष हीन होता
गया है ॥ १०२ ॥

त्रिगुणित्तिय जीवोंका प्रतिषेध करनेके लिये सूत्रमे पचिदिय पदका निर्देश किया
गया है ।

शंका—त्रिगुणित्तिय जीवोंका प्रतिषेध किसलिये किया जाता है ?

समाधान—चूंकि उनमे उत्कृष्ट स्थिति और उत्कृष्ट आवाधाका अभाव है, अतः
उनका यहाँ प्रतिषेध किया गया है ।

शंका—निषेधप्ररूपणा करते समय यहाँ उत्कृष्ट स्थिति और उत्कृष्ट आवाधाकी
प्ररूपणाका क्या सम्बन्ध है ?

समाधान—यह केवल निषेधप्ररूपणा ही नहीं है, किंतु उत्कृष्ट स्थिति, उत्कृष्ट
आवाधा और निषेधकी भी यह प्ररूपणा है ।

१ मोत्तृण सगमवाहे (६) पढमाए ठिहए बहुतर दव । एत्तो विसेसहीणं जावुक्ककोस ति
सव्वसिं ॥ क प्र १,८१ । २ अ आ वाप्रतिपु 'कुदो' इति पाठ ।

उक्कस्मभो द्विदिनो उक्कस्मिया आवाहा च पम्विदा । पुच्च तेमिं पम्विदाण पुणो पम्वणा एत्थ किमट्ट कीरदे ? ण एस दोमो, द्विट्ठियट्ठाणपम्वणाए सुचिदाण पम्वणाए कीरमाणाए पउणरुत्तियाभावाणे । जदि एय तो एदम्माणियोगहारस्स गिसेयपरवणा ति वणमो ऋ जुज्जदे ? ण, णिमेयरचनाए पहाणभावणे तस्स त उवएममव्वाणे ।

अमण्णिपडिमेहट्ट सण्णीणमिदि णिदेसो क्खो । सम्मादिट्ठीसु उक्कम्मद्विदिनऱ पडिमेहट्ट मिच्छादट्ठीणमिदि णिदेसो क्खो । अपज्जत्तकाले उक्कम्मद्विदिवो णत्थि ति जाणावणट्ट पज्जत्तयमिट्ठि णिदेसो क्खो । सेमम्मपटिसेहट्ट णाणाउरणादिणिदेसो क्खो । उक्कम्मद्विदिं वधमाणस्स तिसु वामसहस्सेसु पडेमणिरुपेसो णत्थि ति जाणावणट्ट तिण्णिनासमहस्साणि आनाह मोत्तूणे ति भणि ।

एत्थ एदेहि दोहि जणियोगहारोहि भेडिपम्वणामामण्णेण एगतमावण्णेहि मेमपचणियोगहारणि जेण कारणेण सुचिदाणि तेण एव पम्वणा पमाण सेडी अवहारो

शुद्धा—स्थिति-वस्थानप्ररूपणामें उरुट्ट स्थिति-व आर उरुट्ट बाधाघाती भी प्ररूपणा की जा चुकी है । अत पूर्वमें प्ररूपित उन दोनाकी प्ररूपणा यहा फिरसे किस लिये की जा रही है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्याकि, स्थिति-वस्थान प्ररूपणामें उन दोनाकी सूचना मात्र की गई है । अत एव उनकी यहा प्ररूपणा करनेमें पुनरुक्ति दोषकी सम्भावना नहीं है ।

शुद्धा—यदि ऐसा है तो फिर इस अनुयोगहारकी ' निषेक प्ररूपणा ' यह स्वभा कैसे उचित है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि निषेक रचनाकी प्रधानता होनसे उसकी उक्त महा सम्भव ही है ।

असन्नियोका प्रतिषेध करनेके लिये सूत्रमें ' सण्णीण ' पदका निर्देश किया गया है । समयदृष्टि जीवोंमें उरुट्ट स्थिति-वस्था निषेध करनेके लिये ' मिच्छादट्ठीण ' पदका उपादान किया है । अपयात्तकालमें उरुट्ट स्थिति-व नहीं होता, इस बातके प्रापनार्थ ' पयात्तक ' का ग्रहण किया है । शेष कर्मोंका प्रतिषेध करनेके लिये ज्ञानावरणादिकोंका निर्देश किया है । उरुट्ट स्थितिको बाधनेवाल जीवके तीन हजार वर्षोंमें प्रदेशका निक्षय नहीं होता, इस बातको बतलानेके लिये ' तीन हजार वर्ष प्रमाण आवा-वाको छाड़कर ' ऐसा कहा है ।

यहाँ ' ध्येणप्ररूपणा ' नामान्यकी अपेक्षा एक-थको मात्र हुए इन दो (अन्तरोप निधा आर परम्परोपनिधा) अनुयोगहारोंके द्वारा चैकि शेष पाँच अनुयोगहारोंकी सूचना की गई है अत यहाँ प्ररूपणा, प्रमाण, ध्येण, अवहार, भागाभाग और अरुपवृत्त,

भागाभागे अप्पावद्गु चेदि छ अणियोगद्वाराणि वत्तत्वाणि भवति । एत्थ ताव पस्वण
पमाण च वत्तइस्सामो । त जहा—चटुण्ण कम्माण तिण्णियाससहस्साणि आत्ताध मोत्तूण
जो उपरिमममओ तथ णिसित्तपदेसग्गमत्थि । ततो अणतरउपरिमसमए णिसित्तपदेसग्ग
पि अत्थि । ततो उवरिमतदियसमए णिसित्तपदेसग्ग पि अत्थि । एण णेदव्व जाव
तीमसागरोरमकोटाकोडीण चरिमममजो ति । पस्वणा ग्ग ।

पढमाए द्विदीए णिसित्तपरमाणू अभवमिद्धिग्गहि अणनगुणा मिद्वाणमणतभागमेत्ता ।
एव णेयव्व चाव उपकम्मट्टिदि ति । पमाणपस्वणा ग्ग ।

मेटिपस्वणा दविहा—अणतरोपनिधा परपरोपनिधा चेदि । तत्थ अणतरोपनिधा
उच्चदे—तिण्णियाममहस्साणि आत्ताध मोत्तूण ज पढमसमए पदेसग्ग णिसित्त त वद्गुग । ज
त्रियिममए पदेसग्ग णिमित्त त त्रिममहीण णिमिगभागहारेण एडिदेगएटमेत्तेण । ज
तिदियमए पदेसग्ग णिसित्त त त्रिममहीण ऋण्णणिसिग्गभागहारेण एडिदेगएटमेत्तेण । ज
चउधममए पदेसग्ग णिसित्त त त्रिममहीण टुस्सण्णणिसिग्गभागहारेण एडिदेगएटमेत्तेण ।
एव णेयव्व जाव पढमणिसेयस्स अद्द चेट्टिद ति । पुणो विदियगुणहाणिपढमणिसेयादो

इन छह अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा करने योग्य है। इनमें पहिले प्ररूपणा और प्रमाणका
व्ययन करते हैं। वह इस प्रकार है—चार कर्मोंकी तीन हजार वर्ष प्रमाण आयाधाको
छोड़कर जो अगला समय है उसमें निषिक्त प्रदेशाग्र है। उससे अथवहित आगेके समयमें
निषिक्त प्रदेशाग्र भी है। उससे आगेके तीसरे समयमें निषिक्त प्रदेशाग्र भी है। इस
प्रकार तीस कोड़ाकीड़े सागरोपमोंके अन्तिम समय तक ले जाना चाहिये। प्ररूपणा
समाप्त हुई।

प्रथम स्थितिमें निषिक्त परमाणु अव्यसिद्धासे अनन्तगुणे व सिद्धांके अनन्तयें भाग
प्रमाण हैं। [द्वितीय स्थितिमें निषिक्त परमाणु विशेष हीन हैं।] इस प्रकार उरट्ट
स्थिति तक ले जाना चाहिये। प्रमाणप्ररूपणा समाप्त हुई।

श्रेणिप्ररूपणा दो प्रकार है अन्तरोपनिधा और परम्परोपनिधा। इनमें अन्त
रोपनिधाको कहते हैं—

तीन हजार वर्ष प्रमाण आयाधाको छोड़कर जो प्रथम समयमें निषिक्त प्रदेशाग्र
(२५६) है वह बहुत है। जो द्वितीय समयमें निषिक्त प्रदेशाग्र है वह निषेकभागहारका
भाग देनेपर जो एक भाग लब्ध हो उतन (२५६-१६=१६) मात्रसे विशेष हीन है। जो
प्रदेशाग्र तृतीय समयमें निषिक्त है वह एक अक कम निषेकभागहारका भाग देनेपर जो
एक भाग प्राप्त हो उतने [२४० - (१६-१) = १६] मात्रसे विशेष हीन है। चतुर्थ समयमें
जो प्रदेशाग्र निषिक्त है वह दो अक कम निषेक भागहारका भाग देनेपर जो एक भाग
प्राप्त हो उतने [२४० - (१६-२) + १६] मात्रसे विशेष हीन है। इस प्रकार प्रथम निषेकके
अन्त भाग तक ले जाना चाहिये।

तस्यैव विदियणिसेयो विसैसहीणो । केतियमेत्तेण ? णिसैगभागहारेण खडिदेयखडमेत्तेण । तथेय तदियसमए णिसित्त प्पेसग्ग विसैसहीण रूव्वणणिसैगभागहारेण खडिदेयखडमेत्तेण । एव णेयन्व जाव एत्थतणपढमणिमेयस्स अद्ध 'चेट्ठि' ति । एव णेयन्व जाव चरिमगुणहाणि ति । एत्थ सट्ठि—

१४४	७२	३६	१८	९
१६०	८०	४०	२०	१०
१७६	८८	४४	२२	११
१९२	९६	४८	२४	१२
२०८	१०४	५२	२६	१३
२२४	११२	५६	२८	१४
२४०	१२०	६०	३०	१५
२५६	१२८	६४	३२	१६

दोगुणहाणिप्पहुडि रूव्वणकमेण जाव रूवाहियगुणहाणि ति ठ्वेदृण रूव्वणणाणागुणहाणिमलागणमण्णोण्णन्मत्थरा-सिणा पादेक्क गुणिय पुणो रूव्वणणाणागुणहाणिमलागमेत्त पडिरासीयो अद्धक्क काळण ठ्वेत्त्वाओ । पुणो एदे पम्पेवे सत्थे वि मेलाविय समयपम्पेदे भागे हिदे ज लद्धं तेग सत्थपक्खेवेसु पादेक्क गुणिदेसु इच्छिद-इच्छिदणिसिगा होति,

प्रक्षेपकमक्षेपेण विभक्तं यद्धन समुपलद्ध ।

प्रक्षेपास्तेन गुणा प्रभेपममानि खडानि ॥ ६ ॥

इति सख्यानशास्त्रे उक्तत्वात् ।

पश्चात् द्वितीय गुणहानिके प्रथम निपेककी अपेक्षा उसका ही द्वितीय निपेक विशेष हीन है । कितने मात्रसे यह विशेष हीन है ? निपेकभागहारका भाग देनेसे जो प्राप्त हो उतने मात्रसे यह विशेष हीन है । द्वितीय गुणहानिके तृतीय समयमें निपेक प्रदेशात् एक अर्ध कम निपेकभागहारका भाग देनेपर जो प्राप्त हो उतने मात्रसे विशेष हीन है । इन प्रकार यहाँने प्रथम निपेक का अर्ध भाग स्थित होने तक ल जाना चाहिये । इस प्रकार अन्तिम गुणहानि तक लेजाना चाहिये । यहाँ सट्टि— (मूलमें देखिये) ।

दो गुणहानियों ($८ \times २ = १६$) को आदि लेकर एक एक धक कमके क्रमसे एक अधिक गुणहानिप्रमाण (१६, २५, १८, १३, १२, ११, १०, ९) तक स्थापित करना चाहिये । पश्चात् उनमेंसे प्रत्येकको एक कम नानागुणहानिशलाकाओ (५-१) का अ योग्याभ्यस्ताराशि (१६) से गुणित (१६×१६) करके एक कम नानागुणहानि शलाका (४) प्रमाण प्रतिराशियोंको आधी आधी करके (१२८, ६४, ३२, १६) स्थापित करना चाहिये । पश्चात् इन सभी प्रक्षेपोंको मिलाकर प्राप्त राशिका समयप्रयत्नमें भाग देनेपर जो लब्ध हो उससे सब प्रक्षेपोंमेंसे प्रत्येकको गुणित करनेपर इच्छित इच्छित निपेकाका प्रमाण होता है, क्वाकि—

प्रक्षेपोऽे सक्षप अथात् योगफलका विवक्षित राशिर्म भाग देनेपर जो धन प्राप्त हो उससे प्रक्षेपोंको गुणा करनेपर प्रक्षेपोंके घरापर खण्ड होते हैं ॥ ६ ॥

येसा गणितशास्त्रमें कहा गया है । (पु ६, पृ १५८) देखिये ।

१ अ आ का प्रतिपु ' अत्य ' इति पाठः । २ मप्रतिपाठोऽयम् । अ आ का ताप्रतिपु ' सख्यानिसी उक्तत्वात् ' इति पाठ ।

सपदि पस्वणा-पमाणाणियोगद्वाराणि अनन्तरोपनिषाण णिउदति ति ताणि
अमणिद्विण मोहणीयस्स अनन्तरोपनिषाणपन्नागद्वमुत्तसुत्त भादि—

पचिंदियाण सण्णीण मिच्छाड्वट्टीण पज्जत्तयाण मोहणीयस्स
सत्तवाससहस्साणि आवाह मोत्तूण ज पढमसमए पदेसग्ग णिसित्त
त बहुअ, ज विदियसमए पदेसग्ग णिसित्त त विसेसहीण, ज
तदियसमए पदेसग्ग णिसित्त त विसेसहीण, एव विसेसहीणं विसेस-
हीण जाव उक्कस्सेण सत्तरिसागरोवमकोडाकोडि ति ॥ १०३ ॥

पुत्र्य णाणाउरणादीण चदुण्ण कम्माण तिण्णिणामसहस्साणि ति आवाहा पन्निटा ।
सपदि मोहणीयस्स सत्तनामसहस्साणि आवाहा ति किमिद्व सुचचे ? ण, म्माद्विदिपडिभागेण
आनाउपत्तीरो । त उदा—उसमागरोवमकोडाकोडीण वस्ससहस्समावाहा लम्मणि ।
कम्मदे उण्णवेदे ? परमगुरुवदेमादो । जणि उसमागरोवमकोडाकोडीण वस्समहम्ममावाहा

अर अँकि प्ररूपणा और प्रमाण ये दो अनुयोगद्वार अनन्तरोपनिषावे अन्तर्गत हैं
अत उनको न कहकर मोहनीय कर्मकी अनन्तरोपनिषावे प्ररूपणार्थ उचरमूत्र
कहते हैं—

पचेन्द्रिय सनी मिथ्यादृष्टि पयासक जीवोंके मोहनीय कर्मकी सात हजार वर्ष
प्रमाण आनाथाको छोड़कर जो प्रदेशाग्र प्रथम समयमें निषिक्त है वह उचित है, जो
प्रदेशाग्र द्वितीय समयमें निषिक्त है वह उसमें विशेष हीन है, जो प्रदेशाग्र तृतीय समयमें
निषिक्त है वह उसमें विशेष हीन है, इस प्रकार उत्कर्षमें मत्त कोडाकोडि सागरोपम
तक विशेष हीन विशेष हीन होता गया है ॥ १०३ ॥

शंका—पहिले ज्ञानाउरणादि चार कर्मकी आवाधा तीन हजार वर्ष प्रमाण कही
जा चुकी है । अब मोहनीय कर्मकी सात हजार वर्ष प्रमाण आवाधा किसलिधे बतलायी
जा रही है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि आवाधाही उत्पत्ति अपनी स्थितिके प्रतिभागसे होती
है । यथा—दस कोडाकोडि सागरोपम प्रमाण स्थितिकी आवाधा एक हजार वर्ष प्रमाण
पायी जाती है ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—यह परम गुरुक उपदेशसे जाना जाता है ।

१ उदय पटि सत्तण्ण आवाहा कोडाकोडि उवहीण । वासवय तप्पडिभागण य ससद्विदीण
च ॥ गो क २५६ पाससहस्समावाहा कोडाकोडीदसग्गस सेसाण । अणुवावा अणुवद्वणगाउडु
छाम्माठिगुक्कोसो ॥ क प्र १, ७५

लम्बदि तो मत्तरि-तीस-वीससागरोपमकोडाकोडीण किं लभामो ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए जहाकमेण सत्त तिणिण वेणिण वाममहस्साणि आवाहाओ होति । मोहणीयस्स आवाधा एमा ७००० । पाणावरणादीण चदुण्ण कम्माणमानाहा एत्तिया होदि ३००० । पामागोदाणमानाहा एत्तिया होदि २००० । एदेण अत्यपदेण मेसउत्तरपयडीण पि आवाहापरूपणा कायन्वा । एव क्खे सोलसण्ण कमायाण चत्तारि वाममहस्साणि आवाधा होन्ति । एण मेसउत्तरपयडीण पि जाणिदुण वत्तव्व । एवमेइदिय त्रीइदिय-तीइदिय-चउरि-निय-असण्णिपरिचिदिएसु वि आवाहापरूपणा सग-सगट्टिदीसु कायन्वा । णवरि आउअस्स आवाधाणियमो णत्थि, पुव्वकोडितिभागमानाह काउम्य खुदामवगहणमत्तट्टिदीए वि धधु-बलमादो अमखेजद्धावाहाए नि तेतीससागरोपममेत्तट्टिदिवधुजलमादो । सेस पाणावरणादि-चदुण्ण कम्माण जहा परूविद तहा गिस्सेम परूवेदव्व, विसेसामावादो ।

एय मोहसन्नपयडीण पणसपिंड धेतुण किमणतरोपणिधा सुबुद्धे, आहो पुध पुध-पयडीग गिसेगस्म अणतरोपणिधा सुबुद्धि ति ? ण तान पदमवियप्पो सुबुद्धे, चालीस-

यदि दस कोडाकोडि सागरोपम प्रमाण स्थितिकी एक हजार वर्ष प्रमाण आवाधा पायी जाती है तो सत्तर, तीस और बीस कोडाकोडि सागरोपम प्रमाण स्थितियोंकी आवाधा भित्ती होगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाकी अपवर्तित करनेपर ममदा उनकी सात, तीन और दो हजार वर्ष प्रमाण आवाधा होती है । मोहनीय कर्मकी आवाधा ७००० वर्ष प्रमाण है । ज्ञानावरणादिक चार कर्मकी आवाधा इतनी होती है— ३००० वर्ष । नामध गोत्रकी आवाधा इतनी होती है— २००० वर्ष । इस अर्थपरसे शेष उत्तर प्रवृत्तियोंकी भी आवाधाकी प्ररूपणा करना चाहिये । ऐसा करनेपर सोलह कपायोंकी चार हजार वर्ष प्रमाण आवाधा होती है । इसी प्रकार शेष उत्तर प्रवृत्तियोंके विषयमें भी जानकर प्ररूपणा करना चाहिये ।

इस प्रकार एकेंद्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और अस्त्री पचेन्द्रिय जीर्णमें भी अपनी अपनी कर्मस्थितिके अनुसार आवाधाकी प्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि आयु कर्मकी आवाधाका ऐसा नियम नहीं है, क्योंकि, पूर्वकोटके तृतीय भाग प्रमाण आवाधा करके भुद्रभवग्रहण मात्र स्थितिवा भी बंध पाया जाना है, तथा अस्तक्षेपाद्धा मात्र आवाधामें भी तेतीस सागरोपम प्रमाण स्थितिका बंध पाया जाता है । शेष जैसे ज्ञानावरणादिक चार कर्मकी प्ररूपणा की गई है वैसेही पूण रूपसे प्ररूपणा करना चाहिये क्योंकि, उसमें कोई भेद नहीं है ।

शुका—यहा मोहनीय कर्मकी समस्त प्रवृत्तियोंके प्रदेशपिण्डको ग्रहण करके क्या अनन्तरोपनिधा कही जाती है अथवा उसकी पृथक् पृथक् प्रवृत्तियोंके निषेधकी अनन्त रोपनिधा कही जाती है ? इनमें प्रथम विकल्प तो योग्य नहीं है, क्योंकि अनन्तरोपनिधाकी

सागरोत्तमाणि अणतरोवणिधाए विसेमहीणकमण गवण तदणतरउत्तरिमसमए अणंतगुणहीण प्पदेमणित्सेगप्पसगादो, देसवादिपदेमपिंडो अणतगुणहीणो त्ति क्कमायपाहुडे णिदिद्वत्तान्ते । ण च अणतगुणहीणत्त वोतु जुत्त, विसेमहीण सञ्चल्य णिमिंचदि त्ति सुत्तेण सह विरोहादो । ण विदियपस्सो वि, सञ्चपयडीण ठिदीयो अस्सिद्वण पुध पुध णिमेयपस्स्वणापसगादो । ण च एव, विसेसहीणा विसेसहीणा सत्तरिमागरोत्तमकोडाकोडीयो त्ति सुत्तेण सह विरोहादो त्ति ? एत्थ परिहागे उच्चदे । त जहा—ण ताव विदियपस्सुप्पि वुत्तणोसाण समणो, तदन्नुगमामावादो । ण पढमपस्से वुत्तदोममणो वि, भिच्छत्तपदेसग्ग चैव घत्तूण अणतरोत्तणिण पस्सेमाणस्स तवोससमागमाभावादो । ण च सामण्णे विसेसो णत्थि, विसेसाणुविद्वान्ण चैव सामण्णाणमुवलभादो । ण च मामण्णे अप्पिदे विसेमप्पणा विरुज्जदे, विसेसवदिरित्तसामण्णाभावादो त्ति ।

सपहि उवरीलीण द्विदीण णित्सेयस्स उक्कस्सपदे त्ति सुत्ते वम्हाणिज्जमाणे उक्कस्सियाए द्विदीए बहुग पदेसग्ग देदि, दुचरिमादिद्विदीसु विसेसहीण देदि त्ति ज मणिद तमेदेण सुत्तेण सह कय ण विरुज्जदे ? ण, गुणिदकम्मसियमस्सिद्वण सा पस्स्वणा

अपेक्षा विशेषहीन क्रमसे चालीस सागरोत्तम जाकर उससे अश्वघटित आगेके समयमें धन-तगुणे हीन प्रदेशवाले नियेकवा प्रसंग आता है, क्योंकि, [सवघातीकी अपेक्षा] देशघाती प्रवृत्तियोंका प्रदेशपिण्ड अनन्तगुणा हीन है, ऐसा कस्तावपाहुडमें कहा गया है । परन्तु अनन्तगुणी हीनताका कथन उचित नहीं है, क्योंकि सर्वत्र विशेषहीन देता है, इस सूत्रके साथ विरोध होता है । दूसरा पक्ष भी ठीक नहीं है, क्योंकि, समस्त प्रवृत्तियोंकी स्थितियोंका आश्रय करके पृथक् पृथक् नियेकोंकी प्ररूपणाना प्रसंग आता है । परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, सत्तर कोड़ाकोड़ो सागरोत्तम तक से विशेषहीन विशेषहीन हैं, इस सूत्रके साथ विरोध आता है ?

समाधान—यहा उपर्युक्त शंकाका परिहार कहते हैं । वह इस प्रकार है—दूसरे पक्षमें दिये गये दोषोंकी सम्भावना तो है ही नहीं, क्योंकि वैयाक्यकार ही नहीं किया गया है । प्रथम पक्षमें कहे हुए दोषोंकी भी सम्भावना नहीं है, क्योंकि एकमात्र मिथ्यात्व प्रवृत्तिके प्रदेशपिण्डको ग्रहण करके अनन्तरोपनिधाकी प्ररूपणा करनेपर उक्त दोषोंका आना सम्भव नहीं है । सामान्यमें विशेष न हो, ऐसा तो कुछ ही नहीं, क्योंकि, विशेषोंसे सम्बद्ध ही सामान्य पाये जाते हैं । सामान्यकी मुख्यता होनेपर विशेषकी विपक्षा विरुद्ध हो सो भी नहीं है, क्योंकि, विशेषोंसे भिन्न सामान्यका अभाव है ।

शुभा—अथ 'उवरीलीण द्विदीण णित्सेयस्स उक्कस्सपदे' इस सूत्रका व्याख्यान करते हुए "उत्पद्य स्थितिमें बहुत प्रदेशपिण्डको देता है द्विचरम आदिक स्थितियोंमें विशेषहीन देता है" यह जो कहा है वह इस सूत्रसे कैसे विरुद्ध नहीं होगा ?

१ मन्त्रिपाठोऽप्यम् । अ-आ-का-ताप्रियु 'तदन्नुवगमादो' इति पाठः ।

कण, इमा पुण सविदग्णि-बोलमाणनीने अस्सिदण कदा ति निरोहामानाणे ।

सपदि मगतोक्किपत्तपम्पगा-यमाणाणियोगाग्मणतरोवणिधमाउअम्म पम्पणट्ट-
मुत्तरसुत्त भणदि—

पचिंदियाण सण्णीण सम्प्रादिट्टीण वा मिच्छादिट्टीण वा
पज्जत्तयाणमाउअस्स पुब्बकोडितिभागमावाध मोत्तूण ज पढमसमए
पदेसग्ग णिसित्त त बहुग, ज विदियसमए पदेसग्ग णिसित्त त
विसेसहीण, ज तदियसमए पदेसग्ग णिसित्त त विसेसहीण, एउ विसे
सहीण विसेसहीण जाव उक्कस्सेण तेतीसमांगरोवमाणि त्ति ॥१०४॥

एत्थ पुब्बकोडितिभागमावाध ति ज भणित्तेण 'अण्णजोगववच्छेदो' ण कीरत्त, किंतु
अनोगववच्छेदो' चेव, पुब्बकोडितिभागमादि क्कट्टण जाव अमखेयद्धा त्ति ताव मज्जानाधाहि
तेतीससागरोपममेत्तट्टिदिउममवादो । जत्ति एव तो उक्कस्सामाहाए चेव किमट्ट णिमेय-
पम्पणा कीरत्ते ? ण, जाउअस्स उक्कस्सामाहा एत्तिया चेव होत्ति, उक्कस्सामाहाए सह

समाधान—नहीं, क्योंकि, यह प्ररूपणा गुणितकर्मोशिकका आशय करने की गई
है, किंतु यह प्ररूपणा क्षपित गुणित घोलमान जीर्वाका आशय करने की गई है, उन
उससे विरुद्ध नहीं है ।

अब प्ररूपणा और प्रमाण अनुयोगकारोंसे गर्भित आयुक्रमकी अनंतरोपनिधाकी
प्ररूपणा करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

पचेन्द्रिय मजी सम्यग्दष्टि अथवा मिथ्यादष्टि पयासक जीर्णके आयु क्रमकी एक
पूर्वकोटिके तृतीय भाग प्रमाण आवाधाको छोड़कर प्रथम समयमें जो प्रदेशपिण्ड दिया
गया है वह बहुत है, द्वितीय समयमें जो प्रदेशपिण्ड दिया गया है वह उससे विशेष
हीन है, तृतीय समयमें जो प्रदेशपिण्ड दिया गया है वह विशेष हीन है, इस प्रकार
उत्कर्षसे तीस सागरोपम तक वह विशेषहीन विशेषहीन होता गया है ॥ १०४ ॥

यदा सूत्रमें 'पुब्बकोडितिभागमावाध' यह जो कहा गया है उससे अ-ययोग
व्यवच्छेद (अथ आवाधाभोक्ती यावृत्ति) नहीं किया जा रहा है, किन्तु अयोगव्यवच्छेद
ही किया जा रहा है क्योंकि, पूर्वकोटिके त्रिभागको भादि लेकर असक्षेपाद्धा तक समस्त
आवाधाभोक्ते साथ तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुक्रमका बंध मग्न है ।

शका—यदि ऐसा है तो उत्कृष्ट आवाधामें ही किसलिने निषेध प्ररूपणाकी जानी है ।

समाधान—नहीं, क्योंकि आयु क्रमकी उत्कृष्ट आवाधा शान्ती ही होती है तथा
उत्कृष्ट आवाधके साथ तेतीस सागरोपम मात्र उत्कृष्ट स्थिति भी होती है, यह बतलानेके

१ अ आ-कावृत्तिपु 'अण्णजोगववत्तो' इति पाठ । २ विशेषगणतैवकारअयागववच्छेद
बोधक; यथा शास्त्र पाण्डुर एतेति । अयोगववच्छेदो नाम उदेयतावच्छेदक तमानाधिकरजामावाप
तिषो गिरमम् । X X X विशेषसङ्कीर्णकारोऽन्ययोगववच्छेदबोधक, यथा पाथ एव धनुर्वर इति ।
अन्ययोगववच्छेदो नाम विनोध्यभिन्नतादात्म्यादिव्यवच्छेद । सप्त त पृ २५-२६

तेतीससागरोपमाणि उत्कस्मिया द्विती च होद्वि ति जाणावण्ड तदुत्तीए । देवाउअ
 पडुच्च मम्मादिद्वीण वा ति भणिद, मन्नेसु मम्मादिद्वीसु पुन्वकोटितिमागपटमममय-
 द्वितीसु देवाउअस केसु वि तेतीससागरोपमाणम्म थधुउरुमादो । णिग्याउअ
 पडुच्च मिच्छाद्वीण वा ति उतं, पुन्वकोटितिमागपटमममण वट्टमाणमिच्छाद्वीसु केसु वि
 तेतीससागरोपमेत्तणिग्याउअम्म थधुउरुभाणे । मंम जहा णाणावणीयम्म पन्विदं तथा
 परेदेव्य, विमेमाभाणो ।

अतोचित्तपन्ना पमाणमणतगेवणि र णामा-गोपणमुत्तमुत्तण भगणि—

पचिद्वियाण सण्णीण मिच्छाद्वीण पज्जत्तयाण णामागोटाण
 वेरामसहस्माणि आत्ताध मोत्तण ज पटमसमए पदेसग्ग णिसित्तं त
 बहुग, ज त्रिदियसमए पदेसग्ग णिमित्तं त विमेसहीण, ज तदिय
 समए पदेसग्ग णिसित्तं त विमेसहीण, एव विसेसहीणं विसेसहीण
 जाव उत्कस्सेण तिस सागरोपमकोडीयो ति ॥ १०५ ॥

णिमेगमागहारो मन्वकस्मेसु मरिमो, सन्वय गुणहाणीण सरिसत्तुवत्तादो ।
 गोबुच्छविमेमा ण सन्वगुणहाणीसु मरिमा, किन्तु आदिगुणहाणिष्पट्टि अद्वद्दगथा,
 लिये उक्त प्ररूपणा की जा रही है ।

देवायुक्ती अपेक्षा करके 'सम्मादिद्वीण वा' ऐसा कहा गया है, क्योंकि, पूर्वकोटिके
 त्रिभागके प्रथम समयमें स्थित किन्हीं सत्यदृष्टि सत्य जीवोंमें तेतीस सागरोपम प्रमाण
 देवायुक्ता यद्य पाया जाता है । नारकायुक्ती अपेक्षा करके 'मिच्छाद्वीण वा' ऐसा कहा
 गया है, क्योंकि, पूर्वकोटिके त्रिभागके प्रथम समयमें वर्तमान किन्हीं मिथ्यादृष्टि जीवोंमें
 तेतीस सागरोपम प्रमाण नारकायुक्ता यद्य पाया जाता है । दोष प्ररूपणा जैसे प्राना
 वरणीयके विषयमें की गई है, वैसे ही यहा करता चाहिये, क्योंकि, उसमें कोई
 विरोधता नहीं है ।

अथ आगेके सूत्रसे प्ररूपणा य प्रमाण अनुयोगद्वारोंसे गर्भित नाम य गोत्रकी
 अन तरोपनिष्ठाको कहते हैं—

पचेन्द्रिय सन्ती मिथ्यादृष्टि पयासक जीवोंके नाम य गोत्र कर्मकी दो हजार वर्ष
 प्रमाण आनाथाको छोड़कर जो प्रदेशपिण्ड प्रथम समयमें निषिक्त है वह बहुत है, जो
 प्रदेशपिण्ड द्वितीय समयमें निषिक्त है वह उममे विशेष हीन है, जो प्रदेशपिण्ड तृतीय
 समयमें निषिक्त है वह उममे विशेष हीन है, इस प्रकार उत्कर्ममें तीस कोडाकोडि
 सागरोपमों तक विशेषहीन विशेषहीन होता गया है ॥ १०५ ॥

निषेकभागदार सब कर्मोंमें समान है, क्योंकि सर्वत्र गुणदानियोंकी सहजता देखी
 जाती है । गोपुच्छविशेष सब गुणदानियोंमें सहज नहीं है, किन्तु प्रथम गुणदानिसे लेकर

गुणहाणीसु अत्रिदासु गोउच्छविसेमाणमत्रद्वानाविरोहादो । सेस जहा णाणावरणीयसस
परुविद तथा परुवेदन्व ।

मयहि मणीसु पत्रतेसु मन्वकम्माण पदेसणिमेगस्म अणतरोपणिध परुदिय सणि-
अपत्रताण तप्यन्वणट्टमुत्तरमुत्त भणदि—

पंचिदियाण मणीण मिच्छाडट्टीणमपजत्तयाण सत्तण्ण
कम्माणमाउववज्जाणमतोमुहुत्तमावाध मोत्तूण ज पढमसमए पदेसग्ग
णिसित्त त बहुग, ज त्रिदियसमए पदेसग्ग णिसित्त त विसेसहीण,
ज त्रिदियसमए पदेसग्ग णिमित्त त विसेसहीण, एव विसेसहीण
विसेसहीण जाव उक्कस्सेण अतोकोडाकोडीयो त्ति ॥ १०६ ॥

एव आउअ किमट्ट पदेहि सए ण भणदि ? ण ष्म त्तेमो, पदेसिं ट्टिदिअण
समाणाउअट्टिदिअभावेग मह वेत्तुममत्तादो । णामा-नोदानमतोकोडाकोडीदो चटुण्ण
कम्माणमतोकोडाकोडी टुभाग-भहिया । मोहम्म अतोकोडाकोटी चटुण्ण कम्माणमतो-

उत्तरोत्तर आध आधे होते गय हैं, क्योंकि, गुणहानियां अस्विकृत होनेपर गोपुच्छ-
विशेषोंके अस्थानवा विरोध है । दोष प्ररूपणा जैसे क्षातावरणीयके सम-धमें की गई है
वैसे ही करना चाहिये ।

अथ संधी पयासक जीवांक मर कर्मोंक प्रदेशनिषेधकी अन-तरोपनिधाकी प्ररूपणा
करके संधी अपर्याप्तक जीवोंके उसकी प्ररूपणा करनेके लिये उत्तर श्रुत कहते हैं—

पचेन्द्रिय सनी मिथ्यादृष्टि अपयासक जीवोंक आयुको छोडकर शेष मात
कर्मोंकी अतर्मुहूर्त मात्र आवाधाको छोडकर जो प्रेशपिण्ड प्रथम समयमें निपिक्त
है वह बहुत है, जो प्रदेशपिण्ड द्वितीय समयमें निपिक्त है वह विशेषहीन है, जो
प्रदेशपिण्ड तृतीय समयमें निपिक्त है वह विशेषहीन है, इस प्रकार उत्तरमें अन्त-
कोडाकोटि मागगेपम तरु विशेषहीन विशेषहीन होता गया है ॥ १०६ ॥

शका—यहा इनके साथ आयु कर्मका कथन क्यों नहीं किया ?

ममाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि, इनके स्थितिव-धके समान आयु
कर्मका स्थितिव-ध नहीं होता अतएव उनके साथ आयु कर्मका कहा जा सक्य नहीं है ।

शका—नाम व गोत्रके अत कोडाकोटि मात्र स्थितिव-धकी अपेक्षा चार कर्मोंका
स्थितिव-ध द्वितीय भागसे अधिक अत कोडाकोटि प्रमाण होता है । मोहनीय कर्मकी
अन्त कोडाकोटि चार कर्मोंकी अन्त कोडाकोटिकी अपेक्षा एक तृतीय भाग सहित दो

कोडाकोडीहिंनो सतिभाग दोन्नुगुणा ति । सेमन्मद्विन्नी तिमरिसा ति । तेण सेसकम्माण
पि एगन्नोमो मा होटु ति बुते ण, अतोकोडाकोडित्तेण तेसिं द्विदीण समाणत्तुलमादो ।
अतोमुहुत्तमावाध मोत्तूणेति मण्दिदे पढममयप्पहुडि सखेज्जावलियाओ वज्जिदण उवरि
णिमेयरचण कोदि ति घेतत्व । मेम मण्णिपचिंदियपज्जत्तणावरणीयस्म जहा तुत्त तहा
वत्तव्व, अवियेमादो ।

पचिंदियाण सण्णीणमसण्णीण चउरिंदिय तीडदिय-वीइंदियाण
वादरेइदियअपज्जत्तयाण मुहुमेइदियपज्जत्तापज्जत्ताणमाउअस्स अतो
मुहुत्तमावाध मोत्तूण जाव पढमसमए पदेसग्ग णिसित्त त बहुअ, ज
विदियसमए पदेसग्ग णिसित्त त विसेसहीण, जं नदियसमए
पदेसग्ग णिसित्त त विसेसहीण, एव विसेसहीण विसेसहीण जाव
उक्कस्सेण पुव्वकोडीयो ति ॥ १०७ ॥

एदे मत्त अपज्जत्तजीवममामसन्वेग परिणयजीना मुहुमेइदियपज्जत्तनीवा च आउअम्म
मत्तुक्कम्मद्विदि वधमाणा पुव्वकोडिं चेव जेण वधति तेण पुव्वकोडिमेत्ता चेव पदेम-
रूपो (१५) से गुणित है । शेष कर्मोंकी स्थिति विसदृश है । इसलिये शेष कर्मोंका भी
एव योग नहीं होना चाहिये ?

गमाधान—नहीं, क्योंकि, अत कोडाकोडि स्वरूपसे उनकी स्थितियोंके समानता
पायी जाती है ।

‘ अतोमुहुत्तमावाध मोत्तूण ’ ऐसा कहनेपर प्रथम समयसे लेकर सख्यात आधलि
याको छोड़कर इसमें आगे निषेकरचनाको करना है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये । शेष
कथन जैसे सक्षी पचेन्द्रिय पर्याप्तक शानावरणीयके विषयमें किया है वैसे ही इसके भी
करना चाहिये, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं है ।

मजी व अमजी पचेन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय द्वीन्द्रिय व नादर एकेन्द्रिय
अपयात्तक तथा म म एकेन्द्रिय पर्यात्तक एव अपर्यात्तक जीवोंके आयु कर्मकी अन्तर्मुहूर्त
मात्र आवाधाको छोड़कर प्रथम समयमें जो प्रदेशाय निषिक्त है वह बहुत है, जो
प्रदेशाय द्वितीय समयमें निषिक्त है वह उससे विशेष हीन है, जो प्रदेशाय तृतीय
समयमें निषिक्त है वह विशेष हीन है, इस प्रकार उत्कर्षमें प्रकीर्ण तक विशेषहीन
विशेषहीन होता गया है ॥ १०७ ॥

अपयात्त जीवममाम स्वरूपसे परिणत ये सात जीव तथा सूक्ष्म एकेन्द्रिय पयात्तक
जीव आयु कर्मकी उत्कृष्ट स्थितिको बाँधते हुए चूँकि पूर्वकोटि प्रमाण ही बाँधते हैं, अतएव
पुव्वकोटि मात्र ही प्रदर्शरचना कही गई है । पुव्वकोटिमेंसे एक अथ कम इत्यादि क्रमसे

१ कावरी ‘ दीरुव ’ इति पाठ ।

रचनापरुपिदा पुव्वकोडीदो रूत्रणादिकमेण परिहीणो वि पदेसरचना अत्थि, अण्णहा उक्कस्सेण जाव पुव्वकोडि ति णिदेसाणुवत्तीदो । एदे पुव्वकोडीदो अन्महियमाउअ किण्ण वपति ? महावदो अचताभावेण निरुद्धसत्तित्तादो वा । एदेसिमानाहा अतोमुहुत्तमेत्ता चेने ति किमद्द बुच्चंदे ? ण, एदेसिमतोमुहुत्तआउआण सगआउअतिभागे अतोमुहुत्तभावस्सेव उवलभादो । मेस सुगम ।

पचिदियाणमसण्णीण चउरिदियाण तीडदियाण वीइदियाण वादरएइदियपज्जत्तयाण सत्तण्ण कम्माणं आउअवज्जाण अतो-मुहुत्तमावाधं मोत्तूण ज पढमसमए पदेसग्ग णिसित्त त बहुअ, ज विदियसमए पदेसग्ग णिसित्त त विसेसहीण, ज तदियसमए पदेसग्ग णिसित्त त विसेसहीण, एव विसेसहीण विसेसहीण जाव उक्कस्सेण सागरोवमसहस्सस्स सागरोवमसदस्स सागरोवमपण्णासाए सागरोवमपणुवीसाए सागरोवमस्स तिण्णि-सत्तभागा सत्त सत्तभागा

हीन भी प्रदेशरचना होती है, क्योंकि अथवा 'उक्कस्सेण जाव पुव्वकोडि ति' यह निर्देश घटित नहीं होता ।

शका—ये जीव पूर्वकोटिसे अधिक आयुको क्यों नहीं बँधते हैं ?

समाधान—उक्त जीव स्वभावतः उससे अधिक आयुको नहीं बँधते हैं, अथवा अत्यन्ताभावसे निरुद्धशक्ति होनेसे वे अधिक आयुका बंध नहीं करते हैं ।

शका—इन जीवोंके उक्त कर्मोंकी आवाधा अतमुहुत्त मात्र ही किसलिय कही जानी है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि इन जीवोंकी आयु अन्तर्मुहूर्त प्रमाण ही होती है, अतएव अपनी आयुके त्रिभागम अन्तर्मुहूर्तता ही पायी जा सकती है ।

शेष कथन सुगम है ।

पचेन्द्रिय अमनी, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय और वादर एकेन्द्रिय जीवोंक आयु कर्मसे रहित सात कर्मोंकी अन्तर्मुहूर्त मात्र आवाधाको छोड़कर प्रथम समयमे जो प्रदेशपिण्ड निपिक्त है वह बहुत है, जो प्रदेशपिण्ड द्वितीय समयमें निपिक्त है वह उममे विशेषहीन है, जो प्रदेशपिण्ड तृतीय समयमें निपिक्त है वह उससे विशेषहीन है, इस प्रकार विशेषहीन विशेषहीन होकर उक्कर्मसे हतार सागरोपमोंके, सौ मागरोपमोंके, पचास सागरोपमोंके और पच्चीस मागरोपमोंके चार कर्मों, मोहनीय एव नाम गोर कर्मोंके क्रमसे सात भागोंमें परिपूर्ण तीन भाग (३।७), मात भाग (७।७)

वे-सत्तभागा पडिवुण्णा ति ॥ १०८ ॥

एत्थ पुच्चाणुपुच्चीए जेण गिदेमो कदो तेण असाण्णिपचिंदियाण मागरोउमसहस्सस्से तिण्णि-सत्तभागा चदुण्ण कम्माणमणुक्कस्सट्ठिदी होदि, मोहणीयस्स सत्त सत्तभागा, णामा-गोदाण वे-सत्तभागा । चउरिंदियाण मागरोवमसदस्स तिण्णि-सत्तभागा चदुण्ण कम्माण-मुक्कम्मट्ठिदी होदि, मोहणीयस्स सत्त-सत्तभागा, णामा गोदाण वे-सत्तभागा । तीइदिय-पज्जत्तएसु सागरोवमपण्णामाए तिण्णि सत्तभागा चदुण्ण कम्माण उक्कम्सट्ठिदी, मोहणीयस्स सत्त सत्तभागा, णामा-गोदाण वेसत्तभागा होदि । वीइदियपज्जत्तएसु सागरोवमपण्णीसाए तिण्णि-सत्तभागा चदुण्ण कम्माणमुक्कस्सट्ठिदी, मोहणीयस्स सत्त-सत्तभागा, णामा गोदाण वे सत्तभागा होदि । वादरएइदियपज्जत्तएसु मागरोउमाए तिण्णि सत्तभागा चदुण्ण कम्माण-मुक्कम्सट्ठिदी, मोहणीयस्स सत्त-सत्तभागा, णामा-गोदाण वे-सत्तभागा होदि । एत्थ एदाओ ट्ठिदीओ तेरासियकमेण जाणिट्ठण आणेद्व्याओ । सत्तरिकोडाकोडिस्सेहि सत्त-वाससहस्समोउट्ठिय लद्धे सग सगकम्मट्ठिदीण सागरोवमसलागाहि गुणित्ठे इच्छिदजीवसमा-सकम्मट्ठिदीणमावाहाओ होति । सेस जाणिय वत्तव ।

और दो भागों (२।७) तक चला गया है ॥ १०८ ॥

यहाँ सूत्रमें चूंकि पूर्वानुपूर्विक क्रमसे निर्देश किया गया है, अत असर्ही पंचेन्द्रिय जीवोंके चार कर्मोंकी उत्पृष्ट स्थिति हजार सागरोपमोंके तीन-सात भाग (३) प्रमाण, मोहनीयकी उत्पृष्ट स्थिति सात सात भाग (७) प्रमाण, और नाम गोत्रकी दो सात भाग (७) प्रमाण है । चतुरिन्द्रिय जीवोंके चार कर्मोंकी उत्पृष्ट स्थिति सौ सागरोपमोंके तीन सात भाग प्रमाण, मोहनीयकी सात-सात भाग प्रमाण और नाम गोत्रकी दो सात भाग प्रमाण है । त्रीन्द्रिय पयात्तक जीवोंमें चार कर्मोंकी उत्पृष्ट स्थिति पचास सागरोप मोंके तीन सात भाग, मोहनीयकी सात सात भाग और नाम गोत्रकी दो सात भाग प्रमाण है । द्वीन्द्रिय पयात्तक जीवोंमें चार कर्मोंकी उत्पृष्ट स्थिति पच्चीस सागरोपमोंके तीन सात भाग, मोहनीयकी सात सात भाग और नाम गोत्रकी दो सात भाग प्रमाण है । वादर पचेन्द्रिय पयात्तक जीवोंमें चार कर्मोंकी उत्पृष्ट स्थिति एक सागरोपमके तीन-सात भाग, मोहनीयकी सात सात भाग और नाम-गोत्रकी दो सात भाग प्रमाण है । यहा इन स्थितियोंके त्रैराशिक क्रमसे जानकर ले जाना चाहिये । सत्तर कोड़ाकोड़ रूपोंसे सात हजार धर्मोंको अपरानित करके जो लब्ध हो उसे अपनी कर्मस्थितियोंकी सागरोपमदाला काओं द्वारा गुणित करनेपर अभीष्ट जीवसमासकी कर्मस्थितियोंकी आवाधायें होती हैं । शेष कथन जानकर करना चाहिये ।

१ अ-आ कामतियु 'सदस' इति पाठ । २ अप्रती 'कम्माणमणुक्कट्ठिदी', आ कामव्योः 'कम्माणमणुक्कट्ठिदी' इति पाठ । ३ ताप्रती 'गोदाणं चय वेसत्तभागा' इति पाठ । ४ ताप्रती 'उक्कम्म' इति पाठ ।

पचिदियाणमसणीण चउरिदियाण तीइंदियाण वीइंदियाण वादरएइदियपज्जत्तयाणमाउअस्स पुव्वकोडित्तिभागं वेमास सोलसरादिदियाणि सादिरेयाणि चत्तारिवासाणि सत्तवाससहस्साणि सादिरेयाणि आवाहं भोत्तूण ज पढमसमए पदेसग्गं णिसित्त त बहुग, ज विदियसमए पदेसग्गं णिसित्त त विसेमहीण, ज तदियसमए पदेसग्गं निसित्त त विसेसहीण, एव विसेमहीण विसेसहीणं जाव उक्कस्सेण पल्लिदोवमस्स असखेज्जदिभागो पुव्वकोडि त्ति ॥१०९॥

असणिपचिदियपज्जत्तान पुव्वकोडित्तिभागो आवाहा होत्ति, तेसु भुजमाणाउअस्स पुव्वकोडिपमाणस्स उवलंभादो । चउरिदिएसु उक्कसानाहा धे मासा, तस्य सन्नुक्कम्म भुजमाणाउअस्स छम्मासपमाणतुवलभादो । तेइदिएसु सोलसरादिदियाणि सादिरेयाणि उक्कसावाहा होदि, तेसु एग्गणवण्णरादिदियमेत्तपरमाउदसणादो । वीइदिएसु चत्तारिवासाणि उक्कसावाहा होदि, तस्य चारसनासमेत्तरमाउदसणादो । वादरेइदियपज्जत्तएसु सत्तमहस्सत्तिणिणसदतेत्तीसनासाणि चत्तारिमासा ध उक्कसावाहा होदि, तस्य चावीससहस्समेत्त

असङ्गी पचेन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय और वादर एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके आयु कर्मकी क्रमशः पूर्वकोटिके तृतीय भाग, दो मास साधिक सोलह दिवस, चार वर्ष, और साधिक सात हजार वर्ष प्रमाण आवाधाको छोड़कर जो प्रदेशपिण्ड प्रथम समयमें निपिक्त है वह बहुत है, जो प्रदेशपिण्ड द्वितीय समयमें निपिक्त है वह उससे विशेषहीन है, जो प्रदेशपिण्ड तृतीय समयमें निपिक्त है वह उससे विशेषहीन है, इस प्रकार उल्कपसे पत्योपमके असह्यातवें भाग व पूर्वकोटि तक विशेषहीन विशेषहीन होता गया है ॥ १०९ ॥

असङ्गी पचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके आयु कर्मकी आवाधा पूर्वकोटिके त्रिभाग प्रमाण होती है, क्योंकि, उनमें भुज्यमान आयु पूर्वकोटि प्रमाण पायी जाती है । चतुरिन्द्रिय जीवोंमें उसकी उत्पत्ति आवाधा दो मास प्रमाण होती है, क्योंकि, उनमें सर्वोत्पत्ति भुज्यमान आयु छह मास प्रमाण पायी जाती है । त्रीन्द्रिय जीवोंमें उत्पत्ति आवाधा साधिक सोलह दिवस प्रमाण होती है, क्योंकि, उनमें उनचास दिवस प्रमाण उत्पत्ति आयु देखा जाती है । द्वीन्द्रिय जीवोंमें चार वर्ष प्रमाण उत्पत्ति आवाधा होती है, क्योंकि, उनमें चार वर्ष प्रमाण उत्पत्ति आयु देखा जाती है । वादर पचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंमें उत्पत्ति आवाधा सात हजार तीन सौ तेत्तीस वर्ष व चार मास प्रमाण होती है, क्योंकि, उनमें सात हजार वर्ष

परमाउदसणादो । पदाओ आत्राहाओ वज्रिण पदेमरचना कीरदि ति उत होदि ।
पनेमविण्णामम्म आयामो पुण अमणिपचिंदियपज्जत्तण्णु आउअस्म पलिदोमम्म अमणेव्रदि-
मागमेतो, तत्र पलिदोमस्म असणेव्रदिभागमेत्तणिरयाउट्टिदीए वधुवलमादो । चउरिदि-
यादीण आउअस्म पदेमणिणासायामो पुत्रकोडिमेत्तो चे, तत्र पदम्हादो अहियथथा-
मावादो । सेस सुगम ।

पचिदियाणमसणीण चउरिदियाण तीव्वदियाणं वीइंदियाण
वादरेइदियअपज्जत्तयाण सुहुमेव्वदियपज्जत्तअपज्जत्तयाण , सत्तण्ह
कम्माणमाउक्कवज्जाणमतोमुहुत्तयावाध मोत्तूण ज पढमसमए पदेसग्ग
णिसित्त त बहुग, ज विदियसमए पदेसग्ग णिसित्त त विसेसहीण,
ज तदियसमए पदेसग्ग णिसित्त त विसेसहीणं, एवं विसेसहीण
विसेसहीण जाव उक्कस्सेण सागरोवमंसदस्स सागरोवमपण्णासाए
सागरोवमपण्णीसाए सागरोमरस तिण्णिसत्तभागा, सत्त-सत्तभागा,
वे सत्तभागा पलिदोवमस्स सखेज्जदिभागेण ऊणया पलिदोवमस्स
असणेज्जदिभागेण ऊणया ति ॥ ११० ॥

प्रमाण उत्पद्य आयु देयी जाती है । इन आधाधाओंको छोड़कर प्रदेशरचना की जाती है,
वह उक्त कथनका अभिप्राय है ।

परन्तु अस्तज्ञा पचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंमें आयु कर्मके प्रदेशानिन्यासका आयाम
पल्योपमके असरयातर्षे भाग प्रमाण है, क्योंकि उनमें पल्योपमके अस्तख्यातर्षे भाग प्रमाण
नारकायुका स्थितिबन्ध पाया जाता है । चतुरिन्द्रिय आदिक जीवोंके आयु कर्मके प्रदेश
निय्यासका आयाम पूर्वकोटि प्रमाण ही है, क्योंकि, उनमें इससे अधिक स्थितिबन्धका
अभाव है । शेष कथन सुगम है ।

अमनी पचेन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय द्वीन्द्रिय और वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तक
तथा सद्धम एकेन्द्रिय पर्याप्तक एव अपर्याप्तक जीवोंके आयु कर्ममें रहित शेष सात
कर्मोक्ती अन्तर्मुहूर्त मात्र आधाधाको छोड़कर प्रथम समयमें जो प्रदेशपिण्ड निपित्त है वह
चतुर्थ है, द्वितीय समयमें जो प्रदेशपिण्ड निपित्त है वह उमसे विशेषहीन है, तृतीय
समयमें जो प्रदेशपिण्ड निपित्त है वह उमसे विशेषहीन है, इस प्रकार उत्कर्षसे सौ
सागरोपम, पचास सागरोपम, पच्चीस सागरोपम और एक सागरोपमके सात भागोंमेंसे
पल्योपमके असरयातर्षे भागमें हीन तीन, सात और दो भाग तक विशेषहीन विशेषहीन
होता चला गया है ॥ ११० ॥

एतय अपञ्चतसहो अमणिपचिन्द्रियादिसु पादेकमहिमनपणिञ्जो, तम्सवणेण विणा पउणरुतियपसगादो । असुणिपचिन्द्रियअपञ्चतप्पहुडि जाव चीइदियअपञ्चतो ति ताव एदेसिं द्विदीयो पलिदोमस्स सरोअदिभागेण उग्याओ । चादरेडदियअपञ्चत-सुहुमेइदिय-पञ्चतापञ्चताणमुक्कस्माउद्विदीयो पलिदोमस्स अमखेअदिभागेणमागरोममेत्ताओ । सेम सुगम । एवमणतगेणिधा समत्ता ।

परपरोपनिधाए पंचिन्द्रियाण सण्णीणमसण्णीण पञ्जत्तयाणं अट्टण्ण कम्माण ज पढमसमए पदैसग्ग तदो पलिदोवमस्स असखेज्जदिभाग गतूण दुगुणहीणा, एव दुगुणहीणा दुगुणहीणा जाव उक्कस्सिया द्विदी ति ॥ १११ ॥

निमेसहीणकमेण गच्छता णिसेगा किं कथं मि दुगुणहीणा जादा ति पुच्छे असग्गेज्जगोवुच्छनिमेमे गत्वुग दुगुणहीणा जादा ति जानावणट्ट परपरोपनिधा आगदा । पढमाणिमेगादो प्पहुडि पलिदोवमस्स अमखेज्जदिभाग गतूण दुगुणहीणा ति वयणेण कम्मट्टिदिअम्भतेरे अमखेजाओ दुगुणहाणीयो अत्थि ति णवदे । त जहा—पलिदोवमस्स

सूक्ष्मं प्रयुक्त अपर्याप्त शब्दका सम्यग्ध असही पचेन्द्रिय आदिक जीवोंमें प्रत्येकने साय करना चाहिये, क्योंकि, उसका सम्यग्ध न करनेसे पुनरुक्ति दोषका प्रसंग आता है । असज्ञा पचेन्द्रिय अपर्याप्तकसे लेकर द्वीन्द्रिय अपर्याप्तक तक इन जीवोंकी स्थितियों पर्योपमके सख्यातमें भागसे हीन हैं । चादर पचेन्द्रिय अपर्याप्तक और सूक्ष्म पचेन्द्रिय पर्याप्तक य अपर्याप्तक जीवोंकी उत्कृष्ट स्थितियों पर्योपमके असख्यातमें भागसे हीन सागरोपम प्रमाण हैं । दोष कथन सुगम है । इस प्रकार अनन्तरोपनिधा समाप्त हुई ।

परम्परोपनिधाकी अपेक्षा सजी व अमजी पचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके आठ कर्मोंका जो प्रथम समयमें प्रदेशाग्र है उससे पर्योपमके असख्यातमें भाग जाकर दुगुणहीन है, इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति तक दुगुणहीन दुगुणहीन होता चला गया है ॥ १११ ॥

विशेषहीनताके समयसे जाते हुए निपेक कहींपर दुगुण हीन भी हो जाते हैं अथवा नहीं होते हैं, ऐसा पूछनेपर उत्तरमें कहते हैं कि असख्यात गोपुच्छविशेष जाकर वे दुगुण हीन हो जाते हैं, इस बातके ज्ञापनार्थ परम्परोपनिधाका अवतार हुआ है । प्रथम निपेकसे लेकर पर्योपमके असख्यात बहुभाग जाकर दुगुण हीन होते हैं, इस वचनसे कर्मस्थितिके भीतर असख्यात दुगुणदानिया हैं, यह जाना जाता है । यथा—

असखेन्नदिभाग गतण जदि एगा दुगुणहाणिमलागा लमट्टि तो कम्मट्टिदिअम्भनरमखेः पल्लिदोऽमसु केत्तियाओ दुगुणहाणिमलागाओ लमामो ति पल्लिदोऽमस्स अमखेन्नदिभागे कम्मट्टिदीए ओवट्टिदाए पल्लिदोऽमस्स अमखेन्नदिभागो उरलम्भदि ति आनाधृणकम्मट्टिदि एगगुणहाणीए भागे हिंए रूवणणाणागुणहाणिमलागाओ णक्किम्मे गुणहाणिमलाग अमखेन्ना भागा च आगच्छति । कुदो ? णाणागुणहाणिमलागाहि कम्मट्टिदीए ओवट्टिदि एगगुणहाणी आगच्छदि ति गुरूवेदसादो । तम्हा मन्वकम्माण णाणागुणहाणि सलागाओ मच्छेत्ताओ होति । अद्दगुणहाणिणा आवाधाऊणकम्मट्टिदीए ओरट्टिदि जदि अच्छेदरासी आगच्छदि तो णाणागुणहाणिमलागाहि मयलकम्मट्टिदि ओवट्टिदाए मादिरेयगुणहाणिअद्दाणमागच्छदि । कुदो ? णाणागुणहाणिमलागा अहियानाहाए ओरट्टिदाए एगम्वस्म अमखेन्नदिभागुत्तमादो । ण च णाणागुणहाणिमलागाण गुणहाणिअद्दाणस्स वा सच्छेदत्त, तहोऽणमाभावादो । तम्हा गुणहाणि आनाधृणकम्मट्टिदीए ओरट्टिदाए णाणागुणहाणिमलागाओ आगच्छति । पुणो ता वि ताए ओरट्टिदाए एगगुणहाणिअद्दाणमागच्छदि ति पेतत्तव । एत्थ गुणहाणि अद्दाण सन्वकम्माणमवट्टिदि । कुदो ? अण्णोण्णमत्यरासीण विसरिसत्तन्भुवगमादो । त

पल्लोपमके असखयातवें भाग जाकर यदि एक दुगुणहानिशलाका प्राप्त होती है तो क स्थितिके भीतर असखयात पल्लोपममें कितनी दुगुणहानिशलाकायें प्राप्त होंगी, प्रकार पल्लोपमके असखयातवें भागसे कर्मस्थितिके अपवर्तित करनेपर पल्लोपम असखयातवा भाग प्राप्त होता है । अत एव आवाधासे हीन कर्मस्थितिमें एक गुणहानि भाग देनेपर एक कम नानागुणहानिशलाकायें और एक गुणहानिशलाकाके असखय यहुभाग आते हैं, क्योंकि, नानागुणहानिशलाकाओंका कर्मस्थितिमें भाग देनेपर गुणहानि लम्घ होती है, ऐसा गुरुका उपदेश है । इस कारण सब कर्मोंकी नानागुणहानिशलाकायें सछेद् होती हैं । अर्ध गुणहानिका आवाधासे हीन कर्मस्थितिमें देनेपर यदि अछेद् राशि प्राप्त होती है, (येसा अभीष्ट है) तो नानागुणहानिशलाकाओं समस्त कर्मस्थितिमें भाग देनेपर साधिका गुणहानि अध्यान आता है, क्योंकि, नानागुणहानिशलाकाओंसे अधिक आगधाको अपवर्तित करनेपर एक रूपका असखयातवा भाग पा जाता है । परन्तु नानागुणहानिशलाकायें अथवा गुणहानिअध्यान सछेद् नहीं हैं, क्योंकि येसा उपदेश नहीं है । इस कारण आगधासे हीन कर्मस्थितिमें गुणहानिका भाग देने नानागुणहानिशलाकायें प्राप्त होती हैं । पश्चात् उनके द्वारा उसीको अपवर्तित करने एक गुणहानि अध्यान आता है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये । यहाँ सब कर्मोंका गुणहानि अध्यान अवस्थित है, क्योंकि, अन्यो धान्यस्त राशिया विसदृश स्वीकार की गई है

णामा-नोदणाणागुणहाणिमलागाहितो चदुण्ण कम्माण णाणागुणहाणिसलागाओ दुभागा-
हियाओ । मोहणीयस्स णाणागुणहाणिसलागाओ आहुट्टगुणाओ । आउअस्स णाणागुण-
हाणिसलागाओ णामा गोदणाणागुणहाणिसलागाण सपेज्जदिभागमेत्तीयो । एवममणीण-
मट्टण कम्माण पि तेरासिय काऊण णाणागुणहाणिमलागाओ उप्पाएय्याओ ।
असणीणमुक्कस्सट्टिदिनधो^१ पल्लिदोअमस्स अमपेज्जदिभागमेतो । गुणहाणिअद्धाण पि
पल्लिदोअमस्स असखेज्जदिभागमेत्त चेत्त । किंतु गुणहाणिअद्धाणादो अमणीण उक्कसाउ-
ट्टिदिबभो असखेज्जगुणो^२ ति एत्थ वि असखेज्जाओ णाणागुणहाणिसलागाओ लभति ति
धेतुव्व । एवमसणीणपच्चिदियपज्जत्तगाणावरणादीण णाणागुणहाणिमलागाओ तेरासिएण
आणेदव्वाओ ।

सपदि एत्थ णाणागुणहाणिमलागाण गुणहाणीए च पमाणपस्वणट्टमुत्तरसुत्त भणदि-

एयपदेसगुणहाणिट्टाणतर अससेज्जाणि पल्लिदो-

वमवग्गमूलाणि^३ ॥ ११२ ॥

एत्थ पल्लिदोवमम्म वग्गमूलमिदित्तुत्ते पल्लिदोवमपढमवग्गमूलस्सेव गहण कायव्व, ण
त्रिदियादीण, पल्लिदोवमस्स वग्गमूले गहिदे पढमग्गमूलस्सेव उप्पत्तिदसणादो । ताणि च

इस कारण नाम व गोत्रकी नानागुणहानिशलाकाओंकी अपेक्षा चार कर्मकी नानागुण
हानिशलाकायें द्वितीय भागसे अधिक हैं । मोहनीयकी नानागुणहानिशलाकायें उनसे
साठेतीन गुणी हैं । आयुर्मकी नानागुणहानिशलाकायें नाम-गोत्रकी नानागुणहानिशलाका
आवे स्वयंवातवें भाग प्रमाण हैं ।

इसी प्रकार असही जीवोंके आठों कर्मोंकी नानागुणहानिशलाकाओंको भ्रैराशिक
करके उत्पन्न करना चाहिये । असही जीवोंके आयुका उत्कृष्ट स्थितिवच्च पल्लोपमके
अस्वयंवातवें भाग प्रमाण होता है । गुणहानिअध्वान भी पल्लोपमके अस्वयंवातवें भाग
प्रमाण ही है । किंतु गुणहानिअध्वानसे असही जीवोंके आयुका उत्कृष्ट स्थितिवच्च
अस्वयंवातगुणा होता है, अतएव यहाँ भी अस्वयंवात नाना गुणहानिशलाकायें पायी जाती हैं,
ऐसा ग्रहण करना चाहिये । इसी प्रकार असही पचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके क्षानावरणादिक
कर्मोंकी नानागुणहानिशलाकाओंको भ्रैराशिक द्वारा ले आना चाहिये ।

अथ यहा नानागुणहानिशलाकाओं और गुणहानिके प्रमाणकी परूपणाके लिये
आगेका सूत्र कहते हैं—

एक प्रदेशगुणहानिस्थानान्तर पल्लोपमके असग्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण है ॥ ११२ ॥

यहा 'पल्लोपमका वर्गमूल' ऐसा कहनेपर पल्लोपमके प्रथम वर्गमूलका ग्रहण
करना चाहिये, द्वितीयादि वर्गमूलोंका नहीं, क्योंकि, पल्लोपमके प्रथम वर्गमूलको ग्रहण
करनेपर प्रथम वर्गमूलकी ही उत्पत्ति देखी जाती है । वे वर्गमूल अस्वयंवात हैं, क्योंकि,

१ अ-आ काप्रतिपु 'मुक्कस्साउट्टिदिबधो' इति पाठ । २ अ-आ-काप्रतिपु 'उक्कस्साउट्टिदिबधो
असखेज्जगुणा' इति पाठ । ३ एकस्मिन् द्विगुणवृद्धयोरन्तरे स्थितिरयानानि पल्लोपमवर्गमूलान्यस्वयंवातानि ।
क प्र (मल्य) १,८८

पद्ममग्नशक्ति अमनेज्जाणि, णाणागुणहाणिमलागादि कम्मट्टिदीण ओमट्टिणाए गुणहाणिपमाणुप्पत्तीदो । एसा गुणहाणी सञ्चकम्माण सरिमा, कम्मट्टिदिभागहाग्भू-
णाणागुणहाणिसलागाण कम्मट्टिदिपट्टिमागेण पमाणत्तुनलमादो ।

णाणापदेसगुणहाणिट्टाणंतराणि पलिदोवमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ११३ ॥

एव मोहणीयस्म णाणागुणहाणिमलागाओ पट्टिनेउमस्म किंरूणदच्छेदणयमेत्ताओ ।
त कथ णञ्चदे ? चरिमगुणहाणिद्व्यात्ते पद्मणिमेयो अमरोउगुणो ति पदेसविग्गयप्रप्पा-
बहुगादो । णाणावणादीण पुण णाणागुणहाणिमलागाओ पलिदोउमपद्मवग्गमूलअदच्छेद-
णहिंतो योमाओ । कुत्ते ? एत्ताओ त्रिग्लिय त्रिग कगिय अणोणम्मये करे अमरोउ
पलिदोवमत्रिण्यिवग्गमूलुप्पत्तीने । त पि कुदो णञ्चदे ? मोहणीयणाणागुणहाणिमलागाण
दो तिग्गि मत्तमागेसु विमेषादियनिदियवग्गमूलुदेदानुवल्मान्ते ।

नानागुणहानिशलाकाओंका कर्मस्थितिमें भाग देनेपर गुणहानिका प्रमाण प्राप्त होता है ।
यह गुणहानि सद्य कर्मोंकी समान है, क्योंकि, कर्मस्थितिके भागहारभूत नानागुणहानि
शलाकाओंका प्रमाण कर्मस्थितिप्रतिभागसे पाया जाता है ।

नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर पत्थोपमके वर्गमूलके अमर्यातवें भाग प्रमाण हैं ॥ ११३ ॥

यहां मोहनीयकी नानागुणहानिशलाकायें पदयोपमरे कुछ धम अर्धच्छेदोंके
धराबट हैं ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—यह ' अतिम गुणहानिके द्रव्यसे प्रथम निषेक अमर्यातगुणा है '
इस प्रदेशविरचित अल्पवहुरसे जाना जाता है ।

परंतु ज्ञानवरणादिर्षोंकी नानागुणहानिशलाकाय पत्थोपम सम्यग्धी प्रथम
वर्गमूलके अर्धच्छेदोंसे स्तोक हैं, क्योंकि, इनका विरलन कर द्विगुणित करके परस्पर
गुणा करनेपर पत्थोपमके अमर्यात द्वितीय वर्गमूल उत्पन्न होते हैं ।

शंका—यह भी कहासे जाना जाता है ?

समाधान—क्योंकि मोहनीयकी नानागुणहानिशलाकाओंके दो तीन सान भागोंमें
विशेष अधिक द्वितीय वर्गमूलके अर्धच्छेद पाये जाते हैं, अतः इसीसे उतने द्वितीय
वर्गमूलोंकी उत्पत्तिका ज्ञान होता है ।

१ नानाद्विगुणवृद्धिस्थानानि चागुलवर्गभूत्तेदनकासत्त्वेयतमभागप्रमाणानि । एतदुक्त भवति—
अगुलमाप्रक्षत्रगमप्रदेशगतोयत् प्रथम वर्गमूल तन्मनुष्यप्रमाणहेतुरादिपुण्यवृद्धिच्छेदनविधिना तावच्छेद-
पावद् भाग न प्रयच्छति । तथा च छेदनकानामहस्येयनमे भागे भाषन्ति छेदकानि तावन्तु यावानाकार-
प्रदेशाधिराकारप्रमाणानि नानाद्विगुणस्थानानि भवन्ति । क प्र (मन्व) १,८८ २ ताप्रती ' पलिदो-
वमस्स त्रिदिय ' इति पाठ ।

णाणापदेमगुणहाणिट्टाणतराणि थोवाणि ॥ ११४ ॥

कुदो ? थोवणपलिदोवमद्धच्छेदणयपमाणत्तादो थोवणपलिदोवमपढमवग्गमूलच्छेद-
णयमेत्तादो ।

एयपदेसगुणहाणिट्टाणतरमसखेज्जगुण ॥ ११५ ॥

को गुणगारो ? अमखेवाणि पलिदोवमपढमग्गमूलाणि ।

पचिंदियाण सण्णीणमसण्णीणमपज्जत्तयाण चउरिंदिय-तीडिदिय-
वीइदिय एइदिय वादर-सुहुमपज्जत्तापज्जत्तयाण सत्तण्ण कम्माणमाउव-
वज्जाणं ज पढमसमए पदेमग्ग तदो पलिदोवमस्स असखेज्जदि-
भाग गतूण दुगुणहीणा, एं दुगुणहीणा दुगुणहीणा जाव
उक्कमिसया ट्ठिट्ठि त्ति ॥ ११६ ॥

एव्य जना सण्णिपज्जत्तणाणावग्गादीण परूवणा कदा तथा कायन्वा । गवरि एव्य
अप्पगो ट्ठिदीण पमाण जाणिदण वत्तन्व ।

एयपदेसगुणहाणिट्टाणतरमसखेज्जाणि पलिदोवमवग्ग-
मूलाणि ॥ ११७ ॥

सुगममेद ।

नानाप्रदेशगुणहानिम्यानान्तर स्तोत्र है ॥ ११४ ॥

कारण यह कि वे पत्योपमके कुछ कम अर्धच्छेदोंके धराधर होनेसे पत्योपमके
प्रथम वर्गमूलके अर्धच्छेदोंसे कुछ कम है ।

एकप्रदेशगुणहानिम्यानान्तर असख्यातगुणा है ॥ ११५ ॥

गुणमार क्या है ? गुणमार पत्योपमके असख्यात प्रथम वर्गमूल है ।

मनी व अमञ्जी पचेन्द्रिय अपर्याप्तक, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय तथा
एकेन्द्रिय वादर व सूक्ष्म इन पर्याप्तक अपर्याप्तक जीवोंके आयुको छोड शेष सात कर्मोंका
जो प्रवेशाग्र प्रथम ममयमें है उसमे पत्योपमके अमन्यातमें भाग जाकर वह दुगुणहीन
हो जाता है, इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति तरु वह दुगुणहीन दुगुणहीन होता जाता है ॥ ११६ ॥

यहा जैसे स्वामी पयातनके ज्ञानावरणादिकोंकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही वरना
चाहिये । निशेषता इत ही है कि यहा अपनी स्थितियोंका प्रमाण जानकर कहना चाहिये ।

एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर पत्योपमके असख्यात वर्गमूलोंके धराधर है ॥ ११७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

गाणापदेसगुणहाणिट्टाणतराणि पलिदोवमवग्गमूलस्स

असखेज्जदिभागो ॥ ११८ ॥

एद पि सुगम ।

गाणापदेसगुणहाणिट्टाणतराणि थोवाणि ॥ ११९ ॥

गुणहाणिणा कम्मट्टिदीण ओरट्टिदाए तेसिमुप्पत्तिदसणादो ।

एयपदेसगुणहाणिट्टाणतरमसखेज्जगुण ॥ १२० ॥

को गुणगारो ? असखेज्जाणि पल्लिओउमवग्गमूलाणि । एव परम्परोवणिधा समत्ता ।

सपहि मेद्विपम्पणाए सृचिदाणमवहार भागाभाग अप्पाचहुआणियोगद्वाराण परव्वण कस्सामो । त जहा—मन्वासु ट्टिनीसु पत्तेमग्ग पढमाए ट्टिदीण पदेसपमाणेण वेरचिरेण कालेण अग्रहिरिज्जदि ? दिवहुगुणहाणिट्टाणतरेण कालेण अग्रहिरिज्जदि । एदम्स कारण बुच्चद । त जहा—विदियादिगुणहाणिद्वय पढमगुणहाणिद्वयपमाणेण कदे चरिमगुणहाणि-

नानाप्रदेशगुणहानिस्थाना तर पल्योपमके वगमूलके असत्त्यातव माग प्रमाण है ॥ ११८ ॥ यह सूत्र भी सुगम है ।

नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर स्तोक है ॥ ११९ ॥

कारण कि गुणहानि द्वारा कमभ्यतिको अपवर्तित करनेपर उनकी उत्पत्ति देखी जाती है ।

एकप्रदेशगुणहानिस्थाना तर असत्त्यातगुणा है ॥ १२० ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमके असत्त्यात वगमूल हैं । इस प्रकार परम्परोप निधा समाप्त हुई ।

अत्र श्रेणिप्ररूपणा द्वारा सूचित अग्रहार, भागाभाग और अल्पग्रहत्व अयुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा करने हैं । यह इस प्रकार है—सब स्थितियोंका प्रदेशविण्ड प्रथम स्थितिके प्रदेशविण्डके प्रमाण द्वारा कितने कालसे अपहृत होता है ? उक्त प्रमाणके द्वारा यह डेढ़ गुणहानिस्थाना तरकालसे अपहृत होता है । इसका कारण बतलाते हैं । यह इस प्रकार है—द्वितीयादित्र गुणहानिकाके त्रयसे प्रथम गुणहानिके द्रव्यप्रमाणसे करनेपर यह अन्तिम गुणहानिके त्रयसे दहित प्रथम गुणहानिका त्रय होता है । उसका प्रमाण यह है—

द्वि गु	१२	१२०	११५	११४	११३	११२	१११	११०	१०९
सु	५५	९०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२
च	३५	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
प	१५	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८
योग	१४०	२५५	११०	११५	१२०	१२५	१३०	१३५	१४०
अन्तिम									
गुण	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८
प्रथम									
गुण	१५६	२४०	२५४	२६८	२८२	२९६	३१०	३२४	३३८

द्वैगुणपदमगुणहाणिद्रिय होदि । तस्म पमाणमेद २४० । २२५ । २१० । १९५ ।
 १८० । १६५ । १५० । १३५ । चरिमगुणहाणिद्रव्यपमाणमेद १६ । १५ । १४ । १३ ।
 १२ । ११ । १० । ९ । गदम्मि द्रव्ये पुत्रद्वयमिह पक्खित्ते पदमगुणहाणिद्रव्यपमाण
 होदि । २५६ । २४० । २२४ । २०८ । १९२ । १७६ । १६० । १४४ । पुणो
 एद पदमगुणहाणिद्रव्य दोखडे कादण तय एगखडमधोसिर कगिय निदियखडपासे ठविदे
 एत्तिय होदि । २०० । २०० । २०० । २०० । २०० । २०० । २०० । २०० ।
 एदस्म पमाण पदमणिमेयस्स तिण्णि चटुम्भागा सादिरिया । पुणो एत्थ सात्तिरेये अरणिदे
 सुद्धा पदमणिमेयस्स तिण्णि चटुम्भागा चैत्र चेट्टति । तेसिं पमाणमेद १९२ । १९२ ।
 १९२ । १९२ । १९२ । १९२ । १९२ । सात्तिरेय पि एत् ८ । ८ । ८ ।
 ८ । ८ । ८ । ८ । ८ । पदमगुणहाणिद्रव्ये पि समङ्गणे ऋरमाणे पदमणिमेगरस
 तिण्णिचटुम्भागा सादिरिया होति । पुणो तेमु चटुम्भागे अरणिदे सेम वे-चटुम्भागपमाण-
 मेत्तिय होदि १२८ । १२८ । १२८ । १२८ । १२८ । १२८ । १२८ । १२८ ।
 सेमचटुम्भागपमाणमेद ६४ । ६४ । ६४ । ६४ । ६४ । ६४ । ६४ । ६४ । पुणो
 इम चटुम्भाग घेतुण पुक्खित्ततिण्णि-चटुम्भागेसु पक्खित्ते गुणहाणिमेत्तपदमणिसेया होति ।
 तेसिं पमाणमेद २५६ । २५६ । २५६ । २५६ । २५६ । २५६ । २५६ । २५६ ।
 पुणो पदमणिसेयस्स अट्टाणि गुणहाणिमेत्ताणि अत्थि । ताणि पदमणिसेयपमाणेण कट्टे
 गुणहाणीए अट्टमेत्ता पदमणिमेया होति । तेसिं पमाणमेद २५६ । २५६ । २५६ ।

अन्तिम गुणहानिके द्रव्यका प्रमाण यह है । इस द्रव्यको पूर्व द्रव्यमें मिलानेपर प्रथम गुण
 हानिके द्रव्यका प्रमाण होता है । (सहाय्यमें देखिये) । पुन प्रथम गुणहानिके इन द्रव्यके
 दो सण्ड करके उनमेंसे एक सण्डको अर्ध सिर करके द्वितीय सण्डके पार्श्वमें स्थापित
 करनेपर इतना है— $200+200+200+200+200+200+200+200=1600$ । इसका प्रमाण
 प्रथम निषेकके तीन चतुर्थ भाग ($\frac{3}{4}$) से कुछ (८) अधिक होता है । इसमेंसे अधिकताके
 प्रमाणको कम कर देनेपर अवशिष्ट प्रथम निषेकके शुद्ध तीन चतुर्थ भाग ही रहते हैं—
 ($1600-800=800$) १९२, १९२, १९२, १९२, १९२, १९२, १९२, १९२, साधिकताका भी प्रमाण
 यह है— $8, 8, 8, 8, 8, 8, 8, 8$ । प्रथम गुणहानिके द्रव्यका भी समकरण करनेपर
 ($1600-800=800$) यह प्रथम निषेकके साधिक (८) तीन चतुर्थ भाग प्रमाण होता है ।
 फिर उनमेंसे एक चतुर्थ भागको अलग कर देनेपर दोप दो चतुर्थ भागोंका प्रमाण इतना
 होता है— $[192-64=128=\frac{296 \times 2}{4}]$ १२८, १२८, १२८, १२८, १२८, १२८, १२८, १२८ ।

अधोप चतुर्थ भागका प्रमाण यह है— $64, 64, 64, 64, 64, 64, 64, 64$ । अथ इम
 चतुर्थ भागको ग्रहण करके पूर्वके तीन चतुर्थ भागोंमें मिला देनेपर गुणहानिके धरावर प्रथम
 निषेक होते हैं । उनका प्रमाण यह है—($192+64=256, 256, 256, 256, 256, 256, 256, 256$) । प्रथम निषेकके अर्ध भाग गुणहानिके धरावर अर्थात् आठ हैं ($2 \times 2 \times 2 \times 2 \times 2 \times 2 \times 2 = 256$) । उनको प्रथम निषेकके प्रमाणसे करनेपर गुणहानिके अर्ध भाग प्रमाण

२५६ । पुणो एते गुणहाणिअदमेत्तपदमणिमेगे धेतुण गुणहाणिमेत्तपदमणिमेगेसु पक्खिमेत्तु
 दिवङ्गुणहाणिमेत्तपदमणिसेया होति २५६ । १२ । पुणो सेमअधियदत्ते वि पदमणि
 मेयपमाणेण कदे तस्मद्धमेत्त होदि १०८ । पुणो एदमापहाण कादण पदमणिमेगे
 त्विवङ्गुणहाणीए गुणिताए मच्चच्चमेतिय होति ३०७० । पुणो तच्चिदं दिवङ्गुणहाणीए
 १२ । मागे हिते पदमणिमेयो आगच्छति । एते पदमणिमेयपमाणेण मच्चच्चं दिवङ्गुण
 हाणिट्टाणत्तेण कालेण अवहिरिञ्जदि ति सिद्ध ।

निदियाए द्वितीए पदेमग्गपमाणेण मच्चच्चित्तिपत्तेमग्ग कंठरिणेण कालेण अवहिरि
 अदि ? सादरियदिवङ्गुणहाणिट्टाणत्तरण कालेण । त जहा—त्विङ्गुणहाणीयो विरलेदण
 सच्चच्च समसड कादण दिण्णे एवेदम्म मच्चच्च पदमणिमेयपमाण पावति । पुणो हेट्टा
 णिमेगमागहार विग्लेदण उपरिमेगच्चपरिद मग्गड कादण णिणे विग्लेदण पडि
 एगेण-गोउच्छविमेयपमाण पावति । पुणो एदेण पमाणेण उपग्गिमच्चपरिदेसु अग्गिण्णिसु
 दिवङ्गुणहाणिमेत्तगोउच्छविमेमा अधिया हति । पुणो उच्चरिददच्चं पि त्विवङ्गुणहाणि-
 मेतविदियणिसेयपमाण होदि । पुणो अधियगोउच्छविसेमे त्रिदियणिसेयपमाणेण कम्मामो ।

प्रथम निपेक होते हैं । उनका प्रमाण यह है—२५६, २५६, २५६, २५६ । पश्चात् गुणहानिके
 अर्ध भाग प्रमाण इन प्रथम निपेकोंको ग्रहण करने गुणहानिके बराबर प्रथम निपेकोंमें मिला
 देनेपर डेढ़ गुणहानि प्रमाण प्रथम निपेक होते हैं— 256×12 । अत्रशिष्ट अधिक द्रव्यको
 भी प्रथम निपेकके प्रमाणसे करनेपर यह उससे अर्ध भागसे बराबर होता है १२८ । अब
 इसको गौण करने प्रथम निपेकसे डेढ़ गुणहानिको गुणित करनेपर सब द्रव्य इतना
 होता है— $256 \times 12 = 3072$ । इसमें डेढ़ गुणहानिका (१२) भाग देनेपर प्रथम निपेक
 प्राप्त होता है । इस प्रकार प्रथम निपेकके प्रमाणसे मय द्रव्य डेढ़ गुणहानिस्थानांतरकालसे
 अपहृत होता है, यह सिद्ध होता है ।

द्वितीय स्थिति सम्यग्ची प्रदेशाप्रके प्रमाणसे सय स्थितियाका प्रदेशापिण्ड कितने
 कालसे अपहृत होता है ? वह साधिक डेढ़ गुणहानिस्थानांतरकालसे अपहृत होता है ।
 यथा—डेढ़ गुणहानियोंका विरलन करने सय द्रव्यको समगण्ड करने देनेपर एक एक
 अक्षके प्रति प्रथम निपेकका प्रमाण प्राप्त होता है ($3072 - 12 = 256$) । इसके नीचे
 निपेकभागहारका विरलन कर उपरिम एक अक्षके प्रति प्राप्त राशिको समगण्ड
 करके देनेपर विरलन अक्षके प्रति एक एक गोपुच्छविनायका प्रमाण प्राप्त होता है
 ($256 - 12 = 244$) । इस प्रमाणसे ऊपरकी सय एक अक्षके प्रति प्राप्त राशियोंका
 अपनयन करनेपर डेढ़ गुणहानि प्रमाण गोपुच्छविदोष अधिक होते हैं ($12 \times 12 = 144$) ।
 अत्रशिष्ट द्रव्य भी डेढ़ गुणहानि मात्र द्वितीय निपेकके बराबर होता है ($12 \times 12 = 144$) ।

१ ताप्रती 'पदेण' इति पाठ । २ ताप्रती 'एद' इति पाठ । ३ प्रतिपु 'एद' इति पाठ ।
 ४ ताप्रती 'उवरिददच्च', ताप्रती 'उवरि दच्च' इति पाठ ।

तं जहा—१६।१५।१।१६।१२ रूवृणणिसेयभागहारमेतगोउच्छविसेमे घेतूण
जदि एग निदियणिमेषमाण लम्भदि, तो दिवङ्गुणहाणिमेतगोउच्छविसेमु किं लभामो त्ति
पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओउट्टिदाए सदिट्टीए चत्तारि पचभागा होति ४।५। पुणो
एत्त्विङ्गुणहाणीसु सरिमच्छेद^१ कादण परिखत्ते एत्तिय होदि ६४।५।^२ पुणो एदेण
सत्रद्वये भागे हिदे निदियणिसेगो आगच्छदि ।

तदियाए ट्टिदीए पदेसगपमाणेण मत्रट्टिदिपदेसग केउचिरेण कालेण अउहिरि-
ज्जदि ? मादिग्यन्नाहियदिवङ्गुणहाणिट्टाणत्तेण कालेण अउहिरिज्जदि १६।१४।१।
१६।२४। दोरूवृणणिसेयभागहारमेतगोउच्छविमेहेदि^३तो जदि एग तदियणिमेषमाण
लम्भदि तो तिण्णिगुणहाणिमेतगोउच्छविसेमेसु केउडिए तत्तियणिमेषे लभामो त्ति पमाणेण
फलगुणिदिच्छाए ओउट्टिदाए एत्तिय होदि १।५।७। पुणो एदम्मि दिवङ्गुणहाणिग्गि
पक्खित्ते एत्तिय होदि ९६।७ पुणो एदेण सत्रद्वये भागे हिदे तत्तियणिमेषो
आगच्छदि । एउ जाणिदण उअरि णेदच्च जाउ पढमगुणहाणीए अद्ध गद ति ।

अउ अधिक गोपुच्छविशेषोंको द्वितीय निपेकके प्रमाणसे करते हैं । यथा—एक
कम निपेकभागहार प्रमाण गोपुच्छविशेषोंको ग्रहण कर यदि एक द्वितीय निपेकका प्रमाण
पाया जाता है, तो डेढ़ गुणहानि प्रमाण गोपुच्छविशेषोंमें किन्ना द्वितीय निपेकका प्रमाण
प्राप्त होगा, इस प्रकार प्रमाणमे फलगुणित इच्छाको अपर्यतित करनेपर वह पाँच
भागोंमेंसे चार भाग (४/५) प्रमाण होता है ।



उदाहरण—यथा निपेकभागहारका प्रमाण १५ और गोपुच्छविशेषका प्रमाण
भी १६ है अतः निम्न प्रकार त्रैशिक करनेपर उपर्युक्त प्रमाण प्राप्त होता है—
 $1 \frac{1}{5} \times \frac{1}{16} = \frac{1}{8} = (1 \frac{1}{5} \times \frac{1}{16}) = 1 \frac{1}{8}$ ।

पुन इसको समच्छेद करने डेढ़ गुणहानियामें मिलानेपर इतना होता है— $1 + \frac{1}{8} = 1 \frac{1}{8}$ ।
इसका सब द्रव्यमें भाग देनेपर द्वितीय निपेक प्राप्त होता है— $30 \div 1 \frac{1}{8} = 24$ ।

तृतीय स्थिति सम्यक् प्रदेशाप्रमाणसे स्वयं स्थितियोंका प्रदेशपिण्ड किन्ना
कालसे अपहृत होता है । वह साधिर एक अरसे अधिक डेढ़ गुणहानिस्वात्तकालसे
अपहृत होता है । दो रूपोंसे कम निपेकभागहार प्रमाण गोपुच्छविशेषोंमे यदि एक
द्वितीय निपेक प्राप्त होता है तो तीन गुणहानियाके बराबर गोपुच्छविशेषोंमें किन्ना तृतीय
निपेक प्राप्त होगा, इस प्रकार फलगुणित इच्छामें प्रमाणका भाग देनेपर इतना होता है—

^४ उदाहरण—निपेकभागहार १६ गोपुच्छ १६, $16 - 2 = 14$, $1 \frac{1}{2} \times 14 = 21$ ।

इसको डेढ़ गुणहानियोंमें मिला देनेपर इतना जाता है— $12 + \frac{1}{2} = 12 \frac{1}{2}$ । अतः
इसका समस्त द्रव्यमें भाग देनेपर तृतीय निपेक आता है $30 \div 12 \frac{1}{2} = 24$ । इस प्रकार
जानकर प्रथम गुणहानिका अर्ध भाग समाप्त होने तक ले जाना चाहिये ।

पुणो उत्रिमिमेयपमाणेण सत्यद्विदिपदेसग्ग केवचिरेण कालेण अत्रहिरिज्जति ?
 थेगुणहागिट्ठान्नेण कालेण । त जहा—दिवङ्गुणहाणिस्वेत्त पढमणिसेगविस्वभण
 चत्तारि फालीयो कादृण पुणो तय चउयफालिं घेत्तूण गुणहाणिअद्धपमाणेण तिण्णि
 सडाणि कादृण परावत्तिय तिण्ण फालीण पासे ठविदेसु नेगुणहाणीयो होंति
 अथवा, तेरासियक्रमेण आणेदच्च । त जहा—१६ । १२ । १ । १६ ।
 १२ । ४ । गिमेयभागहारस्म तिण्णि-चदुम्भागमेत्तवियेसे घेत्तूण जदि एग तदित्त
 गिमेयपमाण लभदि तो आयामेण दिवङ्गुणहाणिविस्वभणेण गिसेयभागहारचदु-
 म्भागमेत्तवियेसेसु किं लभामो ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए गुणहाणीए
 अद्धमागच्छदि ४ । पुणो एदम्मि त्विचङ्गुणहाणिम्मि पन्निस्से दोगुणहाणीयो भवति १६ ।
 पुणो एदाहि सत्यद्वये भागे हिदे तन्निधणिमयो आगच्छदि । तदुवरि भागहारे सुच्चमाणे
 मादिसेय थे-गुणहाणीयो वत्त माओ । एव णेदत्त जाव पढमगुणहाणिचरिमसमओ ति । पुणो
 निदियगुणहाणिपढमणिसेयपमाणेण सत्यद्वये अत्रहिरिज्जमाणे केवचिरेण कालेण अत्रहिरिज्जदि ?
 तिण्णि गुणहागिट्ठान्तेण कालेण । त जहा— दिवङ्गुणहाणिस्वेत्त ठविय  अद्धेण

उससे अग्रिम निपेक्षक प्रमाणसे सत्र स्थितियोंका प्रवेशाग्र कितने कालमें अपहृत
 होता है ? उक्त प्रमाणसे यह दोगुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है । यथा—
 डेढ़ गुणहानि मात्र क्षेत्रकी प्रथम निपेक्षके विस्तारप्रमाणसे चार फालिया करके पश्चात्
 उनमेंसे चतुर्थ फालिने ग्रहण कर गुणहानिके अथ प्रमाणसे तीन खण्ड करके परिवर्तन
 पूर्वक तीन फालियाके पार्श्व भागमें स्थापित करनेपर दो गुणहानिया होती हैं । (सदृष्टि
 मूलमें देखिये ।)

अथवा त्रेराशिक्रमसे इसे ले आना चाहिये । यथा—निपेक्षभागहारके तीन चतुर्थ
 भाग मात्र निपेक्षको ग्रहण करके यदि बहाजे एक निपेक्षका प्रमाण पाया
 जाता है, तो आयाम (?) उ डेढ़ गुणहानि विपरम्भसे निपेक्षभागहारके चतुर्थ भाग मात्र
 निशेषोंमें यह कितना प्राप्त होगा, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित
 करनेपर गुणहानिका अर्ध भाग आता है ।

फिर इसको डेढ़ गुणहानियोंमें मिलानेपर दो गुणहानिया (१६) होती हैं । इनका सत्र
 द्रव्यमें भाग देनेपर बहाके निपेक्षका प्रमाण लघ होता है । उससे आगेके भागहारका
 कथन करनेपर नापिन दो गुणहानिया कहना चाहिये । इस प्रकार प्रथम गुणहानिके
 अन्तिम समय तक ले जाना चाहिये ।

द्वितीय गुणहानि सत्र की प्रथम निपेक्षके प्रमाणसे सत्र द्रव्यको अपहृत करनेपर यह
 कितने कालसे अपहृत होता है ? उक्त प्रमाणसे यह तीन गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत
 होता है । यथा—डेढ़ गुणहानि प्रमाण क्षेत्रको स्थापित करके (सदृष्टि मूलमें देखिये) अर्ध

पाडिय विदिअद्धस्सुपरि ठविदे तिण्णिगुणहाणीयो होंति । अथवा, दिवङ्गुणहाणीयो ठनेदूण एगगुणहाणिं चडिय इच्छामो त्ति एगस्व विरलिय विग करिय अण्णोण्णम्मये कदे उप्पण्णरासिणा दिवङ्गुणहाणीए गुणिदाए तिण्णिगुणहाणीयो होंति । २४ । पुणो एदाहि सव्वदच्चे भागे हिदे विदियगुणहाणीए पढमणिसेगो आगच्छदि ।

पुणो तिस्से चेव विदियणिसेगपमाणेण सव्वदच्च सादिरियतिण्णिगुणहाणिट्ठावतरेण कालेण अवहिरिज्जदि । त जहा— ८ । १५ । १ । ८ । २४' स्सुण्णणिसेयभागहारमेत-
गोबुच्छविमसे धेतूण जदि एगपस्सेजमलागा लम्मदि तो तिण्णिगुणहाणिमेतगोबुच्छविमसे-
हिंनो केवडियाओ पक्खेजमलागाओ लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए
एत्तिय होदि ८ । ५ । पुणो एदग्मि सरिसच्छेद कादण तिसु गुणहाणीसु पक्खत्ते एत्तिय
होदि १२८ । ५ । पुणो एदेण सव्वदच्चे भागे हिदे विदियणिसेयो आगच्छन्ति । एव
[पेदच्च] जाव विदियगुणहाणीए अद्ध गद ति । तदो तण्णिमेयपमाणेण सव्वदच्चे
अवहिरिज्जमाणे चत्तारिगुणहाणिट्ठावतरेण कालेण अवहिरिज्जदि । त जहा—तिण्णिगुणहाणि-
क्खेत्त ठविय पुञ्च व चत्तारिफालीयो कादण तथ तीहि फालीहि तदित्थणिसेओ होदि
त्ति चउत्थफाली अधिया होन्ति । पुणो इममहियफालिं तप्पमाणेण वस्सामो— ८ । १२ ।-

भागने फाइकर द्वितीय अर्थ भागने ऊपर रखनेपर तीन गुणहानिया होती हैं । अथवा, डेढ़ गुणहानियांको स्थापित करके चूकी एक गुणहानि चढ़े ह अत एक रूपका विरलन करके द्विगुणित कर परस्परमें गुणित करनेपर उत्पन्न राशिसे डेढ़ गुणहानिकी गुणित करनेपर तीन गुणहानिया (२४) होती हैं । अथ इनका सब द्रव्यमें भाग देनेपर द्वितीय गुणहानिका प्रथम निपेक आता है ।

उत्ती (द्वितीय) गुणहानिने द्वितीय निपेकके प्रमाणसे सब द्रव्य साधित तीन गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है । यथा—एक कम निपेकभागद्वार प्रमाण गोबुच्छ विशेषोंको ग्रहणकर यदि एक प्रक्षेपशलाका प्राप्त है, तो तीन गुणहानि मात्र गोबुच्छविशेषोंसे कितनी प्रक्षेपशलाकायें प्राप्त होंगी ? इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर इतना होता है— $3 \times 8 = 24$ । अथ इसको समच्छेद करके तीन गुणहानियोंमें मिलानेपर इतना होता है— $24 \div 8 = 3$ । इसका सब द्रव्यमें भाग देनेपर द्वितीय निपेक आता है— $3 \times 8 = 24$ । इस प्रकार द्वितीय गुणहानिका अर्थ भाग समाप्त होने तक ले जाना चाहिये ।

पश्चात् उसके आगेके निपेकप्रमाणसे सब द्रव्यको अपहृत करनेपर वह चार गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है । यथा—तीन गुणहानि मात्र क्षेत्रको स्थापित कर पूर्वके ही समान चार फालियां करके उनमेंसे तीन फालियोंसे वहाका निपेक होता है । अत चतुर्थ फालि अधिक है । अथ इस अधिक फालिको उसके प्रमाणसे करते हैं—

१ अथवा संदहिरियमये ' भागहारमेत ' इत्यत पश्चादुपलभ्यते । २ ताप्रती ' तीसु ' इति पाठः ।

१।८।४।२४। णिमेगभागहारनिष्णि चत्त्रभागमेत्तगोत्रुचविमेसे पेतुण जदि णो तदित्त्वणिमेगो लम्भदि तो एगफालिमेत्तगोत्रुचविमेमेगु कि लभामो ति पमाणेण पन्तुणि दिच्छाए ओत्रिष्टाए एतिय होदि ८। पुणो ण्णम्मि तिसुं गुणहाणीसु पविस्सते चत्तारि गुणहाणीयो होंति ३२। पुणो एदेण सत्त्वये भागे हित्ते तदित्त्वणिमेयो होदि। एव वाणिदण पेयत्त जाव निदियगुणहाणिचरिमणिसेयो ति।

पुणो तदियगुणहाणिपटमणिमेयपमाणेण अवहिरिजमाणे छगुणहाणिट्टाणतरपमाणेण जमहिरिजदि। त जहा—तिष्णिगुणहाणिकसेसे मत्थे पाटिय एगभद्धस्सुवरि विदिययद्द जोएदणं द्विन्दे छगुणहाणीयो होंति। अक्खा, धगुणहाणीओ चडिदाओ ति धे एवं विरलिय निम करिय अण्णोण्णमथे क्खे चत्तारि सत्ताणि उप्पज्जति। पुणो तेहि दिवद्दगुणहाणीए गुणिदाए भागहारो छगुणहाणिमेत्तो होदि ४८। पुणो एदाहि सत्त्व व भागे हित्ते इच्छिदगिमेयो आगच्छदि।

पुणो तिसुं गुणहाणीए तिसुंयणिमेयपमाणेण सत्त्वद्वये अवहिरिजमाणे सत्तियेय छगुणहाणिट्टाणतरणेण कालेण अवहिरिजदि। णत्थे तंरामियत्तमेण लद्धपक्खेयत्तवाणि ४८। १५। पुणो एदम्मि सरिमच्छेद कादण छसु गुणहाणीसु पविस्सते सादित्थेयल्लुण

निषेकभागहारके तीन चतुर्थ भाग मात्र गोपुच्छविदायोको ग्रहण कर यदि यदाभाएक निषेक प्राप्त होता है, तो एक फालि मात्र गोपुच्छविदायोमें क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छानो अपरानित करनेपर इनका हाना है—८। इसको तीन गुणहानियोंमें मिलानेपर चार गुणहानिया होती हैं— $2 \times 4 = 8$ । इसका सत्र द्रव्यमें भाग देनेपर यदाका (दि० गु० हा० का पाठवा) निषेक होता है— $30 \div 2 = 15 = 15$ । इस प्रकार जानकर द्वितीय गुणहानिके अन्तिम समय तक ले जाना चाहिये।

तृतीय गुणहानि सत्रघी प्रथम निषेकके प्रमाणसे सत्र द्रव्यको अपहृत करनेपर यह छह गुणहानिस्थाना तरकालसे अपहृत होता है। यथा—तीन गुणहानि प्रमाण क्षेत्रको मध्यमें फाड़कर एक अर्ध भागके उत्तर द्वितीय अर्ध भागको जोड़कर स्थापित करनेपर छह गुणहानिया होती हैं। अथवा, चूँकि दो गुणहानिया चढे हैं अतः दो अर्धोंका घिसलन करके दुगुणा कर परस्पर गुणित करनेपर चार अर्क उत्पन्न होते हैं। पश्चात् उनके द्वारा छह गुणहानियाको गुणित करनेपर भागहार छह गुणहानि प्रमाण होता है— $12 \times 4 = 48$ । इनका सत्र द्रव्यमें भाग देनेपर अभीष्ट निषेक प्राप्त होता है— $30 \div 2 = 15 = 15$ ।

उक्त गुणहानिके द्वितीय निषेकके प्रमाणसे सत्र द्रव्यको अपहृत करनेपर यह साधिक छह गुणहानिस्थाना तरकालसे अपहृत होता है। यदा त्रैराशिकक्रमसे प्राप्त प्रक्षेप एक ये हैं—१६। इनको समच्छेद करके छह गुणहानियोंमें मिलाने पर साधिक

१ ताप्रती 'तीष्ठ' इति पाठ। २ अ-आ ताप्रतिपु 'सत्त्वद्वये' इति पाठः। ३ प्रतिपु 'लक्ष्मण' इति पाठः।

हाणीयो ह्येति । ७६८ । १५' । पुणो एदाहि, सञ्चद्वये भागे हिदे विदियणिसेयो आगच्छदि । एव जाणिदण णेदच्च जाव अग्गट्टिदिभागहारो ति । णवरि अग्गट्टिदिभागहारो अणुल्सम असखेज्जदिभागो असखेज्जओमप्पिणि'-उस्मप्पिणिमेत्तो । तस्स पमाणमेद ३०७२ । ९' । एणैण समयपवद्धे भागे हिदे चरिमणिसेयो आगच्छदि । एव भागहारपरूवणा समत्ता ।

। पढमाए द्विद्रीए पदेसग्ग सञ्चट्टिदिपदेसग्गस्स केवटियो भागो ? असखेज्जदिभागो, दिग्गुणहाणीए खट्टिदे तथ एगखट्टमेत्त ति उच होदि । एव णेदच्च जाव पढमगुणहाणिचरिमणिसेयो ति । विदियगुणहाणिपढमणिसेयो सञ्चट्टिदिपदेसग्गस्स केवटिओ भागो ? असखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? तिण्णि गुणहाणीयो । एव जाणिदण णेदच्च जाव चरिमगुणहाणिचरिमणिसेयो ति । एव भागाभागपरूवणा समत्ता ।

सञ्चद्योव चरिमाए द्विद्रीए पदेसग्ग ९ । पढमाए द्विद्रीए पदेसग्गमपदेज्जगुण । को गुणहारो ? पत्तिदोवमम्म असखेज्जदिभागमेत्ता किं दृण'णोण्णन्धत्थरासी । तस्स पमाणमेत् २५६ । ९' । एदेण चरिमणिसेयो गुणिदे पढमणिसेयो होदि । २५६ ।

छद्द गुणहानिया होती है— $१६ + १६ = ३२ = १६$ । इनका सब द्रव्यमें भाग देनेपर तृतीय गुणहानिया द्वितीय नियेक आता है— $३०७२ - १६ = ६०$ । इस प्रकार जानकर अप्रस्थिति भागहार तक ले जाना चाहिये । विशेष इतना है कि अप्रस्थिति भागहार अगुठके अन्वयान्तर्गत्त भाग मात्र है जो असवयात्त अवसपिणी उत्सर्पिणियोंके धरातर है । उसका प्रमाण यह है— $३ - २ = १$ । इसका समप्रवद्धमें भाग देनेपर अन्तिम नियेक प्राप्त होता है— $३०७२ - २ = ९$ । इस प्रकार भागहार प्ररूपणा समाप्त हुई ।

प्रथम स्थितिका प्रदेशपिण्ड समस्त स्थितियोंके प्रदेशपिण्डके विन्नेयें भाग प्रमाण है ? उनके असवयात्तर्गत्त भाग प्रमाण है । समस्त स्थितियोंके प्रदेशपिण्डमें छद्द गुणहानिका भाग देापर जो प्राप्त हो (३०७२-१६=२५६) उतने मात्र यह है, यह उसका अन्तिमप्रय है । इस प्रकार प्रथम गुणहानिके अन्तिम नियेक तक ले जाना चाहिये । द्वितीय गुणहानिका प्रथम नियेक समस्त स्थितियोंके प्रदेशपिण्डके विन्नेयें भाग प्रमाण है । वह अन्ते अन्वयान्तर्गत्त भाग प्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? प्रतिभाग तीन गुणहानिया हैं । इस प्रकार जानकर अन्तिम गुणहानिके अन्तिम नियेक तक ले जाना चाहिये । इस प्रकार भागाभाग प्ररूपणा समाप्त हुई ।

अन्तिम स्थितिका प्रदेशपिण्ड सबसे स्तोत्र (९) है । प्रथम स्थितिका प्रदेशपिण्ड उससे असवयात्तगुणा है । गुणकार क्या है ? गुणकार पत्त्योपमय असवयात्तर्गत्त भाग मात्र कुछ कम अन्योयाभ्यस्त राशि है । उसका प्रमाण यह है— ३२१ । इसका अन्तिम

१ आ-ताप्रतिपु ७६८ । ५ । एवविधाव छट्टिरस्ति । २ अपत्तो ' णट्टे अग्गट्टिदिमपिणि ' , आ काप्रत्या ' भागे असखेज्जदिभागो अग्गट्टिदिमपिणि ' , ताप्रतो ' भागे असखेज्जदिभागो अग्गट्टिदिमपिणि ' इति पाठ । ३ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ का ताप्रतिपु २०७२ । ९ । ४ का ताप्रत्यो २५६ । ९ । एवविधाव छट्टिरस्ति ।

अत्रहृणमभुवस्तद्व्यममंवेदगुण । को गुणगारो ? मादिरेगेगम्यपरिहीणियगुणहाण । किं कारण ? स्वृणदिग्गुणहाणिमन्नागाहि पदमणिमंगे गुणिदे पदमणिमेवदिरित्तन्मि सव्यट्टिन्द्वयं होदि २८१६ । पुणो म्मि चरिमट्टिन्द्वयं विगा इच्छिजमाणं स्वृण दिग्गुणहाणीए एणस्वम् अमरेद्वदिभागमजयिय पदमणिमंगे गुणिदे अत्रहृणमभुवस्तद्व्य होदि २८०७ । अपदम विमेमाहियं । केतियमेतो विमेमो ? उवत्तमट्टिन्द्वयमेतो २८१६ । अगुनकस्स विसेसाहिय । केतियमेतो विमेमो ? चरिमणिमंगेपदमणिमंगेमेतो । मन्वासु द्विदीसु पदेसगा विमेमाहिय । केतियमेतो ? चरिमट्टिन्द्वयमेतान् । एव विमेयस्त्वगा समता ।

आनाधकदयपरूवणदाए ॥ १२१ ॥

किमट्टमाधाधकदयपरूवणा आगदा ? किं मन्वट्टिदिमपट्टाणेसु एवता चेव मन्वाहा होदि, आहो अण्णणां होन्ति ति पुच्छिन्ते एव होन्ति ति वाणावाट्टमाधाहाकदयपरूवण निवेकको गुणित करनेपर प्रथम निवेक होता है— $१२ \times १० = २०६$ । उससे अत्रहृणमभुवस्तद्व्य अन्वक्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? गुणकार आधिक एक अक्षरे हीन डेव गुणहानिया है ।

शका— इसका कारण क्या है ?

समाधान— इसका कारण यह है कि एक कम डेवगुणहानिगलामोमे प्रथम निवेकको गुणित करनेपर प्रथम निवेकसे रहित अग्रिम सब स्थितियोंके द्रव्यका प्रमाण होता है— $[२०६ \times (१०-१) = २०६ = (३०७२ - २५६)]$ ।

अब यदि यह द्रव्य अन्तिम स्थितिके द्रव्यसे रहित अभीष्ट है, तो एक कम डेव गुण हानिमेंसे एक अक्षरे असक्यातय भागको घटाकर दोपसे प्रथम निवेकको गुणित करनेपर अत्रहृणमभुवस्तद्व्य अन्वक्यातगुणा होता है— $१२-१=११$, $११-१=१०$, $१० \times २०६ = २०६०$ । इसकी अपेक्षा प्रथम स्थितिसे हीन सब द्रव्य विशेष अधिक है । विशेष कितना है ? यह उत्तर यह अन्तिम स्थितिके द्रव्यके घटाकर है— $२०६० + १ - २०६१$ । इससे अत्रहृणमभुवस्तद्व्य विशेष अधिक है । विशेष कितना है ? यह अन्तिम निवेकसे हीन प्रथम निवेकके घटाकर है— $(२५६-१=२५५)$, $२५५ \times २०६ = ३०६३$ । इससे सब स्थितियोंमें प्रवेशापर विशेष अधिक है । किन्तु मात्र विशेषसे यह अधिक है ? यह अन्तिम स्थितिके द्रव्यप्रमाणसे अधिक है— $(२०६३ + १ = २०६४)$ । इस प्रकार निवेकप्ररूपणा समान हुई ।

आनाथाकाण्डक प्ररूपणाका अधिकार है ॥ १२१ ॥

शका— आनाथाकाण्डक प्ररूपणाका अयतार किसलिये हुआ है ?

समाधान— सब स्थितिय-घस्यानोंमें क्या एक ही भाषाधा है, अथवा अन्य-अन्य है, ऐसा पृथक्पृथक् 'इस प्रकारकी भाषाधा व्यवस्था है' यह जनलानेके लिये आनाथाकाण्डक प्ररूपणाका अयतार हुआ है ।

१ अ-आ काप्रतिपु 'अण्णणा', ताप्रती 'अण्णा ण' इति पाठ ।

आगदा । एत्थ तिणिण अणियोगदाराणि परूवणा पमाणमप्पावहुअ चैव । पमाणप्पावहु-
आण समवो होडु णाम, सुत्तसिद्धत्तादो । सुत्तम्मि असतीण परूवणाए कथमेत्थ समवो ? ण
एस दोसो, परूवणाए विणा पमाणप्पावहुआणमणुववत्तीदो । तत्थ ताव सुत्तेण सच्चिदपरूवणा
बुच्चदे । त जहा—चोदसण्ण जीवममासाण अत्थि आवाहाकदयाणि आनाहाट्टाणाणि
च । आवाहाकदयपरूवणाए कथमावाहट्टाणाणि बुच्चति ? ण, आवाहाकदयपरूवणाए
आवाहाट्टाणाविणाभावेण टेमामासियत्तमावण्णाए आनाहाट्टाणपरूवण पडि विरोहामावादो ।

पचिदियाण सण्णीणमसण्णीण चउरिंदियाण तीहदियाण
वीहदियाण एडदियवादर-सुहुम पज्जत्त-अपज्जत्तयाण सत्तण्ण कम्माण-
माउववज्जाणमुक्कस्सियादो द्विदीदो समए समए पत्तिदोवमस्स
अससेज्जदिभागमेत्तमोसरिदूण एयमात्राहाकदय करेदि । एस कम्मो
जाव जहणिया द्विदि त्ति' ॥ १२२ ॥

समए समए इदि बुत्ते आवाघाए एगेसमए इदि बुत्त होदि । उक्कम्सावाहाए

इस आवाधाकाण्डकप्ररूपणामें तीन अनुयोगद्वार हैं—प्ररूपणा, प्रमाण और
महपयद्वार ।

शंका— प्रमाण और अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारोंकी सम्भावना भले ही हो, क्योंकि,
वे सूत्रसे सिद्ध हैं । परन्तु सूत्रमें न पाये जानेवाले प्ररूपणा अनुयोगद्वारकी सम्भावना
यहां कैसे हो सकती है ?

ममाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, प्ररूपणाके बिना प्रमाण और अल्प
बहुत्वका कथन बन ही नहीं सकता ।

उनमें पहिले सूत्रसे सूचित प्ररूपणा अनुयोगद्वारका कथन करते हैं । यह इस प्रकार
है— चौद- जीवसमाप्तोंके आवाधाकाण्डक और आवाधास्थान दोनों हैं ।

शंका— आवाधाकाण्डकप्ररूपणामें आवाधास्थानोंका कथन क्यों किया जा रहा है ?
समाधान— नहीं, क्योंकि आवाधाकाण्डकप्ररूपणाका आवाधास्थानप्ररूपणाके
साथ अविनाभाव सम्बन्ध है, अत आवाधास्थानप्ररूपणामें प्रति देशामर्शक भाषको प्राप्त
हुई आवाधाकाण्डकरूपणामें आवाधास्थानोंका कथन करना विरुद्ध नहीं है ।

मनी व अमनी पचेन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय और चाट्ट व सूक्ष्म
एकेन्द्रिय इन पर्याप्त व अपर्याप्त जीवोंके आयुको छोड़ शेष भात कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थितिसे
समय समयमें पत्योपमके असख्यातमें भाग मान नीचे उतर कर एक आवाधाकाण्डकको करता
है । यह क्रम जघन्य स्थिति तक है ॥ १२२ ॥

सूत्रमें ' समए समए ' पेसा कहनेसे आवाधाके एक एक समयमें, पेसा अभिप्राय

१ मोक्ष आउगाई समए समए अराहणीय । पत्तासंश्रितयमाग कड बुग अप्पवहुमेत्ति ॥
क प्र १, ८५

चरिमसमए णिरुद्धे उक्कम्मट्टिदीदो हेहा पल्लिदोवमस्स अमखेज्जदिभागमेत्तमोमग्गिण
 एयमावाहाकदय कोदि । आनाहचरिमसमय णिरभिद्वण उक्कस्सिमय ट्टिदिं चरन्ति । ततो
 समज्जण वि घथदि' । एव दुसमज्जणादिकमेण णेदव्व जाव पल्लिदोवमस्स असखेज्जदिभागे
 ण्णट्टिदि ति । एमेट्तेण आनाहाचरिममएण नग्गाओग्गट्टिदिविमेमाणमेगमावाहाकदय
 भिदि सण्णा ति बुत्त होदि । आवाधाण टुचरिममयस्स णिरुग्गण कादृण एव च
 निदियमानाहाकदय पस्वेदव्व । आनाहाण तिचरिमसमयणिरुग्गण कादृण पुव्व व तदिजो
 आनाहाकदयो पस्वेदयो । एण णेयव्व जाण जहण्णिया ट्टिदि ति । एदण मुत्तेण
 एगानाहाकदयस्स पमाणपरुग्गा कदा ।

मगहि देमामामियत्तमावण्णेण एदेण मुत्तेण सूचिदाणमावाहट्टाणाणमावाहाकदय
 सत्तायाण च पमाणपरुग्गा कीरदे । त जहा— सण्णिपचिदियपवत्ताणमानाहट्टाणाणि
 आनाहाकदयाणि च दो वि सखेज्जनासमेत्ताणि । सण्णिपचिदियपवत्ताणमानाहट्टाणाणि
 आनाहाकदयाणि च दो वि अतोमुहुत्तमेत्ताणि । अमण्णिपचिदिय चउरिदियतीद्विय

समझना चाहिये । उदृष्ट आवाधाके अन्तिम समयकी विवक्षा होनेपर उदृष्ट स्थितिले
 परोपमके असख्यातयें भाग मात्र नीचे उतर कर एक आवाधाकाण्डकको करना है ।
 आवाधाके अन्तिम समयको विवक्षित करके उदृष्ट स्थितिको धारणा है । उससे एक
 समय कम भी स्थितिको धारणा है । इस प्रकार दो समय कम इत्यादि क्रममे परोपमक
 अन्त्यशतयें भागसे रहित स्थिति तक ले जाना चाहिये । इस प्रकार आवाधाके इस
 अन्तिम समयमें धारके योग्य स्थितिनिर्देशकी एव आवाधाकाण्डक सहा है, यह
 अभिप्राय है । आवाधाके द्विचरम समयकी विवक्षा करके इसी प्रकारसे द्वितीय आवाधा
 काण्डककी प्ररूपणा करना चाहिये । आवाधाके त्रिचरम समयकी विवक्षा करके पहिलेके
 ही समान तृतीय आवाधाकाण्डककी प्ररूपणा करना चाहिये । इस प्रकार जघन्य स्थिति
 तक यही क्रम जानना चाहिये । इस सूत्रके द्वारा एक आवाधाकाण्डकके प्रमाणकी
 प्ररूपणा की गई है ।

अब देशमार्शक भागको प्राप्त हुए इस सूत्रके द्वारा सूचित आवाधास्थानों और
 आवाधाकाण्डकशालाओंके प्रमाणकी प्ररूपणा करत हैं । यह इस प्रकार है— सत्री पचेन्द्रिय
 पर्याप्तक जीओंके आवाधास्थान और आवाधाकाण्डक दोनों ही स्वयंशत वर्ष प्रमाण हैं ।
 सत्री पचेन्द्रिय अपवातन जीओंके आवाधास्थान और आवाधाकाण्डक दोनों ही अतर्मुह्वत
 प्रमाण हैं । असत्री पचेन्द्रिय, चतुरारिन्द्रिय, प्राग् द्विय और ङीन्द्रिय [पर्याप्त अपवात]

१ ताप्रती ' समज्जण वचदि ' इति पाठ ।

वीइदियाणमट्टण्ह जीनसमासाणमावाहट्टाणाणि आवाहाकदयसलगाओ च आवत्तियाण सखेअदिभागमेत्ताणि । चदुण्णमेइत्तियाण आवाहट्टाणाणि आनाहाकदयाणि च आवत्तियाण असखेअत्तिभागमेत्ताणि ।

आउअस्स आनाहाकदयपरूवणा किमट्ट ण क्ता ? ण एस्स दोमो, आउअस्स इमा ट्टिदी एदीए चेव आनाहाए णज्जदि ति णियमामानादो । पुव्वकोडित्तिभागमावाह काउण तेतीसाउअ वधदि, समउणतेतीस पि वधत्ति, एव दुममउणं तिममउणादिकमेण पुव्वकोडित्तिमागावाह धुअ काट्टण णेदच्च जाव नअसुद्धाभमग्गहण ति । पुणो एदे चेव आउअअवियप्पा पुव्वकोडित्तिभागे समउणे आनाधत्तेणे णिरुद्धे वि होत्ति । एव दुममउणादिकमेण णेत्तच्च जाव असखेयद्धा ति । जेणेवमणियमो तेण आउअस्स आवाहाकदयपरूवणा ण क्ता । ण च आनाहाकदयाणि णत्थि ति आवाहट्टाणाणमसभवो, तदभावे लिंगाभावादो । तदो आउअस्स णत्थि आनाहाकदयाणि ति मिद्ध ।

इन आठ जीवसमासोंके आनाधास्थान और आवाघाकाण्टकशलाशयें आवलीके सख्यातर्षे भाग प्रमाण हैं । चार एतेन्द्रिय जीवोंके आवाधास्थान और आनाधानाण्टक आवलीके असख्यातर्षे भाग प्रमाण हैं ।

शंका—यहा आयु कर्मके आवाघाकाण्डकोंकी प्ररूपणा किसलिये नहीं की गई ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, कारण कि आयुकी यह स्थिति इसी आवाघामें बधती है, ऐसा कोई नियम नहीं है । पूर्वकोटिने त्रिभागको आवाघा करके तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुको बाधता है, एक समय कम तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुको भी बाधता है, इस प्रकार पूर्वकोटिके त्रिभाग रूप आवाघाको धुअ करके दो समय कम, तीन समय कम इत्यादि क्रमसे बध लुद्धभवप्रवृद्धण प्रमाण स्थिति तक ले जाना चाहिये । पूर्वकोटिके एक समय कम त्रिभागको आनावा रूपसे त्रिचक्षित करनेपर भी ये ही आयुबधके विकल्प होते हैं । इसी प्रकार दो समय कम, तीन समय कम इत्यादि क्रमसे असखेययाद्धा काल प्रमाण आवाघा तक ले जाना चाहिये । जिस कारण यहा कोई ऐसा नियम नहीं है, इसीलिये आयुके आनाघाकाण्डकोंकी प्ररूपणा नहीं की गई ।

आवाधानाण्टक चूकि नहीं हैं, इसलिये आवाधास्थान असम्भव हों ऐसी कोई बात नहीं है क्यकि, उनसे अभाजमें कोई हेतु नहीं है । इस कारण आयुके आवाघा काण्डक नहीं हैं, यह सिद्ध है ।

१ आप्तो 'असंखे०', ताप्तो 'असंखे०' इति पाठ । २ आप्तो 'इमा ट्टिदीए चेव' इति पाठ । ३ अ आ काप्रतिपु 'दुममउणा' इति पाठ । ४ अ आ-ताप्रतिपु 'पुव्वकाडिभागे' इति पाठः । ५ आप्तो 'दुममपादि' इति पाठ ।

एव्य अप्यायद्वयपरम्परा किं क्रीते ? न एव दोषो, उच्यते भाग्यमाणत्रयस्य
आणियोगद्वारेण तद्वगमात् । एवमायाधाकृत्यपरम्परा ममता ।

अप्यायद्वयत्ति ॥ १२३ ॥

ज त उच्यते मणियोगसम्पन्नापद्वयमिदं तं वनडम्भामो नि मणिं होति ।

पर्विदियाण मणीण मिन्डाइट्टीण पज्जत्तापज्जत्ताण मत्तण्ह
कम्माणमाउपवज्जाण मन्त्रथोरा जहणिया आनाहा ॥ १२४ ॥

कुतो ? मनेज्ञानरियमेता होएण अतोमुहुत्तपमाणानादो ।

**आनाहट्टाणाणि आनाहाकृत्याणि च दो वि तुज्जाणि
सखेज्जगुणाणि ॥ १२५ ॥**

कुतो ? जहणानायातो उक्कम्मायाहा मयद्रगुणा, तेण आनाहट्टाणाणि वि

शका—यदा अत्यवदुत्वप्ररूपणा कयो नही की जाती है ?

सनाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, उमथा ज्ञान भागे कहे जानेवाले
अत्यवदुत्व अनुयोगद्वारसे हो जाता है । इस प्रकार भाषाकाण्डक प्ररूपणा मन्त्रम हुई ।
अत्यवदुत्त अनुयोगद्वारका अधिकार है ॥ १२३ ॥

जो यह चौथा अत्यवदुत्त अनुयोगद्वार है उसको कहते हैं यह अभिप्राय है ।

सुनी मिथ्यादि पर्याप्तक २ अर्थात्क पचेन्द्रिय जीनेके आयुको छोड़कर श
मात कर्मोंकी जघन्य आनाथा सवमे स्लोक है ॥ १२४ ॥

इसका कारण यह है कि उक्त भाषाया स्पष्टात आरती प्रमाण हो करके मन्त्रमुह
मान है ।

आयाधाम्यान और आयाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं ॥ १२५ ॥

चूँकि जगन्म आयाधावी अपक्षा उत्तम भाषाया मन्त्रयातगुणी है, इसीलिए
आयाधास्थान भी उससे मन्त्रयातगुणी ही है ।

शका—कैसे ?

१ आमतौ 'त' इति नोपलभ्यते । २ एतेषां दशानां स्थानानामत्यवदुत्वमुत्पत्तं—तत्र संक्षिप्येन्द्रिय
यु पयसिषु अनातरेषु वा कचकेषु आयुर्वर्षानां सतातां कर्मणां सर्वरुक्ता अप्यायाधा (१) । ता य
अन्तर्मुहूर्तप्रमाण । क प्र (म ल्य टीका) १, ८६ ३ आमतौ 'च' दृग्गणि दा वि सखेज्जगुणाणि ।
इति वाठ । ततो-आयाधानानि कंठकरानानि चार्थल्येयगुणानि । तानि तु परस्परं दृग्गणानि । तथाहि—
अप्यायमायाधादि इत्योक्त्याऽऽयाधाचरममयममिथ्याप्य यावन्त समया प्राप्यते तापमयवापारसोचनानि
भवन्ति । तद्यथा—जघन्याऽऽयाधा एकमवापारस्थानम् । तेषु समयाधिका द्वितीयम् । द्वितीयविका तृतीयम् ।
एव तावद्वाच्य यावदुत्तं दशायाचरममयम् । एतावत्येषु आयाधाकण्डकानि, अप्यायाधात आरम्भ सम
समय प्रति कष्टकस्य प्राप्यमाणत्वात् । एतन्च प्रागेवाचम् (२-३) । क प्र (म टी) १, ८६

सखेज्जगुणाणि चैव । क्व ? समज्जगजहण्णावाहाए उक्कस्सावाहादो सोहिदाए आवाह-
ट्टाणुप्पत्तीदो । क्वमावाहट्टाणेहि आनाहाकदयसलागाण सरिसत्त ? ण एस दोसो,
एगेगावाहट्टाणस्स पलिदोवमस्स अमखेज्जदिभागमेत्तट्टिदिनधट्टाणाणमावाहाकदयसण्णिदाण
उवलमेण ममाणत्ता ।

उक्कस्सिया आवाहा विसैसाहियां ॥ १२६ ॥

कैतियमेत्तेण ? समज्जगनट्टणावाहमेत्तेण ।

णाणापदेसगुणहाणिट्टाणतराणि असखेज्जगुणाणिं ॥ १२७ ॥

कुदो ? उक्कस्सावाहाओ सखेज्जावलियमेत्ताओ होइण मण्णीसु पञ्चत्तएसु संखेज्ज-
रस्साणि अपञ्चत्तएसु अतोमुहुत्त होंति । णाणापदेसगुणहाणिट्टाणतराणि पुण अमखेज्जवस्साणि
होइण पलिदोवमस्स अमखेज्जदिभागमेत्ताणि । तेण उक्कस्समावाहादो णाणापदेसगुणहाणि-
ट्टाणतराणि असखेज्जगुणाणि ति जुज्जे ।

एयपदेसगुणहाणिट्टाणतरमसखेज्जगुण ॥ १२८ ॥

समाधान— क्योंकि, उत्कृष्ट आवाधाओंसे एक समय कम जघन्य आवाधाको घटा
देनेपर आवाधास्थानोंकी उत्पत्ति होती है ।

शंका— आवाधास्थानोंसे आवाधाकाण्डकशलाकायें समान कसे हैं ?

समाधान— यह कोइ दोष नहीं है, क्योंकि एक एक आवाधास्थान सम्बन्धी जो
पल्योपमके अस्तव्यातवर्षे भाग मात्र स्थितिराधस्थान हैं उनकी आवाधाकाण्डक सन्ना है,
अत एव उनके समानता है ही ।

उनमे उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है ॥ १२६ ॥

शंका— वह कितने प्रमाणसे अधिक है ?

समाधान— वह एक समय कम जघन्य आवाधाके प्रमाणसे अधिक है ।

नानाप्रदेशगुणहानिस्थाना तर अस्तव्यातगुणे है ॥ १२७ ॥

कारण कि उत्कृष्ट आवाधायें स्वयं आगली प्रमाण हो करके सही पर्याप्त जीवोंमें
स्वयं वष और अपर्याप्तकोंमें अतर्मुहत्त प्रमाण होती हैं । परन्तु नानाप्रदेशगुणहानि
स्थाना तर अस्तव्यात वष प्रमाण हो करके पल्योपमके अस्तव्यातवर्षे भाग मात्र हैं । अतएव
उत्कृष्ट आवाधाकी अपन्ना नानाप्रदेशगुणहानिस्थाना तरोंका अस्तव्यातगुणा होना
उचित ही है ।

एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर अस्तव्यातगुणा है ॥ १२८ ॥

१ तेस उक्कस्सावाहा विरोधाधिका, चन्नावावाहायास्तत्र प्रवेशात् (४) । क प्र (म टी) १,८६
२ ततो दल्लिक्कियेक्कियेचो द्विगुणहानिस्थानानि अस्तव्येयगुणानि, पल्योपमप्रथमवर्गमूलसंख्येयमागतसमय
प्रमाणत्वात् (५) । क प्र (म टी) १,८६ ३ तत एकस्मिन् द्विगुणहान्योरन्तरे निवेकस्थानान्यस्वरयेय
गुणानि, तेगामस्तव्येयानि पल्योपमवर्गमूलानि परिमाणमिति कृत्वा (६) । क प्र (म टी) १,८६

कुदो ? अमखेत्रपल्लितोऽमपदमग्गमूलपमाणत्तादो ।

एयमावाहाकदयमसखेत्रजगुणं ॥ १२९ ॥

पाणापदेसगुणहाणिमलागाहि अमखेत्रससपमाणाहि कम्मट्टिदीए ओवट्टिदाए एयपदेसगुणहाणिट्ठाणतरमागच्छदि । उक्कस्मावाहाए सखेत्रवस्समेत्ताए अतोमुहुत्तमेत्ताए च सम सगुणकम्मट्टिदीए ओवट्टिदाए जणेगमावाहाकदयपमाण होदि, तेणेगपदेमगुणहाणिट्ठाण तरादो एगमावाहाकदयमसखेत्रजगुणमिदि घेत्तव्व ।

जहण्णओ ट्टिदिवधो अमखेत्रजगुणो ॥ १३० ॥

एगमानावाहाकदय नाम पल्लितोऽमस्स असखेत्रदिभागो, जहण्णट्टिदिवधो पुण अतोकोडाकोट्ठिभेतमागगेऽग्गमाणि । तेण एगमानावाहाकदयादो जहण्णओ ट्टिदिनधो अमखेत्र गुणो जादो ।

ठिदिवधट्टाणाणि संखेत्रजगुणाणि ॥ १३१ ॥

जहण्णट्टिदिवधान्ते उक्कस्सट्टिदिनधो जेण सखेत्रगुणो तेण ट्टिदिवधट्टाणाणि वि

पयोंकि, ये पत्योपमने असख्यान प्रथम धर्ममूलोंके बरानर हैं ।

एक आनाघाकाण्डक असत्यातगुणा है ॥ १२९ ॥

असख्यान वष प्रमाण नानाप्रदेशगुणहानिशलाभाओंका कर्मस्थितिमें भाग देनेपर एकगुणहानस्थाना तर २ व होता है । सख्यान धर्म मात्र व अन्तर्मुहुत्त मात्र उत्पद्य आयाघाका अपनी अपनी उत्पद्य स्थितिमें भाग देनेपर चूकि एक आयाघाकाण्डकका प्रमाण होता है, अत एव एकप्रदेशगुणहानिस्थाना तरकी अपेक्षा एक आयाघाकाण्डक असख्यानगुणा है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

जघन्य स्थितिप्रथम असत्यातगुणा है ॥ १३० ॥

चूकि एक आनाघाकाण्डक पत्योपमने असख्यानधर्म भाग प्रमाण है, परंतु जघन्य स्थितिप्रथम अत जोहानोदि सागरोपमों प्रमाण है अत एव एक आयाघाकाण्डककी अपेक्षा जघ य स्थितिप्रथम असख्यानगुणा हो जाता है ।

स्थितिप्रथमस्थान सत्यातगुणे ॥ १३१ ॥

चूकि जघन्य स्थितिप्रथमी अपेक्षा उत्पद्य स्थितिप्रथम सत्यातगुणा है, अत उससे

१ तेम्योऽपि अर्थेन कइक [पचसंप्रदे पुनरेतस्य स्थानेऽवाघाकइकमित्येतदेवोपलभ्यते] मसंख्येय गुणम् (७) । क प्र (म टी) १,८६ २ तस्माच्च य स्थितिप्रथमोऽसत्येयगुण, अन्त सागरोपम कोटीकोटीप्रमाणत्वत् । सत्पचत्त्रिया हि अणिमनारूढा जघयताऽपि स्थितिप्रथम त सागरोपमकोटीकोटी प्रमाणमव कुर्वन्ति (८) । क प्र (म टी) १,८६ ३ ततोऽपि स्थितिप्रथमस्थानानि सत्येयगुणानि (९) । क प्र (म टी) १,८६

सखेअगुणाणि चेन, समज्जगनहण्हट्टिदिवधेण्णउक्कस्मट्टिदिनधस्सेव ट्टिदिवधंटाणववण्णमादो ।

उक्कस्सओ ट्टिदिवधो विसेसाहिओ ॥ १३२ ॥

केत्तियमेत्तेण ? समज्जगनहण्हट्टिदिवधमेत्तेण ।

पच्चिदियाण सण्णीणमसण्णीण पज्जत्तयाणमाउअस्स सब्ब-
त्थोवा जहण्णिया आवाहाँ ॥ १३३ ॥

कुदो ? आउअ वधिय समयाहियमव्वनहण्हविस्समणकालग्गहादो ।

जहण्णओ ट्टिदिवधो सस्सेज्जगुणो ॥ १३४ ॥

कुदो ? सुद्धाभनग्गहण्हणमाणत्तादो ।

आनाराट्टाणाणि सस्सेज्जगुणाणि ॥ १३५ ॥

स्थितिवधस्थान भी सख्यातगुणे ही होने चाहिये, क्योंकि एक समय कम जघन्य स्थितिवधसे रहित उत्कृष्ट स्थितिवधकी ही स्थितिवधस्थान मझा है ।

उत्कृष्ट स्थितिवध उससे विशेष अधिक है ॥ १३२ ॥

कितने मात्रसे वह अधिक है ? एक समय कम जघन्य स्थितिवधके प्रमाणसे वह अधिक है ।

सनी व असनी पचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके आयुकी जघन्य आवाधा सनसे स्तोरु है ॥ १३३ ॥

क्योंकि, यहा आयुको बाधकर एक समय अधिक सर्वजघन्य विधमणत्ताका ग्रहण है ।

उससे जघन्य स्थितिवध सख्यातगुणा है ॥ १३४ ॥

क्योंकि, वह भुद्रभनग्रहणके शरत्तर है ।

उममे आवाधास्थान सख्यातगुणे हैं ॥ १३५ ॥

१ तंभ उल्लङ्घ्य स्थितिर्विनिपायिका, जघन्यस्थितेरवापायाश्च तत्र प्रवेद्यात् । क प्र (म टी) १,८६
२ तथा सशिवचेन्द्रियस्यसशिवचेन्द्रियेषु या पर्याप्तकेषु प्रत्यकमायुषो जघन्यावाधा सर्वस्ताका (१) ।
ततो जघन्य स्थितिवध सख्यातगुण । स च क्षुद्रभनवरूप (२) । ततोऽवाधारयानानि सग्येयगुणानि ।
जघन्यावाधारहित पूर्वकोटिनिभाग इति कृत्वा (३) । ततोऽप्युत्कृष्टावाधा विरोगायिका, जघन्यावाधाया
अपि तत्र प्रवेद्यात् (४) । ततो द्वियुगदानिस्थानान्यस्यस्येयगुणानि, अन्योवमप्रथमवर्गान्नास्येयमाग-
गतसमयप्रमाणत्वात् (५) । तेष्याऽन्वेषकश्चिन् द्वियुगदान्योरन्तरे निषकरयानान्यस्येयगुणानि (६) ।
तत्र सुचिं प्रागुक्ता वक्तव्या । तत स्थितिवधस्थानान्यस्येयगुणानि (७) । तेष्योऽप्युत्कृष्ट स्थितिवधो
विरोपायिक, जघन्यस्थितेरवापायाश्च तत्र प्रवेद्यात् (८) । क प्र (म टी) १,८६

जहणजो द्विदिवधो णाम अणोमुहुत्तमेतो', आवाहाट्टाणाणि पुण सखेवपेयाण
पुव्वकोट्टिमागमेत्ताणि, तेण जहणद्विदिवधादो आवाहट्टाणाण सखेज्जगुणत्त णव्वदे ।

उक्कस्सिया आवाहा विसेसाहिया ॥ १३६ ॥

केनियमेत्तेण ? समज्जणजहणावाहमेत्तेण ।

णाणापदेसगुणहाणिट्टाणतराणि असखेज्जगुणाणि ॥ १३७ ॥

पुनकोट्टिमाग पेक्खिद्वण पल्लिदोवमस्स असखेज्जदिभागमेत्तणाणागुणहाणिमला
गाणमम्वेज्जगुणत्तुवलभादो ।

एयपदेसगुणहाणिट्टाणतरमसखेज्जगुण ॥ १३८ ॥

कुटो ? पल्लिदोवमपढमग्गमूलस्स असखेज्जदिभागमेत्तणाणापदेसगुणहाणिट्टाणतर
मलागाहि मम्वेज्जपल्लिदोवमवग्गमूलमेत्तएयपदेसगुणहाणीए ओवट्टिदाए असखेज्जस्सुत्तमादो ।

ठिदिवधट्टाणाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ १३९ ॥

कुटो ? एयपदेसगुणहाणिट्टाणतर णाम पल्लिदोवमस्स असखेज्जदिमागो, ठिदिवध
ट्टाणाणि पुण सखेवमागरोवममेत्ताणि पल्लिदोवमस्सामपेज्जदिमागो च, तेण एयपदेसगुण

जघय स्थितिग्घ अतमुहुत्त प्रमाण है, परन्तु आवाहास्थान स्वख्यात प्रमाण
[जघय आवाहासे रहित] पूर्वकोट्टिदिभाग मात्र हैं इसीसे जाना जाता है कि जघय
स्थितिवधकी अपेक्षा आवाहास्थान स्वख्यातगुणे हैं ।

उनसे उत्कृष्ट आवाहा विशेष अधिक है ॥ १३६ ॥

किनने प्रमाणसे घट अधिक है ? एक समय कम जघय आवाहाके प्रमाणसे घट
विशेष अधिक है ।

नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असख्यातगुणे हैं ॥ १३७ ॥

क्योंकि पूर्वकोट्टिदिभागकी अपेक्षा पल्लोपमके असख्यातवें भाग प्रमाण नानागुण
हानिशब्दावाक्य असख्यातगुणत्व पाया जाता है ।

एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असख्यातगुणा है ॥ १३८ ॥

क्योंकि, पल्लोपम साग्घी प्रथम वर्गमूलके असख्यातवें भाग मात्र नानाप्रदेश
गुणहानिस्थानान्तरशब्दावाक्य पल्लोपमके असख्यात वर्गमूलोंके बराबर एकप्रदेश
गुणहानिमें भाग देनपर असख्यात अफ पाये जाते हैं ।

स्थितिग्रन्थान्तर असख्यातगुणे हैं ॥ १३९ ॥

क्योंकि, एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर पल्लोपमके असख्यातवें भाग प्रमाण है, परन्तु
स्थितिवधस्थान स्वख्यात सागरोपम मात्र व पल्लोपमके असख्यातवें भाग हैं इस कारण

१ अ आ कप्रतिपु 'मत्ता' इति पाठ । २ प्रतिपु 'असखेज्ज' इति पाठ । ३ अ आपत्तो
'पल्लोवमस्त सखे० मागो' इति पाठ ।

हाणिहाणतरादो द्विदिवद्वाणाणि असखेज्जगुणाणि त्ति^१ धेतव्य ।

उक्कस्सओ द्विदिवधो विसेसाहिओ ॥ १४० ॥

केत्तियभेत्तेण ? समज्जणजहण्णद्विदिवधभेत्तेण ।

पर्चिंदियाण सण्णीणमसण्णीणमपज्जत्तयाण चउरिदियाण
तीइदियाण वीइदियाण एइदियवादर-सुहुमपज्जत्तापज्जत्तयाण^२माउ-
अस्स सव्वत्थोवा जहण्णिया आवाहा^३ ॥ १४१ ॥

आउअ धधिय समयादियमववहण्णविस्समणकालग्गहणादो ।

जहण्णओ द्विदिवधो सखेज्जगुणो ॥ १४२ ॥

कुदो ? धधसुद्धाभवग्गहणादो ।

आवाहट्ठाणाणि सखेज्जगुणाणि ॥ १४३ ॥

सग मगउक्कम्माउआण तिभागस्स समज्जणजहण्णावाहाए परिहीणस्स गहणादो ।

एकप्रदेशगुणहानिस्थाना-तरकी अपेक्षा स्थितिवन्धस्थान अस्तव्यातगुणे हँ, ऐसा प्रहण
करना चाहिये ।

उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है ॥ १४० ॥

यह कितने मात्रसे अधिक है ? एक समय कम जघन्य स्थितिवन्धसे प्रमाणसे यह
विशेष अधिक है ।

सजी व असजी पचेन्द्रिय अपर्याप्तकों तथा चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय और
यादर एउ सूक्ष्म एकेन्द्रिय, इन पर्याप्त-अप्याप्तोंके आयुकी जघन्य आवाधा सनसे
स्तोक है ॥ १४१ ॥

फ्योंकि, यहा आयुको बाधकर एक समयसे अधिक सर्वजघन्य विधमणकालका
प्रहण है ।

जघन्य स्थितिवन्ध सख्यातगुणा है ॥ १४२ ॥

फ्योंकि, यहा धधशुद्धभवका प्रहण है ।

आनाधास्थान सख्यातगुणे हँ ॥ १४३ ॥

फ्योंकि एक समय कम जघन्य आवाधासे हीन-अपनी अपनी उत्कृष्ट आयुओंके
विभागका यहा प्रहण है ।

१ तापनी 'असखेज्जगुणाणि' इति पाठ । २ प्रतिपु 'सुहुमपज्जत्तयाण-' इति पाठ । ३ तथा
पचेन्द्रियेषु स खेषसखिष्यपवाप्तपु चतुरिन्द्रिय त्रीन्द्रिय द्वीन्द्रिय वादरसूक्ष्मैकन्द्रियेषु च पयातापर्याप्तपु प्रयेक
मायुर सर्वस्तोका अ-याराधा (१) । ततो जघन्य स्थितिवन्ध संरपयगुण, स च शुद्धभवरूप
(२) । ततोऽनाधास्थानानि संख्येयगुणानि (३) । ततोऽप्युक्कटावघा विशेषाधिक (४) । ततोऽपि
स्थितिवन्धस्थानानि संख्येयगुणानि, जघन्यस्थितिवन्धपूर्वकोऽप्रमाणत्वात् (५) । तत उत्कृष्ट स्थिति
वन्धो विशेषाधिक, जघन्यस्थितिवन्धवाधायाश्च तत्र प्रवेद्यात् (६) । क. प्र (म टी) १, ८६

उक्कस्सिया आवाहा विसेसाहिया ॥ १४४ ॥

केतियमेतेण ? समजण नहण्णावाहमेतेण ।

ट्टिदिवधट्टाणाणि सखेज्जगुणाणि ॥ १४५ ॥

कुदो ? समजण नहण्णट्टिदिग्घेणपु नकोडिग्गहणादो ।

उक्कस्सओ ट्टिदिवधो विसेसाहियो ॥ १४६ ॥

केतियमेतेण ? समजण नहण्णाट्टिदिग्घमेतेण ।

पच्चिदियाणमसण्णीण चउरिंदियाणं तीहदियाणं वीट्टदियाण
पज्जत्त अपज्जत्तयाण सत्तण कम्माणं आउववज्जाणमानाहट्टाणाणि
आवाहाकदयाणि च दो वि तुल्लाणि थोवाणि ॥ १४७ ॥

कुदो ? आवलियाए सखेज्जदिमागप्पमाणत्तादो ।

उक्कट्ट आवाहा विशेष अधिक है ॥ १४४ ॥

यह कितने मान विशेषसे अधिक है ? यह एक समय कम जघन्य आवाधा मात्रसे अधिक है ।

स्थितियस्थान सत्यातगुणे हैं ॥ १४५ ॥

क्योंकि, एक समय कम जघन्य स्थितियघसे हीन पूर्वकोटिका ग्रहण है ।

उक्कट्ट स्थितिय विशेष अधिक है ॥ १४६ ॥

यह कितने मात्रसे अधिक है ? यह एक समय कम जघन्य स्थितियघके प्रमाणसे विशेष अधिक है ।

अमत्री पचेन्द्रिय, चनुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और द्वीन्द्रिय पर्याप्तक-अपर्याप्तक जीविके आयुको छोड़कर शेष सात कर्मोंके आनाधास्थान और आवाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य व स्तोके हैं ॥ १४७ ॥

क्योंकि, वे आबलीके सत्यातघे भाग प्रमाण है ।

१ तथाऽऽश्लेषेन्द्रिय चतुरिन्द्रिय त्रीन्द्रिय द्वीन्द्रिय-सूक्ष्मबादेरैकेन्द्रियेषु पर्याप्तापर्याप्तेष्वायुर्वर्तनो
स्तानां कर्मणां प्रत्येकमवासास्थानानि कडकानि च स्तोत्रानि परस्पर च तुल्यानि, आवलिकाऽऽसरेव
मागत्तसमयप्रमाणत्वात् (१-२) । ततो जघन्यावापऽऽसरेवयगुणा, अन्तर्मुहूर्तप्रमाणत्वात् (३) ।
ततोऽप्युक्कट्टावाधा विशेषाधिक, अवाधावाधाया अपि तत्र प्रवेशात् (४) । ततो द्विगुणहीनानि (इति)
स्थानान्यसरेवयगुणानि (५) । तत्र एकस्मिन् द्विगुणहान्योरतरे नियेकरथानाचसखेययगुणानि (६) ।
ततोऽयं कडकमसरेवयगुणम् (७) । ततोऽपि स्थितियघस्थानान्यसखेययगुणानि, पयोपमा (म)
सखेयमागत्तसमयप्रमाणत्वात् (८) । ततोऽपि जघन्यस्थितियघोऽसरेवयगुणः (९) । ततोऽप्युक्कट्ट
स्थितियघा विशेषाधिक, पयोपमासखेयभागैनास्पधिकत्वादिति (१०) । क प्र (म दी) १, ८६

जहणिया आनाहा सखेज्जगुणा ॥ १४८ ॥

कुदो ? सखेज्जगुणियेत्तजहणियावाहाए आवलियाए सखेज्जदिभागमेत्तआनाहट्टाणेहि भागे हिदाए सखेज्जम्बोवलमादो ।

उक्कस्सिया आवाहा विसेसाहिया ॥ १४९ ॥

केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए सखेज्जदिभागमेत्तेण ।

णाणापदेसगुणहाणिट्टाणतराणि असंखेज्जगुणाणि ॥ १५० ॥

कुदो ? सखेज्जगुणियेत्तउक्कम्मानाहाए पल्लिदोवमस्स असखेज्जदिभागमेत्तणाणापदेसगुणहाणिट्टाणतरेसु अज्जिदिरेसु असखेज्जम्बोवलमादो ।

एयपदेसगुणहाणिट्टाणतरमसखेज्जगुण ॥ १५१ ॥

कुदो ? पल्लिदोवमच्छेदणाण सखेज्जदिभागमेत्तणाणापदेसगुणहाणिमलागाहि असखेज्जपल्लिदोवमपदमवगमूलमेत्तएयपदेसगुणहाणिट्टाणतरे भागे हिदे असखेज्जम्बोवलमादो ।

एयमावाधाकदयमसखेज्जगुण ॥ १५२ ॥

को गुणगारो ? पल्लिदोवमस्स असखेज्जदिभागो उक्कम्मावाहाए औज्जिद्विद्विणाणागुणहाणिसलागाओ वा ।

जन्य आनाधा सत्यातगुणी है ॥ १४८ ॥

क्योंकि, सख्यात आवलियों प्रमाण जघन्य आवाधामें आवलीके सख्यातयें भाग मात्र आवाधास्थानोंका भाग देनेपर सख्यात अक प्राप्त होते हैं ।

उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है ॥ १४९ ॥

कितने मात्रसे यह विशेष अधिक है । यह आवलीके सख्यातयें भाग मात्रसे विशेष अधिक है ।

नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असत्यातगुणे हैं ॥ १५० ॥

क्योंकि, सख्यात आवली प्रमाण उत्कृष्ट आवाधाका पर्योपमने असख्यातयें भाग मात्र नानाप्रदेशगुणहानिस्थानातरोंमें भाग देनेपर असख्यात अक लब्ध होते हैं ।

एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असत्यातगुणा है ॥ १५१ ॥

क्योंकि, पर्योपमके अर्धच्छेदोंके सख्यातयें भाग प्रमाण नानाप्रदेशगुणहानिशाला काओंका पर्योपमके असख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण एक प्रदेशगुणहानिस्थानातरमें भाग देनेपर असख्यात अक लब्ध होते हैं ।

एक आनाधाकाण्डक असत्यातगुणा है ॥ १५२ ॥

शुणकार क्या है ? शुणकार पर्योपमका असख्यातया भाग अथवा उत्कृष्ट आवाधासे अपवर्तित नानागुणहानिशालाकार्यें हैं ।

ठिदिवधट्टाणाणि असखेज्जगुणाणि ॥ १५३ ॥

को गुणगारो ? सखेज्जगुणसगुणस्सावाहा ।

जहण्णओ ठिदिवधो सखेज्जगुणो ॥ १५४ ॥

सुगम ।

उक्कस्सओ ठिदिवधो विसेसाहिओ ॥ १५५ ॥

केत्तियमेत्तेण ? पल्लिदोवमस्स सखेज्जदिभागमेत्तेण ।

एहदियवादर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्तयाण सत्तण्ह कम्माण
माउववज्जाणमावाहट्टाणाणि आवाहाकदयाणि च दो वि तुल्लाणि
तोवाणि ॥ १५६ ॥

कुदो ? आवलियाए असखेज्जदिभागपमाणतादो ।

जहण्णिया आवाहा असखेज्जगुणा ॥ १५७ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असखेज्जदिभागो । कुदो ? आवलियाए असखेज्जदि-
भागमेत्तआवाहट्टाणेहि सखेज्जावलियमेत्तजहण्णावाहाए ओवट्टिदाए आवलियाए असखेज्जदि-
भागुवलमादो ।

स्थितिः प्रस्थान असत्यातगुणे हँ ॥ १५३ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार सत्यात अर्थसे अपवर्तित अपनी उत्पृष्ट आवावा है ।

जघन्य स्थितिः प्र सत्यातगुणा है ॥ १५४ ॥

विशेष अधिक है ॥ १५५ ॥

अधिक है ? यह पत्योपमके सत्यताथें भाग मात्रसे

पर्याप्त अपर्याप्त जीवोंके आयुको छोड़कर शेष मात्र

दोनों ही तुल्य व स्तोक हैं ॥ १५६ ॥

भाग प्रमाण है ।

है ॥ १५७ ॥

असत्यातना भाग है क्योंकि, आवलीके
सत्यता आवाली मात्र जघन्य आवाचार्थें भाग
जाता है ।

उक्कस्सिया आवाहा विसैसाहिया ॥ १५८ ॥

केतियमेत्तो विसेमो ? आवलियाए असखेज्जदिभागमेत्तो ।

णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणतराणि असखेज्जगुणाणि ॥ १५९ ॥

को गुणगारो ? पल्लिदोवमस्स असखेज्जदिभागो उक्कस्सावाहावट्ठिदणाणागुणहाणि-
सलागाओ वा ।

एयपदेसगुणहाणिट्ठाणतरमसखेज्जगुण ॥ १६० ॥

सुगममेद ।

एयमावाहाकदयमसखेज्जगुण ॥ १६१ ॥

एद पि सुगम ।

ठिदिवधट्ठाणाणि असखेज्जगुणाणि ॥ १६२ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असखेज्जदिभागो ।

जहण्णओ ट्ठिदिवधो असखेज्जगुणो ॥ १६३ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असखेज्जदिभागो ।

उक्कस्सओ ट्ठिदिवधो विसैसाहियो ॥ १६४ ॥

केतियमेत्तेण ? पल्लिदोवमस्स अमरोज्जदिभागमेत्तेण । सपहि एदेण अप्पावहुअसुत्तेण

उत्कृष्ट आनाधा विशेष अधिक है ॥ १५८ ॥

विशेष कितना है ? यह आवलीके असख्यातवें भाग प्रमाण है ।

नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर अमख्यातगुणे हैं ॥ १५९ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पत्थोपमका असख्यातवा भाग अथवा उत्कृष्ट आवाभासे
अपथातित नानागुणहानिशलाकार्ये हैं ।

एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर अमख्यातगुणा है ॥ १६० ॥

यह सुगम है ।

एक आवाधाकाण्डक अमख्यातगुणा है ॥ १६१ ॥

यह सुगम भी सुगम है ।

स्थितिनास्थान अमख्यातगुणे हैं ॥ १६२ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार आवलीका असख्यातवा भाग है ।

जघन्य स्थितिना अमख्यातगुणा है ॥ १६३ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार आवलीका असख्यातवा भाग है ।

उत्कृष्ट स्थितिना विशेष अधिक है ॥ १६४ ॥

यह कितने मात्रसे विशेष अधिक है ? यह पत्थोपमके असख्यातवें भाग मात्रसे अधिक है ।

सूचिदाण सत्याण परचाणअप्पावहुआण पस्वण कस्मामो । सत्याणे पयद-पंचिदियाण
 पञ्चत्तयाण मणीण सवत्थोवा आउअस्म जहणिया आनाहा । जहणओ द्विदिवधो
 सखेज्जगुणो । णामा-नोदाण जहणिया आनाहा सखेज्जगुणा । चटुण्ण कम्माण जहणिया
 आनाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्म जहणिया आनाहा सखेज्जगुणा । णामा-नोदाण-
 मानाहाट्टाणाणि आनाहारूदयाणि च दो वि तुल्लाणि सखेज्जगुणाणि । उक्खस्मिया आनाहा
 विसेसाहिया । चटुण्ण कम्माणमावाहाट्टाणा आनाहाकदयाणि च दो वि तुल्लाणि विसेसाहि-
 याणि । उक्खस्मिया आनाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स आनाहाट्टाणाणि आनाहा-
 कदयाणि च दो वि तुल्लाणि अमखेज्जगुणाणि । उक्खस्मिया आनाहा विसेसाहिया ।
 आउअस्म आनाहाट्टाणाणि सखेज्जगुणाणि । उक्खस्मिया आनाहा विसेसाहिया । आउअस्स
 णाणापदेसगुणहानिट्टाणतराणि अमखेज्जगुणाणि । णामा-नोदाण णाणापदेसगुणहानि
 ट्टाणतराणि सखेज्जगुणाणि । चटुण्ण कम्माण णाणापदेसगुणहानिट्टाणतराणि विसेसाहियाणि ।
 मोहणीयस्स णाणापदेसगुणहानिट्टाणतराणि सखेज्जगुणाणि । अट्टण्ण कम्माण णगपदेसगुण-
 हानिट्टाणतरमखेज्जगुण । सत्तण्ण कम्माणमेगमानाहाकदयमसखेज्जगुण । आउअस्स
 द्विदिनधट्टाणाणि अमखेज्जगुणाणि । उक्खस्मओ द्विदिवधो विसेसाहियो । णामा-नोदाण
 जहणओ द्विदिनधो मखेज्जगुणो । चटुण्ण कम्माण जहणओ द्विदिवधो विसेसाहियो ।

अथ इस अल्पवह्वस्यसे सूचित स्वस्थान और परस्थान अल्पवह्वस्यकी
 प्ररूपणा करते हैं । इनमें स्वस्थान अल्पवह्वस्य प्रकृत है—सङ्घी पचेन्द्रिय पयात्तक जीवोंके
 आयुकी जघन्य आवाधा सरसे स्तोक है । जघन्य स्थितिबन्ध सख्यातगुणा है । नाम व
 गोत्रकी जघन्य आवाधा सरस्यातगुणी है । चार कर्मोंकी जघन्य आवाधा विशेष अधिक
 है । मोहनीयकी जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । नाम व गोत्रके आवाधास्थान व
 आवाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य व सख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है ।
 चार कर्मोंके आवाधास्थान और आवाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य व विशेष अधिक हैं ।
 उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । मोहनीयके आवाधास्थान व आवाधाकाण्डक दोनों ही
 तुल्य असख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । आयुके आवाधास्थान
 सख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । आयु कर्मके नानाप्रदेशगुणहानि
 स्थानान्तर असख्यातगुणे हैं । नाम गोत्रके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर सख्यातगुणे हैं ।
 चार कर्मोंके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं । मोहनीयके नानाप्रदेश
 गुणहानिस्थानान्तर सख्यातगुणे हैं । आठ कर्मोंका परप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असख्यात
 गुणा है । सान कर्मोंका पर आवाधाकाण्डक असख्यातगुणा है । आयुके स्थितिबन्धस्थान
 असख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । नाम-गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध
 सख्यातगुणा है । चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । मोहनीयका जघन्य

१. प्रतिपाठोऽयम् । अ आ कान्ताप्रतिपु 'सखेज्जगुणाणि' इति पाठः ।

मोहणीयस्म जहण्णओ द्विदिवधो असरोजगुणो । णामा गोद्राण द्विदिवधट्टाणविसेसो सखेजगुणो । उक्कस्मओ द्विदिवधो विसेमाहिओ । चदुण्ण कम्माण द्विदिवधट्टाणविसेसो विसेसाहिओ । उक्कस्सओ द्विदिवधो विमेमाहिओ । मोहणीयस्म द्विदिवधट्टाणविसेसो सखेजगुणो । उक्कस्मओ द्विदिवधो विमेमाहिओ ।

पचिंदियाण सण्णीणमपव्रत्तयाणमाउअस्स सन्वत्थोरा जहण्णिया आनाहा । जहण्णओ द्विदिवधो सरोजगुणो । आवाहाट्टाणाणि सखेजगुणाणि । उक्कस्मिया आवाहा विसेसाहिया । णामा-गोद्राण जहण्णिया आनाहा सखेजगुणा । चदुण्ण कम्माण जहण्णिया आवाहा विसेमाहिया । मोहणीयस्म जयण्णिया आवाहा सखेजगुणा । णामा-गोद्राण-मावाहाट्टाणाणि आवाहाकदयाणि च दो वि तुल्लाणि मखेजगुणाणि । उक्कस्सिया आवाहा विसेसाहिया । चदुण्ण कम्माणमाराहाट्टाणाणि आवाहाकदयाणि च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आनाहा विमेमाहिया । मोहणीयस्म आवाहाट्टाणाणि आवाहाकदयाणि च दो वि तुल्लाणि सखेजगुणाणि । उक्कस्सिया आनाहा विसेसाहिया । आउअस्स द्विदिनधट्टाणाणि सखेजगुणाणि । उक्कस्सओ द्विदिनधो विसेमाहिओ । णामा-गोद्राण णाणापदेसगुणहाणिट्टाणतराणि असरोजगुणाणि । को गुणमारो ? पल्लिदो-वमस्स वग्गमूल्सस्स असखेजग्गिमागो । चदुण्ण कम्माण णाणापदेसगुणहाणिट्टाणतराणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्म णाणापदेसगुणहाणिट्टाणतराणि सखेजगुणाणि । सत्तण्ण

स्थितिवध असख्यातगुणा है । नाम गोत्रका स्थितिवधस्थानविशेष सख्यातगुणा है । उत्तर स्थितिवध विशेष अधिक है । चार कर्मोंका स्थितिवधस्थानविशेष विशेष अधिक है । उत्तर स्थितिवध विशेष अधिक है । मोहनीयका स्थितिवधस्थानविशेष सख्यातगुणा है । उत्तर स्थितिवध विशेष अधिक है ।

सही पचेन्द्रिय अपर्याप्तक जीवोंके आयुकी जघन्य आवाधा भरसे स्तोक है । जघन्य स्थितिवध सख्यातगुणा है । आवाधास्थान सख्यातगुणे है । उत्तर आवाधा विशेष अधिक है । नाम गोत्रकी जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । चार कर्मोंकी जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । नाम गोत्रके आवाधास्थान और आवाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य सख्यातगुणे हैं । उत्तर आवाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंके आवाधास्थान और आवाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य सख्यातगुणे हैं । उत्तर आवाधा विशेष अधिक है । मोहनीयके आवाधास्थान और आवाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य सख्यातगुणे हैं । उत्तर आवाधा विशेष अधिक है । आयुके स्थितिवधस्थान सख्यातगुणे हैं । उत्तर स्थितिवध विशेष अधिक है । गोत्रके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असख्यातगुणे हैं । गुणहार के हैं । उत्तर पत्सोपमके वर्गमूलका असख्यातया भाग है । चार कर्मोंके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक है । मोहनीयके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक है ।

कम्माणमेगपदेमगुणहाणिद्वान्तरमनखेज्जगुण । को गुणगारो ? पत्तिद्रोयमस्म असखेज्जदिभागो
 अमखेज्जाणि पत्तिद्रोयमसगमृलाणि । मत्तण्ण कम्माणमेगमावाहासदयमनखेज्जगुण । को
 गुणगारो ? अमखेज्जाणलियाओ गुणगारो । आवलियाए अमग्गदिभागो ति पिक्खेवा-
 इरियो मणदि । किंतु सो एत्थ ण उतो, बहुवेदि आइरिणदि अमग्गत्तादो' । पामा-
 गोदाण जहण्णओ द्विदिनओ अमखेज्जगुणो । को गुणगारो ? अतोमुहुत्त । चटुण्ण कम्माण
 जहण्णओ द्विदिनओ विसेसाहिओ । मोहणीयस्म जहण्णओ द्विदिनओ सखेज्जगुणो ।
 पामा-गोदाण द्विदिनग्गणाणि मखेज्जगुणाणि । उक्खस्सओ द्विदिनओ विमेसाहिओ ।
 चटुण्ण कम्माण द्विदिनग्गणाणि विमेसाहियाणि । उक्खस्सओ द्विदिनओ विसेसाहिओ ।
 मोहणीयस्म द्विदिनग्गणाणि सखेज्जगुणाणि । उक्खस्सओ द्विदिनओ विसेसाहिओ ।

पंचिदियाण असण्णीण पज्जत्तयाण पामा-गोदाणमानाहट्टाणाणि आवाहाकदयाणि
 च दो वि तुल्लाणि थोराणि । चटुण्ण कम्माण आनाहाट्टाणाणि आवाहाकदयाणि च दो वि
 तुल्लाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्म आनाहाट्टाणाणि आवाहाकदयाणि च दो वि तुल्लाणि
 मखेज्जगुणाणि । आउअस्म जहण्णिया आवाहा सखेज्जगुणा । जहण्णओ द्विदिनओ सगग्ग-
 गुणो । पामा गोदाण जहण्णिया आनाहा सखेज्जगुणा । उक्खस्मिया आवाहा विसेसाहिया ।
 चटुण्ण कम्माण जहण्णिया आनाहा विसेसाहिया । उक्खस्मिया आवाहा विसेसाहिया ।

कर्मोका एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असख्यातगुणा हे । गुणकार क्या हे ? गुणकार
 पद्योपमका असख्यातया भाग हे जो पद्योपमके असख्यात पर्याप्त प्रमाण हे । सात
 कर्मोका एक आवाधाकाण्डक असख्यातगुणा हे । गुणकार क्या हे ? गुणकार असख्यात
 आबलिया हे । गुणकार आवलीका असख्यातया भाग हे, परसा निक्षपाचार्य कहते हैं ।
 किंतु उसे यहाँ नहीं कहा गया है, क्योंकि, यह बहुतसे आशयोंको इष्ट नहीं है । नाम
 गोत्रका जघन्य स्थितिग्रन्थ असख्यातगुणा हे । गुणकार क्या हे ? गुणकार अन्तर्गृह्यते हे ।
 चार कर्मोका जघन्य स्थितिग्रन्थ विशेष अधिक है । मोहनीयके जघन्य स्थितिग्रन्थ
 सरयातगुणा हे । नाम गोत्रके स्थितिग्रन्थ स्थान सरयातगुणे हे । उत्तर स्थितिग्रन्थ विशेष
 अधिक है । चार कर्मोके स्थितिग्रन्थस्थान विशेष अधिक है । उत्तर स्थितिग्रन्थ
 विशेष अधिक है । मोहनीयके स्थितिग्रन्थस्थान सरयातगुणे हे । उत्तर स्थितिग्रन्थ
 विशेष अधिक है ।

अस्मी पंचो द्वय पर्याप्तक जीघोक् नाम य गोत्रके आवाधास्थान पर्य आवाधा
 काण्डक दोनों ही तुल्य य स्तोक हैं । चार कर्मोके आवाधास्थान और आवाधाकाण्डक दोनों
 ही तुल्य विशेष अधिक है । मोहनीयके आवाधास्थान और आवाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य
 सरयातगुणे हैं । आयुकी जघन्य आवाधा सरयातगुणी हे । जघन्य स्थितिग्रन्थ सरयात
 गुणा हे । नाम य गोत्रके जघन्य आवाधा सरयातगुणी हे । उत्तर आवाधा विशेष
 अधिक है । चार कर्मोकी जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । उत्तर आवाधा विशेष

१ अस्मी 'अमग्गत्तादो', आस्मी 'अमग्गत्तादो', कास्मी 'अमग्गत्तादो' इति पाठ ।

मोहणीयस्स जहणिया आवाहा मखेज्जगुणा । उक्कम्मिया आनाहा विसेसाहिया । आउअस्स आवाहाट्टाणाणि सखेज्जगुणाणि । उक्कस्मिया आनाहा विसेसाहिया । आउअस्स णाणापदेसगुणहाणिट्टाणतराणि अमखेज्जगुणाणि । को गुणगारो ? पत्तिदोममग्गमलम्म असखेज्जदिभागो । णामा-गोदाण णाणापदेसगुणहाणिट्टाणतराणि अमखेज्जगुणाणि । को गुणगारो ? आवलियाए अमखेज्जदिभागो । चटुण्ण कम्माण णाणापदेसगुणहाणिट्टाणतराणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स णाणापदेसगुणहाणिट्टाणतराणि सखेज्जगुणाणि । अट्टण्ण कम्माणमेगपदेसगुणहाणिट्टाणतराणि असखेज्जगुणाणि । को गुणगारो ? असखेज्जपत्तिदोमम-पढमवग्गमूलाणि । सत्तप्पह कम्माणमेयमावाहाकदयममखेज्जगुण । को गुणगारो ? णाणागुण-हाणिसलागाणमसखेज्जदिभागो । आउअस्स ट्टिदिवग्गट्टाणाणि अमखेज्जगुणाणि । को गुणगारो ? अतोमुहुत्त । उक्कस्सओ ट्टिदिवधो विसेसाहिओ । णामा-गोदाण ट्टिदिवग्ग-ट्टाणाणि अमखेज्जगुणाणि । को गुणगारो ? आवलियाए असखेज्जदिभागो । चटुण्ण कम्माण ट्टिदिवग्गट्टाणाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स ट्टिदिवग्गट्टाणाणि सखेज्जगुणाणि । णामा-गोदाण जहण्णओ ट्टिदिवधो सखेज्जगुणो । उक्कस्सओ ट्टिदिवधो विसेसाहिओ । चटुण्ण कम्माण जहण्णओ ट्टिदिवधो विसेसाहिओ । उक्कस्सओ ट्टिदिनधो विसेसाहिओ । मोहणीयस्स जहण्णओ ट्टिदिवधो सखेज्जगुणो । उक्कस्सओ ट्टिदिवधो विसेसाहिओ ।

अमण्णिपचिंदियअपजत्तयाण णामा-गोदाण आवाहट्टाणाणि आवाहाकदयाणि च

अधिक है । मोहनीयके जघय आवाधा सख्यातगुणी है । उक्कट्ट आवाधा विशेष अधिक है । आयुके आवाधास्थान सख्यातगुणे है । उक्कट्ट आवाधा विशेष अधिक है । आयुके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर अस्सयातगुणे है । गुणकार क्या है ? गुणकार पत्तोपमने धर्ममूलका असख्यातवा भाग है । नाम गोत्रके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असख्यातगुणे है । गुणकार क्या है ? गुणकार आचलीका असख्यातवा भाग है । चार कर्मोंके नाना प्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं । मोहनीयके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर सख्यातगुणे है । आठ कर्मोंके एक प्रदेशगुणहानिस्थाना तर असख्यातगुणे है । गुणकार क्या है ? गुणकार पत्तोपमने अस्सयात प्रथम धर्ममूल हैं । सात कर्मोंका आवाधाकाण्डक असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? गुणकार नानागुणहानिशलाकाओका असख्यातवा भाग है । आयुके स्थितिवधस्थान असख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? गुणकार अन्तर्मुहूर्त है । उक्कट्ट स्थितिवध विशेष अधिक है । नाम गोत्रके स्थितिवधस्थान असख्यातगुणे है । गुणकार क्या है ? गुणकार आचलीका असख्यातवा भाग है । चार कर्मोंके स्थितिवधस्थान विशेष अधिक हैं । मोहनीयके स्थितिवधस्थान सख्यातगुणे है । नाम गोत्रका जघम्य स्थितिवध सख्यातगुणा है । उक्कट्ट स्थितिवध विशेष अधिक है चार कर्मोंका जघय स्थितिवध विशेष अधिक है । उक्कट्ट स्थितिवध विशेष अधिक है । मोहनीयका जघय स्थितिवध सख्यातगुणा है । उक्कट्ट स्थितिवध विशेष अधिक है ।

१. अस्सी पचे त्रय अपयात्तकोंके नाम गोत्रके आवाधास्थान और आवाधाकाण्डक

दो वि तुलाणि योवाणि । चदुण्ण कम्माण आवाहाट्टाणाणि आवाहाकदयाणि च दो वि तुलाणि विसेमाहियाणि । मोहणीयस्म आवाहाट्टाणाणि आवाहाकदयाणि च दो वि तुलाणि सखेवगुणाणि । आउअस्म जहणिया आवाहा सखेवगुणा । जहण्यो द्विदिवधो मखेवगुणो । आवाहाट्टाणाणि सखेवगुणाणि । उक्कस्सिया आवाहा विसेसाहिया । णामा-गोदाण जहणिया आवाहा सखेवगुणा । उक्कस्सिया आवाहा विसेसाहिया । चदुण्ण कम्माण जहणिया आवाहा विसेसाहिया । उक्कस्मिया आवाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्म जहणिया आवाहा सखेवगुणा । उक्कस्सिया आवाहा विसेसाहिया । आउअस्म द्विदिवधट्टाणाणि सखेवगुणाणि । उक्कस्मयो द्विदिवधो विसेसाहियो । णामा-गोदाण णाणापदेसगुहाणिट्टाणतराणि अमखेवगुणाणि । चदुण्ण कम्माण णाणापदेस-गुणाणिट्टाणतराणि विसेमाहियाणि । मोहणीयस्म णाणापदेसगुणाणिट्टाणतराणि सखेवगुणाणि । सत्तण्ण कम्माणमेगपदेसगुणाणिट्टाणतरमसखेवगुण । सत्तण्ण कम्माण-मगमावाहाकदयमसखेवगुण । उअरि मेसपदाणमसण्णिपचिदियपञ्जतमगो ।

वेइन्थि-तेइदिय-चउरिदियपञ्जतयाण णामा गोदाणमावाहाट्टाणाणि आवाहाकदयाणि च दो वि तुलाणि थोवाणि । चदुण्ण कम्माणमावाहाट्टाणाणि आवाहाकदयाणि च दो वि तुलाणि विसेमाहियाणि । मोहणीयस्म आवाहाट्टाणाणि आवाहाकदयाणि च दो वि तुलाणि सखेवगुणाणि । आउअस्म जहणिया आवाहा सखेवगुणा । तस्सेव जहण्यो

दोनों ही तुल्य व स्तोक हैं । चार कर्मोंके आवाधास्थान और आवाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य विशेष अधिक हैं । मोहनीयके आवाधास्थान और आवाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य सख्यातगुणे हैं । आयुकी जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । जघन्य स्थितिबन्ध सख्यात गुणा है । आवाधास्थान सख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । नाम व गोत्रकी जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । उनकी उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंकी जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । आयुके स्थितिबन्ध स्थान सख्यातगुण हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । नाम गोत्रके नानाप्रदेश-गुणहानिस्थानांतर असख्यातगुणे हैं । चार कर्मोंके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं । मोहनीयके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर सख्यातगुणे हैं । सात कर्मोंका एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असख्यातगुणा है । सात कर्मोंका एक आवाधाकाण्डक असख्यातगुणा है । आगे रोप पदोंकी प्ररूपणा अस्वी पचेन्द्रिय पर्याप्तकोंके समान है ।

धीन्द्रिय धीन्द्रिय और चतुर्न्द्रिय पर्याप्त जीवने नाम गोत्रके आवाधास्थान और आवाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य व स्तोक हैं । चार कर्मोंके आवाधास्थान और आवाधा काण्डक दोनों ही तुल्य विशेष अधिक हैं । मोहनीयके आवाधास्थान और आवाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य सख्यातगुणे हैं । आयुकी जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । उसीका जघन्य

द्विदिवरो सखेज्जगुणो । णामा गोत्ताण जहणिया आवाहा सखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आवाहा विसेमाहिया । चटुण्ण कम्माण जहणिया आवाहा विसेसाहिया । उक्कस्सिया आवाहा विमेसाहिया । मोहणीयस्स जहणिया आवाहा सखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आवाहा विमेसाहिया । आउअस्स आवाहाट्टाणाणि सखेज्जगुणाणि । उक्कस्सिया आवाहा विसेमाहिया । तस्सेन आउअस्स द्विदिवग्गट्टाणाणि सखेज्जगुणाणि । उक्कस्सओ द्विदिवरो विमेसाहियो । णामा-गोत्ताण णाणापदेसगुहाणिट्टाणतराणि असखेज्जगुणाणि । सेसपदाणममण्णिपचिदियअपज्जत्तभगो ।

एदेसिं चैव अपज्जत्ताण असण्णिपचिदियअपज्जत्तभगो । वादरेडदियपज्जत्तएसु णामा-गोदाणमावाहट्टाणाणि आवाहाकदयाणि च दो वि तुल्लाणि थोवाणि । चटुण्ण कम्माण-मावाहट्टाणाणि आवाहाकदयाणि च दो वि तुल्लाणि विमेसाहियाणि । मोहणीयस्स आवाहा-ट्टाणाणि आवाहारुय्याणि च दो वि तुल्लाणि सखेज्जगुणाणि । आउअस्स जहणिया आवाहा सखेज्जगुणा । जहण्यओ द्विदिनो सखेज्जगुणो । णामा-गोदाण जहणिया आवाहा सखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आवाहा विमेसाहिया । चटुण्ण कम्माण जहणिया आवाहा विसेमाहिया । उक्कस्सिया आवाहा विमेसाहिया । मोहणीयस्स जहणिया आवाहा सखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आवाहा विमेसाहिया । आउअस्स आवाहाट्टाणाणि सखेज्जगुणाणि । उक्कस्सिया आवाहा विमेसाहिया । तस्सेन आउअस्स द्विदिवग्गट्टाणाणि

स्थितिवन्ध सख्यातगुणा हे । नाम घ गोत्रकी जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । उत्तृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंकी जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । उत्तृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । उत्तृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । आयुके आवाधारस्थान सख्यातगुणे हैं । उत्तृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । उसीके आयुके स्थितिवन्धन्य सख्यातगुणे हैं । उत्तृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । नाम गोत्रके नानाप्रदेशगुणद्वानिस्थानान्तर असख्यातगुणे हैं । शेष पदोंकी प्ररूपणा असक्षी पचेन्द्रिय अपयातकोंने समान हे ।

इहीं हीन्द्रिय त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तक जीवाकी प्ररूपणा असक्षी पचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंने समान है । वादर पचेन्द्रिय पर्याप्तन जीवोंमें नाम गोत्रके आवाधा स्थान और आवाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य व स्तोत्र हैं । चार कर्मोंके आवाधास्थान और आवाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य विशेष अधिक है । मोहनीयके आवाधास्थान और आवाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य सख्यातगुणे हैं । आयुकी जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । जघन्य स्थितिवन्ध सख्यातगुणा है । नाम गोत्रकी जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । उत्तृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंकी जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । उत्तृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आवाधा सख्यातगुणी है । उत्तृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । आयुके आवाधारस्थान सख्यातगुणे हैं । उत्तृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । उसीके आयुके स्थितिवन्धन्य सख्यातगुणे हैं । उत्तृष्ट स्थितिवन्ध

विमेषाहियाणि । मोहणीयस्स आवाहाट्टाणाणि आवाहाकदयाणि च दो वि तुष्ठाणि
सखेज्जगुणाणि । चोदसण्ह जीवसमासाणमाउअस्स जहणिया आनाहा सखेज्जगुणा ।
जहणओ द्विदिवो सखेज्जगुणो । सत्तणमपजत्ताण जीवसमासाणमाउअस्स आवाहाट्टाणाणि
सखेज्जगुणाणि । उक्खस्सिया आवाहा विसेसाहिया । सुहुमेइदियपजत्तयस्स आउअस्स
आवाहाट्टाणाणि सखेज्जगुणाणि । उक्खस्सिया आनाहा विसेसाहिया । धादरेइदियपजत्तयस्स
णामा गोदाण जहणिया आवाहा सखेज्जगुणा । सुहुमेइदियपजत्तयस्य णामा-गोदाण
जहणिया आनाहा विसेसाहिया । धादरेइदियपजत्तयस्स णामा-गोदाण जहणिया
आनाहा विसेसाहिया । सुहुमेइदियपजत्तयस्स णामा-गोदाण जहणिया आवाहा
विसेसाहिया । तस्सेव णामा-गोदाणमुक्खस्सिया आवाहा विसेसाहिया । धादरेइदियपज-
त्तयस्स उक्खस्सिया आवाहा विसेसाहिया । सुहुमेइदियपजत्तयस्स णामा-गोदाणमुक्खस्सिया
आनाहा विसेसाहिया । धादरेइदियपजत्तयस्स णामा-गोदाणमुक्खस्सिया आनाहा विसे-
साहिया । धादरेइदियपजत्तयस्स चदुण्ण कम्माण जहणिया आनाहा विसेसाहिया । सुहुमे-
इदियपजत्तयस्स चदुण्ण कम्माण जहणिया आवाहा विसेसाहिया । धादरेइदियपजत्तयस्स
चदुण्ण कम्माण जहणिया आवाहा विसेसाहिया । सुहुमेइदियपजत्तयस्स चदुण्ण कम्माण
जहणिया आवाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपजत्तयस्स चदुण्ण कम्माण उक्खस्सिया
आनाहा विसेसाहिया । धादरेइदियपजत्तयस्स चदुण्ण कम्माण उक्खस्सिया आनाहा
विसेसाहिया । एव सेसपदाणि विसेसाहियाणि ति वत्त्वाणि । धादरेइदियपजत्तयस्स
विशेष अधिक है । मोहनीयके आवाधास्थान और आवाधाकाण्टक दोनों ही तुल्य सख्यत
गुणे हैं । चाद्व जीवसमासोंके आयुकी जघय आवाधा सख्यतगुणी है । जघन्य स्थिति
बन्ध सख्यतगुणा है । सत्त अपयात जीवसमासोंके आयुके आवाधास्थान सख्यतगुणे है ।
उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । सूक्ष्म पर्येन्द्रिय पर्याप्तके आयु कर्मके आवाधास्थान
सख्यतगुणे हैं । उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । धादर पर्येन्द्रिय पर्याप्तके नाम गोत्रकी
जघय आवाधा सख्यतगुणा है । सूक्ष्म पर्येन्द्रिय पर्याप्तके नाम गोत्रकी जघय आवाधा
विशेष अधिक है । धादर पर्येन्द्रिय अपर्याप्तके नाम गोत्रकी जघय आवाधा विशेष अधिक
है । सूक्ष्म पर्येन्द्रिय अपर्याप्तके नाम-गोत्रकी जघय, आवाधा विशेष अधिक है । उसीके
नाम गोत्रकी उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । धादर पर्येन्द्रिय अपर्याप्तके [नाम-गोत्रकी]
उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । सूक्ष्म पर्येन्द्रिय पर्याप्तके नाम गोत्रकी उत्कृष्ट आवाधा
विशेष अधिक है । धादर पर्येन्द्रिय पर्याप्तके नाम-गोत्रकी उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक
है । धादर पर्येन्द्रिय पर्याप्तके चार कर्मोंकी जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । सूक्ष्म
पर्येन्द्रिय पर्याप्तके चार कर्मोंकी जघय आवाधा विशेष अधिक है । धादर पर्येन्द्रिय
अपर्याप्तके चार कर्मोंकी जघय आवाधा विशेष अधिक है । सूक्ष्म पर्येन्द्रिय अपर्याप्तके
चार कर्मोंकी जघय आवाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट
आवाधा विशेष अधिक है । धादर पर्येन्द्रिय पर्याप्तके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट आवाधा विशेष
अधिक है । इसी प्रकार उसके शप पद विशेष अधिक हैं, ऐसा कहना चाहिये । धादर

मोहणीयस्स जहणिया आवाहा सपेज्जगुणा । सेमाणि सत्त पदाणि विमेसाहियाणि ।
 वेइदियपज्जत्तयाणं णामा-गोदाण जहणिया आवाहा सपेज्जगुणा । वेइदियअपज्जत्तयाण
 णामा-गोदाण जहणिया आवाहा विसेसाहिया । तेसिं चेन उक्कस्सिया आवाहा
 विमेसाहिया । वेइदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाण उक्कस्सिया आनाहा विमेसाहिया ।
 तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्ण कम्माण जहणिया आनाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्त-
 यस्स चदुण्ण कम्माण जहणिया आवाहा विमेसाहिया । तस्सेव चदुण्ण कम्माण उक्क-
 स्सिया आवाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्ण कम्माण उक्कस्सिया आवाहा
 विसेसाहिया । तेइदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाण जहणिया आवाहा विसेसाहिया । तस्सेव
 अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाण जहणिया आवाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स
 णामा-गोदाणमुक्कस्सिया आनाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स [णामा-गोदाण]
 उक्कस्सिया आवाहा विसेसाहिया । तस्सेन पज्जत्तयस्स चदुण्ण कम्माण जहणिया आनाहा
 विमेसाहिया । तस्सेन अपज्जत्तयस्स चदुण्ण कम्माण जहणिया आवाहा विसेसाहिया ।
 तेइदियअपज्जत्तयस्स चदुण्ण कम्माणमुक्कस्सिया आवाहा विसेसाहिया । तस्सेन पज्जत्तयस्स
 चदुण्ण कम्माणमुक्कस्सिया आनाहा विसेसाहिया । वेइदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स
 जहणिया आवाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहणिया आवाहा
 विसेसाहिया । तस्सेन मोहणीयस्स उक्कस्सिया आवाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स

एकेन्द्रिय पर्याप्तके मोहनीयकी जघन्य आवाधा स्वख्यातगुणी है । उसके दोष सात पद
 विशेष अधिक हैं । द्वीन्द्रिय पर्याप्तके नाम-गोत्रकी जघन्य आवाधा सप्त-आतगुणी है ।
 द्वीन्द्रिय अपर्याप्तके नाम-गोत्रकी जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । उनकी ही उत्पृष्ट
 आवाधा विशेष अधिक है । द्वीन्द्रिय पर्याप्तके नाम-गोत्रकी उत्पृष्ट आवाधा विशेष अधिक
 है । उसीके पर्याप्तके चार कर्मोंकी जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तके
 चार कर्मोंकी जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । उसीके चार कर्मोंकी उत्पृष्ट आवाधा विशेष
 अधिक है । उसीके पर्याप्तके चार कर्मोंकी उत्पृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । त्रीन्द्रिय
 पर्याप्तके नाम-गोत्रको जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तके नाम-गोत्रकी
 जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तके नाम-गोत्रकी उत्पृष्ट आवाधा
 विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तके [नाम-गोत्रकी] उत्पृष्ट आवाधा विशेष अधिक है ।
 उसीके पर्याप्तके चार कर्मोंकी जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तके
 चार कर्मोंकी जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । त्रीन्द्रिय अपर्याप्तके चार कर्मोंकी उत्पृष्ट
 आवाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तके चार कर्मोंकी उत्पृष्ट आवाधा विशेष
 अधिक है । द्वीन्द्रिय पर्याप्तके मोहनीयकी जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । उसीके
 अपर्याप्तके मोहनीयकी जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । उसीके मोहनीयकी उत्पृष्ट
 आवाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तके मोहनीयकी उत्पृष्ट आवाधा विशेष अधिक

१ ताप्रती 'तस्सेव [अ] पञ्च०' इति पाठः ।

जहणिया आनाहा विसेसाहिया । तस्मेव पजत्तयस्स चटुण्ण कम्माणमुक्कम्मिसया आघाहा विसेसाहिया । अमण्णिपच्चिंदियपजत्तयस्य मोहणीयस्य जहणिया आघाहा मखेज्जगुणा । तस्मेव अपजत्तयस्स मोहणीयस्स जहणिया आघाहा विसेसाहिया । तस्मेव मोहणीयस्स उक्कस्सिया आनाहा विसेसाहिया । तस्मेव अपजत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सिया आनाहा विसेसाहिया । सण्णिपच्चिंदियपजत्तयस्स णामा गोदाण जहणिया आनाहा सखेज्जगुणा । तस्सेव चटुण्ण कम्माण जहणिया आनाहा विसेसाहिया । तस्मेव मोहणीयस्स जहणिया आनाहा सखेज्जगुणा । तस्मेव अपजत्तयस्स णामा-गोदाण जहणिया आघाहा सखेज्जगुणा । तस्सेव चटुण्ण कम्माण जहणिया आनाहा विसेसाहिया । तस्मेव मोहणीयस्स जहणिया आघाहा सखेज्जगुणा । तस्सेन णामा गोदाण आघाहाट्टाणाणि आनाहाकदयाणि च दो वि तुल्लाणि सखेज्जगुणाणि । उक्कस्सिया आघाहा विसेसाहिया । चटुण्ण कम्माण आनाहाट्टाणाणि आघाहाकदयाणि च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आघाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स आनाहाट्टाणाणि आघाहाकदयाणि च दो वि तुल्लाणि मखेज्जगुणाणि । उक्कस्सिया आनाहा विसेसाहिया । तेज्जियपजत्तयस्स आउअस्स आघाहाट्टाणाणि सखेज्जगुणाणि । उक्कस्सिया आघाहा विसेसाहिया । चउरिंदियपजत्तयस्स आउअस्स आघाहाट्टाणाणि सखेज्जगुणाणि । उक्कस्सिया आनाहा विसेसाहिया । वेइदियपजत्तयस्स [आउअस्स] आघाहाट्टाणाणि [सखेज्जगुणाणि] । उक्कस्सिया आनाहा विसेसाहिया । सण्णिपच्चिंदियपजत्ताण णामा-गोदाण आघाहाट्टाणाणि आघाहाकदयाणि च दो वि तुल्लाणि

चार कर्मोकी जघय आघाधा विशेष अधिक है । उमीके पर्याप्तके चार कर्मोकी उत्तर आघाधा विशेष अधिक है । अमली पचेन्द्रिय पर्याप्तके मोहनीयकी जघय आघाधा सख्यातगुणा है । उसीके अपर्याप्तके मोहनीयकी जघय आघाधा विशेष अधिक है । उमीके मोहनीयकी उत्तर आघाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तके मोहनीयकी उत्तर आघाधा विशेष अधिक है । सही पचेन्द्रिय पर्याप्तके नाम-गोत्रकी जन्य आघाधा सख्यातगुणी है । उमीके चार कर्मोकी जघन्य आघाधा विशेष अधिक है । उमाने मोहनीयकी जघय आघाधा सख्यातगुणी है । उमीके अपर्याप्तके नाम-गोत्रकी जघय आघाधा सख्यातगुणी है । उसीके चार कर्मोकी जघय आघाधा विशेष अधिक है । उसीके मोहनीयकी जघन्य आघाधा सख्यातगुणी है । उसीके नाम-गोत्रके आघाधास्थान और आघाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य सख्यातगुणे हैं । उत्तर आघाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोके आघाधास्थान और आघाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य विशेष अधिक है । उत्तर आघाधा विशेष अधिक है । मोहनीयके आघाधास्थान और आघाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य सख्यातगुणे हैं । उत्तर आघाधा विशेष अधिक है । त्रीन्द्रिय पर्याप्तके आयुके आघाधास्थान सख्यातगुणे हैं । उत्तर आघाधा विशेष अधिक है । चतुरिन्द्रिय पर्याप्तके आयुके आघाधास्थान सख्यातगुणे हैं । उत्तर आघाधा विशेष अधिक है । त्रीन्द्रिय पर्याप्तके [आयुके] आघाधास्थान [सख्यातगुणे हैं] । उत्तर आघाधा विशेष अधिक है । सही पचेन्द्रिय पर्याप्तके नाम-गोत्रके आघाधास्थान और आघाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य

सखेजगुणाणि । उन्कस्मिया आवाहा विसेसाहिया । चटुण्ण कम्माणमावाहट्टाणाणि
 आनाहाकदयाणि च दो वि तुल्लाणि विमेसाहियाणि । उन्कस्मिया आनाहा विसेसाहिया ।
 मोहणीयस्स आनाहाट्टाणाणि आनाहाकदयाणि च दो वि तुल्लाणि मखेजगुणाणि ।
 उन्कस्मिया आवाहा विसेसाहिया । चादरएइदियपज्जत्ताणमाउअस्स आवाहाट्टाणाणि
 विसेसाहियाणि । उन्कस्मिया आवाहा विसेसाहिया । पच्चिदियमण्णिअमणीण
 पज्जत्ताणमाउअस्स आनाहाट्टाणाणि सखेजगुणाणि । उन्कस्मिया आवाहा विसेसाहिया ।
 चारसण्ण जीउममासाणमाउअस्स द्विदिनट्टाणाणि सखेजगुणाणि । उन्कस्सओ द्विदिवधो
 विसेसाहियो । अमण्णिपच्चिदियपज्जत्ताणमाउअस्स पाणापदेसगुणहाणिट्टाणतराणि असखेज-
 गुणाणि । सुहुमेइदियअपज्जत्ताण गामा-गोदाण पाणापदेसगुणहाणिट्टाणतराणि अमखेजगुणाणि ।
 वादरेइन्टियअपज्जत्ताण गामा गोदाण पाणापदेसगुणहाणिट्टाणतराणि विसेसाहियाणि ।
 सुहुमेइदियपज्जत्ताण गामा-गोदाण पाणापदेसगुणहाणिट्टाणतराणि विसेसाहियाणि । वादरे
 इदियपज्जत्ताण गामा गोदाण पाणापदेसगुणहाणिट्टाणतराणि विसेसाहियाणि । सुहुमेइदिय-
 अपज्जत्तयस्स चटुण्ण कम्माण पाणापदेसगुणहाणिट्टाणतराणि विसेसाहियाणि । वादरएइदिय
 अपज्जत्तयस्स चटुण्ण कम्माण पाणापदेसगुणहाणिट्टाणतराणि विसेसाहियाणि । सुहुमेइदिय-
 पज्जत्तयस्स चटुण्ण कम्माण पाणापदेसगुणहाणिट्टाणतराणि विसेसाहियाणि । वादरेइदिय-
 पज्जत्तयस्स चटुण्ण कम्माण पाणापदेसगुणहाणिट्टाणतराणि विसेसाहियाणि । सुहुमेइदिय-

सत्यातगुणे है । उरुष्ट आवाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंके आवाधास्थान और
 आवाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य विशेष अधिक हैं । उरुष्ट आवाधा विशेष अधिक है ।
 मोहनीयके आवाधास्थान और आनाहाकाण्डक दोनों ही तुल्य सखेजगुणे हैं । उरुष्ट
 आवाधा विशेष अधिक है । वादर एरेद्रिय पर्याप्तक जीवोंके आयुके आवाधास्थान
 विशेष अधिक है । उरुष्ट आवाधा विशेष अधिक है । पचेन्द्रिय सखी व असखी
 पर्याप्तक जीवोंके आयुके आवाधास्थान सरयातगुणे हैं । उरुष्ट आवाधा विशेष अधिक
 है । वादर जीउसमासांके आयुके स्थितियघस्थान सखयातगुणे हैं । उरुष्ट स्थितियघ
 विशेष अधिक है । असखी पचेन्द्रिय पर्याप्तक जावोंके आयुके नानाप्रदेशगुणहानि
 स्थानांतर असखयातगुणे हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तक जावोंके नाम गोत्रके नाना
 प्रदेशगुणहानिस्थानांतर असखयातगुणे हैं । वादर एरेद्रिय अपर्याप्तक जीवोंके
 नाम गोत्रके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानांतर विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक
 जावोंके नाम गोत्रके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानांतर विशेष अधिक है । वादर एकेन्द्रिय
 पर्याप्तक जीवोंके नाम गोत्रके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानांतर विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म
 एरेद्रिय अपर्याप्तकके चार कर्मोंके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानांतर विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म
 एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके चार कर्मोंके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानांतर विशेष अधिक हैं । वादर
 एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके चार कर्मोंके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानांतर विशेष अधिक हैं ।
 सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानांतर विशेष अधिक हैं ।
 वादर एरेद्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानांतर विशेष अधिक हैं ।

अपञ्जतयस्स मोहणीयस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणतराणि सखेअगुणाणि । चादरेइदियअपञ्जत-
 यस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणतराणि विसेसाहियाणि । सुहुमेइदियपञ्जतयस्स मोहणीयस्स
 णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणतराणि विसेसाहियाणि । बादरएइदियपञ्जतयस्स मोहणीयस्स णाणा-
 पदेसगुणहाणिट्ठाणतराणि विसेसाहियाणि । वेइदियअपञ्जतयस्स णामा-गोदाण णाणापदेस-
 गुणहाणिट्ठाणतराणि सखेअगुणाणि । तस्सेअपञ्जतयस्स णामा-गोदाण णाणापदेसगुणहाणिट्ठाण-
 तराणि विसेसाहियाणि । तस्सेअपञ्जतयस्स चटुण्ण कम्माण णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणतराणि
 विसेसाहियाणि । तस्सेअपञ्जतयस्स चटुण्ण कम्माण णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणतराणि विसेसा-
 हियाणि । तेइदियअपञ्जतयस्स णामा-गोदाण णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणतराणि विसेसाहियाणि ।
 तस्सेव पञ्जतयस्स णामा-गोदाण णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणतराणि विसेसाहियाणि । तस्सेव
 अपञ्जतयस्स चटुण्ण कम्माण णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणतराणि विसेसाहियाणि । तस्सेव
 पञ्जतयस्स चटुण्ण कम्माण णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणतराणि विसेसाहियाणि । वेइदियअपञ्जत-
 यस्स मोहणीयस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणतराणि विसेसाहियाणि । तस्सेव पञ्जतयस्स मोहणी-
 यस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणतराणि विसेसाहियाणि । चउरिंदियअपञ्जतयस्स णामा गोदाण
 णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणतराणि विसेसाहियाणि । तस्सेअपञ्जतयस्स णामा गोदाण णाणापदेस-
 गुणहाणिट्ठाणतराणि विसेसाहियाणि । सण्णिपचिंदियपञ्जताणमाउअस्स णाणापदेसगुणहा-

सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके मोहनीयके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानांतर सख्यातगुणे हैं ।
 बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानांतर विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म
 एकेन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानांतर विशेष अधिक हैं । बादर
 एकेन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानांतर विशेष अधिक हैं । द्वीन्द्रिय
 अपर्याप्तकके नामगोत्रके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानांतर सख्यातगुणे हैं । उन्मीके पर्याप्तकके
 नाम गोत्रके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानांतर विशेष अधिक हैं । उसीके अपर्याप्तकके चार
 कर्मोंके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानांतर विशेष अधिक हैं । उसके पर्याप्तकके चार कर्मोंके
 नानाप्रदेशगुणहानिस्थानांतर विशेष अधिक हैं । द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम गोत्रके
 नानाप्रदेशगुणहानिस्थानांतर विशेष अधिक हैं । उसीके पर्याप्तकके नाम गोत्रके
 नानाप्रदेशगुणहानिस्थानांतर विशेष अधिक हैं । उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंके
 नानाप्रदेशगुणहानिस्थानांतर विशेष अधिक हैं । उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंके नाना
 प्रदेशगुणहानिस्थानांतर विशेष अधिक हैं । द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकके मोहनीयके नाना
 प्रदेशगुणहानिस्थानांतर विशेष अधिक हैं । उसीके पर्याप्तकके मोहनीयके नानाप्रदेश
 गुणहानिस्थानांतर विशेष अधिक हैं । चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम गोत्रके नानाप्रदेश
 गुणहानिस्थानांतर विशेष अधिक हैं । उसीके पर्याप्तकके नाम गोत्रके नानाप्रदेशगुणहानि
 स्थानांतर विशेष अधिक हैं । सखी पचेन्द्रिय पर्याप्तक जायोंके आयुके नानाप्रदेशगुण

१ अ आ-काप्रतिपु पञ्ज०, ताम्रौ '[अ] पञ्ज०' इति पाठ । २ ममतिपाठोऽयम् ।
 'अ आ-को ताम्रैरिपु' 'वेइदियपञ्ज०' इति पाठ । ३ ताम्रौ 'अपञ्ज०' इति पाठः ।

गुणहाणिट्टाणतराणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्य णाणापदेसगुणहाणिट्टाणतराणि मखेज्जगुणाणि । अट्टण्ण कम्माण एगपदेसगुणहाणिट्टाणतरमसखेज्जगुण । सत्तण्ण कम्माण-मेगमावाहाकट्ठममखेज्जगुण । अमण्णिपचिदियपज्जत्तयस्स आउअस्म ट्टिदिवग्गुणाणि अमखेज्जगुणाणि । उट्ठस्सओ ट्टिदिनवो विसेसाहियो । सुहुमेइदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाण ट्टिदिवग्गुणाणि अमखेज्जगुणाणि । चटुण्ण कम्माण ट्टिदिवग्गुणाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स ट्टिदिवग्गुणाणि मखेज्जगुणाणि । वादरएइदियअपज्जत्तयस्स णामा गोदाण ट्टिदिवग्गुणाणि सखेज्जगुणाणि । चटुण्ण कम्माण ट्टिदिवग्गुणाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स ट्टिदिवग्गुणाणि सखेज्जगुणाणि । सुहुमेइदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाण ट्टिदिनव-ट्टाणाणि सखेज्जगुणाणि । चटुण्ण कम्माण ट्टिदिवग्गुणाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स ट्टिदिवग्गुणाणि सखेज्जगुणाणि । वादरेइदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाण ट्टिदिनवट्टाणाणि सखेज्जगुणाणि । चटुण्ण कम्माण ट्टिदिवग्गुणाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स ट्टिदिवग्गुणाणि सखेज्जगुणाणि । वेइदियअपज्जत्तयस्स णामा गोदाण ट्टिदिवग्गुणाणि अमखेज्ज-गुणाणि । चटुण्ण कम्माण ट्टिदिवग्गुणाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स ट्टिदिवग्गुणाणि सखेज्जगुणाणि । तम्मेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाण ट्टिदिवग्गुणाणि सखेज्जगुणाणि । चटुण्ण कम्माण ट्टिदिनवट्टाणाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स ट्टिदिवग्गुणाणि सखेज्जगुणाणि । तेइदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाण ट्टिदिवग्गुणाणि सखेज्जगुणाणि ।

मोहनीयके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानांतर सत्प्यातगुणे हैं । आठ कर्मोंका एकप्रदेश गुणहानिस्थानांतर असुखयातगुणा है । सात कर्मोंका एक आवाघाकाण्टक असुखयात गुणा है । असञ्चो पचेन्द्रिय पर्याप्तके आयुके स्थितिवग्गुणधस्थान असरयातगुणे हैं । उट्टए स्थितिवग्गुण विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके नाम गोत्रके स्थितिवग्गुणधस्थान असुखयातगुणे है । चार कर्मोंके स्थितिवग्गुणधस्थान विशेष अधिक हैं । मोहनीयके स्थिति वग्गुणधस्थान सत्प्यातगुणे है । वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके नाम गोत्रके स्थितिवग्गुणधस्थान सखयातगुण है । चार कर्मोंके स्थितिवग्गुणधस्थान विशेष अधिक हैं । मोहनीयके स्थिति वग्गुणधस्थान असुखयातगुणे है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तके नाम गोत्रके स्थितिवग्गुणधस्थान सखयातगुणे हैं । चार कर्मोंके स्थितिवग्गुणधस्थान विशेष अधिक हैं । मोहनीयके स्थिति वग्गुणधस्थान सत्प्यातगुणे हैं । वादर एकेन्द्रिय पर्याप्तके नाम गोत्रके स्थितिवग्गुणधस्थान सखयातगुणे हैं । चार कर्मोंके स्थितिवग्गुणधस्थान विशेष अधिक हैं । मोहनीयके स्थिति वग्गुणधस्थान असुखयातगुणे हैं । त्रीन्द्रिय अपर्याप्तके नाम गोत्रके स्थितिवग्गुणधस्थान असुखयातगुणे हैं । चार कर्मोंके स्थितिवग्गुणधस्थान विशेष अधिक हैं । मोहनीयके स्थितिवग्गुणधस्थान सखयातगुणे हैं । उट्टीके पर्याप्तके नाम गोत्रके स्थितिवग्गुणधस्थान सखयातगुणे हैं । चार कर्मोंके स्थितिवग्गुणधस्थान विशेष अधिक हैं । मोहनीयके स्थितिवग्गुणधस्थान सखयातगुणे हैं । त्रीन्द्रिय अपर्याप्तके नाम गोत्रके स्थितिवग्गुणधस्थान सखयातगुणे हैं । चार कर्मोंके

विमेमाहियो । चटुण कम्माण द्विदिपट्टाणाणि विसेसाहियाणि । उक्कम्मओ द्विदिपधो विसेसाहियो । मोहणीयस्म द्विदिपट्टाणाणि सखेज्जुणाणि । उक्कत्सवो द्विदिपधो विमेमाहियो ।

सपहि सुततोणिलीणस्म एदम्म अप्पानहुगस्म विमपदाण मनणप्पिया पनियाँ उच्यदे । त जहा—तिण्णिमासमहस्समानाह काऊण समऊण-विममऊणादिकमेण पत्तिदोवपस्स अमखेअदिभाग जाव ओसारिय धवन्ति ताव णिसंगट्टिदी च उग्गा होदि । कुदो ? एत्तेसु द्विदिपधविसेमेसु उक्कसानाह मोत्तूण अण्णानाहाणमभावादो । पुणो सपुण्णआनाहाकदएण्णउन्नकम्सट्टिदि नयमाणस्म आवाहा समऊणतिण्णिमासमहस्समेत्ता होदि, पुव्विल्लावाहाचरिमसमए पढमणिमेयो पट्टिणे त्ति तस्स णिसेयट्टिदीए अतम्भावादो । समऊणानाहाकदएण्णउन्नकम्सट्टिदिपधे सपुण्णानाहाकदएण्णउन्नकम्सट्टिदिपधे च णिसेय-ट्टिदीयो समाणाओ, पुव्विल्लानावादो सपहिआनाधाए समऊणत्तुवत्तादो । पुणो समऊण-तिण्णिमासमहस्साणि आवाहमावेण धुन कणिय ममऊण निसमऊणादिकमेण जाव पत्तिदोमम्म असखेज्जट्टिभागमेत्तट्टिदिपधट्टाणाणि ओमरिय धवदि ताव णिमेयट्टिदी चेव अधिक है । चार कर्मोंक स्थितिवधस्थान त्रिणोप अधिक हैं । उट्टए स्थितिवध विशेष अधिक है । मोहनीयके स्थितिवधस्थान सख्यातगुणे हैं । उट्टए स्थितिवध विशेष अधिक है ।

अथ सूत्रके अ तर्गत इस अणवहुत्वके त्रिणम पदोंकी भजनात्मक पत्रिकाको कहते हैं । यथा, तीन हजार धप मात्र आवाधा करके एक समय कम, दो समय कम, इत्यादि प्रमसे पल्लोपमके असख्यातने भाग तक नीचे हटकर स्थितिको जब तक बाधता है तब तक निपेकस्थिति ही कम होनी जाती है, क्योंकि, इन स्थितिवधोंमें उट्टए आवाधाके अतिरिक्त अन्य आवाधाबानी सम्भारना नहीं है । पश्चात् सम्पूर्ण आवाधाकाण्डकसे रहित उट्टए स्थितिको बाधनेवाले जीवके आवाधाका प्रमाण एक समय कम तीन हजार धर्प होता है क्योंकि पूर्वोक्त आवाधाके अतिम समयमें चूकि प्रथम निपेक आचुका है अत वह निपेक स्थितिमें गर्भित है । एक समय कम आवाधाकाण्डकसे हीन उट्टए स्थितिवधमें तथा सम्पूर्ण आवाधाकाण्डकसे हीन उट्टए स्थितिवधमें निपेक स्थितियाँ समान हैं, क्योंकि, पहिलेकी आवाधासे इस समयकी आवाधा एक समय तक पायी जाती है । फिर एक समय कम तीन हजार धर्पको आवाधा रूपसे स्थिर करके एक समय कम, दो समय कम, इत्यादि प्रमसे जब तक पल्लोपमके असख्यातने भाग मात्र स्थितिवधस्थान नीचे हटकर स्थितिको बाधता है तब तक केवल निपेक स्थिति ही

१ कारिका स्वल्पवृत्तिस्तु सूत्र सूत्राक स्मृतम् । टीका निरन्तर पारया पञ्जिका पदमञ्जिका ॥ प्रमेयर० (वैशेषप्रियपुत्रस्यत्यादिक्लेशकरय टिप्पण्याम्) पित्र्यतेऽर्थोऽस्यामिति 'पित्रि भाषाय' अस्मान्चोदादिवादिधिकरणे गुणेश्वर इह " इत्यप्रत्यये, पृषदशवादिकास्ताकारे स्वार्थे कनि च, पिञ्जयतीनि विमह तु क्वचि वा पञ्जिका—निर्देशपदस्य व्याख्या । अमरकोष ३, ५, ७ (रसाशया टीका) २ मतिपु 'पुण' इति पाठः ।

ऊणा होदि, समऊणनरुस्मानाधाण तय धुनभावेण अनट्टाणदसणादो । पुणो विद्रिय
 आधाधाकयमेत्तमोसरिय ण्णे उरुम्मनाहा टुममऊणा होदि । कुदो ? समउत्तरट्टिदि-
 वधणिमेगट्टिदीहि सह समऊणट्टिदिन ण्णिमेगट्टिदीण समाणत्तुनलभादो । पुणो एतो ममऊण-
 दुसमऊणान्णिकमेण जान पत्तिनोमस्स असन्नेत्तन्निभागेण्णट्टिदिं वधदि ताव
 दुसमऊणतिणिण्णससहस्समेत्ता आवाहा होदि । सपुण्णेषु आवाहाकएसु परिहीणेषु
 तिसमऊणतिणिण्णससहस्समेत्तानाहा होदि । एव समऊणावाहाकदयमेत्ताओ ट्टिदीयो
 जाव परिहायति ताव एणका चेव आनाहा होदूण पुणो सपुण्णगायाहाकदयमेत्तट्टिदीसु
 परिहीणासुं पुय्जिलावाहादो सपहियावाहा समऊणा होदि ति सन्वय वत्तव । एदण
 कमेण ओदारोदव्व जान जहण्णावाहा जहण्णणिसेयट्टिणी च चिट्ठदि ति ।

जहण्णट्टिदिनभादो समउत्तरादिकमेण जाव ममऊणावाहाकयमेत्तट्टिदीयो वड्डिदूण
 वधदि ताव आनाहा जहण्णिया चेव होदि । पुणो सपुण्णमेगमानाहाकदयमेत्त वड्डिदूण
 वममाणस्स आनाहा जहण्णावाहादो समउत्तरा होदि । आवाहावड्डिसमण णिमेगट्टिदी
 ण वट्टिदि, अरुक्कमेण दोण्ण ट्टिदीण वड्डिप्पमगादो । दोसु समएसु जुगव वड्डिदेसुं को
 उत्तरोत्तर कम होनी जाती है क्योंकि उनमें एक समय कम उट्टए आवाधाका धुप
 स्वरूपसे अस्थान देखा जाता है । पश्चात् द्वितीय आवाधाकाण्डके बराबर स्थितिबन्ध
 स्थान नीचे हटकर जो स्थितिबन्ध होता है, उसमें उट्टए आवाधा दो समय कम होती
 है, क्योंकि, एक समय अधिक स्थितिबन्धोंकी निपेक्ष स्थितियोंके साथ एक समय कम
 स्थितिबन्धकी निपेक्षस्थितियोंकी समानता पायी जाती है । इसके आगे एक समय कम,
 दो समय कम, इत्यादि क्रमसे जब तक पदशोपमके अस्थयातर्धे भागसे हीन स्थितिबो
 वाधता है तब तब आवाधा दो समय कम तीन हजार वर्ष प्रमाण होती है । सम्पूर्ण
 आवाधाकाण्डके हीन होनेपर आवाधा तीन समय कम तीन हजार वर्ष मात्र होती
 है । इस प्रकार जब तक एक समय कम आवाधाकाण्डके बराबर स्थितिया हीन होती
 है तब तक एक ही आवाधा होती है । पश्चात् सम्पूर्ण एक आवाधाकाण्डके बराबर
 स्थितियाके हीन हो जानपर पहिलेकी आवाधासे इस समयकी आवाधा एक समय कम
 होता है, ऐसा सर्वत्र कथन करना चाहिये । इस क्रमसे जब तक जघन्य आवाधा और
 जघन्य निपेक्षस्वित प्रात नहीं होती तब तब नीचे उतारना चाहिये ।

जघन्य स्थितिबन्धसे एक समय अधिक, दो समय अधिक, इत्यादि क्रमसे जब तक
 एक समय कम आवाधाकाण्डके बराबर स्थितिया वृद्धिगत होकर बन्ध होता है तब
 तक आवाधा जघन्य ही होती है । पुन सम्पूर्ण एक आवाधाकाण्डके बराबर स्थितियाके
 वृद्धिगत होनेपर स्थितिको बाँधनवाले जीवके जघन्य आवाधाकी अपेक्षा एक समय
 अधिक आवाधा होती है । आवाधाकी वृद्धिके समयमें निपेक्षस्थितिकी वृद्धि नहीं होती,
 क्योंकि, वसा होनेपर एक साथ दोनों स्थितियोंकी वृद्धिका प्रसंग आता है ।

शुद्धा—दो समयोंकी एक साथ वृद्धि होनेपर क्या दोष है ?

१ प्रतिपु 'परिहीणसु' इति पाठ । २ मन्त्रिणालोऽयम् । अ वा का-सामप्रतिपु 'वड्डिदे' इति पाठ ।

दोसो ? ण, जहण्णट्टिदिमुक्कम्मदिग्धिं सोहिय रूचे पन्निखत्ते ट्टिदिघट्टाणाणमणुप्पत्ति-
पमगादो । ण च एव, ट्टिदिघट्टाणमुत्तेण मह विरोहादो । एण क्के अन्तोमुहुत्तूणत्तिण्णि-
वासमहस्समेत्ताणि आनाहाट्टाणाणि लद्धाणि^१ होति । जत्तियाणि आवाहाट्टाणाणि
तत्तियाणि चेव आवाहाकदयाणि लभति । णवरि अतिममावाहकदयमेगम्बुण^२ ।
कुत्तो ? जहण्णट्टिदिजहण्णानाहाए चरिममयस्स सन्नणिमेगट्टिदीसु परिहीणासु
जहण्णट्टिदिग्गहादो ।

मोहणीयस्स अतोमुहुत्तूणसत्तनासमहस्समेत्ताणि आवाहाट्टाणाणि आवाहाकदयाणि
च हवति । एत्थ आनाहाकदएसु एगम्बयअणयणस्स कारण पुच्च व वत्तव । एवमृण्णिदे
आवाहाट्टाणाणि आवाहाकदयाणि च तुल्लाणि त्ति अप्पायहुगमुत्तेण विरोहो किण्ण
होदि त्ति उत्ते, ण, पीचारट्टाणेषु उप्पण्णआनाहाकदयमत्तागाण तेहि समाणत्त
पडि विरोहामादो ।

णामा-गोदाणमनोमुहुत्तूणनेनासमहस्समेत्ताणि आवाहाट्टाणाणि आनाहाकदयाणि
हवति ।

समाधान—नहीं, क्योंकि, ऐसा होनेसे उत्पन्न स्थितिमेंसे जघन्य स्थितिको कम
करके एक अक मिलानेपर स्थितिबन्धस्थानोकी उत्पत्ति का प्रसंग आता है । परन्तु ऐसा
है नहीं, क्योंकि, स्थितिबन्धस्थान सूत्रके साथ विरोध आता है ।

इस प्रकार करनेपर अन्तर्मुहूर्तसे रक्षित तीन हजार वर्ष प्रमाण आवाधास्थान प्राप्त
होत हैं । जितने आवाधास्थान प्राप्त हैं उतने ही आवाधाकाण्डक प्राप्त होते हैं । विरोध
इतना है कि अन्तिम आवाधाकाण्डक एक अकसे हीन होता है, क्योंकि, जघन्य स्थिति
सम्बन्धी जघ य आवाधाके अन्तिम समयकी सब नियेकस्थितियोंकी हानि हो जानेपर
जघन्य स्थितिका ग्रहण किया गया है ।

मोहणीय कमके अन्तर्मुहूर्तसे हीन सान हजार वर्ष प्रमाण आवाधास्थान और
आवाधाकाण्डक होते हैं । यहाँ आवाधाकाण्डकमेंसे एक अक कम करनेका कारण पड़िलेके
ही समान कहना चाहिये ।

शका—इस प्रकार कम करनेपर 'आवाधास्थान और आवाधाकाण्डक दोनों
तुल्य हैं' इस अक्षयहृत्सूत्रके साथ विरोध क्यों नहीं होगा ?

समाधान—इस शकाने उत्तरमें कहते हैं कि उससे विरोध नहीं होगा क्योंकि,
पीचारस्थानोंमें उत्पन्न आवाधाकाण्डकशलाकाओंकी उनके साथ समानतामें कोई
विरोध नहीं है ।

नाम व गोत्रने आवाधास्थान और आवाधाकाण्डक अन्तर्मुहूर्त कम दो हजार वर्ष
प्रमाण हैं ।

१ अ आ काप्रतिपु 'ट्टिदि' इति पाठ । २ अ आ का प्रतिपु 'अद्धाणि' इति पाठः

३ अ आ काप्रतिपु 'रुवाण' इति पाठ ।

आउअस्म अतोमुहुत्तृणपु चकोडितिभागमेताणि आयाहट्टाणाणि । आयाहाकंदयाणि पुण णत्थि । कारण चित्थिय वत्त च ।

जेणेअनिहमानाहाकदय तेणगावाहाकदण ममउणजहणट्टिदिमोअट्टिय लद्धम्मि एगस्से पत्तिस्से जहणिया आयाहा आगच्छदि । अया, जहणयावाहाण आयाहाट्टाण- गुणिदग्गावाहाकदए भागे हिदे ज लद्ध तेण ट्टिदिअट्टाणेषु भागे हिदे जहणिया आयाहा आगच्छदि । अया, जहणयावाहाण उक्कम्मायाहमोअट्टिय लद्धेण एगमायाहाकदयं गुणिय तेण उक्कम्मट्टिदीए भागे हिटाण जहणियावाहा होत्ति ।

एव्वेण आयाहाकदण ट्टिदिअट्टाणेषु भागे हिट्टेषु आयाहट्टाणाणि आगच्छति । जहणयावाहमुक्कम्मायाहाणो सोहिदे सुद्धमेसमायाहट्टाणविमेषो णाम । एव्वेणआयाहाकदए उक्कस्सट्टिदीए भागे हिदाए उक्कम्मानाहा होदि । एगपदेमगुणहाणिट्टाणतरेण कम्मट्टिदिभिं भागे हिदे णाणापदेमगुणहाणिट्टाणतराणि आगच्छति । णाणापदेसगुणहाणिट्टाणतरेदि कम्मट्टिदीए ओअट्टिआए एगपदेसगुणहाणिट्टाणतर होत्ति । उक्कस्सियाए आयाहाण उक्कस्स- ट्टिदीए ओअट्टिआए एगमानाहाकदय होदि । अया, आयाहाट्टाणेहि ट्टिदिअट्टाणेषु ओअट्टिसेसु एगमायाहकदय होदि । जहणियाए आयाहाण एगमायाहाकदय गुणिय पुणो

आयुके आयाधास्थान अतमुहते कम पूर्वकोटिके तृतीय भाग प्रमाण हैं । उसके आयाधाकाण्डक नहीं होते । इसका कारण विचारपूर्वक कहना चाहिये ।

जिस कारण इस प्रकारका आयाधाकाण्डक ही इसीलिये एक आयाधाकाण्डकका एक समय कम जघय स्थितिमें भाग अनपर जो लघ हो उसमें एक अक मिला देनेपर घंघ आयाधाका प्रमाण आता है । अथवा, जघय आयाधाका आयाधास्थानोंसे गुणित एक आयाधाकाण्डकमें भाग देनेपर जो लघ हो उसका स्थितिब-स्थानोंमें भाग देनेसे जघन्य आयाधा आती है । अथवा, उत्कृष्ट आयाधामें जघन्य आयाधाका भाग देकर जो प्राप्त हो उससे एअ आयाधाकाण्डकको गुणित करना चाहिये । पश्चात् प्राप्त राशिका उत्कृष्ट स्थितिमें भाग देनेपर जघन्य आयाधाका प्रमाण आता है ।

स्थितिब-स्थानोंमें एक आयाधाकाण्डकका भाग देनेपर आयाधास्थानोंका प्रमाण आता है । उत्कृष्ट आयाधामेंसे जघय आयाधाको कम करनेपर जो शेष रहे वह आयाधास्थानविशेष कहलाता है । उत्कृष्ट स्थितिमें एक आयाधाकाण्डकका भाग देनेपर उत्कृष्ट आयाधाका प्रमाण आता है । कर्मस्थितिमें एकप्रदेशगुणहानिस्थाना तरका भाग देनेपर नानाप्रदेशगुणहानिस्थाना तरका प्रमाण आता है । नानाप्रदेशगुणहानिस्थाना तरका कर्मस्थितिमें भाग देनेपर एअ प्रदेशगुणहानिस्थाना तरका प्रमाण आता है । उत्कृष्ट स्थितिमें उत्कृष्ट आयाधाका भाग देनेपर आयाधाकाण्डकका प्रमाण होता है । अथवा, स्थितिब-स्थानोंमें आयाधास्थानाका भाग देनेपर एक आयाधाकाण्डकका प्रमाण

१ अप्रती 'अ बंध ति तेण', अप्रती 'अ बंध तेण', इति पाठ । २ अ-आ-ताप्रतिषु 'कम्मट्टिदि', काप्रती 'कम्मट्टिदि' इति पाठः ।

तत्त्व स्वरूपे आधाहाकदए अण्डिदे जहण्टिट्टिदिवधो होदि । आधाहट्टाणविमेसेहि एगमा वाहाकदए गुणिय तय स्वरूणायाहाकदए पण्णित्ते ट्टिदिअट्टाणविमेसो होत्ति । उअकस्मियाए आधाहाए एगआधाहाकदए गुणिदे उअकस्मिट्टिट्टिदिवधो होदि ।

सपहि चटुण्णमेइदियनीअममासाणमट्टण्ण निगल्लिदियनीअममासाण च आधाहाट्टाणोअमानाहाकदयाण च पमाणपस्वण कम्मामो । त जहा—सखेअपलिटोअममेतवीचारट्टाणेहि जदि सखेअवलयियमेताणि आनाहाट्टाणाणि आनाहाकदयाणि च लभन्ति तो पलिटोअमस्म सखेअदिभागमेतवीचारट्टाणाण पलिटोअमस्म असखेअदिभागमेतवीचारट्टाणाण च केत्तियाणि आधाहाट्टाणाणि आधाहाकदयाणि च लभामो त्ति पमाणेण फट्टगुणिदिच्छाए ओवट्टिआए चटुण्णमेइदियजीवममासाणमावल्याए अमखेअदिभागमेताणि आनाहाट्टाणाणि आनाहाकदयाणि च होत्ति । पेइदियादिअट्टण्ण पि जीअममासाणमावल्याए सखेअदिभागमेताणि आधाहाट्टाणाणि आधाहाकदयाणि च होत्ति । एअ णाणापदेसगुणहाणिट्टाणतराणमेगपदेसगुणहाणिट्टाणतरस्म च तेरामिय काअण सअनीअममास चकम्मट्टिदीण पमाणपस्वणं कायअ ।

होता है । अथ आधाघासे एक आधाधाकाण्डकको गुणित करके उसमेंसे एक कम आधाधाकाण्डकको घटा देनेपर अथन्य स्थितिवंध होता है । आधाघास्थानविशेषोंसे एक आधाधाकाण्डकको गुणित करके प्राप्त राशिमें एक कम आधाधाकाण्डकको मिलानेपर स्थितिवंधस्थानविशेष प्राप्त होता है । उत्कृष्ट आधाघासे एक आधाधाकाण्डकको गुणित करनेपर उत्कृष्ट स्थितिवंध प्राप्त होता है ।

अथ चार पक्षेन्द्रिय समासों और आठ विकलेन्द्रिय जीवसमासोंके आधाघास्थानों व आधाधाकाण्डकोंके प्रमाणकी प्ररूपणा करते हैं । यह इस प्रकार है—सख्यात पत्योपम प्रमाण धीचारस्थानोंसे यदि सख्यात आवलि प्रमाण आधाघास्थान व आधाधाकाण्डक प्राप्त होने हैं, तो पत्योपमके सख्यातधें भाग मात्र धीचारस्थानों और पत्योपमके असख्यातधें भाग मात्र धीचारस्थानोंके क्तिने आधाघास्थान और आधाधा काण्डक प्राप्त होंगे, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपघातित करनेपर चार पक्षेन्द्रिय जीवसमासोंके आधिलिके असख्यातधें भाग मात्र आधाघास्थान और आधाधा काण्डक प्राप्त होते हैं । डीन्द्रियादिक आर्तादी जीवसमासोंके आधिलिके सख्यातधें भाग मात्र आधाघास्थान व आधाधाकाण्डक होते हैं । इसी प्रकार आनाप्रदेशगुणहानि स्थानात्तरा और एअ प्रदेशगुणहानिस्थानान्तरका वैराशिक करके समस्त जीवसमासों सम्यधी कमस्थितियोंके प्रमाणकी प्ररूपणा करना चाहिये ।

१ ताप्रती 'आनाहाट्टाणाणि', ताप्रती 'आनाहाट्टाणाणि (ण)' इति पाठ । २ अ-आमत्यो 'विचारट्टाणेहिओ जदि', ताप्रती 'विचारट्टाणेहिओ जदि', ताप्रती 'विचारट्टाणेहिअ (हितो) इति पाठ । ३ ताप्रती 'ल-अदि (अन्ति)', इति पाठ । ४ ताप्रती 'असंखे' इति पाठ । ५ ताप्रती 'सखेअदि' इति पाठ ६ ताप्रती 'च' इत्येतत्पद नास्ति ।

सन्वत्योवा आउअस्म जहण्णावाहा इदि वुत्ते अससेयद्धोपहमसमाए आउअकम्मवध-
माडविय जहण्णनग्गद्धाए चरिमसमाए वट्टमाणस्म जा आवाहा सा घेत्तन्नो, तत्तो उग्गाए
अण्णावाहाए अणुण्णभादो' । खुदाभवग्गहण्णपुट्टि ममउत्तर-दुममउत्तरादिकमेण जाव
अपज्जत्तउक्कस्माउअ ति ताव गिरतर गट्टण पुणो उवरी अंतोमुहुत्तमतर होट्टण सण्णि-असण्णि-
पज्जताण जहण्णाउअ होदि । पुणो एदमादिं काट्टण उवरी गिरतर गच्छदि जाव
तेतीससागरोपमाणि ति । तेण जहण्णट्टिदिनधमुक्कम्मट्टिदिनधम्मि सोहिदे सेसकम्माण
व आउअस्म ट्टिदिवधट्टाणविसेमो ण उप्पज्जदि ति घेत्तन्न । एवमप्पानहुग समत्त ।

(विद्या चालिया)

ठिदिवधज्जवसाणपरुवणदाए तत्थ इमाणि तिण्णि अणिआग
दाराणि जीवसमुदाहारो पयडिसमुदाहारो ट्टिदिसमुदाहारो ति ॥ १६५ ॥

सपथि इमा कालविद्याणस्स विद्या चालिया किमट्टमागदा ? ठिदिवधट्टाणाण
कारणभूतअज्जवमाणट्टाणपरुवणट्ट । ट्टिदिवधट्टाणनधकारणसकिलेस-विसोहिट्टाणाण परुवणा

‘आयुकी जघन्य आवाधा सयसे स्तोके हे ऐसा’ कहनेपर अससयेवाडा
(असक्षपादा) के प्रथम समयमें आयु कर्मके वचको प्रारम्भ करके जघन्य वन्धककालके
अन्तिम समयमें वतमान जीवके जो आवाधा होती है उसका ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि
उससे हीन और अथवा आवाधा पायी नहीं जाती । ध्रुवभवग्रहणको आदि लेकर एक
समय अधिक दो समय अधिक इत्यादि क्रमसे जब तक अपर्याप्तकी उत्पत्ति आयु नहीं
प्राप्त होती तब तक निरंतर जाकर, तत्पश्चात् अन्तर्मुहूर्त अन्तर होकर सही व असही
पर्याप्तकी जघन्य आयु होती है । फिर इरुको आदि लेकर आगे तेतीस सागरोपम
तक निरंतर जाते हैं । इसलिये उत्पत्ति स्थितिधर्मसे जघन्य स्थितिधर्मको कम करनेपर
क्षेप कर्मके समान आयु कर्मका स्थितिधर्मक्षेप उत्पन्न नहीं होता, ऐसा ग्रहण करना
चाहिये । इस प्रकार अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

(द्वितीय चालिका)

स्थितिधर्माध्यवसायस्थानपरुवणा अधिकृत है । उसमें ये तीन अनुयोगद्वार हैं—
जीवसमुदाहार, प्रकृतिसमुदाहार और स्थितिसमुदाहार ॥ १६५ ॥

शंका—अथ यह कालविधानकी द्वितीय चालिका किसलिये आयी है ?

समाधान—बहु स्थितिधर्मस्थानोंके कारणभूत अध्यवसानस्थानोंकी प्ररूपणा
करनेके लिये प्राप्त हुई है ।

१ मप्रतिपाठोऽयम् । अ आ का ताप्रतिपु 'ससेयद्धा—' इति पाठ । २ अ आ काप्रतिपु 'आव
आवाहा घेत्तवा', मप्रति 'आव आवाहा सा घेत्तवा' इति पाठ । ३ प्रतिपु 'ऊग्गा' इति पाठ । ४ मप्रति
पाठोऽयम् । अ आ-का-साप्रतिपु 'अण्णावाहाअणुण्णभादो' इति पाठ । ५ तदेवमुक्कम्मपुबहुत्वम् । इदानीं
स्थितिधर्माध्यवसायस्थानपरुवणा कर्त्तव्या । तत्र श्रीधनुषयोगद्वाराणि । तद्यथा—स्थितिसमुदाहार १, प्रकृति-
समुदाहार २, जीवसमुदाहारश्च ३ । समुदाहारः प्रतिपादनम् । क प्र (म टी) १, ८७ गाथाया उत्यानिका ।

पदमाए चूलियाए कदा चेव, पुणो तत्थ परुविदाण सकिलेस विसोहिट्टाणाण परुवणा ण कायव्वा, पुणरुत्तदोमप्पसगादो । ण च कसाउदयट्टाणाणि मोत्तूण द्विदिवधस्स अण्ण कारणमत्थि, द्विदिवधुभागे कमायदो कुण्णदि ति वयणेण विरोहप्पसगादो ति ? एत्थ परिहारो उचदे । त जहा—असादवधपाओग्गकसाउदयट्टाणाणि सकिलेमो णाम । ताणि च जहण्णद्विदीए थोवाणि होइण विदियद्विदिप्पहुडि विसेसाहिय कमेण ताव गच्छति जाव उव्वस्मट्ठिदि ति । एदाणि च सन्धमूलपयडीण समाणाणि, कमाण्ण विणा वज्जमाणमूलपयडीए अणुवलभादो । सादवधपाओग्गाणि कसाउदयट्टाणाणि त्रिमोहिट्टाणाणि । एदाणि च उव्वस्मट्ठिदीए थोवाणि होइण टुचरिमट्ठिदिप्पहुडिप्पगणणादो विसेसाहियरुमेण ताव गच्छति जाव जहण्णद्विदि ति । सकिलेसट्टाणेहिंतो त्रिमट्ट विमोहिट्टाणाणि उणत्तमुवगयाणि ? ण, सामावियादो । एदाणि सकिलेमविमोहिट्टाणाणि णाम द्विदिवधमूलकारणभूदाणि एदेसिं द्विदिवधट्टाणपरुवणाए वण्णणा कदा । ण च एत्थ एदेसिं पुत्र परुविदाण परुवणा अत्थि जेण पुणरुत्तदोसो होइं, किंतु एत्थ द्विदिवधट्टाणाण विमेषपच्चयस्स द्विदिवधवज्जसणमण्णिदस्स परुवणा कीरदे । ण पुणरुत्तदोसो वि हुक्खे, पुत्रमपरुविदद्विदि-

शका—स्थितिघ-घस्थानोंके कारणभूत सफलेश विगुद्धिस्थानोंकी प्ररूपणा प्रथम चूलिकामें की ही जा चुकी हे, अत घटा चर्णित सन्देश विगुद्धिस्थानोंकी प्ररूपणा फिरसे नहीं की जानी चाहिये, क्योंकि, पैसा करनेपर पुनरुक्त दोषका प्रसंग आता है । कपायोद्दयस्थानोंको छोड़कर स्थितिघ-घका और कोई दूसरा कारण सम्भव नहीं है, क्योंकि, पैसा होनेपर “स्थिति घ अनुभागको कपायसे करता हे” इस आगम वाक्यके साथ विरोधका प्रसंग आता है ?

समाधान—यहा इस शकाका उत्तर कहते हैं । यह हम प्रकार है—असाता वेदनीयके घ-घ योग्य कपायोद्दयस्थानोंको सफलेश कहा जाता है । ये जघ-घ स्थितिमें स्तोरु होकर आगे द्वितीय स्थितिसे लेकर उत्कृष्ट स्थिति तक विशेषाधिकताके क्रमसे जाते हैं । ये सब मूल प्रतियोंके समान हैं क्योंकि, कपायने विना घघको प्राप्त होनेवाली कोई मूल प्रतीति पायी नहीं जाती । सातावेदनीयके घ-घ योग्य परिणामोंको विगुद्धिस्थान कहते हैं । ये उत्कृष्ट स्थितिमें स्तोरु होकर आगे द्विचरम स्थितिसे लेकर जघ-घ स्थिति तक गणनाकी अपेक्षा विशेष अधिकताके क्रमसे जाते हैं ।

शका—विगुद्धिस्थान सफलेशस्थानोंकी अपेक्षा हीनताको क्यों प्राप्त हैं ?

समाधान—नहीं, क्योंकि ये स्वभावसे ही हीनताको प्राप्त हे ।

ये सन्देश-विगुद्धिस्थान स्थितिघ-घके मूल कारणभूत हैं । इनका घणन स्थितिघ-घस्थानप्ररूपणामें किया गया है । यहा पूर्वमें चर्णित इनकी पुन प्ररूपणा नहीं की जा रही है, जिससे कि पुनरुक्त दोष होनेकी सम्भावना हो । किंतु यहा स्थितिघ-घाध्य घस्थान नामसे प्रसिद्ध स्थितिघ-घस्थानोंके विशेष प्रत्यय (कारण) की प्ररूपणा की जा रही है । अत पुनरुक्त दोष भी सम्भव नहीं है, क्योंकि यहा पूर्वमें जिनकी प्ररूपणा नहीं की गयी है, उन घ-घाध्यघस्थानोंकी प्ररूपणा की गयी है ।

१ अ भाप्रतो 'जेण पुणरुत्तदोसो ण होव' काप्रती 'जे पुण उचदोसो ण होव' इति पाठः ।

वधञ्ज्वलमानाणाण्यपस्ववत्तादो' । द्विदिवधञ्ज्वलमानाणाणि कमाउत्पट्टाणाणि ण होति
 त्ति कथ णञ्चदे ? णामा गोत्तण द्विदिवधञ्ज्वलसाणट्टाणेहिंतो चदुण्ण कम्माण द्विदिवध-
 ज्वलसाणट्टाणाणि [जमपेज्जगुणाणि त्ति अप्पायहुगमुत्तादो । जदि पुण कमाउत्पट्टाणाणि
 चेव द्विदिवधञ्ज्वलसाणट्टाणाणि] होति तो णेदम'पायहुग धञ्चदे, कमायोदयट्टाणेण विणा
 मूलपयडिधधामावेण मञ्चपयडिद्विदिवधञ्ज्वलमानाणाण समाणत्तप्पसगादो । तम्हा
 सञ्चमूलपयडीण मग सगउदयादो समुप्पणपरिणामाण सग-सगट्टिदिनधकारणतेण द्विदिवध-
 ज्वलसाणट्टाणमण्णिण्ण एय गहण कायञ्च, अण्णहा उत्तदोमप्पमगादो । एदमि
 द्विदिनञ्ज्वलमानाणाण पम्पणट्टमिमा विदिया चूलिया आगन्ता । तय तिण्णि
 अणियोगद्वाराणि जीव पयडि द्विदिसमुदाहारभेदेण । तय जीवममुत्ताहारो किमट्ट आगदो ?
 सादामादाण एकेद्विस्मे द्विदीए एत्तिया जीना होति ण होति त्ति जाणावणट्टमागन्तो ।
 पयडिममुत्ताहारो किमट्टमागदो ? एदिस्मे पयडीए द्विदिनञ्ज्वलमानाणाणि एत्तियाणि

शका—स्थितिविधाध्यवसानस्थान कयायोदयस्थान नहीं हैं, यह कैसे जाना
 जाता है ?

समाधान—नाम ध गोत्रये स्थितिविधाध्यवसानस्थानोंकी अपेक्षा चार कर्मोंके
 स्थितिविधाध्यवसानस्थान असंख्यातशुणे हैं, इस असंख्यातशुणसे यह जाना जाता है ।
 यदि कयायोदयस्थान ही स्थितिविधाध्यवसानस्थान हों तो यह अल्पबहुत्व घटित नहीं
 हो सकता है, क्योंकि, कयायोदयस्थानके विना मूल प्रवृत्तियोंका बंधन हो सकेनेसे
 सभी मूल प्रवृत्तियोंके स्थितिविधाध्यवसानस्थानोंकी समानताका प्रसंग आता है । अन
 एव सत्र मूल प्रवृत्तियोंके अपने अपने उदयसे जो परिणाम उत्पन्न होते हैं उनकी ही
 अपनी अपनी स्थितिके बंधनों कारण होनेसे स्थितिविधाध्यवसानस्थान सन्ना है । उनका
 ही ग्रहण यहाँ करना चाहिये, क्योंकि, अन्यथा पुनश्च दोषका प्रसंग आता है ।

इन स्थितिविधाध्यवसानस्थानोंकी प्ररूपणाके लिये द्वितीय चूलिकाका अष्टार
 हुआ है । उसमें तीन अनुयोगद्वार हैं—जीवसमुदाहार, प्रवृत्तिसमुदाहार और
 स्थितिसमुदाहार ।

शका—इनमें जीवसमुदाहार किसलिये आया है ?

समाधान—साना ध अज्ञानाकी एक एक स्थितिमें इतने जीव हैं ध इतने नहीं है,
 इस धानके क्षापनार्थ जीवसमुदाहार प्राप्त हुआ है ।

प्रवृत्तिसमुदाहार किसलिये आया है ?

इस प्रवृत्तिके स्थितिविधाध्यवसानस्थान इतने होते हैं और इतने नहीं होते हैं, इन

१ अ आ-का-ताप्रतिष्वनुपलभ्यमानमिद हेतुवचनं मप्रतितोऽथ योजितम् । २ अ आ-का-ताप्रतिष्वनु
 पलभ्यमानोऽयं कोश्वरधः पाठो मप्रतितोऽथ योजितः ।

होति [एत्तियाणि] ण होति ति जाणावणट्टमागदो । द्विदिसमुदाहारो किमट्टमागदो ? एदिस्से द्विदीए एत्तियाणि द्विदिवधञ्जवसाणट्टाणाणि होति, एत्तियाणि ण होति ति जाणावणट्ट । ण च तिणिण अणियोगद्वाराणि मोत्तूण एत्थ चउत्थमणियोगदार समनदि, अणुवलभादो । पयडिद्विदिसमुदाहाराण द्विदिवधञ्जवसाणट्टाणपस्वणट्ट होदु णाम, पयडि-द्विदीओ अस्सिदण तत्थ द्विदिनधञ्जवसाणट्टाणपस्वणुवलभादो । ण जीवसमुदाहारस्सं, तत्थ तदणुवलभादो ति ? ण एस दोसो, ठिदीण कजे कारणोवयारेण ठिदिवधञ्जवसाण-ट्टाणवणमोचलभादो । ण च जीवसमुदाहारो उवयारेण द्विदिवधञ्जवसाणट्टाणसणिद-द्विदीयो ण पस्वेदि, तत्थ जीवसिसिदद्विदिपस्वणुवलभादो । अधवा, ठिदिवधञ्जवसाण-ट्टाणमासओ ति जीवाण तत्थ तन्वणसो ति ण दोसो ।

जीवसमुदाहारे ति जे ते णाणावरणीयस्स वधा जीवा ते दुविहा-सादवधा चेव असादवधा चेव ॥ १६६ ॥

पुत्रुद्विद्वअहियारमभालणट्ट जीवसमुदाहारो पयद ति अज्झाहारो कायन्वो, अण्णाहा पातका परिह्वान करानेके लिये प्रवृत्तिसमुदाहारका अधतार हुआ है। स्थितिसमुदाहार किस लिये आया है? इस स्थितिके इतने स्थितिव्याध्यवसानस्थान होते हैं और इतने नहीं होते हैं, इसका परिह्वान करानेके लिये स्थितिसमुदाहार प्राप्त हुआ है। इन तीन अनुयोगद्वारोंको छोड़कर यद्वा किसी चौथे अनुयोगद्वारकी सम्भावना नहीं है, क्योंकि, वह पाया नहीं जाता।

शका—स्थितिव्याध्यवसानस्थानोंकी प्ररूपणा करनेके लिये प्रवृत्तिसमुदाहार व स्थितिसमुदाहारकी सम्भावना भले ही हो, क्योंकि, प्रवृत्ति व स्थितिका आश्रय करके वहां स्थितिव्याध्यवसानस्थानोंकी प्ररूपणा पायी जाती है। किंतु जीवसमुदाहारकी सम्भावना नहीं है, क्योंकि, वहा उनकी प्ररूपणा पायी नहीं जाती?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, कारणका उपचार करनेसे स्थितियोंकी स्थितिव्याध्यवसानस्थान सन्ना पायी जाती है। और जीवसमुदाहार उपचारसे स्थितिव्याध्यवसानस्थान सन्नाको प्राप्त हुई स्थितियोंकी प्ररूपणा न करता हो, ऐसा है नहीं, क्योंकि, उसमें जीवसे विशेषताको प्राप्त हुई स्थितियोंकी प्ररूपणा पायी जाती है। अथवा, चूंकि स्थितिव्याध्यवसानस्थान आश्रय है, अत वहाँ जीवोंकी उक्त सन्नामें कोई दोष नहीं है।

जीवसमुदाहार प्रकृत है। जो ज्ञानावरणीयके चक जीव है वे दो प्रकार हैं—सातवचक और असातवचक ॥ १६६ ॥

पूर्वादिष्ट अधिकारका स्मरण करानेके लिये 'जीवसमुदाहार प्रकृत है' ऐसा अध्याहार करना चाहिये, क्योंकि अन्यथा परिह्वान नहीं हो सकता। 'सादवधा'

१ अ आ-काप्रतिपु 'जाणवणट्ट व' इति पाठ । २ आ-का-ताप्रतिपु 'पस्वणत्तं' इति पाठ, ।
३ अमयी जीवसमुदाहारो' इति पाठ । 'त्ति' इत्येतत्पद नास्ति ।

अल्पपडिवृत्तीए अभावादो । सादवधा ति उते सादवधया ति घेतव्व, कत्तारणिदेसादो ।
 णाणावरणीयस्स वयया जीवा दुविहा चेव सादवयया असादवधया चेदि । ण च
 सादासादाण वधेण विणा णाणावरणीयस्स वधया जीवा अत्थि, अणुवलभादो । एत्थ
 णाणावरणीयगहणेण णाणावरणादीण सुवन्धीण पयडीण वधया जीवा दुविहा ति वत्तव्व ।
 सादवयया इदि उते माद-धिर-सुभ-सुस्सर-सुभग-आदेज-जमकिति-उच्चागोदाणमहण्ण
 सुहपयडीण पत्थित्तमाणीण गहण कायव्व, अण्णोण्णाविणाभावित्तदसादो । असादवधया
 इदि उते असाद-अधिर-असुह दुभग-दुस्सर-अणादेज-अजसगिति-णीचागोदवधयाण गहण
 कायव्व, वधेण अण्णोण्णाविणाभावित्तदसादो । सादासादादीणमक्खमेण एगजीवम्मि
 वधो किण्ण जायदे ? ण, अच्चनाभावेण पडिसिद्धअक्कमप्यउत्तीदो । सादासादादीणमक्खम-
 वधे जीवाण सत्ती णत्थि ति भण्णिद होदि ।

तत्थ जे ते सादवधा जीवा ते तिविहा- चउट्टाणवधा तिट्टाण-
 वधा विट्टाणवधा ॥ १६७ ॥

तथ सादवधा जीवा ति णिदेसेण असादवधयनीवाण पडिसेहो कदो । तिविहा
 ति वयणेण चउत्तिहात्तिपडिसेहो कदो । चउट्टाण तिट्टाण-विट्टाणमिदि तिविहो सादाणु
 भागो होदि । सादावेदणीए एगट्टाणाणुभागो णत्थि, तहाणुवलभादो । वध पडि एगट्टा-
 वधनेपर 'सादवधया' अर्थात् सातावेदनीयके वधक, पेसा प्रहण करना चाहिये,
 क्योंकि, वर्तिका निवेश है । ज्ञानावरणीयसे वधक जीव दो प्रकार ही हैं—सातवधक
 और असातवधक । साता व असाता वेदनीयके वधसे रहित ज्ञानावरणीयके वधक
 जीव नहीं हैं क्योंकि वे पाये नहीं जाते । सूत्रमें जो ज्ञानावरणीय पदका उपादान किया
 है उससे सातावरणादिक ह्यै प्रकृतियोंके वधक जीव दो प्रकार हैं पेसा कहना चाहिये ।
 'सादवधया' कहनेपर साता, स्थिर, सुभ, सुस्वर, सुभग, आदिय, यशस्वीति और
 उच्चगोध, इन आठ पण्डित्तमान प्रकृतियोंका प्रहण करना चाहिये, क्योंकि, इनके वधमें
 परस्पर अविनाभाव सम्बध है । 'असादवधया' कहनेसे असाता, अस्थिर, अनुभ,
 दुभग दुस्वर, अनादिय, अयशस्वीति और नीच गोधके वधकोंका प्रहण करना चाहिये,
 क्योंकि वधनी अपक्षा उनमें अविनाभाव सम्बध देखा जाता है ।

शकां—एक जीवमें एक साथ साता व असातादिकोंका वध क्यों नहीं होता है ?
 समाधान—नहीं, उनकी युगपत् प्रवृत्ति अत्यन्तभारसे प्रतिषिद्ध है अर्थात्
 साता व असाता अन्विषोंको एक साथ वधनेमें जीवोंकी शक्ति नहीं है, यह अभिप्राय है ।
 उनमें जो सातवधक जीव हैं वे तीन प्रकार हैं—चतु स्थानवधक, त्रिस्थान
 वधक और द्विस्थानवधक ॥ १६७ ॥

सूत्रमें 'सादवधा जीवा' इस निर्देशसे असातवधक जीवोंका निषेध किया
 गया है । चतु स्थान, त्रिस्थान और द्विस्थान इस प्रकारसे साता वेदनीयका अनुभाग
 तीन प्रकार है । सातावेदनीयमें एकस्थान अनुभाग नहीं है, क्योंकि, पैसा पाया नहीं जाता ।

१ वचनी बुधवगदी परित्तमाणिगमूमाण तिविहरण । चउ तिगविट्टाणवध विवरोयगय च अनुभाण ॥ १, १०

षाणुभागस्य ममत्रो जदि वि णत्थि तो पि सन पडुच्च अत्थि ति एगट्टाणाणुभागो एत्थ किंण पम्बुदिदो ? ण, यसाद्विहारे सतपम्बवणाणुवर्तीदो । एय सादाणुभागो जट्टण-
पहयण्णुहि जाव उन्नयम्बुफदयो ति ताव रचेयन्त्रो सेडिआगारेण । तत्थ पढमो भागो
गुडसमाणो' एग ट्टाण, विदियो भागो खटसमाणो विदिय ट्टाण, तदियो भागो सक्करातुल्लो
तदिय ट्टाण, चउत्थो भागो अमियसमो चउत्थट्टाण । एदाणि चत्तारिट्टाणाणि जम्मि
सादाणुभागनये जत्थि सो अणुभागनयो चउत्थट्टाणो । तस्स धधया जीवा चउट्टाणनधया
णाम । एव तिट्टाण विट्टाणनघाण पि पम्बवण कायच्च' । एव सादनधया अणुभागनध-
भेदेण तिनिहा चेव होति ।

**असादवधा जीवा तिविहाँ- विट्टाणनधा तिट्टाणवधा चउट्टाण-
वंधा ति ॥ १६८ ॥**

एत्थ असादाणुभागो पुत्र व मेडिआगारेण ट्टइदुण चत्तारिमाणेसु कदेसु तथ पढम-
भागो णिंममो एगट्टाण, विदियभागो कानीरममो विदियट्टाण, तदियभागो निमसमो

शर्का—यद्यपि य-धकी अपरसा एकस्थान अनुभागकी सम्भावना नहीं है, तथापि
सत्त्वकी अपेक्षा तो उसकी सम्भावना है ही । फिर एकस्थानानुभागकी प्ररूपणा यहाँ क्यों
नहीं की गई ?

समाधान—नहीं, क्योंकि य-धके अधिकारमें सत्त्वकी प्ररूपणा सगत नहीं है ।

यहाँ जघन्य स्पर्धकसे लेकर उत्कृष्ट स्पर्धक तक श्रेणिके आकारसे साताने
अनुभागकी रचना करना चाहिये । उसमें प्रथम भाग गुरुके समान एक स्थान, द्वितीय
भाग सौँडके समान दूसरा स्थान, तृतीय भाग शक्करके समान तीसरा स्थान, और
चतुर्थ भाग अमृतके समान चौथा स्थान है । इस प्रकार जिस साताने अनुभागमें ये
चार स्थान हों वह अनुभागवध चतुर्थस्थान कहा जाता है । उसको योधनेवाले जीव
चतु स्थानवधक कहलाते हैं । इसी प्रकार त्रिस्थान और द्विस्थानवधकोकी भी प्ररूपणा
करना चाहिये । इस अनुभागके भेदसे सातवधक तीन प्रकारके हैं ।

असातनधक जीव तीन प्रकारके हैं—द्विस्थानवधक, त्रिस्थानवधक और
चतु स्थानवधक ॥ १६८ ॥

यहाँ असातवधे अनुभागको पहिलके ही समान श्रेणिके आकारसे स्थापित करके
चार भाग करनेपर उनमेंसे प्रथम भाग नीमके समान एक स्थान, द्वितीय भाग काजीरके
समान दूसरे स्थान, तृतीय भाग विषके समान तीसरे स्थान, और चतुर्थ भाग हालाहलके

अ आ-काप्रतिपु 'गुणसमाणो', ताप्रती 'गुण (४) समानो' इति पाठ ।

२ इह शुभमश्वतीनां रश्मि शीरादिरसोपम । अशुभमश्वतीनां तु घोषानकी निरादिरसोपम । उक्ते
ध— पाशाढद निवृषमो अनुभाग शुभाग शीर-खडुवमो' इति । शीरादिरसश्च स्थानाधिक एकरथानिक
उच्यते । श्वोरेण कपयोरावर्तने कृते सति याऽवशिष्यते एकः कर्षं स द्विस्थानिक । त्रयाणामावर्तने कृते
सति य उद्धरित एकः कप त्रिस्थानगत । चतुर्णां तु कपणामावर्तने कृते सति योऽवशिष्य एक कप
स चतुस्थानगतः । क प्र (म टी) १,९

तदिय ठाण, चउत्थो भागो हालाहलतुहो चउत्थट्टाण । तत्थ दोष्णि ट्टाणाणि जग्घि अणु-
भागवधे सो विट्ठाणो' णाम । तस्स वधया जीवा विट्ठाणनधा । एव तिट्ठाणनधाण चउ-
ट्टाणनधाण च पस्वणा कायत्वा । एवमणुभागनधमस्मिद्वण असादवधा ति विहा होति ।

सव्वविसुद्धा सादस्स चउट्टाणवधा जीवां ॥ १६९ ॥

सत्रेहितो विसुद्धा सत्रविसुद्धा । सादचिट्ठाण-तिट्ठाणनधएहितो सादस्स चउट्टाण-
वधा जीवा सुद्धु विसुद्धा ति उत होदि । एत्थ का विसुद्धदा णाम ? अइति उकमायाभावो
मदकमाओ विसुद्धदा ति घेतत्वा । तत्थ सादस्स चउट्टाणनधा जीवा सव्वविसुद्ध ति भणिदे
सुद्धमदसकिलेमा ति घेतत्थ । जहण्णट्टिदिवधकारणजीवपरिणामो वा विसुद्धदा णाम ।

तिट्ठाणवंधा जीवा सकिलिट्ठदरां ॥ १७० ॥

सादचउट्टाणनधएहितो सादस्सेव तिट्ठाणाणुभागवधया जीवा सकिलिट्ठदरा,
कसाउक्कट्टा ति भणिद होदि ।

समान चौथे स्थान रूप है । उनमेंसे जिस अनुभागवन्धमें दो स्थान हैं वह द्विस्थान
अनुभागवन्ध कहलाता है । उसको बाधनेवाले जीव द्विस्थानवन्धक कहे जाते हैं ।
इसी प्रकार त्रिस्थानवन्धक और चतु स्थानवन्धक जीवांकी प्ररूपणा करना चाहिये । इस
प्रकार अनुभागवन्धना आधय करके असातवन्धक तीन प्रकारके होते हैं ।

सातावेदनीयके चतु स्थानवन्धक जीव सत्से विशुद्ध हैं ॥ १६९ ॥

' सत्रेहितो विसुद्ध सत्रविसुद्धा ' इस प्रकार सर्वविशुद्ध पदमें तत्पुरुष समाप्त है ।
साता वेदनीयके द्विस्थानवन्धकों और त्रिस्थानवन्धकोंकी अपेक्षा उनके चतु स्थानवन्धक
जीव अतिशय विशुद्ध हैं, यह उसका अभिप्राय है ।

शका—यदा विशुद्धतासे क्या अभिप्राय है ?

समाधान—अत्यन्त तीव्र कषायसे अभावमें जो मन्द कषाय होती है उसे विशुद्धता
पदसे प्रहण करना चाहिये ।

सातावेदनीयके चतु स्थानवन्धक जीव सर्वविशुद्ध हैं, ऐसा कहनेपर ' वे अतिशय
मन्द सफलेदसे सहित हैं ' ऐसा प्रहण करना चाहिये । अथवा, जघन्ध स्थितिवन्धका
कारण स्वरूप जो जीवना परिणाम है उसे विशुद्धता समझना चाहिये ।

त्रिस्थानवन्धक जीव सकिलिट्ठतर हैं ॥ १७० ॥

सातारे चतु स्थानवन्धकोंकी अपेक्षा साताके ही त्रिस्थानानुभागवन्धक जीव सकिलिट्ठ
तर हैं, अर्थात् वे उनकी अपेक्षा उत्कट कषायवाले हैं, यह अभिप्राय है ।

१ अ-आ-काप्रतिपु 'अणुभागवधो सो विट्ठाणू' इति पाठ । २ ये सर्वविशुद्धा रसं बन्वन्ति ।
क प्र (म टी) १,९१ । ३ अप्रती 'एष एष्य' इति पाठ । ४ ये पुनर्मध्यमपरिणामास्ते त्रिस्थान
गतं रसं बन्वन्ति । क प्र (म टी) १,९१ ।

विद्याणवधा जीवा संकिलिट्टदरा ॥ १७१ ॥

सादतिद्याणुभागवधर्हितो सादस्सेन विद्याणाणुभागवधा जीवा संकिलिट्टदरा, संकिलेसेणं अहिया ति मणिद होदि ।

सव्वविसुद्धा असादस्स विद्याणवधा जीवा ॥ १७२ ॥

असादस्स तिद्याणाणुभागवधर्हितो तस्सेव विद्याणाणुभागवधा मदकमाया ति मणिद होदि ।

तिद्याणवधा जीवा संकिलिट्टदरा ॥ १७३ ॥

असादस्स तिद्याणाणुभागवधर्हितो तिद्याणाणुभागवधया जीवा सुट्टुक्कडमकिलेसा होति । कुदो ? सामावियादो ।

चउट्टाणवधा जीवा संकिलिट्टदरा ॥ १७४ ॥

असादतिद्याणाणुभागवधर्हितो तस्सेन चउट्टाणाणुभागवधयाण कमायो अइवहुलो होदि । कुदो ? सामावियादो । संकिलेमे वड्डमाणे सादादीण सुहपयडीणमणुभागवधो हायदि, असादादीणमसुहपयडीणमणुभागवधो वड्डदि । संकिलेसे हायमाणे सादादीण

द्विस्थाननघक जीव संकिलिट्टर हैं ॥ १७१ ॥

साताके त्रिस्थानानुभागवधर्कोंकी अपेक्षा साताके ही द्विस्थाननघक जीव संकिलिट्टर हैं, अथात् ये अधिक सफलेशाले हैं ।

असातावेदनीयके द्विस्थाननघक जीव सर्वशुद्ध हैं ॥ १७२ ॥

असाता वेदनीयके त्रिस्थानानुभागवधर्कोंकी अपेक्षा उसके ही द्विस्थानानुभागवधक जीव मदकपायवाले हैं, यह सूत्रका अभिप्राय है ।

त्रिस्थाननघक जीव संकिलिट्टर हैं ॥ १७३ ॥

असाताके द्विस्थानानुभागवधर्कोंकी अपेक्षा उसके ही त्रिस्थानानुभागवधक जीव अति उत्कट सफलेशसे सयुक्त होते हैं, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है ।

चतु स्थाननघक जीव संकिलिट्टर हैं ॥ १७४ ॥

असाताके त्रिस्थानानुभागवधर्कोंकी अपेक्षा उसने ही चतु स्थानानुभागवधर्कोंकी कपाय अतिशय बहूल होती है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । सफलेशकी वृद्धि होनेपर साता आदिक शुभ प्रवृत्तियोंका अनुभागवध हीन होता है और असाता आदिक अनुभ

१ संकिलिट्टपरिणामास्तु द्विस्थानगतम् । क प्र (म टी) १,९१ । २ अ आ काप्रतियु 'संकिलेतेय । इति पाठ । ३ ये पुनस्तयोग्यमूषिकानुकारेण सर्वशुद्धा परावर्तमाना अशुभप्रवृत्तीवन्ति ते तासु द्विस्थानगत रसं निवर्तयन्ति क प्र (म टी) १,९१ । ४ मध्यमपरिणामद्विस्थानगतम् । क प्र (म टी) १,८१ । ५ संकिलिट्टपरिणामास्तु चतु स्थानगतम् । क प्र (म टी) १,९१ ।

सुहृपयडीणमणुमागननो वडुदि, असाणादीण असुहृपयडीणमणुमागननो हायदि ति उत द्दोदि ।

सादस्स चउट्टाणवंधा जीवा णाणावरणीयस्स जहणिय
द्विदि वधति' ॥ १७५ ॥

णाणावरणमाहण जेण देसामामिय तेण णाणावरणादीण' धुववधीणमसुहृपयडीण सन्वासि जहणिय द्विदि वधति ति घेतव्व । जे जे सादस्स चउट्टाणाणुमागवधया जीवा ते ते णाणावरणादीण जहणिय चैव द्विदि वधति ति णावहारण' कीरदे, चउट्टाणवधएमु णाणावरणादीणमजहणद्विदीण पि वधत्सणादो । जेण क्कमावो द्विदिघवस्स कारण तेण मत्कमाडणो सादस्स चउट्टाणवधया जीवा णाणावरणीयस्स जहणिय द्विदि वधति ति मणिद ।

सादस्स तिट्टाणवधा जीवा णाणावरणीयस्स अजहण-
अणुक्कस्सिय ठिदि वधति' ॥ १७६ ॥

ण ताव उक्कस्सिय द्विदि वधति, असादजोगुक्कम्मंसक्किल्लेमेहि विणा णाणावरणी-

प्रवृत्तियोंका अनुभागवध बढ़ता है। सफलेशक्ती हानि होनेपर साता आदिक शुभ प्रवृत्तियोंका अनुभागवध बढ़ता है और असाता आदिक अशुभ प्रवृत्तियोंका अनुभाग वध हीन होता है, यह अभिप्राय है।

सातावेदनीयके चतुस्थानवधक जीव ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिकी वधते हैं ॥ १७५ ॥

चूंकि ज्ञानारणका ग्रहण देशामर्शक है, अत उतसे ज्ञानावरणादिक धुववधी सब अनुभ प्रवृत्तियोंकी जघन्य स्थितिकी वधते हैं, ऐसा ग्रहण करना चाहिये। जो जो साता वेदनीयके चतुस्थानानुभागवधक जीव हैं वे वे ज्ञानावरणादिकोंकी जघन्य ही स्थितिकी वधते हैं, ऐसा अवधारण नहीं किया जा रहा है, क्योंकि, चतुस्थानवधकोंमें ज्ञानावरणादिकोंकी अजघन्य स्थितियोंका भी वध देखा जाता है। चूंकि स्थितिवन्धका कारण कपाय है, अत सातावेदनीयके चतुस्थानवधक मत्कपायी जीव ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिकी वधते हैं, ऐसा कहा गया है।

साताके त्रिस्थानवधक जीव ज्ञानावरणीयकी अजघन्य-अनुत्कृष्ट स्थितिकी वधते हैं ॥ १७६ ॥

ये जीव ज्ञानावरणीयकी उत्कृष्ट स्थितिकी नहीं धाघते हैं, क्योंकि, अमाताके योन्व

१ ये सर्वविशुद्ध शुभप्रवृत्तीना चतुस्थानगत रसं वप्नन्ति ते भुवप्रवृत्तीनां वधन्यां स्थितिं निवर्तयन्ति । क प्र (म टी) १, ११ । २ ताप्रती 'णाणावरणीयादीण' इति पाठ । ३ अ आ काप्रतिपु 'धुववधीणमसुहृ' ताप्रती 'धुववधीण असुहृ' इति पाठः । ४ अ-आ-काप्रतिपु 'णाणावहारण' इति पाठः । ५ परावर्तमानशुभप्रवृत्तीनां निरस्थानगतस्य रसस्य ये वधकारते भुवप्रवृत्तीनामवधन्या मध्यमां स्थितिं ज्ञानन्ति । क प्र (म टी) १, ११ । ६ ताप्रती 'सावककस्स', अ आ प्रत्ये 'सावककस्स' ताप्रती 'सावक (?) ककस्स' इति पाठ ।

यस्स [उक्कस्स] द्विदिवधासमवादो । ण जहण्णय पि वधति, उक्कट्टविसोहीए अभावादो । तम्हा सादस्स तिद्धाननधा जीवा णाणावरणादीणम^१हण्णमणुक्कस्सिय द्विदिं वधति त्ति उच ।

सादस्स विद्धानवधा जीवा सादस्स चैव उक्कस्सिय द्विदिं वधति ॥ १७७ ॥

सादस्स विद्धानवधया जीवा जेण उक्कट्टसकिलेसा तेण सादस्स उक्कस्सिय द्विदिं वधति, णै णाणावरणीयस्स, ओधुक्कस्ससकिलेसामावादो । ण च सादवधपाओग्गउक्कस्ससकिलेमेण णाणावरणीयस्स उक्कस्सद्विदिं^२ वधदि, पिरोहादो । ण च सादस्स विद्धानवधया मन्वे वि साहुक्कस्सद्विदिं^३ पण्णारससागरोवमकोडाकोडिमेत्त वधति^४, तत्थं अणुक्कस्सद्विदिवधस्स वि उवलमादो । तम्हा अजोगववच्छेदो एत्थ कायन्वो । अत्रोपयोगिणौ श्लोकौ विशेषण-विशेष्याम्यां क्रियया च सहोदित । पार्यो धनुर्धरो नील सरोजमिति वा यर्या ॥७॥ अयोगमपरैर्योगमत्यन्तायोगमेव^५ च । व्यवच्छिन्ननि धर्मस्स निपातो व्यतिरेचक ॥ ८ ॥

उत्कृष्ट सकलेशके बिना ज्ञानावरणीयके [उत्कृष्ट] स्थितिवधकी सम्भावना नहीं है । उसकी जगह स्थितिको भी नहीं बाधते हैं क्योंकि उनके उत्कृष्ट मिश्रद्धिका अभाव है । अतएव त्रिस्थानबन्धक जीव ज्ञानावरणादिकोंकी अजयन्त्य अनुत्कृष्ट स्थितिको बाधते हैं, ऐसा कहा गया है ।

साताके द्विस्थानबन्धक जीव सातावेदनीयकी ही उत्कृष्ट स्थितिको बाधते हैं ॥१७७॥

सातावेदनीयके द्विस्थानबन्धक जीव चूकि उत्कृष्ट सकलेशके सयुक्त होते हैं अतः वे साता वेदनीयकी उत्कृष्ट स्थितिको बाधते हैं, न कि ज्ञानावरणकी उत्कृष्ट स्थितिको, क्योंकि, यहा साम्राय उत्कृष्ट सकलेशका अभाव है । साताके बन्ध योग्य उत्कृष्ट सकलेशके ज्ञानावरणीयकी उत्कृष्ट स्थितिका बन्ध नहीं हो सकता, क्योंकि, इसमें विरोध है । दूसरे, साता वेदनीयके द्विस्थानबन्धक सभी जीव सातावेदनीयकी पद्मद कोडानोडि सागरोवम प्रमाण उत्कृष्ट स्थितिको नहीं बाधते हैं, क्योंकि उनमें उसका अनुत्कृष्ट स्थितिवन्ध भी पाया जाता है । इस कारण यहा अयोग्यवच्छेद करना चाहिये । यहा उपयोगी दो श्लोक—

निपात अर्थात् एवकार व्यतिरेचक अर्थात् निवर्तक या नियामक होता है । विशेषण, विशेष्य और क्रियाके साथ कहा गया निपात क्रमसे अयोग, अपरयोग (अचयोग)

१ अ-का-ताप्रतिपु 'सकिलेसेहि वि णाणावरणीयस्स' इति पाठ । २ अ-का-ताप्रतिपु 'ण' इत्येतदपद नास्ति, मप्रती स्वस्ति तत् । ३ प्रतिपु 'उक्कस्सद्विदि' इति पाठ । ४ आप्रती 'सागरोवममेत्त कोडाकोडी वमन्ति' इति पाठः । ५ अप्रती 'तस्स' इति पाठ । ६ आप्रती 'वामया (१)' इति पाठ । ७ अ-का-प्रत्यो '-योगमेव' इति पाठ । ८ प्रमाणवार्तिक ४-१९० ।

असादस्स वेट्टाणवधा जीवा सत्याणेणं णाणावरणीयस्स
जहण्णिय द्विदिं वधतिं ॥ १७८ ॥

असादवधणसु वेट्टाणवधया जीवा अइविसुद्धा मदकमाइत्तादो जहण्णद्विदिकारण-
परिणामेहि सजुत्तां, तेण णाणावरणीयस्स जहण्णिय द्विदिं वधति । जहण्णद्विदिं वधता वि
ओघनहण्णिय द्विदिं ण वधति ति जाणावणट्ठ सत्याणेण णाणावरणीयस्स जहण्णिय द्विदिं
वधति ति भण्णिद । सत्याणेण णाणावरणीयस्स का जहण्णद्विदिं णाम ? असादेण सह

और अत्यन्तायोगका व्यवच्छेद करता है । जैसे—‘पार्थो धनुर्धरः’ और ‘नील सरोजम्’
इन वाक्योंके साथ प्रयुक्त पदकार ॥ ७-८ ॥

विशेषार्थ—विशेषणके साथ प्रयुक्त पदकार अयोगव्यवच्छेदका बोधक होता है ।
जैसे—‘पार्थो धनुर्धर एव’ अर्थात् पार्थ धनुषधारी ही है, इस वाक्यमें प्रयुक्त पदकार
पार्थमें अधनुर्धरत्वकी आशकाको दूरकर धनुषधरत्वका विधान करता है । अतः यह
अयोगव्यवच्छेदका बोधक है । विशेषके साथ प्रयुक्त पदकार अयोगव्यवच्छेदका बोधक
होता है । जैसे—‘पार्थ एव धनुर्धर’ अर्थात् अर्जुन ही एक मात्र धनुर्धर है, इस
वाक्यमें प्रयुक्त पदकार अर्जुनमें जो अन्य धनुषधरोंकी अपेक्षा सातिशय धनुषधरत्व विद्यमान
है उसका अर्थ पुरुषोंमें निषेध करता है । अतएव यह अयोगव्यवच्छेदका बोधक है ।
त्रियापदके साथ प्रयुक्त पदकार अत्यन्तायोगव्यवच्छेदका बोधक होता है । जैसे—
‘नील सरोज भवायेव’ अर्थात् सरोज नील होता ही है, इस वाक्यमें प्रयुक्त पदकार
सरोजमें नीलत्वके अत्यन्ताभावका व्यवच्छेदक होनेसे, अत्यन्तायोगव्यवच्छेदका बोधक
है । (देखिये न्यायकुमुदचंद्र भा २ पृ ६२३)

असातावेदनीयके द्विस्थानवधक जीव स्वस्थानसे ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिको
बोधते हैं ॥ १७८ ॥

असातवधकोंमें द्विस्थानवधक जीव अतिशय विशुद्ध होते हुए, मदकपायी होनेसे
चूँकि जघन्य स्थितिके कारणभूत परिणामोंसे सयुक्त हैं, इसीलिये वे ज्ञानावरणकी जघन्य
स्थितिको बोधते हैं । जघन्य स्थितिको बोधते हुए भी वे ओघ अथवा स्थितिको नहीं
बोधते हैं, इस बातके ज्ञापनार्थ ‘स्वस्थानसे ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिको बोधते हैं’
वेसा कहा गया है ।

उक्ति—स्वस्थानसे ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थिति फिले कहते हैं ।

१ अ-आ-कप्रतिषु ‘संठाणेण’ इति पाठ । २ तथा इतरासां परावर्तमानाश्चमप्रकृतीनां ये
द्विस्थानगत रसे व्रजन्ति ते ध्रुवप्रकृतीनां वधन्या स्थिति स्वस्थाने, स्वविशुद्धिभूमिकानुसारेणेत्यर्थ, व्रजन्ति ।
परावर्तमानाश्चमप्रकृतिस्तद्विस्थानगतवसवधैरुविशुद्धयनुसारेण जघन्या स्थिति व्रजन्ति, न स्वविवधन्या
मित्यर्थ । जघन्यस्थितिवधो हि, ध्रुवप्रकृतीनामेकान्तविशुद्धौ सम्भवति, न च तदानीं परावर्तमानाश्चम
प्रकृतीनां वधा सम्भवति । क म (म टी) १, १२ । ३ प्रतिषु ‘संजुत’ इति पाठः ।

धपाओग्गा णाणावरणीयम्म मन्वहण्णट्टिदी सा सत्याणहण्णा णाम । तिस्से धपा ति उच्च होदि

असादस्स तिट्ठाणवधा जीवा णाणावरणीयस्म अजहण्ण-अणुक्कस्सिय ट्टिदिं वधति ॥ १७९ ॥

कुदो ? ण ताव उक्कस्सिय ट्टिदिं वधति, उक्कस्समक्किन्हेसाभावादो । ण जहण्णिय पि, अद्विमुद्धपरिणामाभावादो । तम्हा णाणावरणीयस्म अजहण्ण-अणुक्कस्सियं चेव ट्टिदिं असादत्तिट्ठाणवधा जीवा वधति ति सिद्ध ।

असादस्स चउट्ठाणवधा जीवा असादस्स चेव उक्कस्सियं ट्टिदिं वधति ॥ १८० ॥

जेण असादस्स चउट्ठाणवधा जीवा तित्त्वमक्किन्हेसा तेण असादस्स उक्कस्सिय ट्टिदिं वधति । एत्थ चेव सरो अवि-सद्वे वट्टे । तेण णाणावरणादीण पि उक्कस्सिय ट्टिदिं वधति ति घेतन्व, अण्णहा तदुक्कस्समट्टिदीण वधकारणाभावपसगादो । एव

समाधान—असातावेदनीयके साथ वधके योग्य जो ज्ञानावरणीयकी सबसे अजघन्य स्थिति है वह स्वस्थान जघन्य स्थिति बही जाती है ।

उच्च जीव उसी स्थितिके बाधक हैं यह अभिप्राय है ।

असातावेदनीयके त्रिस्थानवधक जीव ज्ञानावरणीयकी अजघन्य अनुत्कृष्ट स्थितिको बाधते हैं ॥ १७९ ॥

कारण यह कि ये उत्कृष्ट स्थितिको तो बाधते नहीं हैं, क्योंकि, उनके उत्कृष्ट सक्लेशका अभाव है । न जघन्य स्थितिको भी बाधते हैं क्योंकि, उनके अत्यंत विमुद्ध परिणामोंका अभाव है । इस कारण असातावे त्रिस्थानवधक जीव ज्ञानावरणीयकी अजघन्य अनुत्कृष्ट स्थितिको ही बाधते हैं, यह सिद्ध है ।

असाता वेदनीयके चतुस्थानवधक जीव असातावेदनीयकी ही उत्कृष्ट स्थितिको बाधते हैं ॥ १८० ॥

चूंकि असाता वेदनीयके चतुस्थानवधक जीव तीव्र सफल्यसे संयुक्त होते हैं, अतएव ये असाता वेदनीयकी उत्कृष्ट स्थितिको बाधते हैं । यहाँ सूत्रमें प्रयुक्त 'वेध' शब्द 'अपि' शब्दके अर्थमें धर्तमान है । इसीलिये ये ज्ञानावरणादिकोंकी भी उत्कृष्ट स्थितिको बाधते हैं, ऐसा ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, इसके बिना उनके उत्कृष्ट स्थितिवधके कारणोंके अभावका प्रसंग आवेगा । इस प्रकार साता व असाता वेदनीयके

१ ये पुन परावर्तमानाश्चमप्रकृतीनां त्रिस्थानगतस्य रसस्य बाधकारत्वे भ्रुवप्रकृतीनामबध्नां स्थितिं वधति । क प्र (म टी) १, १२ । २ तथा ये परावर्तमानाश्चमप्रकृतीनां चतुस्थानगत रस वधन्ति ते भ्रुवप्रकृतीनामुत्कृष्टां स्थितिं निवर्तयन्ति । क प्र (म टी) १, १२ ।

सादासादाण चउट्टाण तिट्ठाण विट्ठाणाणुभागवधेसु द्विदीण सकिल्लेस विसोदीण च पमाणं पम्पिय सपहि द्विदीयो आधार कादूण तस्य द्विदीवाण सेडिपरुवणट्टमुत्तरसुत्त मण्णि—

तेसिं दुविहा सेडिपरुवणा अणंतरोवणिधा परंपरो-
वणिधा ॥ १८१ ॥

एद सुत्त देमामासिय, मेडिपरुवण मणिदूण परुवणा-पमाण-अवहार भागाभाग-
अप्यावहुगाण सूचयतादो । तेण ताव परुवणादीण पणवणा कीरदे । त जहा- सादस्स
चउट्टाणवधया तिट्ठाणवधया विट्ठाणवधया असादस्स विट्ठाणवधया तिट्ठाणवधया चउ-
ट्टाणवधया णाणावरणीयस्स सग-सगनहणियाए द्विदीए अत्थि जीना भिदियाए ठिदीए
अत्थि जीना एव णेयव्व जाव अप्पणो उक्कस्सट्ठिदि ति । परुवणा गदा ।

सादस्स चउट्टाण तिट्ठाण विट्ठाणवधया असादस्स विट्ठाण तिट्ठाण-चउट्टाणवधया
णाणावरणीयस्स सग-सगनहणियाए द्विदीए जीवा पदरस्स असवेज्जदिभागमेत्ता, भिदियाए
ठिदीए पदरस्स असवेज्जदिभागमेत्ता, एव णेदव्व जाव अप्पणो उक्कस्सट्ठिदि ति ।
सादविट्ठाणिय जवमज्जादो असादचउट्टाणियवमज्जादो च उवरिमट्ठिदीसु कय नि
सेगीए अमखेज्जदिभागमेत्ता जीवा किण्ण होंति ति उत्ते- ण होंति । किं कारण ? अप्पणो
चतु स्थान, त्रिस्थान और द्विस्थान रूप अनुभाग-वर्षोंमें स्थितियों एवं स्वप्नेश य
निश्चिद्विषये प्रमाणकी प्ररूपणा करके अथ स्थितियोंका आशय करके उनमें स्थित जीवोंकी
श्रेणिप्ररूपणा करनेसे लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

उनकी श्रेणिप्ररूपणा दो प्रकार है—अनन्तरोपनिधा और परम्परोपनिधा ॥१८१॥

यह सूत्र दशमश्लोक है, क्योंकि, यह श्रेणिप्ररूपणाको बढ़कर प्ररूपणा, प्रमाण,
अवहार भागाभाग और अद्वैतव्य अनुयोगद्वारोंका सूत्रक है । अतएव पहिले प्ररूपणा
आदिक अनुयोगद्वारोंका प्रकाशन किया जाता है । यथा—सातावेदनीयके चतु स्थानवन्धक,
त्रिस्थानवन्धक और द्विस्थानवन्धक तथा असातावेदनीयके द्विस्थानवन्धक त्रिस्थानवन्धक
और चतुस्थानवन्धक शानावरणीयकी अपनी अपनी जघन्य स्थितिमें जीव हैं । द्वितीय
स्थितिमें जीव हैं । इस प्रकार अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थिति तक ले जाना चाहिये ।
प्ररूपणा समाप्त हुई ।

सातावेदनीयके चतु स्थानवन्धक, त्रिस्थानवन्धक और द्विस्थानवन्धक तथा
असाता वेदनीयके द्विस्थानवन्धक, त्रिस्थानवन्धक और चतु स्थानवन्धक जीव
शानावरणीयकी अपनी अपनी जघन्य स्थितिमें जगत्प्रत्येके अस्तव्यतर्षे भाग प्रमाण हैं ।
द्वितीय स्थितिमें जीव प्रत्येके अस्तव्यतर्षे भाग प्रमाण हैं । इस प्रकार अपनी अपनी
उत्कृष्ट स्थिति तक ले जाना चाहिये ।

शर्का—साता वेदनीयके द्विस्थानिक यथमप्यसे तथा असातावेदनीयके चतु
स्थानिक यथमप्यसे उपरकी स्थितियोंमें कहींपर भी जगत्श्रेणिके अस्तव्यतर्षे भाग
प्रमाण जीव नहीं होते ।

जहण्णद्विदीए जीवेहि समाणजमज्जउवरिमद्विदिजीवा पदरस्स असखेज्जदिभागमेत्ता, तमरासिम्मि तिण्णिगुणहाणिगुणिदपल्लिदोवमस्स असखेज्जदिभागेण भागे हिदे सेडीए असखेज्ज-दिभागमेत्तमेडीणमुवलभादो । ण च एदेसु पदरस्स असखेज्जदिभागमेत्तनीवेसु पल्लिदोवमस्स असखेज्जदिभागमेत्तद्वाण गत्तण अद्धद्वेण ज्जीयमाणेसु अवसाणे सेडीण असखेज्जदिभागमेत्त होदि, उवरिमअण्णोण्णम्मत्थरासिणा पल्लिदोवमस्स असखेज्जदिभागेण पदरस्स असखेव-दिमाणे भागे हिदे असखेज्जसेडिमेत्तनीवोवलभादो । उवरिमणाणागुणहाणिसलागाओ सेडिछेदणाहिंतो बहुगाओ त्ति के वि आइरिया मणति । तेसिमाइरियाणमहिप्पाएण सेडीए असखेज्जदिभागमेत्ता जीवा उवरि त्तापाओग्गासखेज्जगुणहाणीयो गत्तण होति । ण च एन, वस्साणे अण्णोण्णम्मत्थरासिस्स पल्लिदोवमस्स असखेज्जदिभागत्तुवलभादो । पमाणपरुवणा गदा ।

अणतरोवणिधाए सादस्स चउट्टाणवधा तिट्टाणवधा जीवा
असादस्स विट्टाणवधा तिट्टाणवधा जीवा णाणावरणीयस्स जहण्णि-
याए द्विदीए जीवा थोवां ॥ १८२ ॥

समाधान—उक्त श्लोकके उत्तरमें कहते हैं कि वे धेणिके असख्यातवें भाग प्रमाण नहीं होते हैं । कारण यह कि अपनी अपनी जगह स्थितिके जीवोंके समान यक्षमध्यसे उपरिम स्थितियोंके जीव प्रतरके असख्यातवें भाग प्रमाण हैं, क्योंकि, प्रस राशिमें तीन गुणहानियोंसे गुणित पल्लोपमके असख्यातवें भागका भाग देनेपर धेणिके असख्यातवें भाग प्रमाण जगधेणियाँ लब्ध होती हैं । परन्तु प्रतरके असख्यातवें भाग मात्र इन जीवोंके पल्लोपमके असख्यातवें भाग मात्र अध्वान जाकर अर्ध अर्ध भागसे हीन होनेपर अतमें उनका प्रमाण धेणिके असख्यातवें भाग मात्र रहता है, क्योंकि, पल्लोपमके असख्यातवें भाग प्रमाण उपरिम अन्योन्याभ्यस्त राशिका प्रतरके असख्यातवें भागमें भाग देनेपर असख्यात धेणियों प्रमाण जीव उपलब्ध होते हैं ।

उपरकी नानागुणहानिशलाकायें धेणिके अर्धच्छेदोंसे बहुत हैं, ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं । उन आचार्योंके अभिप्रायसे धेणिके असख्यातवें भाग प्रमाण जीव आगे तत्प्रायोग्य असख्यात गुणहानिया जाकर हैं । परन्तु ऐसा नहीं है, क्योंकि, इस ध्याख्यानमें अन्योन्याभ्यस्त राशि पल्लोपमके असख्यातवें भाग प्रमाण पायी जाती है । प्रमाणपरुवणा समाप्त हुई ।

अनन्तरोपनिधाकी अपेक्षा साता वेदनीयके चतु स्थाननधक व त्रिस्थाननधक जीव, असातावेदनीयके द्विस्थाननधक व त्रिस्थानवधक जीव तथा ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिके जीव स्तोक हैं ॥ १८२ ॥

१ अ भा का प्रतिपु 'अदेण' इति पाठ । २ ताप्रती 'पदरस्स असखेज्जदिभागे' इत्येतावान् पाठो नास्ति । आप्रती 'असखे भागेण भागे हिदे' काप्रती 'असखेज्जदिभागे हिदे' इति पाठ । ३ ताप्रती 'विट्टाणविट्टाणवधा' इति पाठ । ४ योवा जहण्णियाए इति विवेकाहिंओ दक्षिणार ।

सादस्स चउट्टाणाणुभागवपाओग्गट्टिदीयो सागरोरमसदपुपत्तमेताओ । ताओ
 पुद्धीए पुव द्वविय, तिट्टाणाणुभागवपाओग्गाओ सागरोरमनपुपत्तमेताओ, एताओ
 वि पुव द्वविय, एवमसादस्स तिट्टाणनिट्टाणाणुभागवपाओग्गसागरोरमनपुपत्तमेताट्टिदीयो
 च पुव द्वविय, तस्य एमि चट्टुणा पि पतीण'णाणावरणीयस्स जइणियाण ट्टिदीए
 जीवा योवा, तससामिस्स सुवेज्जदिभागमेवे स्वट्टिदिपतिअण्यतो द्विदजीवगमिं
 तिण्णिगुणहाणिगुणिट्ठपल्लिवमस्स असवेज्जदिभागो भागे द्विदे जइण्णट्टिदिजीवाण
 पमाणुत्तमादो ।

विदियाए ट्टिदीए जीवा निसेसाहिया ॥ १८३ ॥

कुदो ? एगुणहाणियद्वाणममवेअपल्लिदोरमपट्टमरग्गमूत्तमेत निरित्थि जइण्णट्टिदि-
 जीवे समसइ करिय निरलणम्मव पडि दाइण तप एगसंत्तमेतेण अहियत्तुत्तमादो ।
 एगुणअद्वाण चैव भागहारो होदि ति कप णव्वे ? पसरेशाणं दुगुणत्तुत्तमादो । ते पि
 कुदो ? अण्णहा जमज्जभावाणुत्तमादो ।

साता वेदनीयकी चतु स्थानानुभागवधके योग्य शतपृथक्त्व सागरोरम प्रमाण
 स्थितिया हैं । उनको बुद्धिसे पृथक् स्थापित करके उसीकी त्रिरथानानुभागवधके योग्य
 जो शतपृथक्त्व सागरोरम प्रमाण स्थितियां हैं इनको भी पृथक् स्थापित करके, इसी
 प्रकार असाता वेदनीयकी द्विरथान व त्रिरथा रूप अनुभागवधके योग्य शतपृथक्त्व
 सागरोरम प्रमाण स्थितियोंको पृथक् स्थापित करके उनमें इन चारो ही प्रमाणों
 पक्षियोंके शानावरणीयकी जघन्य स्थितिके जीव श्लोक हैं, क्योंकि, जस राशिके
 सख्यातयें भाग एक एक पक्षिके भीतर स्थित जीवराशिमें तीण गुणहानिगुणित पत्त्योपमके
 असख्यातयें भागका भाग देनेपर जघन्य स्थितिके जीवोंका प्रमाण उपलब्ध होता है ।

द्वितीय स्थितिके जीव विशेष अधिक हैं ॥ १८३ ॥

इसका कारण यह है कि पत्त्योपमके असख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण एकगुणहानि
 अध्यानका विरलन कके जघन्य स्थितिके जीवोंको समगण्ड करके प्रत्येक विरलन रूपके
 ऊपर देकर उनमेंसे एक गण्डके प्रमाणसे उनमें अधिकता पायी जाती है ।

शका—एकगुणहानिअध्यात ही भागहार होता है, यह कैसे जाना जाता है ।

समाधान—प्रक्षेपोंम दुगुणताकी उपलब्धि होनेसे जाना जाता है कि एक
 गुणहानिअध्यान ही भागहार होता है ।

शका—यह भी कहासे जाना जाता है ?

जीवा विसेसहीण उदरिधपुइत्त मो जाय ॥ एव तिट्ठाणकरा विट्ठाणकरा य आ सुमुक्कोला । अमुमाने
 विट्ठाणे ति-चउट्टाणे व उक्केला ॥ क म १,९३-९४ । परावर्तमानानां शुभप्रकृतीनां चतुरथानगतरस
 बभूवा सन्तां शानावरणीयानां शुभप्रकृतीनां बभूवयिषीते बभूवत्वेन वर्तमाना जीवा स्तोका (म २) ।
 १ अमत्रो ' पि कग्माण परीण' इति पाठ । २ मप्रतिपाठाऽयम् । अ का-ताप्रतिपु ' जीवराशी
 तिण्णि', आप्रतो ' जीवराशितिण्णि' इति पाठः ।

तदियाए द्विदीए जीवा विसेसाहिया ॥ १८४ ॥

केत्तियमेतेण ? एगविसेसमेतेण । एव उवरिं पि एगेगजीवविसेसमहिय काइण णेदध्व ।

एव विसेसाहिया विसेसाहिया जाव सागरोवमसदपुधत्तं ॥ १८५ ॥

सागरोमसदपुधत्तवयेण चदुण्ण पि जवमज्झाण हेट्ठिमअद्दाणपमाण जाणाविद । एव विसेसो अणवट्ठिदो दट्ठव्यो, गुणहाणिं पडि टुगुणक्कमेण विसेमाण वड्ठिदसादो ।

तेण पर विसेसहीणा विसेसहीणा जाव सागरोवमसद-
पुधत्त ॥ १८६ ॥

एदेण सागरोमसदपुधत्तवयेण चदुण्ण जवमज्झाण उवरिमअद्दाणपमाण जाणा-
विद । जवमज्झउवरिमगुणहाणीयो नि हेट्ठिमगुणहाणीहि अद्दाणपमाणेण समाणाओ ।
जीवविमेमा पुण अणवट्ठिदा, अद्दद्वरुमेण गुणहाणिं पडि तेसिं गमणुवलमादो ।

समाधान—चूँकि इसने बिना यवमध्यपत्र बनता नहीं है, इसलिये उनका दुगुणरव
निश्चित होता है ।

तृतीय स्थितिमें जीव विशेष अधिक हैं ॥ १८४ ॥

कितने प्रमाणसे ये अधिक हैं ? ये एक विशेष मात्रसे अधिक हैं । इसी प्रकार आगे
भी एक एक जीवविशेषको अधिक करने के जाना चाहिये ।

इस प्रकार शतपृथक्त्व सागरोपमों तक विशेष अधिक विशेष अधिक
ही हैं ॥ १८५ ॥

‘शतपृथक्त्व सागरोपम’ के कहनेसे चारों ही यवमध्योंके अधस्तन अध्वानका
प्रमाण बतलाया गया है । यहाँ विशेषको अनवस्थित समझना चाहिये, क्योंकि, प्रत्येक
गुणहानिके प्रति दुगुणे प्रमसे विशेषोंकी वृद्धि देयी जाती है ।

उसके आगे शतपृथक्त्व सागरोपमों तक विशेष हीन विशेष हीन हैं ॥ १८६ ॥

इस ‘सागरोपमशतपृथक्त्व’ के कहनेसे चारों यवमध्योंके उपरिम अध्वानका
प्रमाण बतलाया गया है । यवमध्यसे ऊपरकी गुणहानिया भी अध्वानप्रमाणकी अपेक्षा
नीचेकी गुणहानियोंके समान हैं । परन्तु जीवविशेष अनवस्थित हैं, क्योंकि, प्रत्येक
गुणहानिके प्रति उनकी आधे आधे प्रमसे प्रवृत्ति देयी जाती है ।

१ ततो द्वितीयस्या स्थितौ विशेषाधिका । ततोऽपि तृतीयस्या स्थितौ विशेषाधिका । एव
तावद्विशेषाधिका वक्तव्या यावत्प्रभूतानि सागरोमसदुत्पत्तिप्रान्तानि भवन्ति । तत पर विशेषहीना
विशेषहीनास्तावद्वक्तव्या यावद्विशेषहानावपि ‘उदहिष्यपुद्गुत्तं चि’ प्रभूतानि सागरोपमगतानि भवन्ति ।
‘ओ’ इति पादश्लोके । पृथक्त्वशब्दोऽप बहुत्ववाची । यदाह चूर्णिकृत—पुद्गुत्तमसो बहुत्ववाचीति ।
इति । क प्र (म टी) १, ११ ।

सादस्स विट्ठाणवधा जीवा असादस्स चउट्ठाणवंधा जीवा
णाणावरणीयस्स जहण्णिणाए द्विदीए जीवा थोवा ॥ १८७ ॥

कुदो ? जहण्णट्ठाणजीवेहितो विसेसाहियकमेण उवरिमद्विदिजीवाण वड्ढिसणादो ।

विदियाए द्विदीए जीवा विसेसाहिया ॥ १८८ ॥

केत्तियमेतो विसेसो ? एगजीवविसेसमेतो । को पडिमागो ? एगदुगुणवड्ढिअट्ठाण ।

तदियाए द्विदीए जीवा विसेसाहिया ॥ १८९ ॥

को विसेसो ? रूनाहियगुणहाणीए खडिदएगखडमेतो ।

एव विसेसाहिया विसेसाहिया जाव सागरोवमसंद-
पुधत्त ॥ १९० ॥

एदेण सागरोवमसंदपुधत्तणिदेसेण जवमज्झाण हेट्ठिमअट्ठाण जाणाविद । एत्य
गुणहाणिअट्ठाणाण पमाणभवट्ठि । जीवविसेसा पुण अणवट्ठिदा, गुणहाणिं पडि दुगुण-
दुगुणकमेण तेसिं वड्ढिसणादो ।

तेण पर विसेसहीणा विसेसहीणा जाव सादस्स असादस्स
उक्कस्सिया द्विदि त्ति ॥ १९१ ॥

साताके द्विस्थानअधक जीव और असाताके चतु स्थानअधक जीव... ज्ञाना-
वरणीयकी अधन्य स्थितिमें स्तोक हैं ॥ १८७ ॥

इसका कारण यह है कि अधन्य स्थितिके जीवोंकी अपेक्षा उपरिम स्थितियोंके
जीवोंके विशेष अधिक प्रमसे वृद्धि देखी जाती है ।

द्वितीय स्थितिमें जीव विशेष अधिक हैं ॥ १८८ ॥

विशेष कितना है ? यह एक जीवविशेषके बराबर है । प्रतिभाग क्या है ? एक
दुगुणवृद्धिअध्यान प्रतिभाग है ।

तृतीय स्थितिमें जीव विशेष अधिक हैं ॥ १८९ ॥

विशेष क्या है ? एक अधिक गुणदानिका द्वितीय स्थितिमें भाग देनेपर जो एक
भाग प्राप्त हो उतना विशेषका प्रमाण है ।

इस प्रकार शतपृथग्व्य सागरोपम प्रमाण स्थिति तक जीवोंका प्रमाण विशेष
अधिक विशेष अधिक होता गया है ॥ १९० ॥

‘शतपृथग्व्य सागरोपम’ इस निदेशसे यथमर्थके अधस्तन अध्यानको बतलाया
गया है । यहा गुणदानिअध्यानोंका प्रमाण अधस्थित है । पर तु जीव विशेष अनवस्थित
हैं, प्रत्येक गुणदानिके अनुसार उनके दुगुण दुगुण वृद्धि देखी जाती है ।

इसके आगे माता व असाता बैदनीयकी उत्कृष्ट स्थिति तक वे विशेष हीन विशेष
हीन होते गये हैं ॥ १९१ ॥

। एदेसिं दोण्ण जवमज्जाण पुध परुवणा किमद्द कदा ? पुच्चिल्लचटुण्ण जवमज्जाण जवमज्जादो हेट्ठिम-उवरिमअद्धानाणि सागरोवमसदपुधत्तमेत्ताणि चेत्त, एदेसिं दोण्ण जवमज्जाण हेट्ठिमअद्धानाणि सागरोवमसदपुधत्तमेत्ताणि, उवरिमअद्धानाणि पुण पण्णारस-तीसमागरोवमकोडाकोडिमेत्ताणि ति जाणावणट्ठ पुध परुवणा कदा । एत्थ छण्ण पि जवमज्जाण एगेगुणह्वाणिअद्धान समाण । कुदो । गुरूवएसादो । णाणागुणहोणिसला-गाओ पुण असमाणाओ, जवमज्जे हेट्ठिमउवरिमअद्धानाण अण्णोणसमाणात्ताभावादो । एत्थ सदिट्ठी एसा १६।२०।२४।२८।३२।४०।४८।५६।६४।७२।८०।८८।९६।१०४।११२।१२०।१२८।१३६।१४४।१५२।१६०।१६८।१७६।१८४।१९२।२००।२०८।२१६।२२४।२३२।२४०।२४८।२५६।२६४।२७२।२८०।२८८।२९६।३०४।३१२।३२०।३२८।३३६।३४४।३५२।३६०।३६८।३७६।३८४।३९२।४००।४०८।४१६।४२४।४३२।४४०।४४८।४५६।४६४।४७२।४८०।४८८।४९६।५०४।५१२।५२०।५२८।५३६।५४४।५५२।५६०।५६८।५७६।५८४।५९२।६००।६०८।६१६।६२४।६३२।६४०।६४८।६५६।६६४।६७२।६८०।६८८।६९६।७०४।७१२।७२०।७२८।७३६।७४४।७५२।७६०।७६८।७७६।७८४।७९२।८००।८०८।८१६।८२४।८३२।८४०।८४८।८५६।८६४।८७२।८८०।८८८।८९६।९०४।९१२।९२०।९२८।९३६।९४४।९५२।९६०।९६८।९७६।९८४।९९२।१०००।

परपरोवणिधाए सादस्स चउट्ठाणवधा तिट्ठाणवधा जीवा असादस्स विट्ठाणवधा तिट्ठाणवधा णाणावरणीयस्स जहण्णियाए द्विदीए जीवेहिंतो तदो पल्लिदोवमस्स असखेज्जदिभाग गंतूण दुगुणवड्ढिदो ॥ १९२ ॥

तदो जहण्णट्ठाणजीवेहिंतो ति [उत्त] होदि । जहण्णट्ठाणजीवेहिंतो दुगुणत्त

शंका—इन दो यवमध्योंकी पृथक् प्ररूपणा किमलिये की गई है ?

समाधान—पूर्व चार यवमध्यों सम्बन्धी यवमध्मसे नीचे व ऊपरके अध्यान शतपृथक्त्व सागरोपम प्रमाण ही हैं, परन्तु इन दो यवमध्योंके नीचेके अध्यान शतपृथक्त्व सागरोपम प्रमाण और उपरिम अध्यान पद्म व तीस फोडाकोडि सागरोपम प्रमाण हैं इस बातको धतलानेके लिये उनकी पृथक् प्ररूपणा की गई है ।

यहां छहों यवमध्योंकी एक एक गुणहानिका अध्यान समान है, क्योंकि, पेसा गुरुका उपदेश है । परन्तु नानागुणहानिशलाकार्ये असमान हैं, क्योंकि, यवमध्ममें नीचे व ऊपरके अध्यानोंके परस्पर समानता नहीं है । यहां उनकी स्वरूपि यह है—(मूलमें देखिये) इस प्रकार अनन्तरोपनिधा समाप्त हुई ।

परमरोपनिधाकी अपेक्षा साताके चतुस्थानन-धक व त्रिस्थानन-धक जीव तथा असाताके द्विस्थानन-धक व त्रिस्थानन-धक जीव ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिके जीवोंकी अपेक्षा उनमें पत्थोपमके असख्यातवें भाग जाकर दुगुणी वृद्धिको प्राप्त होते हैं ॥ १९२ ॥

‘तदो’ पदका अर्थ ‘जघन्य स्थितिके जीवोंकी अपेक्षा’ है । अर्थात् वे जघन्य

१ तापसो ‘असमाणाओ ति’, इति पाठ । २ पलासंखियमूलानि गत्तु दुगुणा व दुगुणहीणा व । नामैतराणि पल्लस मूलभागे अउल्लनो ॥ क प्र १, १५ । पल्ल ति—परावर्तमानश्रमप्रवृत्तीनां चतु स्थानगतसंबन्धका ध्रुवप्रवृत्तीनां बध्न्यस्थितौ बध्न्यत्वेन वर्तमाना ये धीयास्तदपेक्षया जघन्यस्थिते परत पत्थोपमस्वासंख्येयानि धर्ममूलानि—पत्थोपमस्वासंख्येयेषु धर्ममूलेषु धावन्त समयास्तावत्प्रमाणा स्थितौपनिष्क्रम्यान्तरे स्थितिरुपाने द्विगुणा भवन्ति (म. टी) ।

पडिवज्रमाणा । क पेक्खित्ठं दुग्गुणते पुच्छिदे जहण्णट्ठिणी जीवेहिंते ति भणित् होदि । एदेमिं ज्वमज्झाणणाणागुणहाणिसत्तागाहि अप्पणो अद्धाने भागे हिदे एगुणहाणि-अद्धाने होदि ति येत्तव । ज्वमज्झस्स हेट्ठा एका चेव गुणहाणी न होदि, अणेगाओ होति ति जाणावणट्ठमुत्तरसुत भणदि—

एव दुग्गुणवड्ढिदा दुग्गुणवड्ढिदा जाव ज्वमज्झ ॥ १९३ ॥

अवट्ठिमद्धाने गत्तुण दुग्गुणवड्ढी होदि ति जाणावणट्ठमेवमिदि णिदेसो कदो । ज्वमज्झस्स हेट्ठा गुणहाणीयो बहुगाओ होति ति जाणावणट्ठ विच्छाणिदेसो' कदो ।

तेण पर पल्लिदोवमस्स असखेज्जदिभागं गत्तुण दुग्गुण-हीणा ॥ १९४ ॥

ज्वमज्झादो उवरिमगुणहाणीयो आयामेण हेट्ठिमगुणहाणीहि समाणाओ । सेम सुगम ।

एव दुग्गुणहीणा दुग्गुणहीणा जाव सागरोपमसदपुधत्तं ॥ १९५ ॥

एदेसिं चट्ठुण ज्वमज्झाण हेट्ठिमभागो ज्व उवरिमभागो सागरोपमसदपुधत्तमेत्तो चेव होदि ति जाणावणट्ठ सागरोपमसदपुधत्तगहण क' । सेस सुगम ।

स्थितिके जीवोंकी अपेक्षा दुग्गुणी दुग्गुणी वृद्धिको प्राप्त होते हैं । किसकी अपेक्षा ये दुग्गुणे हैं, ऐसा पूछनेपर उत्तर देते हैं कि ये अधन्य स्थितिके जीवोंकी अपेक्षा दुग्गुणे हैं, यह अभिप्राय निकलता है । इन यवमध्योंकी नानागुणहानिशलाकाओंका अपने अपने अध्यानमें भाग देनेपर एक गुणहानिअध्यान प्राप्त होता है, -ऐसा ग्रहण करना चाहिये । यवमध्यके नीचे एक ही गुणहानि नहीं होती, किंतु ये अनेक होती हैं, इस बातका ज्ञापन करानेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

इस प्रकार यवमध्य तक ये दुग्गुणी दुग्गुणी वृद्धिको प्राप्त हुए हैं ॥ १९३ ॥

अवस्थित अध्यान जाकर दुग्गुणी वृद्धि होती है इस बातका परिज्ञान करानेके लिये 'पथ' पदका निर्देश किया गया है । यवमध्यके नीचे गुणहानिया बहुत होती हैं इस बातके ज्ञापनार्थ 'दुग्गुणवड्ढिदा दुग्गुणवड्ढिदा' यह धीप्सा (द्विरुक्ति) का निर्देश किया है ।

इसके आगे पयोपमके, असख्यातवै, भाग जाकर ये दुग्गुणी हानिको प्राप्त होते हैं ॥ १९४ ॥

यवमध्यसे ऊपरकी गुणहानिया आयामकी अपेक्षा समान हैं । शेष कथन सुगम है ।

इस प्रकार शतपृथक्त्व सागरोपम प्रमाण स्थितिके दुग्गुणी दुग्गुणी हानिको प्राप्त होते गये हैं ॥ १९५ ॥

इन चार यवमध्योंके अधस्तन भागके समान उपरिम भाग भी शतपृथक्त्व सागरोपम प्रमाण ही है, इस बातका परिज्ञान करानेके लिये सूत्रमें 'सागरोपमशतपृथक्त्व' का ग्रहण किया है । शेष कथन सुगम है ।

१ प्रतिपु 'मिच्छाणिदेसो' इति पाठ ।

सादस्स विट्ठाणवधा जीवा असादस्स चउट्ठाणवंधा जीवा
णाणावरणीयस्स जहणियाए द्विदीए जीवेहितो तदो पलिदोवमस्स
असखेज्जदिभाग गतूण दुगुणवडिढदा ॥ १९६ ॥

सुगममेद ।

एव दुगुणवडिढदा दुगुणवडिढदा जाव सागरोवमसद-
पुधत्त ॥ १९७ ॥

एद पि सुगम ।

तेण परं पलिदोवमस्स असखेज्जदिभाग गतूण दुगुण-
हीणा ॥ १९८ ॥

एद पि सुगम ।

एव दुगुणहीणा दुगुणहीणा जाव सादस्स असादस्स
उक्कस्सिया द्विदि ति ॥ १९९ ॥

एद पि सुगम ।

एगजीव-दुगुणवडिढ हाणिट्ठाणतरमसखेज्जाणि पलिदोवम-
वग्गमूलाणि ॥ २०० ॥

पुत्र गुणहाणीए आयामो सामण्णेण पन्विदो, विसेसेण विणा पदम्भं अन्वेदि-

सातावेदनीयके द्विस्थानमन्धक जीव व असातावेदनीयके चतुम्भान्धक जीव
ज्ञानावरणीयकी जघय स्थितिके जीवोंकी अपेक्षा उसमे पत्योपमके अन्धकार भाग
जाकर दुगुणी वृद्धिको प्राप्त होते गये हैं ॥ १९६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

इस प्रकार शतपृथक्त्व सागरोपमों तक दुगुणी दुगुणी वृद्धिको प्राप्त होने
गये हैं ॥ १९७ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

इसके आगे पत्योपमका असत्यातवा भाग जाकर वे दुगुणी वृद्धिको प्राप्त होते
गये हैं ॥ १९८ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

इस प्रकार साता व असाता वेदनीयकी उत्कृष्ट विविक्त दुगुणे दुगुणे हीन होते
गये हैं ॥ १९९ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

एकजीवदुगुणवृद्धि हानिस्थानान्तर पत्योपमके अन्धकार वगमूल प्रमाण है ॥ २०० ॥

पहिले सामान्य रूपसे गुणहानिके आयामका प्रकृति की गई है, अन्धकार

भागो ति उवड्वृत्तादो । सपथि तस्स अद्वाणस्स विसेसो एदेण सुतेण पत्तुविदो । असखेज्जाणि पल्लिदोवमवग्गमूलाणि ति भणिदे असखेज्जा पल्लिदोवमपढमवग्गमूलाणि ति पेत्तव्व, निदियादिवग्गमूलेसु वग्गिदेसु पल्लिदोवमाणुपत्तीदो ।

णाणाजीव दुगुणवड्ढिह-हाणिट्ठाणंतराणि पल्लिदोवमवग्गमूलस्स असखेज्जदिभागो ॥ २०१ ॥

पल्लिदोवमवग्गमूलस्स असखेज्जदि भागमेत्ताओ णाणागुणहानिमलागाओ होंति ति जदि नि सामण्णेण उत तो वि पल्लिदोवमअद्दछेदणएहिंतो योवाओ ति पेत्तव्व । कुदो ? एत्सिमण्णेण मत्थरासी पल्लिदोवमस्स असखेज्जदिभागो ति गुम्बदेत्तादो ।

णाणाजीव दुगुणवड्ढिह-हाणिट्ठाणंतराणि थोवाणि ॥ २०२ ॥

कुदो ? पल्लिदोवमादो असखेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि हेहा ओसरिय उप्पणत्तादो ।

एगजीव दुगुणवड्ढिह-हाणिट्ठाणतरमसखेज्जगुणं ॥ २०३ ॥

कुदो ? अमखेज्जपल्लिदोवमपढमवग्गमूलपमाणत्तादो । कम्मपदेसगुणहानीदो एसा जीवगुणहानी किं सरिसा किमसरिसा ति पुच्छिदे एद ण जाणिज्जे । कुदो ? सुत्तामा-वादो । एव सेडिपरूवणा समता ।

विशेषके बिना पत्योपमके असख्यातवें भाग प्रमाण है, ऐसा उपदिष्ट है। इस समय इस सूत्रके द्वारा उस अध्यायका विशेष धतलाया गया है। 'असखेज्जाणि पल्लिदोवमवग्गमूलाणि' ऐसा कहनेपर पत्योपमके असख्यात प्रथम धर्ममूलोंको ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि द्वितीयादि धर्ममूलोंका धरा करनेपर पत्योपम उत्पन्न नहीं होता है।

नानाजीवदुगुणवृद्धि-हानिस्थानान्तर पत्योपमके धर्ममूलके अमख्यातवें भाग प्रमाण हैं ॥ २०१ ॥

यद्यपि पत्योपमके धर्ममूलके असंबंधातवें भाग प्रमाण नानागुणहानिशलाकायें होती हैं ऐसा सामान्य रूपसे कहा गया है, तो भी वे पत्योपमके अर्धच्छेदोंसे स्तोक हैं, ऐसा ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, इनकी अपेक्षा अन्यस्त रानि पत्योपमके असंबंधातवें भाग प्रमाण है, ऐसा शुरुका उपदेश है।

नानाजीवदुगुणवृद्धि हानिस्थानान्तर स्तोक हैं ॥ २०२ ॥

क्योंकि वे पत्योपमसे असख्यात धर्मस्थान नीचे हटकर उत्पन्न हुए हैं।

एकजीवदुगुणवृद्धि-हानिस्थानान्तर असंयत्तगुणा है ॥ २०३ ॥

क्योंकि वह पत्योपमके असख्यात प्रथम धर्ममूलोंके धरावर है। कर्मप्रदेशोंकी गुणहानिकी अपेक्षा यह जीवगुणहानि क्या सदृश है या विसदृश है, ऐसा पूछनेपर उसका उत्तर प्राप्त नहीं होता क्योंकि, उसकी प्ररूपणा करनेवाला कोई सूत्र नहीं है। इस प्रकार श्रेणिप्ररूपणा समाप्त हुई।

जवमज्जनीवपमाणेण सन्नवीवा केवचिरेण कालेण अपहरिअति ? तिण्णिगुणहाणि-
द्वान्तरेण । छण्ण जवाणं जीवे अप्पणो जवमज्जनीवपमाणेण क्त्वे किंचणतिण्णिगुणहाणि-
मेत्ता होति । सदिट्ठीए सव्वदव्वमद्वतीसाहियछस्मदमेत्त ६३८ । किंचणतिण्णिगुणहाणीओ
एदाओ ३१९।३२ । एदाहि सव्वदव्वे भागे हिदे जवमज्जजीवपमाण होदि ६४ ।

पुणो छण्ण जवाण जवमज्जस्स हेट्टिमनहण्णद्विदिजीवपमाणेण सन्नजीवा केवचिरेण
कालेण अपहरिअति ? तिण्णिगुणहाणिगुणिदपलिदोवमस्स असखेअदिभागमेत्तेण । त जहा-
जीवनवमज्जस्स हेट्टिमणाणागुणहाणिमलागाओ (२) निरलिय विगुणिय अण्णोण्णन्मत्थे
क्त्वे पलिदोवमस्स असखेअदिभागो उप्पअदि (४) । पुणो एदेण किंचणतिसु गुणहाणीसु
गुणिदासु पलिदोवमस्स असखेअदिभागमेत्तगुणहाणिपमाण होदि (३१९।८) । पुणो
एदेण सन्नदव्वे भागे हिदे जहण्णद्विदिजीवपमाण होदि (१६) । पुणो एद परिहाणि कादूण
णेदव्व जाव पढमगुणहाणिचरिमद्विदिजीवेत्ति ।

पुणो विदियगुणहाणिपढमद्विदिजीवपमाणेण सन्नद्विदिजीवा केवचिरेण कालेण
अपहरिअति ? जहण्णद्विदिजीवभागहारादो अद्दमेत्तेण । कुट्ठो ? एगदुगुणवड्ढि चडिदो
ति एगस्व विरलिय विगुणिय अण्णोण्णन्मत्थं कादूण पुव्वभागहारे ओवद्विदे तदद्दुपत्तीदो

यथमध्यमे जीवोने प्रमाणसे सब जीव कितने कालके द्वारा अपहृत होते हैं ? उक्त
प्रमाणसे वे तीन गुणहानिस्थानांतरकालके द्वारा अपहृत होते हैं । छह यथोक्ते जीवोंको
अपने अपने यथमध्यजीवोके प्रमाणसे करनेपर वे कुछ कम तीन गुणहानियोके बराबर
होते हैं । सदृष्टिमें सध द्रव्यका प्रमाण छह सौ अदतीस (६३८) है । कुछ कम तीन गुणहा-
नियां ये हैं— $319 = 2 \times 159$ । इनका सब द्रव्यमें भाग देनेपर यथमध्यके जीवोंका प्रमाण होता है—
 $638 \div 319 = 2$ । $2 \times 159 = 318$ । छह यथोक्ते यथमध्यसे नीचेकी जघन्य स्थितिके
जीवोंके प्रमाणसे सब जीव कितने कालके द्वारा अपहृत होते हैं ? उक्त प्रमाणसे वे तीन
गुणहानियोसे गुणित पल्योपमके असव्यथातर्धे भाग मात्र कालके द्वारा अपहृत होते हैं ।
यथा जीवयथमध्यके नीचेकी नानागुणहानिशालाकाओं (२) का निरलन करके द्विगुणित
कर परस्पर गुणित करनेपर पल्योपमका असव्यथातया भाग (२×८=४) उत्पन्न होता है ।
इसके द्वारा कुछ कम तीन गुणहानियोको गुणित करनेपर पल्योपमके असव्यथातर्धे भाग
मात्र गुणहानियोका प्रमाण होता है— $319 \div 8 = 39.875$ । इसका सध द्रव्यमें भाग देनेपर
जघन्य स्थितिके जीवोंका प्रमाण होता है— $638 \div 319 = 2$ । $2 \times 159 = 318$ । इसी हानि
करके प्रथम गुणहानि सव्यधी अन्तिम स्थितिके जीवों तक ले जाना चाहिये ।

द्वितीय गुणहानिकी प्रथम स्थितिके जीवोंके प्रमाणसे सब स्थितियोंके जीव कितने
कालके द्वारा अपहृत होते हैं ? वे उक्त प्रमाण से जघन्य स्थिति सम्यन्धी जीवोंके
भागहारके मध भाग मात्रसे अपहृत होते हैं, क्योंकि, एक दुगुणवृद्धि आगे गये हैं, अत
एक अकका विरलन करके दुगुणा करके परस्पर गुणित करनेपर जो प्राप्त हो उससे पूर्व

३१९। १६। पुणो एदेण सव्वदव्वे भागे हिदे विदियगुणहाणिपढमट्टिदिजीवपमाण होदि
 ३२। पुणो परिहाणिं कादण णेदव्व जाव छण्ण जवाण सागरोवमसदपुधत्तमेत्तमुवारि चट्टिद्वण
 ट्टिदजवमज्जजीवपमाण पत्तं ति । पुणो तस्स भागहारो किञ्चण्णतिण्णिगुणहाणीयो
 ३१९। ३२। पुणो एदस्सुवारि पक्खेव कादण णेदव्व जाव छण्ण जवाण चरिमट्टिदिजीव-
 पमाण पत्तं ति । पुणो तप्पमाणेण अग्रहिरिज्जमाणे पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागमेत्तगुण-
 हाणिट्टाणत्तरेण कालेण अग्रहिरिज्जति । त जहा—जवमज्जाणमुवारिमणाणागुणहाणिसलागाण
 (४) अण्णोण्ण भत्थरासिणा (१६) तिण्णिगुणहाणीयो गुणिय किञ्चणे कट्टे पलिदोवमस्स
 असखेज्जदिभागमेत्तगुणहाणीयो भागहारो होदि ति (६३८। ५) । पुणो एदेण सव्वदव्वे
 भागे हिदे चरिमट्टिदिजीवपमाणमागच्छदि (५) । एव भागहारपस्खणा गदा ।

छण्ण जवाण जवमज्जजीवा सव्वजीवाण केवडियो भागो ? असखेज्जदिभागो । को
 पडिभागो ? किञ्चण्णतिण्णिगुणहाणीयो । एव जवमज्जस्स हेट्टोवरि जाणिद्वण भागाभाग-
 पस्खणा कायव्वा । भागाभागपस्खणा गदा ।

सव्वत्थोवा छण्ण जवाण चरिमट्टिदिजीवा ५ । तेसिं जहण्णट्टिदिजीवा असखेज्ज-
 गुणा । को गुणहारो ? पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागो । कुदो ? जवमज्जस्म उवारिम-

भागहारको अपवर्तित करनेपर उसका अर्ध भाग उत्पन्न होता है— $1 \times 2, 2^{2.5} - 2 = 2^{1.5}$ ।
 इसका सत्र द्रव्यमें भाग देनेपर द्वितीय गुणहानिकी प्रथम स्थितिके जीवोंका प्रमाण होता
 है— $636 - 2^{1.5} = 32$ । इतनी हानि करके छह यवोंके शतपृथग्भू सागरोपम प्रमाण आगे
 जाकर स्थित यत्रमध्य सम्यग्धी जीवोंका प्रमाण प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये । उसका
 भागहार कुछ कम तीन गुणहानियां हैं— $2^{2.5}$ । इसके आगे प्रक्षेप करके छह यवोंकी
 अन्तिम स्थिति सम्यग्धी जीवोंका प्रमाण प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये । उस प्रमाणसे
 अपहृत करनेपर ये पत्न्योपमके असख्यातथै भाग मात्र गुणहानिस्थानान्तरकालके द्वारा
 अपहृत होते हैं । यथा—यद्यमर्ष्योंकी उपरिम नानागुणहानिशलाकाओं (४) की
 अन्योन्याभ्यस्त राशि (१६) से तीन गुणहानियोंको गुणित करके कुछ कम करनेपर
 पत्न्योपमके असख्यातथै भाग मात्र गुणहानियां भागहार होती हैं $2^{1.5}$ । इसका सत्र
 द्रव्यमें भाग देनेपर अन्तिम स्थितिके जीवोंका प्रमाण (५) आता है । इस प्रकार
 भागहारप्ररूपणा समाप्त हुई ।

छह यवोंके यद्यमर्ष्यके जीव सत्र जीवोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं ? वे सत्र जीवोंके
 असख्यातथै भाग प्रमाण हैं । प्रतिभाग क्या है ? प्रतिभाग कुछ कम तीन गुणहानियां हैं ।
 इसी प्रकार यद्यमर्ष्यके नीचे व ऊपर भी जानकर भागाभागकी प्ररूपणा करना चाहिये ।
 भागाभागकी प्ररूपणा समाप्त हुई ।

छह यवोंकी अंतिम स्थितिके जीव सत्रसे स्त्रोक हैं (५) । उनकी जघन्य स्थितिके
 जीव उनसे असख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? गुणकार पत्न्योपमका असख्यातथा भाग

जहण्णद्विदिजीवसमाणजीवद्विदीदो उवरिमणाणागुणहाणिमलागाओ (२) विरलिय बिग करिय अण्णोण्णन्मत्य कावण किञ्चणे क्खे पल्लिदोवमस्स असखेज्जदिभागमेत्तगुणगाररासिसमु-
प्पत्तीदो १६।५। एदेण चरिमद्विदिजीवे गुणिदे^१ जहण्णद्विदिजीवमाण होदि १६।
जवमज्जनीना असखेज्जगुणा। को गुणगारो ? पल्लिदोवमस्स असखेज्जदिभागो। कुदो ?
जवमज्जस्सुवरिमजहण्णद्विसमाणजीवाण^३ च हेट्टिम (२) णाणागुणहाणिसलागाओ विरलिय
बिग करिय अण्णोण्णन्मत्यरासिसस गुणगारभूदस्स पल्लिदोवमस्स अमखेज्जदिभागमेत्तुव-
लमादो^४ ४। एदेण जहण्णद्विदिजीवे गुणिदे जवमज्जजीवा होति ६४। केत्तियासु
द्विदि^५सु जवमज्ज ? एविकस्से चैव। जवमज्जप्पहुडि हेट्टिमजीवा असखेज्जगुणा। को
गुणगारो ? पल्लिदोवमस्स असखेज्जदिभागो, किञ्चणदिवङ्गुणहाणीयो ति उत्त होदि।
३९।८। एदेण जवमज्जजीवे गुणिदे जवमज्जेण सह हेट्टिमजीवमाण होदि ३१२^६।
जवमज्जस्स उवरिमजीवा विसेसाहिया। षधविमसाहियकारण उच्चदे। त जहा—जव
मज्जहेट्टिमआयामादो^७। ततो उवरिमदीहमाण सखेज्जगुण। पुणो जवमज्जस्स हेट्टा
हे, फयोकि, उपरिम जघन्य स्थितिके जीवोंके समान जीवस्थितिसे ऊपरकी नानागुणहानि
शलाकाओंका विरलन करके दून कर परस्पर गुणन करनेपर जो प्राप्त हो उसमें कुछ कम
करनेपर पल्लोपमके असख्यातवै भाग प्रमाण गुणकार राशि उत्पन्न होती है—१५।
इससे अन्तिम स्थितिसे जीवोंको गुणित करनेपर जघन्य स्थितिके जीवोंका प्रमाण होता
है—१६। उनसे यवमध्यके जीव असख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? गुणकार पल्लोप-
मका असख्यातवा भाग है, फयोकि, यवमध्यसे ऊपरकी और जघ य स्थितिके समान
जीवोंके नीचेकी नानागुणहानिशलाकाओंका विरलन करके द्विगुणित कर परस्पर गुणा
करनेपर जो गुणकारभूत राशि प्राप्त होती है वह पल्लोपमके असख्यातवै भाग प्रमाण
पायी जाती हैं—४। इससे जघ य स्थितिके जीवोंको गुणित करनेपर यवमध्यके जीव
होते हैं—६४।

शुका—कितनी स्थितियोंमें यवमध्य होता है ?

समाधान—एक ही स्थितिमें होता है।

यवमध्यसे लेकर नीचेके जीव असख्यात गुणे हैं। गुणकार क्या है ? गुणकार
पल्लोपमका असख्यातवा भाग अर्थात् कुछ कम बेट गुणहानियां हैं, यह अभिप्राय है—
३२। इससे यवमध्यजीवोंको गुणित करनेपर यवमध्यसे साथ नीचेके जीवोंका प्रमाण
होता है—३१२। यवमध्यसे ऊपरके जीव विशेष अधिक हैं। उनके विशेष अधिक होनेका
कारण पतलाते हैं। वह इस प्रकार है—यवमध्यके अधस्तन आयामनी अपेक्षा उससे
ऊपरकी दीर्घताका प्रमाण स्वख्यातगुणा है। यवमध्यके नीचे जितना अध्वान है उतना

१ अ कामत्यो 'समाधान', साम्प्रो 'समाधान' इति पाठः। २ प्रतिपु 'जीवगुणिदे' इति पाठः।
३ साम्प्रो 'जहण्णद्विसमाण जीवाण' इति पाठः। ४ अ आ-काप्रतिपु 'मेजुवलमादो' इति पाठः।
५ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-आ-का-ताप्रतिपु १२ इति पाठः। ६ अमत्तो 'जवमज्जहेट्टिमजीवेदि वरिचं
होदि आयामादो' इति पाठः।

जितियमद्वाण तत्तियमेत्तमुवरि गवण द्विदद्विदीण जीवपमाण जयमज्जहेट्टिमनीवेदि सरिस होदि । पुणो नि उररिमद्विट्ठिदीहपमाण सखेअगुणमत्थि । तासु द्विदीसु द्विदसब्बनीवा ज्ञमज्जहेट्टिमनीवाणमसखेअदिभागमेत्ता । तेसिं पमाणमेद ७८ । पुणो एदम्मि एय ३१२ पक्खित्ते जवमज्जहेट्टिमजीवाणमसखेअदिभागमेत्तेण उवरिमजीवा अहिया होति ३९० । सन्वासु द्विदीसु जीवा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? जवमज्जहेट्टिमजीवपक्खित्तमेत्तेण ६३८ । अथवा, पुणरवि अण्णेण पयारेण अप्पायहुअ भणिस्सामो । त जहा—सन्वत्योवा छण्ण जवाण उक्खस्सियाए द्विदीए जीवा । अप्पप्पणो जहणियाए द्विदीए जीवा पुष पुष अमखेअगुणा । अजहण्णो अणुक्कस्सियासु द्विदीसु जीवा असखेअगुणा । पढ्मासु द्विदीसु जीवा विसेसाहिया । अचरिमासु द्विदीसु जीवा विसेसाहिया । सन्वासु द्विदीसु जीवा विसेसाहिया । एदाओ द्विदीओ णाणोवजोगेण वज्झति, एदाओ च दसणोवजोगेण वज्झंति ति जाणावणद्वमुत्तरसुत्त भणदि—

**सादस्स असादस्स य विट्ठणयम्मि णियमा अणागारपाओग्ग-
ट्ठणाणि ॥ २०४ ॥**

अणागारउत्तजोगपाओग्गद्विदिषट्ठणाणि णियमा णिच्छएण सादासादाण विट्ठा-

मात्र ऊपर जाकर स्थित स्थितियोंके जीवोंका प्रमाण यवमध्यसे नीचेके जीवोंके समान होता है। फिर भी उपरिम स्थितियोंकी दीर्घताका प्रमाण सख्यातगुणा है। उन स्थितियोंमें स्थित सब जीव यवमध्यके अधस्तम जीवोंके असख्यातवें भाग मात्र हैं। उनका प्रमाण यह है—७८। इसको इसमें (३१२) मिलानेपर यवमध्यसे नीचेके जीवोंके असख्यातवें भाग मात्रसे ऊपरके जीव अधिक होते हैं— $312 + 78 = 390$ । सब स्थितियोंमें जीव विशेष अधिक हैं। कितने मात्रसे अधिक हैं? यवमध्यके नीचेके जीवोंके प्रक्षित मात्रसे वे अधिक हैं—६३८।

अथवा फिरसे भी दूसरे प्रकारसे अल्पबहुत्वको कहते हैं। वह इस प्रकार है—छह यवोंकी उरट्ट स्थितिमें जीव सबसे स्तोके हैं। अपनी अपनी जगह स्थितिमें पृथक् पृथक् असख्यातगुणे हैं। अजघन्य अनुत्तट्ट स्थितियोंमें जीव असख्यातगुणे हैं। प्रथम स्थितियोंमें जीव विशेष अधिक हैं। अचरम स्थितियोंमें जीव विशेष अधिक हैं। सब स्थितियोंमें जीव विशेष अधिक हैं। ये स्थितियाँ ज्ञानोपयोगसे बंधती हैं और ये स्थितियाँ दर्शनोपयोगसे बंधती हैं, यह बतलानेके लिये आगेका सूत्र कहत हैं—

साता व असाता वेदनीयके द्विस्थानिक अनुभागमें निश्चयसे अनाकार उपयोग योग्य स्थान होते हैं ॥ २०४ ॥

अनाकार उपयोग योग्य स्थितिबन्धस्थान नियम अर्थात् निश्चयसे साता व असाता

१ प्रतिपु 'अजहण्णा—' इति पाठ । २ अणागारप्पाउग्गा विट्ठाणगयाठ दुविहपगडीण । अणागार णियम वि ॥ क प्र १ १६ ।

णियम्मि अणुभागे षड्जमाणे होति, ण अण्णत्थ, दसणोवजोगकाले अइसकिलेसविसोहीण-
मभांनोदो । को दसणोवजोगो णाम ? अतरगउजोगो' । कुदो ? आगारो णाम कम्म-
कत्तारभावो, तेण विणा जा उवलद्धी' सो अणागारउवजोगो । अतरगउवजोगे' वि-
कम्म कत्तारभावो अत्थि ति णासकणिअ, तत्थ कत्तारादो दव्व-खेत्तेहि फट्ठकम्माभावादो ।
एव सते सुद-मणपअजणाणाण पि दसणोवनोगपुरगमत पसअदि ति उत्ते, ण, मदिणाण-
पुरगमाण तेसिं दोण्ण पि दसणोवजोगपुरगमतविरोहादो । तदो' षड्जयगहणसते
विसिट्ठसगसम्बवमवेयण दसणमिदि सिद्ध । ण च षड्जत्यग्गहणुमुहावत्या चैव दसण,
किंतु षड्जत्यग्गहणुवमहरणपढमसमयप्पहुडि जाव षड्जत्यग्गहणचरिमसमओ ति दसणुव-
जोगो ति धेतच्च, अण्णहा दसण-णाणोवजोगनदिरितस्स वि जीवस्स अत्थितप्पमगादो ।

सागारपाओग्गट्टाणाणि सव्वत्थ ॥ २०५ ॥

वेदनीयके द्विस्यानिक अनुभागका बन्ध होनेपर होते हैं अथवा नहीं होते, क्योंकि,
दर्शनोपयोगके समयमें अतिशय सकलेश और विशुद्धिका अभाव होता है ।

शका—दर्शनोपयोग किसे कहते हैं ?

समाधान—अन्तरंग उपयोगको दर्शनोपयोग कहते हैं । कारण यह कि आकारका
अर्थ कर्मकर्तृत्व है, उसके बिना जो अर्थोपलब्धि होती है उसे अनाकार उपयोग
कहा जाता है ।

अन्तरंग उपयोगमें भी कर्मकर्तृत्व होता है, ऐसी आशका नहीं करना चाहिये,
क्योंकि, उसमें कर्ताकी अपेक्षा द्रव्य व क्षेत्रसे स्पष्ट कर्मका अभाव है ।

शका—ऐसा होनेपर द्युतज्ञान और मन पर्यय ज्ञानके भी दर्शनोपयोगक
होनेका प्रसंग आवेगा ?

समाधान—नहीं आवेगा, क्योंकि, ये दोनों ज्ञान मतिज्ञानपूर्वक होते हैं, अतः
उनके दर्शनोपयोगपूर्वक होनेमें विरोध है । इस कारण बाह्य अर्थका प्रथम शब्दक
विशिष्ट आत्मस्वरूपका वेदन होता है यह दर्शन है, यह सिद्ध होता है ।

बाह्य अर्थके ग्रहणके उमुख होने रूप जो अवस्था होती है वही अर्थक, ऐसी
बात भी नहीं है किन्तु बाह्यार्थग्रहणके उपसहारके प्रथम समयसे अर्थक का
अग्रहणके अन्तिम समय तक दर्शनोपयोग होता है, ऐसा ग्रहण करना नहीं है क्योंकि,
इसके बिना दर्शन व ज्ञानोपयोगसे मित्र भी जीवके अस्तित्वका प्रसंग आता है ।

साकार उपयोगके योग्य स्थान सर्वत्र धैवते हैं ॥ २०५ ॥

१ साम्बो 'णाम । अंतरंगजोगो अंतरंगउवजोगो' इति पाठ । २ अर्थक 'अव्ययव्यय' इति पाठः । ३ साम्बो 'अंतरंगउवजोगो' इति पाठ । ४ मप्रतिपाठोऽयम् । अर्थक-अर्थक्यु' इति साम्बो 'फट्ठ (!)' इति पाठ । ५ मप्रतिपाठोऽयम् । अर्थक-अर्थक्यु' इति पाठः ।

मागारो णाणोवजोगो, तथ कम्म कत्तारमानसभवादो । तस्म मागारस्म पाओग्गाणि
द्विदिबघट्टाणाणि सक्खत्य अत्थि । भावत्यो—जाणि द्विदिबघट्टाणाणि दमणोवजोगेण
सह घञ्जति ताणि णाणोवजोगेण वि घञ्जति । जाणि दसणोवजोगेण ण घञ्जति
द्विदिबघट्टाणाणि ताणि वि णाणोवजोगेण घञ्जति त्ति उच्च होदि । एदेसिं छण्ण
जवाण हेट्ठिम-उवरिमभागाण योवनहुत्तजाणावणट्टमणागारैपाओग्गाट्टाणाण पमाणजाणावणट्ट
च उवरिल्लम्पावहुगसुत्तमागद—

सादस्स चउट्टाणिर्यजवमञ्जस्स हेट्टदो ट्टाणाणि
थोवाणि ॥ २०६ ॥

कुदो ? सागरोवमसदपुधत्तपमाणत्तादो ।

उवरि सखेज्जगुणाणि ॥ २०७ ॥

जवमञ्जादो उवरिमद्विदिबघट्टाणाणि सखेज्जगुणाणि । किं कारण ? अद्विसुद्ध-
द्विदीहितो मद्विसुद्धद्विदीण बहुत्ताभियोहादो ।

साकारसे अभिप्राय ज्ञानोपयोगका है, फ्योंकि, उसमें कर्म और कर्तृत्वकी सम्भावना
है । उक्त साकार उपयोगके योग्य स्थितिय-घस्थान सर्वत्र होते हैं । भाषार्थ—जो स्थिति
ब-घस्थान दर्शानोपयोगके साथ बंधते हैं वे ज्ञानोपयोगके साथ भी बंधते हैं ।
जो स्थितिय-घस्थान दर्शानोपयोगके साथ नहीं बंधते हैं वे भी ज्ञानोपयोगके साथ बंधते
हैं, यह उसका अभिप्राय है ।

इन छह योंके अधस्तन और उपरिम भागोंके अल्पबहुत्वको बतलानेके लिये तथा
भनाकार उपयोगके योग्य स्थानोंके प्रमाणको भी बतलानेके लिये आगेका अल्पबहुत्वसूत्र
प्राप्त होता है—

साता वेदनीयके चतु स्थानिक यममध्यके नीचेके स्थान स्तोत्र हैं ॥ २०६ ॥

कारण कि वे शतपृथक्त्व सागरोपम प्रमाण हैं ।

उपरिम स्थान उनसे सख्यातगुणे हैं ॥ २०७ ॥

यवमध्यसे ऊपरके स्थितिय-घस्थान सख्यातगुणे हैं, फ्योंकि, अति विशुद्ध

१ साप्रती 'जाणि दसणोवजोगेण ण घञ्जति' इत्येतावानय पाठश्रुतितोऽस्ति । २ मप्रतिपाठोऽयम् ।
अ-आ-काप्रतिपु 'तिणि' इति पाठ । ३ प्रतिपु 'अण्णार' इति पाठः (कामती श्रुतितोऽय पाठ) ।
४ साप्रती 'चउट्टाणिया जव—' इति पाठ । ५ दिहा थोवाणि जवमग्गा ॥ ठाणाणि चउट्टाणा संखेज्ज
गुणाणि उवरिमेवन्ति (एव) । तिहाणे विहाणे सुमाणि एगतमीवाणि ॥ उवरिं मिस्साणि अहम्मो सुमाण
तमो विसेसदिमो । होइ सुमाण चहणो संखेज्जगुणाणि ठाणाणि ॥ विहाणे जवमग्गा दिहा एगत
मीवगाणुवरिं । एव ति-चउट्टाणे जवमग्गाओ य थायठिई ॥ अंतोकोडाकोडी सुमविहाण जवमग्गाओ
उपरिं । एगतगा विस्दिहा सुमविहा थायठिइजेहा ॥ क प्र १,९६—१००, परावर्तमानशुभप्रकृतीनां
शुभस्थानकरधयवमध्यादघ स्थितिरथानानि सर्वस्तोत्रानि (म टी १,९६) । ६ तेम्यअट्ट-स्थान-
करधयवमध्यवैपरि स्थितिरथानानि संखेज्जगुणाणि (२) । क प्र (म टी) १,९७ ।

सादस्स तिट्ठाणियजवमज्झस्स हेट्ठदो ट्ठाणाणि सखेज्ज-
गुणाणि ॥ २०८ ॥

कुदो ? चउट्ठाणियअणुभागनधपाओग्गअञ्चवसाणेहिंतो सादतिट्ठाणियजवमज्झहेट्ठि-
मअणुभागनधपाओग्गअञ्चवसाणाणमसुहत्तदमणादो ।

उवरि सखेज्जगुणाणि ॥ २०९ ॥

कुदो ? सादतिट्ठाणियजवमज्झहेट्ठिमअञ्चवसाणेहिंतो उवरिमअञ्चवसाणाणमसुहत्त-
दसणादो । मंदविसोहीहि परिणममाणा जीवा पहुया होंति, तासि पाओग्गद्विदीयो वि
पहुणीयो ति उत होदि । कुदो ? ज तेणै वि मद्रिसोहीणमुप्पत्तीदो ।

सादस्स विट्ठाणियजवमज्झस्स हेट्ठदो एयतसागारंपाओग्ग-
ट्ठाणाणि सखेज्जगुणाणि ॥ २१० ॥

कुदो ? सादतिट्ठाणियजवमज्झस्स उवरिमद्विदिसकिलेसादो सादविट्ठाणियजव-

स्थितियोंकी अपेक्षा मन्द विशुद्ध स्थितियोंके बहुत होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

साता वेदनीयके त्रिस्थानिक यममध्यके नीचेके स्थान उनसे असल्यातगुणे हैं ॥ २०८ ॥

कारण यह कि चतु स्थानिक अनुभागवचके योग्य परिणामोंकी अपेक्षा साताके
त्रिस्थानिक यममध्यके नीचेके अनुभागवचके योग्य परिणाम अशुभ देखे जाते हैं ।

यममध्यसे ऊपरके स्थितियमस्थान सल्यातगुणे हैं ॥ २०९ ॥

कारण कि साताके त्रिस्थानिक यममध्यके अधस्तन परिणामोंकी अपेक्षा उपरिम
परिणाम अशुभ देखे जाते हैं । मन्द विशुद्धियों रूप परिणामन करनेवाले जीव बहुत हैं
तथा उनके योग्य स्थितिया भी बहुत हैं, यह अभिप्राय है । इसका कारण यह है कि उससे
भी मन्द विशुद्धिया उत्पन्न होती हैं ।

साता वेदनीयके द्विस्थानिक यममध्यके नीचेके एकान्त साकार उपयोगके योग्य
स्थान सल्यातगुणे हैं ॥ २१० ॥

इसका कारण यह है कि साता वेदनीयके त्रिस्थानिक यममध्यके ऊपरके स्थितियम

१ अ-आ-काप्रतिपु 'असंखेज्जगुणाणि' इति पाठ । २ तेनोऽपि विरुद्धमयमध्यमध्यस्वोरि
स्थितिरथामानि संरयेयगुणानि ४ । क म (म टी) १, १७ । तेनोऽपि एतत्तमानश्चमप्रकृतीनां
त्रिस्थानकरसवध्यादध स्थितिरथामानि संरयेयगुणानि ३ । क म (म टी) १, १७ । ३ अ-आ-का
प्रतिपु 'अचेण' इति पाठ । ४ अत्रतौ 'साथर', आ-काप्रत्यो 'साथर' इति पाठः । ५ तेनोऽपि
परायत्तमानश्चमप्रकृतीनां विरथानकरसवध्यादध स्थितिरथामानि एतज्जकारणमयमध्यमध्यमि
गुणानि ५ । क म (म टी) १, १७ ।

मज्झस्स हेट्ठिमद्विदिवधट्ठाणाण सागारोवजोगेण्य षड्जमाणाण सकिलेसस्स असुहत्तदस
णादो । दीसड च सुहवजादिपाओग्गट्ठाणेहिंतो असुहपत्थरादिपाओग्गट्ठाणाणमइपहुत्त ।

मिस्सयाणि सखेज्जगुणाणि ॥ २११ ॥

सागर-अणारउवजोगाण जाणि पाओग्गाणि सादवेट्ठाणियजवमज्झादो हेट्ठिमाणि
द्विदिवधट्ठाणाणि ताणि सखेज्जगुणाणि । कुदो ? हेट्ठिमज्झवसाणेहिंतो एदेसिमज्झव-
साणाण असुहत्तुवलमादो । मोस्खकारणादो ससारकारणेण्य षड्हुण्य होदब्ब, अण्णहा देव-
मणुस्सोहिंतो तिरिख्खाणमणतगुणत्ताणुवनत्तीदो ।

सादस्स चैवं विट्ठाणियजवमज्झस्स उवरि मिस्सयाणि
सखेज्जगुणाणि ॥ २१२ ॥

कारणहेट्ठिमज्झवसाणेहिंतो उवरिमज्झवसाणाण सुद्ध असुहत्त ।

असादस्म विट्ठाणियजवमज्झस्स हेट्ठो एयत्सायारपाओग्ग-
ट्ठाणाणि सखेज्जगुणाणि ॥ २१३ ॥

स्थानोंके सफलेशका अपेक्षा साता धेदनीयके द्विस्थानिक यवमध्यके नीचेके साकार
उपयोगसे बधनेवाले स्थितिषधस्थानोंका सफलेशान अशुभ देखा जाता है । यज्ज आदिके
योग्य शुभ स्थानोंकी अपेक्षा अशुभ पत्थर आदिके योग्य स्थान अत्यन्त बहुत देखे
भी जाते हैं ।

मिथ्र स्थितिषधस्थान सख्यातगुणे हैं ॥ २११ ॥

साकार व अनाकार उपयोगके योग्य जो साता धेदनीयके द्विस्थानिक यवमध्यके
नीचेके स्थितिषधस्थान हैं वे सख्यातगुणे हैं, क्योंकि नीचेके अध्ववसानोंकी अपेक्षा ये
अध्ववसान अशुभ देखे जाते हैं । मोस्के कारणकी अपेक्षा ससारका कारण बहुत होना
चाहिये, क्योंकि, अथवा देव और मनुष्योंकी अपेक्षा तिर्यकोंका अनतगुणत्थ, धन
महीं सकता ।

साताके ही द्विस्थानिक यवमध्यके ऊपर मिथ्र स्थितिषधस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ २१२ ॥

इसका कारण अधस्तन अध्ववसानोंकी अपेक्षा उपरिम अध्ववसानोंका अत्यंत
होना है ।

असाताके द्विस्थानिक यवमध्यके नीचे एकान्तत- साकार उपयोगके योग्य स्थान
संख्यातगुणे हैं ॥ २१३ ॥

१ ताप्रती 'यज्जदि' इति पाठ । २ तेभ्योपि द्विस्थानकरसयवमध्यादध पाश्चात्येभ्य ऊर्ध्व
स्थितिरथानानि मिथ्राणि साकारानाकारोपयोगयोग्यानि संरपेयगुणानि ६ । क प्र (म टी) १, १७ ।
३ अत्रती 'सादस्सेव' इति पाठः । ४ तेभ्योऽपि द्विस्थानकरसयवमध्यादधपरि मिथ्राणि स्थिति
स्थानानि संरपेयगुणानि ७ । क प्र १, १८ । ५ ताप्रती 'असंखेज्जगुणाणि' इति पाठः । ततोऽप्यशुभ
परावर्तमानप्रकृतीनामेव द्विस्थानकरसयवमध्यादध एकान्तसाकारोपयोगयोग्यानि स्थितिस्थानानि संखेय
गुणानि १० । क प्र (म टी) १, १९ ।

कुदो ? सादनिद्वाणियजमज्जस्स उवरि सागाराणागारपाओग्गट्टिदिवधव्यापनरक्षणे
 हिंतो असादविद्वाणियजमज्जस्स हेट्ठिमएयतसागरपाओग्गट्टिदिवधव्यापनरक्षण
 मसुहत्तुवलभादो ।

मिस्सयाणि सखेज्जगुणाणि ॥ २१४ ॥

कारण सुगम ।

असादस्स चेत्त निद्वाणियजमज्जस्सुवरि मिस्सयाणि सखेज्ज
 गुणाणि ॥ २१५ ॥

एदसिं द्विदिवधव्यापण सखेज्जगुणत्तस्स कारा पुत्तं ~~एदसिं द्विदिवधव्यापण~~
 मादस्स सागाराणागारपाओग्गट्टिदिवधव्यापणपहुहिदिदु ~~एदसिं द्विदिवधव्यापण~~
 हेट्ठिमासेमट्टिदीहिंतो सखेज्जगुणमदाणमुवरि गत्ता ~~एदसिं द्विदिवधव्यापण~~
 अणागारपाओग्गट्टाणाणि होति । कुदो ? ~~एदसिं द्विदिवधव्यापण~~
 तदुप्पत्तिविरोहाभावादो ।

एयतसागरपाओग्गट्टाणाणि सखेज्जगुणाणि ॥ २१६ ॥

कारण सुगम ।

इसका कारण यह है कि सातोंके द्विदिवधव्यापण सखेज्जगुणत्तस्स कारा पुत्तं एदसिं द्विदिवधव्यापण
 उपयोगके योग्य स्थितियथाप्रयसार्तोर्वा कुर्यात्तस्स एदसिं द्विदिवधव्यापण सखेज्जगुणत्तस्स कारा पुत्तं
 सर्वथा साकार उपयोगके योग्य स्थितियथाप्रयसार्तोर्वा कुर्यात्तस्स एदसिं द्विदिवधव्यापण सखेज्जगुणत्तस्स कारा पुत्तं
 मित्र स्थितिनन्वस्थानुं सग्यात्तुम् ११३

मित्र स्थितिनन्वस्थानुं सग्यात्तुम् ११३

असादस्स तिद्वाणियजवमज्झस्स हेद्दुदो द्वाणाणि सखेज्ज-
गुणाणि' ॥ २१७ ॥

कुदो ? हेट्टिमसकिल्लेसेहितो एदंमि मकिल्लेम्माणमसुत्तदमणादो ।

उवरि संखेज्जगुणाणि' ॥ २१८ ॥

कारण सुगम ।

असादस्स चउद्वाणियजवमज्झस्स हेद्दुदो द्वाणाणि सखेज्ज-
गुणाणि' ॥ २१९ ॥

कारण सुगम ।

मादस्स जहण्णओ द्विदिवधो सखेज्जगुणो' ॥ २२० ॥

कुदो ? असादस्स चउद्वाणियजवमज्झस्स हेट्टिमद्विदिवधद्वाणाणि सागरोरमसदपुध-
त्तमेत्ताणि । सादस्स जहण्णओ द्विट्ठिन्धो पुण अतोकोडाकोडिश्रानाभृणा । तेण असादस्स
चउद्वाणियजवमज्झहेट्टिमद्विदिवधो सादस्स जहण्णओ द्विदिवधो सखेज्जगुणो जादो ।

जद्विदिवधो विसेसाहिओ ॥ २२१ ॥

असाता वेदनीयके त्रिस्थानिक यवमध्यके नीचेके स्थान सरयातगुणे हे ॥ २१७ ॥

कारण यह कि नीचेके सफलेश परिणामोंकी अपेक्षा ये सफलेश परिणाम अशुभ
देखे जाते हैं ।

उसके ऊपरके स्थितिबन्धस्थान सरयातगुणे हे ॥ २१८ ॥

इसका कारण सुगम है ।

असाता वेदनीयके चतु स्थानिक यवमध्यके नीचेके स्थान सरयातगुणे हे ॥ २१९ ॥

इसका कारण सुगम है ।

सातावेदनीयका जघन्य स्थितिबन्ध सरयातगुणा हे ॥ २२० ॥

कारण कि असाता वेदनीयके चतु स्थानिक यवमध्यके नीचेके स्थितिबन्धस्थान
यतपृथक्त्व सागरोरम प्रमाण हैं । परन्तु सातावेदनीयका जघन्य स्थितिबन्ध आवाधासे
हीन अन्तकोडाकोडि सागरोरम प्रमाण है । इसीलिये असाताके चतुस्थानिक यवमध्यके
नीचेके स्थानोंकी अपेक्षा साता वेदनीयका जघन्य स्थितिबन्ध सरयातगुणा हो जाता है ।

ज स्थितिबन्ध उससे विशेष अधिक है ॥ २२१ ॥

१ तेभ्योऽपि तामामेव परावर्तमानाशुभप्रकृतीनां त्रिस्थानकरसयवमध्यादध स्थितिरथानानि
सख्येयगुणानि १४ । क प्र (म टी) १,९९ । २ तेभ्योऽपि तामामेव परावर्तमानाशुभप्रकृतीनां
त्रिस्थानकरसयवमध्ययोपरि स्थितिरथानानि सख्येयगुणानि १५ । क प्र (म टी) १,९० ।
३ तेभ्योऽप्यशुभपरावर्तमानप्रकृतीनामेव चतु स्थानकरसयवमध्यादध स्थितिरथानानि सख्येयगुणानि १६ ।
क. प्र. (म टी) १,९९ । ४ तेभ्योऽपि शुभानां परावर्तमानप्रकृतीनां जघन्य स्थितिबन्ध
सख्येयगुण ८ । क प्र (म टी) १,९८

अद्विदिवधो णाम आयाहाए सहिदजहण्णद्विदिवधो, पहाणीकयकालत्तादो । जहण्ण-
वधो णाम आयाधुणजहण्णवधो, पहाणीकयणिसंगद्विदितादो । तेण जहण्णद्विदिवधादो
जद्विदिवधो विसेमाहिओ । केत्तियमेत्तेण ? मगअतोमुहत्तजहण्णावाहामेत्तेण ।

असादस्स जहण्णओ द्विदिवधो विसेसाहिओ ॥ २२२ ॥

केत्तियमेत्तेण ? सपेजसागरोवममेत्तेण ।

जद्विदिवधो^२ विसेसाहिओ ॥ २२३ ॥

केत्तियमेत्तेण ? जहण्णावाहामेत्तेण ।

जतो उक्कस्सय दाह गच्छदि सा द्विदी सखेज्जगुणां ॥२२४॥

दाहो णाम सकिलेमो । कुदो ? इह-परभवमतावकारणत्तादो । उक्कस्सदाहो णाम
उक्कस्सद्विदिनधकारणउक्कस्ससकिलेसो । जिस्से द्विदीए ठाइइण उक्कस्ससकिलेम गलण
उक्कस्सद्विदिं^३ वण्णि मा द्विणी सखेज्जगुणा त्ति उत्त होदि ।

अतोकोडाकोडी सखेज्जगुणां ॥ २२५ ॥

आवाधासे सहित जघन्य स्थितिवन्धको ज स्थितिवन्ध कहा जाता है, क्योंकि,
यहा कालकी प्रधानता है । आवाधासे हीन जघन्य स्थितिवन्ध जघन्य बन्ध कहलाता है,
क्योंकि, उसमें निपेकस्थितिकी प्रधानता है । इसीलिये जघन्य स्थितिवन्धसे ज स्थितिवन्ध
विशेष अधिक है । कितने मात्रसे वह अधिक है ? वह अपनी अन्तर्मुहूर्त मात्र जघन्य
आवाधाके प्रमाणसे अधिक है ।

असातावेत्तीयका जघन्य स्थितिवन्ध विशेष अधिक है ॥ २२२ ॥

वह कितने मात्रसे अधिक है । वह सत्त्यात सागरोपम मात्रसे अधिक है ।

ज-स्थितिवन्ध विशेष अधिक है ॥ २२३ ॥

कितने मात्रसे अधिक है ? वह जघन्य आवाधा मात्रसे अधिक है ।

जिमके कारण प्राणी उत्कृष्ट दाहको प्राप्त होता है वह स्थिति मख्यातगुणी है ॥२२४॥

दाहका अर्थ सफलेण है, क्योंकि वह इस भव और पर भवमें सत्तापका कारण
है । उत्कृष्ट दाहका अर्थ उत्कृष्ट स्थितिवन्धका कारणभूत उत्कृष्ट सफलेण है । जिस
स्थितिमें स्थित होकर उत्कृष्ट सफलेणको प्राप्त हो जीव उत्कृष्ट स्थितिको वाचना है वह
स्थिति सख्यानगुणी है, यह अभिप्राय है ।

अन्त कोडाकोडिका प्रमाण मख्यातगुणा है ॥ २२५ ॥

१ ततोऽप्यशुभपरावर्तमानमृत्तीनां जघन्य स्थितिवन्ध विशेषाधिक ९ । क प्र (म टी)
१७८ । २ अ आ-काप्रतिपु 'जहण्णद्विदिवधा' इति पाठ । ३ तेव्योऽपि यवमप्यादुपरि दायस्थिति
संत्वेयगुण १७ । यत स्थितिरयानादपरावर्तनाकरणवशोऽपि स्थितिं याति तावती स्थितिर्वापस्थिति
स्थित्युत्तरे । क प्र (म टी) १,९९ । ४ ताप्रतो 'उक्कस्सद्विदि' इति पाठ । ५ ततोऽपि सागरोपमा
णामन्त कोडाकोडी सखेयगुणा १८ । क, प्र (म टी) १,१०० ।

पुच्छिद्विदी अतोकोडाकोटिमेत्ता, एसा वि द्विदी' अतोकोडाकोडिमेत्ता चेन ।
किंतु एसा निव्वियप्पा, तेण सखेज्जगुणा ति भणिदा ।

सादस्स चिट्ठाणियजवमज्झस्स उवरि एयंतसागारपाओ-
ग्गट्ठाणाणि सखेज्जगुणाणि ॥ २२६ ॥

कुदो ? अतोकोडाकोडीए ऊणपण्णाग्गसागरोउमकोटाकोडिपमाणत्तादो ।

सादस्स उक्कस्सओ द्विदिवधो' विसेसाहियो' ॥ २२७ ॥

केतियमेत्तेण ? सादअणागारपाओग्गट्ठाणप्पहुडि हेद्विमआवाधूणअतोकोडाकोडि-
निसेयद्विदिमेत्तेण ।

जद्विदिवधो विसेसाहियो ॥ २२८ ॥

केतियमेत्तेण ? सगआवाधामेत्तेण ।

दाहद्विदी विसेसाहियाँ ॥ २२९ ॥

पूर्वोक्त स्थितिका प्रमाण अन्त फोडाकोडि मात्र है, यह स्थिति भी अत फोडाकोडि
प्रमाण ही है । किन्तु यह स्थिति निविकल्प है, इसीलिये सख्यानगुणा कही गई है ।

साता वेदनीयके द्विस्थानिक यवमध्यके ऊपरके एकातत साकार उपयोगके योग्य
स्थान सख्यातगुणे हैं ॥ २२६ ॥

क्याकि, वे अत फोडाकोडिसे हीन पद्दह फोडाकोडि सागरोपम प्रमाण हैं ।

साता वेदनीयका उत्कृष्ट स्थितिनघ विशेष अधिक है ॥ २२७ ॥

यह कितने मात्रसे अधिक है ? साताने अनासाउ उपयोगके योग्य स्थानोंके लेकर
नीचे आवाधासे रहित अत फोडाकोडि सागरोपम निवेकस्थितियोंके प्रमाणसे यह
अधिक है ।

ज स्थितिनघ विशेष अधिक है ॥ २२८ ॥

कितने मात्रसे यह अधिक है ? यह अपनी आवाधाके प्रमाणसे अधिक है ।

दाहस्थिति विशेष अधिक है ॥ २२९ ॥

१ अ-आ-काप्रतिपु 'एसा दि द्विदि' इति पाठ । २ ततोऽपि परावर्तमान शुभप्रवृत्तीनां द्विस्थान
कारणयवमध्यस्योपरि यानि मिश्रानि स्थितिक्षानानि तेष मुख्यैकान्तकारोपयोगयोग्यानि स्थितिक्षानानि
सखेयगुणानि १९ । क प्र (म टी) १,१०० ३ अ-आ काप्रतिपु 'उक्कस्सद्विद्वधो' इति पाठ ।
४ तेष्वाऽपि परावर्तमानशुभप्रवृत्तीनामुत्कृष्ट स्थितिनघा विशेषाधिक २० । क प्र (म टी)
१,१०१ ५ मप्रतिपुतोऽयम् । अ-आ-का-त्ताप्रतिपु 'मेत्ता' इति पाठ । ६ अ-आ-काप्रतिपु
'अण्णद्विदिवधा' इति पाठ । ७ ततोऽप्युभ- (!) परावर्तमानशुभप्रवृत्तीनां अदा आपरिपत्तिर्विरोधा
पिदा ११ । अत स्थितिक्षानात् माह्वकण्डित्वायवने दार्या फाला दत्त्वा वा या स्थितिरैभ्यते तत प्रभृति

दाहो उक्खस्मद्विदिपाओग्गसकिलेमो तस्म दाहस्स कारणभूदद्विदी दाहद्विदी णाम,
कारणे कज्जुवयारादो । तस्य जहण्णदाहद्विदिप्पहुडि जाव उक्खस्मदाहद्विदि ति एदामिं
सव्वासिं जादिटुवारेण एयत्तमावण्णाण दाहद्विदि ति सण्णा । मा षण्णासमागरोवम-
कोडाकोडीयो पेविखदण विसेसाहिया, किं षण्णतीससागरोमकोडाकोडिपमाणत्तादो ।

असादस्स चउट्टाणियजवमज्झस्स उवरिमट्टाणाणि विसेसाहि-
याणि ॥ २३० ॥

केतियमेत्तेण ? अमादचउट्टाणियजवमज्झादो उवरिमजहण्णदाहद्विदीनो हेद्विम-
अनोकोडाकोडिसागरोममेत्तेण ।

असादस्स उक्कस्सद्विदिवधो विसेसाहियो' ॥ २३१ ॥

केतियमेत्तेण ? अनोकोडाकोडीए ।

जद्विदिवधो विसेसाहियो ॥ २३२ ॥

केतियमेत्तेण ? तिण्णिवामसहस्समेत्तेण ।

एदेण अट्टपदेण सव्वत्योवा सादस्स चउट्टाणनधा जीवां ॥ २३३ ॥

-दाहका अर्थ उद्वृष्ट स्थितिके योग्य सङ्केत है। उस दाहकी कारणभूत स्थिति
कारणमें कारका उपचार करनेसे दाहस्थिति कही जाती है। उसमें जघप दाहस्थितिसे
लेकर उद्वृष्ट दाहस्थितिपर्यंत जातिके द्वारा एकताका प्रसङ्ग है इन सब स्थितियोंकी
दाहस्थिति सदा है। वह पन्द्रह कोड़ाकोडि सागरोपमकी अपेक्षा विशेष अधिक है,
फिरकि, वह कुछ कम तीस कोड़ाकोडि सागरोपम प्रमाण है।

अमाता वेदनीयके चतु स्थानिक यवमध्यके ऊपरके म्यान विशेष अधिक हैं ॥ २३० ॥

वे कितने मात्रसे अधिक हैं ? असाना वेदनीयके चतुस्थानिक यवमध्यके ऊपरकी
जघप दाहस्थितिसे नीचेके अन्त कोड़ाकोडि सागरोपम मात्रसे अधिक हैं।

असाता वेदनीयका उद्वृष्ट स्थितिनध विशेष अधिक है ॥ २३१ ॥

यह कितने मात्रसे अधिक है ? यह अन्त कोड़ाकोडि सागरोपम मात्रसे अधिक है।

ज स्थितिनध विशेष अधिक है ॥ २३२ ॥

यह कितने मात्रसे अधिक है ? यह तीन हजार षप मात्रसे अधिक है।

इस अर्थपरसे सातावेदनीयके चतु स्थाननन्धक जीव मनमे स्तोक है ॥ २३३ ॥

सदन्ता तावती स्थितिरिद्धा ज्ञायरिधितिरिहोच्यते । सा श्लोकपतोऽत सागरोपमकोटिचोटयूना सकलकर्मरिधिति
प्रमाणा वेदितव्या । तथाहि—अत सागरोपमकोटिचोटिप्रमाण रिधितिव य इत्या पर्याप्तशक्तिपचेन्द्रिय
उल्लेखं स्थितिं भ्राम्भीति, नायथा । क प्र (म टी) १,१००

१ तन्नेऽपि पावतमानाशुभप्रकृतीनामुल्लेख रिधितिव बो विरोधाधिक इति २२ । क प्र (म टी)
१,१०० = सन्नेजगुणा जीवा कमलो एदमु टविहपगण । अशुमाण विहाण सउवरि विसेसयो अहिया ।

एदमत्यमाहार काज्ज छण्ण जवाण जीवाणमपायहुग भणिम्मामो । तग्धि मग्गमाणे सादस्स चउट्टाणनथा जीवा घोस । कुटो ? योवद्धाणत्तादो ।

तिट्ठाणवंधा जीवा सखेज्जगुणा ॥ २३४ ॥

कुटो ? सात्तचउट्टाणाणुभागनपपाओग्गट्टिदीहिंतो तिट्ठाणाणुभागनपपाओग्गट्टिदिविसमाण सखेज्जगुणत्तुलभादो ।

विट्ठाणवधा जीवा सखेज्जगुणा ॥ २३५ ॥

कुटो ? सादावेदनीयतिट्ठाणाणुभागनपपाओग्गट्टिदिमिमेहिंतो तस्सेव विट्ठाणाणुभागनपपाओग्गट्टिदिविमेसाण सखेज्जगुणत्तुलभादो ।

असादस्स विट्ठाणवधा जीवा सखेज्जगुणा २३६ ॥

सात्तवेदनीयतिट्ठाणाणुभागनपपाओग्गट्टिदिविसेहेहिंतो अमादावेदनीयतिट्ठाणाणुभागनपपाओग्गट्टिदिविमेसा सखेज्जगुणहीणा । कुटो ? अत्तोकोडाकोडिज्जणपण्णारससागरोवमकोडाकोडिमेत्तमादविट्ठाणाणुभागनपपाओग्गट्टिदीहिंतो मागरोवममत्तपुधत्तट्टिदिविमेसाण सखेज्जगुणहीणत्तुलभादो । तदो अमात्तस्म विट्ठाणवधा जीवा सखेज्जगुणा ति ण

इस अर्थको आधार करके छह यथोक्ते जीवोंके अस्पष्टव्युत्पत्तिको कहते हैं । उसका कथन करनेमें साता वेदनीयके चतुस्थानबन्धक जीव स्तोत्र हैं, क्योंकि, उनका अध्वान स्तोत्र ही ।

त्रिस्थानबन्धक जीव उनमें सख्यातगुणे हैं ॥ २३४ ॥

इसका कारण यह है कि साता वेदनीयके चतुस्थान अनुभागबन्धके योग्य स्थितियोंकी अपेक्षा त्रिस्थान अनुभागबन्धके योग्य स्थितिविशेष सरयातगुणे पाये जाते हैं ।

द्विस्थानबन्धक जीव सरयातगुण हैं ॥ २३५ ॥

कारण कि सातावेदनीयत्रिस्थान अनुभागबन्धके योग्य स्थितिविशेषोंकी अपेक्षा उमवे ही द्विस्थान अनुभागबन्धके योग्य स्थितिविशेष सरयातगुणे पाये जाते हैं ।

अमाता वेदनीयके द्विस्थानबन्धक जीव सरयातगुणे हैं ॥ २३६ ॥

शुका—साता वेदनीयके द्विस्थान अनुभागबन्धके योग्य स्थितिविशेषोंसे असाता वेदनीयके द्विस्थान अनुभागबन्धके योग्य स्थितिविशेष सरयातगुणे हीन हैं, क्योंकि, अतकोडाकोडिसे हीन पद्द्रह कोडाकोडि सागरोपम प्रमाण साता वेदनीयके द्विस्थान अनुभागबन्धके योग्य स्थितियोंकी अपेक्षा सातपृथक्त्व सागरोपम प्रमाण स्थितिविशेष सरयातगुणे हीन पाये जाते हैं । अतएव असाताके द्विस्थानबन्धक जीव सरयातगुणे हैं, यह कहना उचित नहीं है ?

क प्र १,१०१ खवस्तीका परावर्तमानशुभप्रवृत्तीना चतुस्थानकरसबन्धका जीवा तेम्योऽपि त्रिस्थान करसबन्धका संख्येयगुणा । तेम्योऽपि द्विस्थानकरसबन्धका संख्येयगुणा (म टी)

१ तेम्योऽपि परावर्तमानशुभप्रवृत्तीनां द्विस्थानकरसबन्धका संख्येयगुणा । तेम्योऽपि चतुस्थानकरसबन्धका संख्येयगुणा । तेम्योऽपि त्रिस्थानकरसबन्धका विशेषाधिकार । क प्र (म टी) १,१०१ । २ ताम्रतो 'सादावेदनीय विट्ठाणाणु—' इति पाठ । ३ ताम्रतो 'विट्ठाणाणुबन्ध' इति पाठ ।

जुद्धदि ? ण, सादावेदणीयमधगद्धादो सखेज्जगुणाए असादावेदणीयमधगद्धाए सचिदाण सखेज्जगुणतेण विरोहाभावादो मखेज्जगुणत्त जुञ्जे ।

चउट्टाणवधा जीवा सखेज्जगुणा ॥ २३७ ॥

कुदो ? अमादविट्ठाणुभागवधपाओग्गट्टिदिविसेसेहिंतो तस्सेव चउट्टाणाणुभागवध-
पाओग्गट्टिदिविसेमाण सखेज्जगुणत्तुवल्मादो ।

तिट्टाणवधा जीवा विसेसाहिया ॥ २३८ ॥

अमादस्म चउट्टाणाणुभागवधपाओग्गट्टिदिविसेमेहिंतो तस्सेन तिट्टाणाणुभागवध-
पाओग्गट्टिदिविसेमा मपेज्जगुणहीणा । तदो तिट्टाणवधनीवाण विसेमाहियत्त [ण] जुद्धदि
त्ति ? ण एम दोमो, सुमकुम्भस्मपरिणामेसु बहुट्टिदिविसेसेसु वट्टमाणजीवोहिंतो थोवट्टिदि-
विसेसेसु मज्झिमपरिणामेसु च वट्टमाणनीवाण बहुत्त पडि विरोहाभावान्ते । ण च बहुस-
किन्नेमविमोहीसु सल्लविलमत्तोगो व्व तुट्ठीएँ ममुप्पज्जमाणसु जीनवहुत्त^१ ममनदि, तदा-
णुवल्मादो । मवज्जगुणा ण होंति, विसेसाहिया चेव होंति^२ त्ति कथ णव्वे ? एदम्हादो

समाधान—नहीं, क्योंकि, सादावेदनीयके व धक्कालकी अपेक्षा सख्यातगुणे
असाता वेदनीयके वक्क कालमें स्थित जीवोंके सख्यातगुणत्तरसे कोई विरोध न होनेके
कारण उनको सख्यातगुणा कहना उचित ही है ।

चतु स्थानवधक जीव सख्यातगुणे हैं ॥ २३७ ॥

कारण कि असाता वेदनीयके द्विस्थान अनुभागवधके योग्य स्थितिविशेषोंकी
अपेक्षा उसके ही चतु स्थान अनुभागवधके योग्य स्थितिविशेष सख्यातगुणे पाये जाते हैं ।

त्रिस्थानवधक जीव विशेष अधिक हैं ॥ २३८ ॥

शर्का—असाता वेदनीयके चतु स्थान अनुभागवधके योग्य स्थितिविशेषोंकी
अपेक्षा उसके ही त्रिस्थान अनुभागवधके योग्य स्थितिविशेष सख्यातगुणे हीन हैं । इस
कारण त्रिस्थानवधक जीवोंको उनसे विशेष अधिक कहना उचित [नहीं] है ।

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, शुक्लदेश्यके उत्पत्तिपरिणामोंमें बहुत
स्थितिविशेषोंमें वर्तमान जीवोंकी अपेक्षा स्लोक स्थितिविशेषों और मध्यम परिणामोंमें
वर्तमान जीवोंके बहुत होनेमें कोई विरोध नहीं है । अल्प विषयसंयोग (अल्पात् और विद्व
फलके सयाग) के समान बुद्धिसे अथात् यदा कदाचित् उत्पन्न होनेवाले बहुत सकलेश व
बहुत विदुषिमें जीवोंकी अधिकता सम्भव नहीं है, क्योंकि ऐसा पाया नहीं जाता ।

शर्का—ये सख्यातगुणे नहीं हैं, विशेष अधिक ही है यह कैसे जाना जाय ?

समाधान—यह इसी सूत्रसे जाना जाता है ।

१ अथवा 'सल्लविलसंतो व्व जुट्ठीए', आ-काप्रत्यो 'सल्लविलसंतो व्व जुट्ठीए इत्तं एत्तं ।
२ अ आ-काप्रतिपु 'अववहुत्त' इति पाठ । ३ ताप्रती 'विसेसाहिया होति' इति पाठः ।

चेव सुत्तादो । विमदासुत्त' किण्ण जायदे ? ण, विसवादकारणसयत्तोसुम्मुक्कभूत्तत्तिय-
यण विणिग्गयस्म सुत्तस्म विसवादित्तैविरोहादो । एसो जीवसमुदाहारो नीइदिय-तीइदिय-
चउरिंदिय असण्णिपचिंत्तियपज्जत्तापज्जत्तएमु मण्णिअपज्जत्तएमु च जोनेयवो । णवरि द्विदि-
रिमेमो णायवो । तादर सुहुमेइदियपज्जत्तापज्जत्तेमु वि एण चेव वत्तवो । णवरि एदेसु
मव्वेसु वि मादानादाण विट्ठाणत्तमज्ज चैव, तत्थ तिट्ठाण-चउट्ठाणाणुभागाण वधा-
भावादो । णवरि तादर-सुहुमेइदियपज्जत्तापज्जत्तएमु एकेनिकस्मे द्विदीए अणता जीवा ।
पढमद्विदिनधनीत्तप्पहुडि कमेण विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? पल्लिदोरमस्स असखेज्जदि-
भागेण खड्दिमत्तेण । पल्लिदोवमस्स अमखेज्जदिभाग गत्तण दुग्गुणवद्धिदा दुग्गुणत्तद्धिदा जाव
जत्तमज्ज । तेण पर विधेसहीणा । सेस जाणिदण वत्तव । एसो जीवसमुदाहारो बहुमेदो
वि सतो मग्गेवेग गत्थ पन्वित्ते । एव जीवसमुदाहारो समत्तो ।

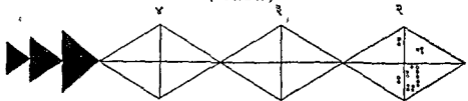
शंका—यह सूत्र विमवाद सहित क्यों नहीं है ?

ममाधान—नहीं, क्योंकि, जो भूतबलि भट्टारक विस्वादन के कारणभूत समस्त
दोषोंसे रहित है उनके मुखसे निकले हुए सूत्रके विसयादी होनेमें विरोध है ।

इस जीवसमुदाहारके द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और अस्ती पचेन्द्रिय
पर्याप्तक अपर्याप्तक तथा सती अपर्याप्तक जीवोंमें जोड़ना चाहिये । विशेष इतना है कि
उक्त जीवक स्थितिभेदको जानना चाहिये । यादर व सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक अपर्याप्तक
जीवोंमें भी इसी प्रकार कहना चाहिये । विशेष इतना है कि इन सभी जीवोंमें साता व
असाताका द्विस्थानिक अनुभाग रूप यद्यमध्य ही होता है, क्योंकि, उनमें त्रिस्थानिक और
चतु स्थानिक अनुभागोंके यद्यका अभाव है । विशेषता यह है कि यादर व, सूक्ष्म
एकेन्द्रिय पर्याप्तक अपर्याप्तक जीवोंमें एक एक स्थितिमें अनन्त जीव होते ह । ये प्रमश
प्रथम स्थितियधके जीवोंसे लेकर विशेष अधिक ह । किन्तु मात्रसे वे अधिक हैं ?
उनको पर्योपमके अतरयानवें भागसे भाजित करनेपर जो एक भाग लघ हो उतने
मात्रसे भी अधिक हैं । पर्योपमके अन्त्यातवें भाग जाकर यद्यमध्य तक दुग्गुणी दुग्गुणी
वृद्धिसे वृद्धिगत होते गये हैं । आगे वे विशेष हीन हैं । दोष कथन जानकर कना
चाहिये । बहुत भेदोंसे सयुक्त होनेपर भी इस जीवसमुदाहारकी यहा सक्षपसे
प्ररूपणा का गई है । इस प्रकार जीवसमुदाहार समाप्त हुआ ।

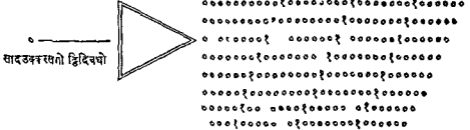
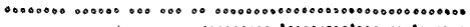
१ अ आ काप्रतिपु ' विसंवादीमुत्त', तापत्तो ' विसंवात्तं मुत्त' इति पाठ । २ प्रतिपु ' विसंवाद्दत्त-
इति पाठ । ३ तापत्तो ' द्विदिविसंतो वत्तवो' इत्येतापानय पाठधुत्तितोऽस्ति ।

(महष्टिया)



बत्तो उक्कस्सं गच्छदि सा द्विदी एसा

साहज्याबाधा
उक्कस्ताबाधा
सादबहणगो
द्विदि बधो

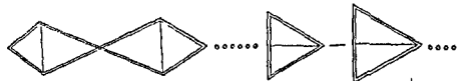


सादउक्कस्सगो द्विदिबधो

धुवद्विदीए चरिमद्विदी एसा



बहणिया आवाधा उक्कस्ताबाधा असादबहणगो द्विदिबधो



बत्तो उक्कस्सं दाह
गच्छदि सा द्विदी एसा गिद्वियप्पअतो
कोडाकोडी



पयडिसमुदाहारे' ति तत्थ इमाणि दुवे' अणियोगद्वाराणि
पमाणाणुगमो अप्पावहुए ति' ॥ २३९ ॥

परुवणाए सह तिण्णिअणियोगद्वाराणि किण्ण पम्पिदाणि ? ण, ण्दिसु चेव
परुवणाए अतम्भुदत्तादो । ण च पम्पणाए विणा पमाणाणीण समन्नो अत्थि,
विरोहादो । तेण एत्थ ताव परुवण वत्तइस्सामो । त जहा—अत्थि णाणावरणादीण
पयडीण द्विदिनधज्जयमाणट्टाणाणि । पम्पणा गत्ता ।

पमाणाणुगमे णाणावरणीयस्स असस्सेज्जा लोगा द्विदिवंधज्ज-
वसाणट्टाणाणि ॥ २४० ॥

णाणावरणीयस्स द्विदिवंधकारणज्जयमाणट्टाणाणि सत्ताणि ण्णट्ट काट्टण एसा
परुवणा पस्सविदा । ठिदिं पडि अज्जयमाणट्टाणाणमेमा पमाणपम्पणा ण होत्ति, उतरि
द्विदिसमुदाहारे द्विदिं पडि अज्जयमाणपमाणस्स पम्पिज्जमाणत्तादो ।

एवं सत्तण कम्माण ॥ २४१ ॥

जहा णाणावरणीयस्स द्विदिवंधज्जवसाणट्टाणाणमन्वोगाटेण पमाणपम्पणा कदा

अत्र प्रकृतिसमुदाहारका अधिकार है । उसमें दो अनुयोगद्वार हैं—प्रमाणानुगम
और अल्पबहुत्व ॥ २३९ ॥

शंका—प्ररूपणाके साथ यदा तीन अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा क्यों नहीं की गई है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, इनमें ही प्ररूपणाका अंतर्भाव हो जाता है । कारण कि
प्ररूपणाके बिना प्रमाणादिकोंकी सम्भावना ही नहीं है, क्योंकि, उसमें विरोध है ।

इसी कारण यदा पहिले प्ररूपणानो कहते हैं । वह इस प्रकार है—ज्ञानावरणादिक
प्रकृतियोंके स्थितिविधाध्यवसानस्थान हैं । प्ररूपणा समाप्त हुई ।

प्रमाणानुगमके अनुसार ज्ञानावरणीयके अमग्यात लोक प्रमाण स्थितिविधाध्यव
सानस्थान है ॥ २४० ॥

ज्ञानावरणीयके स्थितिविधमें कारणभूत सत्र अध्यवसानस्थानोंको इकट्ठा करके यह
प्रमाणप्ररूपणा कही गई है । प्रत्येक स्थितिके अध्यवसानस्थानाकी यह प्रमाणप्ररूपणा
नहीं है, क्योंकि आगे स्थितिसमुदाहारमें प्रत्येक स्थितिके आध्ययसे अध्यवसानस्थानोंके
प्रमाणकी प्ररूपणा की जानेवाली है ।

इसी प्रकार शेष सात कर्मोंकी प्रमाणप्ररूपणा है ॥ २४१ ॥

जिस प्रकार ज्ञानावरणीयके स्थितिविधाध्यवसानस्थानोंकी अन्वोगाह स्वरूपसे

१ आपत्तो 'समुदाहारे' इति पाठ । २ आपत्त्या 'इमा दुवो' इति पाठ । ३ संप्रति
प्रकृतिसमुदाहार उपर्यते । तत्र च द्वे अनुयोगद्वारे । तत्रया—प्रमाणानुगम अपबहुत्व च । तत्र प्रमाणानु
गम ज्ञानावरणीयस्य सर्वेषु स्थितित्रयेषु त्रिविधव्यवसानस्थानि ? उच्यते—असंख्यव्यवसानस्थानाप्रदेश
प्रमाणानि । एव सर्वकर्मणामपि प्रण्ययम् । क प्र (म टी) १, ८८ ।

तथा सेमसत्तण्ण कम्माण पमाणपम्बणा कायन्था । एव पमाणानुगमे त्ति मत्तमणियोगद्वा ।

अप्पावहुए त्ति मवत्थोवा आउअस्स द्विदिवधज्जवसाण-
ट्टाणाणि ॥ २४२ ॥

कुतो ? चटुण्णमाउआण मन्वोदयवियपग्गहणादो । कमायउदवट्टाणेसु उच्चिट्ठण
गहिदज्जममाणट्टाणाणमाउअउपाओग्गाण किण्ण [पम्बणा] कीरेदे ? ण, सगट्टिदिवध-
ट्टाणेहेदुभदसोदयट्टाणाण पम्बणाए अण्णपयटिउदयट्टाणेहि पओचनाभावादो ।

णामा-गोदाण द्विदिवधज्जवसाणट्टाणाणि दो वि तुल्लाणि
असत्तेजगुणाणि ॥ २४३ ॥

कुतो ? सामानियादो । णामा-गोदाणमुदयस्सेव आउओदयम्म ससारावयाए
मवत्थ सभवे मते ट्टिदिवधज्जममाणट्टाणाण थोउत्त कत्तो णव्वेदे ? ठिदिवधट्टाणाण थोव-

प्रमाणप्ररूपणा की गई है उसी प्रकार दोष सात कर्मोंकी प्रमाणप्ररूपणा भी करना चाहिये ।
इस प्रकार प्रमाणानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

अत्यन्तुल्य अनुयोगद्वारके अनुसार आयुकर्मके स्थितियन्त्रायवमान मन्मे
स्तोक है ॥ २४२ ॥

कारण कि चारों आयुओंके सब उदयनिम्नत्वोंका यहा ग्रहण किया गया है ।

शंका—क्यायोदयस्थानोंमेंसे चुनकर ग्रहण किये गये आयुबंधके योग्य अर्थात्
सानस्थानोंकी प्ररूपणा यहा क्यों नहीं की जाती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि अपने स्थितियन्त्रस्थानोंके हेतुभूत अपने उदयस्थानोंकी
प्ररूपणामें दूसरी प्रतियोंके उदयस्थानोंका कोई प्रयोजन नहीं है ।

नाम व गोत्रके स्थितियन्त्रस्थान दोनोंही तुल्य अमर्यातगुणे हैं ॥ २४३ ॥

कारण कि ऐसा स्वभावे है ।

शंका—जिस प्रकार मरार अरस्थामें नाम व गोत्रका उदय सर्वथ सम्भव है, उसी
प्रकार आयुके उदयकी भी सर्वत्र सम्भावना होनेपर उसके स्थितियन्त्राध्यवसानस्थानोंकी
स्तोकता कहासे जानी जाती है ।

१ ठिद्वीइयाए त्ति—स्थितिविधतया क्रमण क्रमणाध्यवसायस्थानावसरंवेयगुणानि वत्तव्यानि ।
यस्य यत् क्रमेण दीर्घं स्थितिस्य तत् क्रमेणाध्यवसायस्थानावसरंवेयगुणानि वत्तव्यानीत्यथ । तथाहि
—सन्त्ताकायायुप स्थितिविध्याध्यवसायस्थानानि । क प्र (म टी) १,८९ । २ प्रतियु उच्चिट्ठण
इति पाठ । ३ तेम्वोऽपि नाम गोत्रयोरेखरंवेयगुणानि । नचायुप स्थितिविधानेषु यद्योत्रमसरंवेयगुणा वृद्धि,
नाम गोत्रयोरेव विदोषाविधा, तत्कममायुपपक्षया नाम गोत्रयोरेखरंवेयगुणानि भवन्ति । उच्यते—आयुषो
अथ स्थितियन्त्राध्यवसायस्थानावसरंवेयगुणानि, नाम गोत्रयो पुनर्बर्षयाया स्थितौ अतिप्रभूतानि, स्तोत्रानि
चायुप स्थितिविधानानि, नाम गोत्रयास्त्वतिप्रभूतानि, ततो न कश्चिद्द्वार । क प्र (म टी) १,८९ ।

सादो । द्विदिवधट्टाणाण पहाणत्ते इच्छिज्जमाणे गुणगारे पल्लिवमस्स असखेज्जदिभागे होदि । होट्टु णाम, असखेज्जलोग्भेतो चेवेत्ति गुणगारे अट्टाण पमाणणियमाभावादो । णामा-गोदज्जवसाणट्टाणाण कथ तुल्लत्त ? ण, द्विट्ठिं धधताण समाणत्तणेण तत्तुल्लत्तावगमादो ।

णाणावरणीय-दसणावरणीय-वेयणीय-अतराइयाण द्विदिवंध-ज्जवसाणट्टाणाणि चत्तारि वि तुल्लाणि असखेज्जगुणाणि ॥ २४४ ॥

णामा गोदेहितो चत्तारि नि कम्माणि मिच्छत्तासत्तम-कमायपच्चण्हि सरिसाणि । तेण णामा-गोदाण अज्जवमाणेहितो चट्टुण्ण कम्माण अज्जवसाणट्टाणाणि असखेज्ज-गुणाणि त्ति ण घडदे । णामा गोदाण द्विदिवधट्टाणेहितो चट्टुण्ण कम्माण द्विदिवधट्टाणाणि विसेसाहियाणि त्ति असखेज्जगुणत्त ण जुज्जदे । हेट्टिमयेत्तिभागद्विदिवधट्टाणपाओगकमा-एहितो उवरिम्तिभागद्विदिवधट्टाणपाओगकसाउदयट्टाणाण असमाणणमणुवल्लभेण

समाधान—चूकि उसके स्थितिव-धस्थान स्तोक हैं, अतः इसीसे उसके स्थितिव-धध्यवसानस्थानोंकी स्तोत्रताका भी परिधान हो जाता है ।

स्थितिव-धस्थानोंकी प्रधानताके अभीष्ट होनेपर गुणकार पत्योपमका असख्यातवा भाग होता है ।

शका—यदि पत्योपमक असख्यातवा भाग गुणकार है तो, हो, क्योंकि असख्यात लोक मात्र ही गुणकार होता है, ऐसा हमारे पास उसके प्रमाणका कोई नियम नहीं है ।

शका—नाम व गोत्रके स्थितिव-धस्थानोंके परस्पर समानता कैसे है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि स्थितिव-धस्थानोंकी समानतासे उनकी समानता भी निश्चित है ।

ज्ञानावरणीय, दशनावरणीय, वेदनीय और अन्तराय, इन चारों ही कर्मोंके स्थितिवन्धस्थान तुल्य व असख्यातगुणे हैं ॥ २४४ ॥

शका—चारों ही कर्म मिथ्यात्व, असयम और कषाय रूप प्रत्ययोंकी अपेक्षा चूकि नाम-गोत्रके समान हैं इसी कारण नाम गोत्रके अध्यवसानस्थानोंकी अपेक्षा चारों कर्मोंके अध्यवसानस्थानोंकी असख्यातगुणा बतलाना सगत नहीं है । दूसरे, नाम गोत्रके स्थितिव-धस्थानोंकी अपेक्षा चार कर्मोंके स्थितिव-धस्थान चूकि विशेष अधिक हैं, इसलिये भी उनके स्थितिव-धध्यवसानस्थानोंकी असख्यातगुणा बतलाना उचित नहीं ? इसके अतिरिक्त चूकि नीचेके दो विभाग मात्र स्थितिव-धस्थानोंके योग्य कषायो-द्व्यस्थानोंकी अपेक्षा ऊपरके एक विभाग मात्र स्थितिव-धस्थानोंके योग्य कषायोदय स्थानोंके असमान न पाये जानेसे भी उनका असख्यातगुणत्व घटित नहीं होता ?

१ नाम-गोत्रयो सत्त्वरिपत्तिव-धध्यवसानस्थानेषु ज्ञानावरणीयदशनावरणीय-वेदनीयान्तरायाण रिपत्तिव-धध्यवसानस्थानेषु अध्यवसणुणाणि । कथमित्ति चेदु-पते—इह पत्योपमात्तरप्येवभागमात्राणु रिपत्ति-ध्वत्तिक्कान्ताणु द्विगुणवृद्धिरपल्लवा । तथा च सत्येकैकस्यापि पत्योपमन्यातेऽसखेयगुणाणि न्यन्ते, किं पुनर्दशवारोपमकोटीकोट्यपते इति । क म (म टी) २,८९ ।

असत्वेऽङ्गुणत्ताणुवतीदो ? ण एम दोमो, णामा गोत्ताणमुदयट्ठाणेहिंतो चटुण्ण कम्माण उदयट्ठाणपहुत्तेण अमसेऽङ्गुणत्तापिरोहान्ते । कथं चटुण्ण कम्माण पयडिअज्जवसाणत्वाणा अण्णोण्ण समाणत्त ? ण, मोदयादित्रियप्येहि तेमिं भेद्रामान्ते ।

मोहणीयस्स द्विदिवधज्जवसाणत्वाणाणि असत्वेऽङ्गुणाणि ॥ २४५ ॥

को गुणगारो ? पल्लिगेवमस्स अमसेऽङ्गुट्ठाभागो । कुदो ? चटुण्ण कम्माणमुदयट्ठाणेहिंतो मोहणीयस्स उदयट्ठाणाणममसेऽङ्गुणत्तादो । एव पयडिसमुत्ताहारो समत्तो ।

ठिदिसमुदाहारे त्ति तत्थ इमाणि तिण्णि अणियोगद्वाराणि पगणणा अणुकट्ठी तिब्ब मददा त्ति ॥ २४६ ॥

तथ पगणणा णाम इमिस्से इमिस्से ट्ठिणीए वधकारणभूताणि द्विदिवधज्जवसाणत्वाणाणि एत्तियाणि णत्तियाणि होति त्ति द्विदिवधज्जवसाणत्वाणाण पमाण पम्भेदि । तथ अणुकट्ठी णाम ट्ठिदिं पडिं^३ ट्ठिदिवधज्जवसाणत्वाणाण समाणत्तमसमाणत्त च पम्भेदि । तिव्व-मददा णाम तेसिं जहण्णुक्कस्सपरिणामाणमभिभागपडिच्छेदाणमप्यात्तहम पम्भेदि ।

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, ताम गोरके उदयस्थानोंकी अपेक्षा चार कर्मोंके उदयस्थानोंके बहुत होनेसे उनके अस्तस्थानगुणे होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

शंका—चार कर्मोंके प्रकृतिव्याप्यसानस्थानोंके परस्पर समानता कैसे है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि स्वोदयादिक विकल्पीकी अपेक्षा उनमें कोई भेद नहीं है ।

मोहनीयके स्थितिबध्वाध्ययसानस्थान मरयातगुणे है ॥ २४५ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पत्योपमका अमख्यातया भाग है क्योंकि, चार कर्मोंके उदयस्थानोंकी अपेक्षा मोहनीयके उदयस्थान अस्तस्थानगुणे है । इस प्रकार प्रकृतिसमुदाहार समाप्त हुआ ।

अन स्थितिसमुदाहारका अधिकार है । उमें ये तीन अनुयोगद्वार है—प्रगणना, अनुकृष्टि और तीजमन्दता ॥ २४६ ॥

इतमें प्रगणना नामक अनुयोगद्वार अणुक-अणु स्थितिके बन्धके कारणमून स्थितिवध्वाध्ययसानस्थान इतने इतने होते हैं, इस प्रकार स्थितिवध्वाध्ययसानस्थानोंके प्रमाणकी प्ररूपणा करता है । अनुकृष्टि अनुयोगद्वार प्रत्येक स्थितिसे स्थितिवध्वाध्ययसानस्थानाकी समानता व अस्तमानताको बतलाना है । तीजमन्दता अनुयोगद्वार उनके जघन्य व उद्वृष्ट परिणामोंके अभिभाग प्रतिच्छेदोंके अल्पवृत्तकी प्ररूपणा करना है ।

१ तेषोऽपि कथायमोहनीयस्य स्थितिवध्वाध्ययसानस्थानान्यवस्थेयगुणानि । तेषोऽपि दधनमाहनीयस्य स्थितिवध्वाध्ययसानस्थानान्यवस्थेयगुणानि । क प्र (म टी) १, ८९ । २ तप स्थितिसमुदाहारेऽपि त्रीण्यनुयोगद्वाराणि । तद्यथा—प्रगणना १, अनुकृष्टि २, तीजमन्दता ३ च । तत्र प्रगणना प्ररूपणार्थमाह—क प्र (म टी) १, ८७ गाथाया ऊपानिवा । ३ मप्रतिपत्ताऽयम् । अ वा वा ताप्रतियु 'पवदि' इति पाठ ।

तिणि चैव अणियोगदाराणि किमदृ पन्त्रिणि ? ण, चउन्व्यान्त्रिअणियोगदाराण
समनाभावादो ।

पगणणाए णाणावरणीयस्स जहणियाए द्विदीए द्विदिवधज्जव-
साणट्टाणाणि अससेज्जा लोगा ॥ २४७ ॥

जहणट्टिदी णाम धुनट्टिदी, ततो देट्ठा ट्टिन्निघामावादो । तय द्विदिवधज्जवसाण
ट्टाणाणि अमसेज्जलोगमेत्ताणि अणतभागवट्टि-अमसेज्जभागवट्टि-ससेज्जभागवट्टि-ससेज्जगुण-
वट्टि-अमसेज्जगुणवट्टि-अणतगुणवट्टिहि णिप्पण्णअमसेज्जलोगमेतट्टाणाणि होति । कथमेवस्स
जहण्णट्टिदिवधज्जवसाणट्टाणस्स अणतो सध्वनीवरासी भागहारो कीरदे ? ण, जहण्ण-
ट्टिन्निघज्जवसाणट्टाणे त्रि अमतमन्वजीवरासिमेत्तअत्रिभागवट्टिच्छेदुवलभादो ।

विदियाए द्विदीए द्विदिवधज्जवसाणट्टाणाणि अससेज्जा
लोगा ॥ २४८ ॥

विदियाए द्विदीए त्ति तुत्ते समउत्तरमणट्टिदी धेत्तन्वा । कथ तिस्से विदियत्त ? ण,

शका—तीन ही अनुयोगद्वार किस लिये कहे हैं ?

समाधान—नहीं, क्योंकि चतुर्थादिक अथ अनुयोगद्वारोंकी सम्माननाका
अभाव है ।

प्रगणना अनुयोगद्वारका अधिकार है । ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिके
स्थितिन-धाध्यमानस्थान असत्यात लोक प्रमाण हैं ॥ २४७ ॥

जघन्य स्थितिका अर्थ ध्रुवस्थिति है, क्योंकि, उसके नीचे स्थितिब-धका अभाव
है । उसमें स्थितिघ-धाध्यमानस्थान असत्यात लोक प्रमाण है । ये अनन्तभागवृद्धि,
असत्यातभागवृद्धि सत्यातभागवृद्धि, सत्यातगुणवृद्धि, असत्यातगुणवृद्धि और
अन तगुणवृद्धि, इन छह वृद्धियासे उत्पन्न असत्यात लोक माथ छह स्थानासे समुत्त
होते हैं ।

शका—अनन्त सर्व जीव राशिको एव जघन्य स्थितिब-धाध्यमानस्थानका
भागहार कैसे किया जा रहा है ?

समाधान—नहीं क्योंकि एक जघन्य स्थितिब-धाध्यमानमें भी अनन्त सब
जीवराशि प्रमाण अविभागप्रतिच्छेद पाये जाते हैं ।

द्वितीय स्थितिमें स्थितिन-धाध्यमानस्थान असत्यात लोक प्रमाण हैं ॥ २४८ ॥

'विदियाए द्विदीए' ऐसा कहनेपर एक समय अधिक अवस्थितिका प्रहण
करना चाहिये ।

शका—इसको द्वितीय स्थिति कहना कैसे उचित है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, ध्रुवस्थितिसे एक समय अधिक स्थिति पृथक् पायी

१ त्रिद्वार त्रितिन अ-ज्ञवसाणसलया लोगा । इसा वे (वि) सेसुद्धी आउणमसलगुणवट्टी ॥

धुवद्विदीदो समउत्तरद्विदीए पुधत्तुलभादो । तिस्रे द्विदीए वधपाओमज्जवमाणट्टाणाणि असखेज्जलोगमेत्तच्छट्टाणाणि होति त्ति भणिद होदि ।

तदियाए द्विदीए द्विदिवधञ्जवसाणट्टाणाणि असखेज्जा लोगा ॥ २४९ ॥

अणतभागवट्टीए अगुलस्म अमखेज्जिभागमेत्तट्टाण गत्तण सद्ममखेज्जभागवट्टी होदि । पुणो वि तेत्तियमेत्त चेत्त अणतभागवट्टीए अट्टाण गत्तण विदियअमखेज्जभागवट्टी होदि । एत्त कदयमेत्तअमखेज्जभागवट्टीओ कदययग्गो-कदयमेत्तअणतभागवट्टीयो च गत्तण सद् सखेज्जभागवट्टी होदि । पुणो वि एत्तियमेत्त चेत्त अट्टाण पुच्चविहाणेण गत्तण विदिया सखेज्जभागवट्टी होदि । एवमेदेण विहाणेण कदयमेत्तमखेज्जभागवट्टीसु गदासु समयविरोहेण सद् सखेज्जगुणवट्टी होदि । एदेण कमेण कदयमेत्तमखेज्जगुणवट्टीसु गदासु सद्मसखेज्जगुणवट्टी होदि । पुणो समयविरोहेण कदयमेत्तअमखेज्जगुणवट्टीसु गदासु मद्मणत्तगुणवट्टी होदि । एत्त सत्त पि एत्त छट्टाण त्ति भण्णदि । एरिसाणि अमखेज्जिलोगमेत्तट्टाणाणि घेत्तण तदियाए द्विदीए द्विदिवधञ्जवसाणट्टाणाणि होति ।

एवमसखेज्जा लोगा असखेज्जा लोगा जाव उक्कस्सद्विदि त्ति ॥ २५० ॥

जाती है ।

उक्त स्थितिके बन्धने योग्य अध्यवसानस्थान अस्वप्यात् लोक मात्र छद् स्थानोंसे सयुक्त होते हैं, यह अभिप्राय है ।

तृतीय स्थितिके स्थितिप्राध्यवसानस्थान अगम्यात् लोक प्रमाण ६ ॥ २५१ ॥

अगुल्ले अस्वप्यात्तरे भाग मात्र अनन्तभागवृद्धिने स्थानेने धीतनेपर एक धार अस्वप्यात्त भागवृद्धि होती है । फिरसे भी उतना ही अनन्तभागवृद्धिका अध्यान जाकर द्वितीय अस्वप्यात्तभागवृद्धि होती है । इस प्रकारसे काण्डक प्रमाण अस्वप्यात्तभागवृद्धियों, काण्डक वय और काण्डक प्रमाण अनन्तभागवृद्धियोंके धीतनेपर एक धार सप्यात्तभाग वृद्धि होती है । फिरसे भी पूर्वोक्त रीतिसे इतने मात्र स्थान जाकर द्वितीय सप्यात्तभाग वृद्धि होती है । इस प्रकार इस रीतिसे काण्डक प्रमाण सप्यात्तभागवृद्धियोंके धीतनेपर आगमाविरोधसे एक धार सप्यात्तगुणवृद्धि होती है । इस क्रमसे काण्डक प्रमाण सप्यात्तगुणवृद्धियोंके धीत जानेपर एक धार अस्वप्यात्तगुणवृद्धि होती है । पश्चात् आगमाविरोधसे काण्डक प्रमाण अस्वप्यात्तगुणवृद्धियोंके धीतनेपर एक धार अनन्तगुण वृद्धि होती है । यह सभी एक पट्टस्थान बना जाता है । ऐसे अस्वप्यात्त लोक प्रमाण पट्टस्थान ग्रहण कर्त्ते तृतीय स्थितिमें निश्चितबन्धाध्वमानस्थान होते हैं ।

इस प्रकार उक्त स्थिति तरु अगम्यात् लोक अगम्यात् लोक प्रमाण स्थिति-वप्राध्यवसानस्थान होते हैं ॥ २५० ॥

जहा पुत्रिर्हीण तिण्ण द्वितीण अज्झममाणट्टाणाणि पमाणेण असखेज्जलोगमेत्ताणि
तहा उवरिममन्वद्वितीण पि द्विदियमन्वसणट्टाणाण पमाण होदि ति जाणावणट्टमेवमिदि
पिदेसो कदो ।

एव सत्तण्णं कम्माणं ॥ २५१ ॥

जहा णाणावरणीयस्स द्विदि पडि' द्विदियमन्वसणट्टाणाण पमाणपरूवणा कदा
तथा सेममत्तण्ण पि कम्माण परूवेदध्व, जमखेज्जलोगपमाणत्त पडि भेत्ताभावादो । एव
पमाणपरूवणा गदा ।

एत्थ सतपरूवणा किण्ण परूविदा ? ण, तिस्से पमाणतम्भावादो । कदो ? पमाणेण
त्रिणा सताणुमत्तीदो ।

तेसि दुविधा सेडिपरूवणा अणतरोवणिधा परपरोव- णिधा ॥ २५२ ॥

जत्थ णित्त योमन्हुत्तपरिस्खा कीरदे मा अणतरोवणिधा । जत्थ दुगुण चदुगुणा-
दिपरिस्खा कीरदि सा परपरोवणिधा । एव मेडिपरूवणा दुविहा पेय, तदियादिपयारा-

जिस प्रकार पूर्वाक्त तीन स्थितियावे अध्यवसानस्थान प्रमाणसे धसयथात लोक
मात्र है, उसी प्रकार आगेकी सत्र स्थितियोंके भी स्थितिय-वाध्यवसानस्थानोंका प्रमाण
होता है, यह घतलानेके लिये सूत्रमें ' एव ' पदका निर्देश किया गया है ।

इसी प्रकार सात कमोंके स्थितिय-वाध्यवसानस्थानोंकी प्ररूपणा करना
चाहिये ॥ २५१ ॥

जिस प्रकार क्षानावरणीयकी प्रत्येक स्थितिसम्ब धी स्थितिय-वाध्यवसानस्थानोंके
प्रमाणकी प्ररूपणा की गई है, उसी प्रकार दोष सान कमोंकी भी स्थितियोंके स्थितिय-वा
ध्यवसानस्थानोंकी प्ररूपणा करना चाहिये क्योंकि, उनमें असयथात लोक प्रमाणकी
अपक्षा कोई भेद नहीं है । इस प्रकार प्रमाणप्ररूपणा समाप्त हुई ।

शंका—यहां सत्परूवणाकी प्ररूपणा क्यों नहीं की गई है ?

समाधान—वहीं, क्योंकि उसका प्रमाण अनुयोगद्वारमें अतर्भाव हो जाता है,
कारण कि प्रमाणके त्रिणा सत्त्व घटित ही नहीं होता है ।

उक्त स्थानोंकी त्रेणिप्ररूपणा दो प्रकार है—अनन्तरोपनिधा और
परम्परोपनिधा ॥ २५२ ॥

जहापर निरन्तर अल्पबहुवकी परीक्षा की जाती है वह अनन्तरोपनिधा कही जाती
है । जहापर दुगुणत्व और चतुर्गुणत्व आदिकी परीक्षा की जाती है वह परम्परोपनिधा
कहलानी है । इस प्रकार त्रेणिप्ररूपणा दो प्रकार ही है, क्योंकि, और तृतीयादि प्रकारोंकी

१ मप्रतिपाठोऽयम् । अ आ-या प्रतिपु ' णाणावरणीयस्स पडि ', ताप्रती ' णाणावरणीयस्स वयदि ' इति पाठ ।

संभवादो । एत्थ सद्विही धालजणबुद्धिविष्कारणह्ठ ठवेदव्वा—१६। २०। २४। २८।
३२। ४०। ४८। ५६। ६४। ८०। ९६। ११२। १२८। १६०। १९२।
२२४। २५६।

अणतरोवणिधाए णाणावरणीयस्स जहणियाए द्विदीए
द्विदिवधञ्जवसाणट्टाणाणि थोवाणि ॥ २५३ ॥

केहितो थोवाणि ति धुत्ते उवरिमद्विदिवधञ्जवसाणट्टाणोहितो । कधमेद णव्वदे ?
हेत्ता द्विदिवधट्टाणाभावेण द्विदिवधञ्जवसाणट्टाणाभावादो ।

विदियाए द्विदीए द्विदिवधञ्जवसाणट्टाणाणि विसेसा-
हियाणि^२ ॥ २५४ ॥

केत्थियमेत्तेण ? अससेज्जलोगमेत्तेण । जहण्णद्विदिअञ्जवसाणट्टाणाण विसेसागमणह्ठ
को भागहारो ? पल्लिदोवमस्स अससेज्जदिभागो । एगुणहाणिअट्टाणमिदि धुत्त होदि ।

सम्भावना नहीं है । यहापर अज्ञानी जनोकी बुद्धिको विकसित करनेके लिये सहष्टिकी
की स्थापना करना चाहिये (मूलमें देखिये)

अनन्तरोपनिशकी अपेक्षा ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिके स्थितिबन्धाध्यव-
सानस्यान स्तोक हैं ॥ २५३ ॥

शका—किनकी अपेक्षा स्तोक हैं ?

समाधान—इस शकारे उत्तरमें कहते हैं कि वे ऊपरके स्थितिबन्धाध्यवसान
स्थानोंकी अपेक्षा स्तोक हैं ।

शका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—चूंकि नीचे स्थितिबन्धाध्यवसानोंके न होनेसे स्थितिबन्धाध्यवसान
स्थानोंका अभाव है, अतः इसीसे स्पष्ट होता है कि वे ऊपरके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंकी
अपेक्षा स्तोक हैं ।

द्वितीय स्थितिके स्थितिबन्धाध्यवसानस्यान विशेष अधिक हैं ॥ २५४ ॥

कितने मात्रसे अधिक हैं ? अस्तवथात लोक मात्रसे वे अधिक हैं ।

शका—जघन्य स्थितिके अध्यवसानस्थानोंके विशेषको लानेके लिये अत्र
क्या है ?

१ अत्र देवा प्ररुवणा । तथया—अनन्तरोपनिषया परपरोपनिषया च तत्र । अत्र देवा प्ररुवणा
प्रमाणमाह—हस्सा ये (वि) सेसवड्डी भायुर्वेडीनां कर्मेणा हस्साव्वचन्नुह पियेत्तेत्तु व्वे
द्वितीयादियु स्थितिस्थानबन्धेषु विशेषवृद्धि विशेषाधिक्या इदिरवसेया । तददा—इत्थं च तत्र
स्थितौ तद्वचबदेत्तुत्ता अप्ययसाया नानाजीवापेक्षयाऽऽसत्त्वेयल्लोकाकाशदेवत्तुत्ता । ते च तत्र
वर्षेत्तोका । क प्र (म टी) १, ८० । २ ततो द्वितीयस्थितौ विशेषाधिक्या । ततो द्वितीयस्थितौ
विशेषाधिक्या । एवं । एष सर्वेषामि कन्नु वन्नु । क २ (२८) १००

सदिट्टीए एत्य गुणहाणिपमाण चत्तारि ४ । एद निरलेदूण जहण्णट्टिदिनधज्झवसाणट्टाणाणि सोलस समण्ड काइण दिण्णे निरट्णरूव पडि। एगेगपस्सेवपमाण पावदि । एत्ये एगपस्सेव घेत्तूण जहण्णट्टिदिनधज्झवसाणट्टाणेषु पणित्ते विदियट्टिदिनधज्झवसाणट्टाणाणि हँति ति घेत्तव ।

तदियाए [ट्टिदीए] ट्टिदिवंधज्झवसाणट्टाणाणि विसेसाहियाणि ॥ २५५ ॥

केत्तियमेतेण ? एगपस्सेवमेतेण । एत्य जाव पढमगुणहाणिचरिमसमओ ति अवट्टिदो पस्सेवो । कुदो ? वट्टिदएगेगपस्सेवाण ट्टिदिवंधज्झवसाणट्टाणाणमेगेगरूवाहियगुणहाणिभागहास्वलभादो ।

एव विसेसाहियाणि विसेसाहियाणि जाव उक्कस्सिया ट्टिदि ति ॥ २५६ ॥

एव सत्तट्टिदिवंधज्झवसाणट्टाणाणि । अणतराणतरेण विसेसाहियकमेण गच्छति जाव उक्कस्सट्टिदिवंधज्झवसाणट्टाणे ति । णरि गुणहारि पडि पस्सेवो दुगुण-दुगुणो होदि । कुदो ? दुगुण दुगुणकमेण ट्टिदिगुणहाणिचरिमट्टिदिवंधज्झवसाणट्टाणाणमवट्टिदएगगुणहाणिभागहारदसणादो ।

समाधान—भागहार पल्लोपमका अस्तप्यातवा भाग है । अभिप्राय यह कि एकगुणहानिअध्याय भागहार है ।

यहा सदृष्टिमें गुणहानिका प्रमाण चार (४) है । इसका विरलन करके जघय स्थितिके स्थितिय-घाध्यवसानस्थानोंके प्रमाण सोलहको समलण्ड करके देनेपर एक एक विरलनरूपके ऊपर एक प्रक्षेपका प्रमाण प्राप्त होता है । यहाँ एक प्रक्षेपको ग्रहण करके जघन्य स्थितिय-घाध्यवसानस्थानोंमें मिलानेपर द्वितीय स्थितिके स्थितिय-घाध्यवसान स्थानोंका प्रमाण होता है, ऐसा जानना चाहिये ।

तृतीय स्थितिके स्थितिय-घाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं ॥ २५५ ॥

कितने मात्रसे वे विशेष अधिक हैं ? एक प्रक्षेपके प्रमाणसे वे विशेष अधिक हैं । यहाँ प्रथम गुणहानिके अन्तिम समय तक अवस्थित प्रक्षेप है, क्योंकि एक प्रक्षेपसे घुट्टिको प्राप्त हुए स्थितिय-घाध्यवसानस्थानोंका उत्तरोत्तर एक एक अक्से अधिक गुणहाणि भागहार पाया जाता है ।

इस प्रकार वे उत्कृष्ट स्थितिक विशेष अधिक विशेष अधिक हैं ॥ २५६ ॥

इस प्रकार सब स्थितियोंके अध्यवसानस्थान अनन्तर अनन्तर क्रमसे उत्कृष्ट स्थितिके स्थितिय-घाध्यवसानस्थानोंतक उत्तरोत्तर विशेष अधिक होते गये हैं । विशेष इतना है कि प्रक्षेप प्रत्येक गुणहानिके अनुसार दूना दूना होता गया है । कारण कि दूने दूने क्रमसे स्थित गुणहानियोंमें अन्तिम स्थितिके स्थितिय-घाध्यवसानस्थानोंका अवस्थित एक गुणहानि भागहार देखा जाता है ।

१ ताप्रती 'अपट्टिदो । कुदो' इति पाठः ।

एव छण्ण कम्माण ॥ २५७ ॥

जहा णाणावरणीयस अणतरोपणिधा परुविदा तद्वा छण्ण कम्माण आउववेजाणें परुवेदव्वा, विसेसाहियत्त पडि भेदाभावादो ।

आउअस्स जहणियाए द्विदीए द्विदिवधज्झवसाणट्टाणाणि धोवाणि ॥ २५८ ॥

कुदो ? आउअम्म अससेअदिलोगमेत्तद्विदिवधज्झवसाणट्टाणाणमसखेअदिभागमेत्तेण चैन जहण्णद्विदिपाओग्गतादो ।

विदियाए द्विदीए द्विदिवधज्झवसाणट्टाणाणि असखेज्ज-
गुणाणि ॥ २५९ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असखेअदिभागो । कुदो ? जहण्णद्विदिवधकारणादो समउत्तरद्विदिवधकारणाण बहुत्तुत्तलभादो ।

तदियाए द्विदीए द्विदिवधज्झवसाणट्टाणाणि असखेज्ज-
गुणाणि ॥ २६० ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असखेअदिभागो । कारण पुत्र व वत्तव्य ।

इमी प्रकार छह कर्मोंकी अनन्तरोपनिधाकी प्ररूपणा करना चाहिये ॥ २५७ ॥

जिस प्रकार घनावरणीय कर्मकी अनन्तरोपनिधाकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार आयुको छोड़कर शेष छह कर्मोंकी अनन्तरोपनिधाकी प्ररूपणा करना चाहिये, क्योंकि, उसमें विशेष आवश्यकताकी अपेक्षा कोई भेद नहीं है ।

आयु कर्मकी जन्य स्थितिमें स्थिति-धाध्यवसानस्थान स्तोक हैं ॥ २५८ ॥

इसका कारण यह है कि आयु कर्मके अस्तव्यस्त लोभ प्रमाण स्थिति-धाध्यवसान स्थानोंमें इनके अस्तव्यस्तत्वे भाग मात्र ही जघन्य स्थितिके योग्य हैं ।

द्वितीय स्थितिके स्थिति-धाध्यवसानस्थान असरयात्तगुणे हैं ॥ २५९ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार आवलिका अस्तव्यस्तता भाग है, क्योंकि, जघन्य स्थिति-धाध्यवसान कारणोंकी अपेक्षा एक एक समय अधिक स्थिति-धाध्यवसान कारण बहुत पाये जाते हैं ।

तृतीय स्थितिके स्थिति-धाध्यवसानस्थान असरयात्तगुणे हैं ॥ २६० ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार आवलिका अस्तव्यस्तता भाग है । इसके कारणका कथन पहिलेके ही समान करना चाहिये ।

१ आउणमसखगुणवट्ठी । आयुधा जघन्यस्थितेश्च प्रतिस्थिति-धमसख्येयगुणवट्ठीवत्तया । तत्तथा—आयुषो कथयस्थितौ तद्वचधेदुभूता अथवसाया असख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणाः । ते च सर्वस्तोका । ततो द्वितीयस्थितौ असख्येयगुणा । ततोऽपि तृतीयस्थितावसख्येयगुणा । एव तावद्वाच्यं यावदुत्पत्त्या स्थिति । क प्र (म टी) १.८७ ।

एवमसंखेज्जगुणाणि असंखेज्जगुणाणि जाव उक्कसिया
द्विदि त्ति ॥ २६१ ॥

एव 'द्विदि पडि' द्विदि पडि आवलियाए असंखेज्जदिभागगुणगारेण सव्वद्विदिवध-
ज्जवसाणट्टाणाणि णेदच्चाणि जाव उक्कसद्विदि त्ति । एवमणतरोवणिधा समता ।

परपरोवणिधाए णाणावरणीयस्स जहणियाए द्विदीए
द्विदिवधज्जवसाणट्टाणेहिंतो तदो पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभाग
गंतुण दुगुणवड्ढिदा ॥ २६२ ॥

कुदो ? विरलणमेत्तपम्भेवेसु जहणद्विदिवधज्जवसाणट्टाणेषु वड्ढिदेसु दुगुणज्जवसाण-
ट्टाणसमुप्पत्तीदो ।

एव दुगुणवड्ढिदा दुगुणवड्ढिदा जाव उक्कसिया द्विदि
त्ति ॥ २६३ ॥

एवमवद्विदमेत्तियमद्धान गत्तुण सन्धदुगुणवड्ढीओ उप्पज्जति त्ति वत्तव्व ।

एव द्विदिवधज्जवसाणदुगुणवड्ढिदा-हाणिट्टाणतर पल्लिदोवमस्स
असंखेज्जदिभागो^१ ॥ २६४ ॥

इस प्रकार वे उत्कृष्ट स्थिति तक उत्तरोत्तर असख्यातगुणे असख्यातगुणे होते
गये हैं ॥ २६१ ॥

इस प्रकार उत्कृष्ट स्थितितक एक एक स्थितिके प्रति सय स्थितिबन्धाध्यवसान
स्थानोंकी आवलिके असख्यातवर्षे भाग गुणकारसे ले जाना चाहिये । इस प्रकार
अन्तरोपनिधा समाप्त हुई ।

परम्परोपनिधाकी अपेक्षा ज्ञानावरणीयकी अधन्य स्थितिके स्थितिबन्धाध्यवसान-
स्थानोंकी अपेक्षा उनसे पत्योपमके असख्यातवर्षे भाग जाकर वे दुगुणी वृद्धिको
प्राप्त हैं ॥ २६२ ॥

इसका कारण यह है कि अधन्य स्थितिके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंमें विरलन
राशिके बराबर प्रज्ञवर्षोंकी वृद्धिके होनेपर दुगुणे अध्यवसानस्थानोंकी उत्पत्ति होती है ।

इस प्रकार वे उत्कृष्ट स्थिति तक दुगुणी दुगुणी वृद्धिको प्राप्त हुए हैं ॥ २६३ ॥

इस प्रकार इतना मात्र अध्यान जाकर सय दुगुणवृद्धिया उत्पन्न होती हैं, वेसा
कहना चाहिये ।

एक स्थितिसम्बन्धी अध्यवसानोंके दुगुण-दुगुणवृद्धिहानिस्थानोंके अन्तर पत्योपमके
असख्यातवर्षे भाग प्रमाण हैं ॥ २६४ ॥

१ अ भा-का-प्रतियु 'पयडि' इति पाठ । २ पञ्जासंखियभागं गत्तु दुगुणाणि जाव उक्कोरा क प १,८८

कुदो ? णाणागुणहाणिसलागाहि पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागमेत्ताहि सखेज्ज-
पलिदोवमेसु भागे द्विदोसु असखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूलवलमादो । एवमेदेण सुत्तेण एगुण-
हाणिअद्धानपमाण परुविद । णाणागुणहाणिसलागाण पमाणपरुखणद्वमुत्तरसुत्त भणदि—

**णाणाठ्ठिदिग्धञ्जवसाणदुगुणवद्धिहाणिट्ठाणतराणि अगुल-
वग्गमूलछेदणाणामसखेज्जदिभागो ॥ २६५ ॥**

अगुलवग्गमूलमिदि सुत्ते सुचीअगुलपढमवग्गमूल घेतत्त्व । तस्स अद्धेदणाण
असखेज्जदिभागमेत्ताओ णाणागुणहाणिसलागाओ होति । होताओ वि मोहणीयद्विदिपदेस-
णाणागुणहाणिसलागाहितो योवाओ, ताणि पलिदोवमवग्गमूलस्स असखेज्जदिभागमेत्ताओ
त्ति पमाणमभणिदूण अगुलवग्गमूलछेदणाण असखेज्जदिभागो त्ति परुविदत्तादो । होताओ
वि असखेज्जगुणहीणाओ पुत्र विहज्जमाणरासीदो सपहि विहज्जमाणरासीए असखेज्जगुण
हीणत्तादो ।

**णाणाठ्ठिदिग्धञ्जवसाणदुगुणवद्धिहाणिट्ठाणतराणि
थोवाणि ॥ २६६ ॥**

कारण वि पल्लोपमके असख्यातवें भाग मात्र नानागुणहानिशलाकाओंका सषषात
पल्लोपमोंमें भाग देनेपर पल्लोपमके असख्यात प्रथम धर्ममूल लघ होत हैं । इस प्रकार
इस सूत्रके द्वारा एक गुणहानिअद्धानके प्रमाणकी प्ररूपणा की गई है । नानागुणहानि
शलाकाओंके प्रमाणकी प्ररूपणाके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

नानास्थितिष धाध्यवसानों सम्बन्धी दुगुण दुगुणवृद्धि हानिस्थानान्तर अगुलसम्बन्धी
वर्गमूलके अर्धच्छेदोंके असख्यातवें भाग प्रमाण हैं ॥ २६५ ॥

‘अगुलवर्गमूल’ ऐसा कहनेपर सूचीअगुलके प्रथम धर्ममूलको ग्रहण करना
चाहिये । उसके अर्धच्छेदोंके असख्यातवें भाग प्रमाण नानागुणहानिशलाकायें होती हैं ।
इतनी होकरके भी मोहनीय कर्मके स्थितिप्रदेशोंकी नानागुणहानिशलाकाओंसे स्तोत्र हैं,
क्योंकि, ‘वे पल्लोपमके असख्यातवें भाग प्रमाण हैं’ ऐसा उनका प्रमाण न घतलाकर
‘वे अगुलके वर्गमूलसम्बन्धी अर्धच्छेदोंके सषषातवें भाग हैं’ ऐसी प्ररूपणा की गई है ।
असख्यातगुणी हीन होती हुई भी पूर्वमें विमज्ज्यमान राशिसे इस समयकी विमज्ज्यमान
राशि असख्यातगुणी हीन है ।

नानाम्भितिय धाध्यवसानदुगुणवृद्धिहानिस्थानान्तर स्तोत्र हैं ॥ २६६ ॥

१ नानतराणि अगुलमूलछेदणमसंखनमो ॥ क प्र १,८८, नानाद्विगुणवृद्धिरयानानि चागुलवर्ग
मूल छेदनकासंख्येयसमभागप्रमाणानि । एतदुच्च भवति—अगुलमात्रशेनगतप्रदेशराशेर्यत्प्रथम वर्गमूल
तमनुष्यप्रमाणद्वेदराशिपणवति—उेदनविधिना तावच्छिरसे वायद् भाग न प्रयच्छति । तेषां च छेदनका-
नामखस्येयसमे भाग वावन्ति छेदनकानि तावन्तु यावानाकाशप्रदेशराशिस्तावत्प्रमाणानि नानाद्विगुण
स्थानानि भवन्ति (म टी) । २ अ-आ-काप्रतिषु ‘तासि च पलिदोवम—’ इति पाठ ।

कुतो ? पलितोऽयमपढमवग्मूलम् अमलेऽदिभागपमाणत्तादो ।

एयद्विदिवधञ्जवसाणदुगुणवडिढ-हाणिट्टाणतरमसंखेज्ज-

गुण ॥ २६७ ॥

कुतो ? असलेऽपलितोऽयमपढमवग्मूलपमाणत्तादो । कथमेद णञ्जे ? णाणागुण-
हाणिसलागाहि कम्मद्विदीए ओवट्टिदाए एगुणहाणिपमाणुवत्तादो ।

एवं छण्ण कम्माणमाउववज्जाण ॥ २६८ ॥

जहा णाणावरणीयस्स परपरोपनिधा परुविदा तहा छण्ण कम्माण परुवेद्व-
विसेमाभावादो । आउअस्म एसा पम्बणा णत्थि, ठिदिं पडि अमलेऽगुणकमेण द्विदि-
पधञ्जवसाणहाणाण वडिदसणादो ।

सपहि सेडिपरुवणाए सचिदाण अवहार-भागामाग-अप्पावहुगाण पम्बण कम्मामो ।
त जहा—नहणियाए द्विदीए द्विदिवधञ्जवसाणहाणपमाणेण सञ्चद्विदिवधञ्जवसाणहाणाणि
केवचिरेण कालेण अहिरिज्जति ? असखेऽदिवग्गुणहाणिट्टाणतरेण कालेण अवहिरिज्जति ।
त जहा—उक्कस्सद्विदिवग्गुणहाणपमाणेण सञ्चद्विदिवधञ्जवसाणेसु कदेसु किञ्चण-

फ्योकि, वे पल्योपम सम्य-धी प्रथम धर्ममूलके असख्यातये भाग प्रमाण है ।

एक स्थिति-ध्याध्यवसानदुगुणद्विहा-निस्थानान्तर असख्यातगुण है ॥ २६७ ॥ ,

फ्योकि, वह पल्योपमके असख्यान प्रथम धर्ममूलके बराबर है ।

शका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—क्योंकि कमस्थितिमें नानागुणद्वानिस्थानाकाओंका भाग देनेपर एक
गुणद्वानिका प्रमाण लघु होता है, इसीसे जाना जाता है कि वह पल्योपमके असख्यात
प्रथम धर्ममूलके बराबर है ।

इसी प्रकार आयुको छोड़कर छह कर्मोंकी प्ररूपणा करना चाहिये ॥ २६८ ॥

जिस प्रकार धानावरणीयकी परंपरोपनिधाकी प्ररूपणा की गई है, उसी प्रकार छह
कर्मोंकी परंपरोपनिधाकी भी प्ररूपणा करना चाहिये, फ्योकि, उसमें कोई पिशेपता
नहीं है । आयु कर्मके सम्य-धमें यह प्ररूपणा लागू नहीं होती फ्योकि, उसके
स्थितिव-ध्याध्यवसानस्थानोंके प्रत्येक स्थितिके धनुसार असख्यातगुणित-प्रभसे वृद्धि देखी
जाती है ।

अन धेणिप्ररूपणाके द्वारा सूचित अवहार, भागाभाग और अस्परुहृत्की प्ररूपणा
करते हैं । यथा—अधम्य स्थितिके स्थितिव-ध्याध्यवसानस्थानोंके प्रमाणसे सब
स्थितिव-ध्याध्यवसानस्थान कितने फालके द्वारा अपहृत होते हैं ? उक्त प्रमाणसे वे
असख्यात डेढ गुणद्वानिस्थाना-तरकालके द्वारा अपहृत होते हैं । यथा—सब
स्थितिव-ध्याध्यवसानस्थानोंके उल्टे स्थितिव-ध्याध्यवसानस्थानोंके प्रमाणसे करनेपर वे
कुछ कम डेढ गुणद्वानि प्रमाण होते हैं । यथा सूचिधमें सब अध्यवसानस्थानोंका प्रमाण

दिवङ्गुणहाणिमेत्त होदि तस्य सद्विद्वि ए सञ्जवमाणट्टाणपमाणमेद' १५६० । पुणो एदस्सि उक्कस्सद्विदिवधञ्जसणेहि भागे हिदे दिवङ्गुणहाणिपमाणमागच्छदि । त च एद १९५ । ३२ । पुणो एद जहण्णट्टिदिवञ्जवमाणमागहारमिच्छामो ति सञ्जवसाणदुगुण-
वद्धि-हाणिसलागाओ विरलिय विगुणिय अण्णोण्णभामे कदे जो उप्पण्णरासी तेण रासिणा १६ दिवङ्गुणहाणीए गुणिदाए जहण्णट्टिदिवञ्जवमाणमागहारो होदि १९५ । २ । पुणो एदेण सञ्जवसाणेसु अवहिरिदेसु जहण्णट्टिदिवञ्जवमाणमागच्छदि १६ । पुणो एदस्सु-
वरि भागहारो निमेमहीणकमेण जाणिदूण णेदव्यो जाव एगदुगुणवद्धिपमाणमेत्त चडिदो ति । पुणो तप्पमाणेण अवहिरिजमाणे पुञ्चभागहारो अद्द होदि । कुट्ठो ? एगगुणवद्धि चडिदो ति एगन्व विरलिय त्रिय करिय अण्णोण्णम्मत्थ कादूण पुञ्चभागहारे ओउट्टिदे तदद्दुव-
ल्लादो १९५ । ४ । पुणो एदस्सुवरि भागहारो जाणिदूण णेदव्यो जाव उक्कस्सद्विदि-
अञ्जवसाणे ति । पुणो तप्पमाणेण सञ्जदव्ये अवहिरिजमाणे किञ्चूणदिवङ्गुणहाणिट्टाणतेण
अवहिरिज्जदि ।

एव छण्ण कम्माण भागहारपरुवणा पञ्चेदव्या । एउ आउअस्स वि वत्तव ।
णवरि जहण्णट्टिदिवञ्जवमाणपमाणेण सञ्जवसाणट्टाणाणि अमखेवल्लोगमेत्तकालेण अवहि-
रिज्जति त जहा—आउअस्स अञ्जवसाणगुणगारो अवट्टिदो ति के वि आइरिया मणति ।

यद्द है—१५६० । इसमें उत्कृष्ट स्थितिव-अध्यवसानस्थानोंका भाग देनेपर डेढ गुणहानि
प्रमाण आता है । यद्द यद्द है— $1\frac{1}{2}$ । इस जघन्य स्थितिसम्बन्धी अध्यवसानोके
भागहारको लानेकी इच्छासे सब अध्यवसानस्थानोंकी दुगुणवृद्धि-हानिशलाकाओंका
विरलन करके दुगुणित कर परस्पर गुणा करनेपर जो राशि उत्पन्न हो (१६) उससे
डेढ गुणहानिको गुणित करनेपर जघन्य स्थितिके अध्यवसानस्थानोंका भागहार होता
है— $1\frac{1}{2} \times 16 = 24$ । इसका सब अध्यवसानस्थानोंमें भाग देनेपर जघन्य स्थितिके
अध्यवसानस्थानोंका प्रमाण आता है— $160 - 24 = 136$ । इसके आगे एक
दुगुणवृद्धि प्रमाण मात्र जाने तक भागहारको विशेषरीत कमसे जानकर ले जाना चाहिये ।
फिर उक्त प्रमाणसे अपहृत करनेपर पूर्य भागहार आधा होता है, क्योंकि, एक गुणहानि
आगे गये हैं, अत एक अक्का विरलन करके दुगुणा कर परस्पर गुणा करनेपर जो
प्राप्त हो उससे पूर्य भागहारको अपवृत्त करनेपर उसका अर्ध भाग लब्ध होता है—
 $136 - 2 = 134$ । फिर इसके आगे उत्कृष्ट स्थितिके अध्यवसानस्थानोंतक भागहारको
जानकर ले जाना चाहिये । उसके प्रमाणसे सब द्रव्यको अपहृत करनेपर यद्द कुछ कम
डेढ गुणहानिस्थानान्तरालसे अपहृत होता है ।

इस प्रकार छह कमोंके भागहारकी प्ररूपणा करना चाहिये । इसी प्रकार आगुकमके
भी भागहारकी प्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि सब अध्यवसानस्थान
जघन्य स्थितिसम्बन्धी अध्यवसानस्थानोंके प्रमाणसे असख्यात लोक मात्र बालके द्वारा

तोसिमहिष्पाएण भागहारो वुच्चदे—अतोमुहुत्तूणतेत्तीससागरोनमाणि गच्छ कादृण “अद्धं शून्य रूपेषु गुणम्” इति गणितन्यायेन ज लद्ध त ठविय “रूपोनमादिसगुणमेकोणगुणो-
न्मथितमिच्छा” एदेण सुत्तेण रूवूण काऊण असखेज्जलोगमेत्तआदिणा गुणिय रूवूणगुण-
गारेण आवलियाए असखेज्जदिभागेण भागे हिदे सन्वज्जवसाणपमाण होदि । एदम्मि
जहण्णट्टिदिज्जससाणपमाणेणोवट्टिदे असखेज्जा लोगा लम्भति । तेण जहण्णट्टिदिअज्जवसाण-
पमाणेण अवहिरिज्जमाणे सन्वज्जसमाणट्टाणाणि असखेज्जलोगमेत्तकालेण अवहिरिज्जति ।
एव उवरिमट्टिदिअज्जससाणाण पि असखेज्जलोगभागहारो वत्त्वो । णवरि सव्वत्य एसो चेव
भागहारो होदि ति णियमो णत्थि, कत्थ वि घणलोग-जगपदर-सेडि-सागर-पह-आवलिया-
तदसखेज्जदिभागमेत्तभागहारुलभादो । उवकम्मट्टिदिअज्जससाणपमाणेण सन्वज्जवसाणाणि
सादिरेगएणरूपपमाणेण अवहिरिज्जति । एत्थ कारण जाणिद्वण वत्त्व । एव भागहारप-
रूपणा समत्ता ।

जहण्णियाए ट्टिदीए अज्जवमाणट्टाणाणि सव्वट्टिदिअज्जवसाणट्टाणाण केरडिओ
भागो ? असखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? असखेज्जाणि गुणहाणिट्टाणतराणि । एव
णेदव्य जाव उक्कस्सट्टिदिअज्जवमाणट्टाणे ति । एव छण्ण कम्माण । आउअस्स वि एव
अपहत्त होते हैं । यथा—आयु कर्मके अध्ययसानोंका गुणकार अवस्थित है, ऐसा कितने
ही आचार्य कहते हैं । उनके अभिप्रायसे भागहारका कथन करते हैं—अन्तर्मुहुतं कम
तेतीस सागरोपमोंको गच्छ करके ‘अद्धं शून्य रूपेषु गुणम्’ इस गणितन्यायसे जो
लब्ध हो उसको स्थापित करके ‘रूपोनमादिसगुणमेकोनगुणो मथितमिच्छा’ इस
सूत्रके अनुसार एक रूप कम करके असख्यात लोक मात्र आदिसे गुणितकर एक अकसे
रहित आवलिके असख्यातवे भाग मात्र गुणकारका भाग देनेपर सध अध्ययसानोंका
प्रमाण होता है । इसमें जघय स्थितिके अध्ययसानोंका जो प्रमाण हो उसका भाग
द्वेनेपर असख्यात लोक लब्ध होते हैं । इसी कारण जघन्य स्थितिके अध्ययसानोंका जो
प्रमाण है उससे सध अध्ययसानस्थानोंको अपहत्त करनेपर वे असख्यात लोक मात्र
कालसे अपहत्त होते हैं । इसी प्रकार आगेकी स्थितियोंके भी अध्ययसानस्थानोंका
भागहार असख्यात लोक मात्र कहना चाहिये । विशेष इतना है कि सभी जगह यही
भागहार हो, ऐसा नियम नहीं है, क्योंकि, कहींपर घनलोक, जगप्रतर जगथ्रेणि, सागर,
पद्व, आवलि और उनके असख्यातवे भाग मात्र भागहार पाया जाता है । उत्कृष्ट
स्थितिके अध्ययसानोंके प्रमाणसे सध अध्ययसान साधिक एक रूपके प्रमाणसे अपहत्त
होते हैं । यहा कारण जानकर धतलाना चाहिये । इस प्रकार भागहार प्ररूपणा समाप्त हुए ।

जघ य स्थितिके अध्ययसानस्थान सध स्थितियोंके अध्ययसानस्थानोंके कितनेवें
भाग प्रमाण हैं ? वे उनके असख्यातवे भाग प्रमाण हैं । प्रतिभाग क्या है ? प्रतिभाग
असख्यात गुणहानिस्थानांतर हैं । इस प्रकार, उत्कृष्ट स्थितिके अध्ययसानस्थानोंके ले
जाना चाहिये । इसी प्रकार छह कर्मोंके सम्यग्धमें भागाभागकी प्ररूपणा करना चाहिये ।

१ अस्तौ ‘परूपणे’ इति पाठः ।

चेव वतन्व । गनरि उक्कस्सट्टिदिअञ्जवसाणट्टाणाणि सव्वञ्जवसाणट्टाणाणमसखेअ भागा होति । एव भागाभागपरुवणा समता ।

सन्वत्थोत्राणि णाणावरणीयस्य जहणियाए द्विदीए द्विदिवधञ्जनसाणट्टाणाणि १६ । उक्कस्मियाए द्विदीए द्विदिवधञ्जवसाणाणि असखेअगुणाणि । को गुणगारो ? अण्णोण्णमत्थरासी १६ । अनहण्ण-अणुक्कस्सट्टिदिवधञ्जवसाणट्टाणाणि अमखेअगुणाणि । को गुणगारो ? किंघणदिवङ्गुणहाणीयो । तस्स पमाणमेद १६३ । ३२ । पुणो एदेण उक्कस्सट्टिदिअञ्जवसाणट्टाणेषु गुणिदेसु अजहण्ण-अणुक्कस्सट्टिदिवधञ्जवसाणट्टाणपमाण होदि १३०४ । अणुक्कस्मियासु द्विदीसु द्विदिवधञ्जवसाणाणि विसेसाहियाणि । केत्तियमेत्तेण ? जहण्णाट्टिदिअञ्जवसाणमेत्तेण १३२० । अजहण्णियासु द्विदीसु द्विदिवधञ्जवसाणट्टाणाणि विसेसाहियाणि । केत्तियमेत्तेण ? जहण्णाट्टिदिअञ्जवमाणेहि परिहीणउक्कस्सट्टिदिअञ्जवसाण मेत्तेण १५६०' । सव्वासु द्विदीसु अञ्जवसाणट्टाणाणि विसेसाहियाणि । केत्तियमेत्तेण ? जहण्णाट्टिदिअञ्जवसाणमेत्तेण १५७६ ।

आउवज्जाण छण्ण पि कम्माण एव चेव वतन्व । आउअस्स जहणियाए द्विदीए द्विदिवधञ्जवसाणट्टाणाणि योत्राणि । अनहण्णअणुक्कस्मियासु द्विदीसु द्विदिवधञ्जवसाणट्टाणाणुकुके विपयमें भी इसी प्रकार ही कथन करना चाहिये । निराय इतना है कि आयुक्रमके उत्कृष्ट स्थिति सम्यधी अध्ययसान समस्त अध्ययसानस्थानोंके असख्यात षड्भाग प्रमाण हैं । इस प्रकार भागाभाग प्ररूपणा समाप्त हुई ।

ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थिति सम्यधी स्थितिवधाध्यवसानस्थान सयसे स्तोक हैं (१६) । उत्कृष्ट स्थितिसम्यधी स्थितिवधाध्यवसानस्थान असख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? गुणकार अयोन्याभ्यस्त राशि है (१६) । अजघय-अनुत्कृष्ट स्थिति वधाध्यवसानस्थान असख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? गुणकार कुछ कम डेढ गुणहानिया हैं । उसका प्रमाण यह है— $1\frac{1}{2}$ । इसके द्वारा उत्कृष्ट स्थिति सम्यधी अध्ययसानस्थानोंको गुणित करनेपर अजघन्य अनुत्कृष्ट स्थितिवधाध्यवसानस्थानोंका प्रमाण होता है— $2\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{2} = 1\frac{1}{2}$ । अनुत्कृष्ट स्थितियोंमें स्थितिवधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । कितने मात्रसे वे विशेष अधिक हैं ? जघय स्थितिके अध्ययसानस्थानोंके प्रमाणसे वे अधिक हैं । $1\frac{1}{2} + 1\frac{1}{2} = 1\frac{1}{2}$ अजघय स्थितियोंमें स्थितिवधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । कितने मात्रसे अधिक हैं ? जघय स्थितिके अध्ययसानस्थानोंसे हीन उत्कृष्ट स्थितिके अध्ययसानस्थानोंके प्रमाणसे वे अधिक हैं— $1\frac{1}{2} + (2\frac{1}{2} - 1\frac{1}{2}) = 1\frac{1}{2}$ । सर स्थितियोंमें अध्ययसानस्था विशेष अधिक हैं । कितने मात्रसे अधिक हैं । जघय स्थितिके अध्ययसानस्थानोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं— $1\frac{1}{2} + 1\frac{1}{2} = 1\frac{1}{2}$ ।

आयु क्रमको छोड़कर छद्म क्रमोंके स्थितिवधाध्यवसानस्थानोंके अल्पशुद्धकी प्ररूपणा इसी प्रकारसे करना चाहिये । आयु क्रमकी जघन्य स्थितिमें स्थितिवधाध्यवसानस्थान स्तोक हैं । अजघय-अनुत्कृष्ट स्थितियोंमें स्थितिवधाध्यवसानस्थान असख्यात

णाणि असखेत्रगुणाणि । को गुणगारो ? असखेत्रा लोका । अणुकस्मियासु द्विदीसु द्विदिवधज्ज्वसाणट्टाणाणि विसेसाहियाणि । केतियमेत्तेण ? जहण्णट्टिदिअज्जन्माणमेत्तेण । उक्कस्मियाए द्विदीए द्विदिवधज्जन्साणट्टाणाणि असखेत्रगुणाणि । को गुणगारो ? आवलियाए असखेत्रदिभागो । अजहण्णियासु द्विदीसु द्विदिवधज्जन्माणट्टाणाणि विसेसाहियाणि । केतियमेत्तेण ? अजहण्ण-अणुकस्मिद्विदिवधज्जन्माणट्टाणमेत्तेण । सप्प्यासु द्विदीसु द्विदिवध-ज्जन्साणट्टाणाणि विसेसाहियाणि । केतियमेत्तेण ? जहण्णट्टिदिअज्जन्साणट्टाणमेत्तेण । एव पणणा ति समतमणिओगहार ।

अणुकट्टीए णाणावरणीयस्स जहण्णियाए द्विदीए जाणि द्विदिवधज्ज्वसाणट्टाणाणि ताणि विदियाए द्विदीए वधज्ज्वसाण-ट्टाणाणि अपुब्बाणि' ॥ २६९ ॥

एदस्स सुतस्स अत्थे मण्णभाणे मद्विटी उच्चदे । त जहा—जहण्णट्टिदीए विणा उक्कस्सट्टिदिपमाण सत्त ७ । धुअट्टिदिपमाण पच ५ । धुवट्टिदीए सह उक्कस्मट्टिदिपमाणमेद १२ । पुणो एदिस्से समयचरण काट्ठण धुअट्टिदिप्पहुडि उनरिमसन्वट्टिदिनिसेसेसु मन्वज्ज-

गुणे हे । गुणकार क्या है ? गुणकार अमर्यात लोक हैं । अनुत्पृष्ट स्थितियोंमें स्थिति-वाध्यवसानस्थान विरोध अधिक हैं । कितने मात्रसे अधिक हैं ? जघन्य स्थिति सम्यधी अध्यवसानस्थानके प्रमाणसे अधिक हैं । उत्पृष्ट स्थितिमें स्थिति-वाध्यवसान स्थान अमर्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? गुणकार आनन्दिका अमर्यातवा भाग है । अजघन्य स्थितियोंमें स्थिति-वाध्यवसानस्थान विरोध अधिक हैं । कितने मात्रसे अधिक हैं ? अजघन्य अनुत्पृष्ट स्थितियोंके अध्यवसानस्थानोंके प्रमाणसे वे अधिक हैं । सब स्थितियोंमें स्थिति-वाध्यवसानस्थान विरोध अधिक हैं । कितने मात्रसे अधिक हैं ? अजघन्य स्थितियाके अध्यवसानस्थानाके प्रमाणसे वे अधिक हैं । इस प्रकार प्रगणना अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

अनुकृष्टिकी अपेक्षा ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिमें जो स्थिति-वाध्यवसानस्थान हैं द्वितीय स्थितिमें वे स्थिति-वाध्यवसानस्थान हैं और अपूर्व स्थिति-वाध्यवसानस्थान भी हैं ॥ २६९ ॥

इस सूत्रका अर्थ बहते समय सदृष्टि कही जाती है । यह इस प्रकार है—जघन्य स्थितिके बिना उत्पृष्ट स्थितिका प्रमाण सात (७) है । ध्रुवस्थितिका प्रमाण पाच (५) है । ध्रुवस्थितिके साथ उत्पृष्ट स्थितिका प्रमाण यह है—१२ । इसके समयाकी

१ सोप्रतमनुकृष्टिभिरुच्यते । सा च न विद्यते । तथा हि—ज्ञानावरणीयस्य जघन्यस्थितिव वे धान्यध्यवसायस्थानानि, तेष्वपि द्वितीयस्थितिव धेऽन्यानि, तेष्वोऽपि तृतीयस्थितिव धेऽन्यानि, एव तावदाध्यवसायस्थानानि विद्यते । एव सर्वेषामपि कर्मणां दृष्टव्यम् (१-२) । क प्र (म टी) १,८८ ।

वमाणमसत्तेज्रलोगमेताण तिरिच्छेण रचना कायन्वा । एण रचण काट्टण सन्वट्टिदि-
 निमेमट्टिदअज्जमसाणट्ठाणाण णिन्वमणाकदयमेत्तखडाणि कादव्याणि । किं पमाण
 णिन्वमणाकदय ? पल्लिदोमस्स असत्तेवत्तिभागो । सदिट्ठीए तत्स्य पमाण चत्तारि ४ ।
 एदाणि खडाणि किं भमाणि, आहो विसमाणि ? ण होति समाणि, विसमाणि^१ चेव ।
 कथ णन्दे ? परमाइरियोवदेसादो । त णहा—पढमखडादो विदियखड विसेसाहिय
 अमखेज्रलोगमेतेण । विदियखडादो वदियखड विमेसाहिय अमखेज्रलोगमेतेण ।
 तदियखडादो चउत्त्यखड विसेसाहियममत्तेज्रलोगमेतेण । एण णेदव्य जाव चरिमत्तड ति ।
 णवरि पढमखडात्ते वि चरिमत्तड विसेसाहिय चेव । कुदो ? परमाइरियोवदेसादो
 वाहाणुवलभादो च । एत्थ सदिट्ठी^२ ।

एव ठविय एदस्स सुत्तस्म अत्थो सुच्चदे-णाणावरणीयस्स जट्टणिद्याए द्विदीए जाणि

रचना करके धुनस्थितिको आदि लेकर आगेके सत्र स्थितिविशेषोंमें रहनेवाले असख्यात
 लोक प्रमाण सत्र अध्ययसानस्थानोंकी तिरछे रूपसे रचना करना चाहिये । इस प्रकार
 रचना करके सत्र स्थितिविशेषोंमें स्थित अध्ययसानस्थानके नियमणाकाण्डक प्रमाण
 खण्ड करना चाहिये ।

शंका—निर्वर्गणाकाण्डकका प्रमाण कितना है ?

समाधान—यह पत्योपमने असख्यातके भाग प्रमाण है ।

सदृष्टिमें उसका प्रमाण चार (४) है ।

शंका—ये खण्ड क्या सम हैं, अथवा विषम ?

समाधान—ये सम नहीं होते विषम ही होते हैं ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—यह श्रेष्ठ आचार्योंके उपदेशसे जाना जाता है । जैसे—प्रथम खण्डकी
 अपेक्षा द्वितीय खण्ड असख्यात लोक मात्रसे विशेष अधिक है । द्वितीय खण्डकी अपेक्षा
 तृतीय खण्ड असख्यात लोक मात्रसे विशेष अधिक है । तृतीय खण्डकी अपेक्षा चतुर्थ
 खण्ड असख्यात लोक प्रमाणसे विशेष अधिक है । इस प्रकार अन्तिम खण्ड तक ले
 जाना चाहिये । विशेष इतना है कि प्रथम खण्डकी अपेक्षा भी अन्तिम खण्ड विशेष
 अधिक ही है, क्योंकि ऐसा ही उत्कृष्ट आचार्योंका उपदेश है, तथा उसमें कोई बाधा भी
 नहीं पायी जाती है । यहा सदृष्टि—(पृष्ठ ३४५ पर देखिये) इस प्रकार स्थापित करके इस
 सूत्रका अर्थ कहते हैं—ज्ञानारणीयकी जघन्य स्थितिमें जो स्थितिविध्यअध्ययसानस्थान

१ अ भा काप्रतिपु ' विसमाणि ण होति विसमाणि ', ताप्रती ' विसमाणि ण होति । विसमाणि '
 इति पाठ । २ जशोपलम्बमाना संदृष्टय ३४५ तमे पृष्ठे द्रष्टव्या ।

द्विदिवधञ्जवसाणट्टाणाणि ताणि च विदियाए द्विदीए द्विदिवधञ्जवसाणट्टाणाणि होति, अपुव्वाणि च । कथमपुव्वाण समो ? ण, विदियद्विदीए द्विदिवधञ्जवसाणट्टाणचरिम खंडञ्जवसाणट्टाणाण धुवद्विदिअञ्जवसाणेसु अभावादो । ण च जहण्णद्विदिसव्वञ्जवसाणाणि विदियद्विदिअञ्जवसाणट्टाणेसु अत्थि, जहण्णद्विदिपढमरउञ्जवमाणट्टाणाण विदियद्विदिअञ्जवसाणट्टाणेसु अणुवलमादो । जाणि विदियाए द्विदीए द्विदिवधञ्जवसाणट्टाणाणि ताणि तदियाए द्विदीए द्विदिवधञ्जवसाणट्टाणेसु होति ति ण घेतव, पढमरउञ्जवमाणट्टाणाण तदियद्विदिअञ्जवमाणट्टाणेसु अणुवलमादो । कथमेद णन्दे ? ताणि मव्वाणि होति ति णिदेसामावादो । अपुव्वाणि ति वुत्ते अपुव्वाणि चेव वत्त्व, च सदेण विणासमुच्चयागमाभावादो । जदि एव तो मुत्ते च सदेो किण्ण परूधिदो ? ण, च-सदणिदेसेणं विणा वि तट्टावगमादो ।

एवमपुव्वाणि अपुव्वाणि जाव उक्कस्सिया द्विदि ति ॥२७०॥

हैं वे भी स्थितिवन्धाध्यवसानस्थान द्वितीय स्थितिमें हैं, तथा अपूर्व भी स्थितिवन्धाध्यवसानस्थान हैं ।

शका—अपूर्व स्थितिवन्धाध्यवसानस्थानोंकी सम्भावना कैसे है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि द्वितीय स्थितिके स्थितिवन्धाध्यवसानस्थानोंके अन्तिम खण्ड सम्बन्धी अध्यवसानस्थान ध्रुवस्थितिके अध्यवसानस्थानोंमें नहीं हैं, तथा जघन्य स्थितिके सब अध्यवसानस्थान द्वितीय स्थितिके अध्यवसानस्थानोंमें नहीं हैं, कारण कि जघन्य स्थितिसम्बन्धी प्रथम खण्डके अध्यवसानस्थान द्वितीय स्थितिके अध्यवसानस्थानोंमें नहीं पाये जाते हैं । जो स्थितिवन्धाध्यवसानस्थान द्वितीय स्थितिमें हैं वे तृतीय स्थितिके अध्यवसानोंमें होते हैं, ऐसा नहीं ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि द्वितीय स्थितिके प्रथम खण्ड सम्बन्धी अध्यवसानस्थान तृतीय स्थितिके अध्यवसानस्थानोंमें नहीं पाये जाते हैं ।

शका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—क्योंकि, 'वे सभी होते हैं, ऐसा सूत्रमें निर्देश नहीं किया गया है, इसीसे उसका ज्ञान हो जाता है ।

सूत्रमें जो 'अपुव्वाणि' ऐसा निर्देश किया है उससे 'अपुव्वाणि' अर्थात् अपूर्व भी होते हैं, ऐसा कथन करना चाहिये, क्योंकि, च शब्दके विना समुच्चयका ज्ञान नहीं होता है ।

शका—यदि ऐसा है तो सूत्रमें च शब्दका निर्देश क्यों नहीं किया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि च शब्दके निर्देशके विना भी उक्त अर्थका ज्ञान हो जाता है ।

इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति तक अपूर्व अपूर्व स्थितिवन्धाध्यवसानस्थान होते हैं ॥२७०॥

१ अ काप्रत्यो '—निदेशोऽग' इति पाठ ।

एव उत्तविधाणेण अपुव्वाणि अपुव्वाणि चैव द्विदिवज्जवसाणट्टाणाणि सव्व-
द्विदिविसेसेसु होवृण गच्छति जाय उवकस्सद्विदि ति । सव्वद्विदिविसेसेसु पुव्वद्विदि-
वज्जवसाणट्टाणाणि वि अत्थि, ताणि च अभणिद्वण अपुव्वाणि चैव अत्थि ति किमद्व
बुच्चदे ? ण, एवमिदि वयणादो चैव पुव्वाण अत्थित्सिद्धीदो । एव वयणादो चैव पुव्वाण
पि अत्थित्सिद्धीए सतीए अपुव्वाण णिदेसो किमद्व कदो ? ण, अपुव्वपरिणामअत्थित्तपओ-
जणत्तेण तप्पदुप्पायणे दोमाभावादो ।

जहण्णद्विदीए पदमखड उअरि केण वि सरिस ण होदि । विदियखड समउत्तर-
जहण्णद्विदीए पदमज्जवसाणखडेण सरिस । तन्नियखड दुसमउत्तरजहण्णद्विदीए पदमखडेण
सरिस । चउत्थयखड तिसमउत्तरजहण्णद्विदीए पदमखडेण सरिस । एव पेयव्व जाव
णिव्वग्गणकदयचरिमसमओ ति । तदो उवरिमसमए जहण्णद्विदिअज्जवसाणाणमणुकुट्ठी
वोच्छिद्धदि, तय एदेहि सरिमपरिणामाभावादो । एव सव्वद्विदिविसेमव्वज्जवसाणाण
पादेक्कमणुकुट्टियोच्छेदो परूवेदव्वो ति भावव्वो ।

इस प्रकार उक्त प्रक्रियासे उदरघट स्थितिक सय स्थितिविशेषोंमें होकर अपूर्व ही
अपूर्व स्थितिय-धाध्यवसानस्थान होते जाते हैं ।

शंका—सय स्थितिविशेषोंमें जय पूर्व स्थितिय-धाध्यवसानस्थान भी हैं, तय उ-
न कदकर ' अपूर्व ही हैं ' ऐसा किसलिये कहा जाता है ?

। समाधान—नहीं, क्योंकि ' सय ' अर्थात् ' इसी प्रकार ' ऐसा कहनेसे ही पूर्व
स्थितिय-धाध्यवसानस्थानोंका अस्तित्व सिद्ध हो जाता है ।

शंका—यदि ' सय ' पदका निर्देश करनेसे ही पूर्व स्थितिय-धाध्यवसानस्थानोंका
अस्तित्व सिद्ध हो जाता है, तो फिर अपूर्व स्थितिय-धाध्यवसानस्थानोंका निर्देश किसलिये
किया गया है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि यहा अपूर्व परिणामोंके अस्तित्वका प्रयोजन होनेसे
उनके कहनेमें कोई दोष नहीं है ।

जय-य स्थितिका प्रथम खण्ड आगे किसीके भी सदृश नहीं है । उसका द्वितीय
खण्ड एक समय अधिक जघन्य स्थितिके प्रथम अध्यवसानखण्डके सदृश होता है ।
जघन्य स्थितिके अध्यवसानोंका तृतीय खण्ड दो समय अधिक जघन्य स्थितिके प्रथम
अध्यवसानखण्डके सदृश होता है । चतुर्थ खण्ड तीन समय अधिक जघन्य स्थितिके
प्रथम अध्यवसानखण्डके सदृश होता है । इस प्रकार निर्वर्गणाखण्डके अन्तिम समय
तक ले जाना चाहिये । उससे आगेके समयमें जघन्य स्थितिके अध्यवसानस्थानके
अनुदृष्टिका व्युत्प्रेद हो जाता है, क्योंकि, वहा इनके सदृश परिणामोंका अभाव है । इस
प्रकारसे सय स्थितिविशेषोंके सय अध्यवसानोंमेंसे प्रत्येकमें अनुदृष्टिके व्युत्प्रेदकी
प्ररूपणा करना चाहिये । यह उक्त कथनका भावार्थ है ।

सपदि अपुण्मत्तञ्जवसाणपन्थणा कीरदे । त जहा—नहण्णट्टिदिमादिं कादृण
जाव दुचरिमट्टिदि ति ताव मन्वट्टिदिविमेमसव्यञ्जवसाणण मन्वपढमग्गडाणि अपुण्मत्ताणि ।
उवस्सट्टिणीए सव्यखडाणि अपुणरुत्ताणि चेव । सेम-दुचरिमादिट्टिदीण निदियादिसडाणि
पुण्मत्ताणि, एदेहि समाणपरिणामाणमपुणरुत्तपरिणामेसु उरलभादो ।

एव सत्तण कम्माण ॥ २७१ ॥

जहा णाणावरणीसम्म अणुकट्टी पन्थिदा तहा सत्तण कम्माण परूवेद्व । णरि आउ-
अस्स जहण्णट्टिदीए गिन्वग्गणमेतअञ्जवसाणखडाणि पुव्व व पन्मखडप्पहुडि विसेसाहियाणि
होति । समउत्तरनहण्णट्टिदिप्पहुडिसव्यञ्जवसाणखडाणि अणोण्ण पेविसदृण जहाकमेण
विसेसाहियाणि चेव । किन्तु तथ्य समयाहियनहण्णट्टिदीए दुचरिमखडादो चरिमखंड-
मायामेण असखेज्जगुण । तदुवरिमट्टिदीए पुण तिचरिमखडादो दुचरिमखडमसखेज्जगुण ।
तदो चरिमखडमसखेज्जगुण । एव णेदव्व जाव गिन्वग्गणकदयदुचरिमसमओ ति । पुणो
तदुवरिमट्टिदिप्पहुडि जाव उक्कत्समट्टिदि ति ताव सव्यखडाणि अणोण्ण पेविसदृण
आयामेण असखेज्जगुणाणि होति ति धेत्तव्व । एतथ वि अणुकट्टिवोच्छेदो पुव्व व
परूवेद्वो । एवमणुकट्टी समत्ता ।

तिव्व मददाए णाणावरणीयस्स जहण्णियाए ट्टिदीए जहण्णयं

अथ अपुनरुत्त अध्यवसानौकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है—जघन्य
स्थितिको आदि लेकर द्विचरम स्थिति तक सब स्थिति विशेषोंके सभी अध्यवसानस्थान
सम्य धी सब प्रथम खण्ड अपुनरुत्त हैं । उत्पद्य स्थितिके सब खण्ड अपुनरुत्त ही हैं ।
शेष द्विचरम आदि स्थितियोंके द्वितीयादिक खण्ड पुनरुत्त हैं, क्योंकि, इनके समान
परिणाम अपुनरुत्त परिणामोंमें पाये जाते हैं ।

इसी प्रकार शेष सात कर्मोंके विषयमें अनुकृष्टिका कथन करना चाहिये ॥ २७१ ॥

जिस प्रकार ज्ञानावरणीयके विषयमें अनुकृष्टिकी प्ररूपणा की है, उसी प्रकार अन्य
सात कर्मोंके सम्य धीमें अनुकृष्टिकी प्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि आयुकी
जघन्य स्थितिके निर्गमणाकाण्डक प्रमाण अध्यवसानखण्ड पूर्वके ही समान प्रथम खण्डको
आदि लेकर उत्तरोत्तर विशेष अधिक होते हैं । एक समय अधिक जघन्य स्थितिको आदि
लेकर सब अध्यवसानखण्ड परस्परकी अपेक्षा यथाक्रमसे विशेष अधिक ही हैं । परन्तु
उनमें एक समय अधिक जघन्य स्थितिके द्विचरम खण्डसे अन्तिम खण्ड आयामकी अपेक्षा
असंख्यातगुणा है । उससे आगेकी स्थितिके द्विचरम खण्डकी अपेक्षा द्विचरम खण्ड
असंख्यातगुणा है । उससे अन्तिम खण्ड असंख्यातगुणा है । इस प्रकार निर्गमणाकाण्डके
द्विचरम समय तक ले जाना चाहिये । फिर उससे आगेकी स्थितिसे लेकर उत्पद्य स्थिति
तक सब खण्ड एक दूसरेकी अपेक्षा आयामसे असंख्यात गुणे होते हैं, ऐसा समझना
चाहिये । यहा भी अनुकृष्टिके व्युच्छेदकी पूर्वके ही समान प्ररूपणा करना चाहिये । इस
प्रकार अनुकृष्टिका कथन समाप्त हुआ ।

तीन मन्दताकी अपेक्षा ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थिति सम्य धी जघन्य स्थिति-

द्विदिग्धञ्जवसाणपण्डणा सब्बमदानुभाग' ॥ २७२ ॥

सन्धद्विदीसु पुणरुत्तद्विदिग्धञ्जवसाणपण्डणाणि अवणिय अपुणरुत्ताणि' धेतूण एद-
मप्यावहुग बुचदे । सन्धमदानुभागमिदि बुते सन्धनहण्णमत्तिमजुत्तमिदि धेतन्व । सेस सुगम ।

तिस्से चैव उक्कस्समणत्तगुणं ॥ २७३ ॥

तिस्से चैव जहण्णद्विदीए पढमएडडस्स अपुणरुत्तस्स उक्कस्सपरिणामो अणत्तगुणो,
असखेज्जलोगमेत्तट्टणाणि उवरि चड्डिण द्विदत्तादो । चरिमएउक्कस्सपरिणामो ण गहिदो
ति कथ णचदे ? जहण्णद्विदिउक्कस्सपरिणामाणो समयाहियनहण्णद्विदीए जहण्णपरिणामो
अणत्तगुणो ति सुत्तण्णिदोमादो णचदे ।

विदियाए द्विदीए जहण्णय द्विदिग्धञ्जवसाणपण्डणमणत्तगुण ॥ २७४ ॥

पुञ्जिल्लउक्कस्सपरिणामो उक्कको, एमो जहण्णपरिणामो अट्टको ति काउण
हेट्टिमउक्कस्सपरिणाम मन्धजीवरासिणा गुणिदे उवरिमद्विदिजहण्णपरिणामो होदि, तेण
अणत्तगुणत्त ण विरुञ्चदे । उवरि पि उक्कस्सपरिणामादो अच जहण्णपरिणामो अणत्तगुणो
ति बुचदि तय एद चैव कारण वत्तय ।

ध धाध्यवमानस्थान समे मन्द अनुभागगाला है ॥ २७२ ॥

सय स्थितियोंमें पुनरुक्त स्थितियों धाध्यमानस्थानोंको छोड़कर और अपुनरुक्तोंको
ग्रहण करके यह अस्पष्टत्व कहा जा रहा है । 'सबमदानुभाग' ऐसा कहनेपर सबसे
जघय शक्तिसे समुक्त है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये । शेष कथन सुगम है ।

उमीका उत्कृष्ट स्थिति धाध्यमानस्थान अनन्तगुणा है ॥ २७३ ॥

उसी जघन्य स्थितिके अपुनरुक्त प्रथम षण्डका उत्कृष्ट परिणाम अनन्तगुणा है,
क्योंकि यह असख्यात लोक मात्र छहस्थान आगे जाकर स्थित है ।

शका—अन्तिम षण्डका उत्कृष्ट परिणाम नहीं ग्रहण किया गया है, यह कैसे
जाना जाता है ?

समाधान—जघन्य स्थितिके उत्कृष्ट परिणामसे एक समय अधिक जघयस्थितिका
परिणाम अनन्तगुणा है, ऐसा सूत्रमें निर्देश किया जानेसे उसका परिष्कार होता है ।

द्वितीय स्थितिका जघन्य स्थिति धाध्यमानस्थान अनन्तगुणा है ॥ २७४ ॥

पूर्वका उत्कृष्ट परिणाम ऊर्ध्व और यह जघय परिणाम अष्टक है, ऐसा करके
अधस्तने उत्कृष्ट परिणामको सर्व जीवराशिसे गणित करनेपर आगेकी स्थितिका जघन्य
परिणाम होता है, इसी कारण उसके अनन्तगुण होनेमें कोई विरोध नहीं है । आगे भी
जहापर उत्कृष्ट परिणामकी अपेक्षा जघन्य परिणाम अनन्तगुणा है, ऐसा कहा जाता है
वहा पर भी यही कारण बतलाना चाहिये ।

१ अत्रति स्थितिसमुद्धारो वा प्राक् तीव्रमदता नोत्ता साम्बोधयते—अणत्तत्त्वादि । तदप्या—
ज्ञानावरणीयस्य जघयस्थितौ जघयस्थितिराध्यायवसायस्थान सर्वमदानुभागम् । अतस्तस्यामेव जघन्यस्थितौ
उत्कृष्टमध्यवसायस्थानमनन्तगुणम् । ततोऽपि द्वितीयस्थितौ जघन्य स्थितिर्धाध्यवसायस्थानमनन्त
गुणम् । ततोऽपि तस्यामेव द्वितीयस्थितौ उत्कृष्टमनन्तगुणम् । एव प्रतिस्थिति जघयमुत्कृष्ट च स्थितिर्धाध्य
वसायस्थानमनन्तगुणतया तावद्वचन्य यावदुत्कृष्टायां स्थितौ चाम स्थितिराध्यायवसायस्थानमनन्तगुणम्
(१-२) । क म (म टी) १,८९ । २ अ-आ-काप्रतिपु-पुणरुत्ताणि' इति पाठः ।

तिस्से चैव उक्कस्समणतगुण ॥ २७५ ॥

असखेअलोगमेत्तच्छट्ठाणाणि उवरि चड्ढिद्वण द्विदत्तादो ।

तदियाए द्विदीए जहण्णयं द्विदिवंधज्जवसाणट्ठाणमणंतगुण ॥२७६॥

कारण सुगम, पुव्व परूविदत्तादो ।

तिस्से चैव उक्कस्सयमणतगुण ॥ २७७ ॥

असखेअलोगमेत्तच्छट्ठाणाणि उवरि चड्ढिद्वण द्विदत्तादो ।

एवमणंतगुणा जाव उक्कस्सद्विदि ति ॥ २७८ ॥

एव पुव्वुत्तकमेण अणतगुणाए सेडीए णेदव्व जाव उक्कस्सद्विदि ति । णवरि उक्कस्सियाए द्विदीए जहण्णादो उक्कस्समणतगुणमिदि वुत्ते चरिमिखड्ढक्कस्सपरिणामो अणतगुणो ति धेतन्व ।

एव सत्तण्ण कम्माणं ॥ २७९ ॥

जहा णाणावरणीयस्स तिन्वमददाए अप्पाबहुय परूविद तथा सत्तण्ण कम्माण परूवेदव्व, विमेषाभावादो । एव तिन्व-मददा ति समत्तमणियोगदार । एव द्विदिसमुदाहारो समतो । एव द्विदिवंधज्जवसाणपरूज्जा समता । एव वेयणकालविहाणे ति समत्तमणियोगदार ।

उसी स्थितिका उत्कृष्ट परिणाम अनन्तगुणा है ॥ २७५ ॥

क्योंकि, यह जघन्य परिणामसे असदयात लोक प्रमाण छद्म स्थान आगे जाकर स्थित है ।

उससे तृतीय स्थितिका जघन्य स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान अनन्तगुणा है ॥ २७६ ॥

इसका कारण सुगम है, क्योंकि, यह पूर्वमें घटलाया जा चुका है ।

उसी स्थितिका उत्कृष्ट परिणाम उससे अनन्तगुणा है ॥ २७७ ॥

क्योंकि, यह उससे असदयात लोक मात्र छद्म स्थान आगे जाकर स्थित है ।

इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति तक वे अनन्तगुणे अनन्तगुणे हैं ॥ २७८ ॥

इस प्रकार अर्थात् पूर्वोक्त क्रमसे उत्कृष्ट स्थिति तक अनन्तगुणित धेणिसे ले जाना चाहिये । विशेष इतना है कि उत्कृष्ट स्थितिके जघन्य परिणामकी अपेक्षा उत्कृष्ट परिणाम अनन्तगुणा है, ऐसा कहनेपर अन्तिम खण्डका उत्कृष्ट परिणाम अनन्तगुणा है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

इसी प्रकार शेष सात क्रमोंके विषयमें तीव्र-मन्दताके अल्पबहुत्वको कहना चाहिये । २७९ । जिस प्रकार ज्ञानावरणीय क्रमके विषयमें तीव्र-मन्दताके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गई है, उसी प्रकार शेष सात क्रमोंके विषयमें कहना चाहिये, क्योंकि यहाँ उसमें कोई विशेषता नहीं है । इस प्रकार तीव्रमन्दता अनुयोगद्वारा समाप्त हुआ । इस प्रकार स्थितिसमुदाहार समाप्त हुआ । इस प्रकार स्थितिय धाध्यवसान प्ररूपणा समाप्त हुई ।

इस प्रकार धेदनकालविधान अनुयोगद्वारा समाप्त हुआ ।

वेदणाखेत्तविहाणसुत्ताणि

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१	वेयणसेत्तविहाणे त्ति तत्थ इमाणि तिण्णि अणिभोगहाराणि णाद ध्याणि भवन्ति ।	१	१५	अण्णत्तरस्स केवल्लिस्स केत्तलि समुग्घादेण समुद्दस्स सब्बलोग गद्दस्स तस्स वेदणीयवेदणा खेत्तदो उक्कसा ।	२९
२	पद्मीमासा सामित्त अप्पावहुए त्ति ।	३	१७	तत्त्वदिरिच्चा अणुक्कस्सा ।	३०
३	पद्मीमासाए णाणावरणीयवेयणा खेत्तदो किं उक्कस्सा किमणुक्कस्सा किं जहण्णा किमजहण्णा ?	४	१८	एवमाउय णामा गोत्ताण ।	३३
४	उक्कस्सा वा अणुक्कस्सा वा जहण्णा वा अजहण्णा वा ।	४	१९	सामित्तेण जहण्णपदे णाणावरणीयवेयणा खेत्तदो जहण्णिया कस्स ?	३३
५	एव सत्तण्ण कम्माण ।	११	२०	अण्णत्तरस्स सुत्तुर्माणोदजीवअप जत्तयस्स तिसमयआहारयस्स तिसमयतम्भवत्थस्स जहण्ण जोगिस्स सब्बजहण्णियाए सरीरो गाहणाए वट्टमाणस्स तस्स णाणा वरणीयवेयणा खेत्तदो जहण्णा ।	३३
६	सामिन्न दुब्बिह जहण्णपदे उक्कस्सपदे ।	११	२१	तत्त्वदिरित्तमजहण्णा ।	३६
७	सामित्तेण उक्कस्सपदे णाणावरणीय वेयणा खेत्तदो उक्कस्सिया कस्स ?	१५	२२	एव सत्तण्ण कम्माण ।	५३
८	जो मच्छो जोयणसहस्सि-ओ सयभु रमणसमुद्दस्स बाहिरिहए तडे अच्छिदो ।	१५	२३	अप्पावहुए त्ति । तत्थ इमाणि तिण्णि अणिभोगहाराणि जहण्णपदे उक्कस्सपदे जहण्णुक्कस्सपदे ।	३३
९	वेयणसमुग्घादेण समुद्दो ।	१८	२४	जहण्णपदे अट्टण्ण पि कम्माण वेयणाओ तुल्लाओ ।	३३
१०	कायलेस्सियाए लग्गो ।	१९	२५	उक्कस्सपदे णाणावरणीय-दस णाणावरणीय मोहणीय-अतराइयाण वेयणाओ खेत्तदो उक्कस्सियाओ चत्तारि थि तुल्लाओ धोवाओ ।	५५
११	पुणरवि मारणतियसमुग्घादेण समुद्दो तिण्णि विग्गाहकदयाणि काट्ठण ।	२०	२६	वेयणीय आउअ णामा गोदवेयणाओ खेत्तदो उक्कस्सियाओ चत्तारि थि तुल्लाओ असखेज्जगुणाओ ।	५५
१२	से काले अघो सत्तमाए पुट्ठीए णेरइएत्तु उप्पज्जिहिदि त्ति तस्स णाणावरणीयवेयणा खेत्तदो उक्कस्सा ।	२०	२७	जहण्णुक्कस्सपदेण अट्टण्ण पि कम्माण वेदणाओ खेत्तदो जहण्णियाओ तुल्लाओ धोवाओ ।	३३
१३	तत्त्वदिरिच्चा अणुक्कस्सा ।	२३			
१४	एव दसणावरणीय मोहणीय अतराइयाण ।	२३			
१५	सामित्तेण उक्कस्सपदे वेदणीय वेदणा खेत्तदो उक्कस्सिया	२३			

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
२८	नाणात्तरीण्य दसणात्तरीण्य मोहणीय अनराश्यवेयणाओ खेत्तरो उक्कस्सियाओ चत्तारि वि तुस्साओ असखेज्जगुणाओ ।		४१	णिगोद्वपदिद्विद्वभपज्जत्तयत्तस्स जह णिण्या ओगाहणा असखेज्जगुणा ।	५१
२९	वेयणाय वाउथ णामा गोद्वेय णाओ खेत्तरो उक्कस्सियाओ चत्तारि वि तुस्सामा असखेज्ज गुणाओ ।		४२	वादरत्तणप्पदिक्काश्यपत्तेयसरीर अपज्जत्तयस्स जहणिण्या ओगाहणा असखेज्जगुणा ।	५२
३०	एत्तो सत्तजीयेसु ओगाहणमहा दडओ कायव्वो भरदि ।	५६	४३	वीहृदियअपज्जत्तयस्स जहणिण्या ओगाहणा असखेज्जगुणा ।	५३
३१	सन्वत्थोया सुहुमणिगोदजीरअप ज्जत्तयस्स जहणिण्या ओगाहणा ।	५६	४४	तीहृदियअपज्जत्तयस्स जहणिण्या ओगाहणा असखेज्जगुणा ।	५४
३२	सुहुमत्ताउक्कस्सियाअपज्जत्तयस्स जहणिण्या ओगाहणा असखेज्ज गुणा ।	५६	४५	चउरिदियअपज्जत्तयस्स जहणिण्या ओगाहणा असखेज्जगुणा ।	५५
३३	सुहुमत्तेउक्कस्सियाअपज्जत्तयस्स जहणिण्या ओगाहणा असखेज्ज गुणा ।	५६	४६	पविंदियअपज्जत्तयस्स जहणिण्या ओगाहणा असखेज्जगुणा ।	५६
३४	सुहुमत्ताउक्कस्सियाअपज्जत्तयस्स जहणिण्या ओगाहणा असखेज्ज गुणा ।	५६	४७	सुहुमणिगोदजीयणि चत्तिपज्जत्त यस्स जहणिण्या ओगाहणा अस खेज्जगुणा ।	५७
३५	सुहुमत्ताउक्कस्सियाअपज्जत्तयस्स जहणिण्या ओगाहणा असखेज्ज गुणा ।	५६	४८	तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ।	५८
३६	वादरत्ताउक्कस्सियाअपज्जत्तयस्स जहणिण्या ओगाहणा असखेज्ज गुणा ।	५६	४९	तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ।	६०
३७	वादरत्तेउक्कस्सियाअपज्जत्तयस्स जह णिण्या ओगाहणा असखेज्जगुणा	५६	५०	सुहुमत्ताउक्कस्सियाअपज्जत्तयस्स जह णिण्या ओगाहणा असखेज्जगुणा ।	५९
३८	वादरत्ताउक्कस्सियाअपज्जत्तयस्स जहणिण्या ओगाहणा असखेज्जगुणा ।	५६	५१	तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ।	६०
३९	वादरत्तेउक्कस्सियाअपज्जत्तयस्स जह णिण्या ओगाहणा असखेज्जगुणा	५६	५२	तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ।	६०
४०	वादरत्ताउक्कस्सियाअपज्जत्तयस्स जहणिण्या ओगाहणा असखेज्जगुणा ।	५६	५३	सुहुमत्तेउक्कस्सियाअपज्जत्तयस्स जह णिण्या ओगाहणा असखेज्जगुणा ।	६०
४१	वादरत्ताउक्कस्सियाअपज्जत्तयस्स जहणिण्या ओगाहणा असखेज्जगुणा ।	५६	५४	तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ।	६१
४२	वादरत्ताउक्कस्सियाअपज्जत्तयस्स जहणिण्या ओगाहणा असखेज्जगुणा ।	५६	५५	तस्सेव णिदरत्तिपज्जत्तयस्स उक्क स्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ।	६१
४३	वादरत्ताउक्कस्सियाअपज्जत्तयस्स जहणिण्या ओगाहणा असखेज्जगुणा ।	५६	५६	सुहुमत्ताउक्कस्सियाअपज्जत्तयस्स जहणिण्या ओगाहणा असखेज्जगुणा ।	६१

पृष्ठ संख्या	पृष्ठ	पृष्ठ संख्या	पृष्ठ
८८	वाद्रवणष्फदिवाश्यपत्तेयसरीर णिव्यत्तिप्रपञ्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा सखेज्जगुणा ।	९४	पंविदियणिप्रत्तिपञ्जत्तयस्स उक्क स्मिया ओगाहणा सखेज्जगुणा । ६९
८९	पंविदियणिप्रत्तिप्रपञ्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा सखेज्जगुणा । ६८	९५	सुहुमादो सुहुमस्स ओगाहणगुणगारो वापलियाए अस्सगेज्जदिभागो । ”
९०	तेहदियणिव्यत्तिप्रपञ्जत्तयस्स उक्क स्मिया ओगाहणा सखेज्जगुणा । ”	९६	सुहुमादो वाद्रस्स ओगाहणगुणगारो पल्लिदोयमस्स अस्सखेज्जदिभागो । ”
९१	चउरिदियणिप्रत्तिप्रपञ्जत्तयस्स उक्कस्मिया ओगाहणा सखेज्जगुणा । ”	९७	वाद्रादो सुहुमस्स ओगाहणगुणगारो वावलियाए अस्सखेज्जदिभागो । ”
९२	वेहदियणिव्यत्तिप्रपञ्जत्तयस्स उक्क स्सिया ओगाहणा सखेज्जगुणा । ”	९८	वाद्रादो वाद्रस्स ओगाहणगुणगारो पल्लिदोयमस्स अस्सखेज्जदिभागो । ७०
९३	वाद्रवणष्फदिवाश्यपत्तेयसरीर णिव्यत्तिप्रपञ्जत्तयस्स उक्कस्मिया ओगाहणा सखेज्जगुणा । ”	९९	वाद्रादो वाद्रस्स ओगाहणगुणगारो सखेज्जा समया । ”

वेयणकालविहाणसुत्ताणि

पृष्ठ संख्या	पृष्ठ	पृष्ठ संख्या	पृष्ठ
१	वेयणकालविहाणे त्ति । तत्थ इमानि त्तिणिण अणियोमदाराणि णाद्वानि मपति । ७१		पञ्जत्तयदस्स कम्मभूमियस्स अकम्मभूमियस्स वा कम्मभूमिप ट्टिभागस्स वा सखेज्जवासा उअस्स वा अस्सखेज्जवासाउअस्स वा वेयस्स वा मणुस्सस्स वा त्तिरि क्कस्स वा णेरइयस्स वा इरिय वेदस्स वा पुरिसवेदस्स वा णउसयवेदस्स वा जलगरस्स वा थलचरस्स वा रगचरस्स वा सागार जागार सुदोधजोगजुत्तस्स उक्कस्सियाए ट्टिरीए उक्कस्सट्टिदि संकिलेसे वट्टमाणस्स, अथवा ईत्तिमज्झिमपरिणामस्स तस्स णाणा वरणीयवेयणा कालदो उक्कस्सा । ८८
२	पदमीमाना सामित्तमप्पावहुए त्ति । ७३		९ तत्त्वद्विरित्तमणुक्कस्सा । ९१
३	पदमीमासाए णाणावरणीयवेयणा कालदो त्तिमुक्कस्सा किमणुक्कस्सा किं जहण्णा किमजहण्णा ? ७८		१० एवं छण्णे कम्मणं । ११२
४	उक्कसा वा अणुक्कस्सा वा जहण्णा वा अजहण्णा वा । ”		
५	एथ सत्तण्ण कम्माण । ८१		
६	सामित्त दुविद्द जहण्णपदे उक्कस्स पदे ”		
७	सामित्तेण उक्कसपदे णाणावरणीय वेयणा कालदो उक्कस्सिया कस्स ? ८७		
८	अण्णारस्स पंविदियस्स सण्णस्स मिण्णारट्टिस्स सव्याहि पञ्जत्तीहि		

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
११	सामित्तेण उक्कस्सपदे आउअ वेयणा कालदो उक्कस्सिथा कस्स ? ११२		२५	अप्पाउहुए त्ति । तत्थ इमाणि तिणिण अणिओगहारणि—जहणपदे उक्कस्सपदे जहणुक्कस्सपदे । १३५	
१२	अणदरस्स मणुस्सस्स वा पविंदिय तिरिक्कजोणियस्स वा सण्णिस्स सम्माइडिस्स वा [मिच्छाइडिस्स वा] सधादि पज्जत्तीदि पज्जस्स यदस्स कम्मभूमियस्स वा कम्म भूमिपट्टिभागस्स वा सत्थेज्जवासाउ थस्स इत्थियेदस्स वा पुरितयेदस्स वा णउत्तयेदस्स वा जलधरस्स वा थलउरस्स वा सागार जागारत्तप्पा ओगासत्तिलिट्ठस्स वा [तप्पाओगा विणुद्धस्स वा] उक्कस्सिथाए आवाथाए जस्स त देव गिरयाउअ पढमसमए धधनस्स आउअवेयणा कालदो उक्कस्सा । ११३	११२	२६	जहणपदेण अट्टण पि कम्माण धेयणाओ कालदो जहणियाओ तुल्लाओ । १३७	
१३	तत्थदिरित्तमणुक्कस्सा । ११६	११६	२७	उक्कस्सपदेण स वत्थोआ आउअ धेयणा कालदो उक्कस्सिथा । ”	
१४	सामित्तेण जहणपदे णाणावरणीय वेदणा कालदो जहणिया कस्स ? ११८	११८	२८	णामा गोदवेयणाओ कालदो उक्कस्सिथाओ दा नि तुल्लाओ सत्थेज्ज गुणाओ । ”	
१५	अणदरस्स चरिमसमयउदुमरयस्स तस्स णाणावरणीयवेयणा कालदो जहण्णा । ११९	११९	२९	णानावरणीयदसणावरणीय धेयणीय अतरायवेयणाओ कालदो उक्कस्सिथाओ चत्तारि वि तुल्लाओ विसेसाहियाओ । १३८	
१६	तत्थदिरित्तमजहण्णा । १२०	१२०	३०	मोहणीयन्त धेयणा कालदो उक्कस्सिथा सत्थेज्जगुणा । ”	
१७	एध दसणावरणीय अतराइयाण । १२२	१२२	३१	जहणुक्कस्सपदे अट्टण पि कम्माण धेयणाओ कालदो जहणियाओ तुल्लाओ योआओ । ”	
१८	सामित्तेण जहणपदे धेयणीयवेयणा कालदो जहणिया कस्स ? १	१	३२	आउअवेयणा कालदो उक्कस्सिथा थसरिज्जगुणा । १३९	
१९	अणदरस्स चरिमसमयभवसिद्धि यस्स तस्स धेयणीयवेयणा कालदो जहण्णा । १	१	३३	णामा गोदवेयणाओ कालदो उक्कस्सिथाओ दो वि तुल्लाओ अत्थेज्जगुणाओ । ”	
२०	तत्थदिरित्तमजहण्णा । १३३	१३३	३४	णानावरणीय दसणावरणीय धेयणीय अतरायवेयणाओ कालदो उक्कस्सिथाओ चत्तारि वि तुल्लाओ विसेसाहियाओ । ”	
२१	एध आउअ णामा गोदाण । १३४	१३४	३५	मोहणीयवेयणा कालदो उक्कस्सिथा सत्थेज्जगुणा । ”	
२२	सामित्तेण जहणपदे मोहणीय धेयणा कालदो जहणिया कस्स ? १३५	१३५	(१ चूलिया)		
२३	अणदरस्स अथगस्स चरिमसमय सवमाइयस्स मोहणीयवेयणा कालदो जहण्णा । १३६	१३६	३६	एत्तो मूलपयडिद्धिदिउधे पुत्र गम णिज्जे तत्थ इमा ण चत्तारि अणि योगदारणि—ट्टिंदियधट्टाणपरूवणा णिसेयररूवणा धाआधाअयएरूवणा अप्पाउहुए त्ति ।	
२४	तत्थदिरित्तमजहण्णा । ”	”			

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
३७	द्विदिवधद्वाणपञ्चरुणदाप सप्तथोवा सुहुमेइदियअपञ्चत्तयस्स द्विदिवध द्वाणाणि ।	१४२	५४	यादरेइदियपञ्चत्तयस्स संक्खिलेस विसोहिद्वाणाणि असखेज्जगुणाणि । २२२	
३८	यादरेइदियअपञ्चत्तयस्स द्विदिवध द्वाणाणि सखेज्जगुणाणि ।	१४४	५५	वीइदियअपञ्चत्तयस्स संक्खिलेस विसोहिद्वाणाणि असखेज्जगुणाणि । ”	
३९	सुहुमेइदियपञ्चत्तयस्स द्विदिवध द्वाणाणि सखेज्जगुणाणि ।	”	५६	वाइदियपञ्चत्तयस्स संक्खिलेस विसोहिद्वाणाणि असखेज्जगुणाणि । ”	
४०	यादरेइदियपञ्चत्तयस्स द्विदिवध द्वाणाणि सखेज्जगुणाणि ।	१४५	५७	तीइदियअपञ्चत्तयस्स संक्खिलेस विसोहिद्वाणाणि असखेज्जगुणाणि । ”	
४१	वीइदियअपञ्चत्तयद्विदिवधद्वाणाणि असखेज्जगुणाणि ।	”	५८	तीइदियपञ्चत्तयस्स संक्खिलेस विसोहिद्वाणाणि असखेज्जगुणाणि । २२३	
४२	तस्सेय पञ्चत्तयस्स द्विदिवध द्वाणाणि सखेज्जगुणाणि ।	”	५९	चउरिदियअपञ्चत्तयस्स संक्खिलेस विसोहिद्वाणाणि असखेज्जगुणाणि । ,	
४३	तीइदियअपञ्चत्तयस्स द्विदिवध द्वाणाणि सखेज्जगुणाणि ।	”	६०	चउरिदियपञ्चत्तयस्स संक्खिलेस विसोहिद्वाणाणि असखेज्जगुणाणि । ”	
४४	तस्सेय पञ्चत्तयस्स द्विदिवध द्वाणाणि सखेज्जगुणाणि ।	१४६	६१	असण्णिपचिदियअपञ्चत्तयस्स संक्खिलेस विसोहिद्वाणाणि असखेज्ज गुणाणि । २२४	
४५	चउरिदियअपञ्चत्तयस्स द्विदिवध द्वाणाणि सखेज्जगुणाणि ।	”	६२	असण्णिपचिदियपञ्चत्तयस्स संक्खिलेस विसोहिद्वाणाणि असखेज्ज गुणाणि । ”	
४६	तस्सेय पञ्चत्तयस्स द्विदिवध द्वाणाणि सखेज्जगुणाणि ।	”	६३	सण्णिपचिदियपञ्चत्तयस्स संक्खिलेस विसोहिद्वाणाणि असखेज्जगुणाणि । ”	
४७	असण्णिपचिदियअपञ्चत्तयस्स द्विदिवधद्वाणाणि सखेज्जगुणाणि ।	”	६४	सण्णिपचिदियपञ्चत्तयस्स संक्खिलेस विसोहिद्वाणाणि असखेज्जगुणाणि । ”	
४८	तस्सेय पञ्चत्तयस्स द्विदिवध द्वाणाणि सखेज्जगुणाणि ।	”	६५	सव्वथोवो सजदस्स जहण्णओ द्विदिवधो । २२५	
४९	सण्णिपचिदियअपञ्चत्तयस्स द्विदि वधद्वाणाणि सखेज्जगुणाणि ।	१४७	६६	यादरेइदियपञ्चत्तयस्स जहण्णओ द्विदिवधो असखेज्जगुणो । २२६	
५०	तस्सेय पञ्चत्तयस्स द्विदिवध द्वाणाणि सखेज्जगुणाणि ।	”	६७	सुहुमेइदियपञ्चत्तयस्स जहण्णओ द्विदिवधो विसेसाहियो । ”	
५१	सव्वथावा सुहुमेइदियअपञ्चत्त यस्स संक्खिलेसाविसोहिद्वाणाणि । २०५		६८	यादरेइदियअपञ्चत्तयस्स जहण्णओ द्विदिवधो विसेसाहियो । ”	
५२	यादरेइदियअपञ्चत्तयस्स संक्खिलेस विसोहिद्वाणाणि असखेज्जगुणाणि । २१०		६९	सुहुमेइदियअपञ्चत्तयस्स जहण्णओ द्विदिवधो विसेसाहियो । २३०	
५३	सुहुमेइदिय पञ्चत्तयस्स संक्खिलेस विसोहिद्वाणाणि असखेज्जगुणाणि । २२१		७०	तस्सेय अपञ्चत्तयस्स उपकस्सओ द्विदिवधो विसेसाहियो । ”	

वैय सख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ
७१	बादरेदियअपज्जत्तयस्स उफकस्सओ द्विद्विधधो विसेसाहिओ ।	२३०	८८	तस्सेय अपज्जत्तयस्स उफकस्सओ द्विद्विधधो विसेसाहिओ ।	२३४
७२	सुद्धमेदियपज्जत्तयस्स उफकस्सओ द्विद्विधधो विसेसाहिओ ।	"	८९	तस्सेय पज्जत्तयस्स उफकस्सओ द्विदिधधो विसेसाहिओ ।	"
७३	बादरेदियपज्जत्तयस्स उफकस्सओ द्विद्विधधो विसेसाहिओ ।	२३१	९०	सज्जदस्स उफकस्सओ द्विद्विधधो सपेज्जगुणो	"
७४	वीदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विद्विधधो सपेज्जगुणो ।	"	९१	सज्जदासज्जदस्स जहण्णओ द्विद्विधधो सपेज्जगुणो ।	२३५
७५	तस्सेय अपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विद्विधधो विसेसाहिओ ।	"	९२	तस्सेय उफकस्सओ द्विद्विधधो सपेज्जगुणो ।	"
७६	तस्सेय अपज्जत्तयस्स उफकस्सओ द्विद्विधधो विसेसाहिओ ।	"	९३	असज्जदसमादिविद्विपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विद्विधधो सपेज्जगुणो	"
७७	तस्सेय पज्जत्तयस्स उफकस्सओ द्विद्विधधो विसेसाहिओ ।	२३२	९४	तस्सेय अपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विद्विधधो सपेज्जगुणो ।	"
७८	तीदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विद्विधधो विसेसाहिओ ।	"	९५	तस्सेय अपज्जत्तयस्स उफकस्सओ द्विद्विधधो सपेज्जगुणो ।	२३६
७९	तीदियअपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विद्विधधो विसेसाहिओ ।	"	९६	तस्सेय पज्जत्तयस्स उफकस्सओ द्विद्विधधो सपेज्जगुणो ।	"
८०	तस्सेय उफकस्सद्विद्विधधो विसेसाहिओ ।	"	९७	सण्णिमिच्छद्विद्विपचिदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विद्विधधो सपेज्जगुणो ।	"
८१	तीदियपज्जत्तयस्स उफकस्सओ द्विद्विधधो विसेसाहिओ ।	"	९८	तस्सेय अपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विद्विधधो सपेज्जगुणो ।	२३७
८२	चउदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विद्विधधो विसेसाहिओ ।	२३३	९९	तस्सेय अपज्जत्तयस्स उफकस्सओ द्विद्विधधो सपेज्जगुणो ।	"
८३	तस्सेय अपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विद्विधधो विसेसाहिओ ।	"	१००	तस्सेय अपज्जत्तयस्स उफकस्सओ द्विद्विधधो सपेज्जगुणो ।	"
८४	तस्सेय अपज्जत्तयस्स उफकस्सओ द्विद्विधधो विसेसाहिओ ।	"	१०१	विसेयपरुणदाए तत्थ इमानि बुद्धे अणियोगदाराणि अणत रोषगिधा परपरोरणिधा ।	"
८५	तस्सेय पज्जत्तयस्स उफकस्सओ द्विद्विधधो विसेसाहिओ ।	"	१०२	अणतरोरणिधाए पचिदियाण सण्णीण मिच्छाद्विण पज्जत्तयाण णाणाएरणीयदसणावरणाय वैयथीय अतरायाण तिणिण घाससहस्ताणि आयाध मोक्षण ज पद्धमसमए पदेसममणिसिस्त त बद्धम, ज	"
८६	असण्णिपचिदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विद्विधधो सपेज्जगुणो ।	२३४			
८७	तस्सेय अपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विद्विधधो विसेसाहिओ ।	"			

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
७१	बादरेइदियअपज्जत्तयस्स उक्क म्सओ द्विदिवधो विसेसाहिओ ।	२३०	८८	तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ द्विदिवधो विसेसाहिओ ।	२३४
७२	सुहुमेइदियपज्जत्तयस्स उक्क स्सओ द्विदिवधो विसेसाहिओ ।	"	८९	तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सओ द्विदिवधो विसेसाहिओ ।	"
७३	बादरेइदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ द्विदिवधो विसेसाहिओ ।	२३१	९०	सज्जदस्स उक्कस्सओ द्विदिवधो सखेज्जगुणो	"
७४	धीइदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विदिवधो सखेज्जगुणो ।	"	९१	सज्जदासज्जदस्स जहण्णओ द्विदि वधो सखेज्जगुणो ।	२३५
७५	तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विदिवधो विसेसाहिओ ।	"	९२	तस्सेव उक्कस्सओ द्विदिवधो सखेज्जगुणो ।	"
७६	तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ द्विदिवधो विसेसाहिओ ।	"	९३	असज्जदस्साम्माद्विद्विपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विदिवधो सखेज्जगुणो	"
७७	तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सओ द्विदिवधो विसेसाहिओ ।	२३२	९४	तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विदिवधो सखेज्जगुणो ।	"
७८	तीरिइदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विदिवधो विसेसाहिओ ।	"	९५	तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ द्विदिवधो सखेज्जगुणो ।	२३६
७९	तीरिइदियअपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विदिवधो विसेसाहिओ ।	"	९६	तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सओ द्विदिवधो सखेज्जगुणो ।	"
८०	तस्सेव उक्कस्सद्विदिवधो विसेसाहिओ ।	"	९७	सण्णिमिच्छइद्विपविंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विदिवधो सखेज्जगुणो ।	"
८१	तीरिइदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ द्विदिवधो विसेसाहिओ ।	"	९८	तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विदिवधो सखेज्जगुणो ।	२३७
८२	चडरिइदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विदिवधो विसेसाहिओ ।	२३३	९९	तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ द्विदिवधो सखेज्जगुणो ।	"
८३	तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विदिवधो विसेसाहिओ ।	"	१००	तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ द्विदिवधो सखेज्जगुणो ।	"
८४	तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ द्विदिवधो विसेसाहिओ ।	"	१०१	णिमेषपरुणदाए तरु इमाणि सुखे अणियोगहराणि अणत रोविग्धा परपरोयणिघा ।	"
८५	तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सओ द्विदिवधो विसेसाहिओ ।	"	१०२	अणतरावणिघाए पविंदियाण सण्णीण मिच्छइद्विप पज्जत्त याग णाणवरणीयदत्तणवर णाय वेयणीय अतरायाणं तिणिण वाससइस्ताणि माबाध मोत्तूण ज पडमत्तय परेसग णिसिस्त त इह्व, अ विदियसमए	"
८६	असण्णिपविंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विदिवधो सखेज्जगुणो ।	२३४			
८७	तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विदिवधो विसेसाहिओ ।	"			

पदेसग्न निमित्तं तं त्रिसेसहीणं
जं तद्वियसमप पदेसग्न निमित्तं
तं विसेसहीणं, एव विसेसहीणं
विसेसहीणं जाय उक्कस्सेण तीस
सागरोवमकोडीयो त्ति ।

२३८

१०३ पंचिद्वियाणं सण्णीणं मिच्छादिद्वीणं
पञ्जत्तयाणं मोहणीयस्स सत्तं
वाससहस्साणि आयाह मोत्तूणं
जं पढमसमप पदेसग्न निमित्तं
तं बहुअ, जं विद्वियसमप पदेसग्न
निमित्तं तं त्रिसेसहीणं, जं तद्विय
समप पदेसग्न निमित्तं तं विसे
सहीणं एव त्रिसेसहीणं त्रिसे
सहीणं जाय उक्कस्सेण सत्तं
सागरावमकोटीयो त्ति ।

२३२

१०४ पंचिद्वियाणं सण्णीणं सम्मादि
द्वीणं वा मिच्छादिद्वीणं वा
पञ्जत्तयाणंमाउअस्स पुण्यकोडि
निभागमायाध मोत्तूणं जं पढम
समप पदेसग्न निमित्तं तं बहुअ
जं विद्वियसमप पदेसग्न निमित्तं
तं त्रिसेसहीणं, जं तद्वियसमप
पदेसग्न निमित्तं तं त्रिसेसहीणं,
एव त्रिसेसहीणं विसेसहीणं
जाय उक्कस्सेण तेतीमसागरो
वमाणं त्ति ।

२३

१०५ पंचिद्वियाणं सण्णीणं मिच्छादि
द्वीणं पञ्जत्तयाणं णामा गोशणं
धेवाससहस्साणि आयाध मोत्तूणं
पढमसमप पदेसग्न निमित्तं तं
बहुअ, जं विद्वियसमप पदेसग्न
निमित्तं तं त्रिसेसहीणं, जं
तद्वियसमप पदेसग्न निमित्तं तं
त्रिसेसहीणं, एव त्रिसेसहीणं
विसेसहीणं जाय उक्कस्सेण
धीस सागरोवमकोटीयो त्ति ।

२१

१०६ पंचिद्वियाणं सण्णीणं मिच्छादि
द्वीणं पञ्जत्तयाणं सत्तणं कम्मा

णमाउवधज्जाणमतोमुहुत्तमायाध
मोत्तूणं जं पढमसमप पदेसग्न
निमित्तं तं बहुअ, जं विद्विय
समप पदेसग्न निमित्तं तं
त्रिसेसहीणं, जं तद्वियसमप पदे
सग्न निमित्तं तं त्रिसेसहीणं,
एव त्रिसेसहीणं विसेसहीणं
जाय उक्कस्सेण अतोकोडा
कोडीयो त्ति ।

४९

१०७ पंचिद्वियाणं सण्णीणंमसण्णीणं
चउरिद्वियं तीरिद्वियं वीरिद्वियाणं
वादरेरिद्वियपञ्जत्तयाणं सुदुमे
रिद्वियपञ्जत्तापञ्जत्ताणंमाउअस्स
अतोमुहुत्तमायाध मोत्तूणं जं
पढमसमप पदेसग्न निमित्तं तं
बहुअ, जं विद्वियसमप पदेसग्न
निमित्तं तं त्रिसेसहीणं, जं तद्विय
समप पदेसग्न निमित्तं तं त्रिसे
सहीणं, एव त्रिसेसहीणं त्रिसे
सहीणं जाय उक्कस्सेण पुत्रको
डीयो त्ति ।

४८

१०८ पंचिद्वियाणंमसण्णीणं चउरिदि
वियाणं तीरिद्वियाणं वीरिद्वियाणं
वादरेरिद्वियपञ्जत्तयाणं सत्तणं
कम्माणं आउअज्जाणं अतो
मुहुत्तमायाध मोत्तूणं जं पढम
समप पदेसग्न निमित्तं तं बहुअ,
जं विद्वियसमप पदेसग्न निमित्तं
तं त्रिसेसहीणं, जं तद्वियसमप
पदेसग्न निमित्तं तं त्रिसेसहीणं
एव त्रिसेसहीणं त्रिसेसहीणं
जाय उक्कस्सेण सागरोवमसह
स्सस्स सागरोवमसदस्स सागरो
वमपण्णासाय सागरोवमपण्णी
साय सागरोवमस्सतिण्णिणं सत्तं
भागा सत्तं सत्तं भागा धेसत्तं
भागा पट्टिपण्णा त्ति ।

२४०

सूत्र शब्दा

सूत्र

पृष्ठ सूत्र शब्दा

पृष्ठ

पृष्ठ

१०९. पर्विदियाणमसण्णीण चउरिदि
याण तीरदियाण थीरदियाण
पादरेइदियपञ्जत्तयाणमाउअस्स
पुण्यकोडिसिमाग धेमास सोल
सरादिदियाणि मादिरेयाणि
घत्तारियासाणि सत्तसाससह
स्ताणि सादिरेयाणि आवाहं
मोशुण ज पदमममए पदेसग्गं
णिसिस्त त थहुग ज विदियसमए
पदेसग्ग णिसिस्त त त्रिसेसहीण,
ज तदियसमए पदेसग्ग णिसिस्त
यिसेसहीण, एय यिसेसहीण
यिसेसहीण जाय उक्कस्सेण
पलिदोयमरम असखेज्जदिभागो
पुण्यकोडि ति । २५१

११०. पर्विदियाणमसण्णीण चउरिदि
याण तीरदियाण थीरदियाण
पादरेइदियअपञ्जत्तयाण सुहु
मेइदियपञ्जत्तअपञ्जत्तयाण
मत्तण्ह कम्मणमाउवयज्जाणमतो
मुहुत्तमायाध मोशुण ज पदम
समए पदेसग्ग णिसिस्त त थहुग,
ज विदियसमए पदेसग्ग णिसिस्त
त त्रिसेसहीण, ज तदियसमए
पदेसग्ग णिसिस्त त यिसेसहीण,
एय यिसेसहीण यिसेसहीण जाय
उक्कस्सेण सागरोयमसदस्स
सागरोयमपण्णासाए सागरोयम
पण्णकीसाए सागरोयमस्स त्रिणिण
सत्तभागा, सत्त मत्तभागा, धे
सत्तभागा पलिदोयमस्स सखेज्ज
दिभागोण ऊणया पलिदोयमस्स
अमखेज्जदिभागोण ऊणया ति । २५२

१११. परपरोशणिघाए पर्विदियाण
सण्णीणमसण्णीण पञ्जत्तयाणं
अट्टण्णं कम्मण ज पदमसमए
पदेसग्ग तदो पलिदोयमस्स

असखेज्जदिभाग गंतूण दुगुणदीणा,
एय दुगुणदीणा दुगुणदीणा जाय
उक्कस्सिया ट्टिदी ति । २५३

११२. एयपदेसगुणहाणिट्टाणतर अस
खेज्जाणि पलिदोयमवग्गमूलाणि । २५५

११३. णाणापदेसगुणहाणिट्टाणतराणि
पलिदोयमवग्गमूलस्स असखे
ज्जदिभागो । २५६

११४. णाणापदेसगुणहाणिट्टाणतराणि
थोयाणि । २५७

११५. एयपदेसगुणहाणिट्टाणतरमस्से
ज्जगुणं । ”

११६. पर्विदियाण सण्णीणमसण्णीण
मपञ्जत्तयाण चउरिदिय तीर
दिय थीरदिय परदिय पा, र सुहु
म पञ्जत्तपञ्जत्तयाण सत्तण्ण
कम्मणमाउवय जाण ज पदम
समए पदेसग्ग तदो पलिदोय
मस्स असखेज्जदिभाग गंतूण
दुगुणदीणा, एय दुगुणदीणा
दुगुणदीणा जाय उक्कस्सिया
ट्टिदि ति । ”

११७. एयपदेसगुणहाणिट्टाणतरमस्से
ज्जाणि पलिदोयमवग्गमूलाणि । ,

११८. णाणापदेसगुणहाणिट्टाणतराणि
पलिदोयमवग्गमूलस्स असखे
ज्जदिभागो । २५८

११९. णाणापदेसगुणहाणिट्टाणतराणि
थोयाणि । ,

१२०. एयपदेसगुणहाणिट्टाणतरमस्स
खेज्जगुणं । ”

१२१. आवाघाकदयवरुणदाए । २६६

१२२. पर्विदियाण सण्णीणमसण्णीण
चउरिदियाण तीरदियाण थीर
दियाण परदियपादर सुहुम
पञ्जत्त अपञ्जत्तयाण सत्तण्ण
कम्मणमाउवयज्जाणमुक्कस्स

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	यादो द्विदो समए समए पन्दिदोमस्स अस्खेज्जदि भागमेत्तमोसत्तिदूण पयमावाहा कदय क्खेदि । एस कम्मो जाय जहणिया द्विदि त्ति ।	२६७	१४०	उक्कस्सओ द्विदियधो विसैसा हियो ।	२७५
१२३	अण्णावधुए त्ति ।	२७०	१४१	पच्चिदियाण सण्णीणमसण्णाण मपज्जत्तयाण चउरिदियाण तीरदियाण वीरदियाण एरदिय यादर-सुहुमपज्जत्तापज्जत्तया णमाउमस्स सव्यत्योवा जहणिया आवाहा ।	
१२४	पच्चिदियाण सण्णीण मिच्छार ट्टीण पज्जत्तापज्जत्ताण सत्तण कम्माणमाउवज्जण सव्यत्योवा जहणिया आवाहा ।		१४२	जहणओ द्विदियधो सरोज्जगुणो ।	
१२५	आवाहट्टाणाणि आवाहाकदयाणि च दो वि तुह्हाणि सरोज्जगुणाणि ।		१४३	आवाहट्टाणाणि सखेज्जगुणाणि ।	
१२६	उक्कस्सिया आवाहा विसैसाहिया ।	२७१	१४४	उक्कस्सिया आवाहा विसैसा हिया ।	२७६
१२७	णाणापदेसगुणहाणिट्टाणतराणि असखेज्जगुणाणि ।		१४५	द्विदियधट्टाणाणिसरोज्जगुणाणि ।	
१२८	एयपदेसगुणहाणिट्टाणतरमसरो ज्जगुण ।		१४६	उक्कस्सओ द्विदियधो विसैसा हियो ।	
१२९	एयमावाहाकदयमसखेज्जगुण ।	२७२	१४७	पच्चिदियाणमसण्णीण चउरिदि याण तीरदियाणपज्जत्त अपज्जत्त याण सत्तण कम्माण आउव वज्जाणमावाहट्टाणाणि आवाहा कदयाणि च दो वि तुह्हाणि धोवाणि ।	
१३०	जहणओ द्विदियधो असरोज्ज गुणो ।		१४८	जहणिया आवाहा सरोज्जगुणो ।	२७७
१३१	द्विदियधट्टाणाणि सरोज्जगुणाणि ।		१४९	उक्कस्सिया आवाहा विसैसा हिया ।	
१३२	उक्कस्सओ द्विदियधो विसैसा हियो ।	२७३	१५०	णाणापदेसगुणहाणिट्टाणतराणि असखेज्जगुणाणि ।	
१३३	पच्चिदियाण सण्णीणमसण्णीण पज्जत्तयाणमाउमस्स सव्यत्योवा जहणिया आवाहा ।		१५१	एयपदेसगुणहाणिट्टाणतरमसरोज्ज गुण ।	
१३४	जहणओ द्विदियधो सखेज्जगुणो ।		१५२	एयमावाहाकदयमसखेज्जगुण ।	
१३५	आवाहाट्टाणाणि सरोज्जगुणाणि ।		१५३	द्विदियधट्टाणाणि असरोज्ज गुणाणि ।	२७४
१३६	उक्कस्सिया आवाहा विसैसा हिया ।		१५४	जहणओ द्विदियधो सरोज्जगुणो ।	
१३७	णाणापदेसगुणहाणिट्टाणतराणि असखेज्जगुणाणि ।		१५५	उक्कस्सओ द्विदियधो विसैसाहियो ।	
१३८	एयपदेसगुणहाणिट्टाणतरमसरो ज्जगुण ।		१५६	एरदिययादर-सुहुम-पज्जत्त- अपज्जत्तयाण सत्तण कम्माण आउववज्जाणमावाहट्टाणाणि	
१३९	द्विदियधट्टाणाणि असखेज्जगुणाणि ।				

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	आवाहाकदयाणि च दो वि तुहाणि थोवाणि ।	२७८	१७३	तिट्टाणयथा जीवा सक्किलिद्धदरा ।	३१५
१५७	जहण्णिया आवाहा असत्तेज्जगुणा ।	॥	१७४	अउट्टाणयथा जीवा सक्किलिद्धदरा ।	॥
१५८	उक्कस्सिया आवाहा विसेसाहिया ।	२७९	१७५	सादस्स चउट्टाणयथा जीवा णाणावरणीयस्स जहण्णिय ट्ठिदिं वधति ।	३१६
१५९	णाणापदेस गुणद्वानिट्टाणतराणि असत्तेज्जगुणाणि ।	॥	१७६	सादस्स तिट्टाणयथा जीवा णाणावरणीयस्स अजहण्ण अणु फक्कस्सिय ट्ठिदिं वधति ।	॥
१६०	पयपदेसगुणदाणिट्टाणतरम-सत्तेज्जगुण ।	॥	१७७	सादस्स विट्टाणयथा जीवा सादस्स चेव उक्कस्सिय ट्ठिदिं वधति ।	३१७
१६१	पयमावाहास्वयमसत्तेज्जगुण ।	॥	१७८	असादस्स वेट्टाणयथा जीवा सत्त्याणेण णाणावरणीयस्स जहण्णिय ट्ठिदिं वधति ।	३१८
१६२	ट्ठिदिवधट्टाणाणि असत्तेज्जगुणाणि ।	॥	१७९	असादस्स तिट्टाणयथा जीवा णाणावरणीयस्स अजहण्ण-अणुफक्कस्सिय ट्ठिदिं वधति ।	३१९
१६३	जहण्णओ ट्ठिदिवधो असत्तेज्जगुणो ।	॥	१८०	असादस्स अउट्टाणयथा जीवा असादस्स चेव उक्कस्सिय ट्ठिदिं वधति ।	॥
१६४	उक्कस्सओ ट्ठिदिवधो विसेसाहियो ।	॥	१८१	तेदिं दुविहा सेट्ठिपरूवणा अणतरोवणिधा परंपरोवणिधा ।	३२०
(विदिया चूलिया)			१८२	अणतरोवणिधाए सादस्स चउट्टाणयथा तिट्टाणयथा जीवा असादस्स विट्टाणयथा तिट्टाणयथा जीवा णाणावरणीयस्स जहण्णियाए ट्ठिदीए जीवा थोवा ।	३२१
१६५	ट्ठिदिवध सत्साणपरूणदाए तत्थ इमाणि तिण्णि अणिभोग दाराणि जीवसमुदाहारो पयडि समुदाहारो ट्ठिदिसमुदाहारो त्ति ।	३२०	१८३	विदियाए ट्ठिदीए जीवा विसेसाहिया ।	३२२
१६६	जीवसमुदाहारो त्ति जे ते णाणावरणीयस्स वधा जीवा ते दुविहा सादयथा चेव असादयथा चेव ।	३११	१८४	तदियाए ट्ठिदीए जीवा विसेसाहिया ।	३२३
१६७	तत्थ जे ते सादयथा जीवा ते तिदिहा-अउट्टाणयथा तिट्टाणयथा विट्टाणयथा ।	३१२	१८५	एव विसेसाहिया विसेसाहिया जाव सागरोवमसद्दुघत्त ।	॥
१६८	असादयथा जीवा तिदिहा-विट्टाणयथा तिट्टाणयथा अउट्टाणयथा त्ति ।	३१३	१८६	तेण पर विसेसहीणा विसेसहीणा जाव सागरोवमस-पुधत्त ।	॥
१६९	सन्धविसुद्धा सादस्स अउट्टाणयथा जीवा ।	३१४			
१७०	तिट्टाणयथा जीवा सक्किलिद्धदरा ।	॥			
१७१	विट्टाणयथा जीवा सक्किलिद्धदरा ।	३१५			
१७२	सन्धविसुद्धा असादस्स विट्टाणयथा जीवा ।	॥			

सूत्र संख्या	सूत्र	श्लोक संख्या	सूत्र संख्या	सूत्र	श्लोक संख्या
१८७	सादस्स विट्ठाणवधा जीवा असा दस्स चउट्ठाणवधा जीवा णाणा वरणीयस्स जहणियाए द्विदीए जीवा थोवा ।	२४	१९८	तेण पर पल्लिदोवमस्स असखे ज्जदिभाग गत्तुण दुगुणहीणा ।	३२७
१८८	विदियाए द्विदीए जीवा विसेसा हिया ।	"	१९९	एव दुगुणहीणा दुगुणहीणा जाय सादस्स असादस्स उक्क स्सिया द्विदि त्ति ।	"
१८९	तदियाए द्विदीए जीवा विसेसा हिया ।	"	२००	एगजीव-दुगुणवड्ढि-हाणिट्ठाण तरमसखेज्जाणि पल्लिदोवमग्ग मूलाणि ।	"
१९०	एव विसेसाहिया विसेसाहिया जाय सागरोपमसरपुधत्त ।	"	२०१	णाणाजीव-दुगुणवड्ढि-हाणि ट्ठाणतराणि पल्लिदोवमग्गमू लस्स असखेज्जदिभागो ।	३२८
१९१	तेण पर विसेसहीणा विसेसहीणा जाय सादस्स असादस्स उक्क स्सिया द्विदि त्ति ।	"	२०२	णाणाजीव-दुगुणवड्ढि-हाणि ट्ठाणतराणि थोवाणि ।	"
१९२	परपरोवणिधाए सादस्स चउ ट्ठाणवधा विट्ठाणवधा जीवा असादस्स विट्ठाणवधा, विट्ठाण वधा णाणावरणीयस्स जहणियाए द्विदीए जीवेहिंतो तदो पल्लिदोवमस्स असखेज्जदिभाग गत्तुण दुगुणवड्ढिदा ।	३२५	२०३	एगजीव-दुगुणवड्ढि-हाणिट्ठाण तरमसखेज्जगुण ।	"
१९३	एव दुगुणवड्ढिदा दुगुणवड्ढिदा जाय जममग्ग ।	३२६	२०४	सादस्स असादस्स य विट्ठाण यम्मि णियमा अणागारपाओग्ग ट्ठाणाणि ।	३३५
१९४	तेण पर पल्लिदोवमस्स असखेज्जदि भाग गत्तुण दुगुणहीणा ।	"	२०५	सागारपाओग्गट्ठाणाणि सख्यथ ।	"
१९५	एव दुगुणहीणा दुगुणहीणा जाय सागरोवमसरपुधत्त ।	"	२०६	सादस्स चउट्ठाणियज्जमज्जस्स हेट्ठदो ट्ठाणाणि थोवाणि ।	३२४
१९६	सादस्स विट्ठाणवधा जीवा असा दस्स चउट्ठाणवधा जीवा णाणा वरणीयस्स जहणियाए द्विदीए जीवेहिंतो तदो पल्लिदोवमस्स असखेज्जदिभाग गत्तुण दुगुण वड्ढिदा ।	२२७	२०७	उवरि सखेज्जगुणाणि ।	"
१९७	एव दुगुणवड्ढिदा दुगुणवड्ढिदा जाय सागरोवमसरपुधत्त ।	"	२०८	सादस्स विट्ठाणियज्जमज्जस्स हेट्ठदो ट्ठाणाणि सखेज्जगुणाणि	३३५
			२०९	उवरि सखेज्जगुणाणि ।	"
			२१०	सादस्स विट्ठाणियज्जमज्जस्स हेट्ठदो एयतसागारपाओग्गट्ठाणाणि सखेज्जगुणाणि ।	"
			२११	मिस्सयाणि सखेज्जगुणाणि	३३६
			२१२	सादस्स चोव विट्ठाणियज्ज मज्जस्स उवरि मिस्सयाणि सखेज्जगुणाणि ।	"
			२१३	असादस्स विट्ठाणियज्जमज्जस्स हेट्ठदो एयतासागारपाओग्ग ट्ठाणाणि सखेज्जगुणाणि ।	"

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
२१४	मिस्सयाणि सखेज्जगुणाणि ।	३३७	२३४	तिट्ठानयधा जीवा सखेज्जगुणा ।	३४२
२१५	असादस्स वेच विट्ठानियज्जवमज्ज स्सुपरि मिस्सयाणि सखेज्ज गुणाणि ।	"	२३५	विट्ठानयधा जीवा सखेज्जगुणा ।	"
२१६	असादस्स विट्ठानयधा जीवा सखेज्जगुणा ।	"	२३६	असादस्स विट्ठानयधा जीवा सखेज्जगुणा ।	"
२१७	एयतासागारवाओग्गट्ठानाणि सखेज्जगुणाणि ।	"	२३७	चउट्ठानयधा जीवा सखेज्जगुणा ।	३४३
२१८	असादस्स तिट्ठानियज्जवमज्जस्स हेट्ठदो ट्ठानाणि सखेज्जगुणाणि ।	३३८	२३८	तिट्ठानय धा जीवा विसेसाहिया ।	"
२१९	उपरि सखेज्जगुणाणि ।	"	२३९	पयडिसमुदाहारे त्ति तथ इमाणि दुवे अणियोगद्वाराणि पमाणाणुगमो अप्पाबहुए त्ति ।	३४५
२२०	असादस्स चउट्ठानियज्जवमज्जस्स हेट्ठदो ट्ठानाणि सखेज्जगुणाणि ।	"	२४०	पमाणाणुगमे णाणाऱरणीयस्स असखेज्जा लोगा द्विदिग्घज्जय साणट्ठानाणि ।	"
२२१	सादस्स जहण्णओ द्विदिग्घो सखेज्जगुणो ।	"	२४१	एव नत्तण कम्माण ।	"
२२२	जट्ठिदिग्घो विसेसाहियो ।	"	२४२	अप्पाबहुए त्ति सत्थरयोवा आउ अस्स द्विदिग्घज्जयसाण ट्ठानाणि ।	३४७
२२३	असादस्स जहण्णओ द्विदिग्घो विसेसाहियो ।	३३९	२४३	णाणा-गोदान द्विदिग्घ-अपसा णट्ठानाणि दो वि तुल्लाणि अस खेज्जगुणाणि ।	"
२२४	जत्तो उक्कस्सय दाह गच्छदि सा ट्ठिदो सखेज्जगुणा ।	"	२४४	णाणाऱरणीय-दस्सणाऱरणीय- वेयणीय-अतराश्याण द्विदिग्घ ज्जयसाणट्ठानाणि चत्तारि रि तुल्लाणि असखेज्जगुणाणि ।	३४८
२२५	अतोकीडाकाडी सखेज्जगुणा ।	"	३४५	मोहणीयस्स द्विदिग्घ-अपसा णट्ठानाणि असखेज्जगुणाणि ।	३४९
२२६	सादस्स विट्ठानियज्जवमज्जस्स उपरि एयतसागारवाओग्गट्ठानाणि सखेज्जगुणाणि ।	२४०	२४६	ठिदिसमुदाहारे त्ति तथ इमाणि त्तिणिण अणियोगद्वाराणि पगणणा अणुक्कट्ठो ति-मददा त्ति ।	"
२२७	सादस्स उक्कस्सओ द्विदिग्घो विसेसाहियो ।	"	२४७	पगणणाए णाणाऱरणीयस्स जहण्णियाए द्विदिग्घ द्विदिग्घज्ज यसाणट्ठानाणि असखेज्जा लोगा ।	३५०
२२८	जट्ठिदिग्घो विसेसाहियो ।	"	२४८	चिदिग्घाए द्विदिग्घ द्विदिग्घज्ज यसाणट्ठानाणि असखेज्जा लोगा ।	"
२२९	दाहद्विदी विसेसाहिया ।	"	२४९	तदिग्घाए द्विदिग्घ द्विदिग्घज्ज यसाणट्ठानाणि असखेज्जा लोगा ।	३५१
२३०	असादस्स चउट्ठानियज्जवमज्जस्स उपरिमट्ठानाणि विसेसाहियाणि ।	३४१			
२३१	असादस्स उक्कस्सद्विदिग्घो विसेसाहियो ।	"			
२३२	जट्ठिदिग्घो विसेसाहियो ।	"			
२३३	एदेण अट्ठपदेण सत्थरयोवा सादस्स चउट्ठानयधा जीवा ।	"			

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
२५०	एवमसखेज्जा लोगा भसंरोज्जा लोगा जाव उक्कस्सट्ठिदि त्ति ।	३५१	२६४	एव ट्ठिदिधधज्जवसाण दुग्गुण वट्ठिदहाणिट्ठानतर पल्लिदोधमस्स असखेज्जदिभागो ।	३५२
२५१	एव सत्तण्ण कम्माण ।	३५२	२६५	णाणाट्ठिदिधधज्जवसाण दुग्गुण-वट्ठिदहाणिट्ठानतराणि अगुल वग्गामूलछेदण।णमसखेज्जदि भागो ।	३५३
२५२	तेसिं दुविधा सेडिपरुवणा अणत रोवणिधा परपरोवणिधा ।	३५३	२६६	णाणाट्ठिदिधधज्जवसाणदुग्गुण वट्ठिदहाणिट्ठानतराणि थोवाणि ।	३५४
२५३	अणतरोवणिधाए णाणावरणी यस्स जहणियाए ट्ठिदीए ट्ठिदि धधज्जवसाणट्ठानाणि थोवाणि	३५४	२६७	एयट्ठिदिधधज्जवसाणदुग्गुणव ट्ठिदहाणिट्ठानतरमसखेज्जगुण ।	३५५
२५४	विदियाए ट्ठिदीए ट्ठिदिधधज्ज वसाणट्ठानाणि विसेसाहियाणि ।	३५५	२६८	एव छण्णं कम्माणमाउवयज्जाण ।	३५६
२५५	तदियाए [ट्ठिदीए] ट्ठिदिबंधज्ज वसाणट्ठानाणि विसेसाहियाणि ।	३५६	२६९	अणुकट्ठीए णाणावरणीयस्स जहणियाए ट्ठिदीए जाणि ट्ठिदि धधज्जवसाणट्ठानाणि ताणि विदियाए ट्ठिदीए धधज्जवसाण ट्ठानाणि अपुव्याणि ।	३५७
२५६	एव विसेसाहियाणि विसेसा हियाणि जाव उक्कस्सियाट्ठिदि त्ति ।	३५७	२७०	एवमपुव्याणि अपुव्याणि जाव उक्कस्सिया ट्ठिदि त्ति ।	३५८
२५७	एव छण्ण कम्माण ।	३५८	२७१	एव सत्तण्ण कम्माण ।	३५९
२५८	आउधस्स जहणियाए ट्ठिदीए ट्ठिदिधधज्जवसाणट्ठानाणि थोवाणि ।	३५९	२७२	तिथमददाए णाणावरणीयस्स जहणियाए ट्ठिदीए जहणय ट्ठिदिधधज्जवसाणट्ठान सन्ध मदानुभाग ।	३६०
२५९	विदियाए ट्ठिदिधधज्जवसाण ट्ठानाणि असखेज्जगुणाणि ।	३६०	२७३	तिस्से चेव उक्कस्समणतगुण ।	३६१
२६०	तदियाए ट्ठिदीए ट्ठिदिधधज्जवसा णट्ठानाणि असखेज्जगुणाणि ।	३६१	२७४	विदियाए ट्ठिदीए जहणय ट्ठिदिधधज्जवसाणट्ठानमणतगुणं	३६२
२६१	एवमसखेज्जगुणाणि असखेज्ज गुणाणि जान उक्कस्सिया ट्ठिदि त्ति ।	३६२	२७५	तिस्से चेव उक्कस्समणतगुण ।	३६३
२६२	परपरोवणिधाए णाणावरणी यस्स जहणियाए ट्ठिदीए ट्ठिदि धधज्जवसाणट्ठानेहितो तदो पल्लिदोधमस्स असखेज्जदिभाग गत्तूण दुग्गुणवट्ठिददा ।	३६३	२७६	तदियाए ट्ठिदीए जहणय ट्ठिदि धधज्जवसाणट्ठानमणतगुण ।	३६४
२६३	एव दुग्गुणवट्ठिददा दुग्गुणवट्ठिददा जाव उक्कस्सिया ट्ठिदि त्ति ।	३६४	२७७	तिस्से चेव उक्कस्सयमणतगुण ।	३६५
			२७८	एवणतगुणा जाव उक्कस्सट्ठिदि त्ति ।	३६६
			२७९	एव सत्तण्ण कम्माण ।	३६७

२ अवतरण-गाथा-सूची

क्रमसंख्या	गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहाँ
	(वेदना क्षेत्रविधान)		
१	अवगयन्निवारणद्वे	१	प्रमाणवार्तिक ४-१९०
	(वेदना कालविधान)		
५	अच्छेदनस्य राशे	१२४	पचा १०२
८	अयोगमपरैर्योग—	३१७	पचा १००
४	कालो त्ति य वधपसो	७६	गो जी ५६९
१	कालो परिणामभवो	७५	प ख पु ६ पृ १५८ पु १० पृ ४८५
२	णय परिणमह स्वय सो	७६	गो जी ५८८
६	प्रक्षेपकसक्षेपेण	२४१	
३	लोगागासपदेसे	७६	
७	विशेषणविशेषाम्याम्	३१७	

३ ग्रन्थोल्लेख

१ छेदसूत्र

- १ ण च द्वित्थि णयुसयवेदाने चेलादिचागो अत्थि, छेदसुत्तेण सह विरोहादो । १८४
२ तत्त्वार्थसूत्र (१-२०)
- १ ण च पुष्यसहो कारणत्थमावेण अप्पसिद्धो "मद्विपुञ्ज सुद" (विनोया १०५) इच्छेत्य कारणे घट्टमाणपुणसहुत्तभादो । १४१
- ३ प्रदशविरचितभल्पबहुत्व
- १ त कथ णज्जे ? चरिमगुणहाणिदग्गादो पढमणिसेयो असखेज्जगुणो त्ति पदेसविरहयअपावहुगादो । २५६

४ मूलाचार

- १ ण च तेण सह तस्स वधो, आपवमी त्ति सिंहा इत्थीओ जति छट्टिपुदधि त्ति (१२-११३) । ११४
- २ ण च देवाण उक्कस्साउअ द्वित्थियेवेदेण सह घज्जह, णियमा णिमगधर्णिणेण (१२ १३४) ५ सतकम्मपाहुड
- १ सतकम्मपाहुडे पुण णिगोदेसु उप्पाइदो । २१

६ अनिर्दिष्टनाम

- १ "अर्हे शूय रूपेषु गुणम्" इति गणित यायेन ज लड त ठयिय "रुवोनमादिस गुणमेकोनगुणो मयितमिच्छा" एदेण रुवूण काऊण सव्यज्जवसाणपमाण होदि । ३८०

४ पारिभाषिक शब्द-सूची

शब्द	अ	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
अधर्मभूमि		८९	अनन्तगुणवृद्धि	३५१	अभ्ययोग्यवच्छेद	२४५, ३१८
अक्षिप्तकाल		७६	अनन्तभागवृद्धि	"	अप्रधानकाल	७६
अत्यन्तायोग्यवच्छेद		३१८	अनन्तरोपनिधा	३५२	अयोग्यवच्छेद	२४५, ३१७
अज्ञाकाल			अनुवृष्टि	३४२	अलोक	०
				१९	अवगाहनावृण्डक	

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
अधोगाढभक्तपथहुत्व	१४७,	चतुर्थस्थान अनुभागबन्ध	॥	प्रवानद्रव्यकाल	७५
१५३, १७७		चतु स्थानबन्धक	॥	प्रमाणकाल	७७
असत्प्रयातगुणवृद्धि	३५१	चूलिना	१४०	भ	
असत्प्रयातभागवृद्धि	॥	छ		भाजघय	८५
असत्प्रयेयवर्षायुष्क	८९, ९०	छेदगुणकार	१२८	भाघत आदेशजघय	१२
असातबन्धक	३१२	छेदभागहार	१२५	भाघत उत्कृष्ट	१३
आ		ज		ल	
आगमभाक्काल	७६	जघयय घ	३३९	लब्धमत्स्य	१५, ७१
आगमभावक्षत्र	२	जघयप्रस्थिति	३५०	लोक	२
आगमभाज जघय	१२	ज स्थितियघ	३३९	लोकोत्तरसमाचारकाल	७५
आदेश उत्कृष्ट	१३	जलचर	९०, ११५	लौकिकसमाचारकाल	॥
आदेश जघन्य	१०	ज्ञानोपयोग	३३४	घ	
आदेशत काल जघय	॥	त		विग्रह	२०
आशधा	९२, ९३, २६१	तृतीयस्थान	३१३	विशुद्धता	३१४
आशधा काण्डक	९५, २६६	त्रिस्थानबन्धक	॥	विशुद्धि	२०९
आपाधा स्थान	१६५, २७१	द		विशुद्धिस्थान	२०८, ३०९
उ		दर्शनोपयोग	३३३	धीचारस्थान	१११
उत्कृष्ट दाह	३३२	दाह	३३९	वेदना	२
उत्कृष्ट स्थितिसकेश	९१	दाहस्थिति	३४१	वेदनाक्षेत्रविधान	॥
ए		द्रव्य उत्कृष्ट	१३	वेदनासमुद्घात	१८
एकस्थान	३१३	द्रव्य जघय	१२, ८५	स	
ओ		द्रयत आदेश जघन्य	१२	सचित्तकाल	७६
ओघ उत्कृष्ट	१३	द्वितीय स्थान	५१३	समभागहा	१२७
ओघ जघय	१५	द्विस्थानबन्धक	॥	समाचारकाल	७६
क		घ		समुदाहार	३०८
कर्मक्षेत्र उत्कृष्ट	१३	ध्रुवस्थिति	३५०	सकशेश	५०९, ३०९
कर्मक्षेत्र जघय	१२	न		सकलेशस्थान	२०८
कमभूमिप्रतिभाग	८९	निर्वर्गेणाकाण्डक	३५३	सत्प्रयातगुणवृद्धि	३५१
काकभेदया	१९	नियेक	२३७	सत्प्रयेयवर्षायुष्क	८५
काक जघय	८५	नोआगमभावकाल	७७	सातबन्धक	३१२
कालन उत्कृष्ट	१५	नोआगमभावक्षत्र	२	सिक्थमत्स्य	५२
क्षेत्र	२	नोआगमभावजघय	१३	स्थलचर	९० ११५
क्षत्र जघय	८५	नोकर्मक्षत्र उत्कृष्ट	॥		१४२ १८२,
क्षत्रत आदेशजघय	१२	नोकर्मक्षत्रजघय			२०५, २२५
ख		प			३१०
खगचर	९०, ११५	पञ्जिका			३१५
ख		परम्परोपनिष्ठा			
खनुषस्थान	३१३				

